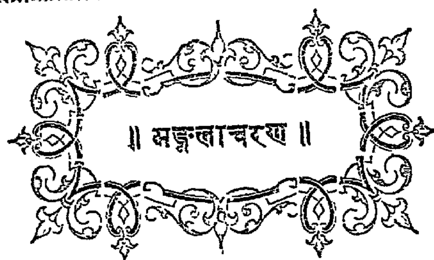
॥✡॥ प्रशस्तिः ॥✡॥

॥✡॥ श्रीमद्वीरजिनेंद्र तीर्थतिलकः सद्भूत
संपन्निधिः। संजज्ञे सुगुरुः सुधर्मगणभृत्त
स्यान्वये सर्वतः। पुण्ये चांद्रकुलेऽभवत्सु
विहिते पक्षेसदाचारवान्। सेव्यः शोभन
धीमतां सुमति मानुद्द्योतनः सूरिराट्॥
१॥ आसीत्तत्पदपंकजैक मधुकृत् श्रीवर्द्ध
मानाभिधः। सूरिस्तस्य जिनेश्वराख्यगणभृ
ज्जातो विनेयोत्तमः। यः प्रापत् शिवसिद्धि
पंक्तिशरदि (११ ८०) श्रीपत्तनेवादिनो।
जित्वा सद्विरदंततो खरतरेत्याख्यं नृपादे
र्मुखात्॥ २ ॥✡॥ ॥✡॥ ॥✡॥

॥✡॥ गच्छेचास्तरे बृहत्खरतरे श्रीचंद्र
सूरीश्वराः। राजंते मनुजेंद्र सेवितपदाः।
शास्त्रार्थवागीश्वराः। तत्पादाब्जपराग
पानमधुपालक्ष्मीप्रधानावराः। सच्छीलादि
गुणैर्युता सुगुरवः संतीह सद्बोधराः॥१॥

॥✡॥ तेषां विनयेन सुमोहनेन। सद्भक्ति
पूजादिविचारगर्भा। संकीर्तितेयं खलु
बालशिक्षा। सिद्धांतसारार्थविदां मुदेवै॥२



॥ मङ्गलाचरण ॥

॥॥ तीन तत्वकों नमण कर। सेऊं सद्गुरु पाय। देवी भगवती सानिधै। वचन अमृत रस थाय ॥ १ ॥ चौरासी लच्छ जोनिसें। जे रुल्या जीव अनन्त। मोह मिथ्यात वसै पड्या। पायो दुःख नहीं अन्त ॥ २ ॥ परम देव परमातमा। चिदानन्द गुणचंग। भव्य जीवको हित भणी। भेद कह्या सहु अङ्ग ॥ ३ ॥ गणधर गौतम आदि सहु। रचिया अङ्ग अनूप। तिकरण हुं प्रणमुं सदा। ज्ञान आतमगुण भूप ॥ ४ ॥ आचारज उवझाय मुनि। भगवन वचन उपेत। भाष्य टीका निर्युक्ति कर। प्रगट कीया संकेत ॥ ५ ॥ भगवती सुत मांहि कह्या। आगमना पंच अंग। सरधै जे भवि प्राणिया। पामें नित उछरङ्ग ॥ ६ ॥ जैवंता वरतो सदा। सहु जगमंडन ज्ञान। पिण उपगारी भव्य कों। ए सुतज्ञान प्रधान ॥ ७ ॥ दुष्ट कर्म संयोग सें। चित वैठे नहीं ज्ञान। पिण जाणुं सुरतरु समो। ए हीज धर्म प्रधान ॥ ८ ॥ प्रबल भाग्य संयोग सें। पारस दरसण पाय। पारस फरस्यां लोह सहु। गुणकञ्चण सम पाय ॥ ९ ॥ जिन दरसण मुझ मनवस्यो। जे प्रगटै चित आय। कर्मशत्रु दल जीपकै। शिवरमणी वश जाय ॥१०॥ शिव पुर जीवा कारणें। समकित हृदयै हेत। बाल अज्ञ मोहन भणी। रत्नसागर गुण देत ॥ ११ ॥॥ ॥॥

॥※॥ (सुभचिंतक) सब जैनधर्मी सज्जन पुरुषोंके पढने के वास्ते। बहुत पुस्तक से। बहुत रत्नवस्तु के। संग्रह करके। (यह) रत्नसागर (वा) मोहनगुण माला (प्रथम भाग) प्रसिद्ध किया है (इसमें) बारै मासके अवस्य कर्त्तव्य। (पूर्वाचार्योंके रचित)। पोसा पडिक्कमणादिकके सुत्र। (तथा) पोसा पडिक्कमणा करणेंकी विधि। भक्तामर। कल्याण मंदर। सात्ते स्मरण (इत्यादि) बड़े बड़े स्तोत्र। सेत्रुंजरास। सिखरजीको रास। गौतम रास। (इत्यादि) केईतरै के बड़े बड़े स्तवन। देवपूजा करणेंकी विधिः। ओली करणेंकी संपूर्ण विधिः। और केईतरै की तपस्या करणेंकी विधिः। चैत्रमाससें फालगुन मास तक। अनुक्रम सें सब पर्वोंके अधिकार (तथा) सेवन करणेंकी विधिः। (और) स्नात्र। अष्ट प्रकारी (इत्यादिक) केईतरैकी पूजायां। केईतरै की सिझायां (केई लावण्यां)। केई तरैके होलीके स्तवन। केई तरैके रागरागणी के स्तवन। केई तरैके औदादाजी के स्तवन। (इत्यादिक) बहुत रत्नवस्तु का संग्रह किया है। (साख्यात) यह पुस्तक रत्नवस्तु का समुद्र है। इसीसें (रत्नसागर) नाम रक्खा है ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ और जो इस पुस्तकमें रत्नवस्तु है। (सो) आत्माके मोहनगुण। ज्ञान। दर्शन। चारित्र। प्रगट करणेंकी श्रेणीहै। (जिससें) मोहनगुणमाला (नाम रक्खा है)

॥※॥ और सब पाठकगणकों प्रथम अपणा नित्यनेम सीखना चहिये। (इसीसें) प्रथम पाठकगणके उपगारार्थ। (भाषासंयुक्त) सब नित्यनेमका संग्रह कियाहै (इससें)

(प्रथम भाग) नाम रक्खा है ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (इसके) द्वितीय भागमें । केईतरैके । देवचंदजी । समेसुन्दर जी । क्षमाकल्याणजी । महाराजके प्रश्नोत्तर की इतरैके बोल बिचार (इत्यादिक) केई रत्न वस्तुके संग्रह करणेंका उमेद है (सो) श्रीसंघके सहाय सें होसकेगा ॥

॥※॥ और सब भव्य जीवोसें (यह प्रार्थनाहै) । इस पुस्तकको बहुत विवेकसें यतन करके रखणा (जिसमें) ज्ञानकी आशातना नहो ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ और कषाय प्रमादादिक के वस (जो) हमारा कसूर मालुम हो (तो) श्रीसंघ माफ करो । श्रेणक राजाके तुल्य । गुणग्राही पणा धारण करके । इस पुस्तकके गुण ग्रहण करो । इस पुस्तकसें कितने जीवोंके सद्धर्म प्राप्त होगा । यह पुस्तक धर्मरूपी कल्पवृक्षका बीज है । सेवन करणेसें । मनचिंतित्त फल प्राप्ति होगा ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ और दिनप्रमाण साठघड़ी होता है । (जिसमें) दो च्यार घड़ी तो । इस पुस्तकको जरूर वाचणो पढणो रखणा । इस पुस्तक कों पढते कुछ भूल मालुम हो (तो) विद्वज्जन कों पूछके निस्चै करणा । प्रथम हमनें यह पुस्तक छपाया है (इसमें) कोई ठिकाणें । युक्त हरफ कम होणेसें । ईकार । ऊकार । एकार । जूदा मिलाके लगा है । (इसीसें) कोई ठिकाणें छापेके दोष सें । काना । मात । ठीकसें न ऊठा हो । कुछ भूल मालुम हो (अथवा) केई पुस्तकसें संग्रह करणें में । चरमचक्षुसें (वा) मतिके भ्रमसें । कोई ठिकाणें हरफका कम वेसपणा रहा हो (अथवा)

कोई तरैको भाषा मिलणेसें। कुछ भाषाके दूषण मालुम हो (अथवा) सिद्धांतसें विरुद्ध। छद्मे अथको कुछ बी लिखणे में आयो हो (तो) तिकरण सुद्धे मिछामिदुक्कडं देताहुं ॥※॥

॥※॥ (शुद्धिपत्र) ॥※॥

॥※॥ सब पाठकगणकों मालुम रहै ॥※॥

॥※॥ पृष्ट ५८। पंक्ति १७की में। साते स्मरण सरू होते। अजित शांति स्तोत्र की एक पदसें। दो तीन हरफ छापेके दोषसें। उलटा होगया है। (उहां ऐसा पद चहिये) अजियं जिणियं च गुणेहि महामुणि सिद्धि गयं। अजियस्स य संति महामुणि० ॥※॥ ॥※॥

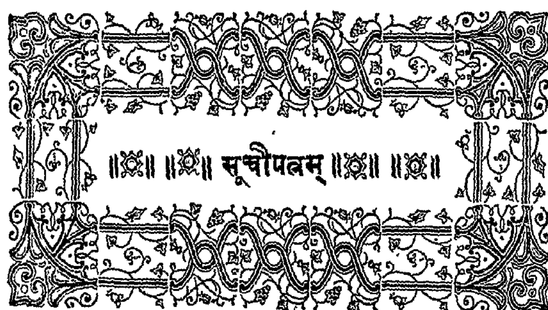
॥※॥ पृष्ट ४१७। पंक्ति १२। पजूसण पर्वाधिकारे (नाससें) असुद्ध॥ (नामसें) सुद्ध॥※॥

॥※॥ पृष्ट ४७१ में। पंचकल्याणक जीकी टीप चलते (जहां) मार्गशिर्ष कृष्णपक्ष है (उहां) शुक्लपक्ष चहिये (जहां) शुक्लपक्ष है (उहां) कृष्णपक्ष चहिये ॥※॥

॥※॥ और कोई ठिकाणें कुछ भूल मालुम हो (तो) उपगार बुद्धिसें गुरुके पास सुद्ध कराके पढणा। छद्मस्थके अल्प बुद्धिसें यथावस्थित उपियोग रह सक्ता नहीं ॥※॥

॥※॥ (ठिकाना) ॥※॥

(यह पुस्तक) कोई भव्यजीवको लेणेकी (वा) देशान्तरसें मंगाणेकी इच्छा हो (तो) कलकत्ता। बड़ाबजार तुलापट्टीसें निज कोठी (नंबर१४५) सेठिया गोत्र। श्रीयुक्त सुमेरचन्द जी रूपचन्दजीके नामको पत्र देणेसें। निछरावल प्रथम भेजणेसें। जलदी पहुंचेगा॥※॥ ॥※॥ ॥※॥



॥ सूचीपत्रम् ॥

॥ प्रकरण नामः ॥	॥ पत्राङ्क ॥
स्वर व्यंजन युक्तादि वर्णमाला	१
शिक्षावाक्य	४
वाक्यमंजरी	५
संधिसुत्र	६
हितोपदेश	७
हिन्दू भगवंतके नाम	१०
प्रतिक्रमण सुत्र सर्व	१२
साधुप्रतिक्रमण । चत्तारि मङ्गलं०	२३
श्रावक प्रतिक्रमण । वंदित्तु सुत्र	२८
१० पच्चक्खाण । नवकारस्यादि	३२
१० पच्चक्खाणोंके आगारों के अर्थ	३७
१० पच्चक्खाण आगार संख्या गाथा	४०
मुहपत्ती पडिलेहण । सुत्र अर्थ साचो०	४१
थापनाचार्यजी की १३ पडिलेहण०	६२

॥ प्रकरण ॥ ॥ पत्राङ्क ॥

॥ प्रकरण ॥	॥ पत्राङ्क ॥

॥ अथ श्राद्ध दिन कृत्य विधिः ॥

॥ प्रकरण ॥ ॥ पत्राङ्क ॥

॥ भावस्तवनाधिकारे ॥

॥ द्वादस मास पर्वाधिकार सह॥

॥ प्रथम चैत्रमास मध्ये चतुपर्व्वाधिकारः॥

॥※॥ परममंगल श्रीदादाजीके काव्यसवइया ॥※॥

॥※॥ दासानुदासा इव सर्वदेवा: । यदीय पादाब्जतले लुठंति । मरुस्थली कल्पतरु: स जीया । ज्जुगप्रधानो जिनदत्तसूरि: ॥ १ ॥ ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ चिंतामणि: कल्पतरुर्वराको । कुर्वन्ति भव्या: किमुकामगव्या: । प्रसीदत: श्रीजिनदत्त सूरे: । सर्वेपदाहस्तिपदे प्रविष्टा: ॥ १ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ नोयोगो न च योगिनी न च नराधीशस्य नो शाकिनी । नोवेत्ताल पिशाच राक्षसगणा: नो रोगशोगो भयं । नो मारी नच विग्रह: प्रभवत: प्रीत्या प्रणत्युच्चकै: । यस्ते श्रीजिनदत्तसूरि गुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥१॥※॥

॥☼॥ अथ सवइयालि० ॥☼॥

॥☼॥ बावन्न वीर किये अपणें वस चौसठ जोगण पाय लगाई । डाइण साइण व्यन्तर खेचर भूतरु प्रेत पिसाच पुलाई । बीज तडक कडक भटक अटक रहेनु खटक न काई । कहे धमसीह संघे कुशलीह दीये जिनदत्त की एक दुहाई ॥ १ ॥ इति ॥☼॥ ॥☼॥ ॥☼॥

॥☼॥ राजै थुंभ ठौर ठौर ऐसौ देवनहो ओर दादौ दादौ नाम तें जगत जस गायो है । आपणेही भाय आय पूजे सकललोक पाय प्यासनकुं रांन मांझि पांणी आंन पायो है । वाट घाट अलु थाट हाट पुरपाटणमें देश गेह नेहसुं कुशल वरतायो है । धमसीह ध्यानधरै सेवकां कुशल करे साचौ श्रीजिनकुशल गुरु नामयुं कहायोहै॥१

॥ ☼ ॥ कुशल अंग उछरंग कुशलविणजे व्यापारै । कुशल देव देहरै । कुशल धन राजदुवारै । पुन्य पसाये कुशल कुशल श्रीसंघ सणी जे । ब्राह्मण आवे कुशल । कुशल घर घर गाई जे । श्रीजिनचंद्र सूरि पुहपट्टधर । नाम मंत्र आरति टलै । श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां । नवनिधान लक्ष्मी मिलै ॥ १ ॥ ॥☼॥ ॥☼॥

॥☼॥ कुशल वडो संसार । कुशल सज्जन घर चाहै । कुशलै मङ्गलवार । लब्धिघर कुशलै आवै । कुशलै धनवर संत । कुशल धन धन्नरुवन्नो । कुशलै शोभा थट्ट । कुशल पहिरीय सुवन्नो । एरसौ नाम सदगरु तणौ । कुशलै जगरलीया मणी । भट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणें करी । घर घर होत वधावणी ॥ २ ॥ ॥☼॥ ॥☼॥

रत्नसागर

॥※॥ (वा) ॥※॥

। मोहनगुणमाला ।

॥※॥ ॐकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ॥ कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमो नमः ॥ १ ॥※॥

॥ ※ ॥ सर्व्वारिष्टप्रणाशाय । सर्व्वाभीष्टार्थ दायिने ॥ सर्वलब्धि निधानाय । गौतमस्वामिने नमः ॥※॥ १ ॥※॥

॥ ※ ॥ अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया । नेत्रमुन्मीलितं येन । तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥※॥

॥※॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥※॥

॥※॥ सरस्वती महाभागे । वरदे कामरूपिणी ॥ विश्वरूपी विशालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥१॥※॥ सरस्वती मया दृष्टा । वीणापुस्तकधारिणी । हंसवाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥२॥※॥

॥※॥ (स्वरवर्णाः) ॥※॥

अ आ इ ई उ ऊ

ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ

ओ औ अं अः

॥✿॥ (व्यञ्जनवर्णाः) ॥✿॥

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

प फ ब भ म य र ल व श ष

स ह क्ष

॥✿॥ क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥✿॥

॥✿॥ क्र ग्र ट्र ड्र द्र ष्ट्र ह्र ॥✿॥

॥✿॥ क्य ख्य ग्य घ्य च्य ज्य ड्य ढ्य ण्य त्य द्य ध्य न्य प्य ब्य भ्य म्य य्य ल्य व्य श्य ष्य स्य ह्य ॥✿॥

॥✿॥ क्न ग्न घ्न त्न न्न प्न म्न य्न श्न स्न ह्न ॥✿॥

॥✿॥ क्ल ग्ल प्ल ब्ल म्ल ह्ल ॥✿॥

॥✿॥ क्व ग्व ज्व त्व द्व ध्व न्व श्व स्व ह्व ॥✿॥

॥✿॥ क्ण ग्ण ष्ण ॥✿॥

॥✿॥ क्म ग्म घ्म ङ्म ण्म त्म द्म न्म म्म श्म ष्म स्म ह्म ॥✿॥

॥✿॥ र्क र्ख र्ग र्घ ॥✿॥

॥✿॥ ङ्क ङ्ख ङ्ग ञ्च ञ्छ ण्ट ण्ठ ण्ड ण्ढ न्त न्थ न्द न्ध ॥✿॥ म्प म्फ म्ब म्भ ॥✿॥ ष्क स्क स्ख ष्ट ष्ठ स्त स्थ स्प ष्प स्फ ॥✿॥ क्क ग्ग च्च च्छ ट्ठ ज्ज ज्झ द्द त्त त्थ द्द द्ध प्प ॥✿॥ ल्क ल्प ल्म ल्ल ...

ध्य ङ्गम त्ता त्र क्त त्य त्स।

॥ ॥ न्त्य न्त्र न्व्य ह्म ड्य द्म स्व्य त्क्य ज्य ह्य ड्य स्य स्त्य न्त्य त्त्य च्य स्थ त्त्य त्स।

क्त क्र न्त न्द्र द्र द्ध त्त त्म। ज्व द्व त्व स्व त्व।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ (१० १०० १००० १००००)

॥॥ (शिक्षा वाक्य) ॥॥

॥॥ गुरुशुश्रूषयाविद्या। पुष्कलेन धनेन वा। अथवा विद्यया विद्या। चतुर्थं नैव कारणं ॥१॥॥ विद्वत्वंच नृपत्वं च। नैव तुल्य कदाचन। स्वदेशे पूज्यते राजा। विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥२॥॥ पण्डिते च गुणाः सर्वे। मूर्खे दोषा हि केवलं। तस्मान्मूर्ख सहस्रेषु। प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥३॥॥ नक्षत्रभूषणं चन्द्रो। नारीणां भूषणं पतिः। पृथिव्या भूषणं राजा। विद्या सर्वस्य भूषणं ॥४॥॥ माताशत्रुः पिता वैरी। वालो येन न पाठितः। न शोभते सभा मध्ये। हंस मध्ये वको यथा ॥ ५ ॥॥ लालयेत्पञ्च वर्षाणि। दशवर्षाणि ताडयेत्। प्राप्ते तु षोडशेवर्षे। पुत्रं मित्र वदाचरेत् ॥ ६॥॥ वरमेको गुणीपुत्रो। नच मूर्ख शतान्यपि। एकचन्द्र स्तमो हन्ति। नच तारागणादपि ॥७॥॥ अविद्यं जीवनं शून्यं। दिशः शून्यास्त्व बांधवा। पुत्रहीनं गृहं शून्यं। सर्व शून्या दरिद्रता ॥८॥॥ नच विद्या समो बंधु। नचव्याधि समो रिपुः। नचापत्य समः स्नेहो। नच दैवात्परं वलं ॥९॥॥ किं तया क्रियते धेन्वा। या न सूते न दुग्धदा। कोऽर्थः पुत्रेण जातेन। यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १० ॥॥

उपदेशो हि मूर्खाणां। प्रकोपाय न शान्तये। पयः पानं भुजङ्गानां। केवलं विषवर्द्धनं ॥११॥ मातृवत्परदारांश्च। परद्रव्याणि लोष्ट्रवत्। आत्मवत् सर्वभूतानि। वीक्षंते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ वाक्यमंजरी) ॥ ॥

॥ ॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥ श्रीवाग्वादिन्यै नमः ॥ ॥ प्रातरुत्थाय श्रीपरमेश्वरं चिन्तयेत्। तदनन्तरं हस्तौ पादौ सम्यक् प्रक्षाल्य स्नात्वा आगन्तव्यं। परमेश्वरस्य पूजा विधेया (देवः पूज्यः) ॥ ॥ धर्मशास्त्र मध्ये किं किमुक्तं नास्ति धर्मशास्त्रे सर्वं वर्त्तते। धर्मशास्त्र मत्यंतं समीचीनं ॥ ॥ सरस्वती स्तोत्रं स वीर्यं भवति। सद्यः प्रीतिजनकं भवति। इदं सरस्वती स्तोत्रं सद्यः प्रत्यय कारकं भवति ॥ ॥ कविता समीचीना। कवित्वं कथमायाति। गुरुसमीपे गत्वा सम्यक् पठनीयं। ततो ज्ञानं भवति। तदा कवित्वमायाति। तस्मादादौद्वंदो ज्ञानं सम्पादनीयं ॥ ॥ सदा प्रियं ब्रूयात्। प्रियवादी सर्वस्य प्रियो भवति ॥ ॥ विद्याहि परमं धनं। यस्य विद्याधनमस्ति। स सदा सुखेन कालं नयति। श्रमेण यत्नेन च विद्या भवति। तस्मात् विद्यालाभाय श्रमो यत्नश्च विधेयः। विद्यां विना वृथा जीवनं ॥ ॥ आलस्यं सर्वेषां दोषाणामाकरः। अलसा विद्यामुपार्जयितुं न शक्नुवन्ति। धनं न लभन्ते। अलसानां चिरमेव दुःखं। तस्मादालस्यं परित्यजेत् ॥ ॥ योऽस्मानध्यापयति। सोऽस्माकं परम गुरुः। सहि पितृवत् पूजनीयः। विद्यादाता जन्मदाताच द्वा

वेव समानौ। समं माननीयौ च ॥❁॥ क्रोधं यत्नेन वर्जयेत्। क्रोधवशेन परुषं भाषते। ततः प्रहरेत क्रोधोहि महान् शत्रुः ॥❁॥ सर्वं परवशं दुःखम्। सर्वमात्मवशं सुखम्। एतदेव सुखदुःखयोर्लक्षणम् ॥❁॥ परहिंसायां परापकारेच बुद्धिर्नकार्य्या। तयोः समं पापं नास्ति ॥❁॥ यथाशक्ति परेषामुपकारं कुर्य्यात्। परोपकारो हि परमो धर्म्मः ॥❁॥ अहंकारं परिहरेत्। नाहंकारात् परोरिपुः ॥❁॥ संतुष्टस्य सदा सुखम्। आत्मनः सुखमन्विछेत्। सन्तोषमूलं हि सुखम् ॥

॥❁॥ (अथ सन्धिसूत्र:) ॥❁॥

॥ ❁ ॥ सिद्धो वर्णः। समाम्नायः। तत्र चतुर्द्दशादौ स्वराः। दशसमाना। तेषां द्वौ द्वावन्यो। ऽन्यस्य सवर्णौ। पूर्व्वो ह्रस्वः। परो दीर्घः। स्वरो वर्ण। वर्ज्जोनामी। एकारादीनि संध्यक्षराणि। कादीनि व्यंजनानि। ते वर्गाः पंच पंच। वर्गाणां प्रथम द्वितीयौ। शषसाश्च घोषाः। घोषवंतोऽन्ये। अनुनासिकाः ङञणनमाः। अन्तस्थाः यरलवाः। उष्माणः शषसहाः। अः इति विसर्ज्जनीयः। कः इति जिह्वामूलीयः। पः इत्यु पध्मानीयः। अं इत्यनुस्वारः। पूर्वपरयोरर्थोपलब्धौ पदम्। अस्वरं व्यंजनं। परं वर्णनयेत्। अनतिक्रमयन् विश्लेषयेत्। लोकोपचारात् ग्रहण सिद्धिः ॥❁॥ इति संधीसूत्रतः प्रथमस्मरणः समाप्तः ॥❁॥ ॥❁॥

॥❁॥ (हितोपदेसः) ॥❁॥

॥ ❁ ॥ अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धि

स्थिता। आचार्या जिनसासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः। श्रीसिद्धांत सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः। पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वंतवोमङ्गलं ॥१॥

॥※॥ (अर्थः) ॥※॥

॥※॥ अर्हन्त भगवंत। असरणसरण। भवभय हरण। सिवसुख करण। तरण तारण। प्रवहण समान। (एसे) श्रीवीतराग देव। जिणुंके वचनानुसारे। भव्यजीवां कों। परम मङ्गलकारी हितोपदेस देते हें ॥※॥ (एते पंच परमेष्टिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मङ्गलं कुर्व्वन्तु)। यह पंच परमेष्टि निरन्तर श्रीसंघप्रतें मङ्गलकरो। (कैसे है पंचपरमेष्टि) (अर्हन्तो भगवंत इंद्रमहिता)। प्रथम परमेष्टि। श्रीअरिहंत देवः। अष्टकर्म शत्रुकुं हणें (सो) अरिहंत कहिये। फेर अरिहंत कैसे है। (भगवंत) ज्ञानवंत है। केवल ज्ञान केवल दर्शन संयुक्त है। (तथा) भगशब्दका १४ अर्थ है॥ भगोऽर्क (सूर्य) १। ज्ञान २। महात्मय ३। यश ४। वैराग्य ५। मुक्ति ६। रूप ७। वीर्य ८। प्रयत्न ९। इच्छा १०। श्रीलक्ष्मी ११। धर्म १२। एश्वर्य १३। योनि १४। यह चवदे अर्थोंमें सें। सूर्य १। योनि २। दो अर्थ वर्जकर। १२ अर्थ भग शब्दका मिले (जिससें) भगवंत कहिये (पुनः किंविशिष्ट) फेर अरिहंत कैसे है (इंद्रमहिता) चौसठ इंद्रोंके पूजनीक। द्वादसगुणें करी विराजमान है (सो द्वादश गुण कैसे) प्रथमतो अरिहंतको अद्भुतरूप। रोगादि रहित। प्रस्वेद मलादि रहित। सुगंध शरीर हो ॥१ सासोस्वासकी कमलजैसी सुगन्ध हो ॥२॥ लोही मांस गा

यकी दूध जैसा सपेद हो ॥३॥ आहारनीहारकी विधि अ दृसहो। प्राणी देख सक्ता नहिं ॥४॥ ए च्यार अतिसय गु णतो जन्मकथांसे हो। शेष आठगुण) केवल ज्ञान उत्पन्न होणेसें प्रगट हो। (अशोकवृक्ष:) भगवन्तके सरीरसें। बारै गुणो ऊंचो अशोक वृक्ष हो। जिसकी छायांबैसणेंसें रोगसोगादिक दूर हो ॥ १ ॥ ※ ॥ (सुरपुष्पवृष्टि:) देवगण पंचवर्ण फूलोंकी जानु पर्यन्त वर्षा करै। आकाससें पहला सीधापडै। विंटनीचैं रहै। पंपडी ऊपर रहै ॥२॥ (दिव्य ध्वनि) योजन पर्यंत। देवता। मनुष्य। तिर्यंच। सब जीव। अपणी २ भाषासें। यथावस्थित समझै (जांणै) भगवंत हमरी भाषामें उपदेस देते है ॥※॥ (कहावी है) ॥ ※ ॥ एगाइं गिराणेगे। संदेह देहिणं समंछित्ता। तिऊअण मणुंसा संता। अरिहंता इंति मे सरणं ॥ १ ॥ ३ ॥ (चा मर ४) भगवंतकै दोनुं पासे इंद्र चामर ढालता रहै ॥४॥ (आसनञ्च ५) भगवन्तके बैठणेंकों। इंद्रादिक रचित। फिटक रत्नमई सिंहासण रहै ॥ ५ ॥ (भामंडलं ६) भग वन्तके पिछाडी भामंडल रहै (जिससे) भगवन्तके च्यार मुख। च्यारुं दिश तरफ मालुम हो। भगवंत तो पूर्व दिशा मुख कर बेठै। और तीन दिशमें। भगवन्तके प्रतिबिंब इंद्रादिक स्थापन करै। पर भगवन्त के अति सय सें। च्यारुं दिश। बारेंइं परषदाकों। अपणेंसन्मुख उपदेश देता मालुम हो ॥ ६ ॥ (दुंदुभी ७) आकाश में देव दुंदुभी वाजित्र वाजै ॥ ७ ॥ (रातपत्रं) भगवन्त के विहार कालै (वा) स्थिति कालै। हमेसां मस्तकपर।

तीन ठव रहै ॥ ८ ॥ (यह आठ गुण देवगणके किये हो)। ऐसे अरिहंत। देवाधिदेव। चौतीस अतिशय विराजमान। पेंतीस वचनगुण शोभित। एक हज्जार आठ लक्षणालंकृत। अट्ठारै दूषण रहत। शांत दांत। कृपासागर। त्रैलोक्यनाथ। जगत्रयके गुरु (वर्त्तमान काले) महा विदेहक्षेत्रे। केवलज्ञान। केवलदर्शनसें। लोकालोकका भाव देखते थके। पृथ्वीमंडलपर भव्य जीवुंके मनोरथ पूरण करते थके। विचरते है (ऐसे) अणंतगुणों सुसोभित। अरिहंत देव श्रीसंघ में सदा मङ्गल करो ॥१॥ (तथा सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता) (दूसरै पदे) सिद्ध महाराज कों नमस्कार हुवो। (सिद्ध महाराज कैसे है) अष्ट कर्म काष्टकों। शुक्लध्यान रूप अग्निसें भस्मकर। सिद्धगतिकों प्राप्तभये (ऐसे) अनंत ज्ञान। अनंतदर्शन। अनंत चारित्र। अनंत तप। अनंत वीर्यसंयुक्त। जन्म जरा मरण रोग सोक भयादिकसें विप्रमुक्त। चवदे राजलोकमें सव जीवोंके मनोगत भाव। एक समयमें जाणते थके। देखते थके पिण। आत्मगुणों में मग्न रहे है (ऐसे) सिद्ध महाराज। श्रीसंघ में सदा मङ्गल करो ॥ २ ॥❋॥ (आचार्या जिनशासनोन्नति करा) (तीसरा परमेष्ठि) श्रीआचार्य महाराज कों नमस्कार हुवो। (कैसे है) (छत्तीस गुण करी विराजमान। मुक्तिमार्गके साधक। कर्म शत्रूके विराधक। अबुध जीव प्रतिबोधक। क्षमागुण भंडार। समदृष्टी। तरण तारण। धर्मके धोरी। जिन सासनकी उन्नतिके करणहार (ऐसे) पर उपगारी आचार्य महाराज श्रीसंघ में

सदा मङ्गलकरो ॥ ३ ॥ (पुज्या उपाध्यायका । श्रीसिद्धांत सुपाठका) (चोथा परमेष्टि) श्रीउपाध्याय महाराजकों नमस्कार हुवो (कैसे है) द्वादशांगी सुत्रार्थके जाणकार। नय निक्षेपा गमांपर्याय संयुक्त। सिद्धांतकों पढाणेंवाले। ज्ञानचक्षु देणेंवाले। (ऐसें) २५ गुण करी बिराजमान। श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा मङ्गल करो ॥ ४ ॥ (मुनिवरा: रत्नत्रयाराधका:) (पंचम परमेष्टि) सब साधु मुनिराज (सो कैसे है) ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ यह तीन रत्नके आराधक है। पांचे सुमते सुमता। तीने गुप्तेगुप्ता। छकायके पीहर। कुक्खी संबल। चारित्रपात्र। मोक्षमार्गके साधक। (ऐसे) सब साधु मुनिराज। सत्ताईस गुण करी सोभित। श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ ५ ॥ इति हितोपदेश: उभय श्रेयार्थं ॥❀॥　　॥❀॥

॥❀॥ ढिन्नूं जिन नाम: ॥❀॥

॥❀॥ (अतीत चौवीसी) ॥❀॥

१ ॥ श्रीकेवलज्ञानीजी।	२ ॥ श्रीनिर्वाणीजी।
३ ॥ श्रीसागरजी।	४ ॥ श्रीमहायशजी।
५ ॥ श्रीविमलदेवजी।	६ ॥ श्रीसर्वानुभूतिजी।
७ ॥ श्रीश्रीधरजी।	८ ॥ श्रीदत्तस्वामीजी।
९ ॥ श्रीदामोदरजी।	१० ॥ श्रीसुतेजनाथजी।
११ ॥ श्रीस्वामीजी।	१२ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी।
१३ ॥ श्रीसुमतिनाथजी।	१४ ॥ श्रीशिवगतिजी।
१५ ॥ श्रीअस्तागजी।	१६ ॥ श्रीनमीश्वरजी।

१७ ॥ श्रीअनिलनाथजी । १८ ॥ श्रीयशोधरजी ।
१९ ॥ श्रीकृतार्थजी । २० ॥ श्रीजिनेश्वरजी ।
२१ ॥ श्रीशुद्धमतीजी । २२ ॥ श्रीशिवकरजी ।
२३ ॥ श्रीस्यन्दनजी । २४ ॥ श्रीसम्प्रतिस्वामीजी ।
इति अतीत चतु र्विंशति तिर्थंकरेभ्यो नमः ॥✡॥

॥✡॥ (वर्त्तमान चौवीसी) ॥✡॥

१ ॥ श्रीऋषभदेवजी । २ ॥ श्रीअजितनाथजी ।
३ ॥ श्रीसंभवनाथजी । ४ ॥ श्रीअभिनन्दनजी ।
५ ॥ श्रीसुमतिनाथजी । ६ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी ।
७ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी । ८ ॥ श्रीचंद्राप्रभुजी ।
९ ॥ श्रीसुविधिनाथजी । १० ॥ श्रीशीतलनाथजी ।
११ ॥ श्रीश्रेयांसजी । १२ ॥ श्रीवासुपुज्यजी ।
१३ ॥ श्रीविमलनाथजी । १४ ॥ श्रीअनन्तनाथजी ।
१५ ॥ श्रीधर्मनाथजी । १६ ॥ श्रीशान्तिनाथजी ।
१७ ॥ श्रीकुंथुनाथजी । १८ ॥ श्रीअरनाथजी ।
१९ ॥ श्रीमल्लिनाथजी । २० ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी ।
२१ ॥ श्रीनमिनाथजी । २२ ॥ श्रीनेमनाथजी ।
२३ ॥ श्रीपार्श्वनाथजी । २४ ॥ श्रीमहावीरस्वामीजी
इति वर्त्तमान चतुर्विंशति तिर्थंकरेभ्यो नमः ॥✡॥

॥✡॥ (अनागत चौवीसी) ॥✡॥

१ ॥ श्रीपद्मनाभ जी । २ ॥ श्रीसूरदेव जी ।
३ ॥ श्रीसुपार्श्वजी । ४ ॥ श्रीस्वयंप्रभुजी ।

५ ॥ श्रीसर्वानुभूतिजी । ६ ॥ श्रीदेवश्रुतजी ।
७ ॥ श्रीउदयप्रभुजी । ८ ॥ श्रीपेढ़ालप्रभुजी ।
९ ॥ श्रीपोट्टिलप्रभुजी । १० ॥ श्रीशतकीर्त्ति देवजी ।
११ ॥ श्रीमुनिसुव्रतनाथजी । १२ ॥ श्रीअममनाथजी ।
१३ ॥ श्रीनिष्कषायदेवजी । १४ ॥ श्रीनिष्पुलाकदेवजी ।
१५ ॥ श्रीनिर्ममनाथजी । १६ ॥ श्रीचित्रगुप्तिनाथजी ।
१७ ॥ श्रीसमाधिनाथजी । १८ ॥ श्रीसंवरनाथजी ।
१९ ॥ श्रीयशोधरजी । २० ॥ श्रीविजयनाथजी ।
२१ ॥ श्रीमल्लिप्रभुजी । २२ ॥ श्रीदेवप्रभुजी ।
२३ ॥ श्रीअनन्तप्रभुजी । २४ ॥ श्रीभद्रङ्करजी ।
इति भविष्यत्तु विंशति तिर्थंकरेभ्यो नमः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (वीसविहरमांन नामानि) ॥ॐ॥

१ ॥ श्रीसीमन्धरजी । २ ॥ श्रीयुगमन्धरजी ।
३ ॥ श्रीबाहुजी । ४ ॥ श्रीसुबाहुजी ।
५ ॥ श्रीसुजातजी । ६ ॥ श्रीस्वयंप्रभजी ।
७ ॥ श्रीऋषभाननजी । ८ ॥ श्रीअनन्तवीर्यजी ।
९ ॥ श्रीसुरप्रभुजी । १० ॥ श्रीविमलजी ।
११ ॥ श्रीवज्रधरजी । १२ ॥ श्रीचंद्राननजी ।
१३ ॥ श्रीचंद्रबाहुजी । १४ ॥ श्रीभुजङ्गजी ।
१५ ॥ श्रीनेमप्रभुजी । १६ ॥ श्रीईश्वरजी ।
१७ ॥ श्रीवीरसेनजी । १८ ॥ श्रीमहाभद्रजी ।
१९ ॥ श्रीदेवयशजी । २० ॥ श्रीअजितवीर्यजी ।
॥ॐ॥ इति विंशति विहरमान तिर्थंकरेभ्यो नमः ॥ॐ॥

॥※॥ (च्यार साखतानामः) ॥※॥

१ ॥ श्रीऋषभाननजी । २ ॥ श्रीचंद्राननजी ।

३ ॥ श्रीवारिषेणजी । ४ ॥ श्रीवर्द्धमानजी ।

इति चत्वार नाम साखता भवति ॥※॥ ॥※॥



॥※॥ श्रीपंचपरमेष्टिने नमः॥※॥ णमो अरिहंताणं ॥ णमो सिद्धाणं ॥ णमो आयरियाणं ॥ णमो उवज्झायाणं ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ सव्वपाव प्पणासणो ॥ मंगलाणंच सव्वेसिं ॥ पढमंहवइ मंगलं ॥१॥ पद ९ ॥ संपदा ८ ॥ अक्षर ६८ ॥ गुरु ७ ॥ लघु ६१ ॥

॥※॥ अथ सकल तिर्थंकर नमस्कार लि० ॥※॥

॥※॥ श्रीइष्टदेवाय नमः ॥※॥ जयउसामिय ॥ २ ॥ रिसह सेत्तुंजि उज्जिंत पहुनेमिजिण। जयउवीरसच्च उरमंडण । भरवच्छहि मुणि सुव्वय । महुरिपास दुह दुरिअ खंडण। अवर विदेहजि तित्थयर। चिहुं दि

खित्तिदिसिजंकेवि । तोआणागयसंपयं । वंदुं जिणसव्वेवि ॥२॥ कम्मभूमिहिं २॥ पढमसंघयणि उक्कोसउ सत्तरिसउ । जिणव राणविहरंतलब्भइ । नवकोडीकेवलिण । कोडिसहस्सनवसाहु संपय संपइ जिणवरवीससुणि । दुइकोडीवरनाणि । समणाकोडीसहस्सदुइ । थुणिजइ निच्चविहाणि ॥१॥ सत्ताणवइसहस्सा लक्खा छप्पन्नअट्ठकोडीओ चउसयछायासीआ । तिह्वक्केचेइ एवंदे ॥२॥ वंदेनवकोडिसयं । पणवीसंकोडिलक्खतेवन्ना । अट्ठावीससहस्सा । चउसयअट्ठासिआपडिमा ॥३॥ जंकिंचि नामतित्थं सग्गेपायालेमाणुसेलोए जाइं जिणबिंबाइं. ताइं सव्वाइं वंदामि ॥४॥ णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २॥ पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं॥५॥धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं । धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं । बुद्धाणं बोहियाणं मुत्ताणंमोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंत मक्खयमव्वाबाह मपुणरावत्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणंसंपत्ताणं णमोजिणाणं जिअभयाणं ॥९॥ जेअअईआसिद्धा जेअभविस्संति । अणागएकाले संपइअवट्टमाणा सव्वेतिविहेणवंदामि ॥१०॥ पद ॥३३॥ संपदा ॥९॥ अक्षर ॥२९७॥ गुरु ॥३३॥ लघु ॥२६४॥ जावंतिचेइ

आइं । उड्ढ अ अहेअतिरिअलोएय । सव्वाइं ताइं वंदे । इह संतो तत्थसंताइं ॥ १ ॥ इच्छामिखमासमण० । इच्छाकार० भगवन् । जावंतकेविसाहू । भरहेरवएमहाविदेहेअ । सव्वेसितेसिपणओ । तिविहेण तिदंडविरआणं ॥ २ ॥ अक्षर ॥ ७२ ॥ ※ नमोर्हतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ※ ।

※। उवसग्गहरंपासं । पासंवंदामिकम्मघणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं । मंगलकल्लाणआवासं ।१। विसहरफुलिंगमंतं । कंठेधारेइजोसयामणुओ । तस्सगहरोगमारी । दुट्ठजराजन्तिउवसामं । २ । चिट्ठउदूरेमंतो । तुज्झपणामो विबहुफलोहोइ । नरतिरिएसुविजीवा । पावंति नदुक्खदोहग्गं॥३॥तुहसम्मत्तेलद्धे । चिंतामणिकप्पपाय वब्भहिए । पावंतिअविग्घेणं । जीवाअयरामरंठाणं ॥ ४ ॥ इअसंथुओ महायस । भत्तिब्भरनिब्भरेणहिअएण । तादेव दिज्जबोहिं भवेभवेपासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तुति ॥

※॥ जयवीयराय जगगुरु होउममं तुहपभावओ । भयवं भवनिव्वेओ । मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ । गुरुजणपूआपरत्थकरणंच । सुहगुरुजोगोतव्वयणसेवणा आभवमखंडा ※ ॥ २॥ ※ अरिहंतचेइयाणं । वंदणवत्तियाए । अनत्थूकही । एक नवकारनोकाउसग्गकरी एकथूईनीगाथा कहे इतिचैत्यवंदनकं ॥ ※

अथ इरियावही ।

इच्छामिखमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएणवंदामि ॥ इतिक्षमाश्रमणदंडकः ॥ गुरु २

लघु ३५॥ (इच्छाकारेणसंदिसह भगवन्) इरिआवहिअंपडिक्क
मामि इच्छं इच्छामिपडिक्कमिउं। इरिआवहियाए विराहणा
ए गमणागमणे पाणक्कमणे बीअक्कमणे हरिअक्कमणे ओसा
उत्तिंग पणगदगमट्टीमक्कडा संताणासंकमणे जेमेजीवा
विराहिआ। एगिंदिआ बेइंदिआ तेइंदिआ चउरिंदिआ
पंचिंदिआ। अभिहया वत्तिआ लेसिया संघाइआ संघ
ट्टिआ। परिआविया किलामिआ उद्दविआ ठाणा ठाणं
संकामिआ जीवियाओववरोविआ तस्समिच्छामिदुक्कडं॥
॥७॥ तस्सउत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसो
होकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए
ठामिकाउस्सग्गं॥ पद ३२ संपदा ८ गुरु २४ लघु १७५
पदं॥ ॥ अन्नत्थऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं
छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिएपित्तमुच्छा
ए॥१॥ सुहुमेहिंअंगसंचालेहिं सुहुमेहिंखेलसंचालेहिं सुहु
मेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।२। एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो
अविराहिओ हुज्जमेकाउस्सग्गो॥३॥ जावअरिहंताणं भगवं
ताणं नमोक्कारेणं नपारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणे
णं अप्पाणंवोसिरामि ॥४॥ ॥ लोगस्सउज्जोअगरे। धम्म
तित्थयरे जिणे। अरिहंतेकित्तइस्सं। चउवीसंपिकेवली॥१॥
उसभमजिअं च वंदे। संभवमभिणंदणंच सुमइंच। पउम
प्पहं सुपासं। जिणंचचंदप्पहंवंदे।२॥ सुविहिंचपुप्फदंतं।
सीअल सिज्जंस वासुपुज्जंच। विमलमणंतंचजिणं। धम्मं
संतिंच वंदामि॥३॥ कुंथुं अरंच मल्लिं। वंदेमुणिसुव्वयं न
मिजिणंच। वंदामिरिट्ठनेमिं। पासं तहवद्धमाणंच॥४॥ एवं

मएअभिथुआ । बिहुअरयमला पहीणजरमरणा । चउवी संपिजिणवरा । तित्थयरामेपसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिअ वंदिअ महिआ । जेतेलोगस्सउत्तमासिद्धा । आरोग्गबोहिलाभं । समाहिवरमुत्तमंदिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसुनिम्मलयरा । आइच्चेसु अहिअंपयासयरा । सागरवरगंभीरा । सिद्धासिद्धिंमम दिसंतु ॥ ॥ ७ । पद २८ संपदा २८ गुरु २८ लघु २२८ [एवंसर्वअक्खर ॥ २५६ ॥] सव्वलोएअरिहंतचेइआणं करेमिकाउस्सग्गं ॥ ॥ १ ॥ पुक्खरवरदीवड्ढे । धायइसंडेअ जंबुदीवेअ । भरहेरवयविदेहे । धम्माइगरेनमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडल विद्धंसणस्स । सुरगणनरिंदमहिअस्स । सीमाधरस्सवंदे । पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥२॥ जाई जरा मरणसोगपणासणस्स । कल्लाणपुक्खलविसाल सुहावहस्स कोदेवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स । धम्मस्ससारमुवलब्भकरेपमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेभोपयउ णमोजिणमए नंदीसयासंजमे । देवन्नाग सुवन्नकिन्नरगण स्सब्भूअभावच्चिए । लोगोजत्थपइट्ठिओ जगमिणंतेलोक्कमच्चासुरं धम्मोवड्ढउसासओ विजयउ धम्मोत्तरंवड्ढओ ॥ ४ ॥ सुअस्सभगवओ करेमिकाउसग्गं ॥ पद१६ संपदा१६ गुरुअ ३४ लघुअ १८२ एवं २१६ । ॥ वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्ग वत्तिआए सिद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामिकाउसग्गं ॥ १ ॥ अन्नत्थऊससिएणं नीससिएणं इत्यादि ॥ ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं । लोगग्गमुवगयाणं णमोसयासव्वसिद्धाणं ॥१॥ जोदेवाणविदेवो

जंदेवापंजलीनमंसंति। तंदेवदेवमहिअं। सिरसावंदेमहा वीरं॥२॥ इक्कोविणमुक्कारो। जिणवरवसहस्सवद्धमाणस्स। संसारसागराओ। तारेइनरंवनारिंवा॥३॥ उज्जिंतसेल सिहरे। दिक्खानाणंनिसीहिआजस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं। अरिट्ठनेमिंनमंसामि॥४॥ चत्तारिअट्ठदसदोअ वंदिआ। जिणवराचउव्वीसं। परमट्ठनिट्ठिअट्ठा। सिद्धासिद्धिंमसदि संतु॥५॥॥॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं। सम्मद्दिट्ठि समाहिगराणं। करेमिकाउसग्गं॥१॥ अन्नत्थऊससिएणं इत्यादि संपदा २० पद २० गुरु अक्षर ३१ लघु १६७ एवं १९८॥॥ संसारदावानलदाहनीरं। समोहधूलीहरणे समीरं। मायारसादारणसारसीरं। नमामिवीरंगिरि सारधीरं॥१॥ भावावनामसुरदानवमानवेन॥ चूला विलोलकमलावलिमालितानि। संपूरिताभिनत लोकसमी हितानि। कामंनमामिजिनराजपदानि तानि॥२॥ बोधा गाधंसुपदपदवीनीरपूराभिरामं। जीवाहिंसाविरललहरी संगमागाहदेहं। चूलावेलं गुरुगममणी संकुलंदूरपारं। सारंवीरागमजलनिधिं सादरंसाधुसेवे॥३॥ आमूलालो लधूली बहुलपरिमला लीढलोलालिमाला। झंकाराराव सारा मलदलकमला गारभूमीनिवासे। छायासंभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे। वाणीसंदोहदेहे भवविर हवरं देहिमेदेविसारं॥४॥ इति वीरस्तुतिः॥

। वांदणां।

॥॥ इच्छामिखमासमणो वंदिउंजावणिज्जाए निसी

डिआए। अणुजाणह मेमिउग्गहं निसीही। अहो कायं काय। संफासं खमणिज्जो भेकिलामो अप्पकिलंताणं बहुसु भेणभे दिवसोवइक्कंतो। जत्ताभे जवणिज्जंचभे। खामेमिखमास मणो देवसिअंवइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामिखमासम णाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिछाए। मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए। कोहाए माणाए मायाए लोभाए। सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवया राए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए। जोमेअईयारोकओ तस्सखमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥ ॥ अक्षर ॥ १९८ ॥



। साध्वालोयणा ।

॥ ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। देवसिअं आलो एमि। इच्छंआलोएमि। जोमेदेवसिओ अईआरोकओ। काईओ वाईओ माणसिओ। उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ। अणायारो अणिछि यव्वो। असमणपावग्गो। नाणेतहदंसणेचरित्ते। सुएसामाइए तिण्हंगुत्तीणं। चउण्हंकसायाणं। पंचण्हं महव्वयाणं। छण्हं जीवनिकायाणं। सत्तण्हंपिंडेसणाणं। अट्ठण्हं पवयणमाईणं। नवण्हंबंभचेरगुत्तीणं। दसविहेसमणधम्मे। समणाणं जोगाणं जंखंडिअं जंविराहिअं। तस्समिछामिदुक्कडं ॥ ॥

। श्रावकआलोयणा ।

॥ ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। देवसियं आलोएमि

इच्छं आलोएमि। जोमे देवसिओ अइयारोकओ । काइओ वाइओ माणसिओ। उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो। अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ। अणायारो अणच्छियव्वो असावगपाउग्गो। नाणेतह दंसणे चरित्ता चरित्ते। सुए सामाइए तिण्हंगुत्तीणं। चउण्हंकसायाणं। पंचण्हंमणुव्वयाणं। तिण्हं गुणव्वयाणं। चउण्हं सिक्खावयाणं। वारसविहस्स सावग धम्मस्स। जंखंडिअं जंविराहिअं। तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥卐॥

॥卐॥ठाणेकमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते। हरिअकाय संघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे छप्पइयासंघट्टे। सव्वस्स विदेवसिअ। दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिअ। इच्छाकारे णसंदिसह। इच्छंतस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ १ ॥卐॥ संथाराउव ट्टणकी। आउट्टणकी। परिअट्टणकी। पसारणकी। छप्पइयासं घट्टणकी। अचक्खुविसयकायकी। सव्वस्सविराइअ। दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ। इच्छाकारेणसंदिसह। इच्छंतस्समिच्छामिदुक्कडं ॥१॥卐॥ इच्छाकारेणसंदिसह भगवन्। अभुट्ठिओमि अब्भिंतर। देवसिअंखामेउं। इच्छं खामेमि देवसिअं। जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तियं। भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे। आलावे संलावे। उच्चासणे समासणे। अंतरभासाए उवरिभासाए। जंकिंचि मज्झविणय परिहीणं सुहुमंवा वायरंवा। तुब्भेजाणह अहंनजाणामि। तस्स मिच्छामिदुक्कडं। ॥卐॥ इति गुरुवंदणा ॥卐॥

॥卐॥ करेमि भंते सामाइयं। सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जावनियमं पज्जुवासामि। दुविहं तिविहेणं। मणेणं वायाए काएणं। न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते।

पडिक्कमामि । निंदामि । गरहामि । अप्पाणं वोसिरामि ॥॥ करेमि भंते पोसहं । आहार पोसहं । देसउ । सव्वउ वा । सरीरसक्कार पोसहं । सव्वउ बंभचेर पोसहं । सव्वउ अव्वावार पोसहं । सव्वउ चउव्विहे पोसहे । जाव ज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जु वासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते । पडिक्कमामि निंदामि । गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥॥ आयरियउवज्झाए । सीसेसाहम्मिए कुलगणेवा । जेमे कयाकसाया । सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स । भगवउ अंजलिं करियसीसे । सव्वं खमावइत्ता । खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥२॥ सव्वस्स जीवरासिस्स । भावउ धम्मनिहियनियचित्तो । सव्वं खमावइत्ता । खमामि सव्वस्स अहियंपि ॥ ३ ॥॥ ॥ सुवर्णशालिनी देयाद् । द्वादसांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदासह्य । मसेवश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ चतुवर्णायसंघाय । देवी भवनवासिनी । निहत्य दुरितान्येषा । करोतु सुखमक्षतं ॥२॥ यासां क्षेत्रगतास्संति । साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयंतस्ता । रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ ॥॥ इति क्षेत्रदेवतास्तुतिः ॥॥

॥॥ जय महायश २ । जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय । जय समत्थ परमत्थजाणय । जय२ गुरु गरिम गुरु । जय दुहत्तसत्ताणताणय । थंभणयट्ठिय पासजिण । भवियह भीमभवत्थु । भय अवणिंताणंतगुण । तुज्झतिसंझ नमोत्थु ॥१॥

अथ सामायक पोसहपारवागाथा ।

॥*॥ भयवं दसणभद्दो । सुदंसणो थूलभद्दवयरोय । सफलीकयगिहचाया । साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं । नासइ पावं असंकियाभावा । फासुअदाणे निज्जर । अभिग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मढमणो । कित्तियमित्तंपि संभरइ जीवो । जंचन संभरामि अहं । मिच्छामेदुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जंजंमणेण चिंतिय । मसुहं वायाइ भासियं किंचि । असुहं काएणकयं । मिच्छामे दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसंठियस्स । जीवस्स जाइ जो कालो । सोसफलो बोधव्वो । सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥*॥ सामायकविधै लीधो विधै कीधो विधिकरतां अवधि आसातना लागी होय दसमनका दस वचनका बारै काया का बत्तीस दूषणां मांह जो कोई दूषण लागो होय सो सहु मनकर वचनकर कायायें करी मिच्छामिदुक्कडं ॥*॥ इति सामायिक पोसहपारवागाथा ॥*॥

॥*॥ सिरिथंभणयट्ठियपाससामिणो । सेसतित्थसामीणं । तित्थसमुन्नयकारणं । सुरासुराणंच सव्वेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणत्थं । काउसग्गं करेमि । सत्तीए भत्तीएगुणसुट्ठिय । संघस्स समुन्नयनिमित्तं ॥ २ ॥*॥ नमोस्तु वर्द्धमानाय । स्पर्द्धमानाय कर्म्मणा । तज्जयाव्याप्तमोक्षाय । परोक्षाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या । ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं । कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्द्दित जंतुनिर्वृतिं । करोति यो जैनमुखांबुदोद्गतः । सशुक्रमा

सोद्भवदृष्टिसंनिभो । ददातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिरां ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा लीढभृंङ्गीकुरङ्गं । मुखशशिनमजस्रं विभ्रती याविभर्त्ति । विकचकमलमुच्चैः सास्त्वचिंत्यप्रभावा । सकलसुखविधात्री प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥*॥ इति वीरस्तुतिः ॥*॥

॥*॥ परसमयतिमिरतरणिं । भवसागरवारितरणवरतरणिं । रागपरागसमीरं । वंदे देवं महावीरं ॥ १ ॥ निरुद्धसंसारविहारकारि । दुरन्तभावारिगणानिकामं । निरन्तरं केवलिसत्तमा वो । भवावहं मोहभरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागम रूढगूढ । संमोहपंकहरणामलवारिपूरं । संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं । वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलभरलोभा लीढलोलालिमाला। वरकमलनिवासे हारनीहारहासे । अविरलभवकारा गारविछित्तिकारं । कुरुकमलकरेमे मङ्गलं देविसारं ॥ ४ ॥*॥ इति वीरस्तुतिः ॥*॥

॥ * ॥ कमलदलविपुलनयना । कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी । कमलेस्थिता भगवती । ददातु श्रुतदेवतासौख्यं ॥ १॥ ज्ञानादिगुणयुतानां । स्वाध्यायध्यान संयमरतानां । विदधातुभुवनदेवी । शिवंसदासर्व साधूनां ॥२। यस्यांक्षेत्रं समाश्रित्य । साधुभिःसाध्यतेक्रिया । साक्षेत्रदेवतानित्यं । भूयान्नःसुखदायिनी ॥३॥*॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुति ॥*॥

॥ * ॥ श्रीसेढीतटनीतटे पुरवरे श्रीस्थंभनेस्वर्गिरौ । श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधा धीशैःसमारोपितः । संसक्तःस्तुतिभिर्जलैः शिवफलस्फूर्यत्फणापल्लवः । पार्श्वःकल्पतरुःसमे

प्रथयतां नित्यं मनोवांछितं॥१॥आधिव्याधिहरोदेवो । जीरा वल्लिसिरोमणिः पार्श्वनाथोजगन्नाथो । नतुनाथोनृणां श्रिये ॥ २ ॥ ॥ इति पार्श्वस्तुतिः ॥ ॥

॥ ॥ कल्याणकमलागेहं । नीलदेहंमहासहं । नवधंम्रा विध पार्श्वं । सदाध्यायामिमानसं ॥१॥ इति ॥॥ चउक्कसाय पडिमल्ल ल्लूरण दूज्जयमयणमाण मसमूरण। सरसपियंगुवस्त गयगामिय । जयउपासभुवणत्तयसामिय ॥ १ ॥ जसतणुकंतिकडपसिणिद्धउ सोहइफणमणिकिरणालिद्धउ । नंनवजल हरतडिलयलंछिय। सोजिणपासपयछउ वंछिय ॥ १ ॥ ॥ इति श्री पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥ ॥

॥ सर्वमंङ्गलमांङ्गल्यं। सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं सर्व धर्म्माणां । जैनं जयतु शासनं ॥ १ ॥ मङ्गलं भगवान् वीरो मङ्गलं गौतमःप्रभुः । मङ्गलं स्थूलभद्राद्या । जैनो धर्म्मोस्तु मङ्गलं ॥२ ॥ ॥ शिवमस्तु सर्व जगतः । परहितनिरता भवंतु भूतगणाः। दोषाः प्रयान्तु नाशं । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ ३ ॥॥ दासानुदासा इव सर्वदेवा । यदीय पादा ब्जतले लुठन्ति । मरुस्थली कल्पतरुः सजीयात् । युग प्रधानो जिनदत्त सूरिः ॥ ॥ सिद्धांतसिंधुर्जगदेकबंधु । युगप्रधानः प्रभुतां दधानां । कल्याणकोटी प्रकटो करोतु । सूरीश्वरो श्रीजिनभद्रसूरिः ॥ ५ ॥ ॐ ।

॥ अथ साधुप्रतिक्रमण सूत्र ॥

॥ चत्तारि मङ्गलं । अरिहंता मङ्गलं । सिद्धा मङ्गलं । साहूमङ्गलं । केवलिपन्नत्तो धम्मो मङ्गलं ॥ १ ॥ चत्तारि

लोगुत्तमा । अरिहंतालोगुत्तमा । सिद्धा लोगुत्तमा । साहू लोगुत्तमा । केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ २ ॥ चत्तारिसरणंपवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धे सरणं पवज्जामि । साहूसरणं पवज्जामि । केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ३ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं । * पगामसिज्झाए । निगामसिज्झाए । संथारा उवट्टणाए । परियट्टणाए । आउंटणाए । पसारणाए । छप्पइया संघट्टणाए । कुइए कक्कराइए । छीएजंभाइए । आमोसेससरक्खामोसेआउलमाउलाए । सोअणवत्तिआए । इत्थी विप्परियासिआए । दिट्ठी विप्परियासिआए । मण विप्परियासिआए । पाणभोयण विप्परियासिआए । जोमे देवसियो अइआरोकउ । तस्समिच्छामि दुक्कडं । पडिक्कमामिगोअरचरिआए । भिक्खायरिआए । उग्घाडकवाड उग्घाडणाए । साणावच्छादारा संघट्टणाए । मंडीपाहुडिआए । बलिपाहुडिआए । ठवणापाहुडिआए । संकिएसहसागारे । अणेसणाए । पाणेसणाए आणभोयणाए । पाणभोयणाए । बीअभोयणाए । हरिअभोयणाए । पच्छाकम्मिआए पुराकम्मिआए । अदिट्ठहडाए । दगसंसट्ठहडाए । रयसंसट्ठहडाए पारिसाडणि आए पारिट्ठावणिआए ओहासणभिक्खाए । जं उग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिसुद्धं पडिग्गहिअं । परिभुत्तंवा जंनपरिट्ठविणिअं । तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ ※ ॥ पडिक्कमामि चाउक्कालं । सिज्झायस्स अकरणयाए । उभउ कालं भंडोवगरणस्स । अप्पडिलेहणाएदुप्पडिलेहणाए । अप्पमज्जणाए दुप्पमज्जणाए । अइक्कमे वइक्कमे । अइयारे अणायारे । जोमेदेवसिउ अइआरोकउ ।

तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ ॥ पडिक्कमामि एगविहेअसंजमे । पडिक्कमामि दोहिंबंधणेहिं। रागबंधणेणं दोसबंधणेणं । पडिक्कमामि तिहिंदंडेहिं। मणदंडेणं वयदंडेणं कायदंडेणं। पडिक्कमामि तिहिंगुत्तीहिं। मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए। पडिक्कमामितिहिंसल्लेहिं। मायासल्लेणं नीयाणसल्लेणं मिच्छादंसणसल्लेणं। पडिक्कमामि तिहिंगारवेहिं। इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं। पडिक्कमामि तिहिं विराहणाहिं। नाणविराहणाए दंसणविराहणाए चरित्तविराहणाए। पडिक्कमामिचउहिंकसाएहिं। कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं। पडिक्कमामि चउहिंसन्नाहिं। आहारसन्नाए भयसन्नाए मेहुणसन्नाए परिग्गहसन्नाए। पडिक्कमामिचउहिंविगहाहिं। इत्थिकहाए भत्तकहाए देसकहाए रायकहाए। पडिक्कमामिचउहिंझाणेहिं। अट्टेणंझाणेणं रुद्देणंझाणेणं धम्मेणंझाणेणं सुक्केणंझाणेणं। पडिक्कमामि पंचहिंकिरिआहिं। काइयाए। अहिगरणियाए। पाउसिआए। पारितावणीआए। पाणायवायकिरिआए। पडिक्कमामिपंचहिं कामगुणेहिं। सद्देणं रूवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पडिक्कमामिपंचहिं महव्वएहिं। पाणायवायाउवेरमणं मुसावायाउवेरमणं अदिन्नादाणाउवेरमणं मेहुणाउवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं। पडिक्कमामि पंचहिंसमईएहिं। इरिआसमिईए भासासमिईए एसणासमिईए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेलजल्लसंघाण पारिट्ठावणिआसमिईए। पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं। पुढवि

सुद्दे सु । पन्नरस कम्मभूमीसु । जावंति केविसाहू । रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा । पंचमहव्वयधारा । अट्ठारसहस्स सीलंगधारा । अक्खयायारचरित्ता । तेसव्वे । सिरसा मणसा । मत्थएणवंदामि ॥ खामेमि सव्व जीवे । सव्वे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे सव्वभूएसु । वेरंमज्झन केणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइ्अनंदिअ । गरहिअ दुगुंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो । वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ २ ॥ ॥

इति श्रीसाधुप्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥ ॥

॥ ॥ सच्चित्त १ । दव्व २ । विगई ३ ॥ वाहण ४ । तंबोल ५ । वत्थ ६ । कुसुमेसु ७ ॥ पाणहि ८ । सयण ९ । विलेवण १० ॥ बंभ ११ । दिसि १२ । न्हाण १३ । भत्तेसु १४ ॥ इति चउद नियम गाथा ॥ ॥

। अथ वंदित्तुसूत्र ।

॥ ॥ वंदित्तु सव्वसिद्धे । धम्मायरिएअ सव्वसाहूअ । इच्छामि पडिक्कमिउं । सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जोमेवयाइआरो । नाणेतहदंसणे चरित्तेअ । सुहमोअ बायरोवा । तंनिंदे तंच गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मी । सावज्जे बहुविहेअ आरंभे । कारावणे अकरणे । पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं । चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेणव दोसेणव । तं निंदे तंच गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे । ठाणेचंकमणे अणाभोगे । अभिउगे अनिउगे । पडिक्कमे० ॥५ ॥ संकाकंखविगिंछा । पसंसतहसंथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे । पडिक्कमे० ॥६॥ छकाय

समारंभे। पयणेअ पयावणेअ जे दोसा। अत्तट्ठाय परट्ठा। उभयट्ठाचेव तंनिंदे ॥ ७ ॥ पंचराहमणुव्वयाणं। गुणव्वयाणंच तिएहमइआरे। सिक्खाणंच चउरहं। पडिक्कमे० ॥८॥ पढमे अणुव्वयम्मी। थूलगपाणाइवायविरईउ। आयरिअमप्पसत्थे। इत्थपमायप्पसंगेणं ॥९॥ वहबंधछविछेए। अइभारेभत्तपाणवुछेए। पढम वयस्स इआरे। पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीएअणुवयम्मी। परिथूलग अलिअवयण विरइओ। आयरिअमप्पसत्थे। इत्थपमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसारहस्सदारे। मोसुवएसेअकूडलेहेअ। बीअवयसइआरे। पडिक्कमे० ॥ १२॥ तइएअणुव्वयम्मी। थूलगपरदव्वहरणविरइउ। आयरिअमप्पसत्थे। इत्थपमायप्पसंगेणं ॥१३॥ तेनाहडप्पउगे। तप्पडिरूवे विरुद्धगमणेअ। कूडतुल्लकूडमाणे। पडि० ॥१४॥ चउत्थेअणुव्वयम्मी। निच्चं परदारगमण विरइउ। आयरिअमप्पसत्थे इत्थपमा० ॥ १५ ॥ अपरिग्गहीया इत्तर। अणंग वीवाह तिव्वअणुरागे। चउत्थवयस्सइआरे। पडिक्क० ॥ १६ ॥ इत्तोअणुव्वए पंचमम्मी। आयरिअमप्पसत्थंमि। परिमाणपरिछेए। इत्थ० ॥ १७ ॥ धणधन्नखित्तवत्थु। रुप्पसुवन्नेअ कुविअ परिमाणे। दुप्पएचउप्पयम्मी पडि०। १८। गमणस्सय परिमाणे। दिसासुउड्ढं अहेयतिरिअंच। वुड्ढिसइ अंतरद्धा। पढमम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमिअ मंसंमिअ। पुप्फेअफलेअ गंधमल्लेअ। उवभोग परीभोगे। बीअम्मिगुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबुद्धे। अप्पोलदुप्पोलिएअ आहारे। तुछोसहिभक्खणया। पडि० ॥ २१॥ इंगाली वणसाडी। भाडी फोडीसु वज्जए

कम्मं । वाणिज्जंचेव दंतलक्ख । रस केसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लणंकम्मं । निल्लंछणंच दवदाणं । सरदहतलावसोसं । असईपोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमुसलजंतग । तणकट्ठे मंतमूलभेसिज्जे । दिन्ने दिवावएवा । पडि० ॥२४॥ न्हाणुवट्टण वन्नगविलेवणे । सद्दरूवरसगंधे । वत्थासणआभरणे । पडि० ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए । मोहरिअहिगरण भोगअइरित्ते । दंडंमिअणट्ठाए । तइअम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ २६ ॥ तिविहेदुप्पणिहाणे । अणवट्ठाणेतहासइ विहुणे । सामाइयवितहकए । पढमेसिक्खावएनिंदे ॥ २७॥ आणवणे पेसवणे । सद्देरूवेअ पुग्गलक्खेवे । देसाविगासिअम्मी । वीएसिक्खावएनिंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही । पमायतहचेवभोयणाभोए । पोसहविहिविवरीए । तइएसिक्खावएनिंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खमणे । पिहणेववएसमच्छरेचेव । कालाइक्कमदाणे । चउत्थे सिक्खावएनिंदे ॥३०॥ सुहिएसुअ दुहिएसुअ । जोमे असंजएसुअणुकंपा । रागेणवदोसेणव तंनिंदेतंचगरिहामि ॥३१॥ साहूसुसंविभागो । नकओतव चरणकरणगुत्तेसु । संतेफासुअदाणे तंनिंदे तंचगरिहामि ॥३२॥ इहलोएपरलोए । जीविअमरणेअआससपओगे । पंचविहो अइआरो मामज्झंहुज्जमरणंते ॥३३॥ काएणकाइअस्स । पडिक्कमे वाइअस्सवायाए । मणसामाणसिअस्स । सव्वस्सवयाइयारस्स ॥३४॥ वंदणवयसिक्खागारवेसु । सन्नाकसायदंडेसु । गुत्तीसुअ समिईसुअ । जोअइआरोतंनिंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिट्ठीजीवो । जइविहुपावं समायरेकिंचि । अप्पोसिहोइवंधो । जेणननिद्धंधसंकुणइ ॥३६॥ तंपिहुसप

ड्डिक्कमणं। सप्परिआवंसउत्तरगुणंच। खिप्पंउवसामेइ।
वाहिव्वसुसिक्खिउविज्जो ॥ ३७ ॥ जहाविसंकुट्टगयं। मंत-
मूल विसारया। विज्जाहणंत मंतेहिं। तोतंहवइ निव्विसं
॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहंकम्मं। रागदोससमज्जिअं। आलो
अंतोअ निंदिंतो। खिप्पंहणइसुसावउ ॥ ३९ ॥ कयपावो
विमणूसो। आलोइअनिंदिउ गुरुसगासे। होइअइरेग
लहुउ। उहरिअभरुव्वभारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण।
सावउजइवि बहुरउहोइ दुक्खाणमंतकिरिअं। काहीअ
चिरेणकालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणाबहुविहा। नयसं
भरिआपड्डिक्कमणकाले। मूलगुण उत्तरगुणे। तंनिंदेतंचग
रिहामि ॥ ४२ ॥ तस्सधम्मस्सकेवलिपन्नत्तस्स। अब्भुट्ठिउमि
आराहणाए। विरउमिविराहणाए। तिविहेणपड्डिक्कंतो।
वंदामिजिणेचउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंतिचेइआइं। उड्ढेअ
अहेअतिरिअलोएअ। सव्वाइंताइं वंदे। इहसंतातत्थसंताइं
॥ ४४ ॥ (भगवन्) जावंतिकेविसाहू। भरहेरवए महाविदेहे
अ। सव्वेसितेसिंपणउ। तिविहेणतिदंडविरिआणं ॥ ४५ ॥
चिरसंचियपावपणासणीए। भवसयसहस्स महणीए। चउ
वीसजिणविणिग्गयकहा। वउलंतुमेदिअहा ॥ ४६ ॥ ममंमंग
लमरहंता। सिद्धासाहूसुअंचधम्मोअ। सम्मद्दिट्ठीदेवा।
दिंतुसमाहिंचबोहिंच ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणंकरणे। किच्चा
णमकरणेहि पड्डिक्कमणं। असद्दहणेअतहा। विवरीअ
परूवणाएअ ॥ ४८ ॥ खामेमिसव्वजीवे। सव्वेजीवाखमंतुमे
मित्तीमेसव्वभूएसु। वेरंमज्झनकेणइ ॥ ४९ ॥ एवमहंआलोइ
अनिंदिय। गरहिअदुगुंछियंसम्मं। तिविहेणपड्डिक्कंतो।

वंदामिजिणेचउवीसं ॥ ५० ॥ ※ ॥ इति श्री श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र समाप्तः ॥ ※ ॥

। अथ दसपच्चक्खाणविचार लिख्यते ।

॥※॥ तहां प्रथमचउदै नियमसंभारै सोइसतरै पच्चक्खाणकरै ।※। उग्गएसूरे नमोक्कारसहियं (मुंठसी) पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अन्नत्थणाभोगेणं। सहसागारेणं। महत्तरागारेणं। सव्वसमाहिवत्तियागारेणं॥ विगइउंपच्चक्खाइ। अन्नत्थणाभोगेणं। सहसागारेणं। लेवालेवेणं। गिहत्थसंसिट्ठेणं। उक्खित्तविवेगेणं। पडुच्चमक्खिएणं। पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं। सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ। अन्नत्थणाभोगेणं। सहसागारेणं महत्तरागारेणं। सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। वोसरइ॥ इति नवकारसीपच्चक्खाण ॥ १ ॥

॥※॥तथा जो श्रावक नियम संभारै नहीं। सो विगइका [अर] देसावगासीका आगार नपचखे। निकेवल। नवकारसी आदिक पच्चक्खांण करै ॥ यथा।

॥ ※ ॥ उग्गएसूरे नमोकार सहियं पच्चक्खाइ। चउव्विहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अन्न०। सह०। वोसरामि। इति नवकारसी पच्चक्खाण ॥ आगार २॥

॥※॥ पोरसीं (मुंठसिं) पच्चक्खामि। उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अन्नत्थ०

सहसा० । पच्छन्नकालेणं । दिसामोहेणं । साहुवयणेणं । सव्व० । विगईउ पच्चक्खामि । इत्यादि पुर्व्वकीपरेकहणा । इति पोरसी पच्चक्खाण ॥ २ ॥ आगार ६ ॥

॥ ॥ इसीमाफक साढपोरसीनो पच्चक्खाण जाणवो (इतना विशेष है । पोरसिं पच्चक्खाइ (इहां) साढपोरसिं पच्चक्खाइ कहणो ॥ इति साढपोरसीपच्चक्खाण आगार६ ॥

॥ ॥ सूरे उग्गए । पुरमड्ढं अवड्ढं (वा) पच्चक्खाइ । चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अन्न० । सह० । पच्छ० । दिसामो० । साहु० । मह० । सव्व० । विगइउ पच्चक्खाइ इत्यादि पूर्व्ववत् । इति पुरमड्ढपच्चक्खाण ॥ ३ ॥ आगार ७ ॥ ॥

॥ ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पच्चक्खाइ । उग्गए सूरे । चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अन्न० । सह० । पच्छ० । दिसा० । साहु० । सव्व० । एकासणं व्यासणं (वा) पच्चक्खाइ । दुविहं । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अन्न० । सह० । सागारि आगारेणं । आउट्टणपसारेणं । गुरुअब्भुट्ठाणेणं । पारि० । मह० । सव्व० । देसावगासियं । इत्यादि पूर्व्ववत् ॥४॥ इति एकासण व्यासण पच्चक्खाणआगार ८॥

॥ ॥ पोरसिं साढपोरसिंवा पच्चक्खाइ । उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अन्न० । सह० । पच्छन्नका० । दिसा० । साहु० । सव्व० । एकासणं एगट्ठाणं पच्चक्खाइ । दुविहं । तिविहं । चउव्विहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अन्न० । सह० ।

सागारि आगारेणं । गुरुअभ्भुट्ठाणेणं । पारिट्ठाव० । मह० । सव्व० । देसाव० । इत्यादि पूर्व्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकट्ठाणा पच्चक्खाण । आगार ७ ॥ ☸ ॥

॥ ☸ ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पच्चक्खाइ । उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । सा० । अण० । सह० । पछ० । दिसामो० । साऊ० । सव्व० । आयंबिलं पच्चक्खाइ । अणत्थ० । सह० । लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिट्ठेणं । उक्खित्तविवेगेणं । पारिट्ठा० । मह० । सव्व० । एकासणं पच्चक्खाइ । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । सागारिआगारेणं । आउट्टणपसारेणं । गुरुअभ्भुट्ठाणेणं । पारिट्ठा० । मह० । सव्व० । वोसरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पच्चक्खाण । आगार ८ ॥

॥ ☸ ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पच्चक्खाइ उग्गएसूरे । चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अणत्थ० । सह० । पछ० । दिसा० । साऊ० । सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चक्खामि । अन्न० । सह० । लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिट्ठेणं । उक्खित्तविवेगेणं । पडुच्चमक्खिएणं । पारि० । मह० । सव्व० । एकासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अन्न । सह । सागा० । आउट्ट० । गुरु० । पा० । मह० । सव्व० । देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खामि । अण० । सह० । मह० । सव्व० वोसरामि ॥ इति निवीपच्चक्खाण ॥ ☸ ॥

॥ ☸ ॥ सूरे उग्गए अभ्भत्तट्ठं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० ।

मह० । सव्व० । देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खामि । अण० । सह० । म० सव्व० वोसरामि ॥ ॥ इति चउव्विहार उपवास पच्चक्खाण ८ ॥ ॥

॥ ॥ सूरे उग्गए अभत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । पाणहार पोरसिं । साढपोरिसिं । पुरमड्ढं । अवड्ढंवा । पच्चक्खाइ । अण० । सह० । पच्छन्न० । दिसा० । साहु० । सव्व० । देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खामि । अ० । स० । म० । सव्व० । वोसरामि ॥ ॥ इति तिविहार उपवास पच्चक्खाण ॥

॥ ॥ पोरसिं साढपोरसिं पुरमड्ढं अवड्ढंवा पच्चक्खामि उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहारं असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । पछ० । दिसा० । साहु० । सव्व० । एकासणं एगट्ठाणं दत्तियं पच्चक्खामि तिविहं चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । सागा० । गुरु० । मह० । सव्व० । विगइउ पच्चक्खामि इत्यादि पूर्व्ववत् देसावगासियं इत्यादि पूर्व्ववत् ॥ ॥ इति दत्तिपच्चक्खाण ९ ॥ ॥

॥ ॥ दिवसचरमं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । मह० । सव्व० । वोसिरइ ॥ इति दिवसचरमपच्चक्खाण १० ॥ ॥

॥ ॥ दिवसचरिमं पच्चक्खामि दुविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । अण० । सह० । मह० । सव्व० । वोसरामि देसावगासियं पूर्व्ववत् ॥ ॥ इति दिवसचरमदुविहार पच्चक्खाण ॥ ॥

॥※॥ पाणाहारदिवसचरिमं पच्चक्खामि अण० । सह० । मह० । सव्व० । वोसिरामि ॥※॥ इति पाणाहार उपवास रो पच्चक्खाण ॥※॥

॥※॥ भवचरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । मह० । सव्व० । वोसरइ ॥आगार४॥(भवचरिम दोआगार कापिणहोय) ॥※॥ इति भवचरिमपच्चक्खाण ॥※॥

॥※॥ तथा इमगंठसहि । मुंठसहि । अंगुट्टसहि । प्रमुख अभिग्गह पच्चक्खाणके पिण ए च्यार आगार । अण० । सह० । मह० । सव्व० । वोसरइ । पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुके होय ॥※॥ इति अभिग्गह पच्चक्खाण ॥※॥

॥※॥ अहस्सं भंते । तुह्माणं समीवे । देसावगासियं पच्चक्खामि । दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ । दव्वउणं देसावगासियं । खित्तउणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालउणं मज्जत्तधारणा प्रमाणे । जावनियमं पच्चक्खामि । भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि । छलेणं नछलिज्जामि । असेणकेविरायंकेणवा । एसो परिणामो नपडिवज्जइ । ताअभिग्गह । अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । वोसिरइ ॥※॥ इति देसावगासीपच्चक्खाण ॥※॥

॥ ※॥ तथा साधु पच्चखाणकरै । तवदेसावगासी नही पचखै । अतिविहार उपवासमें आबिलमें निवीमें एकासण प्रमुखमें पाणसकाई आगारपच्चक्खै (सोदिखावेहै) पाणस्स लेवाडेणवा । अलेवाडेणवाअत्थेणवा बहुलेणवा ससित्थेणवा असित्थेण वा वोसरइ ॥ ※ ॥

॥ ॥ अथ प्रत्याख्यान आगारार्थ लिख्यते। उग्गए सूरे नमोकार सहियं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं।(अर्थ) इहां गुरु कहै पच्चक्खाइ। शिष्य कहै पच्चक्खामि। पच्चक्खाइका अर्थ सर्वठिकाणों अंगीकार वाची जाणनो (जैसें) सूरज उदय हुयांवाद। नवकारसी व्रत अंगीकार करूं। यह पच्चक्खाण(मुहूर्त कहतां)दोघड़ी काल उपरांत। जहां तक नवकार गुणकार पारुं नहिं। तहां तक (चउव्वि०)। च्यारूं आहारनो त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं। सो च्यार प्रकारको आहार कहतेहै। असणं॥ पाणं॥ खाइमं॥ साइमं। (असणं व्याख्या) असण कहतां। अन्न। चोषा ज्वारि वरटी मूंग चिणा गहूं प्रमुख सर्वधांन। सत्तू गहूंकों आदिलेकर सव तरैको आटो॥ सब तरैका साग तरकारी। लाडूप्रमुख सर्वपकवान। सूरणादिक सर्वकंद। दूध दही मांडादिक। सर्वकवली वस्तु। होंग वेसण विरहाली। लूंण सैंधवादिक। इत्यादिक सर्व असणमांहि जाणना॥१॥ (पाणं। व्याख्या) आकरा जवोदक तुषोदक तंदुलोदक उष्णोदक (शुद्धोदक कहितां) सर्व अप्पकाय। इतनी जातका पांणी॥२॥ (खाइमं।व्याख्या) खादिम। सूंखडी नालेर खजूर द्राख सेक्योधांन आंबा केला काकडी अखरोट खारक विदाम प्रमुख सव जातनोमेवो। सव जातनाफल॥ खादमजाणवा॥३॥ (साइमं। व्याख्या) स्वादिम।'तंबोल सूंठि मिरच पींपर हरडै वहेडा तुलछी कसेलो काथो जेष्ठीमधु तज तमाल पत्र इलायची लवंग वाय विडंग अजमो अजमोद कुलिंजण चिणकबोबा कचूर नागर मोथ कंटासेलियउ कुंभटउ पांन सुपारी पुहकरमूल जवासामूल बावची बांउलछालि ववछालि खेजड छालि खयरसार ए सर्वस्वादिम जांणवा॥४॥ ॥ हिवै अनाहार कहतेहैं॥ नींवछालि मूल पांन सिली गोमूत गिलोय किरायतो अतिविस कूडउ सूकडिराख रोहिणी छालि पींपलामूल वज धमासउ रींगणी एलियो चिणोठी कयर बोरिनामूल इत्यादि अणाहार पिण इच्छासंयुक्त छोडणा (यहजो) इच्छाविना

अनिष्ट पणों लीजै । जवतो अनाहारहै । जोइच्छासंयुक्त भावतालीजैतो आहार को दूषण लगै । अव पच्चक्खाणाकै आगारोंका अर्थ जाण्यां विना पच्चक्खाण करै । सो आधो पच्चक्खाण कह्यो । इस कारण किञ्चिन्मात्र आगारोंका अर्थ लिखते हैं । जिस पच्चक्खाणका जितना आगार है ॥ सो आगार रख करि हमारै पच्चक्खाण है । (अन्नत्थणा भोगेणं ॥ १ ॥ व्याख्या) अनाभोगटाली । अनाभोग कहिये अत्यन्त विस्मृत होणेसें (किया जो) पच्चक्खाण यादनरहै । भूलकर कोई चीज मुंहमें घाली होय। वाखाणेमें आई होय । पिण जाण्यां पीछे तत्काल नाख देवै तो पच्चक्खाण भाजै नही । जाण्यां पछै भक्षण करै तो पच्चक्खाण भाजै निश्चै सेती ॥ १ ॥ ॥ पच्छन्न कालेणं । (व्याख्या) कालकी प्रच्छन्नता । आकाशै गर्द उडतीहोय । वा आकाशै वद्दलछाया होय ।' तथा पर्वत प्रमुखकीओट आयजावे । सूरज न दीसै । तव भरम सु पच्चक्खाण काल संपूर्ण हुवो जाण कर भोजन करै तो व्रत भंग न होय ॥ ३॥ ॥ सहस्सागारेणं । (व्याख्या) सहसाकार कहीयै अत्यन्त उतावलकै जोगै । अथवा अकस्मात् विलोवतां तोलतां घृत प्रमुखको छींटो मुखमें पडै । तो । व्रतभंग न होय ॥ २ ॥ ॥ दिसा मोहेणं (व्या०) दिसाकों अजाणतो वैसै । जे दिशा भूल मनुष्य । पूर्वदिशाकुं पश्चिम दिसि जाणें । इस कारणसें । पच्चक्खाण काल पूर्णहुवा विनां भोजन करै तो व्रतभंग न होय ॥४॥ साहुवय णेणं (व्याख्या) साधूकै वचनसें उग्घाडा पोरिसी आदिक भरमसंयुक्त सुणकर । पच्चक्खाण काल पूरण हुवो जाणि कर भोजन करै तो व्रतभंग न होय ॥ ५ ॥ ॥ सव्व समाहि वत्तिया गारेणं (व्याख्या० ।) पच्चक्खाण काल पूरण हुवां प्रथमहीज अकस्मात् शूलादिक रोग उपजै । तिससें परिणामोंकी थिरता रहै नही । आर्त्त रौद्र ध्यान उत्पन्न होय । तव उसरोगीकुं रोग मिटावण वावत औषधादिक देवै । वा आपलेवै । तो पच्चक्खाण भंग नही ॥६॥

महत्तरागारेणं (व्या०) पच्चक्खाण पालणेसें। जितनी कर्मों की निर्जरा होती है। उसनिर्जरासें अधिक निर्जरा होणेका कारण। और कोई पुरुषसेंवन नहीआवे। असा जो। चैत्यसंघादि सम्बन्धी प्रयोजन होणे सें। पच्चक्खाण काल पूरण हुवा विनां भोजन करै तो व्रत भंग नही ॥७॥ ॥ सागारी आगारेणं (व्या०) गृहस्थ देखतां साधु भोजन न करै। असी जीन राजकी आज्ञाहै। इसीसें कोई साधुनें एकासनादिक पच्चक्खाण किया है। वह साधु भोजन अवसरै भोजन करणेकुं बैठाहै तिस वषत कोईक गृहस्थ साधु पास आय बैठे। तब साधु उस ठिकाणां सु उठ कर औरठिकाणे जाय करि भोजन करै तो व्रत भंगनही। अरगृहस्थको यह आगार ऐसें है) जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उस आर्यां उठि कर और ठिकाणे भोजन करै तो पच्चक्खाण भंग नही ॥ ८ ॥ ॥ आउट्टण पसारेणं (व्या०) पगप्रमुख जो एकट्ठे करणेसें। तथा पसारणे सें। थोडासा आसन चल जाय। तोभी व्रत भंग नहीं ॥ ९ ॥ ॥ गुरु अब्भुट्ठाणेणं (व्या०)आपका गुरु आणेसें। तथा आपसें कोई वडा पुरुष आणेसें। विनय निमित्त। एकासणादि व्रतमें। भोजन करतो थिण आसन छोड उठ खडो होय। तो भी व्रत भंग नही ॥ १० ॥ ॥ पारिट्ठावणियागारेणं (व्या०) (सब पच्चक्खाणां में यह आगार साधुका है) जिस आहार नाखणेसें बहुत जीव विराधना होती जांण कर (गुरु कहै) यह आहार परठोमत। एसरस आहार है। ऐसी आज्ञा देवे तो एकासणादि व्रतधारी साधु। दूसरी वखत आहार करै। तो भी व्रत भंग नही ॥ ११ ॥ ॥ लेवालेवेणं (व्या०) भोजन करणेका थाल प्रमुख भाजन। तिसके मांहि घृतादिक विगय द्रव्यका अंश लग्या है। तिसकुं हाथ प्रमुख सें पूंछगेरा। तिस पर भी किंचित वेसलुसमा रह गया है। उस भाजनमें आयंविलादि व्रतधारी भोजन करै। तो भी व्रत भंग नही ॥ १२ ॥ ॥ उक्खित्तविवेगेणं (व्याख्या)

आयंविलादि पच्चक्खाणमें ॥ नही खाणें जोग्य जो विगय द्रव्य प्रमुख। (तिसका फरस) खाणें योग्य द्रव्यसें होगया होय। वहखाणें में आवै। तो भी व्रत भंग नही। परंतु जो विगय आदि दे करि पतला द्रव्य सोहाथसें उठाय सक्ते नही। ऐसे द्रव्यसें फरस हुवा होय। तो उसणें खाणसें व्रत भंग नही होय ॥१३॥ ॥ गिहत्थ संसिट्ठेणं(व्या०) भोजन पुरसे जिस सेती। ऐसी कुडछी आदि दे करि भाजन। विगय प्रमुख द्रव्य सें वेमालुम खरडी होय। प्रत्यक्षनि जरसें कदाचित्मालुम न होय। तव जो उसही वासणसें भोजन पुरसे। तोभी व्रत भंग नही होय।१४।पडुच्चमुक्खिएणं (व्या०) सर्वथा लुखी रोटी षाषराप्रमुख द्रव्य किञ्चिन्मात्र घृतादिकसुं वेसालुम चोपडणें में आया है। परंतु घृतादिका का सवाद नही मालुम पड़ताहै। तो (नीवी) पच्चक्खाण मध्य उस द्रव्य कुं खाणेंमे आवैतो व्रत भंग नही। और जो धारविगय लेवै तो व्रत भंग होय ॥ १५ ॥ ॥ इति पच्चदशसङ्ख्यानां प्रत्याख्याना काराणां लेशतोऽर्थं संपूर्णम् ॥





॥ ॥ दोचेव नमुक्कारो। आगाराछच्च हुंति पोरसिए। सत्ते वयपुरमड्ढे। एगासणंमि अट्ठेव ॥१॥ सत्ते गट्ठाणस्सओ। अट्ठेवय आयंबलंमि आगारा। पंच वयभत्तट्ठे। छप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंचचउरो अभिग्गहे। निव्वीए अट्ठनवय आगारा। अप्पावरणे पंचउ हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्यागाथा ॥

॥ ॥ सूत्र अर्थ साचो सरदहुं १॥ सम्यक्तमोहनी २॥ मिथ्यात्वमोहनी ३॥ मिश्रमोहनी ४॥ परहरु ४॥ (यह च्यार पडिलेहण मुहपतीपोलतीविरीयां कही जै)। काम राग १॥ स्नेहराग२॥ दृष्टिराग ३॥ परिहरु (यहसातेबोल प्रथम कही जै। सुगुरु १॥ सुदेव २॥ सुधर्म्म ३॥ आदरुं। कुगुरु १॥ कुदेव २॥ कुधर्म्म ३॥ परिहरुं। ज्ञान १॥ दर्शन २॥ चारित्र ३॥ आदरु। (यहनवपडिलेहणडावे हाथे करीये)। ज्ञानविराधना १॥ दर्शनविराधना २॥ चारित्रविराधना ३॥ परिहरुं। मनोगुप्ति १॥ वचन गुप्ति २॥ कायगुप्ति ३॥ आदरुं। मनोदंड १॥ वचन दंड २॥ कायदंड ३॥ परिहरुं। (यह नव पडिलेहण जीमणै हाथे करीये)। ए पचवीस बोल मुहपतीना जाणवा। हिवै पचवीस पडिलेहण अङ्गनो कहैछै॥ कृष्णलेश्या १॥ नीललेश्या २॥ कापोतलेश्या ३॥ परिहरुं। मायेनि लाडे। ऋद्धिगारव १॥ रसगारव २॥ सातागारव ३॥ मुखै परिहरुं। मायाशल्य १॥ नियाणाशल्य २॥ मिच्छादंशणशल्य ३॥ हीये परिहरुं। क्रोध १॥ मांन २॥ (एदोय जीमणैकांधे काखे)। माया १॥ लोभ २॥ (एदोय डावैकांधै वगलै)। हास्य १॥ रति २॥ अरति ३॥ (एतीन डावै हाथेपरिहरुं। भय १॥ शोक २॥ दुगंछा ३॥ एतीन जीमणे हाथे परिहरुं। पृथ्वीकाय१। अप्पकाय२। तेउकाय३। (ए तीनडावे पगै परिहरुं। वाउकाय १॥ वनस्पतिकाय २॥ त्रसकाय ३॥ (ए तीन जीमणेपगै परिहरुं॥ इति मुहपत्ती पडिलेहण संपूर्णम्॥ ॥

॥ ॥ थापनाचार्यनो तेरै पडिलेहणना ॥ १३ बोल चिंतवीजै सो लिखिते हैं। सुद्धस्वरूपधारूं १॥ ज्ञान १॥ दर्शन २॥ चारित्रसहित ३॥ सरदहणासुद्धि १॥ प्ररूपणा सुद्धि २॥ दर्शनासुद्धि ३॥ सहित पंचाचारपालूं १॥ पलावुं २॥ अनुमोदुं ३॥ मनोगुप्त १॥ वचनगुप्त २॥ काय गुप्त ३॥ एवं १३ बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरण सूत्रहत्तौ ॥ ॥

। अथ आलोयणलिख्यते ।

॥ ॥ आजूणा च्यार पहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय। सातलाख पृथ्वीकाय। सातलाख अप्प काय। सातलाख तेऊकाय। सातलाख वाऊकाय। दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय। चवदैलाख साधारण वन स्पतिकाय। दोयलाख बेन्द्री। दोयलाख तेंद्री। दोय लाख चउरिंद्री। चारलाख देवता। चारलाख नारकी। च्यारिलाख पंचेन्द्रीतिर्यंच। चवदैलाख मनुष्य। एवं च्यार गति। चौरासीलाख जीवायोनिमें। जो कोई जीवहण्यो होय। हणायो होय। हणतां प्रतें भलोजाण्यो होय। तेस हु मन। वचन। कायाइं करी मिछामिदुक्कडं॥ ॥ प्राणाति पात १। मृषावाद २। अदत्तादान ३। मैथुन ४। परिग्रह ५। क्रोध ६। मान ७। माया ८। लोभ ९। राग १०। द्वेष ११। कलह १२। अभ्याख्यान १३। परपरीवाद १४। पशुन्य १५। अरति रति १६। मायामृषावाद १७। मिथ्यात्वसल्य १८। एअढारहपापस्थानक सेव्या होय।

सेवाया होय। सेवतांप्रतें भलाजाण्यां होय। ते सह्न मन वचन कायाइं करी। मिच्छामि दुक्कडं ॥※॥ ज्ञान दर्शन। चारित्र। पाटी। पोथी। ठवणी। कमली। नवकारवाली। देवगुरुधर्मनी आसातनाकरी होय। पनरेंकर्मादाननी आसेवनाकरी होय। राजकथा। देशकथा। स्त्रीकथा। भोज्य कथा। करी होय। और जोकोई पाप परनिंदा यें करी कीधुं होय। कराय होय। करतांप्रतें अणुमोद्या होय। ते सरजे। मन। वचन। कायायेंकरी। दिवसअतीचार आलोयणेंकरी। पडिक्कमणा मांहिं आलोउं। तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ इति आलोयणलघुअतीचार ॥※॥

। अथ दृहअतीचार लिख्यते ।

॥ अ॰ ॥ नाणंमिदंसणंमिअ। चरणंमितवेय तहयविर यंमि। आयरणंआयारो। इअए सो पंचहाभणिउ ॥ १ ॥ अर्थः। ज्ञानाचार १॥ दर्शनाचार २॥ चारित्राचार ३ ॥ तपाचार ४ ॥ वीर्याचार ५॥ एवं पांचविधि आचारमांहि जिकोअतीचार। पक्षदिवसमांहि। सूक्ष्म बादर। जांणतां अणजांणतां। हुओ होइ। तेसह्न मनवचनकायाइंकरी मि च्छामिदुक्कडं ॥※॥ (तत्रज्ञानाचारना आठअतीचार)। काले विणए बहुमाणे। उवहाणे तहयनिह्नवणे। वंजणअत्थतदु भए। अट्ठविहोनाणमायारो॥१॥ ज्ञानकालवेलामांहिपढि उं गुणिउं नही। अकालेंपढिउं। विनयहीन। बहुमांनहीन उपधांनहीन। अनेउपाध्यायकनें। नहीपढिउ। अथवा अने

ताकने पढिउं । अनेरोगुरु कह्यो । व्यंजन अर्थ तदुभय । कूडोपव्यो । देववांदणै । पडिक्कमणै । सिज्झाय करतां पढतां गुणतां । कूडोअच्चर कानेंमात्रे । अधिकोउंछो । आगलपाठ तभण्यो । सूत्र अर्थ कूडाभण्या । भणीनेंवीसार्‍यो । तपोधन तणेधर्मे । काजो अणउधर्‍यै । दांडीअणपडिलेही । वसती अणसोधी । असिज्झाई अणोझाकालवेलामांहि । दसवैकालिक प्रमुख । सिद्धांतभण्यो गुण्यो । योगवह्यांपषै भण्यो । ज्ञानोपगरण पाटी पोथी ठवणी कवली नवकरवाली सांपडा सांपडी । वहीदस्तरी । उलीयाकागलप्रमुख प्रतें । आसातनाहुई । पगलागो । थूकलागो । उसीसेंमूंक्योकनें छतांआहारनीहारकीधो । ज्ञानद्रव्य भक्षणउपेक्षणकीधो । प्रज्ञापराधे विणास्यो । विणसतोउवेष्यो । छतोसक्तें सारसंभालनकीधी । ज्ञांनवंत प्रतें मच्छरवह्यो । अवज्ञाआसातना कीधी । कोईप्रतें भणतां गुणतां अंतराय अपघातकीधो । मतिज्ञान । श्रुतिज्ञान । अवधिज्ञान । मनपर्यव ज्ञान । केवलज्ञान । ए पांचज्ञानतणी । असद्दहणाकीधी । कोईतोतलोबोबडोहस्यो वितर्क्यो । आपणा जाणपणातणो गर्वचिंतव्यो ॥※॥ अष्टविधज्ञानाचारविषईउ जिकोअतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्मवादर । जाणतां अजांणतां हुवोहोय । तेसहु मन वचन कायाइंकरी मिछामिदुक्कडं ॥※॥ दर्शणाचारनाआठअतीचार ॥※॥ निस्संकिय निक्कंखिय । निव्वितिगिछा अमूढदिठ्ठीअ । उववूहथिरीकरणे । वछल्लपभावणे अट्ठ ॥ १ ॥ देवगुरुधर्मतणेविषै । निसंकपणो नकीधो । तथाएकांत निश्चयधर्‍यो नही । सगलाईमत

भलाछै। एहवी श्रद्धाकीधी। धर्मसंबंधियाफलतणै विषै। निःसंदेहबुद्धधरीनहीं। चारित्रियासाधुसाधवीतणा मलिमलीनगात्रदेषी। दुगंछाउपजावी। मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावनादेषी। मूढदृष्टि पणोकीधो। संघमांहि गुणवंत तणी। अनुपबृंहणा। अस्थिरीकरणं। अवात्सल्य अप्रीति अभक्तिचिंतवी। संघमांहि थिरीकरण। वात्सल्यशक्ति छते प्रभावनानकीधी। देवद्रव्यविणासिउं। विणसतुं उवेषीउं। छतोशक्तें सारसंभालनकीधी। साधर्मिकस्युं कलह कर्मकीधो। जिनभवनतणी चौरासी आसातनाकीधी। गुरु प्रतें तेतीस आसातना कीधी। अधौत वस्त्रे देवपूजा कीधी। बिंबं ठामपाखे देवपुज्या। वासकूंपीकलसतणोठबकोलागो। मुखतणोवाफलागी। ठवणारिय हाथ थकी पडीउं। पडिलेहवोवीसार्यो। नवकारवालीनें पगलागो। दर्शनाचार विषईउंजिकोअतीचार० ॥ ३ ॥ ॥ ॥

॥॥ चारित्राचारना आठअतीचार ॥ पणिहाणयोग जुत्तो। पंचहिंसमइहिं तिहिंगुत्तीहिं। एसचरित्तायारो। अट्ठविहोहोइनायव्वो॥१॥ इरियासमिती १॥ भासासमिती २॥ एषणासमिती ३॥ आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिती ४॥ उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाणपारिट्ठावणीयासमिती ५॥ मनोगुप्ति १॥ वचनगुप्ति २॥ कायगुप्ति ३॥ पंचसमिती तीनगुप्ति। रूडीपरें पालीनहीं ॥॥ साधुतणैंसदैव अष्टविध चारित्राचार विषईउंजिको अती चार० ॥ ४ ॥

॥॥विसेषतः श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्त्वमूलबारहव्रत श्रीसम्यक्त्वतणा पांच अतीचार ॥॥ संकाकंखविगंछा। परं

सतइसंयमोकुलिंगीसु । संका श्रीअरिहंततणी । बल अति
सयज्ञानलक्ष्मी गांभीर्यादिकगुण । सास्वतीप्रतिमा । चारि
त्रियानाचारित्र । जिनवचनतणो संदेहकीधो । (आकांक्षा)
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह
पूजा विणायग । हनुमंत । दूल्हेवमादिक । ग्रामगोत्र देश
नगर जूजूआ । देवदेहराना प्रभावदेषी । रोगि आतंकै ।
इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या । बौद्धसांख्यादिक
सन्यासी । भरडा । भगत । लिंगिआ । योगी । दरवेश ।
अनेराई दर्शनियानो । कष्टमंत्रचमत्कारदेषी । परमार्थ-
जाण्यांविण भूल्या । अनुमोद्या । कुशास्त्रशीख्या । सांभ-
ल्या । सराध । संवत्सरी । होली । बलेव । माहीपूनिम ।
अजापडिवा । प्रेतबीज । गोरबीज । विणायगचोथ ।
नागपांचम । झूलणाछठ । सीलसातम । द्रोआठम । नउ
ली नवम । अहवदसम । व्रतइग्यारस । वत्सबारस ।
धनतेरस । अनंतचौदस । आदित्यवार । उतराइण । नवो
दक । ज्यागभोगउतारणा कीधा । पीपलपाणीघालणा ।
घलाव्या । घरबाहिर । कुई तलाव नदी समुद्र कुंड पुन्यहेतु
स्नानकीधा । दांनदीधा । ग्रहणशनीश्वर माहमास नवरात्रि
नाहिया । अजाणनाथाप्या । अनेराई व्रतोलाकीधा करा
व्या विचिकित्सा धर्मसंबन्धियाफलतणो संदेहकीधो । जिण
अरिहंत । धर्मनाआगर । विश्वोपकार सागर । मोक्षमार्ग
दातार । देवाधिदेवबुद्धैसुद्धभावे नपज्या नमान्या । महातमा
ना मातपाणीतणी दुगंछाकीधी । कुचारित्रिया देखी ।
चारित्रियाउपरि अभावऊर्ड । मिथ्यात्वीतणी प्रभावना

देखी। प्रसंसाकीधो। प्रीतिमांडी। दाक्षिणलगै तेहनोधर्म मान्युं॥ ॥ श्रीसमकित विषै। अनेरोजिकोअतीचार। पक्षदिवसमांहि। सूक्ष्मबादर जाणतां अजाणतां ज्ञ होय ते सह्र मनवचनकायाइंकरी मिछामिदुक्कडं॥१॥ ॥ पहिलै प्राणातिपात विरमणव्रतै पांच अतीचार॥॥ वह बंध छविछ्वेए। अइभारेभत्तपाणवुछेए०। द्विपद चौपद प्रतें रीस वसें गाढोघाउ प्रहारघाल्यो। गाढै बंधनबांध्या। घणो भारघीड्या। निर्लांछनकर्मकीधा। चारिपांणीतणीवेला सार संभारनकीधो। लहिणैदेणै किणही प्रतें लंघाव्युं। तेणें भूखे आपणजीम्या। अणगलपाणी वावर्यो। ह्रडै गल्यो नही। गलाव्योनही। अणगलपांणीझोल्या। लूगड़ाधोया। ईंधण अणसोध्योबाल्युं। साप कानषजूरा। सुलहला। माकड़। जूआं। गोगीड़ा। साहतां मूआंदूषव्यां। ह्रडैथानकनमूंक्या। कीड़ो। मकोड़ी। उदेही। घीवेली। कातरा। चूड़ेलि। पतंगिया। ड़िड़का। अलसिया। ईली। कूति। डांस। मसा। बगतरा। माषी प्रमुष। जेकेईजीव। विणठा चांपिया। दूहव्या। मालाह लावतां। पंखी काग चिड़कलाना ईड़ा फूटा। अनेरा एकेंद्रियादिक जिकेजीव। विणठा। चांप्या। दूहव्या। हालतां। चालतां। अनेरुंकांइकामकाज करतां विहंसपणुं कीधुं। जीवरक्षाह्रडै नकीधो। संषारोसूकव्यो। सुलयाधान तावड़ैदीधा। दलाव्या। भरड़ाव्या। षाटला। तावडैझाटक्या। मूंक्या। मूंकाव्या। जीवाकुलभूमिलीपावी। वासी गार राषी। रषावी। दलणें षांडणें लीपणे। ह्रडीज

यणा नकीधो । आठमचउदसना नियमभांगा । घणीक रावी ॥ पहिला प्राणा तिपातव्रतविषईडं । अनेरो०॥ १ ॥ ॥॥ बीजे मृषावाद विरमणव्रतें । पांचअतीचार ॥॥ सहसारहस्सदारे । मोसुवएसेय कूडलेहेय ॥ सहसाकार । किणहेकप्रतें । असूत्तोआलदीधो । किणांइकप्रतें । एकांतें वातकरतांदेखो । तुम्हे तो राजविरुद्धचिंतवोछो । इत्यादिक कह्यु ं । स्वदारमन्त्र भेदकीधो । अनेराई किणहोनो । मंत्र आलोचमर्मप्रकास्यो । कि णहीनें कूडो बुद्धदीधो । कूडो लेख लिख्यो । कूडोसाखभरो । थापणमोसोकीधो । कन्या । ढोर । गा । भूम । संबंधिया । लहणे । दयणै । व्यवसायवाद वढावढिकरतां । मोटको झूठ बोल्यु ं । हाथ पग भणी गालदीधो । करड़कामोड़ा । अधर्म्म वचन बोल्या ॥॥ बोजे मृषावादव्रत०॥ २ ॥ ॥ तीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पांच अतीचार ॥ तेनाहडप्पओगे । घरबाहिर खेत खलैपराईवस्तु । अणमोकलावी । लीधो । दीधी । वावरी । चोरीनीवस्तु मोललीधो । चोरधाड़ीत प्रतें संवलदीधु ं । संकेतकह्यु ं । विरुद्ध राज्यातिक्रमकीधो । नवापुराणा सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तुतणा भेलसंभेल कीधो । खोटे तोल मान माप वुहरया । दाणचोरीकीधी । साटे लांच लीधी । माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची । जुदीगांठ कीधी । किणहीनें लेखेपलेखे भूलव्यु ं । पडीवस्तु उलवी लीधी ॥॥ तीजे अदत्तादान व्रत० ॥ ३ ॥॥ चौथे स्वदा रसंतोषमैथुनव्रते पांच अतीचार ॥ अपरिग्गहियाइत्तर । अणंग वीवाह तिव्वअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन । इत्वर

परिगृहीतागमन । विधवा । वेस्या । स्त्रीकुलाङ्गना । स्वदार सोकतणे विषे । दृष्टिविपर्यासकीधो । सरागवचन वोल्या । आठम चउदस अनेराई पर्व तिथितणा नियमभागा । घर घरणाकोधा । कराव्या । अनुमोदीया । कुविकल्पचिंतव्या । अनङ्गक्रीडाकीधी । परायाविवाहजोड्या । कामभोग तणे विषे तीव्राभिलाषकीधो । कुस्वप्नलाधा । नटविटपुरुषसुं हासुं कीधुं ॥ ※ ॥ चोथे स्थूलव्रतवि० ॥ ४ ॥ ※ ॥ पांचमेंपरिग्रह परिमांणव्रते पांचअतीचार । धण धन्नखित्तवत्थु ॥ धन धान्य खेत्र वस्तु रूप्य सुवर्ण कुप्य द्विपद चतुष्पद नवविध परिग्रहतणा । नियम उपरांत दृद्धिदेखी । मूर्छालगे संक्षेपनकीधो । माता पिता पुत्र कलत्रादिकतणे लेखेकीधो । परिग्रहपरिमाणलेई पढ्यो नही । पढीवीसारिउं । नियम वीसारिया ॥ पांचमे परिग्रहपरिमाण व्र० ॥५॥ ※ ॥छट्ठे दिगविरमणव्रते पांच अतीचार ॥※॥ गमणस्सय परिमाणे ऊर्द्धदिसि । अधोदिसि । तिर्यगदिसि । जायवाआयवातणो नियम जे कोईअजाणेभागो । एकगमासं कोधो । वीजीग मावधारी । विस्मृतिलगे अधिकभूमिगया । पाठवणो आवी मोकली ॥※॥ छट्ठे दिग्व्रतवि० ॥ ६ ॥ ※ ॥ सातमें भोगोपभोगपरिमाणव्रत ॥ जेहना भोजनआश्री पांचअतीचार ॥ अनेंकर्म ऊंती १५ ॥ एवं २० अतीचार ॥ ※ ॥ सच्चित्ते पडिबुद्धे । अपोलदुपोलयंचआहारे० ॥ सच्चित्ततणे नियम लीधे अधिक सच्चित्तलीधुं । तथा सच्चित्तमिलीवस्तु । अपक्वाहार । दुपक्वाहार । तुच्छोषधीतणोभक्षणकीधुं । होला उंबी पउंककाकडी भक्षवाकीधा । सुलयाधानप्रमुख भक्षण

कीधा ॥ सचित्तदव्वविगइ । पाणह तंबोलवत्थ कुसुमेसु । वाहणसयणविलेवण । बंभदिसिन्हाणभत्तेसु ॥ १ ॥ एच वदै नियम । दिनप्रतै संभाख्यासंक्षेप्यानही । लेई नियम भांग्या । बावीस अभक्ष । बत्तीस अनंतकायमांहि । आदो मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरा । काचीआंबली । गोल्हंखाधा । चोमासा प्रमुखमांहें । वासी कटोलनीरोटी खाधी । त्रिण्ह दिवसनो दहीलीधुं । मधु मदिरा माखण माटी । वैंगण पीलू पीचू पपोटा । पींपी विस । हीम । करहा । घोलवडा । अणजाण्याफल लीधां । अथाणुं । आमण बोर कात्रुं मीठुं । तिल । षसषस । काचाकोठ वडाखाधा । रात्रीभोजन कीधुं । लगवगतीवेलाई व्यालूकीधुं । दिवसउग्यांविणसीराव्या । तथा पनरेकर्म्मा दान । इंगालीकम्मे । वणकम्मे । साडीकम्मे । भाडीकम्मे । फोडीकम्मे । दंतवाणिज्ये । रसवाणिज्ये । केशवाणिज्ये । विषवाणिज्ये । जंतपीलणकम्मे । निलंछणकम्मे । दवग्गि दावणया । सरदहतलावसोसणया । असइपोसणया पांच वाणिज्य । पांचकर्म्म । पांच सामान्य । महारंभ लीहालाक राव्या । इंटवाहनीवाहपचाव्या । आणी चिणा पकवान करीवेच्या । वासीमाखणतपाव्या । अंगोठाकीधा । कराव्या । तिलादिकसंचीया । फागुणमासउपरांतराख्या । कूकडा । सूडाप्रमुखपोख्या । अनेरुंजेकांईबहुसावद्य कठोरकर्म्मा दिकसमाचर्यो । ॥*॥ सातमाभोगोपभोगव्रतविष० ॥ *॥ ॥ ७ ॥ * ॥ आठमाअनर्थदंड विरमणव्रतना । पांच अती चार । कंदप्पे कुक्कुइए० । कंदर्पलगैविटनीपरै । हास्यकुत

हल सुखादि अंगकुचेष्टाकोधो। मूरखपणालगै। कुवाही नैअसंबद्धवाक्य बोल्या। खांडा। कटारो। कुसि। कुहाडा। रथ। ऊखल। मूसल। अगन। घरटोआदिक। सजकरी मेल्या। मांग्या आप्या। कनकानस्तु ढोरलेवराव्या। अनेरु कांइपापोपदेसदोषु। अंघोल नाह्वण दांतण पगधो अणपाणो। तेलअधिवाआव्या। हींडोलेहोंच्या। राज कथा। देसकथा। भुक्तकथा। स्त्रीकथा। पराई वात कीधी। आर्त्त रौद्र ध्यानध्याया। कर्कसवचन बोल्या। कारजकामोड्या। संभेडालाया। भेंसा सांढ कूकड सींढा खानादिऊ,ऊतां कलहकरतांजोया पाचिलगै अदेखाई चिंतवी। माटी। मीठु। कणकपासिआ। काजविणु चांप्या। तेह ऊपरवयठा। आलेवनस्ततोषु दो। ढाढ। पाणी। घी रस तेल गुल। आमलवेतस। वेरजादि कालवा भाजनउघाडा मूंक्या। तेमांहि। कीडी। कंथुआ माखी। उंदर। गिरोली। प्रमुखजोवविणठा। सूना प्रमुखजीव जीवाहितै वांदिराव्या घणोनिद्राकीधो। राग द्वेष लगे। एकनेंरिद्धिपरिवारवांछो। एकनें मृत्युहाणि विमासी॥ आठमाअनर्थ दंडव्रतविष० ॥ ८ ॥ नवल। सामायकव्रतेपांच अतीचार॥ ॥ तिविहेदुप्पणिहाणे। सामायकलीधै। मनआहटदोहटचिंतव्युं। वचनसावद्य बोल्युं। कायअणपडिलेह्युं हलाव्युं। छतीवेलाइं सामा यकनलीधु। सामायकलेईउघाडैमुखबोल्या। ऊंघआवी कीधी। वीजदीवातणी उजोहीलागो। कण कपासीया माटी मीठु नील फूल हरीकायना संघट्टहूआ। पुरुषतिर्य

वैसतां नवकारमण्युंनहो । ऊठतां दिवसचरम नकीधु । निवीआंबिल उपवासादिकतपकरी । काचोपाणीपीधु । वमनथयु ॥ ॥ बाह्य तपअतिवि० ॥ ॥ अभ्यंतरतप ॥ ॥ प्रायश्चित्त विणउं० । गुरुकनें मनसुद्ध आलोयण लीधीनहो । गुरुदत्तप्रायश्चित्ततप लेखासुद्ध पुहचाड्युंनहो । देव गुरु संघ साहम्मीप्रतें विनयसाचव्योनहो । वाचना प्रच्छना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्झायकीधोनहो । धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायोनहो । कर्मक्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनुं काउसग्गनकीधो ॥ ॥ अभ्यंतरतपविषइउं० ॥ वीर्याचारना तीन अतीचार ॥ ॥ अणगुहियबलविरिउ । परक्कमइजोजहुंतठाखेसु । जुंजइ अजहाथामं । नायव्वोवीरियाचारो ॥ १ ॥ पढवै गुणवै विनय वेयावच्च देवपूजा सामायक दान सील तप भावना प्रमुख धर्मकृत्यतणें विषै । मनवचन कायातणो छतुं बल वीर्यगोपव्युं । रूडापंचाङ्ग खमासमण नदीधा बेठांपडिक्कमणुंकीधुं ॥ ॥ वीर्याचारविष० ॥ ॥ नाणाइ अट्ठपइवय । समसंलेहणपण पनरकम्मेसु । बारसतवविरिअ तिगं । चउवीसंसयअईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणंकरणे० ॥ ॥

॥ ॥ जिनप्रतिषिद्ध । बावीसअभक्ष । बत्तीसअनंतकाय । बहुबीजभक्षण । महाआरंभ महापरिग्रहादिककीधा । नित्यकृत्य देवपूजासामायकादिक । तथा तीर्थयात्रादिक नकीधा । जीवाजीवादिविचार सद्दहियानहो । आपणो कुमतिलगै उत्सूत्रप्ररूपणाकीधी । प्राणातिपात१ । मृषावाद २ । अदत्तादान ३ । मैथुन ४ । परिग्रह ५ ।

क्रोध ६ । मान ७ । माया ८ । लोभ ९ । राग १० । द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ । परपरिवाद १४ । पैशुन्य १५ । अरतिरति १६ । मायामृषावाद १७ । मिथ्यात्वशल्य १८ । एअढारहपापस्थानकमांहि । जेकांई कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवंप्रकारै श्रावकधर्म । श्रीसम्यक्त मूलबारहव्रत । चोवीसासोअतीचारमांहि । जिको अंतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय ते मुझ मनवचन कायायेंकरी मिच्छामिदुक्कडं । इति श्रीश्रावकनैबारहव्रतना अतीचार संपूर्णम् ॥ ॥

॥ अथ जयतिहुअणबत्तीसीलि ॥

॥ ॥ जयतिहुअण वरकप्परुक्ख जयजिणधन्नंतरि । जयतिहुअण कल्लाणकोस दुरिअक्करिकेसरि । तिहुअण जण अविलंघिआण भुवणत्तयसामिअ । कुणसुसुहाइं जिणेसपासथंभणयपुरट्ठिअ ॥१॥ तइं समरंतलहंतिझत्तिवर पुत्तकलत्तइं । धण सुवन्न हिरन्न पुण्ण जणभुंजइरज्जइं । पिक्खइमुक्ख असंखसुक्ख तुहपासपसाइण । इयतिहुअण वरकप्परुक्ख सुक्खइकुणमहजिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुन्नकन्न नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण चक्खुक्खीणखएणखुण्णनरसल्लिय सूलिण । तुहजिणसरणरसायणेण लहु हुंतिपुणण्णव । जय धन्नंतरि पासमहवि तुह रोगहरोभव ॥ ३॥ विज्जाजोइसमंततंत सिद्धिउ अपयत्तिण । भुवणब्भुउ अट्ठविहसिद्धि सिज्झइ तुहनामिण । तुहनामिण अविसोविसिय जलहोइ

विरत्तउ। तंतिहुअण कल्लाणकोसतुह पासनिरुत्तउ ॥४॥ खुद्द पउत्तइ मंततंतजंताइं विसुत्तइ। चरथिरगरलगहुग्गखग्ग रिउवग्गविगंजइ। दुत्थियसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइ दय करि। दुरिअइं हरउसुपासदेव दुरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुहआणाथंभेइभीमदप्पुद्धुर सुरवर। रक्खसजक्खफणिंदचोरानलजलहर। जलथलचारिरउद्दखुद्दपसुजोइणि जोइअ। इयतिहुअणअविलंघिआण जयपास सुसामिअ। ॥ ६ ॥ पत्थिअअत्थअणत्थहित्थ भत्तिब्भरनिब्भर। रोमंचंचिअचारुकाय किन्नरनरसुरवर। जसु सेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअकलिमलु। सोभवणत्तयसामिपास महमद्दउरिउबलु ॥ ७ ॥ जय जोइअमणकमलभसलभय पंजरकुंजर। तिहुअणजणआणंदचंद भवणत्तयदिणयर। जयमइमेयणिवारिवाह जयजंतुपिआमह। थंभणयट्ठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहुविहवन्नुअवन्नु सुन्नु वन्निउछप्पन्नहि। मुक्खधम्मकामत्थकाम नरनियनियसत्थहि। जंझायइबहुदरसणत्थ बहुनामपसिद्धउ। सोजोइअमणकमलभसलसुहपासपवद्धउ ॥९॥ भयविब्भलरणझणिरदसणथरहरिअसरीरय। तरलिअनयणविसन्नसुन्नगग्गरगिरकरुणय। तइं सहसत्तिसरंतिहुंतिनरनासिअ गुरुदर। मह विज्झविसज्झसइपासभयपंजरकुंजर ॥१०॥ पइं पासविविअसंतनित्तपत्तंतपविचित्तिय। बाहपवाहपवूढरूढ दुहदाहसुपुलइय। मन्नहिंमन्नुसउन्नपुन्नअप्पाणंसुरनर। इयतिहुअण आणंदचंद जयपासजिणेसर ॥ ११ ॥ तुहकल्लाणमहेसुघंटटंकारवपिल्लिअ। वल्लिरमल्लमहल्लभत्तिसुरवरगंजुल्लिअ।

हलुणफलिअ पवत्तयंतिभवणोहिमह्रुसव। इयतिहुअणआ णंदचंद जयपाससुहब्भव ॥ १२॥ निम्मल केवल किरणनिय रविहुरिअ तमपहयर। दंसिअसयलपयत्थसत्थवित्थरिअ पहाभर। कलिकलुसिअ जणघूअलोयलोयणहअगोयर। तिमिरइं निरुहरपासनाहभुवणत्तयदिणयर ॥१३॥ तुहसमर णजलवरिससित्त माणवमइमेइणि। अवरावरसुहुमत्थबोह कंदलदलरेइणि। जायइफलभरभरियहरियदुहदाह अणो वम। इयमइमेइणिवारिवाहदिसपासमइं मम ॥१४॥ कय अ विकल कल्लाणवल्लिउल्लुरिअदुहवणु।दाविअसग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगमवारणु। जयजंतुहजणएणतुल्लजंजणियहियावहु। रम्मधम्मसोजयउपास जयजंतुपिआमहु ॥ १५ ॥ भुवणार णनिवासदरिअपरदरसणदेवय। जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुरपसुवय। तुहउत्तट्ठसुनट्ठसुट्ठ अविसंठुलचिट्ठहिं। इयतिहुअण वणसीहपास पावाइं पणासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफाररफुरंतरयण कररंजिअनहयल। फलिणी कंद लदलतमाल निल्लुप्पलसामल। कमठासुरउवसग्गवग्ग संस ग्गअगंजिअ। जयपच्चक्खजिणेसपासथंभणयपुरट्ठिअ ॥१७॥ महमणुतरलुपमाणुनेय वायाविविसंठलु। नियतणुरवि अविणयसहाव आलसविहिलंघलु। तुहमाहप्पपसायदेव कारुणपवत्तउ। इयमइमाअवहीरपासपालहिविलवंतउ ॥ १८॥ किंकिंकप्पिउणेयकलुणकिंकिंवनजंपिउ। किं वनचिट्ठि उकिट्ठदेवदीणयमविलंबिउ। कासनकियनिप्फललल्लुअम्हहिं दुहसइं। तहविनपत्तउताणकिंपिपइं पहुपरिचत्ताइं ॥१९॥ तुहंसामिहुतुहं मायवप्पतुहं मित्तपियंकरु। तुहं गइतुहं

मइतु छिनताण तुउ गुरुखेमंकर। हउ दुल्लरभारिअवराउ
राउलनिम्भलउ। लोयउतुहक्कमकमल सरणिजिणपालहि
चंगउ ॥ २० ॥ पइं दिविक्खयनीरोयलोयक्किविपावियसुह
उच। किविमइं मंतमहंतकीविकिविसाहियसिवपय। किवि
गंजिअरिउवग्गकीविजसधवलिअभूअल। मइं अवहोरहिके
णपालसरणागयवच्छल ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाहनिप्पन्न
पउअण। तुहं जिणपासपरोवयारकरणिक्कपरायण। सत्तु
मित्तसमचित्तवित्तिनयनिंदअसमसण। माअवहोरिअजुग्ग
उविमइं पासनिरंजण ॥ २२ ॥ हउ बहुविहदुहतत्तगत्तु
तुहं दुहनासणपरु। हउ सुयणहकरुणिक्कठाणतुहं निरुकरु
णाकरु। हउ जिणपासअसामिसालतुहं तिहुअणसामिअ।
जंअवहोरहिमइं झखंतइयपासनसोहिय ॥२३॥ जुग्गाजुग्ग
विभागनाहनहुजोअणतुहसम। भवणुवयारसहावभाव क
रुणारससत्तम। समविसमइं किंघणनिएइ भुविदाहसमंत
उ। इयदुहवंधवपासनाहमइं पालथुणंतउ ॥२४॥ नयदीणह
दीणयमुएविअन्नविकिविजुग्गय। जंजोइयउवयारुकरइउव
यारसमुज्जय। दीणहदीणनिहीणजेणतइं नाहिणचित्तउ।
तोजुग्गउअहमेवपासपालहिमइं चंगउ ॥ २५ ॥ अहअन्न
विजुग्गयविसेसकिविमन्नहिदीणह। जंपासविउवयारुकर
इतुहनाह समग्गह। सुच्चिअकिलकल्लाणजेण जिणतुम्हप
सीयह। किंअन्नुण तंचेव देव मामइं अवहीरह ॥ २६ ॥
तुहपत्थणा नहु होइ विहल जिणजाणउ किंपुण। हउं दु
क्खिउ निरु सत्तचत्तदुक्कउ उस्सुयमण। तंमन्नउ निमिसेण
एण एउविजइ लब्भइ। सच्चंजंभुक्खियवसेण किं उंबरुप

वइ ।२७॥ तिहुअणसामिअपासनाह मइं अप्पपयासि उ। किज्जउजंनियरूवसरिसुनमुणुं बहुजंपिउ। अन्नुणजिण जगतुहसमोविदक्खिसदयासउ। जइअवगिणसितु हिजअह हकिहहोसुहयासउ ॥२८॥ जइतुहरूविणकिणविपेअ पाइणवेलविउ तउजाणु जिणपासतुम्हहउं अंगीकरिअउ। इयमहइच्छिअजंनहोइसातुहउंहावण। रक्खंतहनियकि त्तिणेयजुज्जइअवहीरण ॥ २९ ॥ एहमहारियजत्तदेवइअ न्हवणमहूसउ। जंअणलिय गुणगहण तुम्हमुणिजणअ णिसिद्धउ। इयमइं पसियसुपासनाहथंभणयपुरट्ठिअ। इय मुणिवरसिरि अभयदेवविन्नवइअणिंदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्थंभनक तीर्थराज श्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ॥

॥ अथ सातिस्मरणलि ॥

॥ ॥ अजियंजिअसव्वभयं। संतिं च पसंतसव्वगय पावं। जयगुरुसंतिगुणकरे। दोविजिणवरेपणिवयालि ॥१॥ गाहा ॥ ववगयमंगुलभावे। तेहंविउलतवनिम्मलसहावे। निरुवममहप्पभावे। थोसामिसुदिट्ठसब्भावे ॥२॥ गाहा ॥ सव्वदुक्खप्पसंतीणं। सव्वपावप्पसंतिणं। सयाअजिय संती णं नमोअजियसंतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजियजिणसुहप्प वत्तणं। तवपुरिसुत्तमनामकित्तणं। तहयधिइमइपवत्तणं। तवयजिणुत्तमसंतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआ विहिसंचिय कम्मकिलेसविमुक्खयरं। अजियंनिचियं च गु णेहिमहामुणिसिद्धिगयं। जयस्स। तिग महामुणिणोवि

असंतिअरं । सययं ममणिव्वुइकारणयंचनमंसणिअं ॥५॥ आलिंगणिअं ॥ पुरिसाजइ दुक्खवारणं । जइयविमग्गह सुक्खकारणं । अजियं संतिं च भावउ । अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥६॥ मागहिआ ॥ अरइरइतिमिरविरहिय । मुवरयजरमरणं । सुर असुर गरुल भुयगवइ । पययपणिव इयं । अजियमहमवियं सुनयनयनिउण मभयकरं । सरण मुवसारअ भुविदिविजमहियं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ संगय यं॥ तंचजिणुत्तम मुत्तमणित्तमसत्तधरं । अज्जवमद्दवखं तिविमुत्तिसमाहिनिहिं । संतिअरं पणमामिदमुत्तमतित्थय रं । संतिमुणीममसंतिसमाहिवरंदिसउ ॥८॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवंचवरहत्थिमत्थयपसत्तवित्थिणसंथियं थि रसरिच्छवच्छं । मयगललीलाय माणवरगंधहत्थिपत्थाणपत्थि अं । संथवारिहं हत्थिहत्थबाहुं । धंतकणगरुअगनिरुवहय पिंजरं । पवरलक्खणोवचिअ सोमचारुरूवं । सुइसुहमणा भिराम परमरमणिज्जवरदेवदुंदुहि । निनायमहुरयरय सुहगिरं ॥९॥ वेढउ ॥ अजिअंजिआरिगणं । जिअसव्वभयं भवोहरिउं । पणमामिअहंपयउ । पावंपसमेउमेभयवं ॥१०॥ रासालुद्धउ ॥ कुरुजणवयहत्थिणाउर । नरीसरोपढमं । तउ महाचक्कवट्टिभोए । महप्पभावो । जोबावत्तरिपुरवरसहस्स । वरणगरणिगमजणवयवई । वत्तीसारायवरसहस्साणजाय मग्गो । चउदसवररयण नवमहानिहि । चउसट्ठिसहस्स पवरजुवईण सुन्दरवई । चुलसीहयगयरहसयसहस्सामी छन्नवइगामकोडिसामी । आसी जो भारहम्मिभयवं ॥ ११॥ वेढउ ।तंसंतिंसंतिअरं । संतिसं सव्वभया । संतिंथुणामिजिणं

संतिंविहेउमे ॥१२॥ रासाणंदियअं ॥ इक्खागुविदेहनरीस र नरवसहामुणिवसहा। नवसारयससिसकलाणण। विगय तमाविहुअरया। अजिउत्तमतेअगुणेहिं महामुणि। अमि अबला विउलकुला। पणमामितेभवभयमूरण। जगसरणा ममसरणं ॥१३॥ चित्तलेहा॥ देवदाणविंदचंदसूर वंदहहतुट्ठ जिट्ठपरम। लट्ठरूवधंतरुप्पपट्टसेय सुद्धनिद्धधवल। दंतपंति संतिसत्ति कित्तिमु त्तिजुत्ति गुत्तिपवर। दित्ततेयविंदधेय सव्वलोयभाविअप्पभावणेअ। पइसमेसमाहिं ॥१४॥नारायओ ॥ विमलससिकलाइरेअसोमं। वितिमिरसूरकलाइरेअतेयं। तिअसवइगणाइरेअरूवं। धरणीधरपवराइरेअसारं ॥१५॥ कुसुमलया ॥ सत्तेय सयाअजिअं। सारीरेयबले अजिअं। तवसंजमेय अजिअं। एसथुणामि जिणं मजिअं ॥ १६ ॥ भुअंगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइनतं नवसरयससी तेयगुणेहिं पावइनतं नवसरयरवी। रूवगुणेहिं पावइ नतं तियसगणवई। सारगुणेहिं पावइनतं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवरपवत्तअं तमरयरहिअं। धीरजणथुअच्चिअं। चुअकलिकलुसं। संतिसुहपवत्तअं। तिगरणपयओ। संतिमहंमहामुणिं। सरणमुवणमे ॥१८॥ ललियअं ॥ विणओणयसिररइयंजलि। रिसिगुणसंथुअं थिमिअं। विबुहाहिव धणवइनरवइ। थुअमहिअच्चिअं बहुसो। अइरुग्गय सरयदिवायर। समहिअ सप्पभंत वसा। गयणंगणविअरण। समुइअ चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥असुरगरुलपरिवंदिअं। किन्नरो रगनमंसिअं। देवकोडिसयसंथुअं। समणसंघपरिवंदिअं ॥

॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयंअणहंअरयं । अरुअं अजियं अजियं पयउपणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसियं ॥ आगयावरविमाण दिव्वकणगरहतुरय पहकरसइहिंहुलिअं । ससंभमोरयण खुभिअललिअचलकुंडलं। गयतिरोडसोहंतमउलिमाला ॥ २२॥ वेढओ । जंसुरसंघा सासुरसंघा । वेरविउत्ताभत्ति सुजुत्ता आयरभूसिअसंभमपिंडिअ। सुट्ठुसुविम्हिअसव्वबलोघा। उत्तमकंचणरयणपरूविअ । भासुरभूसणभासुरिअंगा । गायसमोणयभत्तिवसागय । पंजलिपेसिअसीसपणामा॥२३॥ रयणमाला । वंदिऊणथोऊणतोजिणं । तिगुण मेवयपुणो पयाहिणं। पणमिऊणयजिणंसुरासुरा । पमुइआ सभव णाइतोगया ॥ २४ ॥ खित्तयं । तं महामुणिमहंपिपंजली । रागदोसभयमोहवज्जिअं । देवदाणवनरिंदवंदिअं । संति मुत्तममहातवंनमे ॥२५॥ खित्तयं। अंबरंतरवियारणि आहिं। ललियहंसवहुगामिणिआहिं। पीणसोणित्थणसाल णिआहिं।सकलकमलदललोयणिआहिं ॥२६॥ दीवयं । पीण निरंतर थणभर विणमिअगायलयाहिं। मणिकंचणपसि ढिलमेहलसोहिय सोणितडाहिं। वरखिंखिणि नेउरसति लयवलय विभूसणिआहिं। रयकर चउर मनोहर सुंदरदं सणिआहिं॥ २७ ॥ चित्तक्खरा । देवसुंदरीहिं। पायवंदि आहिं। वंदिआयजस्सतेसुविक्कमाकमा। अप्पणोनिलाडएहिं। मंडणोड्डणप्पगारएहिं। केहिंकेहिंवी। अवंगतिलयपत्तलेह नामएहिं। चिल्लएहिं संगयं गयाहिं। भत्तिसन्निविठ्ठवंदणा गयाहिं। हुंतितेवंदिआ पुणोपुणो ॥२८॥नारायओ ॥ तमहं जिणचंदं । अजिअंजिअमोहं । धुअसव्वकिलेसं । पयउपण

मामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं । थुअवंदिअस्सा । रिसिगण देवग
णेहिं। तोदेववहुहिं पयउपणमिअस्सा । जस्सजगुत्तमसासण
यस्सा। भत्तिवसागयपिंडियआहिं। देववरच्छरसावहुआहिं।
सुरवररइगुणपंडिअयाहिं ॥३०॥भासुरिअं। वंससद्दतंतिता
लमेलए तिउक्खराभिरामसद्दमीसएकएअ। सुइसमाणणेअ
सुद्धसज्जगीयपायजालघंटिआहिं । वलयमेहलाकलावनेउ
राभिराम सद्दमीसएकएय। देवनट्टिआहिं। हावभावविब्भ
मप्पगारएहिं। नच्चिऊणअंगहारएहिं। वंदिआय जस्सतेसु
विक्कमाक्कमा। तयंतिलोयसव्वसत्त संतिकारयं। पसंतसव्वपा
दोसमेसहं। नमामिसंतिमुत्तमंजिणं ॥ ३१ ॥ नारायउ । छत्त
चामर पडागजुअजव मंडिआ। झयवर मगर तुरग सिरि
वच्छसुलंछणा । दीव समुद्द मंदिर दिसागय सोहिआ।
सत्थिअ वसह सीह सिरिवच्छ सुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिययं।
सहावलट्ठा समप्पइट्ठा । अदोसदुट्ठागुणेहिजिट्ठापसायसिट्ठा
तवेणपुट्ठासिरीहिइट्ठा रिसीहिंजुट्ठा ॥३३॥ वाणवासिआ ॥
तेतवेणधुअसव्वपावया। सव्वलोगहिअ मूलपावया। संथु
आअजिअसंति पायया। हुंतुमे सिवसुहाण दायया ॥३४॥
अपरंतिका एवंतवबलविउलं थुअंमएअजियसंतिजिणजुअलं।
ववगयकम्मरयमलं। गइंगयं सासयं विमलं ॥ ३५ ॥ गाहा
तंबहुगुणप्पसायं। मुक्खसुहेणपरमेण अविसायं। नासेउ
मे विसायं। कुणउअपरिसाविअ पसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं
मोएउअनंदिं। पावेउअनंदिसेणमभिनंदिं। परिसाइवि सुह
नंदिं ममय दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा। पक्खिअ
चाउम्मासे। संवच्छर राइएय दिअहेअ ॥ सोअव्वोसव्वेहिं

उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो निसुणइ । उभउकालंपि अजिअसंति थुअं । नहु हुंतितस्सरोगा । पुव्वुप्पणावि नासंति ॥ ३९ ॥ जइइछह परमपयं । अहवाकित्ती सुवित्थडा भवणे । तातिलुक्कुद्धरणे । जिणवयणे आयरं कुणह ॥४०॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं १ प्रथम स्मरणं ॥ १ ॥ ॥ उल्लासिक्कमनक्खनिग्गयपहादंडछलेणंगिणं ॥ वंदा रूण दिसंत इव्व पयडं निव्वाणमग्गावलिं । कुंदिंदुज्जलदंतकंतिमिसउ नीहंत नाणंकुरु । केरेदोविदइज्जसोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरमजलहिनीरं जोमिनिज्जं जलीहिं । खयसमयसमीरं जोजणिज्जा गईए ॥ सयलनहयलंवा लंघए जोपएहिं ॥ अजिअ मह्वसंतिं सोसमत्थोथुणेउं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु ल्लासिभत्तिब्भरेण गुणकणमिवकित्ते हामिचिंतामणिव्व । अलमहव अचिंताणंतसामत्थउसिं । फलहइलहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअंमे ॥ ३ ॥ सयलजयहिआणं नाममित्तेणजाणं । विहडइलहु दुट्ठानिट्ठदोघट्टथट्टं । नमिरसुरकिरीडुग्घिट्टपायारविंदे । सयममजिअसंतो ते जिणिंदेभिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वड्ढएदेहदित्ती । विलसइ भुविमित्ती जायएसुप्पवित्ती । फुरइ परमतित्ती होइसंसारछित्ती । जिणजुअपयभत्ती हीअचिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं भूरिदिव्वंगहारं । फुडघणरसभावोदारसिंगारसारं । अणिमिसरमणिज्जंदंसणछेअभीया । इव पणमणं मंदा कासि नट्टोवहारं ॥ ६ ॥ थुणहअजिअसंतो तेकयासेससंतो । कणयरयपिसंगा छज्जए जाणमुत्तो । सरभसपरिरंभारंभिनिव्वाणलच्छी । घणथणथणि

णंकु प्पं कपिंगोकयव्व ॥ ७ ॥ बहुविहनयभंगं वत्थु णिच्चं अणिच्चं । सदसदणभिलप्पा लप्पमेगंअणेगं । इयकुनयविरुद्धं सुप्पसिद्धंचजेसिं । वयणमवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥८॥ पसरइतिअलोए ताव मोहंधयारं । भमइजय मसण्णं ताव मिच्छत्तछण्णं । फुरइफुडफलंता णंतणाणंसुपूरो । पयडमजि असंतो झाणसूरोनजाव ॥ ९ ॥ अरिकरि हरि तिण्हु ण्हंबु चोरा हिवाही । समरडमर मारी रुद्दखुद्दोवसग्गा । पलय मजिअसंतो कित्तणेझत्तिजंती । निविडतरतमोहा भक्ख रालंखिअव्व ॥ १० ॥ निच्चिअदुरिअदारु हित्तझाणग्गिजाला । परिगय मिव गोरं चिंतिअं जाण रुवं । कणयनिहस रेहा कंतिचोरं करिज्जा । चिरथिर मिह लच्छिं गाढसं थंभिअव्व ॥ ११ ॥ अडविनिवडिआणं पत्थिवुत्तासिआणं । जलहिलहरिहीरं ताणगुत्तिट्ठियाणं । जलिअजलणजाला लिंगिआणं च झाणं । जणयइ लहु संतिं संतिनाहाजि आणं ॥ १२ ॥ हरिकरिपरिकिण्णं पक्कपाइक्कपुण्णं । सयलपुह विरज्जं छड्डिउं आणसज्जं । तण मिवपडिलग्गं जेजिणामुत्ति मग्गं । चरण मणुपवण्णा हुंतुतेमे पसण्णा ॥ १३ ॥ छणससि वयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं । थणभरनमिरीहिं मुट्ठिगि ज्झोदरीहिं । ललिअभुअलयाहिं पीणसोणित्थलीहिं । सय सुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस किडि भकुट्ठ गंठि कासाइसार । खयजर वण लूआ साससोसोद राणि । नहमुह दसणच्छी कुच्छिकण्णाइरोगे । मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥१५ ॥ इयगुरुदुहतासे पक्खिएचा उमासे । जिणवरदुगथुत्तं वच्छरेवा पवित्तं । पढह सुणह

सिज्झा एहज्झाएह चित्ते। कुणह मुणाह विग्घं जेण घाएह सिग्घं ॥ १६॥ इय विजया जियसत्तुपुत्त सिरिअजिअजिणेसर। तहअइराविससेण तणय पंचमचक्कीसर। तित्थंकर सोलसमसंति जिणवल्लहसंतह। कुरुमंगल ममहरसुदुरिअ मविहलंपि थुणंतह ॥ १७ ॥ इतिश्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं स्मरणं२ ॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥

॥ ॥ नमिऊणपणयसुरगण। चूडामणिकिरणरंजि अंमणिणो। चलणजुअलं महाभय। पणासणंसंथवंवुच्छं ॥१॥ सडिअकरचरणनहमुह। निवुडुनासाविवन्नलावन्ना। कुट्ठ महारोगानल। फुलिंगनिद्दड्ढसव्वंगा ॥२॥ तेतुहचलणारा हण। सलिलंजलिसेअवड्ढियच्छाया। वणदवदड्ढागिरिपायवुव्व पत्तापुणोलच्छिं ॥३॥ दुव्वायखुभिअजलनिहि। उब्भडकल्लो लभीसणारावे। संभंतभयविसंठुल। निज्जामयमुक्कवावारे ॥४॥ अविदलिअजाणवत्ता। खणेणपावंतिइच्छियंकूलं। पास जिणचलणजुअलं। निच्चंचिअजेनमंतिनरा ॥५॥ खरपवणुद्धु अवणदव। जालावलिमिलिअसयलदुमगहणे। डज्झंतमुद्ध मयवहु। भीसणरवभीसणंमिवणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणोकमजु अलं। निव्वावियसयलतिहुअणाभोयं। जेसंभरंतिमणुआ नकुणइजलणोभयंतेसिं ॥ ७ ॥ विलसंतभोगभीसण। फुरि आरुणनयणतरलजीहालं। उग्गभुअंगंनवजलय। सत्थहं भीसणायारं ॥८॥ मन्नंतिकीडसरिसं। दूरपरिच्छूढविसम विसवेगा। तुहनामक्खरफुडसिद्ध। मंतगुरुआनरालोए ॥९॥ अडवीसुभिल्लतक्कर। पुलिंदसद्दूलसद्दभीमासु। भयविहलु वुन्नकायर। उल्लूरिअपहियसत्थासु ॥१०॥ अविलुत्त विहव

सारा । तुहनाहपणामभित्तवावारा । ववगयविग्घासिग्घं । पत्ताहियइच्छियंठाणं ॥११॥ पज्जलिआनलनयणं । दूरवियारिअमुहंमहाकायं । नहकुलिसघायविअलिय । गयंदकुंभत्थलाभोयं ॥ १२॥ पणयससंभमपत्थिव । नहमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स । तुहवयणपहरणधरा । सीहं कुद्धंपि नगिणंति ॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलं । दीहकरुल्लालवड्ढि उच्छाहं । मडुपिंगनयणजुअलं । ससलिलनवजलहरायारं ॥ १४ ॥ भीमं महागइंदं । अच्चासन्नंपितेनविगिणंति । जेतुम्हचलणजुअलं मुणिवइतुंगं समल्लीणा ॥१५॥ समरम्मितिक्खखग्गाभिघायपविद्ध उद्धुअकबंदे । कुंतविणिभिन्न करिकलह । मुक्कसिक्कारपउरम्मि ॥१६॥ निज्जिअदप्पुद्धररिउनरिंद । निवहाभडाजसंधवलं । पावंतिपावपसमण । पासजिणतुहप्पभावेण ॥ १७ ॥ रोगजलजलणविसहर । चोरारिमयंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण । पसमंतिसव्वाइं ॥ १८ ॥ एवंमहाभयहरं । पासजिणिंदस्ससंथवमुआरं । भवियजणाणंदयरं । कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥ १९॥ रायभयजक्खरक्खस । कुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु । संझासुदोसुपंथे उवसग्गे तहयरयणीसु ॥ २०॥ जोपढइजोअनिसुणइ । ताणं कइणोयमाणतुंगस्स । पासोपावंपसमेउ । सयलभुवणच्चिअचलणो ॥२१॥*॥ इतिश्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयस्मरणं ॥*॥

॥*॥ तंजयउजएतित्थं । जमित्थतित्थाहिवेणवीरेण । सम्मंपवत्तिअंभव्वसत्त । संताणसुहजणयं ॥ १॥ नासिअसयलकिलेसानिहयकुलेसापसत्थसुहलेसा । सिरिवद्धमाणतित्थस्स । मंगलंदिंतुतेअरिहा ॥२॥ निद्दड्ढकम्मबीआ । बीआपर

मेट्ठिणोगुणसमिद्धा । सिद्धातिजयपसिद्धा । हवंतुदुत्थाणिति त्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता । पंचपयारंसयापयासंता । आयरिआतहतित्थं । निहयकुतित्थंपयासंतु ॥४॥ सम्मसुअ वायगावायगाय। सिअवायवायगावाए। पवयणपडिणीयकए वणंतुसव्वस्ससंघस्स ॥५॥ निव्वाणसाहणुज्जुअ । साहूणंजणि असव्वसाहज्जा । तित्थप्पभावगाते । हवंतुपरमेट्ठिणोजइणो ॥६॥ जेणाणुगयंनाणं । निव्वाणफलंचचरणमविहवइ । ति त्थस्सदंसणंतं । मंगलमवणेउसिद्धियरं ॥७॥ निव्वुमोसुअध म्मो । समग्गभव्वंगिवग्गकयसम्मो । गुणसुट्ठिअस्ससंघस्स । मंगलंसम्ममिहंदिसउ ॥८॥ रम्मोचरित्तधम्मो संपाविअभव्व सत्तसिवसम्मो । नीसेसकिलेसहरो । हवउसयासयलसंघस्स ॥९॥ गुणगणगुरुणो गुरुणो । सिवसुहमइणो कुणंतु तित्थ स्स । सिरिवद्धमाणपहुपयडिअस्स । कुसलंसमग्गस्स ॥ १० ॥ जियपडिवक्खाजक्खा । गोमुहमायंगगयमुहपमुक्खा । सि रिबंभसंतिसहिआ । कयनयरक्खासिवंदिंतु ॥११॥ अंबापडि हयडिंबा । सिद्धा सिद्धाइआ पवयणस्स । चक्केसरिवइरुट्टा । संतिसुरादिसउसुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलसविज्जादेवीउ । दिंतुसंघस्समंगलंविउलं । अच्छुत्तासहिआउ । विस्सुअसुयदे वयाइसमं ॥ १३ ॥ जिणसासणकयरक्खा । जक्खाचउवीस सासणसुरावि । सुहभावासंतावं । तित्थस्ससयापणासंतु ॥ १४ ॥ जिणपवयणंमिनिरया । विरयाकुपहाउसव्वहासव्वे । वेयावच्चकराविअ । तित्थस्सहवंतुसंतिकरा ॥ १५ ॥ जिणस मयसुद्धसमग्ग । वहिअभव्वाणजणिअसाहज्जो । गोयरई गोयजसो । सपरिवारोसुहंदिसउ ॥ १६ ॥ गिहंगुत्तखित्त

जलथल। वणपव्वयवासिदेवदेवीउ। जिणसासणहिआणं।
दुहाणिसव्वाणिनिहणंतु ॥ १७॥ दसदिसिपालासक्खित्तपा
लया। नवग्गहासनक्खत्ता। जोइणिराहुग्गहकालपास।
कुलिअद्धपहरेहिं ॥ १८॥ सहकालकंटएहिं। सविद्विवत्थेहिं
कालवेलाहिं। सव्वेसव्वत्थसुहं। दिसंतुसव्वस्ससंघस्स ॥ १९ ॥
भवणवइवाणमंतर। जोइसवेमाणिआयजेदेवा। धरणिंदस
क्कसहिआ। दलंतुदुरिआइं तित्थस्स ॥२०॥ चक्कं जस्सजलंतं।
गच्छइ पुरउपणासिअतमोहं। तंतित्थस्सभगवउ। नमोनमो
वद्धमाणस्स ॥ २१ सोजयउजिणोवीरो। जस्सज्जविसासणंज
एजयइ। सिद्धिपहसासणंकुपह। नासणंसव्वभयमहणं ॥२२॥
सिरिउसभसेणपमुहा। हयभय निवहा दिसंतु तित्थस्स।
सव्वजिणाणंगणिहारिणो। णहंवंछिअंसव्वं ॥ २३ ॥ सिरि
वद्धमाणतित्थाहिवेण। तित्थंसमप्पिअं जस्स। सम्मं सुहम्म
सामी। दिसउसुहंसयलसंघस्स ॥ २४ ॥ पयइएभद्दिआजे।
भद्दाणदिंतुसयलसंघस्स। इयरसुराविहुसम्मं। जिणगण
हरकहियकारिस्स। ॥ २५ ॥ इयजोपढइतिसंझं। दुस्सज्झं
तस्सनत्थिकिंपिजए। जिणदत्ताणाएठिउ। सुनिट्ठिअट्ठोसुही
होइ ॥ २६॥ इतिगणधरदेवस्तुति:। चतुर्थं स्मरणं ४ ॥ ॥
॥ ॥मयरहिअंगुणगणरयणसायरं सायरं पणमिऊणं।
सुगुरुजणपारतंतं। उवहिव्वथुणामितंचेव॥१॥ निम्महियमो
हजोहा। निहयविरोहापणट्ठसंदेहा। पणयंगिवग्गदाविअ।
सुहसंदोहासुगुणगेहा ॥ २ ॥ पत्तसुजइत्तसोहा। समत्तपर
तित्थजणियसंखोहा। पडिभग्गलोहजोहा। दंसिअसुमह
त्थसत्थोहा ॥ ३॥ परिहरिअसत्तबाहा। हयदुहदाहासिवं

बतहसाहा । संपाविअसुहलाहा । खीरोदहिणुव्वअगाहा ॥ ४ ॥ सुगुणजणजणिअपुज्जा । सज्जोनिरवज्जगहिअपवज्जा । सिवसुहसाहणसज्जा । भवगिरिगुरुचूरणेवज्जा ॥ ५ ॥ अज्जसुहम्मप्पमुहा । गुणगणनिवहासुरिंदविहियमहा । ताणतिसंऊनामं । नामंनेपणासइजियाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअजिणदेवो । देवायरिउदुरंतभवहारी । सिरिनेमचंदसूरी । उज्जोयणसूरिणोसुगुरू ॥ ७ ॥ सिरिवद्धमाणसूरी । पयडीकयसूरिमंतमाहप्पो । पडिहयकसायपसरो । सरयससंकुव्वसुहजणउ ॥ ८ ॥ सुहसीलचोरचप्परण । पच्चलोनिच्चलोजिणमयंमि । जुगपवरसुद्धसिद्धंत । जाणउपणयसुगुणजणो ॥ ९ ॥ पुरउदुल्लहमहिवल्लहस्स । अणहिल्लवाडएपयडं । मुक्काविआरिऊणं । सीहेणवदव्वलिंगिगया ॥ १० ॥ दसमछेरयनिसिविप्फुरंत । सछंदसूरिमयतिमिरं । सूरेणवसूरिजिणेसरेण । हयमहिअदोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्तपत्तकित्ती । पयडिअगुत्तीपसंतसुहमुत्ती । पहयपरवाइदित्ती । जिणचंदजईसरोमंती ॥ १२ ॥ पयडिअनवंगसुत्तत्थ । रयणुकोसोपणासिअपउसो । भवभीअभविअजणमण । कयसंतोसोविगयदोसो ॥ १३ ॥ जुगपवरागमसारपरूवणा । करणबंधुरोधणिअं । सिरिअभयदेवसूरी । मुणिपवरोपरमपसमधरो ॥ १४ ॥ कयसावयसंतासो । हरिव्वसारंगभग्गसंदेहो । गयसमयदप्पदलणो आसाइअपवरकव्वरसो ॥ १५ ॥ भीमभवकाणणम्मिअ । दंसिअगुरुवयणरयणसंदेहो । नीसेससत्तगुरुउ । सूरीजिणवल्लहोजयइ ॥ १६ ॥ उवरट्ठिअसच्चरणो । चउरणुउगप्पहाणसच्चरणो । असममयरायमहणो ।

उदुमुत्तोसहइजसकरो ॥ १७ ॥ दंसिअनिम्मलनिच्चल। दंत गणोगणिअसावउत्थभउ। गुरुगिरिगरुउसरउव्व। सूरि जिणवल्लहोहोत्था ॥१८॥ अगपवरागमपोअसपाण। पीणि यमणाकयाभव्वा। जेणजिणवल्लहेणं। गुरुणातंसव्वहावंदे॥ १९॥ विप्फुरिअपवरपवयण। सिरोमणीवूढदुव्वहखमोय। ओसेसाणंसेसुव्व। सहइसत्ताणताणकरो॥ २०॥ सच्चरि आणमहीणं। सुगुरुणंपारतंतमुव्वहइ। जयइजिणदत्तसूरी सिरिनिलउपणयमुणितिलउ ॥ २१ ॥ ॥ इति श्रीगुरुपा रतंत्र पंचमस्मरणं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सिग्घमवहरउविग्घं। जिणवीराणाणु गामिसं घस्स। सिरिपासजिणोथंभण। पुरट्ठिउनिट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥ गोयमसुहम्मपमुहा। गणवइणोविहिअभवसत्तसुहा। सिरिवद्धमाणजिणतित्थ। सुत्थयंतिकुणंतुसया ॥ २ ॥ सक्काइ णोसुराजे। जिणवेयावच्चकारिणोसंति। अवहरिअविग्घ संघा। हवंतुतेसंघसंतिकरा ॥ ३ ॥ सिरिथंभणयट्ठिअपास सामि। पयपउमपणयपाणीणं। निद्दलिअदुरिअविंदो। धर णिंदोहरउदुरिआइं ॥४॥ गोमुहपमुक्खजक्खा। पडिहयप डिवक्खपक्खलक्खाते। कयसगुणसंघरक्खा। हवंतुसंपत्तसि वसुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्कापमुहा। जिणसासणदेवयाउ जिणपणिआ। सिद्धाइआसमेया। हवंतुसंघस्सविग्घहरा॥ ६ ॥ सक्काएसासच्चउरपुरट्ठिउ। वद्धमाणजिणभत्तो। सिरि बंभसंतिजक्खो। रक्खउसंघंपयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिहगुत्त संताण। देसदेवाहिदेवयाताउ। निव्वुइपुरपहियाणं। भव्वाणकुणंतुसुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरिचक्कधरा। विहिप

हरिउठिअकंधराधरिअं । सिवसरणलग्गसंघस्स । सव्वहाह रउविग्घाणि ॥९॥ तित्थवइवद्धमाणो । जिणेसरोसंगउसुसं घेण । जिणचंदोभयदेवो । रक्खउजिणवल्लहपहुमं ॥१०॥ सो जयउवद्धमाणो । जिणेसरोणेसरुव्वहयतिमिरो । जिणचंदा भयदेवा । पहुणोजिणवल्लहाजेय ॥११॥ गुरुजिणवल्लहपाए भयदेवपहुत्तदायगेवंदे । जिणचंदजिणेसरवद्धमाण । तित्थस्स वुड्ढिकए ॥१२॥ जिणदत्ताणंसम्मं । मन्नंतिकुणंतिजेयकारंति मणसावयसावउसा । जयंतुसाहम्मिआतेवि ॥ १३ ॥ जिण दत्तगुणेनाणाइणो । सयाजेधरंतिधारंति । दंसिअसिय वायपए । नमामिसाहम्मिआतेवि ॥१४॥ इति षष्टं स्मरणं ।

॥ ॥ उवसग्गहरंपासं । पासंवंदामिकम्मघणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं । मंगलकल्लाणआवासं ॥१॥ इत्यादि ॥ भवेभवेपासजिणचंद ॥ ५ ॥ ॥ इतिश्रीपार्श्वजिनस्तवनं इति सप्तस्मरणानि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ लघुशांतिलि ॥

॥ ॥ शांतिंशांतिनिशांतं । शांतिंशांताशिवंनमस्कृत्य । स्तोतु:शांतिनिमित्तं । मंत्रपदैःशांतयेस्तौमि ॥ १ ॥ उंमिति निश्चितवचसे । नमोनमोभगवतेर्हतेपूजां । शांतिजिनायजय वते । यशस्विनेस्वामिनेदमिनां ॥ २ ॥ सकलातिसेयकमहा संपत्तिसमन्वितायशस्याय । त्रैलोक्यपूजितायच । नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्व्वामरसुसमूह । स्वामिकसंपूजितायन जिताय भुवनजनपालनोद्यत । तमायसततंनमस्तस्मै ॥ ४ ॥

सर्व्वदुरितौघ नाशन कराय। सर्वाशिव प्रशमनाय। दुष्टग्रह भूत पिशाच। शाकनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र। प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा। विजया कुरुतेजनहित। मिति चनुता नमतत्तं शांतिं ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति विजये सुजये परापरैरजिते। अपराजिते जगत्यां। जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्व्वस्यापिच संघस्य। भद्रकल्याण मंगलप्रददे। साधूनांचसदाशिव। तुष्टिपुष्टिप्रदेजीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे। निर्वृतिनिर्वाण जननि सत्वानां। अभ प्रदाननिरते। नमोस्तु स्वस्तिप्रदेतुभ्यं ॥ ९ ॥ भक्तानां जंतूनां शुभावहे नित्यमुद्यतेदेवि। सम्यग्दृष्टीनां। धृति रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां। शांतिनतानां च जगति जंतूनां। श्रीसंपतकीर्त्तियशो। वर्द्धनिजय देवि विजयस्व ॥ ११॥ सलिलानल विषविषधर। दुष्टग्रहराजरो गरणभयतः। राक्षसरिपुगणमारो। चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं। कुरु२ शान्तिं च कुरु कुरु सदेति। तुष्टिं कुरु२ पुष्टिं। कुरु२ स्वस्तिं च कुरु कुरुत्वं ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशान्ति। तुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु२ जनानां। ॐमिति नमो नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः। यः क्षः ह्रीं फट्फट् स्वाहा ॥१४॥ एवं यन्नामाक्षर। पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी। कुरुते शान्ति निमित्तं। नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्व्वसूरिदर्शित। मंत्रपदविदर्भि तः स्तवः शांतेः। सलिलादिभयविनाशी। शांत्यादिकरश्च भक्तिमतां ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा। शृणोति भावय तिवा यथायोगं। सहि शान्तिपदं यायात्। सूरिः

श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ ॥ इति लघुशान्तिस्तोत्र ॥॥

॥ अथ वृहत्शांतिलि ॥

॥॥ भो भो भव्याः शृणुतवचनं प्रस्तुतं सर्व्वमेतत् । ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः । तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा । दारोग्य श्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां । समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं । अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः । सुघोषाघंटाचालनानन्तरं । सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा । गत्वा कनकाद्रिशृंगे । विहितजन्माभिषेकः । शान्ति मुद्घोषयति । ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वा । महाजनो येन गतस्स पंथाः । इति भव्यजनैः सहसमागत्य । स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय । शान्तिमुद्घोषयामि । तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानन्तरं । इतिकृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा । ॐ पुण्याहं । २ । प्रीयंतां २ भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन । स्त्रैलोक्यनाथा स्त्रैलोक्यमहिता । स्त्रैलोक्यपूज्या । स्त्रैलोक्येश्वरा । स्त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी । १ । निर्व्वाणी । २ । सागर । महायश । ४ । विमल । ५ । सर्व्वानुभूति । ६ । श्रीधर । ७ । दत्त । ८ । दामोदर । ९ । सुतेजा । १० । स्वामी । ११ । मुनिसुव्रत । १२ । सुमति । १३ । शिवगति । १४ । अस्ताग । १५ । नमीश्वर । १६ । अनिल । १७ ।

यशोधर । १८ । कृतार्थ । १६ । जिनेश्वर । २० । शुद्धमति । २१ । शिवकर । २२ । स्यन्दन । २३ । संप्रति । २४ ॥॥ एते अतीतचतुर्विंशतितीर्थंकराः ॥॥ ॐ श्रीऋषभ । १ । अजित । २ । संभव । ३ । अभिनन्दन । ४ । सुमति । ५ । पद्मप्रभ । ६ । सुपार्श्व । ७ । चंद्रप्रभ । ८ । सुविधि । ९ । शीतल । १० । श्रेयांस । ११ । वासुपूज्य । १२ । विमल । १३ । अनन्त । १४ । धर्म्म । १५ । शान्ति । १६ । कुंथु । १७ । अर । १८ । मल्लि । १९ । मुनिसुव्रत । २० । नमि । २१ । नेमि । २२ । पार्श्व । २३ । वर्द्धमान । २४ । प्रमुखावर्त्तमानजिनाः ॥॥ ॐ श्रीपद्मनाभ । १ । सूरदेव । २ । सुपार्श्व । ३ । स्वयंप्रभ । ४ । सर्व्वानुभूति । ५ । देवश्रुत । ६ । उदय । ७ । पेढाल । ८ । पोट्टिल । ९ । शतकीर्त्ति । १० । सुव्रत । ११ । अमम । १२ । निष्कषाय । १३ । निष्पुलाक । १४ । निर्मम । १५ । चित्रगुप्ति । १६ । समाधि । १७ । संवर । १८ । यशोधर । १९ । विजय । २० । मल्लि । २१ । देव । २२ । अनन्तवीर्य । २३ । भद्रंकर । २४ ॥॥ एते भावितीर्थंकराः जिनाः ॥॥

॥॥ शान्ताः शान्तिकराः भवंतु मुनयो मुनिप्रवरा । रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि । १ । जितशत्रु । २ । जितारि । ३ । संवर । ४ । मेघ । ५ । धर । ६ । प्रतिष्ठ । ७ । महसेन नरेश्वर । ८ । सुग्रीव । ९ । दृढरथ । १० । विष्णु । ११ । वसुपुज्य । १२ । कृतवर्म । १३ । सिंहसेन । १४ । भानु । १५ । विश्वसेन । १६ । सूर । १७ । सुदर्शन । १८ । कुंभ । १९ । सुमित्र । २० ।

विजय । २१ । समुद्रविजय । २२ । अश्वसेन । २३ । सिद्धार्थ । २४ ॥❋॥ वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनका: ॥❋॥
॥ ❋ ॥ ॐ श्रीमरुदेवा । १ । विजया । २ । सेना । ३ । सिद्धार्थी । ४ । सुमंगला । ५ । सुसीमा । ६ । पृथिवीमाता । ७ । लक्ष्मणा । ८ । रामा । ९ । नंदा । १० । विष्णु । ११ । जया । १२ । श्यामा । १३ । सुयशा । १४ । सुव्रता । १५ । अचिरा । १६ । श्री । १७ । देवी । १८ । प्रभावती । १९ । पद्मा । २० । वप्रा । २१ । शिवा । २२ । वामा । २३ । त्रिसला । २४ ॥❋॥ वर्त्तमानजिनजनन्य: ॥❋॥ ॐ गोमुख । १ । महायक्ष । २ । त्रिमुख । ३ । यक्षनायक । ४ । तुंबुरु । ५ । कुसुम । ६ । मातंग । ७ । विजय । ८ । अजित । ९ ब्रह्मा । १० । यक्षराज । ११ । कुमार । १२ । षण्मुख । १३ । पाताल । १४ । किन्नर । १५ । गरुड़ । १६ । गंधर्व्व । १७ । यक्षराज । १८ । कुबेर । १९ । वरुण । २० । भृकुटि । २१ । गोमेध । २२ । पार्श्व । २३ । ब्रह्मशांति । २४ ॥❋॥ वर्त्तमानजिनयक्षा: ॥❋॥ ॐ चक्रेश्वरी । १ । अजितबला । २ । दुरितारि । ३ । काली । ४ । महाकाली । ५ । श्यामा । ६ । शांता । ७ । भृगुटि । ८ । सुतारका । ९ । अशोका । १० । मानवी । ११ । चंडा । १२ । विदिता । १३ । अंकुशा । १४ । कंदर्पा । १५ । निर्वाणी । १६ । बला । १७ । धारिणी । १८ । धरणप्रिया । १९ । नरदत्ता । २० । गांधारी । २१ । अंबिका । २२ । पद्मावती । २३ । सिद्धायिका । २४ । ॥❋॥ वर्त्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकरशाशनदेव्य: ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति कीर्त्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधन

प्रवेशनिवेशनेषु। सुगृहीतनामानो। जयंति ते जिनेंद्राः
ॐ रोहिणी।१। प्रज्ञप्ती।२। वज्रशृंखला।३। वज्रां
कुशा।४। चक्रेश्वरी।५। पुरुषदत्ता।६। काली
।७। महाकाली।८। गौरी।९। गांधारी।१०। सर्वा
स्त्रमहाज्वाला।११। मानवी।१२। वैरोट्या।१३। अ
छुप्ता।१४। मानसी।१५। महामानसी।१६। एताः षो
डशविद्यादेव्यो रक्षंतुमे स्वाहा। ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृ
तिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु। ॐ तुष्टिर्भव
तु। पुष्टिर्भवतु। ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारक बुध बृहस्पति
शुक्र शनैश्चर राहु केतुसहिताः सलोकपालाः सोम यम
वरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायक ये चान्येपि ग्राम
नगर क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां २॥ अक्षीणकोस
कोष्टागारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा। ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ
कलत्रसुहृत् स्वजनसंबंधिबंधुवर्गसहिताः। नित्यं चामोदप्र
मोदकारिणो भवंतु। अस्मिंश्च भूमंडले आयतननिवासिनां।
साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां। रोगोपसर्गव्याधिदुःख
दौर्मनस्योपशमनाय शान्ति भवतु। ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि
वृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः भवंतु। सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि
पापानि शाम्यंतु। शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा। श्री
मते शान्तिनाथाय। नमः शान्तिविधायिने। त्रैलोक्यस्या
मराधीश। मुकुटाभ्यर्चितां घ्रये॥१॥ शान्तिः शान्ति
कारः श्रीमान्। शान्तिं दिशतु मे गुरुः। शान्तिरेव सदा
तेषां। येषां शांतिर्गृहे गृहे॥२॥ ॐ उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रह
गति दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि संपादितहितसंपत् नामग्रहणं

जयति शांतिः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद राजाधिपराजसं निवेशानां । गोष्टीपुरमुख्यानां व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिं ॥४॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु । श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु । श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु । श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु । श्रीराजसंनिवेशानां शांतिर्भवतु । श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु । ॐ स्वाहा २ ॥ ॐ ह्रीँ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शांतिःप्रतिष्ठा यात्रास्नात्रावसानेषु । शांतिकलशं गृहीत्वा । कुंकुम चंदन कर्पूरागुरुधूप वास कुसुमांजलि समेतः । स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः । शुचिः शुचिवस्त्रचंदना भरणालंकृतः । पुष्पमालां कंठे कृत्वा । शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति । नृत्यंतिनृत्यं मणिपुष्प वर्षं सृजंति गायंतिच मंगलानि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान् । कल्याणभाजोहि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अहं तित्थयर माया सिवादेवी । तुम्ह नयरनिवासिनी । अम्ह शिवं तुम्ह शिवं । असुहोवसमं शिवं भवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्व जगतः । परहितनिरताभवंतु भूतगणाः । दोषाःप्रयांतु नाशं । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति छिद्यंते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति । पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥३॥ ॥ इति श्रीबृहच्छांतिः समाप्ता ॥ ॥

॥ अथ वडो नवकारलि ॥

॥ ॥ किंकप्पतरु रे अयांण चिंतउ मणभीतरि । किंचिंतामणि कामधेनु आराहीबहुपरि । चित्रावेली काज

किसे देसंतर लंघउ। रयणरासि कारण किसैसायरउल्लं
घउ। चवदह पूरबसार युगे लद्धो ए नवकार। सयलकाज
महियलसरै दुत्तरतरै संसार। कैवलिभासिय रीतिजि
के नवकार आराहै। भोगविसुक्ख अनंत अंत परमप्पय
साहै। इणझाणें सुररिद्धि पुत्त सुहविलसैबहुपरि। इण
झाणेंसुरलोक इंदपदपामेंसुन्दरि। एहमंत्र सासतो जगे
अचिंत चिंतामणिएह। समरणपापसवे टलै रिद्धिसिद्धि
नियमेह॥ २॥ नियसिर ऊपर झाण मज्झचितवै कमलन
र। कंचणमय अठदल सहित तिहांमोहिं कनकवर। तिहां
वैठा अरिहंतदेव पउमासण फिटकमणि। सेय वत्थ पहरे
वि पढमपय चिंतइ नियमणि। निव्वारिय चउगइगमण
पामिय सासयसुक्ख। अरिहंतझाणइं तुमलहौ जिमअज
रामर सुक्ख॥ ३॥ प नरभेय तिहां सिद्ध बीयपद जे आ
राहै। राते विद्रुमवरणें। वसनियसोहग साहइ। रातोधो
वत पहिर जपइ सिद्धहिं पुव्वइं दिसि। सयल लोय तिहां
नरहहोइ ततषिणसइं वसि। मूलमंत्र वसीकरण अवरसहु
जगधंध। मणिमूली उषध करइ वुद्धिहीण जाचंध॥ ४॥
दक्खिणदिसपंखडी जपैनमो आयरियाणं। सोवनवन्नह
सीससहित उवएसहनाणं। रिद्धि सिद्धि कारणें लाभ ऊपर
बे आवइ। पहिरवि पीलावत्थतेह मनवंछियपावइ।
इण झाणेंनवनिधिहुवे रोगकदेनविहोइ। गजरथ
हयवरपालखी। चामर छत्र सिरजोइ॥ ५॥ नीलवन्न
उवझाय सीस पाढंता पच्छिम। आराहिज्जे अंग पुव्व
धारंत मणोरम। पच्छिमदिश पंखडीय कमल ऊपर सुह

झाणं। जोवो परमाणंद देवगयतासु विमाणं। गुरु लघु जे लक्खै विदुर तिहां नरवड्फल होइ। भावविहूणा जे जपै तिहां फलसिद्ध न कोइ॥ ६॥ सर्व्वसाधु उत्तरविभाग सांमला वइट्ठा। जिण धर्मलोय पयासयंत चारित गुणजिट्ठा। मण वयण काएहिं जपै जे एकै झाणै। पंचवस्स तिहां नाणझाण गुण एहपमाणै। अनंतचोवीसी जगहुईए। होसीअवर अनंत। आदिकोई जाणै नही इण नवकारह मंत॥ ७॥ एसो पंच नमोक्कारो। पद दिसअगनेहिं। सव्व पावप्पणासणो पदजपनेरेहिं। वायवदिस झाएह मंगलाणंचसव्वेसिं। पढमंहवइमंगलं ईसाणपए सिंचिहु दिसचिहु विदिसै मिलिय अठदल कमल ठवेइ। जो गुरु लघु जाणी जपै सो घण पापखवेइ॥ ८॥ इणप्रभावधरणिंदहुंउ पायालहसामी। समलो कुमर उप्पन्न भिल्ल सुरलोयहगामी। संवलकंवल वेवलदपहुता देवांकप्पे। सूलीदीधो चोर देव थयोनवकारह जप्पे। सिवकुमारमनवंचिकरि जोगी लीयो मसांण। सोनापुरसो सीधलो। इण नवकारप्रमाण॥ ९॥ ठीकै वैठो चोर एक आकासैगामी। अहिफिट्टी हुइ फूलमाल नवकारह नामी। वाठहआ चारंत बाल जलनदीप्रमाहै। वींध्यो कंठहिजयर मंत जपियो मनमांहि। चिंत्या काज सवे सरै ईरति परति विमास। पालित्तसूरितणी परै विद्या सिद्ध आकास॥ १०॥ चोरधाड संकट टलै राजा वसिहोवै तित्थंकर सो होइ लाखगुणविधिसु जोवै। साइण डाइण भूत प्रेत वेताल न पुहवइ। आधि व्याधि ग्रहतणी पीड ते किमहि न होवइ। कुट्ठ जलोदर रोग सवे नासइ

एणइमंत। मयणासुंदरितणीपरै नवपय झाण करंत ॥११॥ एकजीह इणमंततणा गुण किता वखाणुं। नाणचौ णाहउमत्थएह गुण पारनजाणुं। जिमसेत्रुंजै तित्थराउ महिमा उदयवंतौ। तिममंतह धुरि एह मंतराजा जै वंतौ तित्थंकरगणहरपभणिय चउदै पूरवसार। इणगुण अंत न कोलहइ गुणगुरुउ नवकार ॥१२॥ अट्ठसंपय नवपय सहित इगसठ लघु अक्खर। गुरुअक्खर सत्तेव एहजाणो परमाक्खर।गुरुजिणवल्लहसूरिभणै सिवसुक्खहकारण। नर यतिरियगइ रोग सोग बहुदुक्ख निवारण। जल थल पव्वय वन गहन समरण हुवे इकचित्त। पंचपरमेष्ठि मंतहतणी सेवा देज्यो नित्त ॥१३॥ इति पंच परमेष्ठि नमस्कारमहात्म्यसंपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तिजय पहुत्त पयासं। अट्ठ महापाडिहेर जुत्ताणं। समय क्खित्त ठ्ठिआणं। सरेमि चक्कं जिणिंदाणं॥१॥ पणवीसा य असीया। पनरस पन्नास जिणवर समूहो। नासेउ सयलदुरिअं। भविआणं भत्तिजुत्ताणं॥२॥ वीसा पणयाला विअ। तीसा पणहत्तरी जिणवरिंदा। गह भूअ रक्ख साइणि। घोरुवसग्गं पणासेउ॥३॥ सत्तरि पणतीसाविअ। सट्ठी पंचेव जिणगणोएसो। वाहि जलजल ण हरि करि। चोरारि महाभयं हरउ॥४॥ पणपन्नाय दसेवअ। पन्नट्ठी तहयचेव चालीसा। रक्खंतु मे सरीरं देवा सुरपणमिआ सिद्धा ॥५॥ ॐ हरहुं हः सरसुं सः। हरहुं हः तहयचेव सरसुं सः। आलिहिअ नाम गब्भं। चक्कं किर सव्वउ भद्दं ॥६॥ ॐ रोहिणि पन्नत्ति

वज्जसंखला । तहय वज्जअंकुसिआ । चक्के सरिनरदत्ता कालि महाकालितहयगोरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाजाला माणविवइरुट्टतहय अछुत्ता । माणसि महमाणसिआ । विज्जादेवीउ रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्मभूमिसु । उप्पन्नं सत्तरिं जिणाणसयं । विविहरयणाण वन्नो । वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥ ९ ॥ चउतीस अइसय जुआ । अट्ठम हापाडिहेरकयसोहा । तित्थयरा गयमोहा । झाए अव्वा पयत्तेण ॥ १० ॥ ॐ वरकणय संखविद्दुम । मरगय घण संनिहं विगय मोहं । सत्तरिसयं जिणाणं । सव्वामरपूइअं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भवणवइवाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ । जे केवि दुट्ठदेवा । ते सव्वे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदणकप्पूरेणं । फलहे लिहिऊणखा लिअंपीअं । एगंतर गहभुग्गय साइणि भूअं पणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरि सयजंतं सम्मंमंतं दुवार पडिलिहिअं । दुरिआरि विजयवंतं । निभ्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥ इति सप्तत्युत्तरशतजिनचक्र स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोसावहारदक्खो नालीया यरवियासिणोप सरो । रयणत्तयस्सजणउ । पासजिणो जयउ जयचक्खू ॥ १ ॥ कयकुवलय पडिबोहो । हरियं कियविग्गहो कलानिलउ । विहियार विंद महणो । दियराओ जयउ पासजिणो ॥ २ ॥ कंतोइनिज्जिणंतो । सिंदूरं पुहविनंदणो कूरो । जयजंतुप्प मयवक्को । सुमंगलो जयउ पहुपासो ॥ ३ ॥ उप्पलदलनील छई । हरिसंमलसंथुओ इलाणंदो । रयणियरदारउ मह । बुहोपसीयज्ज पासजिणो ॥ ४ ॥ नाहियवाय वियड्ढो ।

नायश्रोणायरायकयपूउ । सिरिपासनाहदेवो । देवायरिउ सुहंदिसउ ॥५॥ रायावइ समुज्जल । तणुप्पह मंडलोमहा भुई । असुरेहिंनमिज्जंतो । पासजिणिंदो कवीजयउ ॥ ६ ॥ तिमिरासि समारूढो । संतो दुक्खावहोजयंमिथिरो। बहुल तमासरिसंसरो । जयचक्खुसुउ जयउपासो ॥ ७ ॥ कवलो कयदोसायर । मायंडरहं श्रहो तणुविमुक्क । लोयाभरणो भूयं । पासजिणं सत्तमंसरह ॥८॥ दुरिश्राइं पासनाहो । सि हावमालीनहो भवणकिऊ । दूरंतमरासीउ । सत्तमठाणाहिउ हरउ ॥६॥ इय नवगहथुइगब्भं । जिणपसूरीहिंगुंफिश्रं थवणं। तुहपास पढइ जोतं। असुहाविगहा नपीडंति ॥१०॥ इति नवग्रहस्तुतिगर्भित श्रीपार्श्व जिनस्तोत्रम् ॥

॥ ॥ जगद्गुरु नमस्कृत्य । श्रुत्वा सद्गुरुभाषितं । ग्रहशांतिं प्रवक्ष्यामि । लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंद्राः खेचराज्ञेया । पूजनीयाविधिक्रमात् । पुष्पै विलेपनैर्धूपैः । नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे॥२॥पद्मप्रभस्यमार्त्तंडः चंद्रश्चंद्रप्रभस्यच वासुपुज्यो भूमिपुत्रो । बुधोप्यष्टजिनेश्वराः ॥३॥ विमलानं तधर्म्मारा । शांतिकुंथुर्नमिस्तथा । वर्द्धमानोजिनेंद्राणां पादपद्मेबुधंन्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभाजितसुपार्श्वा । श्राभिनंदन शीतलौ । सुमतिःसंभवःस्वामी । श्रेयांसश्चबृहस्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितः शुक्रः। सुव्रतश्चशनैश्चरः। नेमिनाथोभवेद्रा हुः। केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥६॥ जन्मलग्नेचराशौच यदा पीडंतिखेचराः । तदा संपूजयेद्धीमान् । खेचरैः सहितान् जिनान् ॥७॥ पुष्पैर्गंधादिभिर्धूपैः । नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्णसहस्रदानैश्च वासोभिर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ ॐ श्रादित्य

सोम मङ्गल। बुधगुरुशुक्र शनैश्चरोराहुः। केतुःप्रमुखाखेटा जिनपतिपुरतोवतिष्टंतु ॥९॥ जिननामकृतोच्चारा। देशनक्ष त्रवर्णके। स्तुताश्च पूजिताभक्त्या। ग्रहाःसंतुसुखावहा ॥१०॥ जिनानामग्रतःस्थित्वा। ग्रहाणांतुष्टिहेतवे। नमस्कारशतं भक्त्या। जपेदष्टोत्तरं नरं ॥११॥ भद्रबाहुरुवाचेदं। पंचमः श्रुतकेवली। विद्याप्रवादतःपूर्व्वाद् ग्रहशांतिर्विनिर्मितः ॥ १२॥ इति श्रीनवग्रहशांतिकारकजिनस्तोत्र ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसासंजमोतवो। देवा वितंनमंसंति। जस्स धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा दुमस्सपुप्फे सु। भमरो आविअइरसं। नय पुप्फंकिलामेइ। सोअपीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एमे एसमणावुत्ता। जेलोएसंति साहुणो विहंगमाव पुप्फेसु। दाणभत्तेसणेरया ॥ ३ ॥ वयंच वित्तिं लब्भामो। नयकोइउवहम्मई। अहागडेसुरीयंति। पुप्फेसु भमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकारसमाबुद्धा। जे भवंति अणिस्सि आ। णाणापिंडरयादंता। तेण वुच्चंति साहुणोत्तिबेमि ॥ ५॥ दुमपुप्फियानामज्झयणंसम्मत्तं ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं अर्हद्भ्योनमोनमः। ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं सिद्धेभ्योनमोनमः। ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं आचार्य्येभ्योनमोनमः। ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः। ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्री गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्योनमोनमः ॥१॥ एषः पंच नमस्कारः। सर्वपापक्षयंकरः। मंगलानांचसर्वेषां। प्रथमं

भवतिमंगलं॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं जएविजए। अर्हं परमात्मनेनमः।
कमलप्रभसूरींद्रो। भाषतेजिनपंजरं ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवा
सेन। त्रिकालंय पठेदिदं। मनोभिलषितंसर्वं। फलंसलभ
तेध्रुवं ॥४॥ भूशय्या ब्रह्म चर्येण। क्रोधलोभविवर्जितः। देव
ताग्रेपवित्रात्मा। षरमासैर्लभतेफलं ॥ ५ ॥ अर्हंतंस्थापये
न्मुर्द्धि। सिद्धंचक्षुर्ललाटके। आचार्यंश्रोत्रयोर्मध्ये। उपा
ध्यायंतुघाणके ॥६॥ साधुवृन्दंमुखस्याग्रे। मनःशुद्धंविधा
यच। सूर्यचंद्रनिरोधेन। सुधीःसर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षि
णेमदनद्वेषी। वामपार्श्वेस्थितोजिनः। अंगसंधिषुसर्वज्ञ।
परमेष्ठिशिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशांश्रीजिनोरक्षे। दाग्नेयींवि
जितेंद्रियः। दक्षिणाशांपरंब्रह्म। नैऋतिंचत्रिकालवित्
९ ॥ पश्चिमाशांजगन्नाथो। वायवंपरमेश्वरः। उत्तरांतीर्थ
कृत्सर्वो। मीशानींचनिरंजनः ॥ १० ॥ पातालंभगवानर्हं।
माकाशंपुरुषोत्तमः। रोहिणी प्रमुखादेव्यो। रक्षंतुसकलं
कुलं ॥ ११ ॥ ऋषभोमस्तकंरक्षे। दजितोपिविलोचने।
संभवःकर्णयुगलं। नाशिकांचाभिनंदनः ॥ १२ ॥ ओष्ठौश्री
सुमतोरक्षेत्। दंतान्पद्मप्रभोविभुः। जिह्वांसुपार्श्वदेवोयं।
तालुचंद्रप्रभोविभुः ॥ १३ ॥ कंठंश्रीसुविधीरक्षेत। हृदयं
श्रीसुशीतल। श्रेयांसोबाहुयुगलं। वासुपुज्यः करद्वयं ॥१४॥
अंगुलीविमलोरक्षे। दनंतोसौस्तनावपि। सुधर्मोप्युदरा
स्थीनि। श्रीशांतिर्नाभिमंडलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुगुंह्यकंरक्षे
द्रोरोमकटीतटं। मल्लिरूरुपृष्टिवंशं। जंघेचमुनिसुव्रतः ॥
१६ ॥ पादांगुलीर्नमीरक्षेत्। श्रीनेमिश्चरणद्वयं। श्रीपार्श्व
नाथःसर्वांगं। वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवी जलतेज

स्त । वायुराकाशमयंजगत् । रक्षेदशेषपापेभ्यो । वीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारेश्मशानेवा । संग्रामेशत्रुसंकटे । व्याघ्रचौराग्निसर्पादि । भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकाल मरणप्राप्ते । दारिद्र्यापत्समाश्रिते । अपुत्रत्वेमहादोषे । मूर्ख त्वेरोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनीशाकिनीग्रस्ते । महाग्रह गणार्दिते । नद्युत्तारेध्ववैषम्ये । व्यसनेचापदिस्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेवसमुत्थाय । यःस्मरेज्जिनपंजरं । तस्य किंचिद्भयंना स्ति । लभते सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपंजरनामेदं । यःस्मर त्यनुवासरं । कमलप्रभराजेंद्रः । श्रियंसलभतेनरः ॥ २३ ॥ प्रातःसमुत्थायपठेत्कृतज्ञो । यस्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं । आसादयेत्सःकमलप्रभाख्यं । लक्ष्मींमनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे । देवप्रभाचार्य्यपदाब्जहंसः । वादीन्द्रचूडामणिरेषजैनो । जीयाद्गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रसंपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ लघु जिनसहस्रनाम लिख्यते ॥

॥ ॥ नम स्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने । वक्ष्ये तस्यैव नामानि । मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्म लः सास्वतो शुद्धः । निर्विकल्पो निरामयः । निःशरीरोनि रातंकः । सिद्धः सूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंको निरा लंबो । निर्मोहो निर्मलोसमः । निर्भयो निरहंकारो । नि र्विकारोथनिष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषोनिरुजःशांतः । निर्भयो निर्ममःशिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मोनिष्क

लप्रभुः ॥४॥ निर्वाद्रो निरुपज्ञानः। निरागो निरघोजिनः।
निःशब्दःप्रतिमश्लेष्टः। उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५॥ निःशं
गात् प्राप्तकैवल्यो नैष्ठकः शब्दवर्जितः। अनिंद्यो महापूता
त्मा। अनतशिखरशेषरः ॥ ६ ॥ निःशब्दो गुण संपन्न।
पापतापप्रणाशनः। सोपियोगात् शुभंप्राप्तः कर्मद्योतिवला
वहः ॥७॥ अजरो अमरः सिद्धः। अचिंतः अक्षयो विभुः।
अमूर्त्तः अच्युतोब्रह्म। विष्णु रीश प्रजापति ॥ ८ ॥ अनिं
द्योविश्वनाथश्च। अणो अनुपमोभवः। अप्रमेयोजगन्नाथ।
बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो। निष्पन्नो
ज्ञानलोचनः। अछेद्यो निर्मलो नित्यः। सर्वसत्वविवर्जितः
॥ १० ॥ अजेयः सर्वतोभद्रः। निष्कषायो भवांतकः। विश्व
नाथः स्वयंबुद्धः। वीतरागोजिनेश्वरः ॥११॥ अंतको सहजा
नंद। अवाङ्मानसगोचरः। असाध्यशुद्धचैतन्यः। कर्म नोक
र्म वर्जितः ॥ १२ ॥ अनंतविमलज्ञानी। स्पृष्टोस्व निष्प्रका
शकः। कर्माजितो महात्मानः। लोकत्रयशिरोमणिः॥१३॥
अव्याबाधो वरःशंभुः। विश्ववेदी पितामहः। सर्वभूतहि
तोदेव। सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनंदरूपचैतन्यो।
भगवांस्त्रिजगद्गुरुः। अनंतानंतधीशक्तिः। रत्नव्यक्ताव्य
यात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्म विनिर्मुक्तः। सप्तधातुविवर्जितः
गौरवादित्रयाद्दूरः। सर्वज्ञानादिसंयुतः ॥ १६ ॥ अभयः
प्राप्तकैवल्यः। निर्माणो निरपेक्षकः। निष्कलंकेवलज्ञानी।
मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥१७॥ अनामयो महाराध्यो। वरदो
ज्ञानपावकः। सर्वेशःसन्मुखावासः। जिनेंद्रोमुनिसंस्तुतः
॥ १८ ॥ अन्यूनफलज्ञानी। विश्वतत्वप्रकाशकः। प्रबुद्धोभ

गवान्नाथः । प्रस्तुतः पुन्यकारकः ॥ १९॥ शंकरः सुगतो रौद्रः सर्वज्ञो मदनांतकः । ईश्वरो भुवनाधीशः । सचित्तः पुरुषोत्तमः ॥२०॥ सद्योजातमहात्मानं । विमुक्तोमुक्तिवल्लभः योगींद्रो नादिसंसिद्धः । निरीहोज्ञानगोचरः ॥ २१॥ सदा शिवांश्चतुर्वक्त्रः । सत्सौख्य त्रिपुरांतकः । त्रिनेत्रः त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोष्टमूर्त्तिकः ॥ २२॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः । सर्वपापविवर्जित । सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वभूतहितंकरः ॥ २३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः । तनुमात्रचिदानंद । चैतन्यसैत्यवैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयोदेव । मुक्तिस्थो महतांमहः । मुक्तिकार्यीयसंतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महादेवो महावीरो । महामोहविनाशकः । महाभावो महादर्शः । महामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महात्मकः । महर्द्धिको महावीर्यो । महांतिकपदस्थितः ॥ २७॥ महापूज्यो महावंद्यो । महाविघ्नविनाशकः । महासौख्यो महापुंसो । महामहिम अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसंबोधः । एकानेकवि निश्चलः सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥ २९ ॥ महासूरो महाधीरो । महादुःखविनाशकः । महामुक्ति प्रबोधीरो । महाहृद्यो महागुरुः ॥३०॥ निर्मोरोमारविध्वंसो । निष्कामोविषयाच्युतः । भगवंता महाश्रांतो । शांतिकल्याणकारकः ॥३१॥ परमात्मापरंज्योतिः । परमेष्टी परमेश्वरः । परमात्मापरानंदः । परंपरम आत्मक ॥ ३२॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानो । सख्यानिर्वाणसंयुतः । नाकृतिं नाचरोवर्णो । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्तांजसंबोध । संसा

रत्नेद्रकारणः। निरवद्योमहाराध्यः। कर्मजितधर्मनायकः ॥ ३४ ॥ बोधसत्त्वजगद्वंद्यो। विश्वात्मानरकांतकः। स्वयंभूपापहृत्पूज्यः। पुनीतोविभवःस्तुतः ॥३५॥ वर्णातीतो मलातीत। कृपातीतो निरंजनः। अनंतज्ञानसंपूर्णो। देवदेवेशनायकः ॥३६॥ वरेण्योभवविध्वंसी। योगिनांज्ञानगोचरः। जन्ममृत्युजरातीतः। सर्वविघ्नहरोहरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक्भव्यसंबंद्यः। पवित्रोगुणसागरः। प्रसन्नः परमाराध्यः लोकालोकप्रकाशकः ॥३८॥ रत्नगर्भोजगत्स्वामी। इंद्रवंद्यः सुरर्चितः। निष्प्रपंचो निरातङ्को। निःशेषक्लेशनाशकः ॥३९॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो। लोकालोकविलोकनः। लोकोत्तमो त्रिलोकेशो। लोकाग्रशिखरस्थितः ॥ ४०॥ नामाष्टकसहस्राणि। ये पठन्ति पुनः पुनः। ते निर्वाणपदं यांति। मुच्यते नात्र संशयः ॥४१॥ इति श्रीभद्रबाहुस्वामिना विरचितं लघुसहस्रनाम संपूर्णम् ॥ॐ॥

॥ॐ॥सकलमङ्गलकेलिनिवेशनं। सहृदयं हृदयं गमदेशनं। अभिनतोत्तमभक्तसुरेश्वरं। नमतशीतलनाथजिनेश्वरं ॥ १ सकलमन्दरमङ्गलमन्दिरं। विमलकेवलबोधविकस्वरं। अनिमुवर्णसुवर्णसमद्युतं। प्रवरबंधुरलक्षणसंयुतं ।२। युग्मं सदोयभक्तिर्भविनां भवे भवे। भवेदभीष्टार्थनिदानमद्भुतं। स एष नन्दात्मसमुद्भवो जिनः। समर्चनीयः खलुशीतलः प्रभः ।३। कर्माभिततान् भविनः सुशीतलान्। कुर्वन्सुदा ... रूपधरः। सदैव देवो भवतात्सदैव मे। समिष्टसिद्धि जिनराजशीतलः ॥४॥ अधिगतशिवशर्मा वीतमोहादिकर्मा। ... समतः साधुधर्मा। विश्वामनि

तमूर्त्तिः स्फूर्त्तिमत्पुण्यकीर्त्तिः। जयतु गतभवार्त्तिः शीतलःसौम्यमूर्त्तिः ॥५॥ इति श्रीशीतलजिनःस्तोत्रम् ॥*॥

॥*॥विशदगुणविचित्रं सच्चरित्रं दधानो। दलितदुरितराशिर्विश्वविश्वावदातः। प्रकटमहिमरम्यो दुर्मतीनामगम्यो जयतु जिनपतिः श्रीपार्श्वचिन्तामणीशः ॥१॥ कमठकुमतिवल्ली मूलमुन्मूलयन्तौ। पदमकृतपदाब्जे यस्य भृङ्गीवपद्मा अविकृतमतिकायोत्सर्गमुद्रान्वितोसौ। जगतिवकृमतो स्मान्पातुवामांगजन्मा ॥२॥ अविचलमणिबिम्बत् सत्फणानां सहस्रं। बहुलविमलभास्वद्भूषणोद्भासिगात्रः गुरुतरवरभक्त्यासक्तचित्ताङ्गभाजां। भवतु शिवसमृद्धौ चाश्वसेनिर्जिनेंद्रः ॥३॥ कुपितकरिमृगेश व्यालदावानलाब्धि। प्रहरणगदगुल्मातङ्कशङ्कापहर्त्ता। विकसितमुखपद्मः सत्पुरेसूरताख्ये। जयतु भुवनलक्ष्म्याभ्राजमानोजिनेंद्रः ॥४॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ * ॥   ॥ * ॥

॥*॥ यस्यज्ञान दयासिन्धो। र्दर्शनं श्रेयसे भुवं। सश्रीमान् पार्श्वतीर्थेशो। निषेव्यः सततं सतां॥१॥ वामासूनोर्यशः पुंजैरगाधस्यानघागुणाः। स्मर्यन्ते येन स स्वार्यी। भवेत्प्राचीनबर्हिषां ॥२॥ विहाय विषयासक्तान्। संसारिकसुरासुरान्। सेव्यतामच्युतो श्रीराःपार्श्व देवोपरः प्रभुः ॥३॥ जिनाःसर्वार्थदानेन। येन कल्पद्रुमाअपि। भवेदभ्यर्चितो लोके। सश्रियेचाम्रतायच ॥४॥ संस्तुतो मधुरश्लोकै। र्जैनलाभप्रदायकः। कल्याणकारको भूयात्। श्रीमान् शङ्खेश्वरःप्रभुः ॥५॥ इति श्रीसमस्यामयोशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तुतिः ॥

॥*॥लक्ष्मीनिदानं गुरुकर्मदानं। सद्धर्मदानं जगतेददानं

चञ्चत्पार्श्वांचितपादपार्श्वं । सुधामिपार्श्वेभवभेदपार्श्वं ॥१॥
कं दानपीयूषसमप्रभावा । समप्रभावा भवदीयमूर्त्तिः ।
विभाति वामाप्रभव त्रिलोके । भवत्रिलोकेन समर्चनीय
॥२॥ नवोगपद्मकममादरेण । हृद्यादधाना अनतादरेण ।
मुक्ताभदैकण्ठे पराया । निर्वेगवन्सौख्यपरं पराया: ॥ ३ ॥
त्रिःशंपथत्र्यवंचितदानवारि यन्मानसे त्वं ध्रियसे सदैव । सएव
गच्छत्समदानवारि । मोचारितोद्दामयशाः सदैवः ॥ ४ ॥
दैवाधिदेवाधिकरम्यमेव । सुस्थान सुस्थानभिनुत्करूपः ।
दारांगमारांगवितीर्णभूयः । कल्याण कल्याणकृदंगभाजां
॥५॥ वैरम्य मे त्वं वरवैदाराज । मनोभिरामैः सुमनोभि
रामैः । कर्माभिधैर्कण्ठिकुनभूषनाम्ने । विभासि लोकेश वि
भासि लोके ॥ ६ ॥ इत्थं ते जिनपुंगवस्य भगवन् मोद्दाम
धामाभिनं । पादाब्जं परभागभृत्त्रिभुवनस्तुत्यं स्तुवन्तो
गिरां । दक्षं कर्मविपक्षपक्षदलने भव्या भवंतु क्षमाः । क
ल्याणाय यमुक्तिमाप्नुमखिलं तीर्त्वा भवांभोनिधिं ॥७॥
इति विविधयमकयुक्त श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥*॥

॥ * ॥ शालिनीछन्दः ॥ * ॥ गोडीग्रामेश भव्ये
चकोरां । कोरालस्यां पाति लोकबाध्ये । वामागारस्त्रां
पार्श्विव्यालकोपि श्रीपार्श्व गौडिकं नमस्त्वं ॥ १ ॥
इष्टार्थानां स्पर्शे पारिजातं । वामादेव्यानन्दनं देव
वंद्यं । कल्पद्रुमो भाग्यलोके प्रसिद्धं । श्रीपा० ॥२॥ भित्वा
भेदं कर्माणां त्रिगाणं । साक्षात्कं ज्ञानगतं वरदं ।
[illegible] ॥ ३ ॥ श्रीपा० ॥ त्रिसुखागां
त्रिलोके प्रसिद्धं । पापागद्दं मोक्षनगरीकमलं श्रीभो

नाव्यं सर्वदा सुप्रसन्नं । श्रीपा० ॥ ४ ॥ वर्षेरस्येख गदो न्नागचंद्र । संख्येमासे माधवे कृष्णपक्षे। प्राप्तं पुण्यै र्दृश्नं वस्य तंच । श्रीपा० ॥ इति शंखेश्वरजिनस्तवः ॥॥

॥॥ विशदसद्गुणराजि विराजितं । घनघनाघननादविभा जितं । भजतभक्तिभरेण रसेश्वरं । जगति पार्श्वजिनेशमन श्वरं ॥१॥ विविधवर्णविभूषितविग्रहाः । विहितदुष्टमदर्प्यक निग्रहाः । वसुयुगार्कमिताः सुखताकराः । जिनवराः प्रस वंतु शिवंकरा ॥ २ ॥ रुचिरवर्ण निवद्धमनिन्दितं । सुमनं सामकरैरभिवंदितं । निखिलसाधुजनाः खलुनिर्मिदं । जिन मतं नमतां चितशर्मदं ॥ ३ ॥ सकलभव्यसरोजविकाशिका । कुमततंतलसोद्धयनाशिका । जिनवराननपद्मगतोन्मुदा । भवतु वाग्जिनलाभशुभार्थदा ॥४॥ इतिपार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥

॥॥श्रीमत्पार्श्वजिनेश्वरस्यविलसद् ज्ञानामृतांभोनिधेः। सद्भावेनपरस्वरूपविरतेसुत्क्यास्पदे तस्य पः । सन्मतप्रति विंवतस्तु सुतरां गौडीपुरोद्भासिनः । सोल्लासं प्रणिपत्यसत्य मनसा तलैव नित्यंस्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांवुजदर्श नोतसुकधि योभव्या व्रजंतोध्वनि । स्पृश्यन्ते नहि दुष्टजंतुनिवहैर्वन्यै र्न वा तस्करैः नैवोज्वालदवानलैर्जलचराकीर्णै र्जलैर्जातुनो स श्रीपार्श्वविभुर्व्यचिन्त्यमहिमाह्यस्यानकेषां भवेत् ॥ २ ॥ हित्वांतः करणाद्द्रुतं कुटिलतां मोहादिनोद्भाविता । धृत्वा निर्मलभावनांच विधिनायद्भक्तिमातन्विता । लभ्य न्तेनरराजनिर्जरवर श्रेणीसुखानिक्रमा। न्मुक्तिश्रीरपिसै वसुदृमतचासंसेव्यतां विश्रुपाः ॥३॥ इतिश्रीगोडीपार्श्वजिन स्तोत्रं ॥॥

॥ ॐ ॥ आद्यः श्रीऋषभस्ततोजितजिनः श्रीसंभव स्तीर्थकृत् । सुश्रीमानभिनंदनश्चसुमतिः श्रीसद्मपद्मप्रभः । पृथ्वीकुक्षिभवः सुपार्श्वजिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रभः । सर्वज्ञ सुविधिर्जिनोमुनिमतः श्रीशीतलःसौम्यहक् ॥ १ ॥ श्रेयांस प्रभुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः । शांतिःकुंथुररस्ततो जितरिपुर्मल्लिर्जिनः सुव्रतः । अर्हंतौनमिनेमिशुद्धमुनिपौ विश्वत्रयेविश्रुतौ । श्रीमत्पार्श्वजिनः प्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्ध मानः प्रभु ॥ २ ॥ एते श्रीजिनपुङ्गवाः परमचिद्रूपाश्चतु र्विंशति र्निश्शेषोत्तमभव्यजंतुहृदयां भोजप्रबोधोद्यताः । वंद्यास्ते सुरवृन्दवंद्यविशदस्तोकप्रजानिर्भय । श्रीसंपत्तिनि वास विक्रमपुरेसङ्गत्तितः प्रत्यहं ॥ ३ ॥ इति चतुर्विंशति जिनस्तवनम् ॥ ॐ ॥

अथ मङ्गलाष्टकं लिख्यते ।

॥ ॐ ॥ श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रभा । भास्वत्पादनखेन्दव प्रवचनांभोधौ व्यवस्थायिनः । ये सर्वे जिनसिद्धसूरिसुगता स्ते पाठकासाधवः । स्तुत्यायोगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं । मुक्तिश्रीनगराधनं जिनपतेः स्वर्गापवर्ग प्रदः । धर्मःसूक्तिसुधाय चैत्यमखिलं जैनालयं श्रयालयं प्रोक्तं तत्त्रिविधं चतुर्विध ममीकुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ २ ॥ नाभेया दिजिनाधिपास्त्रिभुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः । श्रीमन्तो भरते श्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश । ये विष्णुप्रतिविष्णुलाङ्गल धराः सप्ताधिकाविंशति । स्त्रैलोक्ये भयदात्रिषष्टिपुरुषाः ।

कुर्वंतुमे मङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीर स्य पावापुरी। चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः। सम्मेदशैलेर्हतां। शेषाणामपि चोर्ज्जयन्तशिखरेनेमीश्वरस्यार्हतो। निर्वाणाविनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वंतुमे मङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौस्थिता। जंबूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथावक्षाररूप्यादिषु। इक्ष्वाकारगिरौच कुंडलनगेद्वीपेच नंदीश्वरे। शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ ५ ॥ यो गर्भावतरोपिजय त्यर्हतां जन्माभिषेकोत्सवे। यो जातः परिनिक्रमेवचभवोयः केवलज्ञानभाक्। यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमासंभावितः स्वर्गिभिः। कल्याणानि च तानि पंचसत तं कुर्वंतु मे मंगलं ॥ ६ ॥ ये पंचौषधिऋद्धयः श्रुततपोवृद्धिंगताः पंचये। येचाष्टांगमहानिमित्तकुशला ये ष्टौविधाचारणा। पंचज्ञानधराश्च ये पि बलिनो ये बुद्धि ऋद्धीश्वरा। सप्तै तेसकलाश्च ते गणभृताः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ ७ ॥ देव्यश्चाष्टजयादिका द्विगुणिता। विद्यादिका देवता। श्रीतीर्थंकर मातृकाश्च जनकायक्षाश्च यक्षीश्वराः। द्वात्रिंशत्त्रिदशाग्रहानिधि सुरादिक्कन्यकाश्चाष्टधा। दिक्पाला दश इत्यमीसुरगणाः। कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥८॥ इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं कल्याण कालेर्हतां। पूर्वाह्लेपि महोत्सवेपि सततं श्रीसौख्यसंपत्करं। ये शृण्वंति पठंति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता। लक्ष्मीराश्रयते विप्रायरहिताः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ ९ ॥ इति श्रीमङ्गलाष्टकं सपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥❋॥ ॥❋॥

॥❋॥ शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं। नदेवंनबंधुर्नकर्म

नकर्त्ता नभंगं नसंगं नइच्छा नकामं। चिदानन्दरूपं नमोवीत रागं ॥ १ ॥ नबंधो नमोक्षो नरागादिलोकं। नजोगंनभोगं नव्याधिर्नशोकं। नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं। चि० ॥२॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा। नचक्षुर्नकर्णं नवक्त्रं न निद्रा। नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा। चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोहं नचिंता। नक्षुद्रं नभीतं नकार्श्यं नतुंदा नस्वामीनभृत्यं नदेवोनमर्त्यो। चि० ॥४॥ त्रिदंडे त्रिखंडे हरेविश्वव्यापं। हृषीकेश विद्ध्वंशकर्म्मारिजालं। नपुण्यं न पापं नअक्ष्यानिग्राणं। चि० ॥५॥ नबाल्यं नवृद्धं नविद्विन्न मूढा। नछेद्यं नभेद्यं नमूर्त्तिर्न मोहा। नकृष्णं नशुक्लं न मोहं नतंद्रा। चि० ॥६॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या। नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टौ नभव्या। नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं चि० ॥ ८ ॥ इदंज्ञानरूपं स्वयंतत्ववेदी। नपूर्णं न शून्यं सचैतन्यरूपं। अन्योभिभिन्नं नपरमार्थमेकं। चि०॥८॥ आत्मारामगुणाकरंगुणनिधिंचैतन्यरत्नाकरं। सर्वंभूतगतागते सुखदुखज्ञातात्वयासर्वगं। त्रैलोक्याधिपतिस्वयंस्वमनसाध्यायंति योगेश्वराः। वंदे तं हरिवंश हर्षहृदयं श्रीमान भूदच्युतः ॥ ९ ॥ इति श्रीपरमात्मास्तोत्रं ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ दर्शनं देवदेवस्य। दर्शनं पापनाशनं। दर्शनं स्वर्ग सोपानं। दर्शनं मोक्षसाधनं॥१॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां। साधूनां वंदनेनच। नतिष्टतिचिरं पापं। छिद्रहस्ते यथोदकं॥२ दर्शनं जिनसूर्यस्य। संसारध्वांतनाशनं। बोधनं चित्तपद्मस्य समस्तार्थप्रकाशकं॥३॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य। सद्धर्मामृतवर्षणं जन्मदाहविनाशाय। वृंहणंसुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेभक्ति

जिनेभक्ति। जिनेभक्ति दिनेदिने। सदामेस्तु सदामेस्तु। सदा मेस्तु भवेभवे ॥५॥ नह्निवाता नह्निवाता। नह्निवाता जग त्वये। वीतरागसमोदेवो। न भूतोन भविष्यति॥६॥ अन्य थाशरणं नास्ति। त्वमेवशरणं मम। तस्मात् सर्व्व प्रयत्नेन रक्षरक्षजिनेश्वर॥७॥ वीतरागंमुखंदृष्ट्वा। पद्मरागसमप्रभं। नैकजन्मकृतंपापं। दर्शनेनविनश्यति॥८॥ अर्हंतो मंगलं नित्यं। सिद्धाजगतिमंगलं। मंगलंसाधवोमुख्यं। धर्म्मः सर्व्वत्र मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमाह्यर्हंतः। सिद्धालोगोत्तमाः सदा। लोकोत्तमोयतीशानां। धर्मो लोकोत्तमोर्हतां॥१०॥ शरणं सर्व्वदार्हंतः। सिद्धाशरणमंगिलां। साधवः शरणं लोके। धर्म्म शरणमर्हतां॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कारस्तोत्रं संपूर्णम ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ ऋषिमंडल स्तोत्र लि ॥

॥ ॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष्यं। मक्षरंव्याप्ययत्स्थितं। अग्निज्वालासमंनादं। बिंदुरेखा समन्वितं॥१॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं। मनोमलविशोधकं। देदीप्यमानंहृत्पद्मे। तत्पदंनौमिनिर्मलं॥ २॥ अर्हमित्यक्षरंब्रह्म। वाचकं परमेष्ठिनः। सिद्धचक्रस्यसद्बीजं। सर्वतः प्रणिदध्महे॥ ३ ॥ ॐ नमोर्हद्भ्यईशेभ्य। ॐ सिद्धेभ्योनमोनमः। ॐ नमः सर्वसूरिभ्य। उपाध्यायेभ्य ॐ नमः॥ ४॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्य। ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः। ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्य। श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत। दर्हदाद्यष्टकंशुभं। स्थानेष्वष्टसुविन्यस्तं। पृथग्बीजसमन्वितं॥ ६ ॥ आद्यं

पदं शिखां रक्षे। त्परं रक्षतु मस्तकं। द्वतोयं रक्षेन्नेत्रे द्वे। तुर्यं रक्षेच्च नासिकां ॥ ७ ॥ पंचमंतु मुखं रक्षेत्। षष्ठं रक्षे च्च घंटिकां। नाभ्यंतं सप्तमं रक्षे। द्रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८॥ पूर्वं प्रणवतः सांतः। सरेफोद्व्यब्धिपंचषान्। सप्ताष्टदशसूर्यांकान्। श्रितोविंदुस्वरान् पृथक् ॥ ६ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः। पंचातोज्ञानदर्शन। चारित्रेभ्यो नमो मध्ये। ह्रींसांतह्समलंकृतः ॥१०॥ ॥ ॐ। ह्रां। ह्रीं। ह्रुं। ह्रूं ह्रें। ह्रैं। ह्रौं। ह्रः असिआउसाज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः ॥ ॥ *जंबूवृक्षधरोद्वीपः। क्षारोदधिसमावृतः। अर्हदाद्यष्टकैरष्ट। काष्ठाधिष्टैरलंकृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतोमेरुः। कूटलक्षैरलंकृतः। उच्चैरुच्चैस्तरस्तार। स्तारा मंडलमंडितः॥१२॥ तस्योपरिसकारांतं बीजमध्यास्यसर्वगं। नमामिबिंबमार्हंत्यं। ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलंशांतं। बहुलं जाड्यतोज्झितं। निरीहं निरहंकारं। सारं सारतरं घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं। सात्त्विकं राजसंमतं। तामसं चिरसंबुद्धं। तैजसं शर्वरीसमं ॥१५॥ साकारंच निराकारं। सरसं विरसंपरं। परापरं परातीतं। परंपर परापरं ॥१६॥ एकवर्णं द्विवर्णं च। त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं। पंचवर्णं महावर्णं। सपरंच परापरं ॥१७॥ सकलं निष्कलंतुष्टं। निर्वृतं भ्रांतिवर्जितं। निरंजनं निराकारं। निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥१८॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं। बुद्धं सिद्धं मतंगुरु। ज्योतीरूपं महादेवं। लोकालोक प्रकाशकं ॥१९॥ अर्हदा

* इति ऋषिमण्डलमूलमन्त्रः आराधकस्य शुभः नवबीजाक्षरः षोडशशुद्धाक्षरः ।

ख्यस्तु वर्णातः । सरेफोविंदुमंडितः । तुर्यस्वरसमायुक्तो बहुध्यानादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे । वृषभाद्याजिनोत्तमाः। वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता । ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥ नादश्चंद्रसमाकारो । विंदुर्नीलसमप्रभः । कलारुणसमासांतः। स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥ शिरः संलीन ईकारो । विनीलोवर्णतः स्मृतः । वर्णानुसारसंलीनं तीर्थकृन्मंडलंस्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभपुष्पदंतौ । नादस्थिति समाश्रितौ । विंदुमध्यगतौनेमि । सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥२४॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ । कलापदमधिष्टितौ । शिरईस्थितिसंलीनौ । पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥२५॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे । हर स्थाने नियोजिताः । मायाबीजाक्षरंप्राप्ता । श्चतुर्विंशतिरर्हतां ॥ २६ ॥ गतरागद्वेषमोहाः । सर्वपापविवर्जिताः । सर्वदाः सर्वकालेष । ते भवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्यचक्रं तस्य चक्रस्य या विभा । तयाछादित सर्वाङ्गं मामांहिनस्तु डाकिनी ॥२८॥ देवदेवस्य० । मामांहिनस्तु राकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० । मामांहिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देव० । मामांहिनस्तु काकिनी ॥३१॥ देवदे० । मामांहिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देव० । मामांहिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० । मामांहिनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देव० । मामांहिंसंतु पन्नगाः ॥ ३५॥ देव० मामांहिंसंतु हस्तिनः ॥३६॥ देवदे० । मामांहिंसंतुराक्षसाः ॥ ३७ ॥ देव० । मामांहिंसंतुवह्नयः ॥३८॥ देव० । मामांहिंसंतु सिंहकाः ॥३९॥ देव० । मामांहिंसंतु दुर्जनाः ॥४०॥ देव० । मामांहिंसंतु भूमिपाः ॥४१॥ श्रीगौतमस्ययामुद्रा । तस्यायाभुविलब्धयः । ताभिरभ्यु

द्युतज्योति। रक्षंसर्वनिधीश्वरः ॥४२॥ पातालवासिनो देवा। देवाभूपीठिवासिनः। स्वर्वासिनोपि ये देवाः। सर्वे रक्षंतु मामितः ॥४३॥ येऽवधिलब्धयो येतु। परमावधिलब्धयः। ते सर्वे मुनयोदेवाः। मांसं रक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाभूतवे ताला:। पिशाचामुद्गलास्तथा। तेसर्वेप्युपशाम्यंतु। देवदेव प्रभावतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीश्चधृतिर्लक्ष्मी। गौरी। चंडी सरस्वती। जयां वा विजयानित्या। क्लिन्नाजितामदद्रवा ॥४६॥ कामांगाकामबाणाच। सानंदानंदमालिनी। माया मायाविनी रौद्री। कला कालीकलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वामहादेव्यो। वर्त्तंतेयाजगत्त्रये। मह्यंसर्वाः प्रयच्छंतु। कांतिंकीर्त्तिं धृतिं मतिं॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुदुः प्राप्यः श्रीऋषिमंडलस्तवः। भाषितस्तीर्थनाथेन जगत्त्राण कृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणेराजकुलेवह्नौ। जलेदुर्गे गजे हरौ। श्मशाने विपिने घोरे। स्मृतो रक्षति मानवं ॥५०॥ राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं। पदभ्रष्टा निजं पदं। लक्ष्मी भ्रष्टा निजां लक्ष्मीं। प्राप्नुवंति न संशयः ॥५१॥ भार्यार्थीलभते भार्यां। पुत्रार्थी लभते सुतं। वित्तार्थी लभते वित्तं। नरः स्मरण मात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णेरूप्ये पटेकांस्ये। लिखित्वा यस्तुपूजयेत्। तस्यैवाष्टमहासिद्धि। गृहेवसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ भूर्जपत्रेलिखित्वेदं। गलके मूर्ध्नि वा भुजं। धारितं सर्वदा दिव्यं। सर्वभीति विनाशकं ॥ ५४ ॥ भूतैः प्रेतैर्ग्रहै र्यक्षैः। पिशाचैर्मुद्गलैर्मलै। वातपित्तकफोद्रेकैर्मुच्यते नात्रसंशयः ॥५५॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयीपीठः। वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः। तैःस्तुतैर्वंदितैर्दृष्टै यत्फलं तत्फलं स्मृतौ ॥ ५६॥

एतद्गोप्यं महास्तोत्रं । न देयं यस्यकस्यचित् । मिथ्यात्ववासिने दत्ते । बालहत्यापदेपदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपः कृत्वा । पूजयित्वाजिनावलीं । अष्टसाहस्रिको जापः। कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरंप्रात । र्येपठंति दिने दिने । तेषां नव्याधयो देहे । प्रभवंति नचापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिंयावत् । प्रातःप्रातस्तु यः पठेत् । स्तोत्रमेतन्महातेजो । जिनबिंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतोबिंबे भवेसप्तमके ध्रुवं । पदंप्राप्नोतिशुद्धात्मा । परमानंदनंदितः ॥६१॥ विश्ववंद्यो भवेध्याता । कल्याणानिचसोऽश्नुते । गत्वा स्थानंपरं सोपि । भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं । स्तुतीनामुत्तमंपरं । पठनात्स्मरणाज्जापा लभ्यते पदमुत्तमं ॥ ६३ ॥ इति श्रीऋषिमंडलस्तोत्रं ॥ ॥ क्षेपक श्लोकान्निराकृत्यमूलयंत्रकल्पानुसारेण । लिखितं । गणिः श्रीक्षमाकल्याणो पाध्यायैः तस्योपरि मयापि लिखितं इदं स्तोत्रं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रलि ॥

॥ ॥ भक्तामरप्रणत मौलिमणिप्रभाणा । मुद्द्योतिकंदलितपापतमोवितानं । सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगंयुगादा । वालंबनंभवजलेपततांजनानां ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकल वाङ्मयतत्वबोधादुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः स्तोत्रैर्जगत्त्रितय चित्तहरैरुदारैः । स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमंजिनेंद्रं ॥२॥ युग्मं । बुद्ध्याविनापिविबुधार्चितपादपीठ । स्तोतुंसमुद्यतमति र्विगतत्रपोहं । बालंविहायजल

संस्थितमिंदुबिंब । मन्यः क इच्छति जनः सहसाग्रहीतुं ॥३॥ वक्तुं गुणान्गुणसमुद्र शशांक कांतान् । कस्ते क्षमः सुरगुरु प्रतिमोपि बुद्ध्या । कल्पांतकाल पवनोद्धतनक्रचक्रं । कोवात रीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्यां ॥४॥ सोहं तथापि तवभक्तिवशा न्मुनीश । कर्त्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्यात्मवीर्य मविचार्य मृगोमृगेन्द्रं । नाभ्येति किं निजशिशोः परिपाल नार्थं ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतं परिहासधाम । त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्मां । यत्कोकिलःकिलमधौमधुरंविरौ ति । तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतु ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसन्निबद्धं । पापंक्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजां । आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु । सूर्यांशुभिन्न मिव शा र्वरमंधकारं ॥ ७ ॥ मत्वेतिनाथतवसंस्तवनंमयेद । मार भ्यते तनुधियापि तवप्रभावात् । चेतोहरिष्यतिसतां नलिनी दलेषु । मुक्ताफलद्युतिमुपैतिननूदबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तांतव स्तवनमस्तसमस्तदोषं । त्वत्संकथापि जगतां दुरितानिहंति । दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव । पद्माकरेषु जलजानिविका शभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ । भूतै गुणैर्भु वि भवंतमभिष्टुवंतः । तुल्या भवंति भवतोननु तेन किंवा । भूत्याश्रितं य इहनात्मसमंकरोति ॥ १० ॥ दृष्ट्वाभवंत मनि मेषविलोकनीयं । नान्यत्रतोषमुपयाति जनस्यचक्षुः पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिंधोः । क्षारंजलंजलनिधेरसि तुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं । निर्मापितस्त्रिभुवनैक ललामभूत । तावंतएवखलुते प्यणवः पृथिव्यां । यत्ते समानमपरंनहिरूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क

तेसुरनरोरगनेत्रहारि। निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानं। बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य। यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पं॥१३॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप। शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तवलंघयंति। ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं। कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टं ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्रयदितेत्रिदशांगनाभि। र्नीतं मनागपिमनो नविकारमार्गं। कल्पांतकालमरुताचलिताचलेन। किं मंदराद्रिशिखरंचलितंकदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः। कृत्स्नंजगत्त्रयमिदं प्रकटी करोषि। गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां। दीपोपरस्त्वमसिनाथ जगत्प्रकाशः॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासिनराहुगम्य। स्पष्टी करोषि सहसायुगपज्जगंति। नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः। सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्रलोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं। गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानां। विभ्राजते तव मुखाब्ज मनल्पकांति। विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबं ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्निविवस्वता वा। युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सुनाथ। निष्पन्नशालिवनशालिनिजीवलोके। कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः॥ १९ ॥ ज्ञानं यथात्वयि विभाति कृतावकाशं। नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु। तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं। नैवंतु काचशकले किरणाकुलेपि॥२०॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा। दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति। किं वीक्षितेन भवताभुवियेन नान्यः। कश्चिन्मनोहरति नाथ भवांतरेपि॥२१॥ स्त्रीणांशतानि शतशोजनयंतिपुत्रान्

नान्यासुतं त्वदुपमं जननीप्रसूता । सर्व्वादिशोदधति भानि
सहस्ररश्मिं । प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालं ॥ २२ ॥
त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस । मादित्यवर्णममलं तम
सः पुरस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्यजयन्ति मृत्युं । नान्यः
शिवः शिवपदस्य मुनींद्रपन्थाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिं
त्यमसंख्यमाद्यं । ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतु । योगी-
श्वरं विदितयोगमनेकमेकं । ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति
सन्तः ॥२४॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्च्चितबुद्धिबोधा । त्वंशं
करोसि भुवनत्रय शङ्करत्वात् । धातासि धीरशिवमार्गविधे
र्विधाना । व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोसि ॥२५॥ तुभ्यं
नम स्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ । तुभ्यं नमः क्षितितलामलभू
षणाय । तुभ्यं नमस्त्रि जगतः परमेश्वराय । तुभ्यं नमोजिन
भवो दधिशोषणाय ॥२६॥ कोविस्मयोत्र यदि नामगुणैर-
शेषै । स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश । दोषैरुपात्त
विबुधाश्रयजातगर्व्वैः स्वप्नांतरेपि नकदाचिदपीक्षितोसि ॥
२७॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखा । माभाति रूपममलं
भवतो नितान्तं । स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं । बिम्बं
रवेरिवपयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूख
शिखाविचित्रे । विभ्राजते तव वपुः कनकावदातं । बिम्बं
वियद्विलसदंशुलतावितानं । तुङ्गो दयाद्रिशिरसीव सहस्र
रश्मेः ॥२९॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभं । विभ्राजते
तव वपुः कलधौतकांतं । उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार ।
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभं ॥३०॥ छत्रत्रयं तवविभाति
शशांककान्त । मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापं । मुक्ताफल

प्रकरजालविवृद्धिशोभं । प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वं ॥ ३१॥ उन्निद्रहेमनवपङ्कज पुंजकान्ति। पर्युल्लसन्नखमयूख शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्रधत्तः । पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३२॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र । धर्मोपदेश न विधौ न तथा परस्य । याद्दक् प्रभादिनकृतः प्रहतान्धकारा । ताद्दक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥३३॥ श्च्योतन्मदा विलविलोल कपोलमूल । मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपं । ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं। दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानां ॥३४॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त । मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः । बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोपि । नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितंते ॥३५॥ कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं । दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गं । विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं । त्वंनामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषं ॥३६॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं । क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तं । आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्कः । त्वन्नामनागदमनो हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरङ्गगजगर्ज्जितभीमनाद । माजौ बलम्बलवतामपि भूपतीनां । उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं । त्वत्कीर्त्तनात्तमइवाशुभिदामुपैति ॥ ३८ कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह । वेगावतारतरणातुरयोधभीमे । युद्धे जयं विजितदुर्ज्जयजेयपक्षाः । त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभन्ते॥३९॥ अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र। पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ । रङ्गत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा। त्रासं विहायभवतः स्मरणाद्व्रजन्ति

॥४०॥ उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः। शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः। त्वत्पादपङ्कजरजोमृतदिग्धदेहा। मर्त्त्याभवन्तिमकरध्वजतुल्यरूपाः॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टिताङ्गा। गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः त्वन्नाम मंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः। सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त द्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि संग्रामवारिधि महोदरबन्धनोत्थं। तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव। यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्रगुणैर्निबद्धां। भक्त्या मया रुचिरवर्ण विचित्रपुष्पां। धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं। तंमानतुंगमवशासमुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ ※ ॥ इतिश्रीभक्तामरस्तोत्रम् ॥ ※ ॥ २ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ अथ कल्याणमंदिरस्तोत्रलि ॥

॥※॥ कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि। भीता भयप्रदमनिन्दितमंघ्रिपद्मं। संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु। पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः। स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्नविभुर्विधातुं। तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो। स्तस्याहमेष किलसंस्तवनं करिष्ये ॥२ युग्मं ॥ सामान्यतोपि तव वर्णयितुं स्वरूप। मस्मादृशाः कथमधीश भवंत्यधीशाः। धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदिवादिवांधो। रूपं प्ररूपयति किं कलघर्मरश्मेः ॥३॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथमर्त्यो। नूनं गुणान्गुणयितुं न तव क्षमेत। कल्पान्तवांतपयसः प्रकटोपि यस्मा। न्मीयेत केन जलधे

नेंनु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोस्मि तवनाथजडाशयो
पि । कर्त्तुं स्तवंलसदसंख्यगुणाकरस्य । बालोपि किं न नि
जबाहुयुगं वितत्य । विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः
॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश । वक्तुं कथं
भवति तेषु ममावकाशः । जातातदेव मसमीक्षितकारिते
यं । जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोपि ॥ ६ ॥ आस्ता
मचिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते । नामापिपाति भवतो भव
तो जगंति ॥ तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाघे । प्रीणातिपद्म
सरसः सरसोनिलोपि ॥७॥ हृद्वर्त्तिनित्वयि विभोशिथली
भवंति । जंतोःक्षणेन निबिडा अपिकर्मबंधाः । सद्योभुजंगम
मया इव मध्यभाग । मभ्यागते वनशिखंडिनिचंदनस्य ॥८॥
मुच्यंत एव मनुजाः सहसाजिनेन्द्र । रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि
वीक्षितेपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे । चौरैरि
वाशुपशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वंतारकोजिन कथंभवि
नांत एव । त्वामुद्वहंति हृदयेन यदुत्तरंतः । यद्वादृतिस्तरति
य ज्जलमेषनून । मंतर्गतस्य मरुतः सकिलानुभावः ॥१०॥
यस्मिन्हर प्रभृतयोपि हतप्रभावाः । सोपित्वया रति
पतिः क्षपितःक्षणेन । विध्यापिताहुतभुजः पयसाथ येन ।
पीतं न किं तदपिदुर्द्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्प
गरिमाणमपिप्रपन्ना । स्त्वांजंतवः कथमहो हृदये
दधानाः । जन्मोदधिं लघुतरंत्यतिलाघवेन । चिंत्यो न
हंतमहतां यदिवा प्रभाव ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो
प्रथमंनिरस्तो । ध्वास्तास्तदावतकथं किल कर्मचौराः ।
प्लोषत्यमुत्र यदिवा शिशिरापिलोके । नीलद्रुमाणि विपिना

नि न किंहिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमा
त्मरूप । मन्वेषयंति हृदयां बुजकोशदेशे । पूतस्य निर्मल
रुचेर्यदिवा किमन्य । दक्षस्य संभविपदं ननु कर्णिकाया
॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन । देहंविहाय
परमात्मदशां ब्रजंति । तीव्रानलादुपलभाव मुपास्य लोके ।
चामीकरत्वमचिरा दिवधातुभेदाः ॥ १५ ॥ अन्तः सदैव
जिन यस्य विभाव्यसेत्वं ॥ भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरी
रं । एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनोहि । यद्विग्रहं प्रशमयं
ति महानुभावाः ॥१६॥ आत्मामनीषिभिरयंत्वदभेदबुद्ध्या ।
ध्यातो जिनेंद्र भवतीह भवत्प्रभावः । पानीयमप्यमृतमित्य
नुचिंत्यमानं । किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥
त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि । नूनं विभो हरिहरादिधि
याप्रपन्नाः । किंकाचकामलिभिरीश सितोपि शंखो
नो गृह्यते विविधवर्ण विपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसम
ये सविधानुभावा । दास्तां जनोभवति ते तरुरप्यशोकः । अ
भ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोपि । किंवा विबोधमुपयाति
न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृंतमेव ।
विष्वक्पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः । त्वद्गोचरे सुमनसां यदि
वा मुनीश । गच्छंति नूनमधएव हि बंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने
गभीरहृदयोदधिसंभवायाः । पीयूषतां तव गिरः समुदी
रयंति । पीत्वा यतः परमसंमदसंगभाजो । भव्याव्रजंति तर
सा प्यजरामरत्वं ॥२१॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो ।
मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः । येऽस्मै नतिं विदधते
मुनिपुंगवाय । ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥

श्यामं गभीरगिर मुज्ज्वलहेमरत्न । सिंहासनस्थमिहभव्य
शिखण्डिनस्त्वां । आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै । श्चामी
कराद्रिशिरसीवनवांबुवाहं ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शिति
द्युतिमंडलेन । लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव । सांनिध्यतो
पि यदिवा तव वीतराग । नीरागतां व्रजति कोन सचेत
नोपि ॥ २४ ॥ भोभो प्रमादमवधूय भजध्वमेन । मागत्य
निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहं । एतन्निवेदयति देव जगत्
त्रयाय । मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्यो
तितेषु भवता भुवनेषु नाथ । तारान्वितोविधुरयं विहता
धिकार । मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र । व्याजात्त्रिधा
धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरित जगत्त्रयपिंडि
तेन । कांतिप्रताप यशसामिव संचयेन । माणिक्यहेमर
जतप्रविनिर्मितेन । शालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥२७॥
दिव्यस्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना । मुत्सृज्य रत्नरचिता
नपि मौलिबंधान् । पादौश्रयंति भवतो यदिवा परत्र ।
त्वत्संगमे सुमनसो नरमन्तएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्म
जलधेर्विपराङ्मुखोपि । यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्ना
न् । युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव । चित्रं विभो यदसि
कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोपि जनपालकदुर्गत
स्त्वं । किंवाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश । अज्ञानवत्यपि
सदैव कथंचिदेव । ज्ञानंत्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतुः ॥
३० ॥ प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा । दुत्थापितानि
कमठेन शठेन यानि । छायापि तैस्तवनहता हताशो ।
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्जदूर्जितघनौ

घमदभ्रभीम। भ्रश्यत्तडिन्मुशलमांसलघोरधारं। दैत्येन मुक्त मथदुस्तरवारिदध्रे। तेनैव तस्य जिनदुस्तरवारिकृत्यं ॥३२॥ ध्वस्तोर्द्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंड। प्रालंबभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः। प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितोयः। सोस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतु ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य। माराधयंति विधिवद्विधुतान्यकृत्या। भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः। पादद्वयंतव विभोभुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपार भववारिनिधौ मुनीश। मन्येन मे श्रवणगोचरतां गतोसि। आकर्णितेतु तव गोत्रपवित्रमंत्रे। किंवा विपद्विषधरी सविधंसमेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव। मन्ये मया महितमीहितदानदक्षं। तेनेह जन्मनि मुनीशपराभवानां। जातो निकेतन महं मथिताशयानां ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन। पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोसि। मर्मोविधौ विधुरयंतिहि मामनर्थाः। प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोपि महितोपि निरीक्षितोपि। नूनं नचेतसि मया विधृतोसिभक्त्या। जातोस्मि तेन जनबांधवदुःखपात्रं। यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंतिन भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य। कारुण्यपुण्यवसते वशिनांवरेण्य। भक्त्यानतेमयि महेश दयांविधाय। दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥३९॥ निःसंख्यसारशरणंशरणंशरण्य। मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदातं। त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधान वंध्यो। वध्योस्मिचेद्भुवनपावनहाहतोस्मि ॥४०॥ देवेन्द्रवंद्य विदिताखिलवस्तुसार। संसारतारकविभोभुवनाधिनाथ।

नाथस्व देव करुणाविद मांपुनीहि। सीदंतमद्यभयद व्यसनां वुराशे ॥ ४१ ॥ यद्यस्तिनाथ भवदंघ्रिसरोरुहाणां। भक्तेः फलंकिमपिसंतत संचितायाः। तन्मे त्वदेकशरणस्यशरण्यभूयाः। स्वामीत्वमेव भुवनेत्र भवांतरेपि ॥ ४१ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र। सांद्रोल्लसत्पुलक कंचुकितांगभागाः त्वद्विंब निर्मलमुखांबुजबद्धलक्षया। येसंस्तवंतवविभो रचयंतिभव्याः ॥४३॥ जननयनकुमुदचंद्रं। प्रभासुराः स्वर्गसंपदोभुक्ता। ते विगलितमलनिचया। अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥※॥ इति कल्याणमंदिरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ※ ॥

-॥ अथ सेत्रुंजरासलि ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ श्रीरिसहेसरपायनमी। आणीमनआणंद। रासभणुंरलियामणो। सेत्रुंजैनोसुखकंद ॥ १ ॥ संवत्च्यारसतोतरै। हुवाधनेसरसूर। तिणसेत्रुंजमाहातमकियो। शिलादित्यहजूर ॥ २ ॥ वीरजिणंदसमोसर्या। सेत्रुंजैऊपर जेम। इन्द्रादिक आगलिकह्यो। सेत्रुंजैमाहातमएम ॥३॥ सेत्रंजतीरथसारिषो। नहीछै तीरथकोय। स्वर्गम्रत्युपातालमैं। तीरथसगलाजोय ॥४॥ नामैनवनिधिसंपजै। दीठांदुरितपुलाय। भेटंतां भवभयटलै। सेवंतांसुखथाय ॥५॥ जंबूनामैदीपए। दक्षिणभरतमझार। सोरठदेससुहामणो। तिहांछै तीरथसार ॥ ६ ॥※॥ ढालपहिली: रामगिरी ॥※॥ ॥ सेत्रुंजानेंश्रीपुंडरीक। सिद्धक्षेत्रकहुं तहतीक। विमलाचलनैकहुंपरणाम। एसेत्रुंजैनाइक वीसनांम ॥ १ ॥ सुरगिरनें महागिरपुन्यरास। श्रीपदपर्वतइंद्रप्रकास। महातीर

यपुरवैसुखकांम ॥ ए० २ ॥ सासतोपर्वतनें हढशक्ति। सुक्ति निलोतिणकोजैभक्ति। पुष्फदंत महापदमसुठाम ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठसुभद्रकैलाय। पातालमूल अकर्मकता स। सर्वकामकीजै गुणग्राम ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजैनाइक वीसनाम। जपैजवैठाश्रपणैठांम। सेत्रुंजजात्रानोफलकहै। महावीरभगवंतइमकहै ॥५॥*॥दुहा॥*॥ सेत्रुंजोपहिलैअरे। असीजोयणपरमांण। पिहुलो मूलजं चपण। छ्वीसजोयणमांण॥ १ ॥ सित्तरजोयणजाणवो। बीजै अरैविशाल। बीसजोयणऊंचोकह्यो। सुऋवंदणात्रिकाल ॥२॥ साठजोयण तोजैअरै। पिहुलो तीरथराय। सोलजोयण ऊंचोसही ध्यानधरूं चितलाय ॥ ३ ॥ पचासजोयणपिहुलपण। चोथे अरै मझार। ऊंचो दसजोयण अचल। नितप्रणमेंनरनार ॥ ४ ॥ बारजोयणपंचम अरै। मूलतणो विशतार। दोजोयण ऊंचोअठै। सेत्रुंजतीरथसार ॥५॥ सातहाथछट्ठै अरै। पिहुलो परबतएह। ऊंचोहोस्यै सउधनुष। सासतोतीरथएह। ॥७॥*॥ ढाल ॥ जिन वरसुं मेरोमनलीणो ॥*॥ केवलन्यानी प्रमुखतीर्थंकर। अनंतसीधाइणठामरे। अनंतवली सीऊसै इणठामै। तिणकरूं नितपरणामरे। सेत्रुंजैसाधुअनंतासीधा। सीऊसीवलीय अनंतरे। जिणसेत्रुंजतीरथनहीभेट्यो। तेगरभावासकहंतरे। सेत्रुं० ॥२॥ फागुणसुदि आठमनै दिवसै। रिषभदेव सुखकाररे। रायणरूंषसमोसर्या स्वामी। पूरवनिनाणुंवाररे। से० ॥३॥ भरतपुत्रचैतीपूनमदिन। इणसेत्रुंजै गिरआयरे। पांचकोड्रिसुं पुंडरीकसीधा तिण पुंडरीक कहायरे से० ॥ ४ ॥ नमिविनमिराजाविद्या।

घर। बेबेकोडिसंघातरे। फागुणसुदिदशमीदिनसीधा। तिण प्रणमुंपरभातरे। से० ॥ ५ ॥ चैत्रमासवदि चउदसनेंदिन नमिपुत्रीचोसट्ठिरे। अणसणकरिसेत्रुंजै गिरउपर। एसहु सीधाएकट्ठरे। से०॥६॥ पोतरा प्रथमतीर्थंकरकेरा। द्राविड़ नै वारिखिल्लरे। कातीसुदि पूनमदिनसीधा। दशकोडिसुं सु निशिल्लरे से० ॥ ७ ॥ पांचे पांडवइणगिरसीधा। नवनारद रिषरायरे। संबप्रद्युननगया इहां सुगतें। आठेकरमखपायरे से० ॥८॥ नेमिविना तेवीसतीर्थंकर। समोसर्या गिरहंग रे। अजितशांति तीर्थंकरबेउं। रह्याचोमासोरंगरे। से०॥ ९ ॥ सहससाधुपरिवार संघातें। थावच्चासुतसाधरे। पांचसैं साधुसुं सेलगमुनिवर। सेत्रुंजै सिवसुखलाधरे से०॥१०॥ असं ख्यातामुनिसेत्रुंजैसीधा। भरतेसरनै पाटरे। राम अनै भर तादिक सीधा। मुक्तितणीएवाटरे। से०॥११॥ जालिमयाली नै उवयाली। प्रमुख साधुनीकोडिरे। साधु अनंतासेत्रुंजै सीधा। प्रणमुंबे करजोडिरे से० १२ ॥*॥ ढालचौपईनी ॥ *॥सेत्रुंजैनाकहुं सोलउद्धार। तेसुणिज्योसहुको सुविचार सुणतां आणंदअंगनमाय। जनमजनमनापातिकजाय ॥१॥ ऋषभदेव अयोध्यापुरी। समवसर्यास्वामी हितकरी। भ रतगयो वंदणनैकाज। ए उपदेसदियौ जिनराज ॥२॥ जग मांहैमोटा अरिहंतदेव। चौसठ इंद्रकरैजसुसेव। तेहथीमो टोसंघकहाय। जेहनें प्रणमै जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथीमो टोसंघवीकह्यो। भरतसुणीनैमनगहगह्यो। भरतकहै ते किमपामियै। प्रभुकहै सेत्रुंजै यात्राकियै ॥ ४ ॥ भरतकहै संघवीपद मुज्झ। थे आपोजं अंगजतुज्झ। इंद्रैआण्याअ

व्रतवास । प्रभु आपै संघवीपदतास ॥ ५ ॥ इंद्रै तिणवेला
ततकाल । भरत सुभद्राबिहुंनैमाल । पहिरावीघरसंप्र
हिया । सखरसो नानारथ आपिया ॥ ६ ॥ रिषभदेवनीप्र
तिमावली । रतनतणीदीधीमनरली । भरतै गणधर घरतेडि
या । सांतिक पुष्टिक सहु तिहांकिया ॥ ७ ॥ कंकोत्रीमुंकी
सहुदेस । भरततेडायोसंघआसेस । आयोसंघ अयोध्यापुरी
प्रथमथकी रथजात्राकरी ॥८॥ संघ भगतकीधी अतिघणी ।
संघचलायो सेत्रुंजाभणी । गणधरबाहुबलकेवली । मुनि
वरकोडि साथेलीयावली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तिनी सगलीरिद्ध ।
भरतैं साथेलीधीसिद्ध । हयगयरथपायक परवार । तेतो क
हतांनावैपार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवीकहवाय । मारगचै
त्यउधरतोजाय । संघ आयो सेत्रुंजैपास । सहुनीपूगीमननी
आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्योसेत्रुंजराय । मणिमांणकमो
त्यांसुं बधाय । तिण ठामैं रह्यो महोछवकीयो । भरतें आ
णंद पुरवासियो ॥१२॥ संघसेत्रुंजा ऊपर चढ्यो । फरसं
तापातिक ऊडपड्यो । केवल न्यानी पगला तिहां । प्रण
म्यारायण रूंषहे जिहां ॥१३॥ केवलन्यानीसनालनिमित्त ।
ईशानेंद्र आणीसुपवित्त । नदीसेत्रुंजैसोहामणी । भरतैंदी
ठीकौतुकभणी ॥१४॥ गणधर देवतणें उपदेस । इंद्रै वलि
दीधो आदेस । श्रीआदिनाथ तणोदेहरो । भरत करायो
गिरिसेहरो ॥१५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग । रतन तणी
प्रतिमा मनरंग । भरतै श्रीआदीसरतणी । प्रतिमाथापी
सोहामणी ॥१६॥ मरुदेवानी प्रतिमावली । माहीपूनिंसघा
मीरली । माह्मीसुंदरीप्रमुखप्रासाद । भरतैथाप्यानवलेनाद

॥१८॥ इमअनेक प्रतिमाप्रासाद । भरतकराया गुरुसुप्रसाद भरततणोपहिलो उद्धार । सगलोही जाणे संसार ॥ १९ ॥ ॥ ॥ ढाल सिंधूडो आसावरी ॥ ॥ भरत तणेपाटै आठमै । दंडवीरज थयो रायोजी । भरत तणोपरे संघ कीयो । सेत्रुंजसंघवी कहायो जी । सेत्रुंजेउद्धारसांभलो । सोलमोटा श्रीकारोजी । असंख्यात वीचावलि । तेहनकहुं अधिकारोजी । से० ॥२॥ चैत्यकरायो रूपातणो । सोनानो विंवसारोजी । मूलगो विंवभंडारीयो । पश्चिमदिश तिणवा रोजी । से० ॥३॥ सेत्रुंजेनो जात्राकरी । सफलकियो अव तारोजी॥ दंडवीरज राजातणो । एवीजो उद्धारो जी । से० ॥४॥ सोसागरोपमवितिक्रम्या । दंडवीरजथी जिवारोजी । ईशानेंद्रकरावीयो । एत्रीजो उद्धारोजी । से० ॥५॥ चोथा देवलोकनो धणी । माहेंद्रनामउदारोजी । तिणसेत्रुंजेनो करावीयो । एचोथो उद्धारोजी । से० ॥६॥ पांचमा देवलो कनोधणी ब्रह्मेंद्र समकित धारोजी । तिणसेत्रुंजेनो करा वीयो । एपांचमो उद्धारोजी । से० ॥ ७ ॥ भुवनपती इंद्र नोकीयो । एछट्ठो उद्धारोजी । चक्रवर्त्तिसगरतणोकीयो । एसातमो उद्धारोजी । से० ॥ ८ ॥ अभिनंदनपासे सुण्यो । सेत्रुंजनो अधिकारो जी । व्यंतर इंद्र करावीयो । ए आठमो उद्धारो जी । से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभु स्वामिनोपो तरो । चंद्रशेखरनाममल्हारोजी । चंद्रजसराय करा वीयो । ए नवमो उद्धारोजी । से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणीदेशना । शांतिनाथ सुत सुविचारोजी । चक्रधर राय करावीयो । ए दशमो उद्धारोजी । से० ॥ ११ ॥ दशरथसुत

जगदीपतो। मुनि सुब्रत स्वामी वारो जी। श्रीरामचंद्र करावीयो। ए इग्यारमो उद्धारोजी। से० ॥१२॥ पांडव कहे अम्हे पापीया। किम छूटां मोटी मायोजी। कहे कुंती सेत्रुंजतणो। यात्र कीयां पाप जायोजी। से० ॥ १३॥ पांचे पांडव संघ करी। सेत्रुंज भेट्यो अपारोजी। काष्टचैत्य बिंबलेपना। ए बारमो उद्धारोजी। से०॥ १४ ॥ मम्माणी पाषाणनी। प्रतिमा सुंदरसरूपोजी। श्रीसेत्रुंजैनो संघकरी। थापी सकल सरूपोजी। से० ॥ १५ ॥ अष्टोत्तर सोवरसांगयां। विक्रमनृपथी जिवारो जी। पोर वाडजावड करावीयो। एतेरमो उद्धारो जी। से० ॥१६॥ संवत बारतिडोत्तरै। श्रीमालो सुविचारो जी। वाहडदे सुहतै करावीयो। ए चवदमो उद्धारोजी। से० ॥१७॥ संवततेरै इकोत्तरै। देसलहर अधिकारोजी। समरै साहकरावीयो। ए पंनरमो उद्धारो जी। से० ॥ १८ ॥ संवत पनर सत्यासीयै। वैसाख वदि सुभ वारोजी। करमैडोसी करावीयो। एसोलमो उद्धारो जी। से०॥१९॥ संप्रतिकालैसोलमो। ए वरतैछै उद्धारोजी। नितनितकीजै वंदना। पामीजै भवपारोजी। से० ॥२०॥ दुहा। वलिसेत्रुंज महातमकडु सांभलो जिमछै तेम। सूरिधनेसरइमकहै। महावीरकह्यो। एम ॥ १ ॥ जेहवोतेहवोदरसणी। सेत्रुंजै पुजनीक। भगवंतनो वेसवांदतां। लाभहुवैतहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजाउपरै। चैत्यकरावै जेह। दलपरमाण समोलहै। पल्योपम सुखदेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो। नवोनीपावै कोय जीर्णोद्धार करावतां। आठगुणो फलहोइ ॥ ४ ॥ सिर

ऊपरि गागरधरी । स्नात करावै नारि । चक्रवर्त्तिनी स्त्रीथई । सिवसुख पामेंसार ॥ ५ ॥ काती पूनिमसेत्रुंजे चढिनें करैं उपवास ।नारकीसौ सागर समो । करै करम नो नास ॥ ६ ॥ कातीपरवमोटो कह्यो । जिहां सीधा दश कोडि । ब्रह्म स्त्री बालकहत्या । पापथी नासैछोडि ॥७॥ सह सलाख स्रावक भणी । भोजन पुन्यविशेष । सेत्रुंज साधु पडिलाभतां । अधिको तेहथीदेष ॥ ८ ॥*॥ ढाल ५ ॥*॥ धन२ अयवंती सुकुमालनें एहनी ॥ सेत्रुंजगयां पाप छुटी यै । लीजै आलोयणएमोजी। तपजपकीजैं तिहां रही। तीर्थं कर कह्यो तेमोजी ॥ १ ॥ से० । जिणसोनानी चोरीकरी । ए आलोयणतासोजी । चैत्रीदिन सेत्रुंजचढी । एककरैं उप वासोजी ॥ २ ॥ से० । वस्तुतणी चोरीकरी । सात आंबिल सुधयायो जी । काती सातदिन तपकीयां । रतनहरण पाप जायोजी ॥ ३ ॥ से० । कांसी पीतल तांबा रजतनी । चोरी कीधी जेणे जी । सातदिवस पुरमढ़करै । तो छूटै गिरि एणेजी ॥ ४ ॥ से० । मोती प्रवाला मूंगीया । जिण चोर्‍या नरनारोजी । आंबिलकरि पूजाकरै । त्रिणटं क सुद्ध आचारोजी ॥ ५से० ॥ धान पाणी रसचोरीया । जे भेटै सिद्धखेत्रोजी । सेत्रुंजतलहटीसाधुनैं । पडिलाभैं सुध चित्तोजी ॥ ६ से० ॥ वस्त्राभरणजिणेंहर्‍या । तेछूटैइणमेलो जी । आदिनाथनी पूजाकरै । प्रहऊठीवड़वेलोजी ॥७से० ॥ देवगुरुनो धनजेहरै । तेसुद्धथायैएमोजी । अधिकोद्रव्य खरचै तिहां । पालपोषै बहुप्रेमोजी ॥८ से०॥ गायभैंसघो डामही । गजनोचोरणहारोजी । दे तेवस्तु तीरथैं । अरिहं

तध्यांनप्रकारीजी ॥ ९ से० ॥ पुस्तक देहरापारका । तिहां लिखे अपणो नामोजी । छूटैछमासीतपकीयां । सामायक तिणठामोजी ॥ १० से० ॥ कुंवारीपरिव्राजका । सधव अधव गुरु नारीजी । व्रतभांजे तिणनैंकह्यो । छमासीतपसारीजी ॥ ११से० ॥ गौ विप्रस्त्री बालकरिषी । एहनोघातक जेहोजी॥ प्रतिमा आगे आलोवतां । छूटैतपकरितेहोजी ॥ १२ से० ॥*॥ ढाल६ कुंमरभलै आवीयोए ॥एहनो ॥*॥ संप्रतिकालै सोलमोए । एवरतैछै उद्धार । सेतुंजयाला करूंए । सफलकरूं अवतार ॥ १ से० ॥ छहरी पालतांचा लीयेए । सेतुंजकेरीवाट । से० । पालीताणैं पहुंचीयेए । संघ मिलया बहुथाट ॥ २ से० ॥ ललितसरोवरपेखीयेए । वलिस त्तानीवाव । से० । तिहां विसरामोलीजीयेए । वहुनैचीतर आवि ॥ ३से० ॥ पालीताणैंपाजहुैए । चढीयेउठिपरभात से० । सेतुंजनदीयसोहामणीए । दूरथकीदेखंत ॥ ४ से० ॥ चढियै हिंगुलाजनैं हड्डैए । कलिकुंडनमीये पास । से० । वारीमांहिपैसीयैए । आणी अंगउल्लास ॥ ५ ॥से० । मरुदे वीटूंकमनोहरूए । गजचढी मरुदेवी माय । से० । शांति नाथ जिनसोलमोए । प्रणमीजैतसुपाय ।से०॥ ६ ॥ वंसपोव वाड्डै परगड्डैए । सोमजीसाहमलहार ।से० रूपजी संघवी । करावीयोए । चौमुखमूलउद्धार । से० ॥७॥ चौमुखप्रतिमा [illegible]चीयेए । भमतीमांहिभलाबिंब । पांचेपांडवपजिये ए । अदभुतआदिप्रलंब ।से० ॥८॥ खरतरवसहीपांतिसंए । बिंब जुहारूंअनेक ।से०। नेमनाथचवरीनमुंए । टालुंअलगउदे ग । से० ॥ ९ ॥ धरमदुवारमांहिनीसरूंए । कुगतिकरूं अ

तिदूर। से०। आबुं आदिनाथदेहरैए। करमकरं चकचूर से० ॥ १०॥ मूलनायक प्रणमुं मुदाए। आदिनाथ भगवंत से०। देवजुहारु देहरैए। भमतीमांहिभमंत से० ॥ ११ ॥ सेत्रुंजऊपरिकीजीयेए। पांचेठामसनाव। से०। कलश अठोत्तरसोकरुंए। निरमल नीरसुगाव। से०॥१२॥ प्रथम आदीसर आगलैए। पुंडरीक गणधार। से०। रायणतलपगला नमुंए। शांतिनाथ सुखकार। से० ॥ १३ ॥ रायणतलपगलानमुंए। चोमुखप्रतिमाच्यार। से०। बीजीभूमि बिंबावलीए पुंडरीकगणधार। से० ॥१४॥ सूरजकुंडनिहालीयैए। अति भलीउलकाझोल। से०। चेलणातलाई सिद्धसिलाए। अंगफरसुं उल्लोल ॥से०॥१५॥ आदिपुरपाजैउतरूंए। सिधवडलुं विसरांम। से०। चैत्यप्रवाडइणपरिकरीयै। सीधा वंछितकाम ॥ ॥से०॥१६॥ जात्राकरी सेत्रुंज तणीए। सफलकीयो अवतार से०। कुसलखेमसुं आवीयोए। संघसहूपरिवार ॥से०॥१७॥ सेत्रुंजरास सोहामणोए। सांभलज्योसहुकोइ। से०। घर बैठां भणैभावसुंए। तसुजात्राफलहोइ ॥से०॥१८॥ संवत सोल वयांसीयैए। सावणवदिसुखकार। से०। रासभण्यो सेत्रुंजतणोए। नगरनागोर मझार ॥ से०१९॥ गिरुवोगछ खरतरतणोए ॥जिनचंद्रोदसुरीस। से०। प्रथमसिष्य श्रीपूजनाए। सकलचंदसुजगीस ॥से०२०॥ ताससीसजगजाणीयैए। समैसुंदरउवझाय। से०। रासरच्योतिणरूवडोए। सुणतां आणंदथाय ॥ से० ॥ २१ ॥ ❋ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥*॥ अथ श्रीसम्मेतसिखरजीको रासलिख्यते ॥*॥ वांदी वीसजिनेसरू रचस्यु रास रसाल । तीरथ शिषरसमेतनी महिमा बड़ो विसाल ॥१॥ मोटो तीरथ महियलै । प्रगट्यो शिखर समेत । कोड़ाकोड़ी मुनिवरू सिद्धि गए इहखेत ॥२ तीरथ शिखरसमेतए । फरस्यां पापपुलाय । भविजनभेटो भावसुं । ज्युं सुखसंपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा सिखरसमेत नी । कहिनसकै कविकोय । गुण अनंत भगवंतना । तिमए तीरथ होय ॥४॥ ढाल १॥ चौपईनी ॥*॥ गिरवर शिखर समोनहीकोय । एहनीमहिमासवजगहोय । वीसजिनेसर मुगतैगया । मुनिजन ध्यानधरीनै रह्या ॥१॥ प्रथम अयो ध्यानगरी भली । तिहां जितशत्रु नरेसर बली । विजया राणीनै सुतजाण । अजित कुमर सहुगुणनीषाण ॥ २ ॥ असुइंद्रादिक सेवा करै । इंद्राणी अतिउछवधरैं । तीर्थं करनी पदवी लही । अंतर अरिजिण साध्या सही ॥ ३ ॥ अनुक्रम इमभोगवतां भोग । पुन्यप्रसाद मिल्यो सहुजोग अवसरदैसंवत्सर दांन । संजमलीनो आपसुजान ॥ ४ ॥ कर्मपपावो पाम्यो ग्यान । केवलदर्शनलह्योप्रधान । विचरै पुहवी मंडल मांहि । भव्यजीव प्रतिबोधन ताहि ॥ ५ ॥ सिंह सेनादिक गणधरभया । पंचाणवै संख्या सहु थया । एकलाख मुनिवर परिवर्‍या । श्रावक श्रावकणी बहुकर्‍या ॥ ६ ॥ तीनं लाख वलि तीस हजार । साधवियां जाणो सुविचार । श्रावक सहस अठाणुं सही । दोय लाखसंख्या गह गही ॥ ७ ॥ पांच लाख पैंतालीस हजार । श्राव कणी संख्या सुविचार । बहुत्तर लाखपूरवनो आय । कंच

नवरण सरीरसुहाय ॥ ८ ॥ साठी च्यारसै धनुष सरीर । मानलह्यो प्रभुगुणगंभीर । गजलांछन प्रभुजीनो जाण । अमृतसमजसुमीठी वाण ॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी सिखरसमेत । गिरवर पर आव्या निजहेत । सहस मुनिसरनें परिवार । मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥ चैती सुदि पूनिमनें दिनें । मुक्तिगए प्रभु तीरथहूणें । भूचर खेचर किंनरसुरी इंद्रादिक सहु उछव करी ॥ ११ ॥ थाप्यो तीरथ मोटो मही । अट्ठाइ महोछवकियोसही । एतीरथनी जात्राकरै । ते भवियणअक्षयसुखलहै ॥१२॥ दुहा ॥ श्रीसंभव जिन राजजी । गएइहांनिर्वाण । शिखरसमेतसुहामणो । प्रगट्यौ तीरथ जाण ॥१॥ सुगुणसनेही साजनश्रीसीमंधरस्वाम एहनी ॥॥ सावत्थी नगरी भरी धनसंपदसहुथोक । जैतारीनृपराजकरै सुखियासबलोक। सेनाराणी मीठी वाणीगुणनी खाण । जेहनें सुत श्रीसंभवजनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरणसरीरमनोहर प्रभुनोजाण । लंछन अश्वतणो सोहै प्रभुनौ परधांन । साठलाख पूरवनो प्रभुनो आयुप्रमाण । धनुख च्यारसैउच्चपणै प्रभुदेहवखाण ॥२॥ एकसो दोय संख्यायें प्रभुनें गणधर होय । दोयलाखमुनिजेहनैगुणवरताजगजोय । तीन लाख श्रमणीवली ऊपर सहसछत्तीस । भूमंडल विचरै प्रभु श्रीसंभवजगदीस ॥३॥ तीन लाखवलि सहसतयाणु श्रावक लोक । षटलख सहस छत्तीसश्राविकाणी संख्यायोक । त्रिमुख यक्ष अरु दुरितादेवी सानिधकार । विचरंतां प्रभु सकलसंघमें जयजय कार ॥४॥ सहस श्रमण परिवारै प्रभुजी शिखर समेत । एकमास संलेषणकीनी

निज पटहेत। इण गिर ऊपर पाधो प्रभुजी पदनिरवांण।
तीरथमहिमा महियल मोटो पद्मय सुजाण ॥ ५ ॥ ※ ॥
दुहा ※ ॥ अभिनंदन जिनवंदिये। पायोपद निरवांण।
शिखरसमेत सुहामणो। भेटो तीर्थसुजांण ॥ १ ॥ सहस
श्रमणसु सुकसंजमधरो एहनो ॥ ※ ॥ नगरी अयोध्या
सुरपुरि समभली। संवरराजा सोहैमनरली। सिद्धार्थी
राणी तसुनंदए । अभिनंदन जिन प्रगट्याचंदए (उल्लालो)
चंदए सोवन वरणसोहै धनुष साढीतोनसै। सुंदर शरीर
प्रमाण द्युतिकर कपिलंछन तेनित वसै। पूर्वलाख पचास
आयु गणधरइकसो सोलए। तीनलाख मुनि छलाष आर्या
सहसविंसतसोलए ॥ १ ॥ [चाल] सहसअठयासी दोलख
भाहनी।संख्याचौलपसत्तावीसनी। श्रावकश्रयांरी संख्याजा
णए।नायकयक्षकालिकाठाणए (उल्लालो) ठाणए शिखरस
मेत ऊपरमासएकसंलेखणा। इकसहससाधू परवर्या प्रभु
मुक्ति पहुचे पेषणा। इमहीअयोध्या मेघनरवर देवी मात
सुमंगला। श्रीसुमति जिनवर भएनंदन सदाहो तसुमंगला
(चाल) सोवनवर्णधनुपतमुतोनसै।लंछनक्रौंचसोहैसुभगेहसै
पूरवलाखपच्यासो आऊए। इकसौ गणधरगुणगणभाऊए
(उल्लालो) भाऊए मुनि तिणलाख सोहैसहसवीस प्रमाणए
पचसहसतीस हजारसाध्वी श्रावक दोय लक्षजाणए। संख्या
इकसौ सहस ऊपर श्रावकाइम आनीयै। पणलाखसोहे
सहसहुं वदमहाकालीमानीये। श्रीशिखर ऊपर जातसंख्या
सहससाधुसुंसंगए।करमासकौसंलेखणाप्रभुमुक्तिपुहता संगए
(चाल) इमकोसंबी नगरीतातए। धरनृपतात सुसीमामातए

पद्मप्रभुतसु अंगजनाथए। लंछनकमलतणो सुभव्हाथए। (उल्लालो) हाथएधनुखप्रमाणपूराअढाईसैतनुकह्यो। तीन लाख पूरबथितकहावैएकसोगणधरलह्यो। लखतीनतीसह जारसाधू बीसस्हसलखच्यारए। साधवीदोयलख सहसठि हंतर श्रावकसंख्यासारए। (चाल) पांचलाख बलि पांच हजारए। श्रावकण्यांरी संख्यासारए। कुसुमदेवस्यामादे बीकहो। लालवरण तनुसोहैप्रभुसह्यो। (उल्लालो) सोहए सिखरसमेतऊपर आठसैतिणमुनिवरा। करमाससंलेखन प्रभुनी सेवकरहैसुरवरा। श्रीपद्मप्रभुजी मुक्तिपहुता। गिरशिखर महिमाभई। तसुचरणपंकज वालवंदै हृदय आणंद गहगही ॥ दुहा ॥ श्रीसुपासजिणंदना। पदपंकज आराम। भविजन भमरसुसेवतां। पामें बंछितकाम ॥१॥ ॥ श्रीसीमंधर साहिबा ए चाल ॥ ॥ नगर वणारसी सोभता। राजातात प्रतिष्ठलालरे। देवीपृथवीमातजी। स्व स्तिकलंछनसिष्टलालरे ॥१॥ श्रीसुपार्श्वजिणंदजी। बीसपूर बलख आयुलालरे। धनुषदोयसदेहनो। कंचनवरणसुहाय लालरे ॥२॥श्री०॥ पंचाणवैगणधर कह्या। साधूतिणलाख होयलालरे। च्यारलाखतीस ऊपरै। सहससाधवियां जो यलालरे ॥ ३ ॥श्री०॥ सहससतावनलच्छनो। श्रावकसंख्या थायलालरे। च्यारलाखवलीत्राणवै। सहसश्रावकणीभा यलालरे ॥ ४ ॥ श्री०॥ मातंगयच्छसांतासुरी। पांचसै मुनि परवारलालरे। करिअणसणसुगतैगया। नामलियांनिस्तार लालरे ॥ ५ ॥ श्रीसु०॥ नगर चंद्रपुरइणपरै। राजातात महेसलालरे। देवी मातालच्छणा। सुतचंद्रा प्रभुवेषला

लरे ॥ ६ ॥ श्रीचंद्राप्रभ वंदिये । चंद्रवरणतनुजेहलाल रे । लंछनचंद्रतणोभलो । धनुषदोढसै देहलालरे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ भविककमल प्रतिबोधता । सेवैसुरनरवृन्दलालरे । दसलाखपूरव आऊषो । तेणवैगणधर वृन्दलालरे ॥ ८ ॥ श्रीचं०॥ दोयलखसंहसपचाणवे । मुनिश्रमणी तीनलखला लरे ।असीसहस संख्याकही श्रावकवलि दोयलक्षलालरे ॥ ९ ॥श्रीचं०॥ लाखपचासऊपरवली । श्राविकाचउलक्षधार लालरे । सहसइकाणवेऊपरै । प्रभुजीनोपरिवारलालरे ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भृकुटीसुरी । सहससाधुपरवार लालरे । संलेखनइकमासनी । पुहतामुक्तिमझारलालरे ॥ ११ ॥ श्रीचं० ॥ दुहा ॥ जय श्रीसुविधजिनेसरू । जगपति दीनदयाल । समेतसिखरमंगतेगया । भविजनकेप्रतिपाल ॥ ढाल ॥३॥ श्रीविमलाचलसिरतिलोएहनी ॥ नयरकाकं दीनरपति । एमपितासुग्रीव । देवीरामामातासुत । भएसुवि धसुभजीव ॥१॥ रजतवरणसमतनुसत । धनुष एकपरिमांण दोय लाख पूरबकह्यो । प्रभुनो आयुसुजांण ॥२॥ अठ्यासी संख्याभए । गणधरपरम प्रधान । लखदो मुनि विंशतिसह स । इकलखश्रमणीजांण ॥४॥ दोयलक्ष श्रावककह्या । अरु गुणतीसहजार । एकत्तरचौलखसहस । श्रावकणीसुविचार ॥५॥ सुरीसुतारा सुरअजित । श्रीसंघसानिधकार । सहससा धुपरवारसुं । आएसिखरमुझार ॥ ६ ॥ माससंलेखणकार प्रभु । मुक्तिगएइहठोर । तीरथमहिमामहियलै । प्रगटीच्या रुंओर ॥ ७ ॥ इमहीजशीतलनाथनो । शिवसुखज्यो अधि कार । भद्दिलपुरदृढरथपिता । मातनंदासुखकार ॥ ८ ॥

लंछनसुखश्रीवछनो । श्रीशीतलजिनचंद । कंचनवरणनेऊध नुष । मानशरीरश्रमंद ॥९॥ एकलाख पूरवकह्यो । प्रभुनो आयुप्रमाण । इक्यासी गणधरकह्या । मुनिइकलाखसुजाण ॥१०॥ एकलाखचालीससहस । श्रमणीसंख्याऊर । सहस तयासीदोयलख । श्रावकसंख्याजोर ॥ ११ ॥ सहसअठावन लच्चचौ । श्रावकणीसुविचार । देवी असोकाब्रह्मयच्छ । सङ्घसानिधकार ॥१२॥ सिखरसमेतसहस्रएक । साधूनेंपरि वार । मुक्तिगए प्रभुमासकी । संलेखनकरसार ॥ १३ ॥ढाल ॥ धन२ संप्रतिसाचौ राजा एहनी ॥ ॥ सिंहपुरी नगरी लिहांराजा । विष्णनरेसरतातजी । कंचनवरण श्रेयां सप्रभुजी । ऊपज्याविष्णासुमातजी ॥ १ ॥ नमोरे२ श्रीत्रि भुवनराजा । खड्गलंछन प्रभुपायजी । धनुष असीदेहमांन चौरासि । लाख वरसनो आयुजी ॥ २ न० ॥ गणधर बहुत्तर सहसचौरासी । मुनीश्रमणी तीनलक्षजी । तीनसह सवलिसहसगुणयासी । श्रावकपुणदोयलक्खजी ॥३ नमो०॥ अड़तालीस सहस वलिचौलख । श्राविका जाणो सारजी । जक्ष असरसुरी मांनवीजांणो । श्रीसंघरानिधकारजी ४०॥ सहसमुनीसरनें परिवारे । प्रभुजी सिखरसमेतजी । मास संलेखनकर प्रभुपुहता । मुक्तिमहिल सुखहेतजी ॥५ न० ॥ छिवकंपिलपुर तातभूपति । श्रीकृतवर्म सुमातजी । स्यामा देवी अंगजऊपना । विमलनाथजगतातजी ॥ ६ न० ॥ सूक रलंछनसोवनकाया । साठधनुष देहीमांनजी । साठलाखव रसनौ आयु । शिष्य सतावनजानजी ॥ ७ न० ॥ साठसहस मनिअड़सयइकलख । श्रमणीश्रावकजांणजी । आठसहस

दोयलक्ष आर्यिका। चौलक्षसंख्या आंणजो ॥ ८ न० ॥ ष गमुखसुरवरविदितादेवी।प्रभजीशिखरसमेतजी। षटहजा रसाधूपरिवारे। मुक्तिगएसुखहेतजी ॥ ६न० ॥ नगरीनाम अजोध्यानरवर। सिंहसेन जगसारजो। सुजसामाततिणे सु तजायो। प्रभुजीअनंतकुमारजी ॥ १० न० ॥ लंछनश्येनसो वनसमकाया। धनुषपचासप्रमांणजो। तीसलाखवछरनो आयु। गणधर पचवीस आंणजो ॥११न० ॥ छासठसहसमु नीसरसोहे। वासठअसणीहजारजी। छहज्जारलाख दोय श्रा‍क। श्रावकणीइमधारजी ॥ १२ न० ॥ च्यारलाखवलि चवदहजारए। अंकुसादेवीहोइजी। पातालयक्ष श्रीरं घके सानिध। कारीनितप्रतिजोयजो ॥ १३ न० ॥ आठसैमुनिव रनैपरिवारे। शिखरसमेतप्रधानजो। मासस लेखनकरगिर ऊपर। पुहतापदनिरवांणजो ॥ १४न० ॥*॥ दूहा ॥*॥ श्रे सें धर्मजिणेसरू। पुहतापदनिर्वाण। शिखरसमेत गिरंदपर नमो २ जगभांण १ ॥ *॥ जगतगुरुविशलानंदनजी एहनी ॥*॥ रत्नपुरीनगरीधणीजी। भानुरायसुजांण। राणीसुव्रत मातनेजी। धर्मनाथगुणषांण ॥१॥ जगतपतिधर्मजिनेसरसा र॥ धनुषपेंतालीसतनुकह्यो।जी। वज्रलंछनसुखकार ॥२ज०॥ चोतालगणधरमुनिकह्याजी। चौसठसहसप्रमांण। अमणी बासठसहससुंजी। श्रावकदोयलक्षमान ॥ ३ ज० ॥ च्या रसहसवलि ऊपरांजी। चौलख एकहजार। श्रावकणीसं ख्याकहीजी। दसलक्ष आयुविचार ॥ ४ ज० ॥ किंनरसुर यक्षासुरीजी। एकसहसपरिवार। समेत शिखरमुगतैगया। जी। वांदूवारहजार ॥५ ज० ॥ हथणापुरविश्वसेननाजी।

अचिरामातउदार। शांतिजिनेसरजनमियाजी। त्रिभवन जय २ कार ॥ ६ ॥ [जगतपतिशांति जिनेसरसार]॥ म्रगलांछन सोवनसमोजी। देहीधनुषचालीस। आयुवर षट्कलाखनोजी। छत्तीसगणधरसीस ॥ ७ ज०॥ वासट्ठ सहसमुनिछसैजी। इगसठश्रमणी हजार। दोयलाखश्राव कवह्या जो। उपरनेऊहजार ॥८ ज०॥ सहसत्रयाणु श्रा विका जी। तीनलाख परिवार। गरुडयक्षदेवीसुरी जी। श्रीसंघसानिधकार ॥ ९ ज०॥ नवसैमुनिपरवारस्युं जी। आया शिखर समेत। मासखमणकर मुक्तिमें जी। मुहता निजपदहेत ॥ १० ज० ॥ अ सेंहथिणा पुरभलोजी। राजा सूरसुतात। कुंथुनाथ जिनजनमीयाजी। कंचनतनुशोभा त ॥११ (जगतपति कुंथुजिनेसरसार) ॥ छागलंछन पैंताली सनोजी। धनुषदेहनो मान। सहस पंचाणव वरषनो जी। आयुप्रभुनोजान ॥ १२ज०॥ पैंतीसगणधरदीपताजी। साठसहसमुनि जान। छसै साठसहसवलीजी। श्रमणी संख्यामान ॥१३ ज०॥ सहसगुणियासीलक्षनो जी। श्रावक संख्याहोय। सहस इक्यासी तीन लाखनी जी। श्राविका संख्याजोय ॥ १४ ज० ॥ सातसै साधूपरवस्याजी। देवी बलागंधर्व। कुंथुनाथमुगतेंगया जी। माससंलेखणसर्व ॥ १५ ज० ॥ ॥ दुहा ॥ ॥ श्रीअरिनाथ जिणिंदनो। कहस्युं अब अधिकार। श्रोतासुणज्योप्रेमधर। थास्यै लाभअपार ॥ १ ॥ देसीविछियानी अरेलाला। श्रीजिन कुशल सूरी सह ॥ इसदेशीमें ॥ अरेलाला। श्रीअरिनाथ जिनेसरू। जिहां नगरी अयोध्याचंदरेलाला। तातसु

दर्शनमातजी । नंदादेवीना नंदरेलाला ॥ २ श्री अ० ॥ लंछननंद्यावर्त्तनो । वीसधनुषदेहीनो मानरेलाला । कंचन वरणसुहामणो । आयुसहस चौरासी प्रमाणरेलाला ॥ ३ श्रो० ॥ इकलाख श्रावकऊपरै । वली संख्या अधिकीजाण रेलाला । सहसबहत्तरतीनती । लक्षश्राविका संख्या आण रेलाला ॥४श्रो०॥ देवदेवी सानिधकरै । इकसहस मुनिपर वाररेलाला । मुक्तिगएइणगिरप्रभु । करमाससंलेखन साररेलाला ॥ ५ श्रो० ॥ मिथिलानगरी प्रभावती । मात पिताश्रीकुंभरायरेलाला । लंछनकलस पचीसनो । वपुधनु षसो वनसमकायरेलाला ॥६(श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू) ॥ सहस पचावन वर्षनो । थित गणधरअट्ठावीसरेलाला । भविकक मलप्रतिबोधता । जगनायकश्रीजगदीसरेलाला ॥७ श्रीम० चालीस सहसमुनिसरू । श्रमणीपचावनसहसरेलाला । सहसत्रयासीलक्षनो । श्रावकनी संख्यासाररेलाला ॥ ७ श्रीम०॥ श्राविकासित्तरसहसनी । लक्षतीनसंख्या सुविचार रेलाला । सहस मुनीपरिवारसु । गएमुक्तिसंलेखणधार रेलाला । श्रीम० ॥ राजग्रहीराजा पिता । सुग्रीवपद्मावती मातरेलाला । श्यामवरण तनुशोभतो । जे कपिल लंछनवि ख्यातरेलाला ॥९ (श्रीमुनिसुव्रतस्वामिजी) ॥ धनुषवीसदेही तणो । आयुवहुत्तरीसहजाररेलाला । अष्टादशगणधरथ या । तीससहसमुनीसरसाररेलाला ॥१०श्रीमु० ॥ श्रमणी सहस पचीसनी । संख्यावहुत्तर हजाररे लाला । इक लक्ष ऊपरि श्राविका । तीन लक्ष पचास हजाररे लाला ॥ ११॥ श्रीमुनि० ॥ वरुणयक्ष देवी भली । नर दत्ता सानिधकाररे

लाला । संहस मुनिपरिवारसें । गए मुक्ति महल सुख सार रे लाला ॥ १२ ॥ श्री० ॥ विजयदिता विप्रामात जी । सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला । नीलकमल लंछन कह्यो । वपुधनुख पनर आयुसाथरे लाला ॥ १३ ॥ [श्रीनमिनाथ जिने सरू] ॥ दसहज्जार वरस तणो । गणधर सित्तर परमाण रे लाला । वीस इकतालीस सहस कम । साधु साधवी संख्या जाणरे लाला ॥ १४ ॥ श्रीनमि॥ इकलख सित्तर सहसनी । तीनलक्ष सहस वलि होयरे लाला । श्रावक संख्या श्राविका । अनुक्रमकरि संख्या जोय रे लाला ॥ १५ ॥ श्री० ॥ विचरंता भूमंडलै । आया सिखर समेत मझार रे लाला । भकुटी यक्ष गंधारी सुरी । इक सहसमुनि परिवाररे लाला ॥१६॥ श्री० दुहा ॥*॥ परमेसर श्री पासनी । महिमा जगति विख्यात । सिखर सिरोमणि सहसफणा । अगजीवनजगतात ॥१॥ *॥ढाल ॥ आदरजीव क्षमागुण आदर एहनी ॥*॥ जय जय परमपुरुष पुरषोत्तम । पारस पारस नाथ जी । सांवरियासाहिव जगनायक । नाम अनेक विख्यात जी ॥१॥ जय२ सिखर समेत सिरोमणि । श्रीसांवरियापास जी । ध्यावै सेवै जे नर तेहनी । पूरै वंछित आसजी ॥२॥ जय०२॥ कासीदेस वणारसिनगरी । श्रीअश्वसेन नरिंद जी । वामा माता जगविख्याता । तेहना सुत सुख कंदजी ॥३॥ जय०२। पन्नगलंछन नीलवरणछवि । देही शुभ नवहाथ जी । आयु इक सो वरस प्रमाणे । गणधर दस प्रभु साथजी ॥४॥जय०२॥ सोलसहसमुनिवर अरयमणी । कही अडतीस हजार जी ।

भूमंडल विचरै भविजनकुं । बोधबीजदातारजो ॥५॥ज०॥ चोसठ सहस लाख इक श्रावक । गुणचालीसहजार जी । तीन लाख श्रावकणी संख्या । पार्श्व यक्ष सुरसारजी ॥ ६ ज०॥ वीसजिनेसर मुगतै पुहता । महिमा अद्भुत अपार जी । तिणएतीरथप्रगट्यो जगमें । मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ जय०२॥ हरी पालै जेनर भावै । भेटै सिखर गिरिंद जी । ते नर मनवंछित फल पामै । एसुरतरुनो कंदजो ॥ ८ ॥ जय०२॥ बहुविध संघ तणी करै भक्ति । संघपति नांम धराय जी । सफल करै संपद निज पामी । जेहनो सुजस सवाय जी ॥ १०जय० ॥ परभव सुरनर संपद पामै । जाला करै गहगाटजो । साधर्मी वत्सल मुनि भक्ती । पूजा उत्सव थाट जो ॥ ११ ॥ जय० ॥ टुंक टुंक परचरण प्रभूना । पूजो भविजन भाव जी । ध्यान धरो जिनवरनो मन में । आनंद अधिक उछाव जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्री सिखर गिरीनो । सुणतांनवनिध थाय जी । लिखए भविजन भाव धरीनें । सुण ज्यो मनथिर लाय जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ खरतर गछपतिमहिमाधारी । कीरतिजग विख्यात जी । जय श्रीजिन सोभाग्य सुरीसर अमृत बचन सुणात जी ॥१४॥ ज० ॥ तासुपसायै रासरच्यो ए । अमृत समुद्रनें सीस जी । बालचंद्र निज मत अनुसारै सोधो बिबुधजगीस जी ॥१५॥ ज० ॥ संवत उगणीसै सित मोत्तर । सुदि वैशाख सुढाल जी । रास अजीमगंज मांहि कीनो । भणतां मंगल माल जी ॥१६॥ज०॥ ⁂ ॥ इति श्री सिखरजीकोरास संपूर्णम् ॥ २०१ ॥ ॥ ⁂ ॥ ॥ ५ ॥

॥ अथ गोतम रास लिख्यते ॥

॥ ॐ ॥ वीरजिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो। पणमविपभणिसु सामि साल गोयम गुरुरासो। मणतणु वयणे एकंतकरवि निसुणऊ भो भविया। जिमनिवसै तुम देह गेह गुण गण गह गहिया॥ १ ॥ जंबूदीव सिरभरह खित्त खोणी तल मंडण। मगहदेस सेणियनरेस रिउदल बलखंडण। धणवर गुब्बरगामनाम जिहां गुणगणसज्जा। विप्पवसै वसुभूइ तत्थ तसु पुहवी भज्जा॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरिइंद भूय भूवलयपसिद्धो। चवदह विज्जा विवहरूव नारी रस लुद्धो। विनय विवेक विचार सारगुण गणह मनोहर। सात हाथ सुप्रमाणदेह रूवहि रंभावर॥ ३ ॥ नयणवयण करचरण जणवि पंकज्जलपाडिय। तेजहितारा चंद सूरि आकास भमाडिय। रूवहि मयण अनंग करवि मेल्हो निरधाडिय। धीरम मेरु गंभीर सिंधु चंगम चय चाडिय॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जणजंपे किंचिय एकाकी किल भीत्त इत्थ गुण मेल्हया संचिय। अहवानिश्च यपुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय। रंभर पउमा गवरि गंगरतिहा विधि वंचिय॥ ५ ॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय जसु आगल रहियो। पंचसयां गुण पात्रछात्रहीं हिंडैपरवरियो। करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्या मति मोहिय। अणचल होस्ये चरमनाणदंसणह विसोहिय॥ ६॥ (वस्तु) ॥ ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि। खोणीतल मंडण। मगह देस सेणिय नरेसर। वरगुब्बरगाम तिहां। विप्प वसै वसभूइ। सुंदर तसु पुहवि भज्जा। सयलगुणगणरूव

निहांण। ताणपुत्तविज्ञानिलो। गोयमचालिहिसुजाण ॥७॥ (भास) ॥ चरम जिणेसर केवलनांणी। चोविहसंघ पइट्ठा जाणी। पावा पुरसामी संपत्तो। चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥८॥ देवहिसमवसरणतिहांकीजै। जिणदीठे मिथ्या मत छीजै। त्रिभुवनगुरु सिंहासन बैठा। ततखिणमोहदिगंतपइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मदपूरा। जाये नाठा जिम दिनचोरा। देवदुंदुभीआगासे वाजी। धरमनरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसम वृष्टि विरचै तिहां देवा। चउसठइंद्रजमांगेसेवा। चामरछत्रसिरो वरिसोहै। रूवहिजिणवर जगसहु मोहै ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वरवरसंता। जोजनवाणि वखाण करंता। जांणिवर्द्धमान जिण पाया। सुरनरकिन्नर आवइराया ॥ १२ ॥ कंत समोहिय झलहल कंता। गयणविमाणहिरणरणकंता। पेखवि इंद भूइ मनचिंते। सुरआवे अस जज्ञ हुवंते ॥१३॥ तीरतरंडक जिमते वहिता। समव सरण पुहता गहगहिता। तो अभिमानें गोयमजंपै। इण अवसर कोपैतणुकंपै ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोलै। सुर जाणंता इम कांइ डोलै। मो आगल कोइ जाण भणी जै। मेरु अवर किम ओपम दीजै ॥१५॥ (वस्तु) वीर जिणवर वीरजिणवर नांण संपन्न पावापुरसुरमहिय। पत्तनाहसंसार तारण। तिहिं देव इनि म्महिय। समवसरण बहु सुक्ख कारण। जिणवरजगउज्जोयकरे। तेजहिकर दिनकार सिंहासणसांमी ठव्यो। हुउ तो जयजय कार॥१६॥ (भास) तोचढियो घणमाण गजै। इंद भूइभूय देवतो ॥ हुंकारोकरसंचरिय। कवणसु जिण

वरदेवतो ॥ जोजन भूमि समो सरण। पेखवि प्रथमारं भतो ॥ दहदिस देखै विबुधवधू। आवंती सुररंभतो ॥१७॥ मणिमय तोरण दंड ध्वज । कोसीसे नवघाटतो ॥ वयरविव र्जित जंतुगण प्रातीहारिज आठतो ॥ सुर नर किन्नर अ सुरवर । इंद्र इंद्राणी रायतो ॥ चित्तचमक्किय चिंतवए। सेवंतां प्रभुपायतो ॥ १८ ॥ सहस किरण सांमीवीरजिण। पेषविरूप विसालतो ॥ एहअचंभव संभवए। साचो एइन्द्र जालतो ॥ तोबोलावइ त्रिजगगुरु। इंद्रभूयनामेणतो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे। फेडै वेदपएणतो ॥ १९ ॥ मान मेल मदठेल करे। भगतहिं नाम्यो सीसतो ॥ पंचसयांसु ं व्रतलियोए। गोयम पहिलो सीसतो ॥ बंधवसंजम सुणवि करे। अगन भूइ आवेयतो ॥ नामलेई आभास करे। तेपि णप्रतिबोधेयतो ॥२०॥ इण अनुक्रमगणहररयण। थाप्या वीर इग्यारतो ॥ तोउपदेसे भुवन गुरू। संयमसुं व्रतबार तो ॥ बिहुंउपवासें पारणोए। आपणपै विहरंततो॥ गोयम संयम जगसयल। जय जय कार करंत तो ॥२१॥ [वस्तु] ॥*॥ इंद्रभूइ२ चढियोबहुमान।हुंकारोकरिकंपतो। सम वसरण पहुतो तुरंततो ॥ जेहसंसा सामिसवे। चरमनाह फेडै फुरंततो॥ बोधबीजसंजायमने। गोयमभवहि विरत्त॥ दिक्खलेईसिख्यासही। गणहरपयसंपत्त ॥२२॥ [भास]॥*॥ आजहुओ सुविहाण। आजपचेलम पुण्यभरो। दीठा गोय मसामि। जोनियनयणेअमियझरो॥ समवसरणमझार। जेजे संसा ऊपजे ए। तेते पर उपगार। कारण पूछै सुनिप वरो ॥ २३ ॥ जीहां दीजै दीख। तीहां केवल उपजे ए।

आपकनें अणङ्‌त। गोयम दोजै दान इस। गुरु उपर गुरु भक्ति।सामी गोयम उपनिय।अणचल केवल नाण। राग ज राखे रंगभरे॥ २४॥ जो अष्टापद सैल। वंदै चढ चउ वीस जिण। आतम लबधि वसेण। चरम सरोरी सोज मुनि। इय देसणानिसुणेह।गोयम गणहर संचरिय।ताप सपनरसएण। जो मुनि दीठो आवतोए॥२५॥ तपसोसिय निय अंग। अम्हां सगतिन ऊपजैए। किमचढस्यै दृढकाय गज जिम दीसै गाजतोए। गिरुओ ए अभिमान।तापस जो मन चिंतवे ए। तो मुनि चढियो वेग। आलंबवि दिनकर किरण॥ २६॥ कंचण मण निप्पन्न। दंड कलस ध्वज वड सहिय। पेषवि परमाणंद। जिणहर भरथेसर महिय। नि य२ काय प्रमाण। चिहुं दिसि संठिय जिणह विंब। पण मवि मनउल्लास। गोयम गणहर तिहां वसिय॥ २७॥ वयर सामिनो जीव। तिर्यक जृंभक देवतिहां। प्रतिबोध्या पुंडरीक। कंडरीक अध्ययनभणी। वलता गोयमसाम सवितापस प्रतिबोध करे। लेई आपण साथ। चालै जिम जूथाधिपति॥ २८॥ खीरखांड घृत आण। अमीय वूठ अंगूठ ठवे। गोयम एकण पाल। करावै पारणो सवे। पंचसयां सुभभाव। उज्जल भरियो खीर मिसे। साचा गुरुसंयोग। कवलत केवल रूपऊय॥ २९॥ पंचसयां जि णनाह। समवसरण प्राकारत्रय। पेषवि केवल नाण। उप्पन्नो उज्जोयकरे।जाणें जणविपीयूष।गाजंति घनमेघजिम। जिणवांणी निसुणेवि। नाणीहुया पंचसयां॥३०॥ [वस्तु] इण अनुक्रम२ नाणसंपन्न। पनरैसे परिवरिय। हरिय दु

रिय जिणनाह वंदइ । जाणेवि जगगुरुवयण । निहिनाण अप्पाण निंदइ । चरमजिनेसर इमभणे । गोयम मकरि सषेव । ठेहजाय आपणसही । होस्यां तुल्लावेव ॥३१॥ (भास) ॥ ॥ सामियो ए वीरजिणंद । पूनमचंद जिम उल्लसिय । विहरियो ए भरह वासंमि । वरसवहुत्तर संवसिय । ठवतो एकणय पउमेण । पायकमल संघे सहिय । आवियो ए नयणाणंद । नयर पावापुर सुरमहिय ॥३२॥ पेषियोए गोयम सामि । देवसमा प्रतिबोधकरे । आपणोए तिसलादेवि । नंदन पुहतो परमपए । वलतोएदेव आकास । पेषवि जाण्यो जिण समेए । तो मुनिए मनविषवाद । नादभेद जिमऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इणसमें ए सामियदेष । आपकनासूं टालियो ए । जाणतोए तिहुअणनाह । लोक विवहारन पालियो ए । अतिभलोए कीधलो सामि । जाण्यो केवल मांगस्यै ए । चिंतव्योए बालक जेम । अहवा केडे लागस्यैए ॥३४॥ हूं किम ए वीरजिणंद । भगतहिं भोलेभोलव्योए । आपणोए उंचलो नेह । नाह नसंपे साचव्योए । साचोए एवीतराग । नेह नहै जे लालियो ए । तिणसमैए गोयमचित्त । राग वैरागे वालियोए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जोउलइ । रहितो रागें साहियो ए । केवलए नाण उपन्न । गोयम सहिज उमाहियो ए । तिहुअणए जयजयकार । केवल महिमा सुरकरै ए । गणधरए करय वखांण । भविया भवजिम निस्तरै ए ॥ ३६ ॥ (वस्तु) ॥ ॥ पढम गणहर२ वरषपचास । गिहवासे संवसिय तीसवरस संजम विभूसिय । सिरिकेवल नाणपुण । बारवरस तिहुअण नमंसिय । राजग्रही नयरी ठव्यो । बाणवइ

वरसाउ। सामीगोयमगुणनिलो। होस्यै सिवपुर ठाउ ॥३६॥ (भास) ॥॥ जिमसहकारे कोयलटहुकै। जिमकुसमावन परमल महकै। जिमचंदन सोगंधनिधि। जिम गंगाजल लहिरयां लहकै। जिमकणयाचल तेजें झलकै। तिमगोयम सोभागनिधि ॥ ३८ ॥ जिममानसरोवरनिवसै हंसा। जिम सुरतरुवर कणय वतंसा। जिममहुयर राजीव वने ॥ जिमरयणायररयणे विलसै। जिमअंबर तारा गण विकसै। तिम गोयम गुरकेलवने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहै॥ सुरतरु महिमा जिम जगमाहै। पूरब दिसि जिम सहस करो। पंचानन जिम गिरवर राजै। नरवइघरजिम मेंगलगाजै॥ तिम जिन सासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरुतरुवरसोहै साखा जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा। जिमवन केतकि महमहैए। जिम भूमीपति भुयबल चमकै। जिम जिनमंदिर घंटारणकै। गोयमलबधै गहगह्योए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि करचढीयोआज। सुरतरु सारै वंछिय काज। कामकुंभ सहुवसिहुआए। कामगवी पूरै मनकामी। अष्टमहासिधि आवै धामो। सामो गोयम अणुसरोए ॥४२। पणवक्षर पहिलो प्रभणीजै। मायाबीजो श्रवणसुणीजै। श्रोमिति सोभासंभवो ए। देवांधुर अरिहंत नमीजै। विनय पहु उवझायथुणीजै। इण मंत्रै गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां कांय करीजै। देस देसांतरकांयभमीजै। कवणकाज आयास करो। प्रह ऊठी गोयम समरीजे। काजसमगल ततखिणसीजै। नवनिधविलसै तिहां घरे ॥ ४४ ॥

चवदयसय वारोत्तर वरसै। गोयम गणहर केवल दिवसै कीयो कवत उपगारपरो। आदहिमंगल ए प्रभणीजे। परवमहोत्सव पहिलो दीजै। रिद्धि वृद्धि कल्याणकरो ॥ ४५॥ धनमाता जिण उयरै धरियो। धन्य पिता जिण कुलअवतरियो। धन्यसुगुरुजिणदीषियोए। विनयवंत विद्याभंडार। तसुगुणपुहविनलभइपार। वडजिम साखा विस्तरो ए। गोयम स्वामिनो रासभणीजे। चउविहसंघ रलियायत कीजै। रिद्धिवृद्धि कलयाणकरो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदनछडोदिरावो। माणकमोतीयां चोकपूरावो। रयण सिंघासण बैसणो ए। तिहांबैठोगुरु देसनादेसी। भविक जीवनाकाज सरेसी। नितनितमंगलउदयकरो ॥४७॥ इति गोतमरास संपूर्णम्॥ इति षट् रास: ॥*॥ ॥*॥

॥*॥रागप्रभाती जेकरै। प्रहऊगमते सूर। भूखांभोजन संपजे। कुरला करे कपूर ॥१॥ अंगूठे अमृत वसै। लब्धित णाभंडार। जेगुरुगोतम समरियै। मनवंछितदातार ॥२॥ पुंडरीक गोयमसुहा। गणधरगुणसंपन्न। प्रहऊठीनें प्रण मतां। चवदैसै बावन्न ॥३॥ खंतिखमंगुणकलियं। सुविणियं सव्वलद्धिसंपन्नं। वीरस्सपढमसीसं। गोयमसामीनमंसामी ॥४॥ सर्वारिष्ट प्रणासाय। सर्वाभीष्टार्थदायने। सर्वलब्धि निधानाय। गोतमस्वामिने नमः ॥५॥ ॥*॥ ॥*॥

॥*॥ अथ देवबांदणामें (वा) प्रातकाल। सिंध्याकाल प्रतिक्रमणमें कहणेंकुं पनरै तिथांकी स्तुतिलि ॥*॥

॥*॥ महीमंडणं पुन्नसोवन्नदेहं। जणाणंदणं केवल न्नाणगेहं। महानंद लछीबहु बुद्धिरायं। सुसेवामि सीमं

धरं तित्थरायं ॥१॥ पुरा तारगा जेहजोवाणजाया। अत्र स्संति ते सव्वभव्वाणताया। तहा संपयं जेजिणा वट्टमाणा। सुहं दिंतु तेमे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तार संसारकुवा रपोयं। कलंकावलो पंकपक्खालतोयं। मणोवंछियत्थे सुमं दार कप्पं। जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणंभोजलीणा। कलारूवलावन्न सोहग्गपीणा। वहंतस्स चित्तंमि णिच्चं पिऊणं। सिरीभारहीदिंहिमेसुद्ध नाणं ॥४॥*॥ इति श्रीसीमंधर जीरीस्तुतिः ॥१॥*॥

॥*॥ पञ्चविदेह विषेविहरंता। वीसजिणेसर जगजय वंता। चरणकमलतसु नामुंसीस। अहनिसिसमरूंतेजग दीस ॥१॥ पंचमेरुपासे ऊलकंता। सोहै वीस महागज दंता। तिणऊपरि ठै जिणवरवीस। तेजिणवर प्रणमुंनिसि दीस ॥२॥ गणहर कहियदुवालसअंग। थानकवीसभणया तिहां चंग। तिणऊपरि जेआणै रंग। तेनर पामै सुख अभंग ॥३॥ जिणसासण देवी चउवीस। पूरै सुऊमनतणी जगीस। संघतणा जेविघन निवारै। तिह्न श्रणजनम नवं ठितसारै ॥४॥*॥ इति वीसविहरमाणस्तुतिः ॥२॥*॥

॥*॥ समदमोत्तम वस्तुमहापणं। सकलकेवलनिर्मल सदगुणं। नगरजेसलमेर विभूषणं। भजतिपार्श्वजिनंगत दूषणं॥१॥ सुरनरेश्वर नम्रपदांबुजाः। स्मरमहीरुहभंगमतं गजाः। सकलतीर्थकराः सुखकारकाः। इह जयंतु जगज्जन तारकाः ॥२॥ अयतियः सुकृती जिनशासनं। विपुलमंगल केलिविभासनं। प्रबलपुण्यरमोदय धारिका। फलति तस्य मनोरथमालिका॥३॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी। जिनम

तास्थितसौख्य विकासिनी । नरनरेश्वर किन्नरसेविता । जय तु सा जिनशासन देवता ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥॥ वरमुत्तियहारसुतारगणं । परचित्तकलत्तसपत्त भणं । पयपंकयठप्पयदेवगणं । सीअल्वुय वंदू आदिजिणं ॥१ तियलोयनमंसियपायजुआ । वणमोहमहीरुहमुत्तिगया । परिपालिअनिच्चलजीवदया । ममकुं तुजिणागमसुक्वसया ॥ २ ॥ पणयंगि महातमरोरहरं । कल्लाणदयोरुहवुड्ढि करं । सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जिणागम मज्झिकरं ॥ ३ ॥ सिरिइंदसमुज्जलगायलया । सुहझाण विणम्मिय एगलया । असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया । ममवाणि सुहाणि कुणेसु रया ॥४॥॥ इति श्रीआदिजिनस्तुतिः ॥४

॥॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं । पंचानुत्तरसीमदिव्य पदवी वश्याय मन्त्रोपमं । येन प्रोव्वलपंचमी वरतपो व्याहारितत्कारिणां । श्रीपंचाननलांछनः स तनुतां श्रीवर्द्धमान श्रियं ॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोद्धसाधनपराः पंच प्रमादीश्वराः । पंचाणुव्रतपंचसुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः । कृत्वा पंचहृषीकनिर्जयमथो प्राप्तागतिं पंचमीं । तेमीसं तुपंचमोत्तमभृतां तीर्थंकराः शङ्कराः ॥ २ ॥ पंचाचार धुरीणपंचमगणाधीशेन संसूत्रितं । पंचज्ञानविचारसारकलितं पंचेषु पंचत्वदं । दीपाभंगुरु पंचमारतिमिरेष्वेकाद्यौ रोहिणो । पंचम्यादिफलप्रकाशनपटु ध्यायामि जैनागमं ॥३॥ पंचानां परमेष्टिनां स्थिरतया श्रीपंचसेरुश्रियां भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पंचदिव्यं व्यधात् । प्र

त्वे पंचजनेमनोम्रतक्रतो खारत्नपङ्क्तालिका । पंचम्यादि तपोवतां भवतु सा सिद्धायिकालायिका ॥४॥ इति श्रीज्ञान पंचमीस्तुति: ॥५॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ वीरं । देवं । नित्यं । वंदे ॥१॥ जैना: । पादा । यस्मात् । पांतु ॥२॥ जैनं । वाक्यं । भूया । द्भूत्यै ॥३॥ सिद्धा । देवी । दद्यात् । सौख्यं ॥४॥ इति लघ्वोक्तोठंदसि श्रीवीर स्तुति: ॥६॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ यदंह्रिनमनादेव । देहिन: संतिसुस्थिता: । तस्मै नमोस्तु वीराय । सर्वविघ्नविघातिने ॥१॥ सुरपतिनतचरण युगान् । नाभेयजिनादिजिनपती न्नौमि । यद्वचनपालनपरा ज्जलांजलिं ददतु दु:खेभ्य: ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुगणाग्रतो जिना: सदर्थतो यद्रचयंति सूत्रत: । गणाधिपास्तीर्थसमर्थ नक्षणे । तदंगिनामस्तु मतं नु मुक्तये ॥३॥ शक्र: सुरासुर वरैस्सहदेवताभि: । सर्वज्ञशासनसुखाय समुद्यताभि: । श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । भव्यान् जनान्नयतु नित्य ममङ्गलेभ्य: ॥४॥ इतिश्रीमहावीरस्तुति: अणोकारो ॥६॥

॥ ॥ विश्वनायकलायक जितशत्रु विजयानंद । पयजुग नितप्रणमै देव अनै देविंद । भावलहिरीगहिरीसवमनधरी यै अमंद । श्रीसूरतसहिरै वंदो अजितजिणंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अतिसयवलिचोतीस । दिलरंजणदेस नतेह नागुणपेंतीस । अगणितरिधधारीआचारीमांहिस । एहगुणा नाधारक वांदु जिनचौवीस ॥२॥ सुध अरथ अनोपमजिन भाषितसिद्धांत । स्याद्वादनयादिकहेतु युक्त नविभ्रांत । पाप करदमपाणीसदगतिनी सहिनाणी । सुणिये नितभविका

आगमकेरीवाणी ॥३॥ सासणनीसाचीदेवी सानिधकारी। दुखकष्टनिवारणसेवीजै सुखकारी। साचैमनसमरै तेसुख लाभ अपारी। जिनलाभपयं पै हो ज्योजय जयकारी ॥※॥ इति अजितनाथ स्तुतिः ॥ ७ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥चउवीसे जिनवर प्रणमुं हुं नितमेव। आठमदिनकरियै चंद्राप्रभुनीसेव। मूरति मनमोहै जाणेंपूनिमचंद। दीठां दुख जायै पामैंपरमानंद ॥१॥ मिलचोसठ इंद्र पूजै प्रभुजी नापाय। इंद्राणी अपछर करजोडीगुणगाय। नंदीश्वर द्वीपैं मिलसुरवरनी कोड। अट्टाही महोछव करतां होडा होड ॥ २ ॥ सेवुं जासिखरैं जाणी लाभ अपार। चोमासे रहिया गणधर मुनि परिवार। भवियणनेंतारैं देइ धरम उपदेश। दूध साकरथी पिण वाणी अधिक विशेस ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणो करियै व्रतपचखाण। आठमतप करतां आठकरमनीहाण। आठमंगल थायें दिन२ कोडि कल्याण। जिन सुखसूरि कहै इम जीवत जनमप्रमाण ॥ ※ ॥ इति अष्टमी स्तुतिः ॥ ८ ॥※॥

॥※॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमलकाय। सिद्धारथनंदनत्रिसला देवि सुमाय। मृगनायक लंछनसात हाथतनुमान। दिन दिन सुखदायकखामीश्रीवर्धमान ॥ १ ॥ सुरनरवर किन्नर वंदित पद अरविंद। कामितभर पूरण अभिनवसुरतरुकंद। भवियणनें तारै प्रवहण समनिसिदीस। चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवावीस ॥२ ॥ अरथेंकरि आगम भाख्या श्रीभगवंत। गणधरतेगूंथ्या गुणनिधिग्यान अनन्त। सुरगुरु पिण महिमाकहिनसके एकन्त। समरू

सुखदायक ममसुभ सूत्रसिद्धन्त ॥३॥ सिडायिका देवी वारे विघनविशेष । सङ्कसंकट चूरै पूरै आस असेष । अहनिसि करजोडी सेवै सुरनरवृंद । जंपइगुणगण इमश्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीमहावीर जिनस्तुतिः ॥ ९ ॥

॥ ॥ अश्वसेननरेसरवामा देवीनंद । नवकरतनु निरुपमनीलवरण सुखकंद । अहिलंछणसेवितपउमावइ धरणिंद । प्रहऊठीप्रणमु नितप्रतिपासजिणंद ॥ १ ॥ कुल गिरिवेयड्डइकणयाचलअभिराम । मानुषोत्तरनंदी रुचिक कुंडल सुखठाम । भवणेसरव्यंतरजोइस वेमाणीयधाम । वरतै जेजिनवरपूरो मुझमनकाम ॥२॥ जिहां अंगइग्यारै बारैउपांगछछेद । दसपइन्नादाश्यामूलसूत्रचउभेद । जिन आगम षटद्रव्य सत्तपदारथ जुत्त । सांभलिसरदहतां छूटै करमतुरत्त ॥३॥ पउमावइदेवी पार्श्वयक्ष परतक्ष । सङ्कसं घना संकटदूरकरेवा दक्ष । तेसमरोजिनभक्ति सूरिकहैइक चित्त । सुखसुजससमापो पुत्रकलत्र बङ्कवित्त ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ॥ १० ॥　॥ ॥

॥ ॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिणपते ज्ञानमतुलं । तथा मल्लेर्जन्मव्रतमपमलंकेवलमलं । वलक्षैकादश्यां सहसिलस दुद्दाममहसि ॥ क्षितौकल्याणानां क्षपतुविपदः पंचक मदः ॥ १ ॥ सुपर्वेन्द्रश्रेण्यागमन गमनैर्भूमिवलयं । सदास्वर्गत्वे वाहमहमकया यत्र सलयं । जिनानामप्यापुच्छण मतिसुखं नारकसदः ॥ (क्षितौ०) ॥२॥ जिनाएवं यानि प्रणिजगदुरा त्मीय समये । फलं यत्कर्तृणामिति च विदितं शुद्धसमये । अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुभवेयुर्बङ्कमुदः ॥ (क्षितौ०) ॥३॥

सुरासेंद्रा सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता: । तथाच ज्योतिष्काखिलभवननाथा समुदिता: । तयोयत्कर्त्तृणां विदधति सुखं विस्मितहृद: ॥ (चितो०) ॥ ४ ॥ ※ ॥ इति मोनैकादशीस्तुति: ॥ ११ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ सुखसमकितदायककामितसुरतरुकंद । दृढरथ नृपराणो नंदा केरोनंद । भद्दलपुरसामी काटै भवनाफंद । चितचोखैनमियै श्रीशीतलजिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत हुआ होस्यै अनंत । संप्रत काले जेव्हेलविदेह विचरंत । त्रिहुं भवणेठवणासासय असासयसंत । ते सगलाविकरणप्रणमुं श्री अरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंगपविट्ठ । नयभंग निक्खेपास्याद्वादनिसिद्ध । भविजन उपगारी भारी जिन उपदेश । सुतश्रवणे सुणतांनासै कोड़िकलेस ॥ ३ ॥ मह्मशच्च असोकासासन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकितधार । चिंता दुखचूरै पूरय मनह्जगोस । ध्यानतेह्नो धरियै कहै जिनलाभ सूरीस ॥ ४ ॥ ※ ॥※॥ इतिं श्रीशीतलजिनस्तुति: ॥ १२ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ मिलचोविहसुरवरविरचैत्रिगड़ोसार । अढीगाऊ उंचो पिहुलोजोयणपार । विचकनकसिंहासणपदमासन सुखकार । श्रीतीरथनायक वैसै चोमुखधार ॥ १ ॥ तीनछत्रशिरोवरि चामर ढालै इंद । देवदुंदुभि वाजैभाजकुमतीफंद । भामंडलपूठै झलकेजाणदिणंद । तिहुंअणजन मन मोहै सकलजिणंद ॥ २ ॥ द्रव्यभावसुठवणानामनिषेपा च्यार । जिहांगणधरभाख्यासूत्रसिद्धांतमझार । जिनवरनो

पद्मिमाजिनसारिषो सुखकार। सूभभावेवंदोपुणोजगजय कार॥ ३ ॥ दुखहरणोमंगलकरणोजिनवरवाणो। भवछेद कपाणोमोठी अमीयसमाणो। मनसुद्ध आणो प्रतिबूझो भविप्राणो। सुयदेविपसाये पामें जयति सुनांणो ॥४॥॥ इति श्रीसमवसरणभावगर्भितस्तुतिः॥ १३ ॥ ॥

॥ ॥ द्रेंद्रेंकि धपमप धुधुमि धोंधों ध्रसकिधरंधपधो रवं। दोंदोंकि दोंदों दागिद्रदि दागिद्रदिकि द्रमकिद्रणरण द्रेणवं। झझिझंकि झंझं झणणरणरण निजकिनिज जनरंजनं। सुरशैलसिखरे भवति सखदं पार्श्व जिनपतिम ज्जनं॥ १ ॥ कटरेंगिनियोंगिनि किटति गिगद्रदां धुधुकि धुटनटपाटवं। गुणगुणण गुणगण रणकिणोंणें गुणणगुण गणगौरवं। झझिझंकि झंझं झणण रणरणनिजकि निज जन सज्जना। कलयंति कमला कलितकलमल सुकलमोस महेजिना:॥ २॥ ठकि ठेंकि ठेंठें ठहिठहिक ठहिपट्टा ताड्यते। तललोंकिलोंलों खेंषिखेंषिनिद्रेंषिद्रेंषिनि वाद्यते। श्रुश्रुकिश्रुश्रु थुंगिथुंगिनि धोंगिधों गिनि कलरवे। जिन मतमनंतं महिमतनुतानमतिसुरनर सुत्रवे॥३॥ पुंदांकि पुपुदां पुपुद्रदि षुंदां षुपुद्रदिद्रोंदों अंबरे। चाचपटचच पट रणकिणंणेंद्रणणद्रेंद्रेंद्रंबरे। तिहांरुरगमपधुनि नि धपमगरस सस ससस सुरसेवता। जिननाथरंगें कुशलमुनि संदिसतु शासन देवता॥ ४ ॥ इति श्रीजिन कुशलसूरिकृत पार्श्वजिन स्तुतिः॥ १४ ॥   ॥॥   ॥॥

॥ ॥ सेत्रुंजगिरि नमियें ऋषभ देव पुंडरीक। शुभतपनोमहिमा सुणि गुरुमुख निरभीक। शुभमन उपवासें

विधिसुं चैत्यवंदनीक। करियैं जिन आगलटालो वचन अ लोक ॥ १ ॥ शक्रस्तवनादिक प्रथमतिलक दशवीस। अक्ष तगिणतीसेचढतातिमचालीस। पंचासनी पूजाभाषइ इमजगदीस। तेहीजनितप्रणमुंस्वामीजिन चउवीस ॥२॥ सुदिपक्षनी पूनमचैत्रमास शुभवार। विधिसेतीलहीयै आगमसाखविचार। इमसोलवरसलग धरियैन्यान उ दार। करतां नरनारी पामें भवनोपार ॥३॥ सोवनतनचरण नयणेतिमअरिविंद। चक्केसरी देविय सेविय नरसुरवृंद। कामितसुखदायक पूरयमन आणंद। जंपै गणनायक श्री जिनलाभ सूरिंद ॥४॥ इति श्रीचैत्रीपूनिमस्तुतिः ॥१५॥

॥ ॥ निरुपमसुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी। करुणासागर निजगुण आगर सुभसमतारस धामी जी। श्रीसिद्ध चक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावै जेम नरंगे जो। ते मानव श्रीपालतणोपरि पामें सुखबहुरसंगे जी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्धआचारजपाठक साधु महागुण वंता जी। दरसण नाण चरण तप उत्तम नवपद जगजय वंता जी। एहनो ध्यानधरंता लहीये अविचल पदअवि नासी जी। तेसगला जिननायक नमीये जिनए नीतिप्र कासी जी ॥ २ ॥ आसूमाससमनो हरतिमवलि चैत्रकमास जगोसे जी। उजवालीसातमथी करिये नव आंबिलनव दिवसे जो। तेरसहसगलिगुणिये गुणणुं नवपदकेरो सारो जी। इण परि निरमल तप आदरिये। आगमसाख उदा रो जी ॥ ३ ॥ विमलकमलदल लोयण सुंदरश्रीचक्के सरि देवी जी। नवपद सेवक भविजनकेरा विघनहरो सुर

सेवीजी । श्रीखरतरगच्छनायकसद्गुरु श्रीजिनभक्तिसुरिं दाजी। तासुपसायें इणपरिपभणे श्रीजिनलाभसुरिंदा जी ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीनवपदस्तुतिः ॥ ॥ १६ ॥ ॥

॥॥ वलि वलिकु ध्यावु गाऊ जिणवरवीर । जिण परवपजूसण दाख्याधरमनो सीर। आसाढचोमासे ऊंती दिनपंचास । पडिक्कमणोसंवछरी करियेतिणउपवास ॥१॥ चोवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार । करियें भलभावें भवि ये पुण्यभंडार । वलिचैत्यप्रवाडें फिरतां लाभअनंत । इम परवपजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तकपूजावी नववा चनायें वचाय । श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन परभावन धूपअगर उखेवो । इम भवियण प्राणी परवपजूसणसेवो ॥३॥ वलिसाहमी वच्छलकरियें वारंवार । केइ भावनाभावे केइ तपसी सीलधार । अट्ठाइपजूसण इमसेवत आणंद । सुयदेवी सानिध कहे जिनलाभ सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपर्यूषणापर्व्व स्तुतिः ॥ ॥ १७ ॥

॥॥ सुर असुरवंदिय पायपंकजमयणमल्लअक्षोभितं । घनघुसनश्यामशरीरसुंदर शंखलंछन सोभितं । सिवादेवी नंदन तिजगवंदन भविक कमल दिनेस्वरं । गिरनारगिरि वरसिखरवंदु नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥१॥ अष्टापदें श्रीआदि जिनवर वीरजिनपावापुरे। वासुपूज्यचंपापुरियसीधा नेम रेवयगिरिवरे। समेत सिखरें वीसजिणवरमुगतिपहुता मुनिवरू। चउवीस जिणवरतेहवंदु सयलसंघें सुखकरू॥२॥ इग्यार अंग उपांग बार दसपयन्ना जाणियें। छछेदग्रंथप सत्थ च्यार मूलग्रंथवखाणियें। अनुयोगद्वार उदारनंदी

सूत्र जिनमत गाइये। इह वृत्तिचूरणि भाष्य पैंतालीसआ गमधराइये ॥ ३ ॥ दुइंदिसें बालकदोय जेहनें सदाभवि यण सुखकरू। दुखहरै अंबा लुंबसुंदर दुरियदोहग अप हरू। गिरनारमंडण नेमिजिनवर चरणपंकज सेवियें। श्रीसंघसज्जनें सदामंगलकरो अंबादेवियें ॥ ४ ॥ ॥ इति गिरनारमंडणश्रीनेमि जिनस्तुतिः ॥ ॥ १८ ॥

॥॥ श्रीदेवार्य। विश्ववर्य। पूर्णानंदं। भक्त्यावंदे ॥१॥ तीर्थाधीशाः। शुद्धादेशाः। सर्वेभीष्टं। शं कुर्वंतु ॥२॥ अ र्हद्वाचो। वाचो युक्ता। क्षमाः सद्भिः। पापं मंतु ॥ ३ ॥ शांता कांता। सिद्धा देवी। शांत्यै दांत्यै। शश्वद्भूयात् ॥४॥ ॥ ॥ इति श्रीवीरप्रभु स्तुतिः ॥ ॥ १९ ॥

॥॥ त्रिभुवनजननायक दायक वंछितदान। भविकम लविकासन सासनसूरसमान। प्रणमुं बहुभावे नंदाराणी नंद। श्रीसूरतसहिरें शीतलनाथजिणंद ॥ १ ॥ उज्वलगुण धारी अविकारी अरिहंत। भविजन हितकारीमहिमावंत अर्हंत। उपगारी अविचल जयकारी जगदीस। नितनिर मलचित्तें वंदो जिन चोवीस ॥ २ ॥ जिहांनैगमसंग्रहआ दिकनयसुविचार। स्याद्स्ति प्रमुखवलि सप्तभंगिविस्तार। पैंतीस गुणेंकरि सोभें अतिसुविसाल। तेकंठेंठवियें जिनवा णी वरमाल ॥ ३ ॥ कमलासन सोहै नीलवरणतनुकांत। निज च्यार भुजें करि राजें अतिसयवंत। श्रीदेवी अशोका सोकहरणसुखकंद। इमभक्तेंपभणेंश्रीजिनलाभसुरिंद ॥४॥ ॥ ॥ इति श्रीशीतल जिनस्तुतिः ॥ ॥ २० ॥

॥ ॥ श्रीसर्वज्ञं ज्योतीरूपं विश्वाधीसं देवेंद्रं। का

श्याकारं लीलागारं माद्यावारं श्रीतारं। ज्ञानोदारं
विद्यासारं कीर्त्तिस्फारं श्रीकारं। गीर्वाणैर्वन्द्यं सानन्दं
भक्त्या वन्दे श्रीपार्श्वं ॥१॥ जागद्दीपे जंबूद्वीपे स्वर्णे श्रीशैले
श्रीगिरिले। चंचच्चक्रे ज्योतिश्चक्रे तुंगत्वाढ्ये वैताढ्ये। श्रे·
यस्कारे वक्षस्कारे देवावासे सोल्लासे। येवस्तव्ये सर्वाधी
शाः श्री सौख्यं वो देयासुः ॥२॥ सम्यग्ज्ञानं शुद्धध्यानं
श्रुत्वा धानं सम्मानं। त्रैलोक्य श्रीरामारम्यं विद्वद्रम्यं श्रा
काम्यं। अर्हद्वक्त्रांभोजोद्भूतं शास्त्रपूतं संगीतं। लक्ष्मीकांतं
वर्णोपेतं वंदेव्यक्तं सिद्धांतं ॥ ३ ॥ भव्यानां भक्तानां कल्या
णं कुर्वन्तो निभ्राजा। शीर्षे सोज्जीरं कोटीरं तारं हारं
वक्षोजे। विख्याता भोगेंद्रोपेतामालंकारा सह्लादं। यच्छं
तीपद्मादेवी सद्धिं ऋद्धिं वैदुष्यं ॥ ४ ॥✱॥ इति श्री पार्श्व
जिनस्तुतिः ॥ ✱ ॥ २२ ॥ ॥ ✱ ॥ ॥ ✱ ॥

॥ ✱ ॥ पापापांपुरिवाक् पष्टतपसा पर्यंकपर्यासनः।
स्वापापाब्धप्रभु स्वन्यपाल्नविपुल श्रीशुक्लशालामनु। गोसेका
र्तिकरार्गे नागकरणे तुर्यारकांतेशुभे। स्वातौयः शिवमाप
पापरहितं संस्तौमि वीरप्रभु ॥१॥ यद्भोगमनोद्भव व्रतवर
ज्ञानावाप्तिक्षणे। संभूयामृतपर्वसंततिरहो चक्रेमरुस्तत्
क्षणात्। श्रीमत्राभिभवादिवीरचरमा स्ते श्रीजिनाधी
श्वराः। संसारानलचेतसे विदधतां श्रेयांसनेनांसिच ।२॥
सर्वार्थमिदं जगार्दिनवः श्रीवर्द्धमानाभिधः। तत्पश्चाद्
गणनायका विरचयांचक्रु जगद्वत्सलाः। श्रीमत्तीर्थकृदर्थनेक
रुचिरं स्वर्गापवर्गप्रसूनां। मूवाङ्गादिक कारकं प्रवचनं चेत
श्चमत्कारिकम् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिपतीर्थभावनपराः दि

द्धायिकादेवता। चंचच्चक्रधरा सुरासुर नता पायादपाया दसौ। अर्हन् श्रीजिनचंद्रगोसु मतिनो भव्यात्मनः प्राणि नो। याचक्रेवमकष्टहस्ति निधनेसार्दूलविक्रीडितं ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥ २२ ॥ ॥ ॥ ॥ पुनः ॥

॥ ॥ सिद्धारथताताजगत विख्याता त्रिसलादेवीमा य। तिहां जगगुरुजनम्या सव दुखविरम्या महावीरजिन राय। प्रभुलेई दिक्षा कर हितशिक्षा देईसंवत्सरीदान। बहुकरमखपेवा शिवसुखलेवा कीधो तपशुभध्यान ॥ १ ॥ वर केवलपामी अंतरजामी वदिकातीशुभदीस। अमावस जातें पिछलीरातें सुगतिगयाजगदीस। वलि गोतम ग णधर मोटामुनिवर पाम्यापंचमज्ञान। थयातत्वप्रका सी शीलविलासी पुहुतासुगतिनदान ॥ २ ॥ सुरपतिसंचरि यारतनउधरिया रातथई तिहां काली। जनदीवाकीधा कारजसीधा निसाथईउजवाली। सहुलोकेहरखी नि जरेनिरखी परबकियादीवाली। वलि भोजन भगतें। निज निज सगतें जीमेंसेंवसुहाली ॥ ३ ॥ सिद्धायिकादे वी विघनहरेवी वंछित दे निरधारी। करै संघनैसाता। जिमजगमाता एहवी शकति अपारी। जिनगुणइमगावे शिवसुखपावे सुणज्यो भविजनप्राणी। जिनचंदजतीसर महामुनिसर जंपे एहवी वाणी ॥ ४ ॥ इति श्रीदीपमालि कास्तुति ॥ २३ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ पनरैतिथीकास्तवनलिख्यते ॥

॥ ॥ सुगुणसनेहीसाजण श्रीसीमंधरस्वामि। अरज

सुणो इक जगगुरुमुझ आसाविसराम। पूरवविदेहें विजय भली पुष्कलावई नाम। जिहां विचरै जिनवरजी धनते नयरीगाम ॥ १ ॥ धनते लोकसुणे जे जोजन गामनीवाणि धनतेमहीयल चरणधरै जिहां जिनवर भाण। धनतेभविजन जे रहे प्रभुताहरेपरसंग। वदनकमल निरखी नितमाणे उछवअंग ॥ २ ॥ सुगुरुमुखे प्रभुसुजस तुम्हीणोसांभल कान। मिलवानै उलसैमनमाहरोधरु इक ध्यान। भगति जुगति करवानी छै मुझ सगली जोड़। पिणप्रभुलगपुहचो जे तेहनहीपगदोड़ ॥ ३ ॥ आड़ाडूंगर अतिवणाविचवहे नदियांपूरि। किम मुझथी अवराये प्रभुजी एतलोदूर। आंखड़लीउलझों करै जोयवामुखजिनराज। पांखड़लीपाई नही ते विन किमसरै काज ॥ ४ ॥ वाटड़लीवहतोकोई न मिले संगुसाथ। कागलियोलिख आपूं जिम तेहनें हाथ। जाणूं ससिहरसाथे कहुं संदेशाजेह। पिणअलगो थई ऊपरि वाद्रे निकलै तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीते प्रभुजी तुमथीएथआवाय। तो इण भरतनावासी भविजन पावन थाय। साहिवनोतोसुनि जरसगलै सरिषो होय। पिणपोतानी प्रापति सारू फलप्रतिजोय ॥ ६ ॥ अलगोछु पिणमाहरै तुमसुं साचीप्रीति। गुणगुणवंतना आवैहीयडे खिणखीत। हुं छुं सेवक तुं छै माहरोआतमराम। नहियविसारूं जीवुं जांलगिताहरो नाम ॥ ७ ॥ साचेदिलथी मुझसुं धरज्योधरमसनेह। करुणाकर प्रभु कर जो मोपरिमहिर अछेह। दूसमकालतणो दुखटालोदीनदयाल। पालो विरुदसंभालो निज सेवकसुं क्रपाल ॥ ८ ॥ आसविलूधा अलग

थकी पिण करै अरदास। पिण मोटानी महिरठतां न विथाय निरास। केईवसै प्रभुपासे केईवसैछै दूरि। राज महिरनी रीते सकलनें जाणें हजूर ॥९॥ सिवसुखदायक नायक लायक स्वामिसुरंग। ध्यायक ध्येय स्वरूपलहै। निज आतमउमंग। सहिजे एकपलक जोथाये प्रभु तुझ संग। लाभउदय जिनचंद्र लहै नितप्रेम अभंग ॥ १० ॥ ॥॥ इति श्रीसीमंधरस्वामी स्तवनं ॥ ॥ १ ॥ ॥

॥॥ श्रीसंखेसर पासजिणेसर भेटीयै। भवनासंचत पापपरासव मेटीयै। मनधर भाव अनंतचरणयुगसेवता। अणहुंतें इककोडि चतुरविधदेवता ॥१॥ ध्यानधरूं प्रभदूरथकी हुंताहरो। जलजिमलीनो मीनसदा मनमाहरो। भव२ तुमहीजदेव चरणहुं सिरधरूं। भवसायरथीतार अरजआहीजकरूं ॥२॥ भूखतिषातपसीत आतमएनविसहै तपजप संजम भारतणो नविनिरवहै। पिणजिणवरना नामतणो आसतघणी। एहिज छै आधार जगतगुरु अम्हभणी ॥३॥ तुमदरसणविनसाम भवोदधि हुं फिर्यो। सहिया दुखअनेक नकारज कोसर्यो। मिलिया हिवप्रभु मुझस दासुख दीजीयै। चउगय संकट चूर जगतजस लीजीये ॥४॥ जादवपति श्रीकृष्णतणी आरतिहरी। सेनाकीधसचेतजरा दूरैकरी। परचा पूरण पासरयण जिमदीपतो। जयवंतोजिणचंदसयल रिपुजीपतो ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं१ ॥

॥ ॥ सफल संसार अवतार एहुंगिणुं। सामिसीमंधरा तुम्ह भगतै भणुं। भेटवापायकमल भावहीयडै घणो। करीसमुपसायजे वीनवुंते सुणो ॥ १ ॥ तुम्हमूढ

अरिहंतसुं राखिये। जिसो अछै तिसो करजोडि करि भा पिये। अति सबल मुझहिये मोहमाया घणी। एकमन भगति किमकरूं त्रिभुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करै नव नवीपरिगहै। रीसचटकोचढे लोभवयरीनहै। नयण रस वयणरस कामरस रसीयो। तेम अरिहंततूं हियडै नवि वसीउ ॥ ३ ॥ दिवसनें रातिहियडै अनेरोधरूं। मूढम न रीझवा वलिय मायाकरूं। तूंहिज अरिहंत जांणै जि सो आचरूं। तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ क मावसि सुखनें दुखनेंड सह्उ। मनतणीवात अरिहंत कि णनें कह्उं। करिदयाकरिमयादेवकरुणापरा। दुक्खहरि सुक्खकरि सामिश्रीसीमंधरा ॥ ५ ॥ जाणसंयोग आगम वयण पिणसुणु। धर्मनकरायप्रभुपापपोते घणुं। एक अरिहंततूं देवबीजो नही। एह आधार जग जाणज्यो अम्ह सही ॥ ६ ॥ धण कणय मायपिय पुत्तपरियण सहू। कुणो बोलयो रह्यो रंगरातो बहू। जय जयो जगतगुरु जीवजीवन धरा। तुम्ह समवडनही अवर वातहे सरा ॥ ७ ॥ अमियसम वां णि जाणुं सदा सांभलुं। वारवर परषदामांहिआवीमिलुं। चित्तजाणुं सदा सामि पायअलगुं। किम करुं ठामपुंडर गिरिवेगलूं ॥ ८ ॥ भोलडा भगतितूं चित्तहारै किस्यै। पुण्यसंयोग प्रभुदृष्टिगोचर डुस्यै। जेहनें नांममन वय णतनउलसै। दूरथीढूकडाजेम हियडै वसै ॥ ९ ॥ भल भलोएणि संसारसह ए अछै। सामिसीमंधरा ते सहु तुम पछै। ध्यान करतां सुपनमांहि आवीमिलै। देखिये नयण तो चित्तआरति टलै ॥ १० ॥ सामसोहामणा नाममनगह

गहै। तेहसुं नेह जे वात तुम्हची कहै। तुम्ह पायभेटवा अतिघणुं टलवलुं। पंखजोहोयतो सहिय आवीमिलुं॥ ११॥ मेरुगिरलेखणी आभकागलकरुं। खीरसागर तणा दुमखझीयाभरुं। तुम्ह मिलवातणा सामि संदेसडा। इंद्र पिण लिखियनसकै अछै एवडा॥ १२॥ आपणें रंगभरि वातमुख जेतली। ऊपजै सामिन कहायमुखतेतली। सुणो सीमंधरा राजराजेसरा। ताहनें कोडि प्रभुपूरि सविमा हरा॥ १३॥ पुव्वभविमोहवसि नेहहुवै जेहनें। समरियेए णि संसार नित तेहनें। मेहनेंमोरजिम कमलि भमरोरमें। तेम अरिहंतहूं चित्तमोरेरमे॥१४॥ परो अरिहंतनो ध्यानहियडै वस्यं। वापडो पापहिवरहिय करस्यै किसुं ठामिजिमगुरुडवरं पंखि आवै वही। ततखिणसर्पनीजा ति नसकैरही॥ १५॥ पापमें कज्ज सावज्ज सहुपरिहरी। सामिसीमंधरा तुम्ह पयअणुसिरी। सुद्धचारित्र कहियेप्र भुपालसुं। दुक्खभंडार संसार भयटालसुं॥ १६॥ तुम्हहुं दासहुं तुम्ह सेवकसही। एहमें वात अरिहंत आगलिक ही। एवडो माहरी भगतजाणीकरी। आपज्योवापजीसा र केवलसही॥ १७॥ कलश॥ इम ऋद्धि वृद्धि सम्द्धि कारण दुरितवारण सहुकरो। उवझायवरश्रीभक्तिला भै थुण्यो श्रीसीमंधरो। जयजयो जगतगुरु जीवजीवनक रो सामिमयावणो। करजोडिवलिवलिवीनवं प्रभु पूरि। आस्यामनतणी॥१८॥ इति श्रीमंधरजीरोवीनती संपूर्ण॥ २॥ ❋॥ ॥❋॥ ।❋॥ ॥❋॥

॥❋॥ मनमोहन महाराज। तीनभुवन सिरताज।

॥ आठेलाल ॥ नगर ब्रह्मानपुर राजीयाजी ॥ १ ॥ पासजिणंद प्रधान । निरमल सुगुणनिधान ॥ आठेलाल ॥ वामासुतवन्दि भागीयाजी ॥ २ ॥ सेवकनीसंभाल । करीयष रीततकाल ॥ आठेलाल ॥ संकटसङ्ग प्रभुपरिहस्याजी ॥३॥ चिंताकरी चकचूर । प्रगट्यो आनंदपूर ॥आठेलाल॥ वाट विषमतापिणटलीजी ॥ ४ ॥ प्रभुजीनें परसाद । वीतासङ्ग विखबाद ॥ आठेलाल ॥ मनवंछित सुझ सङ्ग फल्याजी ॥५॥ ध्यानसमाधिनीथाप । मिलीयाठो प्रभुआप ॥ आठेलाल ॥ देज्यो दरसण वलिसदाजी ॥ ६ ॥ अन्नत धर्मसुजाण । सो सन्नमा कल्याण । आठे लाल । वाचक दूम वीनतीकरै जी ॥ ७ ॥ ※ ॥ इति श्रीमनमोहन संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ३ ॥

॥ ※ ॥ जय२ श्रीजिनराज जगजन अन्तरजामी । तारण तरणजिहाज । परमातम परिणामी ॥ १ ॥ परमपुरुष परमेस । परमानंद प्रधान । परमप्रकास विसेस । निरमल ज्ञाननिधान ॥ २ ॥ जगपतिपासजिणंद । प्रभु तुम्ह हो उपगारी । सुनियै सेवक जान । ऐसी अरज हमारी ॥ ३ ॥ मोहमहामद भूलि । मैं बऊकाल गमायो । निजपरभावविवेक । सुद्धसुभाव नपायो ॥४॥ निरमल चेतनभाव । कर्म कलंकित कीनो । ताकारणगुण छोडि । परओगुणचितदीनो ॥ ५ ॥ निज अवगुण सुणिकान । दिलमें रोसभराउं । अठता निजगुणगान । सुनिवैकुं ऊमाहूं ॥ ६ ॥ आस्रवपांचे असुद्ध । दिलसें दूरनजावै । कुमति कदाग्रहजोग । समता सुद्ध न आवै ॥ ७ ॥ अवकाठ पुण्यसंयोग । प्रभु तुझ मुद्रा पेषी । सुद्ध अध्यातमलीन । भाव असुद्धउवेषी ॥८॥ निर

खिह प्रभुबिंब। मनमें आनंद पाऊं। गाऊं तुझ गुणग्राम देवअवर नविध्याऊं॥ ९॥ करुणाकरि प्रभुमुझ। आतम निरमल कीजै। सुद्धदसा प्रगटाय। मोहविकलतादीजै ॥ १०॥ भवभव निजपद सेव। प्रभु सेवक कुं दीजै। श्रीजिन भक्तिप्रसाय। सुमति विलाशवरी जै॥ ११॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं॥ ४॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय। निरमल न्यानउपाय। पांचमितप भणुं ए। जन्म सफल गिणुं ए॥ १॥ चउवीसमो जिनचंद। केवल न्यानदिणंद। त्रिगड़े गहगह्योए। भवियणनें कह्योए॥ २॥ न्यान वड़ो संसार। न्यानसुगति दातार। न्यानदीवो कह्योए। साचोसरदह्योए॥३॥ न्यान लोचन सुविलास। लोकालोक प्रकास। न्यान विनापसुए। नर जाणेंकिसुंए॥ ४॥ अधिक आराधक जाण। भगवती सूत्रप्रमाण। न्यानी सर्वतुए। किरीया देशतुए॥ ५॥ न्यानीसासोसास। करम करै जेनास। नारकिनें सहीए। कोड़वरस कहीए॥ ६॥ न्यानतणो अधिकार। बोल्या सूत्र मझार। किरिया छै सहीए। पिणपाछै कहीए॥ ७॥ किरिया सहित जो न्यान। हुवैतो अतिपरधान। सोनोनें सुरोए। संखदूधे भर्योए॥ ८॥ महा निशीथ मझार। पांचमि अक्षरसार। भगवंत भाषीयोए। गणधर साखियोए॥ ९॥ ढाल१ पहिली कालहरानो॥ ॥ पांचमि तपविधि सांभलो। जिमपामो भवपारोरे। श्रीअरिहंत इमउपदिसै। भवियणनें हितकारोरे॥ पां० १०॥ मिगसर माह फागुण भला। जेठ आसाढ वैसाखोरे। इण षटमासे लीजीये। सु

भद्दिन सद्गरुसाधोरे ॥ पां० ११ ॥ देव जुहारीदेहरे। गीतारथ गुरुवंदोरे। पोथी पूजो ग्याननी। सगति हुवै तो नंदीरे ॥ पां० १२ ॥ बेकरजोड़ी भावसुं। गुरुमुखकरो उपवासोरे। पांचमिपड़िकमणो करे। पढो पंडित गुरुपासोरे ॥ पां० १३ ॥ जिण दिन पांचमितप करो। तिण दिन आरंभ टालोरे। पांचमितवनथुई कहो। ब्रह्मचारिज पिणपालोरे ॥ पां० १४॥ पांचमास लघुपञ्चमी। जावजीव उत्कृष्टीरे। पांचवरस पांचमासनी। पांचमिकरो शुभदृष्टीरे ॥ पां०१५ (ढाल२ उल्लालानी) ॥❋॥ हिवभवियणरे पांचमिउजमणो सुणो। घरसारुरे वारूधनखरचोघणो। ए अवसररे आवं तांवलि दोहिलो। पुण्यजोगेरे धनपामंता सोहिलो। (उल्लालो) सोहिलो वलीयधन पामता पिण धर्मकाजकिहांवलो। पांचमो दिन गुरुपारुआवी कीजीये काउसगरलो। विणग्यान दरसण चरणटोकी देइपुस्तकपूजीये। थापना पहिलो पूजकेसर सुगुरु सेवाकीजीये ॥ १६ ॥ सिद्धांतनोरे पांचपरति वीटांगणा। पांचपूठारे सुखमलसूलप्रसुखतणा। पांचडोरारे लेखण पांच मजीसणा। बासकुंपारे कांबीवारूवरतणा। (उल्लालो) वरतणावारू वलियकमली। पांचझिलमिल अतिभली। थापनाचारिज पांचठवणी। मुहपती पडपाटली। पटसूलपाटो पंचकोथल पंचनवकरवालियां। इण परैश्रावक करैपांचमि उजमणो उजवालियां ॥ १७ ॥ वलिदेहरेंरे स्नात्र महोत्सव कीजियै। वरसारूरे दानवलो तिहां दीजियै। प्रतिमानेंरे आगलिढोवणोढोइयै। पूजानारे जे जे उपगरण जोइयै। (उल्लालो)

जोइये उपगरण देवपूजा काज कलशभृंगार ए। आर ती मङ्गलथालदीवो धूपधाणोसार ए। घनसार केसर अ गरसूकड़ अंगलुहणो दोसए। पंच पंचसगलो वस्तु ढोवो सगतिसु पचवीस ए॥ १८॥ पांचमीतारे साहमी सर्व जीमाडियै। रात्री जागेरे गीतरसाल गवाडियै। इण करणीरे करतां न्यान आराधियै। न्यान दरसणरे उत्तम मारगसाधियै। (उल्लालो) साधिये मारग एह करणी न्यानलहीये निरमलो। सुरलोकनें नरलोकमाहें न्यान वंतित आगलो। अनुक्रमे कैवल न्यान पामी सासता सुख जेलहै। जे करैपांचमि तपअखंडित वीरजिणवर इम कहै॥ १९ कलश॥ इम पंचमी तपफलप्ररूपक वर्द्धमान जिणेसरो। मेंथुण्यो श्रीअरिहंत भगवंत अतुलबल अल वेसरो। जयवंत श्रीजिनचंद सूरिज सकलचंदनसुं सीयो। वाचनाचारिज समयसुंदर भगति भावप्रसंसियो॥ २०॥ इति श्रीपंचमीस्तव स्तवन संपूर्णं॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पांचमितप तुमे करोरे प्राणी। निरमल पामो न्यानरे। पहिलो न्याननें पछेकिरिया। नही कोईन्यान स मानरे॥ पां० १॥ नंदीसूत्रमें न्यानवखाण्यो। न्याननापंच प्रकाररे। मति स्रुत अवधि अनें मनपर्यव। कैवलन्यान श्री काररे॥ पां०२॥ मति अट्ठावीस स्रुतिचवदेवीस। अवधिछ असंष प्रकाररे। दोयभेद मनपर्यवदाख्यो। कैवल एकप्रका ररे॥ पां० ३॥ चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा। तेसुं तेज आकासरे। कैवल न्यानसमो नहीकोई। लोकालोक प्रकास रे॥ पां०४॥ पारसनाथ प्रसादकरीनें। माहरीपूरो उमेदरे

समय सुंदर कहै छुं पिणपासुं । ध्यानलो पंचमो भेदरे ॥ पा० ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ भविका श्रीजिनबिंबजुहारो ॥ आतम परमआधारोरे ।(भविकाश्रीजि०)।जिनप्रतिमा जिनसारखीजाणो। नकरो संकाकाई। आगमवाणीनें अनुसारै। राखोप्रीतसवाईरे॥ भ०श्री०१॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणें । तेकहिये किम जाणें। भूलातेह अज्ञानें भरिया। नही तिहां तत्वपिछाणोरे॥ भ०श्री० २॥ अंबडश्रावक श्रेणिक राजा। रावण प्रमुख अनेक। विविधपरै जिन भगति करंता। पाम्याधरमविवेकरे ।भ०श्री०३॥ जिनप्रतिमा बहुभगते जोतां। होय निश्चय उपगार। परमारथ गुण प्रगटै पूरण। जोज्यो आद्रकुमाररे ।भ०श्री४॥ जिनप्रतिमा आकारेजलचर। छैबहु जलधिमझार। तेदेखीबहुलामछादिक। पाम्या विरतप्रकाररे॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ पांचमा अंगे जिन प्रतिमानो। प्रगटपणें अधिकार। सूरीयाभसुर जिनवर पूज्या। रायपसेणीमझाररे। भ०श्री० ॥६॥ दशमें अंगे अहिंसादाखी। जिनपूज्यां जिनराज। एहवा आगम अरथमरोडी। करियै कीम अकाजरे भ०श्री० ॥ ७॥ समकित धारी सतीयद्रूपदी। जिनपूज्या मनरंगे। जोज्यो एहनो अरथ विचारी। छठ्ठे ग्याता अंगेरे भ० श्री० ॥ ८ ॥ विजय सुरै जिम जिनवर पूजा। कीधीचित थिर राखी। द्रव्य भावविहुं भेदे कीनी। जीवाभिगमतेसाखीरे॥ भ० श्री० ॥९॥ इत्यादिक बहु आगम साखे। कोइसंका मति करज्यो। जिनप्रतिमा देखी नितनवलो। प्रेमघणो चित धरज्यो रे॥ भ०श्री० ॥ १०॥

चिंतामणि प्रभुपासपसाये । सरधा होज्यो सवाई । श्री जिनलाभ सुगुरु उपदेसै । श्रीजिन चंद्रसवाई रे ॥ ११ ॥ भ० श्री० ॥ इति श्रीचिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवनं ॥६ ॥॥

॥॥ अंतरजामीसुण अलवेसर । महिमा त्रिजगतुमारो। सांभलनें आयो तुमतोरे । जन्ममरणदुखवारो ॥१॥ (सेवक अरज करै छैहोराज । अम्हने सिवसुखआलो) ॥ (आंकणी) सङ्कोनां मनवंछितपूरो । चिंतासङ्कनी चूरो एह विरुदछै राज तुम्हारो । किम राखो छो दूरो । सेव०॥ २॥ सेवक नें विलविलतो देखी । मनमें महिरन धरस्यो । करुणासागर किमकहवासो । ज्यो उपगार नकरस्यो ॥ सेव० ॥ ३ ॥ लटपटनो हिव कामनही छै । परतिखदरसण दीजे । धुंवाम्है धीजुं नहीसाहिब । पेट पड्यां पतीजे ॥ से० ४ ॥ श्रीसंखेसर मंडणसाहिब । वीनतड़ी अवधारो । कहे जिनहर्षमयाकरसुझपर । भवसायरथी तारो ॥ सेवक० ५॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं ॥ ॥ ६ ॥ ॥॥

॥॥ जयकारीजिनराज । पुरसादाणी रे । वामासुत वरदाय । निरमलनाणी रे ॥१॥ पांचकमल प्रभुअंग । निरुपमनिरख्यारे । लिणकमल सुझसंग । आतमहरख्यारे ॥२॥ वदन महोदय देख । चंदलजाणू रे । गगनभमें निसदीस । इम मन आणूरे ॥३॥ सुरमणि ज्युं सुखकार । नयणविराजे रे । हृदयकमल सुविलास । थाल ज्युं छाजे रे ॥ ४ ॥ प्रभुकरचरणविलोक । पंकजहार्‍यो रे । ततखिण निजसंवास । जलमें धार्‍यो रे ॥५॥ इम सरवंग उदार । श्रीजिन राया रे । साचे पुरव संयोग । साहिब पायारे ॥६॥ प्रभु

गुण अनुभवनोरे । सांगसुरंगैरे । टाल्योपातिकपंक । आत मसंगैरे ॥७॥ वरस अढारचोतीस । वदिवैशाखै रे । मनु हर पांचमदीस । सङ्घसंघसाखें रे ॥८॥ नगरमहेवामांहि । पासजुहारया रे । श्रीजिनचंदसुणिंद । वंछितसास्यारे ॥९॥ इति पार्श्वजिनस्तवनं ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अमलकमलजिम धवलविराजै । गाजै गोडीपास । सेवा सारै जेहनी । सुरनरमनधरिय उलास ॥१॥ सोभागो साहिब मेरावे । अरिहांसुग्यानो पासजिणंदावे । (आंकणी) सुंदरसूरति मूरति सोहै । मोमन अधिक सुहाय । पलक२ में पेखतां मानुं । नवनवी छवीय देखाय॥२॥ सोभागो०अ०॥ भवदुखभंजण जनमनिरंजन । खंजन नयनसुरंग । श्रवणसु णी गुणताहरा । माहरा विकस्या अंगोअंग ॥ ३ ॥ सो० अ०॥ दूरथकीउं आयो वहनें देवहलोदीदार । प्रारथियां प हिछनेहो । साहिबा एहउत्तम आचार ॥४॥ सोभागो०अ० प्रभुमुखचंद विलोकित हरषित । नाचत नयनचकोर । कम लहसे रविदेषनें । जिमजलधर आगममोर ॥सो०॥५॥ किस केहरिहर किसके ब्रह्मा । किसके दिलमेंरांम । मेरैमनसें तूं वसै । साहिब सिवसुखनोठाम ॥ सो० अ० ॥६॥ मातावा मा धन्य पिताजसु । श्रीअश्वसेन नरेश । जनमपुरी वणारसी धनधनकासीनो देस ॥सो०अ० ॥७॥ संवतसतरैसै वावीसै वदि वैसाख वखाण । आठम दिन भलै भावसुं । मोरी जाल चढी परिमाण ॥सो० अ० ८॥ सानिधकारी विघन निवारी । परउपगारीपास । श्रीजिनचंद जुहारतां । मोरी सफलफली सङ्घआस ॥ सो०अ०९॥ इति श्रीपा०स्तवनं ॥८

॥ ※ ॥ ढाल पाटो घरजी पाटीये पधारो एहनी। सुणि२ सेवुं जगिरस्वामी। जगजीवन अंतरजामी। हुं तो अरजकरुं सिरनामी। कृपानिध वीनती अवधारो ॥ १ ॥ भवसायर पार उतारो। निज सेवकवानवधारो। कृ० । प्रभु मूरति मोहन गारी। निरष्यां हरषे नरनारी। जाउं वारी हुं वार हजारी। कृ० ॥२॥ हिव किसिय विमासण कीजै। मुझ ऊपरमहिर धरीजै। दिलरंजण दरसणदीजै। कृ० ॥३ आज सयलमनोरथ फलिया। भवभवनातिकटलिया। प्रभु जोमुझ सैमुखमिलिया। कृ० ॥४॥ समर्यां संकटटलिजाये। नवनवनितमंगल थायै। मुझ आतम पुण्यभरायै। कृ० ॥५॥ करजोड़ी वीनति कीजै। केसर चंदन चरचीजै। दिन धन धन तेह गिणीजै। कृ० ॥६॥ प्रभु दरस सरस लहितोरो। अति हरषित हुवो चितमोरो। जिम दीठांचंदचकोरो कृ० ॥७ ॥ परतिख प्रभु पंचमै आरै। विसमा भयसंकट वारै। सहुसेवक काज सुधारै। कृ० ॥८॥ सेवोस्वामि सदा सुखदाई। कमणानरहै घर काई। बाधै संपतिसोभ सवाई कृ० ॥ ९ ॥ नाभिराय कुलंबर चंदा। भवजन मन नयण आणंदा। ओलगै सुर असुर सुरिंदा कृ० ॥१०॥ जयकारी रिषभजिणंदा। प्रहसमधर परम आणंदा। वंदे श्रीजिन भक्तिसूरिंदा। कृ० ॥ ११ ॥ इति श्री ऋषभदेवजी स्तवन संपूर्णम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ घर अंगण सुरतरु फल्योजी। कवण कनक फल खाय। गयवर बांध्यो बारणेंजी। खरकिम आवेदाय ॥ १ विमलजिन माहरे तुम्हसुं प्रीति। सुरसकलंकित सुं मिल्यां

जी। चौयन्नो चैसे केम। वि०२ ॥२॥ मनगमता सेवालही जी। कुणखल खांवाजाय। आदरसाहिबनो लहीजो। कुण लये रांकमनाय ॥ वि०३॥ पाच छते कुणकाचनें जी। अलव पसारैं हाय। कुणसुरतरुथी ऊठिनें जी। बांवलधाले वाथ वि०॥४॥ देव अवरजोऊं करूं जी। तोप्रभु तुमचीआण। श्रीजिनराज भवो भवेजी। तुंहीज देवप्रमाण ॥ वि० ५॥ इति श्रीविमलजिन स्तवनं ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पासजिनेसर जगति लोए। गवन्नी पुरमंन्नण गुणनिलोए। तवन करिस प्रभुताहरोए। मनवंछित पूरो माहरोए ॥१॥ नयरीनामवणारसिए। सुरनयरी जिनरिद्धै वसीए। तेण पूरीछै दीपतोए। अखसेनराजा रिपुजीपतो ए ॥२॥ वामातसुघरिनारए। तसुगुणहि नलब्भैपारए। ता सुउयर अवतारए। तसुअतिसय रूपउदारए ॥३॥ चवदसु पन तिण निसिलह्याए। अनुक्रमकरि तेसङ्कमन ग्रह्याए। पूछे भूपतिनें कह्याए। करजोड़ि कह्या जे जिमलह्याए ॥ ४ (ढाल२)। प्रथमसुपनगज निरख्यो। मायतणोमन हरख्यो। बीजै वृषभउदार। धरणी जिण धर्‍यो भार ॥५॥ तीज सिंह प्रधान। जसुबल कोयनमान। चउथें देखी श्रीदेवी। कमल वसे सुरसेवी ॥६॥ पांचमै पुष्फनीमाला। पंचवरणसुविशाला। छठ्ठै दीठोएचंद। ग्रहगणकेरोएइंद ॥७॥ सातमे सूरज सार। दूरकियोअंधकार। आठमेंधजलहकंती। वरणविचि त्रसोहंती ॥८॥ नवमें पूरणकुंभ भरियो निरमलअंभ। देखि सरोवर दसमें। मनहुयो अतिविशमें ॥ ९॥ समुद्र इग्या रमें ठामें। खीरजलधि जसुनामें। वारम देवविमान।

वाजिलष्वनिगीत गान ॥ १० ॥ तेरम रतननो राशि। दह दिसि ज्योति प्रकाशि। सुपन चवदमें ए दीठो। पाव क धूमथी मीठो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार। हरष्यो भूपउदार। पुत्ररतन होस्यैं ताहरे। थासै उदय हमारे ॥ १२॥(दुहा) चवदसुपन श्रवणेसुणी। हरषकियो सुविचार। सुंदरसुततुमे जनमस्यो। कुलदीपक आधार ॥१३॥ वामामी तम वचन सुणि। आवो मंदर ऊत्ति। देव सुगुरुकीरत करी। जनम कियो सुकयत्थ ॥ १४॥ इण अनुक्रमि ऊग्यो दिवस। कीधासुपन विचार। ते परिपऊता आपणे। दी धा दान अपार ॥ १५ (ढाल)३ ॥ ❋ ॥ शिवजनम्या जगगुरु जगलऊंजं जयकार। खिण इक नारकिये पायो सुक्ख अपार। दिशिकुमरी मिलकर सूतकरम निशकीध। करि था नक पुहती वंछित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निशि चोसठ इंद्रमिली तिहां आवे। लेई निज भगते सुरगिर न्हाव करावे। करि जनम महोछव जननी पासे ठावे। तिहांथी सुरसवमिली दीप नंदीसर जावे ॥ १७ ॥ इमर यणविहाणी ऊगो दिवस उदार। घर२ गाई जे कीजे मङ्गलच्यार। इग्यारम दिवसे मिली सहु परिवार। तसु नामदीयोश्री उत्तमपास कुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधे दिन२ कलाकरी जिमचंद। लिङ्ग न्यान विराजित रूप जिसोदे विंद। गुणकला विचक्षण विद्यातणोय निधान। यौवनवय आयो परणायो राजान ॥ १९॥ (ढाल ४) ॥ ❋ ॥ कुमर पदे प्रभु रहि तां काल सुखे गमें ए। आयोमन वैरा ग्या संयम लेवासमें ए। नव लोगंतिय देव जणावे अवसर

व । ऋद्धि संपदूरो दान यावकजन सुख करू ए ॥ २० । स्वा
मी संयमलेइ ईन्द्रादिक सय मिलया ए । देश विदेश वि
हार करी कम निरदलयाए । धामोय केवल न्याम सुरे
र्म्मिरमा करी ए । थापिय चउविह संघ सुगति रमणी व
री ए ॥ २१ (टाल) ५ ॥ इम श्रीगौडीपास तणा गुण
गेयर गावै । ते नरनारी इह परलोगसु वंछित पावै ।
संघकरो संघपति जिके गवडीपुर आवै । चोरधाड संकट
दुखे विघनपराइ नसावे ॥ २२ ॥ धरणराय पद्मावइ
कापखै दिर आण । कांचन वरण सुशोभित नवकर काय
प्रमाण । कल्पदृक्ष चिन्तामणि कामगवी समतोलै । श्रीगु
णसागर शीस सदय रंग इम परिबोलै ॥ २३ ॥ इति श्री
पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ९ ॥ १० ॥ ॥

॥ ॥ राग सिंधु ॥ पूजानो तुं वेपरवाणी । तेमसता
गाढो करिमाणी । राखी जिमतुम आण प्रमाणी । पूजेतो
पूजे पतिमाणी ॥ १ ॥ तेमाचीमेशविधि आणी । भूलायमें
थासमति प्राणी । मनमथ वाराधे सुकृजाणी । ता संतोषीजे
याकाणी ॥ २ ॥ इन्द्रचन्द्रसबनस्यामि । तेतोपिंडभरोजे पावे
आस करि परमेसर जावे । तुंकिम केहनो पातक जावे ॥ प्र
भक्ति करसिवो पनिको पार । मइ साधन जिनवर जिर
धार । जिननुकृतारन साधीकार । तिणतो भगतिकरी यो
धार ॥ ४ ॥ नाधमंजनसणी जिनराज । आयो मान सवाई
आज । जानचंद्र अवसे जिनराज । थाने साहे सिवपुरना
॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं । १० ॥ ९ ॥   ॥

॥ ॥ समावरण पेढा अमवंत ; परम प्रकाश धोप

रिहंत । बारे परषदावैठी जुम्हो । मिगसरसुदि इग्यारस वम्हो ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण । जनमदिक्षानें कीवल न्यान । अरिदीक्षा लीधीरूवम्हो ॥ मि०२ ॥ नमिनें ऊपनो कीवल न्यान । पांच कल्याणक अति परधान । ए तिथिनी महिमा ए वम्हो ॥ मि० ३ ॥ पांचभरत ऐरवत इमहीज । पांच कल्याणिक हुवैतिमहीज । पंचासनी संख्या परगम्हो ॥ मि० ४ ॥ अतीत अनागति गिणतां एम । दोढसे कल्याणकथाये तेम । कुणतिथ छै एतिथ जे वम्हो ॥ मि० ५ ॥ अनंत चोवीसी इण परिगिणो । लाभ अनंत उपवासांतणो । ए तिथि सहु तिथि सिरराखम्हो ॥मि०६॥ मोनपणें रह्या श्रीमल्लिनाथ । एक दिवस संयमव्रत साथ । मोनतणो परिव्रत इम पम्हो ॥ मि० ७ ॥ अठपुहरी पोसो लीजीये । चोविहारविधसुं कीजीयै । पिण परमादन कीजे पम्हो ॥ मि० ८ ॥ वरस इग्यार कीजे उपवास । जावजीव पिण अधिक उलहास । ए तिथ मोक्षतणो पावम्हो ॥मि०९॥ उजमणो कीजे श्रीकार । न्यानना उपगरण इग्यार २ ॥ करोकाउसग्ग गुरुपाये पम्हो ॥ मि०१०॥ देहरै स्नात्रकरीजै वली । पोथी पूजीजै मनरली । सुगतिपुरी कीजैढूकम्हो ॥ मि० ११ ॥ मोन इग्यारसमोटोपर्व । आराध्यां सुखलहीये सर्व । व्रत पच्चक्खाण करो आखम्हो ॥मि०१२॥ जेसलसोलइक्यासी समें । कीधो तवन सह्र मनगमै । समय सुंदर कहे करोद्याहम्हो ॥ मि० १३ ॥ ॥ ※ ॥ इति श्रीएकादसी इद स्तवनं संपूर्णं ॥ ※ ॥ ११ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ तुं मेरे मनमें प्रभु तुं मेरे दिलमें । ध्यानधरुं पल२

में। पासजिणेसर अन्तरजामी। सेवकरु छिन२में ॥ [तुं०] १ ॥ काह्न कोमन तरुणीसुं राच्यो। काह्न को चितधनमें। मेरो मन प्रभु तुमही सुं राच्यो। ज्युं चातक चितघनमें ॥ [तुं०२] ॥ जोगीसरतेरी गति जाणें। अलखनिरंजण छिन में। कनक कीरति सुखसागर तुमही। साहिब तीन भवन में ॥ (तुं०३) ॥ इति पार्श्व जिन स्तवनं ॥ ११ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ मोरा साहिब हो श्रीसीतलनाथकि। वीनती सुणो इकमोरड़ी। दुख भांजे हो जग दीन दयाल कि। बात सुणी में तोरड़ी ॥ १ ॥ (मो०) तिणतोरे हो हुं आयो पासकि। मुझमन आसा छै घणी। कर जोड़ीहो कहुं मननी बातकि। तुं सुणि जे त्रिभुवन धणी ॥२॥ (मो०) हुं भमियोहो भवसमुद्र मझार कि। दुक्ख अनंतामें सह्या। ते जाणें हो तुं हिज जिनराजकि। में किमजाये ते कह्या ॥३॥ (मो०) भागजोगेहो तोरो श्रीभगवंत कि। दरसण नयणे निरखियो। मन मान्यो हो मोरे तुं अरिहंतकि। हियड़ो हेजे हरखियो ॥ ४ ॥ (मो०) एक निश्चैहो में कीधो आजकि। तुझविणदेव बीजो नही। चिंतामणिहो जो पायो रतन्न कि। काचग्रहै कहो कुण सही ॥५॥ (मो०) पंचामृतहो जिण भोजनकीध कि। खलखायवा मनकिम थीये। कंठतंइहो जो अमृत पीधतो। खारो जलकहो कुण पीयै ॥६॥ (मो०) मोतीकोहो जोपहर्यो हारकि। चिरमठकुण पहिरै हीयै। जसुगांठे हो लाखकोड़िगरत्थकि। व्याज काढी दाम कुण लीयै॥७॥ (मो०) घरमांहिं हो जो प्रगट्यो निधानतो। देस देसांतर कुण भमें। सोनानोहो जोमेर

सोसोधतो । धातुरवादी कुणधमें ॥८॥ (मो०) जिण कीधो हो जवहर व्यापारकि। मणिहारो मन किम गमें। जिणकी धो हो सदा हाल ऊकम्मकि। तेतूं कारो किम खमें ॥९॥ (मो०) तूं साहिब हो मोरो जीवन प्राण कि। ऊं सेवकप्रभु ताहरो। मुझ जीवत हो आज जनम प्रमाण कि। भव दुखभागो माहरो ॥ १० ॥ (मो०) तुझमूरतिहो देखंता मांयकि। समवसरण सुझसंभरै। जिन प्रतिमा हो जिन सरिषी जाणकि। मूरख जे सांसो करै ॥११॥ (मो०) तुम्ह दरसणहो मुझ आणंद पूरकि। जिम जग चंद चकोरड़ा। तुम्ह नामें हो मोरा पाप पुलाय कि। जिमदिन ऊगे चोरड़ा ॥ १२॥ (मो०) तुम्ह दरसणि हो मुझमनउछरंग कि। मेह आगम जिम मोरड़ा। तुम्हनामें हो सुख संपति थाय कि। मन वंछितफल मोरड़ा ॥१३॥ (मो०) ऊं मांगुं हो छिव अविहड़ प्रेमकि। नितनित करूं निहोरड़ा। मुझ देज्यो हो स्वामी भव भव सेवकि। चरण न छोड़ुं तोरड़ा ॥१४॥ (मो०)कलश ॥ इमअमरसरपुरसंघसुखकरमातनंदानन्दनो सकलापशीतलनाथस्वामी सकल जनआनन्दनो। श्रीवच्छ लंछन वरणकंचन रूप सुंदर सोहए। एतवन कीधो समय सुंदर सुणित जनमनमोहए ॥१५॥ इति श्रीशीतलनाथजिन स्तवनम् ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल) विलसै ऋद्धिनी ॥ जय२ जिण पास जगत धणी। सोभा ताहरी संसार सुणी। आयो ऊं पिणधर आसघणी। करिवा सेवा तुम चरणतणी ॥१॥ धन२ जैन पद्दे जंजाले। उपयोग सुं रैसै जिनआले। आसातनाचउरा

सीटाले। साखतासुखतेहिज संभाले ॥ २ ॥ जेनाखै स्लेखम जिनहरमें। कलह करै गाली जूयरमें। धनुषादि कला सीखणढूकै। कुरलो तंबोल भखै थूकै ॥ ३ ॥ सुरै वायवडी लघुनीत तणो। संज्ञा कंगुलिया दोष सुणो। नखकेससमा रण रुधिर क्रिया। चांदीनी नाखे चांवडिया ॥४॥ दांतण नेंवमन पीये कावो। खावे धांणी फूलीधावो। सूवैवेसामण विसरावै। अज गज पसुनेंदामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दसन आखै। नख गाल वपुषनामलनाखै। भिलणो लेखो करे मंलणो। विहचण अपणो करिधन धरणो ॥६॥ वेसै पग ऊपरि पग चढियां। थापैठांणा छडे दूंढणीयां। सूकवैकप्पडपप्पडवडियां। नासीय छिपैनृपभय पडियां ॥ ७ शोकै रोवै विकथाज कहै। इहां संख्या बे तालीसलहै। ह थियारधडे नें पशु बांधे। तापै नांणो परखेरांधे ॥ ८ ॥ भां जीनिसही जिनगृह पेसै। धरे छवनें मंडपमें बेसै। पहिरै वस्त्र अनें पनही। चामरवीजै मनठाम नही ॥ ९ ॥ तनु तैलसचित फल फूल लीये। भूषण तजि आप कुरूपथीये। दरसणथी सिर अंजलि नधरे। इगसाडि उतरासंग न करे ॥१०॥ ठे,गोसिरपेचमोडजोडै। दडिये रमनें वैसे होडै। सयणांसु जुहारकरै मुजरो। करै भंडचेष्टा कहै वचनवरो ॥११॥ धरै धरणोऊगडे चल्लंठो। सिरगुंथै वांधेपालंठी। पसारे पग पहरे चावडीयां। पगझाटकादिरावे दुखडीयां ॥१२। करदूमलूहै मैथुनमंडै। जूआ वलिअंठ तिहांछडै उघाडै गुज्झ करै वयदां। कादै व्यापारतणौ कयदां ॥१३॥ जिनहरपरनालनो नीरधरै। अंघोलेपीवाठामभरै। दूषण

जिन भवनमे एदाख्या । देववंदण भाष्यमें जेभाख्या ॥१४॥ सु ज्ञानी श्रावकसगतिठतां । श्रासातन टाले वारसतां । पर मादवसै कोईथायै । श्रालोयां पापसहूजायै ॥१५॥ तंबोलनें भोजन पान जूत्रा । मलमूत्र सयन स्त्रोभोगकूत्रा । भूषणप नहो ए जघन्य दसे । वरज्या जिनमंदिर मांहिवसे ॥ १६ ॥ द्रव्यतमें भावतदोय पूजा । एहनाहिज भेदकह्या दूजा । सेवा प्रभुनो मनसुद्ध करै । वंछित सुखलीला तेह वरै ॥ १७ (कलश) ॥ ❋ ॥ इम भव्यप्राणी भावआणी विवेकी शुभवातना । जिनबिंब अरचै परीवरजै चोरासी श्रासा तना । ते गोतवतीर्थंकर अरजै नमें जेहनें केवली । उव झाय श्रीधमसोह वंदे जैन सासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्रीचौरासी आसातना स्तवनं ॥ ❋ ॥ १३ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रणमुं ऋषभ जिनेसर पाय । धनुष पांचसै उंचीकाय । बीजो अजितजिन मुझ मनवसै । मान धनुष साढाच्यारसे ॥ १ ॥ तीजो संभव सुखदातार । उंचीकाय धनुषसोच्यार । अभिनंदन जिनसुं मनलीन । देहधनुषसौ साढातीन ॥ २ ॥ पंचम सुमतिनाथ भगवान । धनुष तीन सो देहीमान । पदमप्रभू पूरै मनआस । देहधनुष दोयसै पंचास ॥ ३ ॥ सामि सुपारस सत्तमहोय । देहप्रमाण ध नुषसौ दोय । चंद्राप्रभुजिन मुझ मनवसै । देह प्रमाण धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमियै सुविवेक । ऊंच प्रमाण धनुषसौ एक । शीतलनाथ नमें जगसवे । देहप्रमा ण धनुष जसुनिवे ॥ ५ ॥ श्रीश्रेयांस नमुं उलसी । उंच प्रमाण धनुष तनुअसी । वासपूज्य वारमजिनचंद । मान

धनुषसित्तर सुखकंद ॥ ६ ॥ विमल विमल गुणमणि गंभी र। साठि धनुषजसुमान सरीर। अनन्त ज्ञान अनन्त प्रकास। देहप्रमाण धनुष पंचास ॥ ७ ॥ पनरम धरमनाथ जगदीस। मान धनुषजसु पेंतालीस। शांतिकरण सोलम जिनशांति। देहधनुष चालीस सोभंति ॥ ८ ॥ सतरम कुंथुजिन जगदाधार। मान धनुष पेंतीसउदार। अर अट्ठार मदीनदयाल। तीसधनुष तनु अति सुविशाल ॥ ९ ॥ मल्लिनाथ जिन उगुणीसमो। मान पचीस धनुष पय नमो। वीसम मुनिसुव्रत अरिहंत। वीसधनुष तनुमान कहंत ॥ १० ॥ इकवीसम नमि जिनराजान। धनुषपनरै तनु रूपनिधान। बावीसम श्रीनेमिजिणंद। दसधनुदीपै जाणदिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्रीपारसनाथ। नीलवरण सोहै नवहाथ। चोवीसमाजिनवर श्रीवीर। सातहाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इणपरि ए जिणवर चोवीस। प्रणमें प्रहसमधरीयजगीस। तांघर रिद्धि सिद्धिउछरंग। रंगविनें प्रणमें मुनिरंग ॥ १३ ॥ इति श्रीचोवीसजिन देहमान स्तवनं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ऋषभदेव प्रणमुं जिनराय। लाखचोराशी पूरव आय। बीजो अजित जसु सूवैसाख। आउबहुत्तर पूरबलाख ॥ १ ॥ तीर्थंकर संभवतीसरो। आउलाख पूरव साठिरो। अभिनंदन पूरै मनआस। आउलाख पूरव पंचास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस। आउलाख पूरव चालीस। श्रीपद्मप्रभूनी ए थितिसाख। लाखतीस पूरव परिमाण ॥ ३ ॥ श्रीसुपार्श्व लाखपूरबवीस। दसलख पूरव चंद प्रभुईस। सुविधनाथ लखपूरब दोय। इकलख

पूरव शीतलथिति होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासीलाख । श्रीश्रेयांसतणो सुतसाख । लाखबहुत्तर वरसांतणो । वासुपुज्य परमायुषगिणो ॥ ५ ॥ विमलआउ लख साठि वरीस । वरस अनंत तणो लखतीस । लाखवरसदस धर मजिणंद । लाखवरस श्रीशांति जिणंद ॥ ६ ॥ वरस सह सथिति पंचाणवे । श्रीकुंथुनाथतणी संभवे । सहस चोरासी अरजिनतणी । मल्लिसहस पंचावन भणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण तीसहजार । मुनिसुव्रत परमाउउदार । दीस सहस नमिजिन थितिभणी । वरस सहस नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एकसो सुखकंद । वरस बहुत्तर वीर जिनंद । ऋषभतणा तेरै अवतार । शांतचंद्र सलीसरबा र ॥ ९ ॥ सुव्रतभव नव नवनेमीस । पार्श्ववीर दश सत्तावीस । तिहुं तिहुं भव सतरै जगदीस । सगलाभव एकसो अडतीस ॥ १० ॥ सिद्धलही सहुनें धनधन्न । गणधर चव देसैबावन्न । सहुनें मुनि लखअट्ठावीस । सहस ऊपरै अड़तालीस ॥ ११ ॥ लाखचमाल छयांल हजार । अडधिक सहु साध्वीसोच्चार । श्रावक लाख पचावनधुरै । अ डतालीस सहस ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोडि श्राविकासुजगी स । लाख पांचसहस अडतीस । ए संघचतुर्विध सहु जिन तणों । रंगविनें प्रणमै हितघणों ॥ १३ ॥ इति श्रीचौवीस जिन आयुप्रमाणस्तवनं ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥(ढाल१) धरम महारथ सारथ सारं एहनी ॥ ॥

सदगुरुचरणकमलमनधारं । त्रेसठ उत्तम नरअधिकारं । प्रभणसुस्रुत अनुसारं । जेहनें नामें लिये निसतारं । आपण

कफलकुवे अवतारं। पामी ले भवपारं ॥१॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन। सुमतिपद्म प्रभुनयनानंदन। सत्तमतेम सपास। चंद्र प्रभुने सुविध सीतल जिन। श्रयांस वासपूज्य जिणमुरमणि। विमलगुणां करवास ॥२॥ अनंतधर्म थीशांतिजिनेसर। कुंथुनाथ अरमल्लिसुहंकर। सुनिसुव्रतनमिनेम पार्श्ववीरण जिनचोवीस। भगवछल जगगुरुजगदीस। प्रणमीजे धर प्रेम॥३॥(ढाल२)प्रथमसुपनगज निरख्यो एहनी ॥ ॥२॥ प्रथम भरतनरइंद्र। बीओ सगरसुरिंद। मघवातीजो उदार। चोथो सनत्कुमार ॥४॥ पांचम सांतिचक्रीस। छठो कुंथुगणीस। सातमो अरनरनाथ। आठम संभमिस नाथ ॥५॥ नवमो पद्मनरेस। हरषेण दसम कहेस। इग्यारमजय नाम। बारम ब्रह्मदत्त नाम ॥६॥ एहचकीसर बार। स्वभरत सिणगार। मघवा सनतकुमार। पुहता सरग मझार ॥७॥ सुभूम अने ब्रह्मदत्त। सत्तमनिरयनि रत्त। आठ थया सिवगामी। तेप्रणमुं सिरनामी ॥८॥ (ढाल) ॥३॥ मुनिवर आर्यसुहस्ति एहनी ॥३॥ पहिलो त्रिपृष्ठि जाण। द्विपृष्ठ दूसरो। तीजो स्वयं प्रभु जाणीये ए। पुरुषोत्तमए चोथो। पंचम पुरुषसिंह प्रमाणीये ए ॥९॥ छठो पुरुष पुंडरीक। दत्ततिम सातमो। लक्ष्मण नामे आठमोए। नवमो कृष्णनरेस। एनवकेसवा। प्रहऊठी ए निम नमं ए ॥१०॥ तिहां पहिलो वासुदेव। नारकी सातमी। पांचमो पंच छठी गयाए। सातमो पंचमनैर। चोथो आठमो। नवमो त्रीजो नारेबार ॥११॥ अचलविजयभद्र। सुप्रभसुदर्शन। आनंद नंदनसुभमतीए। राम

चंद्रबलभद्र । बलदेव ए नव । आठ थया तिहां सिवगतो ए ॥ १२ ॥ बलभद्र ब्रम्ह देवलोक । काल उसप्पणी । जास्यै सिवकण्णासासणेंए । अथवा निपुलाक नाम । तोर्थंकर होस्यै । चवदमो इम बहुस्रुत भणै ए ॥१३॥ (ढाल४) कुमर पणें प्रभु रहतां काल सुखे गमेए एहनी ॥ ※ ॥ अश्वग्रीवनें तारक मेरु कवलि मधुतिसाए । निशुंभवलय प्रह्लाद रावण जरासिंधु जिसाए । एनव प्रति वासदेव नरक गतिगामियाए । तेपिण भावनिशेस कीई प्रणमुं सुदाए ॥ १४ ॥ (ढाल५) सफलसंसारनी ॥ ※ ॥ सांतिनें कुंथ अरि एहभव एकही । चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवीलही । वीर वासुदेव अरिहंत भवजू जूआ । देह तिण साठ पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलीय बलदेव केरा पिता । एकहिजथाय नवएण लेखै हता । तीनचक्रधरतणा मिलिय बारै टल्या। एम त्रेसठना तातइकावनमिल्या॥१६॥ तीन चक्रवततणो टाल दीजै जिसै । मायसहूनी थई साठ लेखै इसै । एह नररयणनो ध्यान नित जेधरै । तेहसुरपद लही मोक्षपदवी वरै ॥ १७ ॥ (कलश) इमचुण्यातोर्थंकर चक्रोसर वासुदेव बलदेव ए । प्रतिवासुदेवसु सेवजेहनी करै सुरनर सेवए । त्रेसठ्ठ सिलाका पुरुष उत्तम जगेंजयवंता सदा । प्रहसमें तेहना चरणपंकज नमें मुनिवसतो सुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ्ठि सिलाका पुरसस्तवनम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥(ढाल कपूर हुवे अतिऊजलोरे एहनी) ॥ ※ ॥ वरधमान जिनवरतणाजी चरणनमुं चितलाय। ग्यानक्रिया जिण उपदिसै जी । शिवसुखतणो उपाय ॥१॥ (भविकजन

धर श्रीजिन उपदेस। छटे कर्म कलेस भ०)॥ पडिलेहण मुहपति तणीजी। भाषीठै पचवीस। तिहां एभाव विचारीये जी। इम भाषै जगदीस ॥ २॥ (भ०) प्रथम बेपास विलोकीयै जी। सूत्र अरथनी दृष्टि। एपडि लेहणदृष्टिनी जो। करै धर्मनी पुष्टि ॥ ३॥ (भ०) समकित मिथ्या मिश्रनीजो। मोहनी तीननो त्याग। काम राग स्नेहरागनें जो तजवलि तिम. दृष्टि राग ॥ ४॥ (भ०) सीषवधूटक गुरु थकी जी। वामहाथ करनाउ। नव अखोडा आदरो जो। नवपषोडा गमाउ ॥ ५॥ (भ०) देव तत्व गुरुतत्वसुंजी धर्मतत्वगृहसार। कुगुरु कुदेव कुधर्मनी जी। तीनतणो परिहार ॥ ६॥ (भ०) ग्यानदरसण चारित्रना जी। संग्रह तीन आचार। तजो विराधनतीन एजी। एह अरथ अवधार ॥ ७॥(भ०) मन वच कायानी सदा जी। गुपतिगृह्यो जे सुद्ध। परिहरियै वलि जाणनेंजो। तीने दंड विसुद्ध ॥८॥ (भ०) पडिलेहण पचवीसए जी। मुंहपतीनो सार। हिव पडिलेहण अंगनी जी। ते पिणचतुर विचार ॥ ९॥ (भ०) हास्य अरति रति धोयनें जी। सुद्धकरो वाम बांह। तजि भय शोक दुगंछना जी। दक्षिण पिण करै साह ॥ १०॥ (भ०) धुरली लेस्या तीन एजी। ते सिर थी करि दूर। रिद्धिरस साता गारवो जी। करिसुख थी चकचूर ॥ ११॥ (भ०) काढसल्पतीन उरथकी जी। मायानियाण मिथ्यात च्यार कषाय वे वगलथीजी। क्रोधादिक करिघात ॥ १२॥ (भ०) तजखटकाय विराधना जी। चरण निरहे सुद्धहोय ए पडिलेहण अंगनी जी। पचवीसेतुं जोय ॥ १३॥ [भ०]

इम पडिलेहण जेकरै जो । धरमन ध्यान विवेक । सकल करम दूरै करै जो । पामें सुक्ख अनेक ॥१४॥ [भ० कलश] इम वीरजिणवर तणामुख थी अरथ गणधरसांभली । कहै सूत्रवाणी मनसुहाणी सुणो भवियण मनरली । उव ज्झायवर सिरि लब्धकी रति मुख थकी ए संग्रही । मुंह पती पडिलेहण तणी विधि लब्धिवल्लभगणि कही ॥ १५ ॥ इति श्रीमुंहपती पडिलेहण स्तवनं ॥ १४ ॥ * ॥ ॥

॥ ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो । आदीसर अरिहंत । जुगला धरम निवारणो । भयभंजण भगवंत ॥१श्री०॥ मुझ मनऊलट अतिघणो [रे] । सोदिन सफलगिणेस । स्वामी श्रीरिसहेसरू । जब नयणे निरखेस ॥ २ श्री० ॥ जंगम तीरथ विहरता । साधुतणै परिवार । आदिजिणंद समो सर्या । पूरव निनांणूं वार ॥ ३श्री०॥ अचराविजयानंदनें । जगबंधव जगतात । इण गिरिचउमासै रह्या । थिवर कहै ए वात ॥ ४ श्री० ॥ पामें शिवसुख सासता । गणधर श्रीपुंडरीक । पुंडरगिरि तिणकारणें । भगतिकरो निरभीक ॥ ५ श्री० ॥ नमिनें विनमि सहोदरू । विद्याधर बलवंत । सेत्रुंजसिखर समोसर्या । जेगरुया गुणवंत ॥ ६ श्री० ॥ थावच्चा मुनिवरसुक । सहस२ परिवार । पंथगव यणे जागीयो । सोसेलगअणगार ॥ ७ श्री० ॥ पांडवपांच महाबली । सुणि जादवनिरवाण । ते सीधा सिद्धाचले ।

* पोसैवालोंके देववंदणादिकमें बोलणेंकुं इहां केई तवन वेसी रक्खा है (और चतुर्दशीकुं प्रतिक्रमणमें छड्ड स्तवन अजीसंतो) वा । उल्लासिक्कम० कहै इति सम्प्रदाय: ।

सुर नर करै वखांण ॥ ८ श्री० ॥ इम सीधा इणडुंगरै। मुनिवर कोडाकोडि ॥। पाजचढंतासांभरै। ते प्रणमुं कर जोडि ॥ ९ श्री० ॥ जे वाघणिप्रति बूझवी। ते दरवाजे जोय। गोमुखयक्ष कवडमिलो। सानिधकारी होय ॥ १० श्री० ॥ जे विधसुं यात्रा करै। सुर नर सेवकतास। राज समुद्रगुण गावतां। अविचल लीलविलास ॥ ११ श्री ॥ इति सेत्रुंजय स्तवनं ॥ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब। वीनतडी अवधारोरे ॥ (जगनाताहू। मुझतारोजी कृपानिधिस्वामी) ॥ जगजसवाद प्रगटछैताहरो। अविचल सुखदातारोरे ॥ ज० १ मु ॥ निजगुणभोक्ता परगुणलोभा। आतम सगति जगायारे ॥ ज० ॥ अविनासी अविचल अविकारी। शिववासी जिनरायारे ॥ ज० २ मु० ॥ इत्यादिक गुणश्रवणे निसुणो। हुं तुमचरणे आयोरे ॥ ज० ॥ तुमरीझावण हेतै ततखिण। नाटक खेलमचायोरे ॥ ज० ३ मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्री। तरुसाधारण पामीरे ॥ ज० ॥ वरस संख्यातावलि विकलेंद्री। वेयदस्या दुखधामीरे ॥ ज० ४ मु० ॥ सुर नरतिरिवलि नरकतणीगति। पंचेंद्रीपणोधारोरे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंडकमांहि भमियो। अवतोऊं पि ...ज्योरे ॥ ज० ५ मु० ॥ भवनाटक नितकरतो नवनव। हुं तुझ आगलि नाच्योरे ॥ ज० ॥ समरथ साहिब सुरतरु सरिखो। निरखो तुझनें याच्योरे ॥ ज० ६ मु० ॥ जोमुझ नाटकदेखीरीझ्या। तो मुझ वंछितदीजेरे ॥ ज० ॥ जो नवि रीझ्या तोमुझ भाखो। वलिनाटक नविकीजेरे ॥ ज० ७ मु० ॥

लालचधरि ऊं सेवासारुं । तुं दुषमानविकापैरे ॥ ज० ॥ दातासेतीसूं बमलेरो । बहिलो जतर आपैरे ॥ ज०८सु०॥ तुझ सरिषा साहिब पिणमाहरो । जो नवि कारज सारो रे ॥ज०॥ तो मुझ करमतणी गति अवली । दोसनकोई तु मारोरे ॥ ज० ९ सु० ॥ दीनदयाल दयाकरि दीजे । सुध समकित सहिनाणीरे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो । तेहिजगुण मणिषाणीरे ॥ ज०१०सु० ॥ वर्ष अठारै गुणतालीसे । ज्येष्टसुदी सोमवारोरे ॥ ज० ॥ बालचंद प्रतिपददिन भेट्या । बीकानेर मझारोरे ॥ ज० ११ सु० ॥ इति श्री ऋषभदेवजी स्तवनं ॥ ॥ ॥१६॥ ॥ ॥

॥ ॥ वीरसुणो मोरी वीनती । करजोड़ीहो कहुं म ननी वात । बालकनी परिवीनवुं । मोरा सामीहो तूं त्रिभु वनतात ॥ १ वी० ॥ तुम दरसणविण ऊं भम्यो । भवमांहिं हो सामी समुद्रमझार । दुक्ख अनंतामैं सह्या । तेकहितां हो किमआवे पार ॥ २ वी०॥ परउपगारी तुं प्रभु । दुखभां जैहो जगदीनदयाल । तिणतोरै चरणेऊं आवीयो । सामी मुझनेहो निज नयण निहाल ॥ ३ वी० ॥ अपराधी पिणउ धर्या । तें कीधीहो करुणा मोरासाम । ऊं तो परमभगत ताहरो । तिणतारोहो नहीं ढीलनो काम ॥ ४ वी० ॥ सूल पाणप्रति बूझव्या । जिण कीधाहो तुझने उपसर्ग । डंक दीयो चंडकोसीये । तैं दीधोहो तसु आठमोस्वर्ग ॥ ५वी०॥ गोसालो गुनहीघणुं । जिण बोल्याहो तोरा अवरणवाद । ते बलतो तैं राखीयो । सीतलेस्याहो मूंकी सुप्रसाद ॥ ६ वी० ॥ ए कुणछे इंद्रजालीयो । इम कहितां हो आयो

तुम तीर । ते गोतमनें तैं कीयो । पोतानोहो प्रभुतानीव जीर ॥ ७ वी० ॥ वचनउथाप्या ताहरा । जेऊगड्योहो तु ऊसाथजमाल । तेहनें पिणपनरै भवे । सिवगामीहोतैं की धो क्रपाल ॥ ८ वो० ॥ अैमत्तोरिषिजेरम्यो । जलमांहें हो बांधी माटीनीपाल । तिरतीमूं कीकाचली । तें ताख्यो हो तेहनें ततकाल ॥ ९ वी० ॥ मेघकुमर रिषदूहव्यो । चितचूकोहो चारितथी अपार । एकावतारो तेहनें । तें कीधो हो करुणा भंडार ॥१० वी०॥ बारवरस वेस्याघरे । रह्यो मूंकी हो संयमनोभार । नंदखेणपिणउधख्यो । सुरपदवीहो दीधी अतिसार ॥ ११ वी० ॥ पंच महाव्रत परिहरी । ग्रहवासेहोवसिया वरस चोवीस । तेपिण आर्द्र कुमारनें । तें ताख्योहोतोरी एह जगीस ॥ १२ वी० ॥ राह्यश्रेणक रा णीचेलणा । रूपदेखी हो चितचूका जेह । समवसरण साधु साधवी । तें कीधाहो आराधिक तेह ॥ १३ वी० ॥ विरत नहीं नहीं आखड़ी । नहीं पोसोहो नहीं आदर दीख । ते पिण श्रेणिकरायनें । तें कीधोहो सामी आपसरीख ॥ १४ वी० ॥ इम अनेक तें उधख्या । कहुं तोराहो केता अवदात । सारकरो हिवमाहरी । मनमांहेंहो आणो मोरनी वात ॥ १५ वी० ॥ सूधो संजम नविपलै । नही तेहवोहो मु ऊदरसण नाण । पिण आधारछै एतलो । इक तोरोहो धरूं निश्चल ध्यान ॥ १६ वी० ॥ मेह महीतल वरसतो । नविजोवैहो समविखमी ठाम । गरुआ सहिजे गुण करै । सामी सारो हो मोरा वंछित काम ॥ १७ वी० ॥ तुम नामें सुख संपदा । तुम नामें हो दुख जाये दूर । तुम

नामें वंछित फलै । तुम नामें हो सुझ आणंदपूर ॥ १८ वी० ॥ (कलश) ॥ ॥ इम नगर जेसलमेर मंडण तीर्थंकर चोवीसमो । सासनाधीसर सिंहलंछन सेवतां सुरतरु समो । जिणचंद त्रिसलामातनंदन सकल चंदकला निलो । वाचनाचारज समय सुंदर संथुख्यो त्रिभुवनतिलो ॥ १९ ॥ इति श्रीमहावीर जिनस्तवनं ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनलि ॥

॥ ॥ (ढाल आदर जीव क्षमागुण आदर) एहनी ॥ ॥ पूर मनोरथ पासजिनेसर । एहकरुं अरदासजी । तारणतरण बिरुद तुझ सांभलि । आयो ऊं धरिआस जी ॥ १ ॥ (पू०) इण संसार समुद्र अथागे । भमियो भवजल मांहि जी । गिलगिलिया जिम आयो गिडतो । साहिब हाथे साहिजी ॥ २ ॥ (पू०) तुं ग्यानीतो पिण तुझ आगे वीतककहीयै वात जी । चोवीसे दंडक ऊं भमियो । वर णुं तेह विख्यात जी ॥ ३ ॥ (पू०) साते नरक तणो इकदंडक । असुरादिक दस जाणजी । पांच थावर नें तीन विकलेंद्री । उगणीसगिणती आणजी ॥ ४ ॥ (पू०) पंचेंद्री तिर्यंच नेंमानव । एहथया इकवीस जी । व्यंतर ज्योतिषीनें वेमाणिक । इमदंडक चोवीसजी ॥ ५ ॥ (पू०) पंचेंद्री तिर्यंच अनेंनर । परयाप्ता जे होय जी । एचोविहदेवां मे उपजै । इमदेवां गति दोय जी ॥ ६ ॥ (पू०) असंख्यात आऊपे नर तिरि । निश्चै देवजयायजी । निज आउखे सम के ऊंछै । पिण अधिकैनविजाय जी ॥ ७ ॥ (पू०) भवनपती के व्यंतर

तांई। समूर्छिम तिरयंच जी। सरग आठमा तांई पुहचै गरभज सुकृत संचजी ॥८॥ (पू०) आऊ संख्या तै जे गरभ ज।नरतिरयंच विवेक जी। बादरप्रथवीनें वलिपाणी। वन स्पती प्रत्येक जी ॥ ९ ॥ (पू०) परियाप्ता इण पांचे ठामें आवी उपजै देवजी। इण पांचामाहें पिण आगै। अधिकाई कहुं हेव जी ॥ १० ॥ (पू०) तीजा सरग थकी मांडीसुर। एकेंद्री नवि थाय जी। अष्टम थी ऊपरिला सगला। मांन वमांहे जायजी ॥११॥(पू०)[ढाल२ आजनिहेज्योरे दीसै नाहलो एहनी।] ॥नरकतणी गति आगति इण परै। जोवभमें संसार। दोयगतिनें दोय आगति जाणीयै। वलीय विशेष विचार ॥१२॥ (न०) संख्या तै आऊपरयापता। पंचेंद्री तिरयंच। तिमहीज मनुष्य एहिज वे नरकमें। जाये पाप प्रपंच ॥ १३ ॥ (न०) प्रथम नरकलगि जाय असन्नियो गोहनकुल तिम बोय। गृध्रप्रमुख पंखी तीजी लगे। सींह प्रमुख चोथीय ॥ १४ ॥ (न०) पंचमी नरकै सोमासापणी। छठोलगि स्त्रीजाय। सातमीयें मांणस के माछलो। ऊपजै गरभज आय ॥१५॥ (न०) नरक थकी आवै विहुं दंडकै। तिरयंच कै नरथाय। तेपिणगरभज नें परयापता। संख्या तो जसुआय ॥ १६ ॥ (न०) नारकियांनें नरकथी नीसऱ्यां। जे फल प्रापत होय। उत्कृष्टे भांगे करि ते कहुं। पिण निश्चै नही कोय ॥१७॥ (न०) प्रथम नरकथी चवि चक्राव र्तिहुवै। बीजो हरिबलदेव। तीजीलगि तीर्थंकर पदलहै। चोथी केवल एव ॥ १८॥ (न०) पंचमीनरकनो सरबविरति लहै। छठो देस विरत्त। सातमी नरक नो समकित होज

लहै। न हुवै अधिक निमित्त ॥ १६ ॥ (न०) [ढाल३ ॥*॥ (करम परीचा करणकुमर चल्यो रे) एहनी ॥*॥ मानव गति विण सुगति हुवै नहीरे। एहनो इम अधिकार। आ ऊसंख्यातै नरसहुदंडकैरे। आवीलहै अवतार ॥२०॥(मा०) तेऊ वाऊ दंडक वेतनीरे। बीजाजेबावीस। तिहांथी। आया थाये मानवीरे। सुखदुख कर्मसरीस ॥ २१ ॥ (मा०) नर तिरयंच असंखी आउषेरे। सातमी नरकना तेम। तिहां थी मरने मनुष्य हुवै नही रे। अरिहंत भाष्योएम ॥ २२ ॥ (मा०) वासुदेव बलदेव तथा वलीरे। चक्रवर्त्तिनें अरिहंत। सरग नरगना आया ए हुवैरे। नरतिरथी न हु वंत ॥२३॥(मा०) चोविहदेव थकी चवि ऊपजेरे। चक्रवर्त्ति बलदेव। वासुदेव तीर्थंकर एहुवै रे। वेमानकथीजेव ॥२४ (मा०) [ढाल४ नाभि अनेमरुदेवा] एहनो ॥*॥ हिवतिर यंच तणी गति आगति कहीये अशेष। जीवभमें इण परभव मांहें करम विशेष। आऊ संख्याती जे नर तिर्यंच विचार। तेसगला तिरयंचामांहें लहै अवतार ॥ २५ ॥ जिणतिरयंचां मांहे आवे नारकदेव। ते कह्या पहिली तिणकारण नकहुं हेव। पंचेंद्री तिरयंच संख्याती आऊखे जेह। ते मरी चिहुंगतिमांजावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंद्री आठे कहावै। तिहां थी आउसंख्याता नरतिरयंचमें आवे। विकल चवीलहै सरब विरति पिणसुगति न पावै। तेऊवाऊ थी आयो तेहने समकितनावै ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें इगलाही जीव संसार। पृथवी आउवनसती मांहिलहै

अवतार। एतीने इहां थीचविआवै दसे ठामें। थावर विकल तिरी नर मांहे उतपत पामै ॥ २८ ॥ पृथवीकाय आदि देई दस दंडकै एह। तेऊवाऊमांहे आवी उपजै तेह। मनुष्य विना नवमांहे तेऊवाऊ बे जावै विकलेंद्री तेदसमांहि जावै पूठाहीआवै ॥२९॥ एम अनादितणो मिथ्याती जीवएकंत। वनस्पतीमांहे तिहां रहीयो काल अनंत। पुढवी पाणी अगनि अनें चोथो वलिवाय। काल चक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइंद्रीतेइंद्री अनें चौरिंद्री मझारै। संख्याता वरसांलगै भमियो करम प्रकारै। सात आठभव लगितां नर तिरयंचमें रहियो। हिव मांनवभवलहिनें साधुनो वेषमें रहियो ॥ ३१ ॥ रागद्वेष छूटे नही किम हुवे छूटकवार। पिणहै माहरै मनसुध ताहरो एक आधार। तारणतरण में त्रिकरण सुद्ध अरिहंत लाधो। हिव संसार घणो भमिवो तो पुद गल आधो ॥ ३२ ॥ तुं मन वंछित पूरण आपद चूरणसामी ताहरी सेवलही तो मेंनवनिध सिधपामी। अवरनकांइ इछुं इण भव तुं ही ज देव। सूधे मन एक हो ज्यो भव भव ताहरी सेव ॥३३॥ [कलश] ॥ इम सकलसुखकर नगर जेसल मेर महिमा दिन दिनें। संवतसतरै उगणतीसैदिवसदीवा लीतणें। गुणविमलचंद समान वाचक विजेहरष सुसीसए श्रीमासना गुणएमगावै धरमसी सुजगीसए ॥ ३४ ॥ इति श्री चोवीस दंडक स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ इरियावहीमिछामिदुक्कड़संख्या स्तवनलि० ॥

॥*॥ प्रभु प्रणमु रे पासजिणेसर थंभणो एदेशी ॥*॥ पदपंकज रे प्रणमी वीरजिनंदना। त्रिकरण सुधरे करि मुनिवरपय वंदना। श्रीमंत रे पड़िकमो जिम इरियावही। श्रीवीरजीरे वाणी तहतकरि सरदही। (उ०) सरदहीवाणी मनसुहाणी चित्तआणी तेवली। मिछामिदुक्कड़तणी संख्या कहिसुं जिम कही केवली। भू दग जलण तिम वाउ वण सहु विगल पण इंद्रीतणी। करतां विराहण करमबंध्या दूर ते करिवाभणी ॥ १ ॥ (चाल) पुढवीदगरे वाऊतेउ वण सई। पण थावररे वादरसुहम दसेयई। प्रत्येकजरे वण सहु इग्यारहथया। बावीसेरे पज्जत्तग अपज्जत्तया। (उल्लालो) पज्जत्त अपज्जत्तगवखाण्या विगलतिय छहभालए। जल थल खचर भुयंगदुइपण इंद्रिय तिरि आलए। घम्मादि साते नरक पुढवी नारकी तिहां सातजे। तें चवद भेदे करी जाणो पजत्तय अपजत्तजे ॥ २ ॥ (चाल) पनरह विधरे सुरगण परमाहम्मिया। किल विखियारे त्रिविध करम ते निम्मिया। जंभिय दसरे नव लोगंतिक जाणिये। सोलहविधरे व्यंतर देव वखाणिये। (उल्लालो) वखाणिये दसविध भुवनपतिना तारवि ससिरिसिगहा। चरथिर दसेविध जोइसीसुर वखाण्या जिणवरजिहां। बारह विमानक पणअणुत्तर नवग्रीवेके नव भण्या। पजत्त अपजत्तग अठाणुं अधिक सतसंखागिणया ॥ ढाल २ मेघ आगमसही एदेशी ॥*॥ पंचभरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर भूमिका ए। खेत एपनरह

करम भूमि जाणीये असि कसि मसिहि आजीविकाए। हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरण्यवत सहीए। मेरुपिण पाखती चारि२खेत्र दस कुरु अकरम भूमीकहीए॥ ४॥ हिमगिर सिहरीये दाढिचीयारि लवण समुद्रमां हि विस्तरीए। सात२ अंतर दोय पासे दीप छपन्न अन्तर धरीए। दोइसै भेद इइ आगला जांणि मणुय पज्जत्त अपज्जत्तयाए। एकसौ एक समुर्छिम भेद तीनसै तीनमणुआययाए॥ ५ ढाल३॥ (हिव जनम्या जगगुरु०) एहनी॥ पणसय त्रेसठिविध जीवसहू छे एह। अभिहय आदिक दसगुणित करीजे तेह। पणसहस छसै वलि त्रीस अधिकते जाणि। ते रागैदोसै दुगणा करी वखाण॥ ६॥ इइसहस इग्यारह दुइसय साठि प्रमाण। ए प्रवच नवाणो जाणी हितउर आण। मनवचकाया करि त्रिगुणाकरि तिअंक। तेत्तीस सहस सत सातअसी निः संक॥ ७॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुणा किद्ध। इकलक्ख सहसइग तिसयचालीस प्रसिद्ध। अतीत अना गत वर्त्तमान वलिकाल। जेयइयविराधना तिणि त्रिगुण संभाल॥ ८॥ तीनलाखसहसच्यार वेसै अधिक तेथाय। अरिहंत प्रमुखछह साखैछगुणा भाय। इम लाख अढारह वलि सहस चउवीस। इकसो वीसोत्तर इइ संख्यानि सदीस॥ ९॥ ढाल४ चांपईनी॥ ※॥ इण परिमिच्छामि दु क्कडंदेई। भविक सदा भवजलनिधिकेई। तरे अठे वलि आगलि तरिसी। निरमल केवल लखमीवरिसी॥ १०॥ इरियावही परम गङ्गाजल। न्हाण करै आतमकरि निर

मल । सें मुखभाषै वीरजिणेसर । सूत्रकरी गूंथै ते श्रुत धर ॥ ११ ॥ इम पडिकमो मुनिवर अइमत्तो । वीरसीस केवल पदपत्तो । तिकरणसुधतसु पयप्रणमी जे । मानव जनम सफल इम कीजै ॥ १२ (कलश) ॥ ॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो । तियलोय सामी सिद्धिगामी सुद्धधरम धुरंधरो । उवझाय लच्छीकीर्त्ति । सीसै जैनवाणी मनधरी । गणिलब्धिवल्लभ तवन करि इम संथुण्यो भावै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावहीमिछामिदुक्कड संख्या स्तवनं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ पंचसमवाय स्तवनलि-॥

॥ ॥ सिद्धारथ सुतवंदिये । जगदीपकजिनराज । वस्तुभाव सब जाणिये । जय आगम थी आज ॥१॥ स्यादवादथी संपजै । सकल वस्तु विख्यात । सप्तभंगि रचना विना बंधन वैसै वात ॥ २ ॥ वादवदै नय जूजुआ । आप आपणें ठाम । पूरणवस्तु विचारतां । कोइ न आवै काम ॥ ३ ॥ अंध प्ररूपै एहगज । ग्रही अवयव एकेक । दृष्टिवंत लहै पूर्णगज । अवयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संयुत सकलनयें करी । जुगत२ सुध बोध । धनजिनसासन जगजयो । तिहां नही कोइ विरोध ॥ ५ ॥ (ढाल१ आसावरी राग ॥) श्री जिन सासन जगजयकारी । स्यादवाद शुद्धसरूपरे । नय एकांत मिथ्यात्वनिवारण । अकल अभंग अनूपरे ॥ ६ ॥ श्री० कोई कहे एकाल तणें वस । सकलजगतगत होयरे । काले उपजे विणसे काले । अवरनकारण कोइ रे ॥ ७ ॥

ओ० ॥ काले गर्भ धरै जगवनिता । काले जनमें पूत रे । काले बोलै काले चालै । काले झालै घर सूतरे ॥८ ओ०॥ काले दूध थकी दही थायै । काले फल परपाक रे । विविध पदारथ काल उपायै । अंतकरै बेवाकरे ॥ ९ ओ० ॥ जिन चउवीसे बारचक्कवे । बासुदेव बलवंतरे । काले कवितन कोई नदीसे । जसुकरता सुर सेवरे ॥१० ओ०॥ उत्सर्पणि अवसर्पणि आरा । छछै जूजयें भांतरे । षटरितु काल विशेष विचारो । भिन्नभिन्न दिन रातरे ॥११ ओ० ॥ काले बालविलास मनोहर । यौवन कालाकेशरे । वुड्ढपणेंऊय वलि२ दुर्बल । सकत नहीलवलेसरे ॥१२ ओ०॥ ढाल२ गिरआगुण ओवीरजी एहनो ॥ ॥ तब सभाव वादी वदैजो । कालकिसुं करै रंक । वस्तु सुभावे नीपजे जो । विणस तिमज निस्संक ॥१३॥ (सुविवेक विचारीजूओ२वस्तु सुभाव) ॥ छते योग जोवनवतो जी । वांझणि न जणें बाल । मूंछनही महिला सुखे जो । करतल ऊगै न बाल ॥१४ सु०॥ विणसभाव नविसंपजे जो । किमहू पदारथकोय । अंबनलागे नीं बहेजो । बागवसंते जोय ॥ १५ सु० ॥ मोर पींछ कुणचीतरै जो । कुण करै संध्या रंग । अंगविविधसविजीवनाजो । सुंदर नयनकुरंग ॥१६ सु० ॥ कांटा बोरबबलनाजो । कुणें अणियाला कीध । रूपरंग गुणजूजूआजो । तस पाल फल प्रसिद्ध ॥ १७ सु० ॥ विसहरमस्तकै नितवसैजो । मणिहरै विसततकाल । परबतथिर चल वायरोजो । उरध अगननी झाल ॥१८सु०॥ मछ तुंब जलमांतरै जो । बूडै कागपाषाण । पंख जाति गयणे फिरे जो । इणपरै सहिज विनाण ॥१९॥

सु०॥ आयसुंठ थी उपसमें जी। हरडै करै विरेच। सोफै नहि कणकांगनो जी। सकल सुभाव अनेक॥ २०॥ सु०॥ देश विशेषै काठनो जी। भुयमांथाये पाषाण। संख अस्थिनो नीपजै जी। ध्वेतसभाव प्रमाण॥ २१ सु०॥ रवि तातो शशि सीयलो जी। भव्यादिक बहुभाव। छए द्रव्य आपापणा जी। न तजै कोइ सुभाव॥ २२ सु०॥ (ढाल३) कपूरहुवै अति ऊजलो रे एहनी॥ काल किसुं करै बाप डोरे। वस्तु सुभाव अकज्ज। जो नहोइ भवतव्यताजी। तो किम सीझै कज्ज रे॥२३॥ (प्राणी मकरोमनजंजाल)। एतो भावो भाव निहाल रे॥प्रा०॥ जलधितरै जंगलफिरै जी। कोडि यतन करै कोय। अणभावी होवैं नही जी। भावी होय ते होय रे॥२४प्रा०॥ आंबे मौर वसंतमांजी। डालैं कोईलाख। खया केई षांपटी जी। केइ आंबा केई साख रे॥ २५ प्रा०॥ वाउल जिम भवतव्यता जी। जिण२ दिशे उजाय। परवसमनमाणस तणो जी। टणजिमपूठे धाय रे॥ २६ प्रा०॥ नियत वसैं विण चिंतव्यूंजी। आवी मिलै ततकाल। वरसांसोनु चिंतव्यो जी। नियत करै विसराल रे॥२७ प्रा०॥ आठमो चक्रि सुभूमितेजी। समुद्र पड्यो विकराल। ब्रम्हदत्त चक्रीतणा जी। नयन हरै गोवाल रे॥२८ प्रा०॥ कोकूहा कोयल करैं जी। किम राखी सरे प्राण। आहेडी सरताकोयोजी। ऊपर भमेंसींचाणरे॥२९ प्रा०॥ आहेडी नागेंडस्यो जी। बाणलग्यो सींचाण। कोकुहो ऊडी गयो जी। जोड नियत परमाणरे॥३०॥ प्रा०॥ सत्रहण्या संग्राममांजी। रानपड्याजीवंत। मंदिर

मांहें मानवीजो। राख्याही नरहंतरे ॥३१ प्रा०॥ (ढाल४ रागमारुणी मनोहरणी) ॥※॥ काल स्वभाव नियतमति कूडी। करम करै ते थाय। करमें नरय तिरिय नरसुर गति। जीव भवंतरै जाय ॥ ३२ ॥ (चेतन चेतज्योरे करम न छूटे कोय)। करमें राम वस्या वनवासे। सीता पामी आल। कर्में लंका पतिरावणनुं। राज्य थयो विसराल ॥ ॥ ३३ चे० ॥ कर्में कीडी कर्में कुंजर। कर्में नरगुणवंत। कर्में रोग सोग दुखपीडित। जनम जायै विलसंत ॥३४॥ चे०) करमें वरसलगें रिसहेसर। उदक न पामें अन्न। कर्में जिननें जोड गिमारै। खीलारोप्या कन्न ॥ ३५ चे०॥ कर्में एक सुख पाले बैसै। सेवक सेवै पाय। एक हय गयचड्या चतुर नर। एक आगलऊजाय ॥ ३६ चे० ॥ उद्यममानी अंधतणी परि। जगहींडै हाह्लतो। कर्मवली तेलहै सकल फल। सुख भर सेजै सूतो ॥ ३७ चे०॥ उंदर एकै कीधो उद्यम। करंडीयो करकोले। मांहे घणादिवसनो भूखो नागरह्यो डमडोले ॥ ३८ चे० ॥ विवरकरी मूषकतसमु खमां। दीये आपणु देह। मार्गलही वननागपधार्या। कर्म मर्मजोवो एह ॥ ३९ चे० ॥ (ढाल ५मी) ॥ तो चोढियो घण मानगजें (एहनी) ॥ ※ ॥ हिव उद्यम वादी भणें ए। ए च्यारे असमत्थतो। सकल पदारथ साधवाए। उद्यम एक समरत्थतो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवीए। स्युं नविसीऊै काजतो। रामें रयणायर तणीए। लीधो लंकाराजतो ॥ ४१ ॥ करम नियततें अनुसरै ए। जेहमां सत्वन होयतो। देवल वाघ मुखपंखियाए। पिडमै संताजो

यतो ॥ ४२॥ विण उद्यम किमनीकलेए। तिलमाहें थी ते लतो। उद्यमथोऊंचो चढ़े ए। जोवो एकेंद्रियवेलतो ॥४३ उद्यम करतां इकसमें ए। जेह नसीझे काजतो। ते फिर उद्यमथी झवेए। जो नवि आवे वाजतो ॥४४॥ उद्यमकरि ऊख्यां विनाए। नविरंधाये अन्नतो। आवीनपड़े कोलीयो ए। सुखमां खेपैजतन्नतो ॥४५॥ कर्मपूत उद्यमपिताए। उद्यमकीधा कर्मतो। उद्यम थी दूरे टलेए। जोउ कर्मनो मर्मतो ॥ ४६ ॥ दृढप्रहार हत्या करीए। कीधा पापअनंततो। उद्यमथी षट मासमांए। आप थया अरिहंत तो ॥४७॥ टीपे२ सरवर भरे ए। कांकरे२ पालतो। गिरजेहवागढ़नी पजेए। उद्यम सकत निहालतो ॥४८॥ उद्यमथी जलबिंदु ओए। करे पाहाणमां ठामतो। उद्यम थी विद्या भणें ए उद्यम जोड़े दामतो ॥४९॥ (ढाल६) एहिंमो किहां राखी एदेशो ॥✻॥ एपांचेही वादकरंतां। श्रीजिनचरणे आवे। अमीयरसे जिणवयणसुणीनें। आणंद अंगनमावैरे ।॥५०॥ (प्राणी समकित मतिमन आणोरे। नयएकांत मताणोरे ते मिथ्यामति जाणोरे। आंकणी)॥ एपांचे समदाय मिल्यां विण। कोईकाज न सीझे। आंगुल जोगे कवल तणीपर। जेबूझे तेरीझे रे ॥५१॥प्रा०॥ आग्रह आणी कोईएकनें। एह मांदिये वड़ाई। पिण सेनामिल सकल रण गण। जीतेसुभटलड़ाईरे॥५२ ॥ प्राणी०। तंतुसभावे पट उपजावे। काल क्रमें वणाई। भवतव्यता होयेंते नीपजे। नहीं तो विघन घणाई रे ॥ ५३ ॥ प्राणीस०। तंतुवाय उद्यम भोक्तादिक। भाग्यसबल सहकारी। एपांचे मिलसकलपदारथ। उतपत

जोवोविचारी रे ॥ ५४ ॥ प्राणी० । नियतवसें हलुकर्मथइनें निगोद थको नोकलियो । पुण्यें मनुज भवादिक पामो । सद्गुरुनें जई मिलियो रे ॥ ५५ ॥ प्रा० ॥ भवथितनो पर पाक थयो तव । पंडित वीर्य उलसियो । भव्यस्वभावे सिव गतिगामी । सिवपुरजइनें वसियोरे ॥५६॥ प्रा० ॥ वर्द्धमान जिन इणपरिवोनवै । सासन नायक गावो । संघसकलसुख दाई जेहथी । स्याद्वादरसपावोरे ॥५७ प्रा०॥ (कलस) इम धर्मनायक सुगति दायक वीरजिनवरसंथुण्यो । सयसतरसं वतवह्निलोचन वर्षहर्षधरो घणो । श्रीविजयदेव सुरिंदप टधर विजयप्रभ सुणिंदए । कीर्त्ति विजयवाचकसीस इणप रिविनय कहै आणंदए ॥५८॥ इति श्रीपञ्चसमवायस्तवनं समाप्तम् । ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ ※ ॥ थंभणपुर श्रीपासजिणंदो ॥ एहनी ॥※॥ सुम तिजिणंद सुमतिदातार । वंदुं मनसुध वारंवार । आणीभा व अपार । चवदे गुणथानक सुविचार । कहिस्यं सूत्र अरथ मनधार । पामें जिम भवपार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्या त कह्यो गुणठाणो । बीजो सासादन मन आणो । तीजो मिश्रवखाणुं । चोथो अविरत नाम कहाणो । देशविरति पंचम परमाणो । छट्ठोप्रमत्त पिछाणुं ॥ २ ॥ अप्रमत्त सत्तमसलहीजे । अट्ठम अपूरब करण कहो जे । अनिवृत्तिनाम नवम्म । सूक्षमलोभ दसम सुविचा र । उपशांतमोहनाम इग्यार । खीणमोहबारम्म ॥ ३ ॥

तेरम सयोगी गुणधाम । चउदमथयो अयोगी नाम । व रणुं प्रथम विचार । कुगुरु कुदेव कुधर्म्म बखाणें । तेह लक्षण मिथ्या गुणठाण । तेहना पंचप्रकार ॥ ४ ॥ ढाल२ सफल संसारनी ॥ ॥ जेह एकान्त नयपक्ष थापी रहै । प्रथम एकान्त मिथ्यामती ते कहै । ग्रंथ उत्थापि थापै कुमति आपणी । कहै विपरीति मिथ्यामती ते भणी ॥५॥ जैन शिव देवगुरु सङ्क नमें सारिखा । तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा । सूत्र नविसरद्‌हैं रहैं विकल्प बणें । संसयीनाम मिथ्यात चोथो भणें ॥ ६ ॥ समझ नहीं काय निज धंधरातो रहै । एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै । एह अनादि अनंत अभव्यनें । करिय अनादिथिति अंत सुभव्यनें ॥ ७ ॥ जेम नर खीर घृत खंड जिमनें वमें । सरस रसपाय वलि स्वाद केहवोगमें । चौथ पंचम छट्ठा गुणचढिनें पड़ै । कि गुहि कषाय वसिआय पहिलै अड़ै ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि षटआवली । सहीय सासाद नें थिति इसी सांभली । हिव इहां मिश्रगुणठाण तीजो कहै । जेह उत्कृष्ट अंतर महूरतलहै ॥ ९ ढाल३ बे करजोड़ीताम ॥ एहनी ॥ ॥ पहिला च्यार कषाय । श मकरि समकिती । कैतोसादि मिथ्यामती ए । एवेहिजलहै मिश्र । सत्य असत्य जिहां । सरद्दहणावे उंठतोए ॥ १० ॥ मिश्रगुणालयमांहि । मरणलहै नहीं । आउबंध नपड़ै नवो ए । कैतो लहै मिथ्यात । के समकित लहै । मतिसर खो गतिपरभवे ए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान । उदय करी लहै । मतिविण किहां समकि तपणो ए । ते अविरत गु

णठाण। तेत्रीससागर। साधिक थिति एहनी भणो ए॥१२॥ दया उपशम संवेग। निरवेद आसता। समकितगुण पांचे धरै ए। सद्ध जिन वचनप्रमाण। जिन सासनतणी। अधि क२ उन्नत करै ए॥ १३॥ कोईक समकितपाय। पुद्गल अरधतां। उत्कृष्टाभवमें रहै ए। कोईक भेदीगंठि। अंतर मझूरतें। चढतै गुण सिवपद लहै ए॥ १४॥ च्यारकषाय प्रथम्म। तिणवलि मोहनी। मिथ्यामिश्र सम्यक्तनी ए। सा ते प्रक्ततिजास। परही उपसमें। ते उपसम सम कितधणी ए॥ १५॥ जिणसाते त्त्वय कीध। तेनरत्ताथकी। तिणहीज भवसिव अनुसरै ए। आगलि वांध्यो आउ। तातें तिहां थकी। तीजै चोथै भवतरै ए॥१६॥ ढाल४ दूणपुर कंवलको दून लेसी॥ एहनी॥ ॥ पंचम देसविरत गुणठाण। प्रग टै चउकनी प्रत्याख्यान। जेण तजै बावीस अभक्ष। पाम्यो श्रावकपणो प्रतक्ष॥ १७॥ गुणइकवीस तिकेधिणधारै। साचावारै व्रत संभारै। पूजादिक षटकारज साधै। इग्यारै प्रतिमा आराधै॥१८॥ आरत रोद्रध्यान ह्वैमंद। आयो मध्य धरम आनंद। आठ वरसऊणी पुव्वकोड़। पंचम गुण ठाणें थिति जोड़॥१९॥ हिव आगे साते गुणथान। इक२ अंतर मझूरतमान। पंच प्रमाद वसै जिण ठाम। तेण प्रमत्त छट्ठोगुणधाम॥ २०॥ थिवर कलप जिन कलप आ चार। साधै षट आवस्यक सार। उद्यत चोथा च्यार कषाय। तेण प्रमत्त गुणठाण कहाय॥ २१॥ सूधोराखै चित्तसमाधै। धरमध्यान एकांत आराधै। जिहां प्रमाद क्रियाविघनासै। अपरमत्त सत्तमगुण भासै॥२२॥ (ढाल५

नदी यमुनाके तीर उडै दोय पंखीया ॥ एहनी ॥ ॥ पहिलै अंसे अष्टम गुणठाणा तणों। आरंभे दोयश्रेण सं खेपै ते गणों। उपशमश्रेणि चढै जेनरह्वै उपसमी। क्षपक श्रेणि क्षायक प्रकृति दशक्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम अपूरव गुण लहै। अष्टम नाम अपूरव करण तिणें कहै। सुकल ध्यानंनो पहिलो पायो आदरै। निरम ल मन परिणाम अडिगध्यानें धरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जाणियै। जिहां भाव थिररूपनिवृत्ति न जाणीयै। क्रोध माननें मायासंजलणाहणें। उदै नहीं जिहां वेद अवेद पणोतिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम लोभ कां इक शिव अभिलषै। ते सूखम संपराय दशम पंडित दषै। संतमोह इण नाम इग्यारम गुण कहै। मोह प्रकृति जिणठाम सह उपसम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणिचढ्यो जो काल करै कि णही परै। तोथायै अहमिंद्र अवर गतिनादरै। च्यारवार समश्रेणि लहै संसारमें। एकभवै दोयश्रेणि अ धिक न हुवै किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सोमसमी प हिलै पडै। मोह उदै उत्कष्ट अरध पुदगल रडै। खिपक श्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही। दशम थकी बारम्म चढै ध्यानें रही ॥ २८ ॥ (ढाल ६ एकदिन कोई मागध आयो पुरंदर पास) ॥ एहनी ॥ ॥ खीणमोहनामें गुणठाणो बारम जाण। मोहखपायो नेडोआयो केवल नाण। प्र गटपणें जिहां चारित अमल यथाख्यात। हिव आगे तेरम गुणथान तणी कहै वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकडी क्षयगई रहीय अघातीय एम। प्रकृति पच्यासी जेहनें जू

ना कापड़ जेम। दरसण ज्ञान वीरज सुखचारित पंच अनंत। केवल ज्ञान प्रगटथयो विचरै श्रीभगवंत ॥ ३० ॥ देखै लोक अलोकनी ठानी परगटवात। महिमावंत अठारे दूषणरहित विख्यात। आठेवरसे ऊणी कही इक पूरव कोड़ि। उत्कृष्टी तेरमगुणठाणें ए थिति जोड़ि ॥ ३१ ॥ कर सेलेसीकरण निरूंध्या मनवचकाय। तेण अयोगी अंतसमइ सङ्ग प्रकृतिखपाय। पांचे लघु अक्षर ऊचरतां जेहनो मान। पंचम गतिपामें सिवपद चउदम,गुणथान ॥ ३२ ॥ बीजे बारमें तेरमें मांहे नमरै कोइ। पहिलो बीजो चोथो परभवसाथे होइ। नारक देवनी गतिमांहे लाभै पहिलाच्यार। धुरला पांच तिरी मांहि मणुं ए सर्व्वविचार ॥ ३३ ॥ (कलश) ॥ इम नगर बाहड़मेरमंडण सुमति जिण सुपसाउलै। गुणठाण चवद विचार वरण्यो भेद आगमनें भलै। संवत्तसतरैसै छत्तीसैं श्रावणवदि एकादसी। वाचक विजय श्रीहरष सानिध कहै मुनि इम धर्म्मसी ॥३४॥ इति श्रीचतुर्दशगुण स्थानविचार स्तवनं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ अथ नवतत्व भाषागर्भित स्तवनलि ॥

॥ ※ ॥ दुहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें। सिद्धसरि उवझाय। साधु सकल प्रणमो करी। प्रणमो श्रीगुरु पाय ॥१ करस्युं हुं नवतत्वनो। गाथा भासा रूप। मंदबुद्धिगुरुसानिधै। कहिस्युं सुगमसरूप ॥२॥ सूरतीमहीनानीदेशी ॥ जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आसवसोय। संवर निज्जर बंध मोक्ष एनवततहोय। चवद चवद बायाल बयासी बलि

बायाल । सत्तावन बारै चौ नव क्रमभेद निमाल ॥१॥ इग दु ति चौविह पणविह छव्विह जीव कहाय। चेतन लखथा वर वेदै गई करणें काय । एगिंदी सखम वादर ए दोजिय ठाण। सन्नि असन्नि पणिंदी बिति चौरिंदी आण ॥२॥ एम गपज्जत्ता अपज्जत्ता चवदै होय। अनुक्रम जीवठाण ए सूलप्रकृर्प्या सोय । नाण दंसण चारित वीरज तप तिमउव योग । एषद्लक्षण लक्षत जीवद्रव्य इह लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जत्ती तीन। सासोसास भाषा मन षट्ए अनुक्रम लीन । च्यार एगिंदी पंचपज्जत्ती विगलें जोय । पंच असन्नि सन्निनें षट्पज्जत्ती होय ॥४॥ इंद्रिय पांच उसास आऊ बल एदसप्राण । च्यार छ सात आठ ए गिंदी विगलैं जाण । असन्नि सन्निपंचिंदीनें नव दस क्रम थाय। प्राणां थी जे विप्रयोग जियमरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्मा धम्म आगास तीनूंना तिण तिणभेद । काल इगमइग आगल पुग्गल च्यार विछेद । खंधा देश पएस परमाणू चव दअजीव । धम्मा धम्म पुग्गल नभ काल ए पांचन जीव ॥६॥ चलणसहाई धम्मों थिरसंठाण अधम्म । अवगाहैं पूरणगल तौ नभपुग्गलधम्म । समयावलिय मऊत्त दीह पषमासनेंसा ल । पल्योपम सागर उस्सप्पिणि सप्पणी काल ॥ ७ ॥ षट् इग दो सगसग सगखट् इग अंक गिणाय । एगमऊत्तें आ वलिसंख्या सूल कहाय। तीन सात बलि सात तीन जसा सेंमाण । केवलनाणी भणियो एह मऊत्त प्रमाण ॥८॥ सा ता उच्चगोय मणुसुरदुग पंचिंदिजाय। पांचशरीर आदिम तिसरीर उवंगकहाय। आदिसंघैण संठाण चौवर्ण अगुरु

लड़ होय। परघ उसास तेम वलि आतपनें उज्जोय ॥ ६॥ सुभखगई निम्माण तसादिदसु नीमाल। सुरनरतिरिआउ तित्थंकर पुण्य बयाल।। तस बादर पज्जत्त पत्तेय थिर सुभसोय। सुभग सुसर आदूज्ज जसैं तसदसको होय॥ १०॥ नाणांतरायदसक नवबीजा नीच असाय। मित्थ थावरदश नारगतिक पचवीस कसाय। तिरियं चदुग एकिंद्री विति चौरिंद्रीतिय। कूखगई उपघा अपसत्थ वणचौभेय ॥११॥ प्रथम संघयणविना संघैण तेमसंठाण। एमबयासी प्रकृत पापततनो ए जाण। थावर सुहम अपज्ज साहारण अथिरैगेय। असुभ दुभग दूसर णाइज्ज अजस दसलेय॥ १२॥ पण चौ पण तिय इंदि कसाय अव्वय तिम जोग। बायालीस सेषपचीस क्रयासंयोग। काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप। प्राणातिपात आरंभ की परिगहियानो लाप॥ १३॥ माया प्रत्यय मिछादंसण वत्ती तेम। अपचक्खाण की दिट्ठ पुट्ठ पाडुच्चियजेम। सामंतोपनवणिय नेसत्थि सहत्थैं जेह। आण्णापनकी वेयारण अणभोगा तेह॥ १४॥ अणवकंखपच्चय ना उ वर्अगी समुदाय। प्रेम द्वेष इरियावही किरिया एंकहि वाय। सुमति गुपति परिसह जइधम्म भावण चारित्त। पण तिग बावीस दस बारै पण संवरतत्त॥ १५॥ इरिया भाषा एषणा सुमती ना भेद होय। आदान भंड उच्चार निक्खेवण पांचे जोय। मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती तिण जाण। हिव आगैं बावीस परीसह कहुं हित आण॥ १६॥ भूख पिपासा सीत उसन डांसा निरवत्थ।

अरति जोषा चरित्रा नैषिद्या सिज्झासत्त। अक्कोस वह जायण अलाभ रोग तिणफास। मल सक्कार पन्ना अन्नाण समत्त समास॥ १७॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव संजम सम्म। सत्य सौच अकिंचन बंभचेर जईधम्म। पढम अनित्य असरण संसार एग अनंत। असुचि आश्रव संवर निज्जर भवि भावो नित्त॥ १८॥ लोक सुभाव बोधदुरलभ इग्यारम गाव। धरम साधकअरिहंत ए बारे भावन भाव। सामायक छेदोपस्थापन बीजो सोय। परिहार विसुद्ध सूखमसंपराय चउत्थो जोय॥१९॥ तिम अहखाय चरित्त सरवजियलोगं प्रसिद्ध। जेह सुविधि आचरणें के जिय पाम्या सिद्ध। बारेविध निज्जर तत्व बंधना च्यार प्रकार। प्रकृति ठिई अनुभाग प्रदेशभेदें निरधार॥ २०॥ अणसण ऊणोदर इत्तिसंखेप रसनोत्याग। कायकलेस सल्लीनता बाहिरतप षड्भाग। पायछित्त विनय वेयावच्च तेमसिज्झाय। ध्यान काउसग अभ्यंतर तपषड्विध थायं॥२१॥ प्रकृति सुभाव काल अवधारण थितनिरबंध। अनुभागें रसतिम प्रदेसें दलनों संच। पट प्रतिहार धार तरवार मद्यवलि तेम। निगड चित्रकर कुंभकार भंडारो जेम॥२२॥ अनुक्रम आठनामना भाख्या जेजे भाव। तिम ज्ञानावरणादिक अड्ना एह सभाव। इम संखेपें विवरण कीना आठेतत्त। प्रस्तावे पाम्यो वरणवस्युं हिव मोखतत्त॥२३॥ संतपदें परूवणा द्रव्य नें खेतप्रमाण। फरसनकाल पांचमों छट्ठो अंतर जाण। भाग सातमो भाव आठ तिम अलपबहुत्त। एनव भेदें भावन करस्युं नवमोतत्त॥ २४॥

मोच्च एक पदथी छै जे पदे अविनाभाव । व्योमकुसमतिम ससिकसिंग जिम नहींय अभाव । एहवो जेपदमोच्चतेहनों मग्गणद्दार । विवरण कर वरणवसु सुणज्यो सुहम विचार ॥२५॥ गति नर इंदिय पंचेंदी कायें तसकाय। नाणें जेहनें केवल संयमथी अहखाय । दंसणमें इक केवलदंशण अवरनहोय । भव्य अभव्यें भव्यपणो परिपाकैजोय ॥२५ संमत्त चायक सन्नौअसन्नोयें सन्नि । अणहारी आहारी अणहारी उपन्न । द्रव्यप्रमाणें सिद्धजीव द्रव्यहोय अनंत । लोग असंखमभाग एगसिद्ध होय अणंत ॥ २६ ॥ फरसन खेत्र थी अधिककाल इगसिद्ध प्रतीत । सादि अनंतो थित जिन आगम थी सुविदीत । प्रतिपाता भावे नहिं सिद्धां अंतर जोय । सरब जीवथी भाग अनंतम सङ्घ सिद्ध होय ॥२७॥ दंशण नाण जेहनें बे ते चायक भाव । जीवत जेहनें वलिपरणामक भाव समाव । सङ्घथीथोड़ा वेद नपुंसकथी जे सिद्ध । तेहथी थी नर अनुक्रम संखगुणासुप्रसिद्ध ॥२८ जे जाणें जीवादिक नवतत्त तस सम्मत्त । अणजाणंतानें हुय जेसरधानेंरत्त । सरबजिणेसर मुखथीभाष्या वयण नहत्थी एबुद्धी जेहनें मनसंमत निच्चलतत्थ ॥२९॥ अंतरमहुरत एगमाल फरस्यो संमत्त । अर्द्धपुग्गलपरियट्टनियम संसार निमंत्त । उसप्पणिय अणंत इग पुग्गल परियट्ट । अनन्त अतीत अनागत तद्गुणवयणप्रगट्ट ॥ ३० ॥ इमनव तत्त भेदपडिभेदे विवरणकीध । श्रावकआग्रहकीन सहाय परण रसपीध । कोटिकगण सुभसदन प्रकास नदीउपमांन । श्रीजिनलाभ चंदकुल पूनमचंदसमान ॥ ३१ ॥ अग्याना

दिक करि वरसिंहैं वयरीसाष । रत्नराजमुनि ते वद्रसाषा नी पद्रिसाष । ग्यानसार ते पद्रिसाषानो सूषमद्राल । एनव पद नवरयण विनाणै गूंथो माल ॥ ३१ ॥ संवछर निश्चय नय विगई प्रवचनमाय । परमसिद्ध पद वामगतें ए अंकाभि णाय । माघकिसन ससिवार मेरुतिथ पूरनकोध । च्यार कथा तजि तत्वकथा भज नरमल्लोध ॥ ३२ ॥ इति नवतत्व भाषागर्भितस्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ दंडकनो भाषागर्भितस्तवन लि० ॥

॥ ॥ ऋषभादिक चोवीस नमि । तेहनो सूत्र विचार । दंडकरचनायें तवुं । संखेपै निरधार ॥ १ ॥ नरकासातदंड कपढम । असुरा नाग सुवन्न । विज्जु अगन दीवो दही । दिसि पवणें थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आऊ तेउवलि । वाउवणस्स इकाय । बि ति चौरिंदी गभ्भचर । तिरि नर तिहांमिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणिया । एदंडक चोवीस । एहना द्वारकहुं हिवै । गणनायें तेवीस ॥ ४ ॥ वीरजिणेसरनोदेशी ॥

॥ ॥ सरीर उगाहण संघयणें ससा संठाण । कोहाई लेसिंदिय दोसमुघायप्रमाण । दिठ्ठी दंसण नाण जोग तिम वलिउवयोग । उपपात वलि चवण ठिई पज्जत्ति प्रयोग ॥ १ केदिसिनोआहार सन्नि गइ आगइ वेय । दारगाहादुगनो ए अरथ कह्यो संषेव । हिव तेवीसद्वारनो रहिससमय अ नुसार । अलपरुचो ऊं तेहथी कहिसुं अलपविचार ॥ २ ॥ सूरतो महीनानोदेशी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ चौ गभ्भयतिरि वाऊ कायें च्यारसरीर । मनुषमें

पांच दंडग इकवीसरह्या तिसरीर। थावर च्यारनें जघन्य उक्कोसें देहप्रमाण। भाग असंख्यातम इग अंगुलनों परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो जघन्यस्वभावक अंगुलभागसंख्यात। उक्कोसें पणसे धणु नारगनें विख्यात। सुरनोंसातहाथगब्भय तिरिवणसयकाय। जोयणसहस साधक इक सहस अनुक्रमथाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगाऊ बेइंदी जोयणबार। एगजोयण चौरिंदी देह ऊंचै आकार। आरंभकालें वेक्रियदेहनो ए परिमाण। भागएक इकआंगुलनो संख्यातम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधकइकलाष जोयण इगलाष। नवसै जोयण तिरजंचनें एसूलैसाष। साभावकथी दुगणो नारकवेक्रिय काय। एकमहूरत नारय नरतिर च्यार कहाय ॥ ४ ॥ सुरनें पन्नरग उक्कोस विउव्वणकाल। विगलसंघयणी थावरसुरनारक नीमाल। गब्भयनरतिरनें षट्विगलनें छेवट्ठएक। सरवजीवनें च्यार दसे सण्णायें लेष ॥ ५ ॥ नर तिरनें षट् सुरनें समचौरंससंठाण। हुंडगइग नारग विगलेंद्री सूलप्रमाण। नाणाविह धय सूइ मसूरनो चंद्र आकार। वणसइ वाउ तेऊ भू बुदबुद अप्पाकार ॥ ६ ॥ सऊनें च्यार कसाय गब्भय षट् नरतिरि होय। वेमाणिय नारग तेउ वाउ विगलविकहोय। जोयसि तेऊलेसा सेसरथानें च्यार। दार इंद्रियनो सुगम तेहनोस्यं विसतार ॥ ७ ॥ समुदघातसग नरनें पण गब्भयतिरि देव। नरग वायुनें च्यार सेसनें तीनु भेव। दिट्ठीदोय विगलमें थावरनें मिथ्यात। सेसमें तीनदिट्ठि जिम प्रवचनमें विख्यात ॥ ८ ॥ थावरबितिनें एक अचक्षु दंशण होय। चौरिंदी तेचक्षु अच

कव दंसणहोय । मनुजनें च्यार सेस दंडगमें दंसणतीन ।
नाण अनाण तीन सुर तिर नारगनें तीन ॥ ९ ॥ थावरदोय
अनाण विगल दो नाण अनाण । गब्भय मणुनें तीन अना
णनें पांच नाण । सुरनारग एकादश तिरनें तेरै जोग । मनु
जनें पनरै च्यारविगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥ वाउकायनें
पांच तीन थावरसंयोग । मनुजनें बार नरग तिर देवनें नव
उपयोग । विगलदुगे पण षट्चौरिंदी थावरतीन । उववाय
दूग चवण दारदोनुं समकीन ॥११॥ एग समे संख्यात असं
ख्याचवणपपात । गब्भयतिरि विगलेंदी नारय सुरनीख्यात।
मणुआ थावर वणसइ संख असंख अणंत । मणुजअसन्नि
असंखचवंत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावीस सात तीन दस
बरस सहस उक्किट्ठ । वणसई च्यारनें तीन दिवस तेउनें
जिट्ठ । नर तिर तीनपल्य सुर नारग अयरतेतीस । व्यंतर
पल्य अधिक लख बरष पल्प जोईस॥१३॥असुरादिक दशनें
दूक सागर अधिको आय । देसेंऊणादोयपल्पनो नवेय ।
निकाय । विगलनें बारबरस गुणचास दिवस छम्मास । अं
तमऊत्त जहन्न पुढवाई दसरास ॥ १४ ॥ भुवनपती नारग
व्यंतर दस बरस हजार । पल्य तेना अंस वेमाणिय जो
इसधार । सुर नर तिरि नारगनें षटथावरनें च्यार । विग
लनें पंचपज्जत्ती ए अट्ठारमदार ॥१५॥ सरब जीवनें होय
छए दिसनो आहार । होय न होय पंचादिकदिस ए सब
मझार । दीहकाल की चौविहसुरनारगतिरजंच । विगल
नें हेउपएसा सन्नि रहित थिरपंच ॥ १६ ॥ गब्भयमणुजनें
दीहकालकी सन्ना होय । केइक आचारज कहै दिट्ठिवाय

थीदाय। निश्चय पज्जत्तापंचिंदीतिर नर जेह। चौविह देवांमांहे आवी ऊपजे तेह ॥१७॥ संखाउ पजत्त पंचिंदी तिरि नर तेम। पज्जत्ता भू दग पत्तेयवणस्सेई जेम। एसरबे में निश्चे सुरनी आगति हुंति। पज्जत्त संख गब्भयतिरि नर सगनरके जंत ॥१८। नरक उद्वरत्या नर तिर ऊपजे नहुवे सेस। भू अप वणस्सईमें नरगविण उवजे असेस। पुढवाई दसपयमें भू आऊ वण जंति। पुढवाई दसपयमें तेऊ वाऊ उववंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊ नोगमण पुढवीपट नवमै हुंत। पुढवाई दसपदमें विगलजावंत आवंत। सहुमें तिर गति आगति मणुआ सहुमें जाय। तेउ वाऊ थी मरीनें जीव मनुज नविथाय ॥ २० ॥ थी पुरसे चौविहसुर तिरि नर तीनूवेद। थावरविगल नारकनें एक नपुंसक भेद। पज्जत्तामणु वादरअगन वेमाणिक तेम। भवण नरग व्यंतर जोइस चौ पण तिरएम ॥ २१ ॥ वेइंद्री तेइंद्री पृथवीनें अपकाय। वायुवणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवायं। हे जिन ए सहु भाव में पाम्या वार अनंत। तेहनो अनुक्रम गणितां किमहीन आवें अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विण सहु दंडगमें ते गति संयोग। लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्मप्रयोग। सुरमें पिण दंसण लहि विरतनपामी मूल। ते सुरजात सहावे देसविरत प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरज देस आरज कुल सुद्धसगुरु उपदेश। तेह थी तुहदंसणनो किंचित पाम्यो लेस। धारक तारक कारक वारक दंसण देव। आतमगुणसंसार समत्त कम्मसयमेव ॥ २४ ॥ खरतरगच्छ भट्टारक [श्रीजिनलाभ

सुरिंद । रत्नराजमुनि सीस तेहना पद अरविंद । रत्नमक रंदें लीणो ग्यानसार तसुसोस । तेणतव्या तेवीसद्वार दंडग चौवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेमचंद निरधार । पोष मास पषऊजल सातमनें सोमवार । श्राव क आग्रहथी एकीनो अलप विचार । शुभ चौमासोकर जैपुरनगर मझार ॥ २६ ॥ ॥ इति चतुर्विंशति दंडक स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ जीवचार भाषागर्भित स्तवनलि ॥

॥ ॥ (दुहा) ॥ भुवनप्रदीपक वीरनमि । किंचित जीवसरूप । कहिसु पूर्वाचार्य जिम । बालबोध गुरुरूप ॥ १ (देशो सूरतो महीनानो) ॥ एगमुगति बीजा संसारी जीव दुभेद । सत्ताभिन्नैं सिद्ध अनंते रूप अभेद । संसारी थाव रदुग तिम त्रस दोय प्रकार । भू अप वाऊ तेऊ वणस्सई थावरधार ॥ १ ॥ फिटकरयण मणि विद्रुम हिंगुल वलिहरि याल । मणसिल पारो सुवरण आदिधातु नीमाल । सेढी वन्नी अरणेटो पालेवोपाषाण । भोडल तूरी ओस भूमि पाहण जेखाण ॥ २ ॥ सुरमो लूणजात ए पुढवीकाय विछेद । भूमि आकास ऊस हिम करग आऊना भेद । हरितघास ऊपर जे जलकण भूंहर तेम । कोय घणो दधि अप्पकायपिण पाहण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा झाला भोभर तिम उलकापात । असणि कणग विद्युतादिक अगनजीव विख्यात । उब्भामग उक्कलिका मंडल वलि सुद्धवात । घण तणु वाऊ भेदें ख्यात ॥ ४ ॥ साखा मुद्ध गुंज तिम घण तणु वाऊ भेदें ख्यात

रण पत्तेय वणस्सइ जीवदुभेय। एग सरीर अनंत जीव साधारण नेय। कांदा अंकुर कूंपल फूलण वलि जंबाल। भुंफोड़ा अद्दत्तिय सरवे जे फलनाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथलो थेगपालंको साग। गुपतसिरा सांधा गांठा भाजै समभाग। काटो डाल भुंमिमें रोप्यां पल्लव थाय। जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरीरें एगजीव जे ते प्रत्येक। फल डाल फल मूल काठ वीजै जिय एक। वणपत्तेय विना जे पांचे पुढवी काय। स्थल लोगमें व्यापक अंत मुहुत्तँ आय ॥७॥ सूखमथी ते नियमा दिट्ठी निजर नहोय। लोकालोक प्रकासथकी वलि अलप न कोय। कवड़ी संख गंडोला लड़िगा लटनी जात। चंदन का अलसी मेहर जोंका बिच्छात ॥ ८ ॥ माय बाहा कमपौरादिक वेइंद्री होय। गोमी माकण जूआ कीड़ा कीड़ी दोय। दीपक इलो घीवेली गोगीड़ा जात। चरमजूका गादहिया गोबर कृम उतपात ॥ ९ ॥ धान कीड़ा जिमचोर कीड़ा गोवालो तेह। इलो कंथुक इंद्रगोप तेइंद्री एह। वीछू ढंकण भमरा भमरी इंद्री च्यार। तीड़ा माखी डांस मछर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवड़ डोला मांकड़िय पतंग इत्यादिक भेद। नारक तिरि मणु देव पंचेंद्री च्यार विछेद घम्मा वंसा सेला अंजण रिट्टा ख्यात। मघा माघवई नारग एनामें सात ॥ ११ ॥ जलचारी थलचारी नभचारी तिरजंच। मछ कछ सुसुमार मगर गाहा जलअंच। चौपय उरपरि भुजपरिसाप भुचारीतेय। तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रमलेय ॥१२॥ खेचर चरम रोमपंखी चमचेड़

कपोत। मनुजलोक थी बाहिर समुग विगय पंखहोत। सरबे जल थल खचर समुछम गम्भय दोय। कम्म अकम्म भूमि अंतरद्दीवा मणुजोय॥ १३॥ असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अट्ठ। जोइस पंच वेमाणिय दुविहा सुत्ते दिट्ठ। पनरै भेदे सिद्धकह्या एजीव प्रकार। तनुमानादिक हिव एहनो कहसुं अधिकार॥ १४॥ देह आउषो एक सरीरें थितनो मांण। प्राण जेहनें जेता तिम वलि योन प्रमाण। अंगुल भाग असंख सहू एगिंदी काय। जोयण सहस साधिक पत्तेय वणस्सइकाय॥१५॥ वि ति चौरिंदी अनुक्रम उक्किट्ठ देह ऊंचास। बारै जोयण तीनगाऊ इग जोयण भास। सत्तमना नेरइया धनु सयपंचप्रमाण। तेह थी अरध अरध ऊणा अनुक्रम रयणाण॥ १६॥ जोयण सहस गब्भधर मच्छउरगनो देह। गाऊ धणुहपऊत्त भूचारी पंखो जेह। खेचर नवधणु उरग भुयंग जोयण नव होय। नव गाऊ परिमाण समुछम चौपय सोय॥१७॥ षट गाऊ ऊंचास चउप्पय गब्भयमांण। तीनकोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमाण। भवण व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसानंत। सात हाथ उक्कोसें ऊंचपणें तणु कंत॥१८॥ सनतकुमार माहेंद्रैषट ब्रह्म लांतक पांच। शुक्र सहस्सारें उक्कोस च्यार करवांच। आणत प्राणत आरण अच्युत हाथें तीन। नव ग्रैवेयक दोय पंचानुत्तर इगलीन॥ १९॥ बावीस सात तीन दश वरस सहस्सें आय। भू आऊ वाऊ वण तीन दिन तेऊकाय। बार वरस गुणचास दिवस तिम वलि छम्मास। अनुक्रम बेइंद्री तेइंद्री चौरिं

द्री रास ॥ २० ॥ सुर नारग तेतीस अयर उक्कोसें आय।
चौपय तिरिय मनुजनों तीन पल्योपम थाय। जलचर
उरपर भजपर उक्कोसें पुव्व कोड़। पंखीनें इगभाग अ
संख पल्यनो जोड़ ॥ २१ ॥ सरब सूखम साधारण समूछम
मणुजेह। जहन उक्कोसें अंतमुहुत्त नियम थिति तेह।
इम उगाहण भाख्यो संखेपें अधिकार। जेवलि इत्थविसेस
विसेस सूत्र सूं धार ॥ २२ ॥ असंख उसप्पणि सङ्क एगिंदी
आपणी काय। उपजैचवै अनंत साधारण वणसई काय।
संख्याता संवछर विगल आपणी देह। सात आठभव पंचिं
द्री तिरिमणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उदवरतो जीव नर
ग नविजाय। देव चवीनें ते वलि देवपणें नविथाय।
इंद्रीय सासोसास आऊ बल ए दसप्राण। च्यार छ सात
आठ इग दु ति चौरिंद्रिय जाण ।२४॥ सन्नि असन्नि पंचिं
दी दस नव अनुक्रम जोय। प्राण थकी जे विप्रयोग जिय
मरणं होय। भीमसायर संसार अपार अनंतीवार।
भमियो जीव धरमविण जोण असीनेंच्यार ॥ २५ ॥ सग स
ग सग सग दश चवदे दो दो दो लाख। च्यार च्यार तिम
च्यार चवदलख सूवे साख। भू अ तेऊ वाऊ वणपत्तेय
साधार। बि ति चौ पण तिर नारग सुर नर अनुक्रम
धार ॥ २६ ॥ काय न आय न प्राण न जोणी कुल नहीं
जात। सादि अनंत भंग जिन आगम थित विख्यात।
रोग न सोग न भोग जोग नही नारी लिंग। नहींय नपुं
सक पुरसतणा नहीं अंगउपंग ॥२७॥ नाण दरस चारित
वीरज ए च्यार अनंत। सिद्ध थया तेह थी सिद्धंते सिद्ध

कहंत इम ए जीव विचार गाथाथी भाषा रूप। श्रावक आग्रहथी मे कीनो सुगम सरूप॥ २८॥ खरतर गच्छ भट्टारक श्रीजिनलाभ सूरीस। रत्नराजगणि ग्यानसार मुनिसीसनगीस। संवत ससि रस वारण ससिहर धर निरधार। माघचौथ दिनकीनो जैपुर नगर मझार।२९॥ इति जीवविचार भाषागर्भित स्तवन संपूर्णम्॥ ॥

॥ समवसरण विचारगर्भित स्तवनलि॥

॥ ॥ (दुहा) श्रीजिन सासन सेहरो। जगगुरु पास जिणंद। प्रणमी जेहना पायकमल। आवी चोसठ इंद्र॥ १॥ तीर्थंकर आवै तिहां। तिगड़ो करै तयार। समकित करणी साचवै। एह कहुं अधिकार॥ २॥ करै प्रसंसा समकिती। मिथ्यात्वी होवै मूंक। सूर्य देख हरखै सहू। घणों अंधारै घूक॥ ३॥ ॥ ढाल वीर बखाणी एहनी॥ ॥ आप अरिहंत भले आविया जी। गा० अप्रठरह गंधर्व। समवसरण रचै सुरराजो। संखेपै ते कहुं सर्व॥ ४ आ०॥ भुवनपति वीसइंद्रें मिल्या जी। सोलह व्यंतरसार। जोइस दु दस वेमाणिय जुआ जी। चौसठ इंद्र सुविचार॥ ५ आ०॥ पवन सुरपुंज परमारजै जी। भूमि योजन समभाउ। मेघकुमर रचै मेघनें जी। करीय सुगंध छिड़काउ॥ ६ आ०॥ अगर कपूर सुभ धूपणाजी। करय श्रीअगन कुमार। वांणव्यंतर छिव वेगसुं जी। रचय मणिपीठकासार॥ ७ आ०॥ पुहपपंच वरण जरथ मुखेजी। वरष ए आसु

परिमाण । भवणवइ देव विगझो भलो जी । करय ते सुजाण सुजाण ॥ ८ आ० ॥ रचय गढ प्रथम रूपातणोजो । सोवनकांगरे सार । रविससि रयण कोसीसको जी । कनक नोबीय प्रकार ॥ ९ आ० ॥ रतन गढ रतननें कांगरे जी । रचयवेमाणि सुरराज । भलो त्रीजोगढ भीतरैजी । जीहां विराजै जिनराज ॥ १०आ० ॥ भींतऊंची धणु पांचसैजी । सवा तेत्रीस विस्तार । धनुषसै तेरगढ आंतरोजी । प्रोल पंचास धणु च्यार ॥ ११आ० ॥ दस पंच२ सिऊं गढतणोजी । पावझो वीसहजार । थाक श्रम नहींय चढतां थकां जी । एक कर उच्चविस्तार ॥ १२ आ० ॥ पंचधणु सहस पृथवी थको जी । उच्च रहै चिगढं आकास । ते हतल सऊ यथा थित वसे जी । नगर आराम आवास ॥ १३ आ० ॥ तोरण चिऊं२ दिस तिहां जी । नीलमणि मोरनिरमाण । दुसय धणु मध्यमणि पीठकाजी । उच्चजिण देहपरिमाण ॥ १४ ॥ आ० ॥ च्यार आसण तिहां चिऊं दिसैंजी । मोतीयें झाकझमाल । समविचकूण ईसाणमें जी । देव छंदो सुविसाल ॥ १५ आ० ॥ देवदुंदुभि नाद उपदिसैजी । जिनगुण गावसीतेह । अक्कजिम आइ सिर उपरें जी । गाजसी तेह गुणगेह ॥ १६ आ० ॥ (ढाल) सफल संसारनी ॥ ॥ पुव्वदिसि आसणें आइ बैसे पहू । सुरकृत चौमुखरूप देखै सहू । दीपैअसोक तरु बारगुण देहथो । देखि हरषै सहू मोर जिममेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि तिण छत्र सुविसालए । रूप चिऊं चिऊं दिसें चामर ढालए । योजन गामनी वाणि श्रीजिन तणी । भगवंत उपदिसैं बारपरषद भणी ॥ १८ । प्रदक्षिणा

रूपथी अगनिकूणें करी। गणधर साधवी तिम वेमाणीय सुरो। ज्योतषी भुवणनी विंतरी स्त्री पणें। नैरत कूंण जिन वाणि उभी सुणें। तिहुं तणा पति वाय कूणमें जाण ए। सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए। वारह परष दाम दमठेर ठाम ए। भूष तिष वीसरे सुणें करजोड़ ए ॥१९॥ पूठ भामंडल तेज प्रकास ए। जोयण सहस धज ऊंच आकास ए। झलहले तेज प्रभु म चक्र गगनें सही। महक सहु वारणें धूप घाणा सही ॥२०॥ वाहण वहिल सहुधरीय पहिलै गढै। होइ पग चारि नरनारि ऊंचा चढै। जिन तणी वाणि सुणि जीव तिरजंच ए। वैर तजि बीयगढ रहै सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुन्यवंत पुरषते परषद बारमें। सुणें जिन वाणि धनगणय अवतार में। चौविह देव जिण देव सेवा रचै। मणिमयी मांहिलो प्रोलमांहे वसै ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटलो वावि चौ आणीयै। विदसि चौकूण दोइ२ वखाणीयै। आठ जिहां वाविजल अम्रत जेम ए। स्नान पानें वपु निरमल हेम ए॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अपराजिया। मध्य कंचण गढे प्रोलवसंतिया। तुंवर पुरुष खट्टंग अर्चिमाल ए। रजत गढ प्रोलना एह रषवाल ए ॥२४॥ पहिल लिगड़ो नऊअ जिण पुरग्राम ए। देवमहर्द्धिक रचै तिणठाम ए। करण वारवार नहीं कार ण कोइ ए। आठ प्रातीहारज ते सही होइ ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी ऋद्धि दीठीजीयै। तेह भन धन्य अव तार पायो तिये। मास अरदास सुणी वंछित पूरज्यो। शिव मुझ ताहरो सुद्ध दरसण ऊज्यो ॥ २६ (कलश) ॥ इम

समवसरणे ऋद्धिवरणो सह जिनवर सारखो। सरद है ते लहे सुद्ध समकित परम जिन अमपारखो। प्रकरण सिद्धांत गुरु परंपर सुणी सऊ अधिकार ए। संस्तव्यो पासजिणंद पाठक धर्म वर्द्धन धार ए ॥ २७ ॥ इति समव सरणविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥ ⁂ ॥

॥ अथ सिज्झायमाला लिख्यते ॥

॥ ⁂ ॥ ढंढण रिषजीनें वंदणा ॥ हुंवारी ॥ उतकृष्टो अणगाररे॥ हुंवारी लाल॥ अभिग्रहलीधो एहवो ॥हुं०॥ लेस्युं सुद्ध आहार रे ॥ हुं० ॥१॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी ॥हुं०॥ नमिले शुद्ध आहार रे ॥हुंवा॥ मूल नले अणसऊतो ॥हुं०॥ पंजर कीधो गातरे ॥हुं०२ ॥ढं०॥ हरिपूछ श्रीनेमिनें ॥हुं०॥ मुनिवर सहस अढाररे ॥हुंवा॥ उतकृष्टो कुण एहमें ॥हुं०॥ मुझनें कहो विचाररे ॥ हुंवा०॥ढंढ०३॥ ढंढण अधिको दाषियो ॥हुं॥ श्रीमुखनेमि जिणंदरे॥हुं०॥ कृष्ण ऊमाह्यो वांदवा ॥हुं॥ धनजादवकुल चंदरे ॥ हुं।४।ढं० ॥ गलियारें मुनिवर मिल्या ॥ हुंवा०॥ वांद्या कृष्णनरेसरे ॥ हुं०॥ कोणही मिथ्यात्वी देखनें ॥ हुं०॥ आण्यो भाव विसेसरे ॥हुं।५।ढं॥ मुझघर आवो साधजी ॥हुं॥ ल्यो मोदक छै सुद्धरे ॥हुं०॥ मुनिवर विहरीनें पांगुस्या ॥ हुं० ॥ आया प्रभु जीनें पासरे ॥ हुं।६। ढं॥ मुझलबधे मोदक मिल्या ॥ हुं ॥ कहोने तुम्हे किरपालरे ॥हुं ॥ लबधनही बछ ताहरी ॥ हुं ॥ श्रीपतिलबधि निधानरे ॥ हुं।७।ढं० ॥ एलेवा जुगतोनही ॥ हुं॥ चाल्यापरठ

वाकाजरे ॥ ऊं ॥ ई टनिवाहें आइनें ॥ ऊं ॥ चूरै करम समाजरे ॥ऊं।८ढ॥ आणी चढती भावना ॥ऊं०॥ पाम्यो केवलनाणरे ॥ ऊं॥ ढंढणरिष मुगतें गया ॥ ऊं० ॥ कहै जिन हरष सुजाणरे ॥ ऊं०।८।ढं ॥ इति ढंढण मुनी सिज्झाय संपूर्णम् ॥　॥ ※ ॥　॥ ※ ॥

॥ अथ धन्नारिषी सिज्झायलि ॥

॥ ※ ॥ श्रीजिन वांणीरें धन्ना । अमीय समाणी मोरा नंदन । मनछैतो मानीरे नंदन ताहरें ॥ १ ॥ हुं अतिहो बैरागीरे धन्ना । धरमनो रागी मोरा नंदन । माहरो तो मन छोरे किम परचावसुं ॥२॥ दस दिसि दीसे रे धन्ना । तो विनसूनी।(मो०)। अनुमति देतांरे जीभ वहै नही ॥३॥ वत्तीसे नारीहो धन्ना । अतिही पियारी । (मो) । वाणी तो बोलें रे मधुर सुहामणी ॥४॥ वालकतो कामणी रे धन्ना । वय पिण तरुणी । (मो०) । गज गति चालेरे चाल सुहावणी ॥५॥ ए घरमंदिर धन्ना । ए सुख सज्या । (मो०) । को छिवत्तोसे धननों तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणोरे धन्ना । वय पिण जाणो । (मो०)। भोगवि लेज्योरे भोग सुहामणो ॥ ७ ॥ व्रत अतिदोहिलो रे धन्ना । नहीय सुहेलो । (मो०) । सुगमनही छैरे साधु कहावणो ॥८॥ घर घर भिक्षा हो धन्ना । गुरुतणी सिख्या ।(मो)। कहनो तो रहणोरे नही छै सारषो ॥६॥ इक वारें सुणोये हो धन्ना । आगम भणीये । (मो०) । जिनवर आंणोहो दुक्कर जोगछै ॥ १० बनवासे रहणा हो धन्ना । परीसह सहनो ।(मो)। कोमल

केसां रे लोच करावणो ॥११॥ साचो तें भाख्यो हो अम्मा । झूठन आख्यो (मोरी अम्मा)। दुक्कर मारग जननी दाषीयो ॥ १२ ॥ सुख अभिलाषी हे अम्मा । झूठन आषी । (मोरी अम्मा)। कायरमारग जननी दाषीयो ॥१३॥ एजगस्वारथी हे अम्मा । नहीं परमारथि ।(मोरी अम्मा)। वीर वखाण्यो रे परषदा सहु सुण्यो ॥१४॥ मेंइम जाण्यो हे अम्मा । वीर वखाण्यो । (मोरी अम्मा) । एधन जोवन आऊ थिर नहीं ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हे अम्मा । ढीलन कीजे । (मोरी) । जोषिण जाइसु फिर आवै नहीं ॥१६॥ अनुमति आपी हो अम्मा । जीव सुखपायो ॥ (मो०) ॥ संजम लीधोरे मनमां गह गह्यो ॥१७॥ छठ२पारणें हे अम्मा । विगय निवारण ॥ (मो०) ॥ वीरवखाण्यो सुर नरआगलें ॥१८॥ सुख संजम पालें हे अम्मा । दूषण टालै ॥ (मो०) ॥ अंग इग्यारह अ रथ हृदा भणें ॥ १९ ॥ संजम पाल्यो हे अम्मा । नवपरख वाद ॥ मो० ॥ माससंथारे हो सरवारथ सिद्धि लह्यो ॥ २० ॥ ॥ इति श्रीधन्नाकरष सीज्झाय संपूर्णम् ॥ ॥

॥ अथ कर्म्म सिज्झाय लिख्यते ॥

॥ ॥ देव दानव तीर्थंकर गणधर । हरिहर नरवर सबला । कर्म प्रमाणें सुख दुख पाम्यां । सबल हुवा महा निबलारे प्राणी । कर्म्म समो नहीं कोई ॥ १ ॥ आदी सर जीनें कर्म्म अटाह्या । बरस दिवस रह्या भूखा । वीरनें बारै वरस दुख दीधा । उपना ब्राह्मणी कूखेरे ॥ प्रा० । क० ॥ साठ सहस सुत मार्‍या एकणदिन । जोध जुवान नर जे

सा । सगर हुवो महापुत्रनो दुखियो । कर्म तणा फल श्रै सारे ॥ प्रा० ।३क०॥ बत्तीस सहस देसांरो साहिब । चक्री सनत कुमार । सोलें रोग शरीरमें उपना । कर्म कीयो तनु छाररे ॥ प्रा० ।४क०॥ कर्म हवाल कीया हरीचंदनें बेची सुतारा रांणी । बार बरस लगमाथे आण्यो । नींच तणें घरपांणीरे ॥ प्रा० । ५क०॥ दधिवाहन राजानी बेटी । चावी चंदनबाला । चौपदज्युं चोहटामें बेची । कर्म तणा ए चालारे ॥ प्रा० । ६ क० ॥ संभूम नामें आठमो चक्री । कर्मों सायर नाख्यो । सोलैं सहस जक्ष ऊभा देखै । पिण किणही नविराख्योरे ॥ प्रा० । ७ क० ॥ ब्रह्मदत्त नामें बारमो चक्री । कर्म्मैं कीधोआंधो । इमजाणी प्राणी येकांइ । कर्म कोई मति बांधोरे ॥ प्रा० ।८ क० ॥ छप्पन कोड़ यादवनो साहिब । क्रष्ण महाबल जाणी । अटवी मांहि मूवो एक लड़ो । बिल२ करतो पाणीरे ॥ प्रा० । ९ क० ॥ पांड़व पांच माहा झूझारा । हारीद्रोपदा नारी । बारे वरस लग वन रडबड़िया । भमिया जेम भीख्यारी रे ॥प्रा०। १० क० ॥ बीस भुजा दस मस्तक हुंता । लषमण रावण माख्यो । एक लड़ै जग सहु नर जीत्यो । ते पिण कर्म सुं हाख्यो रे ॥ प्रा० । ११ क० ॥ लषमण राम महाबलवंता । अरु सतवंती सीता । कर्म प्रमाणें सुख दुख पाम्या । बीतक बहु तसबीता रे ॥ प्रा० । १२ क० ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा । बेटै बांध्योमुसकै । धरमी नरनें करम धकायो । करमसुं जोरन किसकारे ॥ प्रा० ।१३ क०॥ सतीय सिरोमणी द्रोपदा कहीयै । जिन सम अवरन कोई । पांच

पुरुषनी ऊइ ते नारी । पूरव कर्म्म कमाई रे ॥ प्रा०। १४ क०॥ आभानगरी नो जे स्वामी। साचो राजा चंद । मांई कोधो पंखी कूकडो । कर्म्म नाख्यो ते फंदरे ॥ प्रा० । १५ क० ॥ ईसरदेवनें पारवती नारी । करता पुरष कहावै । अहिनिस महिल मसाणमें वासो । भिख्या भोजन खावै रे ॥ प्रा० । १६ क०॥ सहस किरण सूरज परितापी । रात दिवसरहै अटतो । सोलकला ससीधर जगचावो । दिन२ जायें घटतो रे ॥ प्रा० । १७ क० ॥ इम अनेक खंड्या नर करमें । भांज्या ते पिण साजा । ऋद्धि हरष करजोडीनें वोनवै । नमो२ करम महाराजा रे ॥ प्रा० । १८क०॥ इति श्रीकर्म्मसिज्झाय संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥※॥

अथ शीता सिज्झाय लि० (

॥※॥ जल जलती मिलती घणीरे । झालो झाल अपार रे । सुजाण सीता । जाणें केसूफूलियारे लाल । राता खेर अङ्गाररे ॥ सु० १ ॥ धीज करै सीतासती रे लाल । सील तणें परिमाण रे ॥ सु०॥ लखमण राम खुसीथया रे लाल । निरखे राणो राणरे ॥ सु० २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल । पावक पासें आयरे ॥सु०॥ ऊभी जाणें सुरङ्गना रे लाल । अनुपम रूपदिखायरे ॥सु०३॥ नर नारी मिलीया घणा रे लाल । ऊभा करैं हाय हाय रे ॥सु०॥ भस्म ऊसी हुश आगमें रे लाल । राम करै अन्याय रे ॥सु०४॥ रावव विन वांछो ऊवे रे लाल । सुपनेंही नहीं कोयरे ॥सु०॥ तो मुझ अगन प्रजालज्यो रे लाल । नहीं तो पाणी होय रे ॥

सु० ५ ॥ इम कह पैठी आगमें रे लाल । तुरत अगनथयो नीररे ॥सु०॥ जाणेंद्रह जलसुं भर्योरे लाल । झीले धरम सुधीररे ॥सु० ६॥ देवकुसम बरषा करै रे लाल । एह सती सिरदार रे ॥सु०॥ सीता धीजै ऊतरी रे लाल । साषभरैसं सार रे ॥सु०७॥ रलियायत सहुको थयारे लाल । सगलै थया उछरंगरे ॥ सु० ॥ लखमण राम खुसीथयारे लाल । सीता सील सुरंगरे ॥सु०८॥ जगमांहिं जस जेहनो रे लाल । अविचलसील कहाय रे ॥ सु० ॥ कहै जिन हरष सतीतणा रे लाल । नितप्रणमो जे पाय रे ॥ सु० ९ ॥ इति सीतास ती सिज्झाय समाप्तम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

अथ अनाथी ऋष सिज्झाय लि० ।

॥ ※ ॥ श्रेणिकरय वाडीचढ्यो । पेखियो मुनो एकंत । बर रूपकांते मोहियो । राय पूछै रे कहो बिरतंत ॥१॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथीनि ग्रंथ । तिणमें लीधोरे साधजीनो पंथ ॥(श्रे)॥ इण कोसंबी नगरी बसें । मुझपिता परवल धन्न । परवार परै परवर्यो । हुं हुं तेहनो रे पुत्ररतन्न ॥श्रे० २॥ इक दिवस मुझ वेदना । ऊपनी ते न खमाय । मात पिता सहु झूरी रह्या । तोही पिणरे समाधि नथाय ॥ श्रे०३ ॥ गोरडी गुणमनउरडी । उरडी अवला नार । कोरडी पीडामें सही । नहो कीधीरे मोरडी सार ॥ श्रे० ४ ॥ बहु राजवैद्य बुला इया । कीधला कोडि उपाय । बावना चदन ले इया । पिण तोहो रे दाह नविजाय ॥ श्रे० ५ ॥ वदना जो मुझ उपसमें । तो लेवु संजम भार । इम चिंतवतां वे

हन गई । व्रत लीधोरे हरष अपार ॥ श्रे० ६ ॥ जगमांहि को केहनो नही। तेभणी हुं रे अनाथ। वीतरागनो धरम वाहरो । कोइ नहीरे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ७ ॥ करजोडि राजा गुणस्तवे । धन धनतूं अनगार । श्रेणिक समकित तिहां लहै। वांदीपुं हचैरे नगरमझार ॥ श्रे० ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां । कर्मनो टूटे कोडि । गणि समय सुंदर तेहना । पायवांदे रे वे करजोडि ॥ श्रे० ९ ॥ ※ ॥ इति अनाथी मुनी सिज्भाय समाप्तम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ अथ प्रतिक्रमण सिज्भायलि ॥

॥ ※ ॥ करि पडिकमणो भावसुं । दोयघडी सुभ ध्याण ॥ लालरे ॥ परभवजातां जीवने । संवल साचो जाण ॥ लालरे ॥१॥ (करिपडिकमणो भाव सुं०)॥ श्रीमुख वीरसमुच्चरे । श्रेणिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाखखंडी सोना तणी । दीये दिन प्रतिदान ॥ला०॥ २ (करि०) ॥ लाखवरस लग तेहनें । इम दीयै द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायक नी तुला । नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ (करि०) ॥ सामायक परसाद थी । लहीयैं अमरविमान ॥ ला० ॥ धरमसींह मुनिवर कहे । मुगति तणो ए निदान ॥ ला० ॥ ४ (करि) ॥ इति प्रतिक्रमण सिज्भाय संपूर्ण ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ अथ सप्तव्यसन सिज्भायलि ॥

॥ ※ ॥ सात विसननारे संग मतां करो । सुण तेहनो सुविचार ॥ विवेकी ॥ सात नरक नारे भाई सातेई । आपे

दुक्ख अपार ॥ बिवेकी । १ सा०॥ प्रथम जूवानेंरे बिसनपड्यां थकां । पांडव पांच प्रसिद्ध ॥ बिवेकी ॥ नलराजा पिण इण बिसनें पड्यो । षोइ सहु राज रिद्ध ॥ बि० २ सा ॥ दूसरे मांस भच्चण अवगुण घणां । करै परजीव संहार ॥ बि ॥ महा सतकनी नारी रेवती । नरक गई निरधार ॥ बि०३ सा०॥ तीजै मदरा पान बिसनतणी । चितधरी बलो चाह ॥ बि ॥ दीपायणरिष दुहव्यो जादवें । द्वारकानो थयो दाह ॥ बि० ४ सा ॥ चोथें बिसनें वेस्यावर बसे । लोकमें न रहै लाज ॥ बि ॥ कयवन्नादिकनो गयो काय दो । कुबिसनेंरे काज ॥ बि० ५ सा ॥ पाप आहेड़ कुबिसन साचवे । प्राणी हणीयें प्रहार ॥ बि ॥ मारी म्रगली श्रेणिक नृप गयो । पहिली नरक प्रसिद्ध ॥ बि० ६ सा ॥ छट्टे चोरीनें बिसनें करी । जीव सहैं दुक्खजोर ॥ बि ॥ मुंज देवराजायैं मारीयो । चावो ऊंडक चोर ॥ बि० ७ सा ॥ परस्त्रीय संगत कुबिसनसातमें । हाणि कुजस बहु होय ॥ बि ॥ राणो रावण सीता अपहरी । नास लंकानोरे जोय ॥बि० ८सा॥ इम जाणी भव्य तुमे आदरो ॥ सीख सुगुरनीरे सार ॥बि॥ इण भव परभव आणंद अति घणा । कहै भ्रमसी सुख कार ॥ बि०६ सा॥ इति सात बिसननी सिज्झाय संपूर्णम ॥

॥ अथ उपदेस सिज्झायलि ॥

॥ ❋ ॥ दमका नांहि भरोसा शाहै । करले चलनें का सामान ॥ द० ॥ तन पिंजरसें निकश जाइगा । छिनमें पंछी प्राण ॥ द० १ ॥ लख चोरासी जोनन भटक्यो । उपनों ग

रभा थान। सवानव मास बस्यो अंधकूपमें। मनुष्य रूप सनमान ॥द०२॥ उत्तम कुलमें जनम लियो है। सुख में खाण अरुपाण। भीरपड्यां तेरे कोइयन साथी। साथी दान अरुध्यान॥ द०३ ॥ आसा त्रिशनां बिकथा निद्रा। कुमता रूपनिधान। दिन २ बधै पापकी संगत। ब्यापैं क्रोध अरुमान॥ द०४ ॥ चलते फिरते सोवत जागत। करतखाण अरुपाण। छिन२ आयु घटतहै तेरो। होत देहकोहाण॥ द०५॥ माल मुलक अरु सुखसंपत में। होय रह्या गलतान। देखत२ बिनस जायगा। मतकर मान गुमान॥द०६॥ झूठा सब यह जगतपसारा। नारी बिषकी खान। माया ममता आदिके बैरी। इनसैं कहा पहचान ॥द०७॥ पांचूं चोर मुसैं घर तेरा। इन की खोटी बाणि। अठवैरी तेरे संगफिरतुहै। मोह बड़ा सुलतान ॥ दा८॥ कोइ रहणें पावे नहो जगमें। यह तु निहच्चे जानि। अजहूं टांमि समझि कुटलाई। मूरख नर अज्ञान ॥ द।९॥ भाई बंध अरु सजन संबंधी। राखे तेरा मान। अंतसमें कोईकामन आवे। किसपै मान गुमान॥ द। १० ॥ जप तप सील पालो सुभ संगत। देह सुपात्रे दान। सेंहित साध चरण चितल्यावो। प्रभु भज तज अभिमान॥ द। ११ ॥ इति उपदेस सिज्झाय संपूर्णम्॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ बाहूबलजीनो सिज्झायलि ॥

॥॥ ईडर आंबा आंबली रे। ए देशी ॥॥ बाहूबल चारित लीयोरे। साचो धरिबैराग। भरतेसर इम बोनवे

रे । वार२ पाय लाग । हरष भर मुझसुं वोलज्योरे (थानें वावाजीरी आण । थानें ऋषभदेव जीरी आण । थेतो मकरो खेंचा ताण । थेतो माहरे जीवन प्राण) । हरष० । मुझ सुं वो । (आंकडी) ॥१॥ हुंतो भाई ताहरो रे । जेनें कीधो दोस । तो पिण थमज्यो भाई म्हारे । गरवा नकरे रोस ॥ ह० २ ॥ आवो बांह देई मिलांरे । जोवो आंख उघाड । वोलो मीठा वोलडारे । पुरो मननो लाड ॥ह०३ खोलो नाखुं तोडनेंरे । जिण कुलजाई वेढ । नाचो आयुध सालमें रे । ज्युं वांनण घर ढेंढ ॥ ह० । ४ ॥ भाभीनाउ लंभडारे । किमसंभलायेकान । जातां पांव वहेनहोरे । तुझ नें सुं कीरान ॥ह० । ५ ॥ तूं जीत्यो हुं हारीयोरे । देव भरे है साष । तुझ सरिखो जग को नहीं रे । मुझ सरिषाहै लाख ॥ ह । ६ ॥ माथै सूरज आवीयो रे । पसीनो सारो गात । वसो भोजन जीमियेरे । खारक दाख निवात ॥ह।७ तूं माहरे जीवन आतमारे । तुं होज माहरे वांह । दिस सूनी भाई वीनारे । आवोनें घरयांह ॥ह । ८ ॥ तिनांणू एकण मतेंरे । मुझनें लोभी जाण । ते सहु मुझनें परिहस्यो रे । ज्युं वरसाले ठाण ॥ह।९॥ तुं माहरे जीवन आतमारे । तुं होज माहरे वांह । दिस सूनो भाई विनारे । आवो नें घर जांह ॥ ह । १० ॥ वोलं वणाई वोलिया रे । भरतेसर महाराज । म्हायोना दांत जे नीकल्यारे । तेमा ठानवीजाय ॥ ह । १० ॥ अभिमानो सिर सेहरोरे । वाहू वल रिषराय । सीधा करमखपायनेंरे । विमलकोरत गुण गाय ॥ह।११॥ इति वाहूवलसिज्झाय संपूरणम् ॥

॥ अथ चेलणा महासती सिज्झायलि ॥

॥ ॥ वीरवांदी वलतां थकांजी । चेलणा दीठोरे निग्रंथ । राति वनमांहि काउसग रह्यो जो । साधतो सुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जो । सतीय सीरोमणि जाण । चेड़ा राजानी साते सुताजी । श्रेणिक सीयल परमाण ॥२वी०॥ सील ठंठार सवलो पड़े जो । चेलणा प्रीतम साथ । चारितीयो चीतमें वस्यो जो । सोवड़ि बाहिर रह्यो हाथ ॥ ३ वी० ॥ ऊवक जागी कहै चेलणा जो । किम करतो ह्रस्यै तेह । कुसती मनमांहिं ए कुणवस्यो जो । श्रेणिक पड्योरे संदेह ॥ ४वी० ॥ अंतेउर परो जालज्यो जो । श्रेणिक दीयोरे आदेस । भगवंत सांसो भांजियोजी । चमकियो चित्तनरेस ॥ ५ वी० ॥ वीरवांदी वलतां थकां जो । पैसतां नगर मझार । धुंवानो धोर देखी करी जो । जा जाहरे अभय कुमार ॥ ६ वी० ॥ तातनो वचन पाली करो जो । व्रतलियो अभय कुमार । समय सुंदर कहै चेलणा जो । पामियो भवतणोपार ॥ ७ वी० ॥ इति चेलणा महासती सिज्झाय संपूर्णम् ॥ ॥

॥ अथ वैराग्य सिज्झायलि ॥

॥ ॥ भूलोमन भमराकांइभमै । भमीयो दिवसनें रात । मायारो वांध्यों प्राणीयो । भमीयो परमल जात ॥ १ भू० ॥ कुंभ काचो काया कारमी । जेहना करोरे जतन्न । विणसतां वार लागै नही । निरमल राखोरे मन्न ॥ २ भू० ॥ केहना छोरू केहनां वाछरू । केहनां मायनै वाप । प्राणी जासे एकलो । साथे पुण्यनें पाप ॥ ३ भू० ॥ आसातोडूंग

र जेवप्नी। मरवोपगलांरै छेठ। धन संची संचकांईक करो। करवो देवनी वेठ॥ ४ भू०॥ लखपति ठवपति सव गए। गएलाखोंके लाख। गरभ करोरै गोषै वेसता। भए जलवल राख॥ ५ भू०॥ भवसायर जलदुख भर्यो। तिर वोठै रे जेह। विचमें वोह सवलो अठै। करमें वायनें मेह॥ ६ भू०॥ उलट नहो मारग चालवो। जायवो पहि ले रे पार। आगलि नहो हटवाणीयो। संवल लेज्योरे सा थ॥ ७भू०॥ मूरख कहै धन माहरो। धन केहनो नथाय। वस्त्रविना जाय पोढवो। लखपति लाकप्न मांय॥ ८ भू०॥ महमंद कहै वस्तु वोरीयै। जे कुछ आवैरे साथ। अपणो लाभउवारीयै। लेखो साहिव हाथ॥ ९ भू०॥ इति॥

अथ वाहुवलजी सिज्भायलि।

॥ ॥ राजतणा अति लोभीया। भरत वाहुवल भू भैरे। मूंठि उपाप्नी मारिवा। वाहुवल प्रतिवूझैरे॥ १ वीराम्हांरागजथकी ऊतरो। ब्राह्मी सुंदरी भासैरे। अट षभ जिणेसर मोकली। वाहुवलनें पासैरे॥ २वी०॥ (गज चढ्यां केवल नहोईरे ॥२ वी०॥ लोचकरी चारितलीयो। वलि आयो अभिमानोरे। लघु वंधव वांदुं नहो। काउसग्ग रह्यो सुभ ध्यानो रे॥ ३ वी०॥ वरस दिवस काउसग र ह्यो। वेलप्नियां वींटाणोरे। पंखीमाला मांप्नीया। सीतता प सूकाणारे॥ ४ वी०॥ साधवी वचन सुण्या इसा। च मक्यो चित्तमझारोरे। हय गय रथ में परिहर्या। पिण नविमुंक्यो अहंकारोरे॥ ५ वी०॥ वेरागे मन वालोयो। मूंक्यो निज अभिमानोरे। पांव उपाप्नी वांदिवा। ऊपनों

केवल नाणोरे ॥ ६वी० ॥ पहुंतो केवलि परषदा । बाहुब ल ऋषरायारे । अजर अमर पदवी लहै । समय सुंदर वंदे पाया रे ॥ ७ वी० ॥ इति बाहुबल सिज्झायसंपूर्णम् ॥

॥ अथ अरणकमुनी सिज्झायलि ॥

॥ ॥ अरणक मुनिवर चाल्यागोचरी । तह्नकेदाझै सीसो जी । पाय उबरांणारे बेलूपर जलै । तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ १ अ० ॥ मुखकमलाणोरे मालतीफूलज्युं । ऊभो गोखनें हेठोजी । खरै दुपहरैरे दीठो एकलो । मो ही माननी मीठोजी ॥ २ अ० ॥ वयण रंगीलेरे नयणे बे धियो । ऋषथंभ्यो तिणवारो जी । दासीनें कहै जाय ऊंतावली । ऊरिष तेह्नी आणो जी ॥३अ०॥ पावन कीजै रिषवर आंगणो । वहिरो मोदकसारो जी । नव जोवन रस काया कांइदहो । सफल करो अवतारो जी ॥४अ०॥ चंद्रावदनीरे चारित चूकव्यो॥ सुखविलसै दिन रातोजी । इकदिन गोखेरे रमतो सो गटे । तब दीठी निज मातो जी ॥ ५ अ० ॥ अरणक अरणक करतीमायफिरै । गलियैं गलियैं मझारो जी । कहि किण दीठोरे माहरो अरण लो । पूछै लोक हजारो जी ॥ ६ अ० ॥ उतर तिहां थोरे जननीपाय नम्यो । मनमें लाज्यो तिवारो जी । धिग् धिग् पापीरे माहरा जीवनें । ए हमें अकारज कीधो जी ॥ ७ अ० ॥ अगन धुपंतीरे सीला उपरै । अरणक अणसण कीधोजी । समय सुंदर कहै धनते मुनवरूं । मनवंछितफल सीधोजी ॥८ अ०॥ इति अरणक मुनिसिज्झाय संपूर्णम् ॥

गर्भाधान उतपतविचार वैराग्यसि लि० ।

॥ ॥ उतपत जोय जीव आपणी । मनमांह विमास । गरभावासे जीवड़ो । वसीयो नवमास ॥१उ०॥ नार तणी नाभीतलै । जिन वचनें जोय । फूलतणी जिम नालिका । तिम नाड़ीठै दोय ॥२उ०॥तसुतल जोनि कहीजियै । वरफूल समान । आंव तणी मांजर जिसो । तिहां मांस प्रधान ॥ ३उ०॥ रुधिरश्रवै तिहां मांसथी । रितुकाल सदीव । रुधिर शुक्रजोगै करी । तिहां उपजै जीव ॥ ४उ० ॥ जे अपावन पवनें करी । वासित दुरगंध । तिणथानक तूं ऊपनो । हिव हुई अंधमंध ॥५उ० ॥ नाड़ो वांसतणी घणु । भरीयै रूयाल । तातोलोह सिलाकतै । जालै ततकाल ॥ ६ उ० ॥ तिम महिलानो जोन में । छै नवलख जीव । पुरुष प्रसंगे तेसहू । मरि जायसदीव ॥ ७ उ० ॥ ऊपजै नरनारी मिल्यां । पांचेंद्री जेह । तेह तणी संख्या नहो । तजो कारज एह ॥ ८ उ० ॥ नवलख जीव टिकै तिहां । उत्कृष्टोवार । जीव जघन्य पणें टिकै । एक दोय त्रिण च्यारि ॥ ९ उ० ॥ जीव जघन्य तिहां रहै । महूरत परिमाण । बार वरसनो थिति तिहां । उत्कृष्टो जाण ॥ १० उ० ॥ तिहां गरभै कोइ जीवड़ो । जंपै जगदीस । फिर नर आवंतो रहै । संवतसर चोवीस ॥ ११ महिला वरस पिचावनें । कहीयै नीरबीज । पिचहत्तर वरसां पछै । थायै पुरुष अबीज ॥ १२ उ० ॥ जीमणी कूषे नर वसे । तिम वामे नारि । बीच नपुंसक जाणीयै । जिन वचन विचार ॥ १३ उ० ॥ हिव सामान्य पणें इहां । आ

ये। गरभावास। सातदिना ऊपरि रहै नरगत नवमास॥ १४ उ०॥ आठवरस तिरयंच रहै। उत्कष्टे काल। गरभावासै भोगव्यां। इम बहु जंजाल॥ १५ उ०॥ कारमण काये करलोयो। पहिलो आहार। शुक्र अनें सोणितत णो। नहो भूठलिगार॥ १६ उ०॥ परजापत पूरो नहो। तिहां विसवा वीस। तिण आहारै तू थयो। ऊदारक मीस॥१७ उ०॥ पवन अठै उदरै तिको। ऊपजावै अंग। अगनिकरै थिर तेहनें। जल सरस सुरङ्ग॥ १८ उ०॥ काठन पणें प्रथवी रचै। अवगाह आकास। पांचभूत शरीर में। इम करै प्रकास॥१९ उ०॥ वारै मछरत तां पछै। विलसै नरनारि। गरभतणी उतपति तिहां। नहो अवर। प्रकार॥ २० उ०॥ कलिल हुवै दिन सातमै। अरबुद दिन सात। अरबुदथी पेसी वधै। घनमांस कहात॥ २१ उ०॥ मांसतणी बोटी हुवै। अड़तालीस टांक। प्रथम मास जिनवर कहै। मनधरो निसंक॥ २२ उ०॥ सुथिर मांसवोजै हुवै। हिवै तीजै मास। करम तणें वसि ऊपजै। माता मन आस॥ २३ उ०॥ चोथै मासै मातना। प्रणमै सहु अंग। हाथ अनें पग पांचमे। तिम सुतकोसंग॥ २४ उ०॥ पित्त रुधिर छट्ठे पड़ै। सातमें इण संच। नव धमणी नस सातसै। पेसीसय पंच॥२५ उ०॥ रोमराय पिण सातमें। साढी तीन कोड़ि। उपजे जाणें केतलै। इम आगम जोड़॥ २६उ०॥ आठमै मासै नोपनो। इम सकल सरीर। ऊंधै सिर वेदन सहै। जंपै जिनवीर॥२७उ०॥ सोणित शुक्र सलेषमा। लघुनें वड़नीत। वात पित्त कफ

गरभथो । थाये नरनीत ॥ २८ उ० ॥ मात तणा सुहटो लगै । बालकनो नाल । रस आहार करै तिहां । आवै तत काल ॥ २९ उ० ॥ जननो लये आहार ते । जाय नाडो नाड । रोम इंद्री नख चख बधै । तिममोजीने हाड ॥३० उ०॥ सबह्न अंगै जलसै । सरबंग आहार । कवल आहार कर नहो । गरभै सुविचार ॥ ३१ उ० ॥ मास बीजै किण जोवनें । थायै ज्ञानविभंग । अथवा अवधि कही जीयै । तिण ज्ञान प्रसंस ॥ ३२ उ० ॥ कटक करैवैंक्रीयपणें । ऊठी नरकै जाय । को जिन वचन सुणी करी । मरी सुर पिण थाय ॥ ३३ उ० ॥ ऊंधैमुख गोडा होयैं । सहि तो बहु पीड । द्दष्टि आगलि विहुं हाथसुं । रहै मुट्ठीभींच ॥ ३४ उ० ॥ नरविण वस्त्र जलादिकै । ऊपजै आधान । अथवा बिहुं नारी मिल्यां । कह्यो गरभ विधान ॥ ३५ उ० ॥ कोई उत्तम चिंतवै । देखी दुख वास । पुन्यकरी तिम नीकलुं । नाऊं गरभावास ॥ ३६ उ० ॥ ऊंठकोडि चांपि सुई । कोई समकाल । तिणथी गरभै अठगुणी । सहै वेदन बाल ॥३७ उ० ॥ माता भूखी भूखीयो । सुखणी सुखथाय । माता सूती ते सुवै । परवस दिन जाय ॥ ३८ उ० ॥ गरभ थकी दुख लखगुणो । जामें जिनवार । जन्मथयां दुख वीसरै । धिग् मोह विकार ॥ ३९ उ० ॥ उपज्यो अशुचि पणै जिहां । मल मूत्र कलेस । पिंड अशुचि करि पूरीयो । किहां सुचि लवलेस ॥ ४० उ० ॥ तुरत रुदन करतो थको । जामै जिणवार । मात पयोधर मुख ठवै । पीयै दूध तिवार ॥ ४१ उ० ॥ दिन दिन दीसै दीपतो । करै रंग अपार ।

लाखकोड मातापिता। पूरै सुविचार ॥ ४१ उ० ॥ ओ ल इग्यारै नारिनें। नव नरनें जाण। रात दिवस वहिता रहै। चेतो चतुर सुजाण ॥४३ उ० ॥ सांत धातु साते त्व चा। है सातसै नाड। नवसै नाडी पिंडमैं। तिम तीनसै हाड ॥ ४४ उ० ॥ संधि एकसो साठहै। सतोत्तरसो मर म। तीन दोय पेसी पांचसै। ढांकीहै चरम ॥ ४५ उ० ॥ रुधिर सेरदस देह में। पेसाव सरीष। सेर पांच चरवी तिहां। दोय सेर पुरीष ॥ ४६ उ० ॥ पित्त टांक चोसठ अहै। वीरज वत्तीस। टांक वत्तीस सलेखमां। जाणैं जगदीस ॥ ४७ उ० ॥ इण परमाण थकी यदा। उंहो अधिको थाय। व्यापै रोग शरीर में। नवि चालै काय ॥ ४८ उ० ॥ पोख्यो पहिलै दाहकैं। इम वधियो। अंग। खान पान भूषण भला। करैं नवनवा अंग ॥ ४९ उ० ॥ हिव बीजै दसकै भणयो। विद्या विवध प्रकार। तीजे दसकै तेहनें। जाग्यो काम विकार ॥ ५० उ० ॥ लिण मानक हुं जपनो। तिणमें मन जाय। चोथै दसकै धन तणो। करै कोडि उपाय ॥ ५१ उ० ॥ पहुंतो दसकै पां चमैं। मनमें ससनेह। वेटावेटीपोतरा। परणावे तेह ॥ ५२ उ० ॥ छट्ठे दसके प्राणीयो। वले परवसथाय। जरा आवी जोवन गयो। तृष्णा तोही नजाय ॥५३उ०॥ आवै दसकै सातमें। हिव प्राणी तेह। वलभागो वूढोथयो। नारी नधरै सनेह ॥५४ उ०॥ आठमें दसकै डोसलो। पु लिया सहु दांत। कर कंपावे सिरधुणें। करै फोकट वात ॥ ५५ उ० ॥ नवमें दसकै प्राणीयो। तन सूकत जाय। सा

लै वचन बड़वां तणां । दिन झूरतां जाय ॥ ५६ उ० ॥ खाट पड्यो खूंखूं करै । सहु गालो देह । हालडुकमहा लै नही । दीयो परजन ठेह ॥ ५७ उ० ॥ आंख गलै अपु ड मिलै । पडे मुंहडै लाल । बेटा बेटीने वहू । नकरै सार संभाल ॥ ५८ उ० ॥ दसमें दसकै आवीयो । तब पूरी आय । पुण्य पाप फल भोगवी । प्राणी परभव जाय ॥ ५९ उ० ॥ दस दृष्टांतें दोहिलो । लह्यो नर भवसार । श्री जिन धरम समाचरो । पामो जिम भवपार ॥ ६० उ० ॥ चरण पणें जे तपतपै । पालै निरमल सील । ते संसार तरी करी । लहै अविचल लील ॥ ६१ उ० ॥ कोडि रतन कवडी सटै । कांइगमें रे गिंवार । धरम प्रखे पिण जीवनैं । नहीं कोई आधार ॥ ६२ उ० ॥ काया माया कारमी । कारमो परिवार । तन धन जोवन कारिमो । साचो धरम संभार ॥ ६३ उ० ॥ चवदै राज प्रमाणए । ठै लोक महंत । जनम मरण करि फरसियो । ते वार अणंत ॥ ६४ उ० ॥ आप सवारथिया सहू । नही केहनो कोय । विण स्वारथ अण पूजतां । सुत पिण वेरी होय ॥ ६५ उ० ॥ जरा न आवे जांलगे । जांलग सबल शरीर । धरम करो जीवतां लगै । होइ साहस धीर ॥ ६६ उ० ॥ आर जदेस लह्यो हिवै । लाधो गुरु संयोग । अंग थकी आलस तजो । करो सुकृत संयोग ॥ ६७ उ० ॥ श्रीनमिराय तणी परै । चेतो चित मांहि । स्वारथमा सहु को सगा । कोई किणरो नांहि ॥ ६८ उ० ॥ भोग संजोग तजी सहू । थया जे अणगार । धन धन तसु मातापिता । धन धन

अवतार ॥ ६९ उ० ॥ सुरतरु सुरमणि सारिखो । सेवो जिन धरम । जिणथी सुखसंपति वधैं । कीजे तेहीज कर्म ॥ ७० उ० ॥ तंदुल वेयाली अछै । एहनो अधिकार । तिण थी ऊधरनें कह्यो । नहीं झूठलिगार ॥७१ उ०॥ (कलस) इह जैनधर्म विचार सांभलि लीयैं संयम भार ए । परि सीहकेरा सदा पालैं नेमनिरतीचार ए। संसारना सुख सकल भोगवि ते लहै भवपार ए। श्रीजिन हरष सुसीस रंगै इम कहै श्रीसार ए ॥ ७२ उ० ॥ इति उपदेस इकत्त री संपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥अथ विजयसेठ विजयासेठाणीको चोढालियो लि०॥

॥ ❋ ॥ प्रह ऊठीरे पंच परमेष्टि सदा नमु । मनसूधै रे तेहनें चरणे नित नमु । धुरि तेहनें रे अरिहंत सिद्धव खाणिये । आचारजरे उपाध्याय मन आणियैं । (उल्लालो) आणीयै निज मन भाव सुद्धै उपाध्यायनमूं वली । जे पन रह करम भूमि मांहैं साधु प्रणमुं ते वली । जिम कृष्ण पक्षनें सुक्लपक्षवलि सील पाल्यो ते सुणो । भरतारनें स्त्रीविहूं तेहनो चरित भावैसुं भणो ॥ १ ॥ भरत क्षेत्रे रे समुद्र तीर दक्षण दिसै। कच्छदेसे रे विजय सेठ श्रावक वसै। सील व्रतरे अंधारा पक्षनो लियो। बाला पणैरे एहवो निश्चे मन कियो। (उल्लालो) मन कीयो एहवो तण नियै पक्ष अंधारै पालस्युं । ऊं सील निश्चै एह विरुद्ध विषय सेवा टालस्युं । इक अछै सुंदर रूप विजया नाम कन्या तेवली । तिण सुक्ल पक्षनो सील लीधो सुगुरु

जोगे मन रली ॥२॥ कर्म्मजोगेरे मांहो मांहिं तेबिहुं तणो शुभ दिवसै रे हुओ विवाह सुहामणो। तब विजया रे सोलै शृंगार भला करी। पिउ मंदिर रे पोहती मन उलट धरी। (उल्लालो) मन धरी उलट अधिक पहुती पिया पासै सुन्दरी। ते देखि हरषै सेठ बोलै सील निश्चो संभरी। मुझसील निश्चो पख अंधारै तेहना दिन तीन छै। ते नेम पालो सुकलपख्य हुं भोग भोगवसुं पछै ॥ ॥३॥ (चाल) इम सांभल रे विजया तब विलखी थई। पीउ पूछे रे किम चिंता तुझनें भई। तब विजया रे कहै शुक्ल पक्ष व्रत में लीयो। व्रत चोथो रे बाला पण नि श्चो कीयो। (उल्लालो) बाला पणें में कीयो निश्चो शुक्लपक्ष व्रत पालसुं। तो उभै पक्ष हिव सील पालो नियम दूषण टालसुं। तुम्हे अवरनारीपरणनें हिव सुक्ल पक्ष सुख भोगवो। कृष्ण पक्ष निज नियम पालो अभिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ तब वलतोरे तसु भरतार कहै इसो। ते छंनो रे विषया रसरे कालकूट विषह्व तिसो। ते छंनो रे सीलव्रत दोनुं पालस्यां। एहवात्तोरे मात पिता न ज णावस्यां ॥उ०॥ मात पिता जब जाणस्यै तब दिख्य लेसां धरदया। इम अभिग्रह लेइनें ते भाव चारित्रीया थया। एकल सज्या सयन करतां खड्गधारा व्रतधरै। मन वचन काया करी सूधो। सील बेउं आचरै ॥५॥(ढाल)॥ विमल कीवली एक। चंपा नयरीयै। ततखिण आवि समो सर्या ए आणी अधिक विवेक। श्रावक जिणदास। कहै विनय गुण परिवर्यो ए ॥६॥ सहस चोरासी साधु। मुझ बर

पारणो। करै मनोरथ तो फलै ए। केवल ज्ञान अगाध। कहै श्रावक सुणो। एह वातते नवि मिलैए॥७॥ किहां एतला अणगार। किहां वलि सूझतो। भातपाणी नही एत लोए। तो हिव तेहविचार। करो तुम्हे जिम तिम। फल अम्ह हुवै तेतलोए॥८॥ अछै हिवै कच्छदेस सेठ। विजय व ली। विजया भार्या तसु घरेए। भावयतो ग्रह वास। तेहनें भोजन। दीधां फल हुवै तेतलोए॥८॥ जिणदास कहै भग वंत। तेमांहि एतला। कुण गुण कुणप्रतठै घणाए। केवली कहै अनंत। गुण तसु सीलना। कृष्ण शुक्लपक्ष व्रत तणा ए॥१०॥(ढाल)३॥ दानकहै जगहूं वड़ो एहनी॥ केवलीनें मु ख सांभली। श्रावक तेजिनदासरे। कच्छदेसै हिव आवीयो। पूरै निजमन आसरे॥११॥ (धन२ सील सुहामणो)॥ सील समो नही कोई रे। सीलै देव सानिध करै। सील थी सिव सुख होई रे॥ ध०॥१२॥ सेठ विजय विजया भणी। भग तसुं भोजन देई रे। सहस चोरासी साधुना। पारणा नो फललेई रे॥ ध०॥१३॥ मात पिता पूछै तेहनें। एहनो सील वखाणरे। केवलीनें मुख जिम सुण्यो। तिम कहै ते गुणजाणरे॥ ध०॥१४॥ सहस चोरासी साधुनें। पारणो दीये कोई भायरे। कृष्ण शुक्लपक्ष दंपती। भोजननो फल थायरे। ध०॥१५॥ मात पिता जबजाणीयो। प्रगट हुओ संबंधरे। सेठविजय विजया लीयो। चारित्र अप्रतिबंधोरे ध०॥१६(ढाल)४॥ केवलीनें पासै। चारित्र लेई उदार। मन ममता मूंकी। पालै निरतीचार॥१७॥ आठ करमखपावी। पाम्यो केवल नाण। ते मुगतै पुहता। दंपती सुगण सुजा

या ॥१८॥ तेहना गुणगावे । भावे जे नरनार । तेवंछित सु खलहे । पहुचे भवनें पार ॥ १९ ॥ (कलस) इम कृष्णपक्ष नें शुक्लपक्षें सील पाल्यो निरमलो । ते दंपतीना भाव सुधे सदा सुभ गुण सांभलो । जिम दुरिय दोहग दूर जाय सुक्ख थाये बहुपरे । वलिसकल मंगल मनह वंछित । कुसल नित घरअवतरे । इति कृष्ण शुक्ल पक्ष चोढालियो संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

अथ इखुकार राजा भृगुप्रोहित चौ० ।

॥※॥ महिला में बेठी राणी कमलावती । झोणीतो उ ठे मारगषेह । जोवे तमासो इषुकार नगरमें । कोतिक उ पनो मनमें एह ॥१॥ [सांभल हे दासी आज नगरमें बह दो किम घणो] । कातो परधान सखीझझीया । काकेई लूं ख्या राजा गांव । काकोई गाडो धन नीसख्यो । गाझा रह्या छे ठामो ठाम ॥ २ । सां० । आ० ॥ नातो परधान वाइजो झझीया । ना कोई राजा लूंख्या गांव । भगूप्रो हित धनतजनीसख्यो । राजारे धन लेवा चाव ॥३॥ (सांभल हे राणी हुकमकरो तो कोइ गाझो इहां धरां) ॥ बेटांतो तिणरा संजम लीयो । वरज्योघणूं हो पिता मात । ते पिणचारित लेवा उमह्या । भगूजसा तिणे मोहलल मात ॥ ४ (सांभल हे० हुक०) ॥ इम सुण कमलावती राणी इम कहे । इहां तो कामी नहीं काय । सांभलने राणी माथोधुणीयो । राजारी ममता नही ठाय ॥ ५ सां० ॥ (दासी राजानें एवातां जुगतो नही) । महिलांसु राणी

कमलावती। आईछै राजा रै हजूर। वचन कहै राजानें आकरा। जाणें पोरस चढियो वोलै सूर॥ ६॥ (सांभल हो राजा ब्राह्मण छोड्यो रिधक्य आदरो)। कर जोड्यो कमला कहै। सांभलकंतसुजाण। ब्राह्मण जेरिध परहरी। ते तो घर मांहै मत आण। (सां०। राजा विरा०)॥ ७॥ एरिधसुं अपणें कांई घणो हुसी। राजारा मोटा छै भाग। वमिये आहाररीवांछा कुणकरै। कै कुतरा कै काग॥ ८ सां०॥ राजा०। ब्रा०। वमियो आहार पीछो नर भखे। नही परसंसवा जोग। भगू प्रोहित रिध तजनीसय्यो। थे भाण्यो छै आसीम्हांरे भोग॥ ९ (सां। राजा वि०)॥ संकलपियोड्यो पाछो किमलीयै। सांभलहो महाराज। दान दियो थे पहिलां हाथ सुं। ते पूठो लेतांनावै थानें लाज॥ १० (सां० राजा वि०)॥ निश्चैतो मरणो राजा इक दिनें। छोड्यानें काम विसेष। वीजो तो जगमें सरणो को नही। तारे जिनजीरो धम एक॥(११सां०राजा०)॥ सग लै जगतरो धन भेलो करी। थे घालो भंड्यारां रै मांहि। तो पिण तिसना राजा मापणी। लिपतन मनड्यो थाय॥ १२ (सां०वि०)। सांभलनें इषुकार राजा वोलीयो। तं भाषेनो वचन संभाल। का तनें राणी झोलो वाजीयो। का कोई कीधो मतवाल॥ १३॥ (सां० । राणी राजानें कर ड्यावचनवोलीये)। नांतो राजा जी झोलोवाजीयो। ना कोई कीधो मत वाल। ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो। वरजण आईहो भूपाल॥ (सां० राजा वि०)॥ १४॥ वलतो राजा राणीनें इम कहै। इस ड्यो वैरागण

थाय। अजूं तो निजरां आवै नहीं। तुं बेठी छै घर मांहि ॥(सां०। राणी राजानें कर०॥ १५॥ उत्तरबालीतो दीसै नही। इसडो आई छै मतवाल। ऊंतो घर छोडी नें नीसरी। थे पिण छोडो हो भूपाल।(सां०। राजा आग्या देवो तो संयम आदरूं)॥१६॥ रतन जडतरो राजा पींजरो। तिणमें सूवटो पडियो फंद। इण रीतै ऊं थांरै राजमें। रहिनें पासुं आणंद। (सां०राजा)॥ आग्या॥१७॥ सनेह रूपिया तांतण तोडनें। आरंभ धनसुं रहस्यां दूर। विरकत थई मोन पणें रह्या। थे पिण होयज्यो सूर॥ (सां० राजाइ०)॥ १८॥ दवतीलागी हो राजा वन मझे। हिरण सिसा बलै मांय। गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनें। मन मांहें हरिषित थाय। (सां० राजा राग द्वेषराभांगा लग रह्या)॥१९॥ मांहो मांहै खेधो ई सको। दस प्राण रहित कीधो काल। इसमणतो मनमें हरष पाम्यो घणो। जाणें ते माहरो मिटियो साल॥ [सां०। हो राजारागद्वेष] ॥ २० ॥ इण दिष्टांतें लोभी मूरष थका। मुरझरह्या भोगमांहि। पेलानें दुखियो देखी चेतै नही। लागी राग द्वेषरी लाय॥ (सा० रा जा राग०) २१॥ मांसरी बोटी पंखीरी चांचमां। नरपा सैपंषो पडियो आय। आमिष सम भोग छोडनें। चारित लेस्यां चित लाय॥ (सा०प्राणी)॥ संयमथी सुखपांमीयै॥ २२ ॥ महलमिलंगादिक अथिरछै। ते पांम्या छै आपणें हाथ। कामभोगमें रकत होय रह्या। ते तज होयस्यां नाथ॥ (सां० राजा सं०) २३॥ पांचे इंद्रयांरा भोगछोडनें। इ

अभावे हलकाथाय। सहज वाउ पंखीनी परें। विचरस्यां अपणी दाय॥ (सां० प्राणीसं०) २४॥ गिरध पंखी ज्युं भोग जाणज्यो। एह काम वधारे संसार। सापज्युं मोर थकी डरतो रहै। ज्युं पापसुं संकस्यां इण वार॥ (सां०। प्राणी सं०) २५॥ सोक तजी संतोषसुं। लेस्यां सं यमभार। ममता तजी समता ग्रहो। करस्यां उग्रविहार [सां० प्राणी सं०] २६॥ तन धन जोवन कारमा। चंचल वीजसमान। खिण२ खूटै आउखो। मूरख करै रे गुमान॥ [सां० प्राणी सं०]२७॥ हस्तीज्युं वंधण तोडनें। आप वनसुखे जाय। करम वंधण तूटै संयम लियां। सुणो कहुं महाराय (सां०राजा सं०) ॥२८॥ इम सुणनें इषुकारराजा चेतियो। छोडीनें मोटको राज। कायरनें तो ए तजतां दोहिलो। त्रिय सहित सार्या काज (सां० राणी सं०)॥ २९॥ मोहन राख्यो परिग्रह छोडकें। पायो जिन धरम सुजाण। तपस्या सगलांही आदरी। उत्कृष्टो पराक्रम आण। (सां० प्राणी सं०) ॥३०॥ सुधसंयम पालै सदा। सुमति गुपति दयाल। भमरानी परै करै गोचरी। रिष टालै दोष वयाल (सां० प्राणी सं०)॥ ३१॥ तारण तरण जिहाज छै। भव्यजीवनें उतारै पार। केवल ग्यान उपायनें। सुख पाम्यां श्रीकार॥ ३३॥ (सां० प्राणी सं०)। मोहनिवारी प्राणी समझनें। निरमल भावना भाव। छए जणा थोडा कालमें। मुगत विराज्या जाय (सां प्राणी सं०॥ ३४॥ राजा सहित राणी कमलावती। भृगु पुरोहित जसानार। प्रोहित भृगुना दोय दीकरा। सिव

सुख पाम्यो सार ॥ ३५ ॥ (सां० प्राणी सं०) इतिश्रो इषु कार राजा भृगु प्रोहितरो अधिकार संपूर्णम् ॥

---*---

॥ अथ उपदेसमाला पोसहसिज्झायलि ॥

॥*॥ जगचूडामणि भूउ । उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलउ । एगो लोगा इच्चो । एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवछ्छर मुसभजिणो । छम्मासे बद्धमाण जिणचंदो । इइ वि हरिया निरसणा । जएज्जएउव माणेणं ॥ २ ॥ जइता ति लोयनाहो । विसहइ बहुयाइं असरिसजणस्स । इयजीयं तकराइं । एस खमा सव्वसाहूणं ॥ ३ ॥ न चइज्जइ चाले उ । भइइ महावद्धमाण जिणचंदो । उवसग्ग सहस्सेहि वि । मेरु जहा वायगुंजाहिं ॥ ४ ॥ भद्दो विणीय विणउ । पढमगणहरो समत्त सुयनाणी । जाणंतोवितमत्थं । विम्हि यहियउ सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया । पयईउ तं सिरेण इछंति । इय गुरुजण मुह भणियं । कयंजलिउडेहिं सोयव्वं ॥ ६ ॥ जहसुर गणाण इंदो । गह गणतारागणा ण जहचंदो । जहय पयाण नरिंदो । गणस्सवि गुरू तहा णंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो । न पया परिहवइ एस गुरु उवमा । जंवा पुरउ काउं । विहरंति मुणी तहा सो वि ॥ ८ ॥ पडिरूवो तेयस्सी । जुगप्पहाणागमो मडुरवक्को गंभीरो धिइमंतो । उवएसपरो य आयरिउ ॥ ९ ॥ अप रिस्सावी सोमो । संगह सीलो अभिग्गहमईय । अविकत्थ णो अचवलो । पसंतहियउ गुरू होई ॥१०॥ कइयावि जिण वरिंदा । पत्ता अयरामरं पहं दाउं । आयरिएहिं पवयणं

वाविज्जइ संपयं सवलं ॥११॥ अणुगम्मए भगवई । रायसु
यज्जाजणस्स वंदेहिं । तहवि न करेइ मायं । परियत्तइ तं
तहा सुयं ॥ १२ ॥ इय दिक्खियस्स दमगस्स । अभिमुहा
पच्चवंदणा अज्जा । नेच्छइ आसणगहणं । सो विणउ सव्व
अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरिससय दिक्खियाए । अज्जाए अज्जदि
क्खिओ साहू । अभिगमण वंदण नमंसणेण । विणएण सो
पुज्जो ॥ १४ ॥ जम्हा पुरिसप्पभवो । पुरसवरदेसिओ पुरस
जिट्ठो । लोएवि पहू पुरिसो । किंपुण लोगुत्तमे धम्मे ॥१५॥
संवाहणस्स रण्णो । तइया वाणारसीइ नयरीए । कन्ना सहस्स
मब्भहियं । आसी किर रूयवंतीणं ॥१६॥ तहविय सा राय
सिरी । उल्लट्टंती न ताइया ताहिं । उयरट्ठिएण इक्केण । ताइ
या अंगवीरेण ॥१७॥ महिलाणसु बहुयाणवि । मज्झाउ
इह समत्त घरसारो । रायपुरिसेहिं निज्जइ । अन्नोवि पुरि
सो जहिं नत्थि ॥१८॥ किं परजण बहुजाणावणाहिं । वर
मप्प सक्खियं सुकयं । इह भरहचक्कवट्टी । पसन्नचंदोय दि
ट्ठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो । असंजम पएसु वट्टमा
णस्स । किं परियत्तियवेसं । विसं न मारेइ खज्जंतं ॥२०॥ धम्मं
रक्खइ वेसो । संकइ वेसेण दिक्खिओमि अहं । उम्मग्गेण पडं
तं । रक्खइ राया जणवउव्व ॥२१॥ अप्पा जाणइ अप्पा । जह
ट्ठिओ अप्पसक्खिओ धम्मो । अप्पा करेइ तं तह । जह अप्पसु
हावहं होइ ॥२२॥ जं जं समयं जीवो । आविस्सइ जेण जेण
भावेण । सो तंमि तंमि समए । सुहासुहं बंधए कम्मं ॥२३॥
धन्नो मणवइ सो । सोमसिरि पीइकर वायविज्झादिट्ठं । संवड्ढ
रक्खणोव्व । बाहुबलि सच्च विणिम्मंतो ॥२४॥ निवणमइवि

गप्पिय चिंतिएणं । सद्धं दव्वविचरिएणं । कत्तोमारत्तहियं । कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥२५॥ थद्धो निरोवयारी । अविणी उ गव्विउ निरवणामो । साहुजणस्स गरहिउ । जणेविवय णिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेणवि सप्पुरिसा । सणंकुमारव्व केइवुज्झंति । देहे खणपरिहाणी । जंकिर देवेहिं सेकहियं ॥ २७॥ जइता लवसत्तमसुर । विमाण वासीविपरिवडंति सु रा । चिंतिज्जंतंसेसं । संसारे सासयं कयरं ॥२८॥ कहतं भन्न इसुक्खं । सुचिरेणवि जस्स दुक्खमल्लिहियए । जंचमरणाव साणे । भव संसाराणु बंधिंच ॥ २९ ॥ उवएससहस्सेहिवि बोहिज्जं तो न बुज्झइकोई । जहबंभदत्तराया । उदाइनिव मारउ चेव ॥३०॥ गयकन्न चंचलाए । अपरिचत्ताइ रायल छीए । जीवासकम्म कलिमल । भरिय भरातो पडंति अहे ॥ ३१॥ वोत्तूणवि जीवाणं । सुदुक्कराइं ति पावचरियाइं । भ यवंजा सा सासा । पच्चाएसो हु इणमो ते ॥३२॥ पडिवज्ज ऊणदोसे । नियए सम्मं च पायवडियाए । तो किरमिगावइ ए । उप्पन्नं केवलं नाणं ॥३३॥ इति पोसह सिज्झाय समा प्ता उपदेश माला ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ राईसंथारा पोसह सिज्झाय ॥ ॥

॥ ॥ निस्सिही३ नमो खमा समणाणं । गोयमाईणं महामुणीणं । (नवकार३ करेमिभंते३ कहीये) । अणुजाणह चिट्ठिज्जा । अणुजाणह परमगुरु । गुणगणरयणे हिं मंडि असरीरा । बहुपडिपुन्ना पोरिसी । राईसंथारएठामि ॥१॥ अणुजाणह संथारं । बाहुवहाणेण वामपासेणं । कुकुड पाय

पसारण । अंतरंतु पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संडासं उवट्टंतेय काय पडिलेहा । दव्वाई उवउंगं । जसासनिरुंभ णालोयं ॥ ३ ॥ जइमेहुज्ज पमाउ । इमस्सदेहस्सि माइरय णीए । आहार मुवहि देहं । सव्वं तिविहेण वोसरिअं ॥४॥ आसव कसाय बंधणं । कलहा भक्खाण परपरीवाउ । अरइ रइ पेसुन्नं । माया मोसंच मिछत्तं ॥५॥ वोसिरिसु इमाइं मुक्खमग्ग । संसग्ग विग्घ भूआइं । दुग्गइनिबंधणाइं । अट्ठा रसपावट्ठाणाइं ॥६॥ एगोहं नत्थिमेकोवि । नाहमन्नस्स कस्स वि । एवं अदीणमणसो । अप्पाण मणुसासए ॥७॥ एगोमेसा सउ अप्पा । नाणदंसणसंजुउ । सेसामेबाहिराभावा । सव्वे संजोगलक्खणा ॥८॥ संजोग मूला जीवेणं । पत्ता दुक्खपरं परा । तम्हा संजोग संबंधं । सव्वं तिविहेण वोसरे ॥९॥ अरिहंतो मह देवो । जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो । जिणपन्नत्तं तत्तं । इयसम्मत्तंमएगहियं ॥१०॥ चत्तारिमंगलं । अरिहंता मंगलं । सिद्धामंगलं । साहूमंगलं । केवलिपन्नत्तोधम्मो मंगलं । चत्तारिलोगुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धा लोगुत्तमा । साहूलोगुत्तमा । केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणंपवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धेसरणं पव ज्जामि । साहूसरणं पवज्जामि । केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्झ । अरिहंता मज्झदेवया अरिहंता किस्ति अत्ताणं । वोसिरामिस्ति पावगं ॥१॥ सिद्धा यमंगलं मज्झ । सिद्धाय मज्झ देवया । सिद्धाय किस्ति अत्ताणं वोसिरामिस्ति पावगं ॥२॥ आयरिया मंगलंमज्झ । आय रिया मज्झदेवया । आयरिआ किस्ति अत्ताणं । वोसिरामि

त्तिपावगं ॥३॥ उवज्झाया मंगलं मज्झ । उवज्झाया मज्झ देवया। उवज्झाया किंत्ति अत्ताणं। वोसिरामित्तिपावगं ॥४ साहुणो मंगलं मज्झ। साहुणो मज्झदेवया। साहुणो किंत्ति अत्ताणं। वोसिरामित्ति पावगं ॥५॥ पुढवि दग अगणि मारु य। इक्किक्केसत्त जोणिलक्खाउ। वणपत्तेय अणंते। दस चउ दस जोणि लक्खाउ ॥१॥ विगलिंदिएसु दोदो। चउरोचउ रोय् नारय सुरेसु। तिरिएसु हुंति चउरो। चउदस ल क्खाय मणुएसु ॥२॥ खामेमि सव्वजीवे। सव्वे जीवाखमंतु मे। मित्तीमे सव्वभूएसु। वेरं मज्झ न केणयि ॥३॥ एवमहं आलोइअ निंदिअ। गरहिअ दुगुंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो। वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४॥ खमिअ खमाविअ मइखमिअ। सव्वहजीव निकाय। सिद्धहसाख आलोयणह मज्झहवैरनभाय ॥५॥ सव्वे जीवा कम्मवस्तु। चउदहराज भमंतु। तेमइं सव्वखमाविआ। मज्झवि तेहखमंतु ॥ ६ ॥ इति राई संथारा गाथा समाप्ता ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ सदाकालका अवश्य कर्त्तव्य (सामायक। पडिक्कमणा) (अठपुहरी तथा चो पुहरी पोसा) (देववांदणा) (पच्चक्खाण पारणा) (कल्याणीतपचिंतन) सबका अनुक्रमें शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥ ॥

॥ ॥ प्रणम्य श्रीजिनाधीशं। सद्गुरुं च विशेषतः। आह्नाहोरात्र कृत्यानि। लिख्यन्ते लोकभाषया ॥१॥ ॥

॥ ॥ अथ प्रथम प्रभातसामायकविधिलि ॥ ॥

॥ ॥ श्रावक दोय घडी रात रह्यां पोशहशाला में। अथ गुरुकनें। अथ घरनें एक प्रदेश (आवो) प्रथम दिवस संध्यायें पडिलेह्या वस्त्र पहिरी। गुरुरो योग न

ऊवे [तो] आप प्रमार्जित थानकैं। खमासमण पूर्वक तीन नवकार गुणी थापनाजी थापै (पछै) खमासमण देई कहै। इच्छाकारेण संदिसह भगवन। सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरुकहै पडिलेह) पछै इच्छंकहो। दूजो खमासमणदेई।मुहपत्ती पडिलेहै। उभो होय खमा०कहै। इच्छा० सं०भ०। सामायिक संदिसावूं [गुरु कहै संदिसावेह] पछै इच्छंकहो। वलेख०देनें कहै। इच्छाका०सं०भ०। सामायिक ठाउं (गुरु कहै ठाएह) पछै इच्छं कहो। खमासमण देई। अर्द्धावनतकाय उभो थको। तीन नवकार गुणी कहै। इच्छकार भगवन पसाउकरी सामायिकदंड उच्चरावोजी (गुरु कहै उच्चरावेमो) पछै। करेमिभंते सामाइयं(इत्यादि) सामायिकसूत्र। गुरुवचन अनुभाषणकरतो थको। तीनवार उच्चरो। खमासमण देई। इच्छाका०सं०भ०। इरियावहियं पडिक्कमामि (गुरुकहै पडिक्कमह) पछै इच्छं कहो। इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए (इत्यादि पाठकहै) इरियावही पडिक्कमी।।एकलोगस्सनोकाउसग्गकरी।णमो अरिहंताणं कही काउसग्गपारी मुखें प्रगट लोगस्स कहो। खमासमण देई इच्छा०सं०भ०। वैसणो संदिसावुं (गुरु कहै संदिसावेह) पछै इच्छं कहो। वले खमासमण देई। इच्छाका०सं०भ०। वैसणो ठाउं[गुरु कहै ठाएह] पछै इच्छंकहो।खमासमण देई। इच्छाका० सं०भ०। सिज्झाय संदिसाउं (गुरु कहै संदिसावेह) पछै इच्छं कहो। वलेखमासमण देई। इच्छाका सं।भ। सिज्झाय करुं (गुरुकहै करेह) इच्छं कहो। वलेखमासमण देई।उभो थको आठ नवकारसिज्झाय करै।तथा

शीतकालादि ऊवै (तो) खमासमण देई । इछाका०सं०भ०। पांगरणो संदिसावूं (गुरु कहे संदिसावेह) पछै इछं कही खमासमण देई। इछा०सं०भ० । पांगरणो पडिगाउं (गुरु कहे पडिगाएह) पछे इछं कहो । वस्त्रग्रहण करे । तथा सामायिकवंत (अथवा) पोसहीता श्रावकप्रतें (कोई) सामायिकवंत (अथवा) पोसहोतो श्रावक वांदै (तो) वंदामो एहवूं कहे ।-जो कोई बीजो वांदे (तो) सिज्झायं करेह एहवो कहे । इति प्रभात सामायिक ग्रहणविधि ॥१॥॥

॥॥ अथ राई प्रतिक्रमणविधि लिख्यते ॥॥

॥॥ [हिवै] एक खमा समण देई । इछाका०सं० भ०। चैत्यवंदनकरुं (गुरुकहे करेह) पछै इछं कही। जयउसामी२ (इत्यादि) जयवीय रायसूधी चैत्यवंदन करे । पछै खमासमणदेई । इछाका०सं०भ० । कुसुमिण दुस्समिण राई प्रायश्चित्त विसोहणत्थं काउसग्ग करुं (गुरु कहे करेह) पछै इछं कही। कुसुमिण दुस्समिण राई प्रायश्चित्त विसोहणत्थंकरेमि काउसग्गं॥ अन्नत्थूससिएणं (इत्यादिकही) (४) लोगस्सनो काउसग्ग। चंदेसु निम्मलयरा। सूधी चिंतवो । णमो अरिहंताणं कहो। काउसग्गपारी मुखै लोगस्स कहै जो रात्रें मोटको गुणसंबंधी दूषणलागो ऊवै (तो)काउसग्ग मांहें। सागरवर गंभीरा । सूधी चिंतवीये (इतिसंप्रदाय:)।

॥॥ किहां इक पहिलां कुसुमिण दुस्समिण काउसग्ग करी । पछै चैत्यवंदन करवो कह्योछै । पिण परमार्थ एक होजछै । पछैं पडिकमण वेलासीम सिज्झाय ध्यानकरै।

॥॥ हिवे पडिकमण ठायवानो अवसर ऊवां। १खमासमण

देई (श्रीआचार्यजीमिश्र) कहीवांदीये। २खमासमणदेई (श्रीउपाध्यायजीमिश्र) कही वांदीये। ३ खमासमणें। जंगम युगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपुज्य जी का नाम कही वांदीये। ४ खमासमणें। सर्व्वसाधूजीकुं वांदीये॥ इम च्यार खमासमणें पडिक्कमणो ठावो। इच्छकार समस्त श्रावको वांदूं (कही) गोडा लीये बैसी। मस्तक नमावी। दोय हाथे। मुंहपत्ती मुंहआगें देई। सव्वस्सवि रा इय (इत्यादि कहे) पिण इच्छाकारेण संदिसह इहां (इसो नकहे) पछे शक्रस्तवकही। ऊभो थई। करेमि भंते सामा इयं। सावज्जं जोगं पच्चक्खामि (इत्यादि कही) इच्छामि ठाइउं काउसग्गं। जोमे राइउ (इत्यादि पाठ भणी) तस्सु त्तरी। अन्नत्थूससिएणं कही। चारित्र शुद्धिनिमित्तें॥१ लोगस्सनों काउसग्गकरी (पारी) दर्शन शुद्धिनिमित्तें। लोगस्स कही। सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं करेमि काउसग्गं। वंदणवत्तियाए (इत्यादि भणी) १लोगस्सनो काउसग्ग करी (पारी) ज्ञानातीचार शुद्धिनिमित्तें। पुक्खर वरदी वड्ढे। (कही) सुयस्स भगवउ करेमि काउसग्गं। वंदणवत्ति याए (इत्यादि कही) काउसग्ग करै। काउसग्गमांहें। आजूणा चौपुहरी रात्रि मांहें। जोकोई जीव विराध्या होय। सात लाख पृथ्वीकाय। सातलाख अप्पकाय। सात लाख तेऊकाय। सातलाख वाऊकाय। दसलाख प्रत्येकवनस्पती काय। चौदे लाख साधारण वनस्पतीकाय। दोय लाख बेइंद्री। दोयलाख तेइंद्री। दोयलाख चौरिंद्री। च्यार लाख देवता। च्यार लाख नारकी। च्यार लाख पंचेंद्री

तिर्यंच । चौदैलाख मनुष्य । एवं च्यारगति चौरासी लाख जीवायोनि मांहे । जिके में जीवहण्या ह्वै । हणायाह्वैं हणतां प्रतें भला जाण्या ह्वै । तेसरवे मनवचन कायायें करी मिछामि दुक्कडं ॥✻॥ प्राणातिपात । म्रषावाद॥ अदत्तादांन मैथुन । परिग्रह । क्रोध । मान । माया । लोभ । राग द्वेष । कलह । अभ्याख्यान । परिपरीवाद । अरति । रति । पैशुन्य । माया मोस । मिथ्यात्व सल्य । एअट्ठारै पापस्थान सेव्या ह्वैं । सेवराव्या ह्वैं । सेवतां प्रतें भलाजाण्याह्वै । तेसह्न मनवचन कायायें । करी । मिच्छामि दुक्कडं ॥ ✻ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पोथी ठवणी कवली नवकार वाली देवगुरु प्रतें आसातना कीधी होय । पनरै करमादाननो आसेवना करी होय । राजकथा । देशकथा । स्त्री कथा । भोजनकथा । करी होय । अण्यछुइं परिनिंदा करी होय । अनेरो जेकोइ पाप कीधो करायो अनुमोद्यो । ते संभरै नसंभरै । तेसवे अतीचार आलोयणामांहि आलोयस्यूं ॥✻॥ एहवो मनसें चिंतें । (अनें एनावैतो) आठ नवकार चिंतवीवै । पछै काउसग्ग पारी । सिद्धाणं बुद्धाणं (कही) संडासा प्रमार्जन पूर्वक वेसो (मुहपत्ती पडिलेहे) पछै वांदणा दे (ते इम) अविग्रह बाहिर ऊभो थको । आधो नमी । इच्छामि खमासमणो । वंदि०नि० । अणुजाणह । मेमिउग्गहं (इतरो कही) भूमि प्रमार्जतो थको । निस्सही कही । कांइक अवग्रह मांहि पेसी । संडासा प्रमार्जी । ऊकडूवेसो । डावेहाथ मुहपत्ती लेइं । डावे कान थी जिमणा कान लगें निलाड पूंजी । मुहपत्ती आगे मेलही ।

लेहनें मध्यभागे। गुरुचरण कल्पना करी। अहो कायं (इत्यादि आवर्त्त करी) क्यु हिक ऊंचो नमी। मस्तकै अंज ली करी। गुरुसांम्ही दृष्टिराखी। खमणिज्जो भेकिलामो (इत्यादि पाठ कहे) पठै। फेर जत्तासे। (इत्यादि आवर्त्तन करी) ऊभो थई। पाछै पगे भूमि पूंजतो। अवग्रह बाहिर स्वस्थानें आवौ। आवस्सियाए (इत्यादिपाठ) सर्व कहै बीजो वार वले इम हीज करै। (पिण) अवग्रह बाहिर न नीकलैं। तिहां ऊभोजसर्वपाठ कहै। अनें आवस्सियाए पद नकहै। (इम सर्व जाणिवूं) पठै अवग्रहमांहि रह्यां कहै इच्छाका०। सं०। भ०। राइयं आलोवूं (गुरु कहै आलो एह) पठै इच्छं आलोएमि जोमेराईउ (इत्यादि पाठ ऊच रतो) काउसग्ग मांहें चिंतव्या। रात्रिसंबंधी अतीचार। गुरु समचें आलोवे। पठै। सव्वस्सवि राइय (इत्यादि पाठकहै) तिहां इच्छाका०। सं०। भ० एपद कहिवै करी। आलोया अतीचार नों प्रायश्चित्त मांगै (गुरु कहै पडिक्क मह) पठै। इच्छंतस्समिच्छामि दुक्कडं (कहो) संडासा प्रमार्जी आसणें बेसी। जीमणो गोडो ऊंचोराखी। डावो गोडो नीचो करी (एहवूं कहै) भगवन् सूत्रभणुं (गुरु कहै भणह) पठै इच्छं कहो। ३ नवकार। ३ करेमि भंते (अथवा) १ नवकार। १ करेमि भंते (भणी) इच्छामि पडिक्कमिउं। जोमेराइउ (इत्यादि कहो) वंदित्तू सूत्र। तंनिंदे तंचगरि हामि (सूधो कहै) पठै ऊभो थई। अब्भुट्ठिउमि आराह णाए (इत्यादि संपूर्ण कहो) वे वांदणा देई। अवग्रहमांहि थको हीज कहै। इच्छाका०। सं०। भ०। अब्भुट्ठिउमि

अभिंतर। राइयं खामेमि (गुरु कहै खामेह) पढै। इछं खामेमि राइयं (कहीं) संडासा प्रमार्जन पूर्वक गोडालीयै बेसो। बेवांह पडिलेही। मुहपत्ती वांम हाथ मुंमुखें देई। दक्षिण हाथ गुरु सांम्हो करो। नीचो नम्यो थको। जंकिंचि अपत्तियं (इत्यादि संपूर्ण कहै) तिवारै गुरुपिण मिछामि दुक्कडं कहै) पढै। बे वांदणादेई भूमि प्रमार्जतो। पाछैं पगे अवग्रह बाहिर आवी॥ आयरियउवज्झाए इत्यादि गाथा३ कहें) पढै। करेमि भंते०। इछामि ठामि काउसग्गं। तस्सुत्तरी (इत्यादि कही) काउसग्ग करे काउसग्ग मांहें। श्रीवीरकृत छमासीतप चिंतवे (१) पढै जे पच्चक्खाण करवो हुवै (तो) हियामांहि धारो। काउसग्ग पारो। लोगस्स कहो। उकडूबेसो। मुहपत्ती पडिलेहो। बे वांदणा देई। सकल तीरथ नामलेई। नमस्कार करो (कहै) इछ कार भगवन पसाउ करो पच्चक्खाण करावो जी (पढ) गुरु मुखें पच्चख्खांण करै। गुरु अभावे थापना समक्षें (अथवा) साधर्मी मुखें पच्चक्खाण करै (पढै) इछामो अणुसट्ठिं कहो बैसे (तिवार पछै) गुरु १ थुई कह्यां पछैं। मस्तकै अंजलोकरो। नमो खमासमणाणं नमो ऽर्हत्सिद्धा कहो। संसारदावानल इत्यादि (अथवा) नमोस्तु वर्द्धमानाय। इत्यादि (अथवा) पर समय तिमर (इत्यादि तीन गाथा भणो) शक्रस्तव कहै। पढै ऊभो थई। अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसग्गं। वंदणवत्ति आए

(१) छमासी तप न जाणें (तो) ६ लोगस्स (वा) २४ नवकार नो काउसग्ग करे ऐसी प्रवर्त्ती है।

(इत्यादि कही) काउसग्ग मांहे १ नवकार चिंतवो। एक श्रावक प्रथम काउसग्ग पारी। नमोर्हत्सिद्धा कही। एक गाथा स्तुति कहै। बीजा सर्व काउसग्ग मांहि रह्या सुणे पछै। णमो अरिहंताणं कही काउसग्गपारै। इमआगै पिण जाणवो। पछै लोगस्स कही। सव्वलोए अरिहंत चेइआणं वंदणवत्ति०। अन्नत्थू०। (इत्यादि कही) १ नवकारनों काउसग्ग करी (पारी) बीजी स्तुति कही। पुक्खरवरदीवड्ढे कहै। पछै सुयस्स भगवओ०। वंदण०। अन्नत्थू कही १नवकार कही (पारी) तीजी स्तुति कही। सिद्धाणं बुद्धाणं कहै। पछै वेयावच्च गराणं०। अन्नत्थू०। कही १ नवकारका०। करी (पारी) नमोर्हत्सिद्धा कही। चौथी स्तुति कही। (बैसी)। नमोत्थुणं कहै। पछै तीन खमासमणें। पूर्वोक्त रीतें। आचार्य। उपाध्याय। सर्व्वसाधू वांदै। इति प्रभाती पडिक्कमण विधिः॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः इतना विशेष है ॥॥

॥ ॥ इतनो विधि कियां पाछै स्थिरता हुवै (तो) उत्तर दिशें। सीमंधर स्वामी सांह्मांबैसी। कम्मभूमी २ (इत्यादि) संपूर्ण चैत्यवंदन करै (प्रांतें) अरिहंत चेइयाणं करेमि काउसग्गं। वंदणवत्ति०अन्नत्थू० कही। १ नवकार चिंतवी (पारी) सीमंधरस्वामीनी स्तुति कहै। इम हीज थिरता हुवै (तो) श्रीसिद्धाचलजी नो चैत्यवंदन करै। पछै पडिलेहण करै (ते इम) खमासमणदेइ। इच्छाका० सं०। भ०। पडिलेहण संदिसाउं (गुरु कहै संदिसा एह) बीजै खमासमणें। इच्छा०। सं०। भं०। पडिलेहण करुं (गुरु कहै

करेह) पछे। इछं कहो। मुहपत्ती पडिलेहे। (इमहीज दोइखमासमणें। अंगपडिलेहण संदिसाउं। अंगपडिले हण करुं (कहो) धोतियो कणदोरो पडिलेहो। खमासम णदेई। इछकार भगवन पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहा वेजो (इम कहो) थापनाचार्य पडिलेही राखे (अनें) जो गुर्वादिक थापनाचार्य पडिलेहे। तोपिण। खमासमण देई आग्यामांगे। पछे खमासमण देई। इछा०। सं०। भ०। मुहपत्ती पडि लेऊं (गुरुकहे पडिलेहेह) पछे इछं कहो। मुहपत्ती पडिलेहो। दोय खमासमणें। इच्छाका०। सं०। भ०। उहीपडिलेहण संदिसाऊं। उही पडिलेहण करुं (कहो) कंबल वस्त्रादि पडिलेहे। पछे। पोसहशाला प्रमार्जें। काजो विधसुं परठवो। खमा समण देई। इरि यावही पडिक्कमे (एमूलविध जाणवी)॥॥ इतरी स्थिर तानउव। तो पिण दृष्टि पडिलेहण करवी। हिवणां पिण प्रायें इमहीज करतादीसेछे॥॥ ॥॥ ॥॥

॥ हिवे सामायक पारणेंकी विधि कहेछे ॥

॥॥ पछे सामायिक पारे। १ खमासमण देई। मुह पत्ती पडिलेहे। फिर खमासमण देई। इच्छा० सं०भ०। पछे यथा सामायिक पारुं (गुरु कहे पुणोवि कायव्वो) पछे यथा शक्ति कहो। वले खमासमण देई (कहे) इच्छाका० सं० भ०। सामायक पारेमि (गुरु कहे आयारो नमोत्तव्वो) पछे तहत्तिकहो। अर्द्ध नम्र ऊभो थको। तीन नवकारगुणी नीचो गोडालोये बेसी। मस्तक नमावी। भयवंदसन्नभद्दो

(इत्यादि गाथा कहै) (अथवा) पहिलां सामायिक पारी। पछै पडिलेहण करैं। इहां यथायोग्य अवसरै गुरू नें मुहराइं पूछै (ति इम) एक खमा समण देइ कहै। इछ कार भगवन मुहराइं सुखतपशरीर निरावाध संयम याता सुखें निरवहैछैजी छै पुज्यजीसाता (इत्यादि पूछी) बीजो खमासमण देवै। श्रीजिन पति सूरिजीनी समाचारीमें इम कह्यो छै॥ ॥ इति सामायक पारणविधिः॥

॥ अथ सिंझ्याकाल सामायक विधि लिख्यते॥

॥ ॥ हिवै पाछलै पहुर धर्मशाला प्रमार्जी। वस्त्रा दिपडिलेहै। जो अवेलो आयो हुवै (तो) दृष्टि पडिलेहण करै। पछै गरु आगै (अथवा) थापनाचार्यजी आगै आवी भूमि प्रमार्जी। आसण बांम पास मूंकी। खमासमण देइ (कहै) इच्छाका०। सं०। भ०। सामायिक मुहपत्ती पडि लेहुं (गुरु कहै पडिलेहेह) पछै इछं कही। वले खमासम णदेई। मुहपत्ती पडिलेहै। पछै खमा समण देई। इछाका० सं०। भ०। सामायिक संदिसाउं (गुरु० संदिसावेह) फेर खमासमणदेइ इछाकारा०। सं०। भ०। सामायिक ठाउं (गुरु० ठाएह) पछै इछं कही। फेर खमासमण देइ। अर्द्धावनत थई। तीन नवकारगुणी (कहै) इछकार भगवन पसाउ करी सामायिकदंड उच्चरावो जी (गुरु० उच्चरावेमो) पछै। करेमि भंते सामाइयं (इत्यादि) सा मायिकसूत्र गुरुवचन अनुभाषण करतो थको तीनवार उच्चरी। खमासमण देइ। इछाका०। सं०। भ०। इरिया

वहियं पडिक्कमामि (गुरु कहै पडिक्कमह) पछे इछं कहो। इछामि पडिक्कमिउं। इरियावहियाए (इत्यादि पाठें इरियावही पडिक्कमी। १ लोगस्स नो काउसग्ग करी। णमो अरिहंताणं कहो। काउसग्ग पारी। मुखें प्रगट लोगस्स कहो। नीचाबैसी। मुहपत्ती पडिलेही। वांदणा देई (कहै) इछकार भगवनपसाउ करी पच्चक्खाण करावोजो पछे (गुरु) दिवस चरम पच्चक्खाण करावै। गुरु अभावे थापनाचार्य समक्षें (अथवा) स्वमुखें (तथा) वडेरासाधर्मीमुखें पचखे (अनें) जो तिविहार उपवास कीधो हुवै (तो) मुहपत्ती पडिलेही। पच्चक्खाण करै। वांदणा नद्यै (अनें) जो चउविहार उपवास हुवै (तो) पच्चक्खाण करवोछै नही। ते माटे मुहपत्ती नही पडिलेहै। एविस्तार विधिछै। पछे १ खमासमण देई। इछाका०। सं०। भ०। सिज्झाय संदिसाउं (गुरु कहै संदिसावेह) पछे इछं कहो। वले खमासमण देई। इछा०। सं०। भ०। सिज्झाय करुं (गुरु० करेह) पछे इछं कहो। खमासमण देई। ऊभो थको (मधुरस्वरें) ८. नव कारनी सिज्झाय करै। पछै खमासमण देई। इछा०। सं०। भ०। बैसणो संदिसाउं (गुरु० संदिसावेह) फेर खमासमण देई। इछा०। सं०। भ०। बैसणो ठाउं। (गुरु० ठाएह) पछे इछं कहो। जो शीतकालादि हुवै (तो) खमासमण देई। इछा०। सं०,भ०। पांगरणो संदिसाउं (गुरु० संदिसावेह) फेर खमासमण देई। इछा०,सं०,भ० पांगरणो पडिग्गाउं (गुरु कहै पडिग्गाएह) पछे इछंकही शुभध्यान करै॥ इति संध्यासामायिक विधिः॥

॥ अथ देवसी पडिक्कमण विधिलि० ॥

॥ ॥ ३ खमासमण देई । इछा०सं०भ० । चैत्य वंदन करुं (गुरु कहे करेह) पछे इछं कही । जयतिहुयण । जय महायस(प्रमुख)नमस्कारकही ।नमोत्थुणं कही । अरिहंत चेइ याणं० (इत्यादि पूर्वोक्त रीतें) च्यारे थुई ए देव वांदे। च्यार खमासमणें आचार्यादिक वांदी। पछे इछकार समस्त श्रावकोवांदुं । इम कही गोडालीयें बेसी। मस्तक नमावी । सव्वस्सवि देवसिय(इत्यादि) तस्स मिछामि दुक्कडं कहे (पिण) इछाकारेण संदिसह इछं (एपद न कहे) पछे ऊभा थई । करेमि भंते सामाइयं० । इछामि ठाउ काउ सग्गं। जोमे देव सिउं० । तस्सुत्तरी० । अन्नत्थू ससिएणं० । (इत्यादि कही) काउसग्ग करै। काउसग्ग माहें। आजूणा चौपहरादिवसमें० (इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी) णमो अरिहंताणं कही। काउसग्ग पारी।लोगस्स कहे । संडाशा प्रमार्जनपूर्वक बेसी। मुहपत्ती पडिलेही। वांदणा देवै। पछे अवग्रह मांहि ऊभो थको कहे। इछा० सं० भ० देव सियं आलोउं (गुरु कहे आलोएह) । पछे । इछं आलोए मि०(पाठकहे) अतीचार आलोवै। पछे सव्वस्सवि देवसिय (इत्यादि)इछाकारेण संदिसह।सूधोकहे। तिवारे (गुरुकहे पडिक्कमह) पछे । इछंतस्स मिछामि दुक्कडं(कही) संडाशा प्रमार्जी। प्रमार्जितभूमें आसणें बेसी कहे।भगवन सूत्रभणुं (गुरु कहे भणह) पछे इछं कही । तीन नवकार ३ करेमि भंते (अथवा) १ नवकार १ करेमि भंते (भणी) इच्छामि पडिक्कमिउं। जोमेदेवसीउं(इत्यादि कही) एक श्रावक वंदे

(तू कहै) बीजा सर्व्व सुखैं।-पछै ऊभो थई। अब्भुट्ठिउमि आराहणाए (इत्यादि संपूर्ण पाठ कहो) बे वांदणा देवे। अवग्रह मांहिज ऊभो थको। इछाका०सं०भ०। अब्भुट्ठिउ मि अब्भिंतर। देवसियं खामेउं (गुरु कहै खामेह) पछै इछं खामेमि देवसियं (कहो) गोडालोये बैसी। वामहाथें मुहपत्ती मुखें धरी। दक्षिणहाथ गुरुसनमुख करी। मस्तक नमावी (सर्व पाठ कहै) पछै विधिसुं बे वांदणा देई। आयरि य उवज्झाए (इत्यादि३ गाथा कहो) करेमिभंते सामाइयं॥ इच्छामि ठाउं काउसग्गं (इत्यादि कहो) चारित्रशुद्धनि मित्तें दोयलोगस्सनों काउसग्ग करै (पारी) दर्शनशुद्धिनि मित्तें प्रगट लोगस्स कहो। सव्वलोए अरिहंतचे। वंदण०। अन्नत्थू० कहो। १ लोगस्सनों काउसग्ग करै (पारी) ज्ञान शुद्धिनिमित्तें। पुक्खरवरदी वड्ढे (कहो) सुयस्स भगवउ०। वंदणव०। अन्नत्थू कहो। १ लोगस्सनों काउसग्ग करै (पा रो) सिद्धाणं बुद्धाणं (कहो) वेयावच्च गराणं न कहै। पछै। सुयदेवयाए करेमि काउसग्गं। अन्नत्थू कहो। एक नव कारनों काउसग्ग करो। गुरु संयोग नहो ह्वै (तो) एक श्रावक काउसग्ग पारी। नमोर्हत्सिद्धा० कहो। श्रुतदेव तानी स्तुति कहै। (गुरु ह्वै तो गुरु कहै)। बीजासर्व स्तुतिसुणकै काउसग्ग पारैं। पछै। खित्तदेवयाए करेमि का उसग्गं। अन्नत्थू कहो। एक नवकार चिंतवो। पूर्वली परें (क्षेत्रदेवतानी स्तुतिकहै) पछैऊभो थको। १नवकार कहो। संडाशा प्रमार्जी। ऊकडू बैसो। मुहपत्ती पडिलेहो। विध सुं बे वांदणादेई। इछामो अणुसट्ठिं कहो। बैसे पछै (गुरुएक

स्तुति कह्यां पूठे) श्रावकसमस्तमस्तकें अंजली करी। णमो खमासमणाणं। णमोर्हत्सिद्धा कहौ। णमोस्तु वर्द्धमानाय (इत्यादि तीन स्तुति कहै) श्राविका। नमो खमासमणाणं। कहौ। संसारदावानी तीनस्तुति कहै। पछै णमोत्थुणं कहौ। एक श्रावक खमासमण देई कहै। इच्छाका०सं०भ०। स्तवन भणुं। वीजासर्वखमासमणदेई कहै। इच्छा०सं०भ०। स्तवन सांभलुं (गुरुकहै भणह सांभलह) पछै आसणे वेसौ। नमोर्हत्सिद्धा०पूर्वक। वडोस्तवनकहै। पछै तीन खमासमणे। आचार्य उपाध्याय सर्वसाधू वांदौ। चोथै खमासमणे। इच्छा० सं०भ०। देवसी प्रायश्चित्त विशुद्धिनिमित्तं काउसग्ग करुं (गुरुकहै करेह) पछै इच्छं कहौ। देवसी पायच्छित्त विसुद्धिनिमित्तं। अन्नत्थू कहौ। च्यार लोगस्सनो काउसग्ग करै (पारी) लोगस्स कहै। पछै खमासमण देई। इच्छाका०सं०भ०। खुद्दोवद्दव उहडावणत्थं करेमि काउसग्गं। अन्नत्थू० (इत्यादि कहौ) च्यार लोगस्सनो काउसग्ग करै (पारी) लोगस्स कहै। वेसौ। खमासमण देई। थंभणापार्श्वनाथजीनों चैत्यवंदनकरै। जय वीयराय कह्यां पछै खमासमण पूर्वक मस्तकनमावौ॥ सिरि थंभणइट्ठिय पाससामिणो (इत्यादि दोय गाथा कहै) ऊभा थई। वंदणव०अन्न० कहौ ४ लोगस्सनो काउसग्ग करै (पारै) प्रगटलोगस्स कहै। (इमहीज) दादाजी श्रीजिन दत्त सूरिजीनो काउसग्गकरै (पारी) मुखें लोगस्स कहै। पछै। दादाजी श्रीजिन कुशलसूरजीनो काउसग्ग करै। पछै पूर्वोक्तरीते सामायिक पारै। इतिदेवसी पडिक्कमणविधिः संपूर्णं॥　　॥✻॥

॥ अथ अठपुहरो पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ ॥ रात्रीनें पाछले विषड़िये निद्रा दूर करीनें। पंचपरमेष्टि स्मरण करी। गृहचिंता परिहरी। पर्वदिवसथकी प्रथमदिवसें पड़िलेही राख्या। जे पोसहना उपगरण लेई। पोसहशालायें थापनाचार्य समीपें। अथवा गुरुनों संयोग हुवै (तो) गुरुनें पासें आवी। भूमिप्रमार्जी। एकखमासमण देई। इरियावही पड़िक्कमें। पछे खमासमण देई। इच्छाका० सं०भ०। पोसह मुहपत्ती पड़िलेहुं। (गुरु कहै पड़िलेहेह) इच्छं कही। खमासमण देई। मुहपत्ती पड़िलेहै। पछै ऊभो थई। खमासमण देई। इच्छाका०सं०भ०। पोसहसंदिसाउं (गुरु कहै संदिसावेह)। पछै इच्छं कही। खमासमण देई। इच्छाका०सं०भ०। पोसहठाउं (गुरु कहै ठाएह) पछै इच्छं कही। खमासमण देई। ऊभो थई। आधो सरीर नमावी। मुखें मुहपत्ती देई। मधुर स्वरे। तीन नवकार गुणी कहै। इच्छकार भगवनपसाउ करी। पोसहदंडकउचरावो (गुरु०उच्चरावेमो)। पछै करे मिभंते पोसहं। आहा० जाव अहोरत्तं वा० अप्पाणंवो०। एपाठ तीनवार गुरुवचन अनुभाषणकरतो उचरै ॥ ॥ पछै एकखमासमणें। इच्छाका०सं०भ०। सामायिक मुहपत्ती पड़िलेहुं (गुरु कहै पड़िलेहेह) बीजी खमासमण देई। मुहपत्ती पड़िलेहै। पछे दोय खमासमणें सामायिकसंदिसाउं। सामायिकठाउं (कही) खमासमण देई। अर्द्धावनतगात्रऊभो थको। तीन नवकार। तीन करेमि भंते उचरी। दोय खमासमणें। बेसणो संदिसाउं। बेसणो ठाउं।

कही। पछे दोय खमासमणें। सिज्झाय संदिसाउं। सिज्झायकरुं (कही) खमासमण देई। ऊभो थको। आठ नवकारनो सिज्झाय करै। सीतादि परी सहै दोयखमासमणें। पांगरणुं संदिसाउं। पांगरणुं पडिग्गाउं (कहै) ए सर्वसामायिकविधि पूर्वें कहीछै। तिमहीज करवी। (पिणइतनो विशेषछै) पहिलां इरियावही पडिक्कमीछै। ते माटे। इहां सामायिक दंडकउचर्यां पछै। इरियावही नही पडिक्कमीजे॥✽॥ पीछै चैत्यवंदन। जयवीयरायसूधो करी कुसुमिण दुस्समिण काउसग्गकरै। पछे पडिकमणवेलासौ असिज्झाय ध्यान करै। पछे पूर्वोक्तरीतें पडिक्कमण करै (पिण इतरो विशेष) च्यारे थुई ए देव वांद्यां पीछै। खमासमण देई (कहै) इच्छाका०सं०भ०। बहुवेलं संदिसाउं (गुरु कहै) संदिसावेह (पछे इच्छं कही) खमासमणदेई (कहै) इच्छाका०सं०भ०। बहु वेलं करुं (गुरु कहै करेह) पछ इच्छं कही। तीन खमासमणें। श्रीआचार्यजीमिश्र१। श्रीउपाध्यायजीमिश्र२। तीजैसर्वसाधूवांदी। कम्मभूमिहिं३। (इत्यादि नमस्कारभणें) जो पडिलेहण वेला नही हुवे(तो) सीमंधरस्वामी नो चैत्यवंदनादि करी। सिज्झायकरै। हिवै पडिलेहण वेला पडिलेहण करै)। ते विधिपूर्वें लिखीछै। (तो पिण) संक्षेपें फेर लिखी छै ॥✽॥ दोय खमासमणें। इच्छा०सं०भ०। पडिलेहण करुं (कही) मुहपत्ती पडिलेहै। पछै दोय खमासमणें। अंगपडिलेहण संदिसाउं। अंगपडिलेहण करुं (कहै) पछै (गुरुवचनें)) । इच्छं कही। धोतियो कणदोरो पडिलेहो। वस्त्रपहिरो। खमासमण

देई। इच्छकार भगवन पसाउकरी पडिलेहण करावो जी। (इम कहो। थापनाचार्य पडिलेही थापे। अने जो (गुर्वादिक) थापनाचार्य पडिलेहै। (तो) पिण (खमासमण देई। उक्त रीतें आग्यामांगे। पछै खमासमण देई। इच्छाका० सं०भ०। उपधि मुंहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहै पडिलेहेह) पछै इच्छं कही। मुंहपत्ती पडिलेही। दोय खमासमणें। इच्छाका० सं०भ०। उंही पडिलेहण संदिसाउ (गुरु० संदिसावेह) उंही पडिलेहण करुं (गुरु०करेह) पछै इच्छंकही। कंबल वस्त्रादि पडिलेही। पोसहसाला प्रमार्जै। काजो विधिसुं परिठवी। एक खमासमण देई। इरियावही पडिक्कमे (इहां आचार दिन करमें कह्योछै) ॥॥ दोयखमासमणें। इच्छाका०सं०भ०। वसती संदिसाउं। वसती पडिलेहुं (कही)। वसती मालो प्रमुख प्रमार्जै (इत्यादि) पिण विधि प्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥॥ हिवै एक खमासमणें। इच्छाका०सं०भ०। सिज्झाय संदिसाउं। (गुरु कहै संदिसावेह) वीजै खमासमणें। इच्छाका०सं०भ०। सिज्झाय करुं। (गुरु कहै करेह) पछै इच्छं कही। नवकार १ कथन पूर्वक (उपदेशमाला) प्रमुख सिज्झाय करी। नवकार एककही। धर्मध्यान करै। भणें गुणेंवखांण सुणें ॥॥ इम करतांपूंण पुहर दिन चढ्यां। उग्घाडा पोरिसीआगम्या। बहुपडिपुन्ना पोरिसी। कही। खमासमण देई। (इरियावही) पडिक्कमी। दोय खमासमणें। इच्छाका० सं०भ०। पडिलेहण करुं। (गुरुवचनें)। इच्छं कही। मुंहपत्ती पडिलेही। पान भोजन पात्र पडिलेही रारवै। पछै सिज्झाय ध्यान करै।

॥卐॥ हिवै कालवेलायें । आवस्सही पूर्व्वक देहरै जई । पांचेशक्रस्तवे देववांदै हिवै पांचेशक्रस्तवे देववांदण विधिदो प्रकारसें लिखिये है ॥卐॥

॥卐॥ तीन प्रदक्षिणा देई । तीनवार नमस्कार करी । भमि प्रमार्जी । पुरुष हुवै (ते)प्रभूजो सुं दक्षिणपासे बैसै । स्त्रीहुवै ते वांम पासे बैसै । पछै । इच्छाका०सं०भ० । चैत्य वंदन करूं । इच्छं कहो । पछै नमोत्थुणं कहै । खमासमण देई । इरियावही पड़िक्कमें । एकलोगस्सनो काउसग्ग करें । मुखें लोगस्स कहै । संडाशाप्रमार्जी बैसै । तीन तथा च्यार तथा पांच आदि देई । नमस्कार कहै । जं किंचनामतित्थं । (इत्यादि कही) पछै । नमोत्थुणं कहै (ऊभो थई) अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसग्गं । वंदण वत्ती० । अन्नत्थू० । कही । १ नवकारनो काउसग्ग करै (पारी) एक थुईकी गाथा कहै ॥ पछै लोगस्स० । सव्व लोएअरि० । वंदणव० । अनत्थू० । कही । १ नव० । (पारी) २ थुई की गाथा कहै । पछै । पुक्खर वरदी० । सुअस्स भग० । वंदण० । अणत्थू० । कही । १ नव०का० (पारी) ३ थुई कीगा० । पछै सिद्धाणं बुद्धाणं० । वेयावच्चगराणं० । अनत्थू०। (इत्यादि कथन पूर्व्वक) चोथी थुई सें देववांदी नमोत्थुणं कहै । फेरअरिहंतचे०कहो । इमीतरै । च्यार थुई एदव वांदी बैसे । नमोत्थुणं कहै । नमोर्हत्सिद्धाचार्योपा० (इत्यादिकही) पछै स्तवन कहै । पछै जयवीय राय कही । (नमोत्थुणं) सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहै ॥卐॥ इम पांचे शक्रस्तवे देववंदनविधिः॥卐॥ प्रवचनसारोद्धार प्रमुख

ग्रंथमें कह्योहै) ॥ ※ ॥ तथा चैत्यवंदन हृहद्भाष्यमें इम कह्योहै ॥ १ ॥ ※ ॥ नमस्कार कथन पूर्व्वक । शक्रस्तव कही । इरियावही प्रतिक्रमणादि करै । वली नमस्कार कथनपूर्व्वक शक्रस्तव कही । दोयवार च्यार थुई सें देववांदे । फेर शक्रस्तव कही । जावंति चेइयाइं गाथा भणी । खमासमण पूर्वक । जावंतिके० बीजी गाथा कही । स्तवन कहै वली नमोत्थुणं कहो । जयवीयराय कहै ॥ ※ ॥ इति देववंदणविधिः ॥※॥ पछै निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहि आवी । इरियावही पडिकमें । पछै सिज्झाय ध्यान करै । ॥※॥ जो तिविहार उपवास कियो हुवै । (तो) पच्चक्खाण वेलापूर्ण हुवां । जलपीणेंकुं पच्चक्खाण पारै ॥※॥ हिवै पच्चक्खाणपारणेंकी विधिलिखियेहै ॥ ※ ॥

॥※॥ खमासमण देई । इरियावही पडिकमें । फेर एक खमा० । इछा०सं०भ० पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहै पडि०) पछै इछं कहो । खमा० देई । मुहपत्ती पडिलेहै । फेर एकखमा०देई । इछा०सं०भ०। पाणहार अमुकपच्चक्खाण पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायव्वो) पछै यथाशक्ति कही । खमासमण देई । इछाका०सं०भ०। पाणहारपारुं (गुरु कहै आयारो नमोत्तव्वो) पछै तहत्ति कही । अमुक पच्चक्खाण चौव्विहार कय्यु, (इम कही) १ नवकारगुणी पच्चक्खाण फासियं । पालियं । सोहियं । तीरियं । किट्टियं । आराहियं । जंचनआराहियं । तस्स मिछामि दुक्कडं (कही) चैत्यवंदन करै । चणमात्र सिज्झायकरो यथासंभवै । अतिथिसंविभाग करी पाणी पीवै ॥※॥

॥ ॥ तथा उपधान वाही हुवै । (तो) पोरसी प्रमुख पच्चक्खाण पारी । आहारकरै । पछै आसणबैठो थको हीज । दिवस चरम पच्चखै । पछै । इरियावही पडिक्कमी । चैत्य वंदन करै । (ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्त छै)। ॥ ॥ इति पच्चक्खाण पारणोंकाविधि ॥ ॥

॥॥ पछै जो बहिर्भूमि जावणो हुवै(तो आवस्सहीकही । उपयोगीथको । निर्जीवथंडिलै जइ । अणुजाणह जस्सुग्गहो कही । पूर्व । उत्तर । सूर्य ग्रामादिकनें पूठि अणदेइ । मल मुत्र परिठवै । प्राशुक जलें शुद्धथइ । वार तीन वोसिरामि३ एहवूं कहिवै करी । मल मुत्र वोसरावी । पोसहशालायें । निस्सही पूर्वक(पैसी)इरियावही पडिक्कमें । खमासमण देइ । कहै । इच्छाका० सं०भ० । गमणागमणं आलोयहं(गुरु कहै आलोएह) पछै इच्छं कही । गमणागमण आलोवै ॥॥ (ते इम)आवस्सही करी । प्राशुक देशें जइ । संडाशा पूंजी । थंडिलो पडिलेही । उच्चार प्रश्रवण वोसरावी । निस्सही करी । पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं । जंखंडियं । जंविराहियं । तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥॥ इम कही वेसै । पछै पडिलेहण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करै ॥॥ हिवै । पाछलै पुहर । इरियावही पडिक्कमी । खमासमण देइ कहै । इच्छाका० सं० भ० । पडिलेहण करूं । (गुरुकहै करेह) पछै इच्छं कही) दूजै खमासमणें । इच्छाका०सं०भ० । पोसहशाला प्रमार्जूं (गुरु कहै प्रमार्जेह) पछै इच्छं कही । मुहपत्ती पडिलेही । दोयखमासमणें । अंगपडिलेहण संदिसाउं । अंग पडिलेहण करूं । (कहै) पछै (गुरुवचनें) इच्छं कही ।

मुहपत्ती पडिलेही। दंडासणो पूंजणी प्रमुख सोंप्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जै (पछै) काजो शुद्धकरी। ऊधरी। एकांतें विखरतो परठवी। (इरियावही पडिक्कमी। खमासमण पूर्वक कहै। इच्छकार भगवन पसाउ करी पडिलेहणा पडिलेहा वोजी। पछै थापनाचार्य पडिलेही। थापै। गुरु समीपै (अथवा) थापनाचार्य समीपै। एकखमासमण देई। इच्छाका०सं०भ०। मुहपत्ती पडिलेऊं (गुरुकहै पडिलेहेह) पछै। इच्छंकही) खमासमण देई। मुहपत्ती पडिलेहै। पछै दोय खमासमणें। इच्छा०सं०भ०। सिज्झाय संदिसाउं। सिज्झाय करूं (कही) उत्तरीतें नवकार सिज्झायकरी। तिविहार उपवास कीधो हुवै। (तो) गुरुसाखें। पाणिहार पच्चखै॥ ॥ उपधानवाही प्रमुख। आहार कीधो हुवै (तो) वांदणा दोय देई। पच्चक्खाण करै॥ ॥ (पछै) एक खमासमण देई। इच्छाका०सं०भ०। उपधि थंडिला पडिलेहण संदिसाउं। बीजै खमासमणें। इच्छाका०सं०भ०। उपधि थंडिला पडिलेऊं (गुरुवचनें) इच्छं कही। दोय खमासमणें। इच्छाका०सं०भ०। बैसणो संदिसाउं। बैसणोठाउं। कही (बैसै) वस्त्र कांबलादि पडिलेहै। पुंजणी हुवै (तो) ते पिण। मुहपत्ती सुं पडिलेहै। उपवासी तोछै। तेमाटें। सर्वपाठो कडिपट्टो धोतीयो कणदोरो पडिलेहै॥ ॥ उपधानवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवै (तो) कडिपट्टादि पडिलेह्यां पछै। वस्त्रकंबलादि पडिलेहै। (एविशेष छै)। पछै कालवेलासीम सिज्झाय ध्यान करै॥ (पीछै) उच्चार प्रश्रवण २४ थंडिला पडिलेहै (जो) चउदस हुवै। (तो) पाखी

चउमासी पडिक्कमणो करै। संवछरियें संवछरी पडिक्कमणोकरै ॥※॥ तिहां देवसी पडिक्कमणो पूर्वे लिख्योछै। तिम हीज करै। (पिण इतरो विशेष छै)। इछा०। देवसियं आलोएमि इत्यादि। देवसी आलोयां पछै। ठाणे कमणे। चंकमणे। (इत्यादि पाठ कहै) (तथा) छुहो वहव काउसग्ग कियां। पछै। दोय खमासमणें। इच्छाका० सं० भ०। सिज्झाय संदिस्साउं। सिज्झाय करूं (कहो)। बैठो थको। तीन नवकार प्रमुख सिज्झाय करै। इति ॥※॥ पाखिकादि तीन पडिक्कमणाकीविधि आगे लिखीहै ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ हिवै पडिक्कमणो हुवां पछै। साधुनो वेयावच्च करो। पोरसो सोमसिज्झाय ध्यानकरै। जोलघुनीति प्रमुखकरवी हुवै तो आसज्ज कहितो थको। भूमि प्रमाजैं। थंडिलस्थानकें जई। देहसंका निवारै। अस्थवण वोसरावो। स्वस्थानकें आवै। (भगवन) बहुपडिपुन्ना पोरसी। (इम कहो) खमासमण देई। इरियावही पडिक्कमें। पीछै राई संथारा विधि करै ॥※॥ ॥ ※॥ ॥※॥

॥※॥ हिवै राई संथारा विधि लि० ॥※॥

॥※॥ खमासमण देई। इच्छा०सं०भ०। राई संथारा मुहपत्ती पडिलेहुं। (गुरु कहै पडिलेह) पछै इछं कहो। खमासमण देई। मुहपत्ती पडिलेहै। एक खमासमणें। इच्छा०सं०भ०। राई संथारो संदिस्साउं। बीजे खमासमणें। इच्छा० सं० भ०। राई संथारो ठावूं (पछै) गुरु वचनें। इछं कहो। चउक्कसाय पडिम ल्लु ल्लूरण। (इत्यादि नमस्कार कथनपूर्वक)। जयवीय राय सूधी चैत्यवंदन

करै। भूमि प्रमार्जी। संथारो उत्तर पट्टो पाथरै। पछै शरीर प्रमार्जी। निस्सही २ इम कही। संथारै बैसो। तीन नवकार। तीन करेमि भंते। ऊचरो। णमो खमा समणाणं। गोयमाईणं महामुणीणं। अणुजाणह जिट्ठिज्जा अणुजाणह परमगुरु। (इत्यादि राइ संथारागाथा भणो। वामहाथ सिराणें देइ। सोवै। निद्रानावै। जांसीम। मुनि वरचरित्र चिंतवै। पसवाडो फेरै (तो) शरीर संथारो प्रमार्जी फेरवै। जोदेह शंकाये ऊठै (तो) पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारो। इरियावही पडिक्कमें। (पछै अथन्यें पिण। तीन गाथानो सिज्झाय करो सोवै॥ ॥

॥ ॥ इति राइ संथारा विधि कही॥ ॥

॥ ॥ हिवै रात्रिनें पाछिलै पुहर ऊठो। नवकारादि गुणो। इरियावही पडिक्कमें। खमासमण देइ। कुसुमिण दुसुमिण काउसग्ग करो। पूर्वोक्त विधै सामायिक लेवै। इहां इरियावही न पडिक्कमें। पछै दोयखमासमणें। सिज्झाय संदिसावो। आठ नवकारगुणो। पडिक्कमण वेलासीम सिज्झाय करै। पडिक्कमण वेला हुवां। पडि क्कमणो पूर्वली परे करै। (पिण इतरो विशेष छै)। राइ आलोयां पढै। संथारा उवट्टणकी (इत्यादि पाठ कहै) इम संपूर्ण पडिक्कमणो करो। पडिलेहणवेलायें। पूर्वोक्त विधै पडिलेहण करो। धर्मशाला पूंजो। काजो ऊधरो। इरियावही पडिक्कमें। दोय खमासमणें। सिज्झाय संदिसावो। उपदेशमाला प्रमुख सिज्झाय करै। पछै पोसह पारै॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥※॥ हिवे पोसहपारणोंकी विधिलिखियै है ॥※॥

॥※॥ खमासमण देई । मुहपत्ती पडिलेहै । फेर । खमासमण देई कहै । इच्छा०सं०भ० । पोसहपारुं (गुरु कहै पुणोवि कायव्वो) पछै यथाशक्ति कहो । खमासमण देई (कहै) । इच्छा०सं०भ० । पोसह पारयुं । (गुरु कहै आयारो न मोत्तव्वो) । पछै तहत्ति कहै । खमासमण देई । तीन नवकार अर्द्धावनत गात्रऊभो थको गुणो । खमासमणदेई । मुहपत्ती पडिलेहै । पीछै खमासमण देई कहै । इच्छाका०सं०भ० । सामायिक पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायव्वो । पछै यथाशक्ति कहो । खमासमण देई । इच्छाका० सं०भ० । सामायिकपारयुं (गुरु कहै आयारो न मोत्तव्वो) (पछै तहत्ति कहो) खमासमण देई । अर्द्धावनत गात्र ऊभो थको । हाथ जोड्यां । मुहपत्ती मुखें दियां थकां । तीन नवकार गुणो । संथारा पडिलेहै । गोडालीये बैसो । मस्तक नमावो । भयवं दसन्नभद्दो (इत्यादि भावनारूप गाथा कहै) । पछै पोसहना उपगरण संवरो । देहरै जाई । देव जुहारै । घरे आवो । आहार निष्पन्न हुवो देखो । साधु समीपें आवे । अतिथि संविभाग व्रत साचवण निमित्त । साधु भणी निमंत्रणा करो । घरे लेजावे । साधूपिण शुद्ध आहार लेई । स्वस्थानकें आवै । तिवार पछै साधूनें जे आहार दीधो । तेहनोहीज । शेष आहार आप करै ॥ इति अष्टपुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥

॥ हिवै दिन ऊगां पछै पोसहलै तेहनौं विधिलि० ॥

॥ ※ ॥ घर थकी निश्चिंत थई । धर्मस्थानके आवो ।

सर्व उपगरण पडिलेही । कचरो विधिसुं परिठवी। इरिया वही पडिक्कमें । खमासमण पूर्वक आग्या मांगी । पोसह मुहपत्ती पडिलेहै । आगे पोसह ग्रहणनी विधि पूर्वें लिखी है । तिमहीज जाणवी (पिण) दिवस पोसह होज करणो हुवे (तो) पोसह दंडक उचरतां) जावदिवसंपज्जु वासामि । (एहवो पाठ कहै) अनें जो । अठपुहरी करवो हुवे (तो) जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि । (एहवो कहै) पछै सामायिक विधि सर्व करी । चैत्यवंदण कुसुमिण दुस्समण काउसग्ग करी । पडिक्कमणों करी । दोय खमासमणें वड्ड वेलं संदिसावे २ (अनें जो) । पूर्वें पडिक्कमणो गुरु साथे कस्यो हुवें (तो) पडिक्कमणानें अंतें । पडिलेही राख्या । जे वस्त्र । तेपहरी । पोसहसामायिक सर्वविधि करी । दोय खमासमणें । वड्डवेलं संदिसावै । २ (तथा) जो गुरू सें जूदो पडिक्कमणो कस्यो हुवे (तो) गुरुपासें आवी पोसहसामायिक सर्वविधि करी । आलोयण खामणादि निमित्तें । मुहपत्ती पडिलेही । बे वांदणा देइ । इच्छाका० सं०भ० । राइयं आलोउं । (गुरु कहै आलोएह) पछै राइ आलोवै । फेर १ खमासमण देई । इच्छाका० सं०भ०। अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर । राइयं खामेमि (गुरु कहै खामेह) पीछै सब पाठ कहै। राइ खामे । पहिलां पडिक्कमणामें नवकारसी पचख्यो थो । तेमाटें। पछै । गुरुसाखे पच्चक्खाण उपवासनो करै । पछै । दोय खमासमणें । वड्डवेलं संदिसावे २ । (ए तीन प्रकार का विकल्प जांणवा) । हिवे पडिलेहणातो पूर्वें करी छै । (तो पिण) । आदेश मांगवो ।

(तेइम) खमासमण देई । इच्छा०सं०भ० । पडिलेहण संदिसाउं । बीजे खमासमणें । पडिलेहण करूं (कहो) मुहपत्ती पडिलेहै । पछै । इमहीज दोय खमासमणें । अंग पडिलेहण संदिसावो । मुहपत्ती पडिलेहै । पछै । वले खमासमण देई । इच्छकार भगवन पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी । (इम कहै) पछै । एकखमासमण देई । इच्छाका०सं०भ० । उपधि मुहपत्ती पडिलेऊं (कहो) कोई वस्त्र अणपडिलेह्यो राख्यो हुवे (तो) पडिलेहै । (नहींतो) वली आसण पडिलेहै । पछै । दोय खमासमणें । सिज्झाय संदिसावो । उपदेशमाला प्रमुखसिज्झाय करै । आगे सर्व क्रिया पूर्वे अठपुहरी पोसहमें लिखीछै । तिमहीज जाणवी । पिण इहां । अठपुहरी पोसहीतो) पाछली रातें वली सामायिक न लेवै । जिणें दिवस संबंधी चौपुहरी पोसहलीधो हुवे । (ते) पाछले पुहर । पच्चक्खांण कियां पछै । दोयखमासमणें । उंहीपडिलेहण संदिसाउं । उंही पडिलेहण करूं । (कहै) पिण थंडला पद न कहै । अने थंडिला नही पडिलेहै । यह निकेवल दिनसंबंधी पोसह ग्रहण करणें में विसेष विधिहो सो बताई ॥ ❋ ॥ इति दिन संबंधी पोसहग्रहण विधि संपूर्णम् ॥ ❋ ॥

॥अथ रात्रि संबंधी चौपहरी । पोसहनो विधि लि० ॥

॥ ❋ ॥ तिहां जिणें प्रथम चौ पुहरी दिवस पोसो ऊचर्यो है । पछैसंध्यानी पडिलेहण करतां । रात्रि पोसहनों भावथयो । (तो) पच्चक्खांणकियां पछै । दोय खमास

मणों। पोसह मुहपत्ती पडिलेही। तीन नवकार गुणी। तीनवार पोसह दंडक उचरै। (तिहां) जावरत्तिं पज्जुवासामि (इम) पाठ उचरै। पछै। सामायकविधि पूर्वे लिखी हैं। तिसकरै (पिण) सामायक उचर्यां पछी। दोय खमासमणों। सिज्झाय संदिसावी। आठ नवकार कही। बैसणो संदिसावी। पांगरणो संदिसावै। पीछै। दोयखमासमणों। इच्छाका० सं० भ०। उंहोथंडिला पडिलेहण संदिसाउं। उंडोथंडिला पडिलेहण करूं (गुरु कहै करेह) इच्छं कही। (उपधि पडिलेहै) आगै सर्वक्रिया पूर्वे लिखी तिमजांणवी। (तथा)जे श्रावक उपवासी तो। व्यग्रपणे। दिवसें पोसह न करी सक्यो। ते रात्रि पोसहनों भावथयां। पाछले मुहर पमेस्थानकै आवे। जो वसती प्रमाजीं हुवै। (तो सक्यो नहीं तो वसती प्रमार्जी। काजो परठवी। सर्व उपगरण पडिलेही। इरियावही पडिकमे। पीछै चौविहार पच्चक्खाण करी। दोयखमासमणों। पोसह मुहपत्ती पडिलेही। दोय खमा समणदेई। पोसह संदिसावै। फेर। खमासमण देई। तीन नवकार गुणी। तीनवेर पोसह दंडक उचरै। (तिहां) दिवससेसं रत्तिं पज्जुवासामि (कहै) संध्या हुवै। (तो) रत्तिं पज्जुवासामि कहै। पीछै। बिहुं खमासमणों सामायक मुहपत्ती पडिलेहै। दोय खमासमण देई। सामायक संदिसावै। फेर खमासमण देई। तीन नवकार गुणी। तीन करेमिभंते उचरै। दोय खमासमण देई। सिज्झाय संदिसावी। आठ नवकार कहै। फेर दो खमा समण देई। बैसणो संदिसावी। सीतादिकै। बे खमासमण

देई। पांगरण संदिसावै। पीछै। खेखमासमण देई। अंग पडिलेहण संदिसावो। मुहपत्ती पडिलेहै। फेर। खेखमासमण देई। ऊहो थंडिला पडिलेहण संदिसावो। (जो) अण पडिलेह्यो उपगरण हुवै। (तो) पडिलेहै (जो) सब्वं उपगरण पडिलेह्या हुवै। (तोपिण) थानकं शून्यता टालवा भणी। वले आसणपडिलेहै। पडिक्कमण वेलासीम सिज्झाय ध्यान करै। पीछै। उच्चारप्रश्रवणना(२४) थंडला पडिलेही पडिक्कमणों करै। (तथा) पाछलीरातें। वली सामायक नलेवे। (इतना निकेवल रात्रिसंबंधी पोसहलेवाना विकल्प जाणवा) ॥ ※ ॥ इति रात्रि पोसह विधि संपूर्णम् ॥

॥ अथ २४ थंडला पडिलेहण पाठ, लि० ॥

॥ ※ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहिया से ॥१॥ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥२॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मज्झे पासवणे अणहिया से ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ ※ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥७॥ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥८॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥१०॥ आगाढे मज्झे पासवणे अहियासे ॥११॥ आगाढे दूरेपासवणे अहियासे ॥१२॥※॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥१४॥ अणा

गाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥१५॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥१६॥ अणागाढे मज्झे पासवणे अणहियासे ॥१७॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥१८॥ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥१९॥ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥२०॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥२१॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥२२॥ अणागाढे मज्झे पासवणे अहियासे ॥२३॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥२४॥ थंडिला पडिलेहण पाठका ॥ ॥ ॥

॥॥ हिवे थंडिला कहां२ करणा सोकहेहै ॥॥

॥॥ ६ थंडिला सय्याके दोनुं तरफ दहणें पासे (३) वामपासे (३) पडिलेहै ॥६ थंडिला दरवज्जेके भीतर पासे दहिणें ३ वामें ३ पडिलेहै ॥ ६ थंडिला दरवज्जेके बाहर दोनुं पासे पडिलेहै ॥ ६ थंडिला (जहां) उच्चार प्रश्रवण की जगा दोनुं तरफ पडिलेहै ॥ इति २४ थंडिला पडिलेहणाविधि संपूर्णम् ॥॥ ॥॥ ॥॥

॥॥ अथ पाक्षिकादि पडिक्कमण विधि लि० ॥॥

॥ ॥ (तिहां) प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत । देवसिक पडिक्कमो । १ खमासमण देई । देवसी आलोइयं पडिक्कंता । इच्छा०सं०भ० । पक्खिय मुहपत्ती पडिलेऊं । (चोमासे) चोमासीयं मुहपत्ती । (संवछरीयें) संवछरी मुहपत्ती पडिलेऊं (कहै) पछै (गुरुकहै पडिलेहेह) पछै इछं कहै ।

दूजो खमासमण देई। मुहपत्ती पडिलेहो। वांदणा देई। तिहां (पक्खीमें) पक्खो वइक्कंतो। (चौमासी पडि०) चौमासी वइक्कंतो। संवत्सरीमें संवत्सरो वइक्कंतो। इम यथा योगें कहे। (पछै गुरु कहे) पुण्यवंतो देवसीनें स्थानिकै पाक्खिक (चउम्मासिक) संवत्सरिक भणज्यो। ठीकजयणा करज्यो। मधुर खरैं पडिक्कमज्यो। खासै सो विवरा सुद्ध खासज्यो। मांडलमें सावचेत रहज्यो। पछै सगलाही कहै। तहत्ति। पछै ऊठो। इच्छाका० सं० भ०। संबुद्धा खामणेणं। अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर। पक्खियं (३) खामेऊं (गुरु कहे खामेह) पछै मस्तकें अंजली करतो थको। इच्छं खामेमि पक्खियं(३) (कहो) गोडालीयें बैसी। मस्तकनमावो। दक्षिणहाथ गुरुसाह्मू करी। मुहपत्ती मुखें देई। (पक्खियें) पनरसण्हं दिवसाणं। पनरसण्हं राईणं। जंकिंचि अप्पत्तियं। (इत्यादि सर्वपाठ कहै) चउमासें। चउण्हं मासाणं। अट्ठण्हं पक्खाणं। वीसोत्तरसो राइंदियाणं। जंकिंचि अप्पत्तियं। (इत्यादि कहे। संवत्सरीयें) दुवालसण्हं मासाणं। चौवीसण्हं पक्खाणं। तिन्निसयसट्ठि राइंदियाणं। जंकिंचि अप्पत्तियं (इत्यादि कहे) तिवारे (गुरुपिण मिच्छामि दुक्कडं कहे)। तिहां दोय साधु उपरता हुवे (तो) पाखियें (३) चौमासीयें (५) संवत्सरीयें (७) साधुनें खमावे। पछै ऊठी। अवग्रह मांहि रह्यो कहै। इच्छाका०सं०भ०। पक्खियं आलोवूं (गुरुकहै आलोएह) पछै इच्छं आलोएमि। जोमेपक्खिओ (३) अइयारोकओ (इत्यादि सूत्रभणो) संक्षेपे (अथवा) विस्तारें। पाखी चौमासी। संवत्सरी। अतीचार

आलोवे । पठै । सव्वस्सविपक्खिय (३) इत्यादि । इच्छाकारि णसंदिस्सह पर्यंत कहै । तिवारे (गुरुकहै) चउत्थेण पडि क्कमह (चौमासे) छट्ठेण पडिक्कमह (संवत्सरीयें) । अट्ठमेण पडिक्कमह । इच्छं । तस्समिच्छामि दुक्कडं (कहो) द्वादशावर्त्त वांदणादेवै । पठै । इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् । देवसियं आलोइयं पडिक्कंता (१) पत्तेयखामणेणं । अब्भुट्ठिओमि अ ब्भिंतरपक्खियं(३) खामेऊं । (गुरुकहैखा०) पछै । इच्छंखा मेमिपक्खियं । ३ (इत्यादि पाठ) सर्व पूर्वे कह्यो । तिमकहो । मिच्छामि दुक्कडं देई । खमावे । पठै । बे वांदणादेई । भग वन देवसियं आलोइयं पडिक्कंता पक्खियं(३) पडिक्कमावेह । (गुरु कहै सम्मं पडिक्कमह) । पठै इच्छंकहो । करेमि भंते सामाइयं । इच्छामि ठामि काउसग्गं । जोमेपक्खिओ (३) (इत्यादि कहो) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहो । काउसग्ग करै) गुरुपासो सूत्र कहै । ते सांभले । अनें गुरु थको जूदापडि क्कमता हुवे (तो) एक श्रावक खमासमण देई कहै । भग वन सूत्र भणुं । (गुरु० भणह) । इसो वचन मनमें धारी । (इच्छं कहो । ऊभो थको । हाथ जोडी०मुहपत्ती मुखे देई । तीननवकार कहो । मधुर स्वरे सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो । (वंदित्तु सूत्रगुणें) बीजाश्रावक । करेमि भंते० । इच्छामि ठा उं काउसग्गं । तस्सुत्तरी (अन्नत्थू कहो) काउसग्गमे रह्यां सुणें (सूत्रप्रांते) णमो अरिहंताणं कहो (काउसग्ग पारी) ऊभा थका तीन नवकार गुणो (वैसै) पठै तीन नवकार(३) करेमि भंते कहो । इच्छामि पडिक्कमिउं । जोमे पक्खिओ(३) इत्यादि कहो । (वंदित्तु सूत्र गुणें) पडिक्कमे देवसियं सव्वं ।

(एहनें ठिकाणें) पडिक्कमे पक्खियं। चौमासीयं। संवच्छरियं (सव्वं कहे) पछे उठी। अब्भुट्ठिओमि आराहणाए (इत्यादि परिपूर्णं भणी) खमासमणदेई। इच्छा०सं०भ०। मूलगुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धि निमित्तं। काउसग्ग करूं (गुरुकहे करेह) पछे इच्छं कही। करेमि भंते सामा० इच्छामि ठाउं काउसग्गं। तस्स०। अन्नत्थू। (इत्यादि कही) पाखीयें (१२) लोगस्स। चौमासे (२०) लोगस्स। संवच्छरीयें (४०) लोगस्सनो काउसग्ग करे। एक नवकार ऊपर। काउसग्ग करी। (पारी) लोगस्स कहे। बेसी। मुहपत्ती पडिलेही। बेवांदणा देई। इच्छा०सं०भ०। समाप्ति खामणेणं। अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर। पक्खियं (३) खामेउं (गुरु कहे खामेह) पछे। इच्छं खामेमि पक्खियं। (इत्यादि पाठ) पूर्वें कह्यो। तिम कहे। (पछे) इच्छाका०सं०भ०। पाखी (३) खामणा खामूं (गुरु कहे)। पुण्यवंतो। च्यारवेर खमासमण देई। तीन२ नवकार कहो। पाखी (३) समाप्त खामणाखामइ। पछें। श्रावक एक खमासमण देई। मस्तक नोंचो नमावी। तीननवकार गुणें। इम च्यार वार कहे। पछें। (गुरु कहे नित्थारग पारगाहोइ) पछे श्रावक कहे। इच्छं इच्छामो अणुसट्ठिं (कही) (गुरु कहे) पुण्यवंतो। पाखीनें लेखे। एक उपवास। (अथवा) दोय आंबिल (अथवा) तीन नीवी। (अथवा) च्यार एकासणां। (अथवा) बेहजार सिज्झाय करी। एक उपवासनी पैठ पूरज्यो। पाखीनें स्थानकें देवसिक भणिज्यो। इम चौमास एसर्व दुगणो कहणो। संवच्छरीयें तिगुणो कहणो। पछे जिणें तपकीधो

हुवे। ते पइडियं कहे। न कीधो हुवे। ते कहे। तहत्ति। पछे वे वांदणां देइ। अब्भुट्ठिओमि अभिंतर। देवसियं खामेमि। (इत्यादि कहे) पछे वे वांदणा देइ। आयरिय उवज्झाए० तीन गाथा कहे। इम आगे सर्व विधि। देवसिक पडिक्कमणानो करे। पिण इतरो विशेष है। श्रुतदेवतानो काउसग्ग करी स्तुति कहे। पीछे भवणदेवयाए करेमि काउसग्गं (इत्यादिविधें) भवनदेवतानो काउसग्ग करो। स्तुति कहो। क्षेत्रदेवतानो काउसग्ग करे। (तथा) तीने पर्वें। वड़ो स्तवन अजित शांति कहणो। लघुस्तवन। उपसर्गहर स्तोत्र कहणो। तथा पडिक्कमणो पूरो हुवां। पछें। एक श्रावक गुर्वाज्ञायें। नमोर्हत्सिद्धा कहो। शांतिस्तोत्र १७ गाथा प्रमाण कहे। बीजा सर्वसुणें। जिणांने रात्री पोसह न हुवे (ते) पोसह सामायिक पारी सांभले। इति पाक्षिकादि (३) पडिक्कमणविधिः॥ ॥

॥ ॥ हिवे रात्रि प्रतिक्रमण मांहे छमासो तपचिंतवीये तेविधिलिखयेछे॥ ॥ श्रीमहावीर स्वामीना तीर्थमें उत्कृष्टो छमासी तपछे। रे जीव ते करि सके नकरि सकु इम एक दिन ऊणो। करि सके (नकरि सकुं। इम एकेक दिन ऊणो करतां। उगुण तीस दिन ऊणा छमास हुवें। तिहां सघी पूछियें। पछे। (पंचमासी) करि सके। नकरि सकुं। एक दिन ऊणो पंचमासी करि सकें (नकरि सकु)। इम एकेक दिन ऊणो करतां। उगुण तीस दिन ऊणो। पंचमासी लगें पूछियें। पछे। (चउमासी) एक दिन ऊणो।

दोय दिन ऊणो । इमहीज त्रिमासी । दुमासी । यावत, (एक मासकरि सकैं) । नकरि सकुं । पछै । एक दिन ऊणो कियां । सोलह दिननो चौत्रीसम तप थाइ । ते करि सकै (नकरि सकुं । पछै । बे बे भात घटावतां पूछिये । (ते इम) बत्रीसम करि सकै (नकरि सकुं) । (इम) त्रीसम । अठ्ठावी सम । छावीसम । चौवीसम । बावीसम । वीसम । अठा रसम । चौदसम । बारसम । दशम । अट्ठम । छट्ठ । चउत्थ । तप करि सके । (नकरि सकुं) । (इम) आंबिल । निवी । एकासणो । पुरिमड्ढ । पोरसी । नवकारसी । (तांई) जो पच्च क्खांण करवो हुवै । (सो) मनमें धारी । काउसग्ग पारै । इति छम्मासी तप चिंतवन विधिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥❋॥ दुहा ॥ श्रीजिन चंदसुरिंद । नितुराजत गछरा आन । वाचक अमृत धर्मगणि । सीस चमा कल्याण ॥ १॥ सय अठार अड़तीस मझि । जेशलमेरु सुथान । श्रावक विधि संग्रह कियो । मूल ग्रंथ अनुमान ॥ २॥ श्री जिनप्रभ सूरि कृत विधि प्रपा ॥१॥ खरतर मंडलाचार्य । तरुणप्रभ सूरि कृत षडावश्यक बालाबोधं ॥२॥ सामाचारीशतकं ॥३ वंदारुवृत्तिं ॥४॥ प्रवचनसारोद्धारवृत्तिं ॥५॥ आचारदिन करं ॥६॥ श्रीजिन पतिसूरि सामाचारी पत्रं ॥७॥ शिवनि धानोपाध्याय कृत लघु विधि प्रपादि ॥८॥ ग्रंथांश्च विलोक्य अयं विधि प्रकाशो निर्म्मित ॥ इति श्रावकविधि प्रकाशः परिपूर्णतामगात् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अथ साधू (अने) श्रावक । दोनु टंक पडिकमणो करै । तेहनो हेतू (नांव) सुतलब लिखतेहैं ॥ ❋ ॥ तिहां पापसेती निवर्त्तन होणो (ते) पडिक्कमणोकहियें । ते ग्यानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपाचार ४ बीर्याचार ५ (एपंच आचारसुद्धि निमित्तें) श्रीगुरु साखें । अनें गुरु अभावे थापनाचार्यशाखे पडिकमणो करवो (तेहना ६ अध्ययनछै) सामाइयं१ । चउवीसत्थउ २ । वंदणयं ३ । पडिक्कमणं४ । काउसग्गो५ । पच्चक्खाणइमिति (तिहां) सामायिकें करी चारित्राचारनो सुद्धिथायै । चउवीसत्थें करी दर्शनाचारनी सुद्धता थायै । वांदणें करी ग्यानादिक आचारसुध थायें । पडिक्कमणें करी ग्यानादिकना अतीचारांनी सुद्धि थायै । अनें पडिक्कमणाथी जे अतीचार शुद्धनथाइ (ते)काउसग्गें शुद्धथाइ । पच्चक्खाणें करी तपाचार शुद्धथाइ । अनें वीर्याचार इणें ६एकरी शुद्ध थाइ ॥❋॥ हिवे देववांदनादि अनुक्रमें पडिकमणो थायै । तेहना हेतुकहे ॥❋॥ सुद्धपडिक्कमणो मोक्षनो कारणछै । ते मंगलविना निर्विघ्न पणें प्रमाण नचढै । तिसवास्तै धुरें अवश्य मंगल करवो । तिहां मंगल तो अनेक प्रकारनो है । पिण श्रीदेवगुरु वांदन सरीखो बीजो मंगल कोई नही (तेमाटे) प्रथम नमस्कार शक्रस्तव पूर्वक च्यारे थुइए देववांदी । च्यारे खमासमणे गुरुवांदे । लोकमें पिण पहिलां राजानें नमस्कार करी (पछे) प्रधान प्रमुखने नमें । इहां राजा समान तीर्थंकर (अनें) प्रधानादिक समान आचार्यादिकछै (इम मंगल करी) पडिकमणानें धुरे समस्त अतीचारनो बीजक (सव्वसवि देवसिय) इथा

दि कह्यो) मिछामि दुक्कडं देवै। पछै ज्ञानादिक मांहि। चारित्रना अधिक पणा ऊंती। प्रथम चारित्राचार शुद्धि निमित्तें। करेमि भंते सामाइय (मित्यादि तीन सूत्र भणे) तिहां समता परिणामें सर्व धर्म कार्यकरवा (ते माटें) प्रथम सामायिक आवश्यक कह्यो ॥※॥ पछै प्रभा तनी पडिलेहण थी मांडी। दिवसना कीधा अतीचार गुरु आगें आलोइवाछै। ते धार्यां विना भलो रीतें आ लोवाइ नही (ते माटें) काउसग्ग करै। अतीचार मनमें धारै। पछै लोगस्स कहै (जे माटे) एसामायिकादिक सुद्ध मार्ग इहां ऋषभादि चउवीस तीर्थंकरे आपसेव्यो (अनें) भव्यजीवानें उपदिस्यो। ते कारणें। बीजे आवश्यकें चउ वीस भगवंतनी स्तवनाकरवी कही ॥※॥ पछै धर्ममांहिं विनयना प्रधान पणा ऊंती। गुरुनें वांदणादेई। अती चार आलोइवा। अनें वांदणाछै। तेशरीर सुद्ध विना न देणो (तेमाटे) प्रथम मुहपत्ती पडिलेही। सुद्धकरी। तिण थी काया पडिलेहै। तीजे आवश्यके वांदणा देवी कही ॥※॥ पछै गुरु आगे। अतीचार आलोई प्रायश्चित्त मागें (गुरु कहै पडिक्कमह) (जे माटें) कितना इक अतीचार तो आलोयां थी सुद्ध थया। अनें कितना इक न थया (ते सुद्ध करवानो) चोथो आवश्यक पडिकमणो कह्यो ॥ ※ ॥ तिहां उत्तमकार्य सर्व नवकार पूर्वक करवा (तेमाटें) प्रथम नवकार कहै। अनें समभाव धारी पडिक्कमवुं (ते माटे) पछै सामायिक सूत्रकहै। तिवार पछै साधु श्रावक आप आपणा अतीचार पडिक्कमवा निमित्तें सूत्र भणें। पछै

समस्त अतीचार रूप भार निवर्त्त वे करी। हलको हुवो थको। ऊभो थई सूत्र पूर्ण करै। इम अतीचार पडिक्क मी। श्रीगुरुने विषे पोतानों कीधो कोई अपराध खमाइ वानिमित्तें। वांदणा देवै। पछै गुरु प्रमुखने खमावै। काउ सग्ग निमित्तें। फेर वांदणा देवै। ए वांदणा गुरुनें अप णो आधी न मणो जणाइवा निमित्तें पिण जाणवो। पछै (श्रावक) आयरिय उवज्झाए (इत्यादी तीन गाथा भणें) हिवे आलोयण पडिक्कमणा थी शुद्ध न थया (जे) चारित्रा दिक नामोटा अतीचार (ते) शुद्ध करवानें अर्थे पांचमो आवश्यक काउसग्ग करै ॥*॥ तिहां। प्रथम सामायिका दि तीन सूत्र भणी चारित्राचार शुद्धि निमित्तें दोइ लोगस्स चिंतवै। इहां तीजी वार वले सामायिक उच्चा रण कीधो (ते) सर्व धर्म क्रिया समता परिणामें कीधी सफल थाइ। ए अर्थे। पछै ज्ञान थी समकित अधिको है (तेमाटें) दर्शनाचार शुद्धि निमित्तें लोगस्स कहो। सव्व लोए (इत्यादि सूत्र भणे) एक लोगस्सनो काउसग्ग करै। पछै श्रुतज्ञानाचार शुद्धि निमित्तें। पुक्खरवर दीवड्ढे (क ही) सुयस्स भगवउ (इत्यादि भणी) बीजो एक लोगस्सनो काउसग्ग करै। इहां प्रथम काउसग्ग दोय लोगस्सनो कह्यो। ते ज्ञानादिक थी चारित्रनो अधिकपणो है (ते माटें) वली। ग्यानादिकनो अपेक्षायें चारित्रनें अतीचार घणा लागै। तेमिण कारण जाणवो। पछै। ज्ञान। दर्शन। चारित्राचार। निरतीचार पणें आचरवाना फलभूत श्रीसिद्ध भगवान तिणारी स्तवना सिद्धाणं बुद्धाणं (इत्यादि

भणे) पछै हिवणां उपगारी श्रीमहावीर स्वामी छै (ते माटे) जो देवा णविदेवो (इत्यादि तेहनी स्तवना करै) पछै महातोर्थपणा हुंती। उज्जिंतसेल सिहरे (इत्यादि तीर्थ स्तवना करै) इम चारित्र दर्शन ज्ञानाचार सुद्ध करी। समस्त धर्मक्रियानो श्रुतज्ञान कारण छै (तेमाटें) श्रुत समृद्धि निमित्तें। श्रुतदेवतानो काउसग्ग करी स्तुति कहै। पछै जेहना क्षेत्रमें रहियै। तेक्षेत्र देवतानो काउसग्ग करी स्तुति कहै। (सिद्धांत माहें)। तीनें अतें निरंतर अवग्रह याचना रूप भावना कहीछै। तेसाचवण निमित्तें एकाउसग्ग संभवै है। ए दोन्हुं काउसग्ग पूर्व्वधारीये आचर्या छै। (आवश्यकवृत्ति चूर्णि भाष्यादिक मांहे) श्रीहरिभद्र सूरि प्रमुख मोटे आचार्यें कह्याछै (तेमाटें) प्रमाण है। पछै काउसग्ग थी। कोई अतीचार सुद्ध नथया ते सुद्धकरवांनें। छठो आवश्यक पच्चक्खाण कह्यो। तेपूर्वें कीयो होय (तो) इहां तेहनें ठामें। मंगलीक निमित्तें। नवकार एक कहो। मुहपत्ती (अनें) कायापडिलेही। श्रीगुरुनें वांदणादेई। इच्छामो अणुसिट्ठिं कहै। तुम्हारी आज्ञायेंम्हें पडिकमणो कीधो। एहवुं गुरुनें जणाविवा निमित्तें। ए वांदणा कह्या। इतरै पडिकमणो परिपूर्णथयो ॥५॥ हिवै निर्विघ्न पणें पडिक्कमणो पूर्ण होवा थकी वधतो हर्ष ऊपनो तिणें करी। गुरु एक स्तुति कह्यां थका। सर्वसाधु श्रावक वर्द्धमान स्वरे तीन स्तुति कहै (इहां गुरुना वचननें अंते) शिष्यादिक। नमो खमासमणाणं (एहवो गुरुनें नमस्कार कहै) ते गुरुवचननो बहुमान रूपछै। पछै शक्रस्तव कहै।

आचार्यादिकनें वांदै । सर्व धर्मक्रिया श्रीदेवगुरुभक्ति पूर्वक सफल थाये (ते माटें, पडिक्कमणानें प्रारंभे (तथा) अंतें देवगुरुवंदन कह्यो ॥॥ हिवे पडिकमणां मांहे । या रिवादिसुद्धि निमित्तें । पूर्वें काउसग्ग कीधा छे । तोपिण वली विशेष शुद्धि निमित्तें । च्यार लोगस्सनो काउसग्ग करो । मंगलनिमित्तें लोगस्स कहे । जे साधु श्रावक आलसी हुवै । ते एहेतु समझौ । विधि पूर्वक उपयोग सुं पडिकमणो करै । ते लीलायें भवसमुद्र तरै । सिद्धि संपदा वरै ॥ ॥ आवश्यक इत्यादेः । प्रतिक्रमणहेतवः । निबद्धाभाषयोद्धृत्य । साधुश्राद्धादि हेतवे ॥ १ ॥ वाचकाखतधर्माणां । शिष्येणात्महितेछुना । क्षमाकल्याणगणिना । बीकानेर पुरे मुदा ॥२॥ इति प्रतिक्रमणहेतवः संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीदेवचंदजीकृत स्नात्रपूजा लि० ॥

॥॥ चौतीसे अतिशयजुत । वचनातिशयें जुत्त ॥ सो परमेसर देषभवि । सिंहासणसंपत्त ॥१॥ (ढाल) सिंहासण बैठा जगभाण । देखी भविजनगुणमणिखाण ॥ जेदीठे तुज निम्मलझाण । लहीयें परम महोदय ठाण ॥१॥॥ कुसुमांजलिमेलो आदि जिणन्दा । तोरा चरणकमल चोवीस पूजोरे ॥ चोवीस सोभागी । चोवीस वैरागी ॥ चोवीस जिनन्दा । कुसुमांजलिमेलो आदिजिणन्दा ॥१॥(१) (गाथा) जोनिश्र गुण पज्जवरम्यो । तसु अनुभवएगत्त॥ सुहपुग्गल आरोपतां । ज्योति सुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ (ढाल) जो निज

(१) इतना कही कुसुमांजली चढाईजे, चरणे टीकीदीजे कुसुमांजली ।

आतमगुण आणन्दि । पुग्गलिसंगे जेह अफन्दी ॥ जे परमे सर निज पदलीन । पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥☸॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणन्दा । तोरा चरण कमल चो० ॥ कुसुमांजलि०॥२॥ २ ॥☸॥ (गाथा) निम्मलनाण पयासकर । निम्मलगुणसम्पन्न ॥ निम्मल धम्मुवएसकर । सो परमप्पाधन्न ॥१॥ (ढाल) लोकालोक प्रकासकनाणी । भविजनतारण जेहनी वाणी ॥ परमानन्दतणी नीसाणी । तसुभगतें मुझ मति ठहराणी ॥ २ ॥☸॥ कुसुमांजलि मेलोनेम जिनन्दा तोरा च० ॥☸॥ ॥ ३ ॥ (३) (गाथा) जे सिज्झा सिज्झन्ति जे । सिज्झसन्ति अणन्त ॥ जसु आलम्बन ठवियमण । सो सेवो अरिहन्त ॥ १ ॥(ढाल) शिव सुखकारण जेह त्रिकाले । समपरिणामें जगतिनिहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग देखाले । इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणन्दा ॥ ४ ॥ (४) ॥☸॥ (गाथा) सम्मदिट्ठी देशजय । साहुसाहुणीसार ॥ आचारज उवज्झायमुणि । जो निम्मल आधार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ चौवीह संघे जेमनधार्यो । मोक्ष तणो कारण निरधार्यो ॥ विविह कुसुमवर जातगहेवी । तसु चरणें प्रणमंति ठवेवी ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो वीर

(२) कुसुमांजली चढाईजै । गोडा टीको दीजै । हाथमें कुसुमांजली लेई । नमोर्हत्सिद्धा० कही पढै ।

(३) कुसु० । दोनुं हाथे टीको दीजै । मुखै पढै । नमोर्हत्सि० ।

(४) कुसु० । मस्तकें टीको दीजै । पीछै चमर हाथमें लेकर मुखसें ऐसा करै ।

जिणन्दा ॥ तोरा चरणकमल० ॥५॥(५)॥॥ (वस्तु) सयल जिनवर २। नमिश्र मनरङ्ग ॥ कल्लाणकविड संठविश्र। करिसुधम्म सुपवित्तसुन्दर॥ सयइकसत्तरितित्थंकर। इक समय विहरन्ति महियल। चवणसमय इगवीस जिण॥ जम्म समय इगवीस। भत्तिहभावें पूजीया। करोसंघ सु जगीस॥ ६ ॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥

॥॥ एकदिन अचिराकुलरावती। एदेशी ॥॥ भवती जयसमकित गुणरम्या। जिन भक्तिप्रमुख गुणपरिणम्या॥ तजि इन्द्रियसुख आसंसना। करी थानक वीसनो सेवना ॥ १ ॥ अतिराग प्रशस्त प्रभावता। मनभावना एहवी भावता॥ सवजीव करूं शासन रसी। ऐसी भावदयामन उल्लसी॥२॥ लहो परिणाम एहवूं भलूं। निपजावी जिन पद निरमलं॥ आउवंधेविचइ एकभव करी। श्रद्धासंवेग ते थिरधरी॥३॥ तिहां चवीश्र लहेनर भवउदार। भरते तिम ऐरवत तेजसार॥ महाविदेह विजयपरधान। मज्झ खंडे अवतरै जिन निधान॥४॥ (ढाल) पुन्ये सुपनाहेदेखे। मनमां हरखविसेषि॥ गजवर उज्जल सुन्दर। निरमलऋषभ मनोहर॥ १ ॥ निरभय केसरी सीह। लषमी अतिहि अबीह॥ अनुपम फूलनी माला। निरमल शशिसुकमाला ॥ २ ॥ तेज तरणि अति दीपै। इन्द्रधजा जगजीपै॥ पूरण कलस पंडूर। पद्मसरोवर पूर॥ ३॥ इग्या रमें रयणा यर। देखे माता जी गुणसायर॥ बारमें भुवन विमान। तेरमें रतन निधान॥ ४॥ अगनि शिखा निरधूम। देखे

(५) कुसु० चढ़ाईजे। दोनु खांधे टीकी दीजै। सु० नमोर्हं सि०

माताजी अनोपम॥ हरखो रायनें भासै। राजा अरथ प्रकासै ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर। होस्यै पुत मनोहर॥ इंद्रादिकजसु नमसै। सकल मनोरथ फलसै ॥ ६ ॥ ॥ ॥ (वस्तु) ॥ ॥ पुन्य उदय २ ॥ उपना जिन नाह। माता तव रयणी समें। देखि सुपन हरखंत जागीअ। सुपन कही निज कंतनें ॥ सुपन अरथ सां भलै सो भागीय। त्रिभुवन तिलक महागुणी॥ हो स्यै पुत निधान। इंद्रादिक जसु पायनमी ॥ करसै सिद्धि विधान ॥॥ ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ चंद्रा उल्लालानी ॥॥ सो हमपति आसन कंपीयो। देई अवधे मन आणंदी यो ॥ मुझ आतम निरमल करण काज। भवजल तारण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ भव अटवी पारगसत्थवाह। केवलनाणा इय गुण अगाह॥ शिव साधन गुण अंकूर जेह। कारण उलट्यो आसाढि मेह ॥२॥ हरखै विकसे तव रोमराय। वलयादिकमां निज तनु नमाय॥ सिंहासणथी उठ्यो सुरिंद। प्रणमंतो जिन आनन्द कन्द ॥ ३ ॥ सगअडपय समुहा आवितत्थ। करी अंजली प्रणमिअ मत्थ सत्थ ॥ मुख भाषे एत्थय आजसार। तियलोयपहु दीठो उदार ॥४ रेरे निसुणो सुरलोयदेव। विषयानल तापित तनु समेव॥ तसु शान्तिकरण जलधरसमान। मिथ्याविष चूरण गरुडमान ॥५॥ ते देव जगत्तारण समत्थ। प्रगट्यो तसु प्रणमी हवोसनत्थ॥ इमजंपी सक्रस्तव करेवि। तव देवदेवी हरषे सुणेवि ॥६॥ गावे तवरंभा गीतगान। सुरलोक हवोमंगल निधान॥ नरखेत्रें आरजवंसठाम। जिनराज वधे सुर हर्ष

धाम ॥ ७ ॥ पिता माता धरे उछव अलेष। जिन शासन मङ्गल अतिविशेष ॥ सुरपति देवादिक हरखसङ्ग। संयम अरथो जननें उमग्ग ॥ ८ ॥ सुभवेला लगनें तीर्थनाथ। जनम्या इंद्रादिक हर्ष साथ॥ सुखपाम्यां त्रिभुवन सर्वजीव ॥ वधाइ वधाइ थई अतीव ॥ ६ ॥ (ई) (ढाल) शान्तिनें कारणें इंद्र कलसाभरे ॥ एदेशी ॥ ॥ श्रीतीरथपतिनो कलसमज्जन। गाइये सुखकार ॥ नरखेत मंडण दुह विहंडण। भविक मन आधार ॥ तिहां रावराणा हरष उछव। थयो जगजयकार ॥ दिशिकुमरि अवधि विशेष जाणी। लह्यो हरष अपार ॥ १ ॥ निज अमर अमरी सङ्ग कुमरी। गावती गुणछन्द ॥ जिन जननी पासे आय पहुती। गहकती आणन्द ॥ हेमायतें जिनराज जायो। सचिवधायोरम्भ ॥ अमजन्म निर्म्मल करणकारण। करिस सूइं अकम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमि सोधन दीप दरपण। वायवीं ऊणधार ॥ तिहां करियकदली गेह जिनवर। जननी मज्जन कार ॥ वरराखडी जिनपाणि बांधी। दीयै इम आसीस ॥ युगकोडकोडी चिरंजीवो। धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥

॥॥ (ढाल) उल्लालानी ॥॥ जिनरयणीजी दशदिश उजलताधरै ॥ सुभलगनेंजी ज्योतिस चक्र ते संचरै। जिनजनम्याजी जिण अवसर माता घरै ॥ तिण अवसरजी इं

(ई) ऐसा कहके। सर्वस्नात्रिया तीन प्रदक्षणा देकर। चैत्यवंदण। सब्बे तिविहेण वंदामि। पर्यन्त करै। पीछे रोली (तथा) केसर का जीमणे हाथमें साथिया करै। धूप देवे। भगवंतकुं तीन वेर नमस्कार करै। कलस हाथमें ले। मुखसें ऐसा पढे। श्रीतीर्थप०

द्रासण पणथर हरे ॥ (त्रूटक) थरहरै आसन इंद्र चिंतै कौन अवसर एवन्यो। जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि आणंद ऊपनो॥ निज सिद्धसंपति हेतु जिनवर जाणि भगतें ऊमह्यो। विकसंत वदन प्रमोद वधतै देवनायक गहगह्यो॥१॥ (ढाल) तब सुरपति जी घंटानाद करावए॥ सुरलोके जो घोषणा एह दिरावए। नरखेतें जो जिन वरजनम हुवो अछै। तसुभगतें जो सुरपति मंदिरगिर गछै॥ (त्रूटक) गछै मंदिर शिषर ऊपर भुवन जीवन जिनतणो। जिनजनम उछव करण कारण आवज्यो सवि सुरगणो। तुम सुद्ध समकितथास्यै निरमल देव देवी नि हालतां। आपणा पातिक सर्वजास्यै नाथ चरणपषालतां॥ ३॥ (ढाल) इम सांभल जी सुरवर कोडि वहुमिली। जिनवंदण जी मंदिर गिरिसाहमी चली। सोहमपतिजी जिनजननी घरि आविया। जिनमाताजी वांदी स्वामिवधा विया। (त्रूटक) वधाविया जिनवर हर्ष बहुलै धन्यहुं कृत पुन्यए। त्रैलोक्य नायक देवदीठो मुझ समो कुण अन्यए। हे जगत जननी पुत्र तुम्हचो मेरु मज्जन वरकरी। उछं गतुम्हचै वलिय थापिस आतमा पुन्यें भरी॥ ४॥ (ढाल) सुरनायकजी जिन निज करकमलें ठव्या॥ पांच रूपे जो अतिसय महिमायें स्तव्या। नाटक विधिनी तवबत्तीस आ गल वहै। सुरकोडी जी जिनदरसणनें ऊमहै (त्रूटक) सुर कोडि कोडी नाचती वलिनाथ सचिगुणगावती। अपछरा कोडी हाथजोडी हाव भाव दिखावती। जय जयो तूं जिन राजजगगुरु एम दै आसीसए। अम्हताण सरण आधार

जीवन एक तूं जगदीसए ॥ ४ ॥ (ढाल) सुरगिरवर जी । पांडुक वनमें चिहुंदिसे । गिरसिल परजी सिंहासण सासय वसे । तिहां आणीजो शक्रें जिनखोले ग्रह्या । चौस ट्ठी जो तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ (त्रूटक) आविया सुर पति सर्वभगतें कलश श्रेणिवणावए । सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ उंषधि सर्व्ववस्तु अणावए । अच्चुय पति तिहां हुकमकीनो देवकोडाकोडिनें । जिनमज्जनारथ नीरल्यावो सवे सुरक रजोडिनें ॥५॥ (ढाल) शांतिनें कारणे इंद्रकलशाभरे । ए देशी ॥ ⁂ ॥ आत्म साधन रसी देवकोडीहसी । उल्लसी नें धसी खीरसागर दिसी ॥ पौमदह आदि दह गंगपमु हानई । तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥१॥ जातिअड कलश करि सहस अट्ठोत्तरा । छत्र चामरय सिंहासणे सुभ तरा । उपगरण पुप्फचंगेरि पमुहासवे । आगमें भासिया तेम आणीठवे ॥२॥ तीर्थजल भरिय कर कलस करि देवता गावता भावता धर्म्म उन्नतिरता । तिरिय नर अमरनें हर्ष उपजावता । धन्य अम्ह सगति सुचि भगति इम भा वता ॥३॥ समकित बीज निज आत्म आरोपिता । कलश पाणीमिसें भक्तिजल सींचता । मेरुसिहरो वरे सर्वआव्या वही । शक्रउच्छंग जिनदेखि मनगहगही ॥ ४ ॥⁂॥(गाथा) ॥⁂॥ हंहो देवा अणाई । कालो अदिट्ठपुव्वो । तिलोय ता रणो । तिलोयबंधु । मिच्छत्तमोह विद्धंसणो । आणाइतिन्ना विणासणो । देवाहि देवोदिट्ठव्वो । दिट्ठो हिअयकामेहिं ॥१ ॥⁂॥ (ढाल तेहिज) ॥⁂॥ एमपभणंति वणभुवण जोई सरा । देव वेमाणिया भत्तिधम्मायरा ॥ केविकप्पट्ठिया केवि मित्ता

णगा। केइवर रमणा वयणेणअइ उछ्रगा॥५॥(वस्तु)॥ तत्थु अच्चय२ इंद्र आदेश। करजोड़ि सवदेवगण। लेयकलस आदेसपामीय। अदभुतरूप सरूपजुय। कवणएह पुछंतसामीय॥ इंद्र कहै जगतारणो। पारग अम्हपरमेस। नाय कदायक धम्मनिहि। करीयें तसु अभिसेस॥ १॥॥ (ढाल ६मी)॥॥ तीर्थकमलवर उदक भरीने। पुष्कर सागर आवें (एहनी)॥॥ पूर्णकलस सुचि उदकनी धारा। जिनवर अंगें न्हावे। आतम निरमल भाव करंते वधतें शुभपरिणामें। अच्युतादिक सुरपति मज्जन लोकपाल लोकांत। सामानिक इंद्राणी पमुहा इम अभिषेक करंत॥ १॥ पु०(गाहा)॥॥ तव ईसान सुरिंदो। सक्कं पभणेइ करिअ सुपसावो। तुम्ह अंके मह नाहो। खिण मित्तं अम्ह अप्पेह॥ १॥ तासक्किंदो पभणइ। साहम्मीय वच्छलंमि बहुलाहो। आणाइवंतेणं गिण्हह होउकय त्थाभो॥२॥ ।।(१)(ढाल)॥॥ सोहमसुरपति वृषभ रूप करि। न्हवण करै प्रभु अंगे। करिय विलेपण पुष्फ मालठवि। वर आभरण अभंग। सो०॥१॥ तव सुरवरबहु जय२ रव करै। निच्चै धरि आणंद। मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यो। भांजिसु हिव भवफंद॥ सो०॥ २॥ कोड़ि बत्तीस सोवन उवारी। वाजंतै वरनाद। सुरपति सिंघ अमर श्रीप्रभुने। जननीनें सुप्रसाद।३सो०॥ आणीथापै एम पयंपै। अम्हनिसतरिया आज। पुत्र तुम्हारो धणीय

(१) इतना कहि सव स्नातिया प्रभूजी उपरि कलश ढाले सुखसें ऐसा कहै। सोहमसुरपति०।

अम्हारो । तारण तरण जिहाज ॥४सो०॥ मात जतनकरि राखि ज्यो एहनें । तुम्ह सुत अम्ह आधार । सुरपति भगति सहितनंदीसर । करै जिन भगति उदार ॥५सो०॥ निय निय कप्प गया सवि निर्ज्जर । कहितां प्रभुगुणसार । दिक्षा केवल ज्ञान कल्याणक । इच्छा चित्तमझार ॥सो०६॥ खरतर गछ जिन आणारंगी । राज सागर उवज्झाय । ज्ञान धरम दीप चंद सुपाठक । सुगुरुतणै सुपसाय ॥सो० ७॥ देवचंद निजभगतें गायो । जनम महोछव छंद । बोधवीज अंकूरो उलस्यो । संघ सकल आणंद ॥सो०८॥॥ (ढाल) ॥॥ इम पूजा भगते करो । आतमहितकाज । तजिय विभाव निजभावना । रमतां सिवराज ॥१ इ०॥ काल अनंते जे हुवा । होस्यै जेह जिणंद । संपैसीमंधर प्रभु । केवलनाण दिणंद ॥ इ० २ ॥ जनम महोछव इणि परै । श्रावक रुचिवंत । विरचे जिन प्रतिमातणो । अनुमोदनखंत ॥इ० ३॥ देवचंद जिनपूजना । करतां भवपार । जिनपडिमा जिनसारिखो । कही सूत्र मझार ॥ इम० ४ ॥ इति स्नात्रपूजा विधि संपूर्णम् ॥॥ ॥॥ ॥॥

॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते (१) ॥

॥॥(दुहा) गंगामागध क्षीरनिधि । औषधमिश्रितसार । कुसुमें वासित शुचिजलें । करो जिन स्नात्र उदार ॥१॥ (ढाल) मणिकनकादिक अष्टविध करि भरी कलस रूपार । शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसुनहो दुरित

(१) जल हाथमें लेकै खडा रहै ।

प्रचार ॥ मेरुशिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवणअमान। करता वरता निज गुण समकित दृद्धि निधान ॥१॥ (छंद) हर्ष भरी अपराछंद आवै। स्नात करि एम आसीस भावै। जिहां लगै सुरगिरि जंबुदीवो। अमतणा नाथ जीवातु जीवो ॥ ३ ॥ ⁂ ॥ (स्लोकः) ॥ ⁂ ॥ विमल केवल भासन भास्करं। जगति जंतुमहोदय कारणं। जिनवरं बहुमान जलोघतः। शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ⁂ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने अनंतानंत ज्ञान श क्तये जन्मजरा म्रत्यु निवारणाय। श्रीमज्जिनेंद्राय जलंयजामहे स्वाहा ॥१॥ इति जलपूजा ॥⁂॥

॥⁂॥ अथ चंदनपूजा(२) ॥⁂॥

॥⁂॥ (दुहा) बावना चंदन कुमकुमा। म्रगमदनें घन सार ॥ जिनतनु लेपै तसुटलै। मोहसंतापविकार ॥१॥ (ढाल) सकलसंताप निवारण तारण सहु भविचित्त। परम अनीहा अरिहा तनु चरचो भवि नित्त॥ निज रूपै उपयोगी धारी जिनगुणगेह। भावचंदन सुह भाव थी टालै दुरित अछेह ॥ २ ॥ (चालि) जिन तनु चरच तां सकल नाकी। कहै कुग्रह उग्याता आन थाकी ॥ सफल अनिमेषता आज म्हाकी। भव्यता अम्ह तणी आज पाकी ॥ ३ ॥ (स्लोकः) सकलमोह तिमस्र विनासनं। परमशीतल भावयुतं जिनं॥ विनय कुंकुम चंदनदर्शनैः। सहजतत्वविकाशकृतेर्च्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने। अन न्तानन्तज्ञानशक्तये॥ जन्मजराम्रत्यु निवारणाय। श्रीम

(२) चंदन हाथमें लेकै खडा रहै।

जिनेंद्राय चंदनं । यजामहे स्वाहा ॥२॥ इति चंदनपूजा ।

॥※॥ अथ तृतीय पुष्पपूजा (३) ॥※॥

॥※॥ (दुहा) शतपत्री वरमोगरा । चंपक जाइ गुलाब ॥ केतकी दमणो वौलसिरि । पूजो जिन भरि ठाव ॥१॥ (ढाल) अमल अखंडित विकसित सुभसुमनी घनजाति । लाखीणो टोडरठवो अंगीरचो बहुभांति ॥ गुणकुसुमें निज आतम मंडित करवाभव्य ॥ गुणरागी जडत्यागी पुष्प चढावो नव्य ॥ २ ॥ (चालि) जगधणी पूजतां विविधफूले । सुरवरा ते गिणें त्रण अमूले ॥ खंतिधरमानवा जिनपद पूजै । तसुतणा पाप संताप धूजे ॥ ३ ॥ (श्लोकः) विकचनिर्मल शुद्धमनोरमै । विशदचेतन भाव समुद्भवैः ॥ सुपरिणाम प्रसूनघनैर्नवैः । परमतत्वमयं हि यजाम्यहं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने० । पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ ※ ॥ इति पुष्पपूजा ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ धूपपूजा (४) ॥※॥

॥※॥ (दुहा) कृष्णागर मृगमदतगर । अंबर तुरक लोबान । मेल सुगंध घनसार घन । करो जिननें धूपदान ॥ १ ॥ (ढाल) धूपघटी जिम महमहै तिम दहै पातिकवृन्द ॥ अरति अनादिनी जावै पावै मन आणंद ॥ जे जिन पूजे धूपैं भव कूपैं फिर तेह ॥ नावै पावैं ध्रुवघर आवै सुक्ख अछेह ॥ २ ॥ (चालि) जिनघरे वासतां धूपपूरै । मि

(३) पुष्प हाथमें लेकै खडा रहै।

(४) धूप हाथमें लेकै खडा रहै ।

ष्टत्तदुर्गन्धता जाइ दूरै ॥ धूप जिम सहज ऊर्द्ध गत स्वभा वे। कारिका उच्चगति भावपावे ॥ ३ ॥ (स्लोक:) सकलक. र्म्म महें धनदाहनं। विमल संवर भाव सुधूपनं ॥ असुभपु द्गल संगविवर्ज्जितं। जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षित: ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने०। धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ ॥ इति धूप पूजा ॥ ॥

——*——

॥॥ अथ दीपपूजा (५) ॥॥

॥॥ (दुहा) मणिमय रजत ताम्रना। पालकरी घृत पूर। वत्तौ सूल कसुंवनी। करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥ (ढाल) मंगलदीप वधावो गावो जिन गुणगीत ॥ दीपतणी जिम आलिका मालिका मंगलनीत ॥ दीपतणी सुभ ज्योती द्यो तो जिनमुखचंद ॥ निरखो हरखो भविजन जिम लहो पूर्णानंद ॥ २ ॥ (चालि) जिनगृहे दीपमाला प्रकासै। ते हथी तिमर अज्ञान नासै ॥ निजघटै ज्ञानज्योति विकासै। तेहथी जगतणा भावभासै ॥ ३ ॥ (स्लोक:) भविकनिर्म्मल बोधविकासकं। जिनगृहे सुभदीपक दीपनं ॥ सुगुण राग विसुद्धसमन्वितं। दधतुभावविकासकृतेर्जना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने०। दीपं यजामहे स्वाहा ॥५॥ ॥ इति दीप पूजा ॥ ॥　　॥॥　　॥॥　　॥॥

———

॥॥ अथाक्षत पूजा (६) ॥॥

॥ ॥ (दुहा) अक्षत२ पूरसुं। जे जिन आगें सार।

---

(५) दीप हाथमें लेके खड़ा रहै।

(६) अक्षत हाथमें लेके खड़ा रहै।

स्वस्तिकरचतां विस्तरै। निजगुण भरविस्तार ॥१॥ (ढाल) उज्जल अमल अखंड्रित मंड्रित अक्षतचंग ॥ पुंजत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक भावे रंग ॥ निज सत्तानें सन्मुख। उनमुख भावे जेह ॥ ज्ञानादिक गुणठावे भावे स्वस्तिकएह ॥२॥ (चालि) स्वस्तिक पूरतां जिनप आगें। स्वस्ति श्रीभद्र कल्याण जागे ॥ जन्मजरा मरणादि असुभ भागे। नियत सिव सर्म रहै तासु आगें ॥३॥ (स्लोकः) सकल मंगलकेलि निकेतनं। परम मंगल भावमयं जिनं ॥ श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्। दधतु नाथ पुरोक्षत स्वस्तिकं ॥१॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने०। अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥※॥ इति अक्षतपूजा ॥※॥

॥※॥ अथ नैवेद्यपूजा (७) ॥※॥

॥※॥ (दुहा) सरस सुचो पकवान बहु। शालिदालिघृत पूर ॥ धरो नैवेद्य जिन आगलै। क्षुधादोष तसु दूर ॥१॥ (ढाल) लपनश्री वरघेवर मधुतर मोतीचूर ॥ सींहकेसरियां सेविया दालिया मोदक पूर ॥ सांकर द्राख सिंघोड़ा भक्तिव्यंजन घतसद्य ॥ करो नैवेद्य जिन आगलै। जिम मिलै सुख अनवद्य ॥२॥ (चालि) ढोवतां भोज्य परभाव त्यागे। भविजना निजगुण भोज्यमांगे ॥ अन्न भणी अरहतणो सरूप भोज्य। आपज्यो तातजी जगत पूज्य ॥३॥ (स्लोकः) सकल पुद्गलसंग विवर्जनं। सहजचेतनभाव विलासकं ॥ सरसभोजन नव्य निवेदनात्। परम

---

(७) नैवेद्य मिठाई पकवान हाथे लेकै खड़ा रहै।

निर्वृतिभावमहं स्पृहे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने० । नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥※॥

॥※॥ अथ फलपूजा (८) ॥※॥

॥ ※ ॥ (दुहा) पक्व बीजोरु जिन करै । ठवतां सिवपद देइ । सरस मधुर रस फलगिणै । इह जिन भेट करेइ ॥ १ ॥ (ढाल) श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आंवा सार ॥ अंजीर वंजीर दाड़िम करणा पटवीज सफार ॥ मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आणंदित जेह । वरण गंधादिक रमणीक बहुफल ढोवे तेह ॥ २ ॥ (चालि) फलभर पूजतां जगतस्वामी । मनुजगति वेलड़ी सफल पामी । सकलमनु ध्येय गतिभेद रंगे । ध्यावतां फलसमाप्ति प्रसंगे ॥ ३ ॥ (श्लोक) कटुक कर्मविपाक विनाशनं । सरस पक्वफल व्रज ढौकनं । वहति मोक्षफलस्य प्रभोपुरः । कुरुत सिद्धफलाय महाजना ॥ १ ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने० फलं यजामहे स्वाहा ॥ ※ ॥ इति फलपूजा ॥ ८ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ अर्घपूजा ॥ ※ ॥

॥※॥ (दूहा) इम अष्टविधि जिनपूजना । विरचै जेथिर चित्त । मानवभव सफलो करै । वाधे समकित वित्त ॥ १ ॥ (ढाल) अगणित गुणमणि आगर नागर वंदित पाय । सुतधारी उपगारी श्रीज्ञान भागर उवझाय । तासु चरणकज सेवक मधुकर पद लयलीन । श्रीजिन पूजा गाई

८. श्रीफल सोपारी प्रमुख हाथ लेके खड़ा रहै ।

जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ (चालि) संवत गुणयुग अचल इंदु। हर्षभरिगाइयो श्रीजिनेंदु। तासुफल सुकृत थी सकल प्राणी। लहै ज्ञान उद्योत घन शिवनिसानी ॥ ३ ॥ (श्लोक) इति जिनवरहंदं भक्तितः पूजयंति। सकलगुणनिधानं देवचंद्र स्तुवंति। प्रतिदिवसमनंतं तत्वमुझासयंति। परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयंति ॥१॥ ॐ ह्रीं परमा० अर्घं यजामहे स्वाहा। च्यारे खूंणे धारदीजे ॥॥ इति अर्घ पूजा।

॥ ॥ अथ वस्त्र पूजा ॥ ॥

॥॥ वस्त्रलेके खड़ा रहै ॥॥ शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला। सिंहासने परिमित सुपनावसाने। दध्यक्षतैः कुसुमचंदन गंधधूपैः। कृत्वार्चनंतु विदधाति सुवस्त्रपूजां ॥१॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एष विधिना लंकारवस्त्रादिकं। पूजा तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्यादृतः। नीरागस्य निरंजनस्य विजिता राति त्रिलोकीपतेः स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्दृति कृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ ॥ ॐ ह्रीं० वस्त्र०॥ ॥॥ इति वस्त्रपूजाः ॥॥ इति अष्टप्रकारीपूजा ॥॥

॥॥ अथ निमक उतारण पूजा ॥॥

॥॥ अहपडि भग्गपसरं। पयाहिणं मुणियवयं करिऊणं। पडइसलूणत्तणलज्जियंच। लूणंह्र अवहरंतो॥१॥ पिक्खे विणु मुहजिणवरह। दीहर नयणसलूण। न्हावइ गुरुमक्षरभरिय। जलणपइस्सइ लूण॥२॥ लूण उतारिह जिणवरह। तिन्निपयाहिणि देव। तडतड शब्द करंतिये। विज्ञाविज्ञण

लेण ॥ ३ ॥ जंजेस विब्भवथुई । जलेण तं तहइ अत्थसद्दस्स जिणरूवा मझुरेणवि । फुट्टइ लूणं तडतडस्स ॥ ४ ॥ ॥ ए गाथा कही लूण अग्निशरण करै ॥ ॥ पीछै फेर लूण पाणी लेई । मुखें ए गाथा कहे ॥ ॥ सव्वविसुणवई जलवि जल । तंतह भमइ पास । अहविकयंतस्स निम्मलउं । निरगुणवुड्ढिपयास ॥५॥ जलण अणें विणु जलण हि पास । भरवि कयज्जल भाव हि पास । तिन्निपयाहिणि दिन्नियघास । जिम नियउ हुई भव दुहपास ॥ ६ ॥ जलनिम्मल कर कमलेहि लेविणु । सुरवइ भावहि सुणिवई सेवणु । पभणइ जिणवर तुहपइसरणं । भयतुट्टइ लब्भइ सिद्धिगमणं ॥ ७ ॥ ॥ ए कही लुण उतारी जलसरण कीजे ॥ ॥ इति निमक उतारण पूजा ॥ ॥

॥ ॥ अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥ ॥

॥ ॥ उन्नय पयय भत्तस्स । नियठाणे संठियं कुणंतस्स जिण पासे भमिय जणस्स । पिच्छतुह ऊय वड्ढे पमाणं ॥ १ ॥ सव्वो जिणप्पभावो । सरिसा सरिसेसु जेण रच्चंतो । सव्वन्नु ण अपासे । अन्नस्स भमणं नसंकमणं ॥२॥ अच्चंत दुःक्खंपिह ऊयवह निवडेण जन्नेण कयं । आणासव्वन्नणं । न कयासुक यत्थमूलमिणं ॥३॥ ॥ एकही माला चढाईजे ॥ ॥

॥ ॥ अथ छूटा फूल पुजा ॥ ॥

॥ ॥ उवणेव मंगलेवो । जिणाण मुह लालि संवलिया । तित्थपवत्तण समई । तियसे विमुक्का कुसुम वुट्ठी ॥ १ ॥ एकही फूल उछालीजे प्रभु आगे ॥ ॥

॥ अथ सतर भेद पूजानो विधिलि० ॥

॥✻॥ प्रथम स्नान करै पीछे। अष्ट प्रकारी पूजा करै। उज्वल रूपे प्रमुखनी रकेबीमें। कुंकुम (तथा) केसर प्रमुखनो साथियो करै। पीछे सुंदर कलश केसर प्रमुख मिश्रित शुद्धजल भरी। रुपियो थापनारो कलशमें रखी। कलश रकेबीमें धरै। पीछे स्नातिया मुख कोसउत्तरासण करी। तीन नवकार गुणें। तीन नमस्कार करी। हाथें धूपदेई। रकेबी हाथे धरै। मनथिर राखै। छींक वर्जै। स्नातिया प्रभुजी सन्मुख खडा रहै। कलश अडिग राखै। सुखै छूम पढै। भावभलै भगवंतनी (इत्यादि)।

॥✻॥ अथ सतर भेद पूजा लि० ॥✻॥

॥✻॥ (दूहा) भावभलै भगवंतनी। पूजा सतर प्रकार परसिध कीधी द्रोपदी। अंग छट्ठे अधिकार ॥ १ ॥ ✻ ॥ (राग सरपदो)॥✻॥(दूहा) ज्योतिस कलजगजागती॥(हांरे अइ०)॥ सरसति समरिसुभिंद। सतर सुविधि पूजा तणी। प्रभणिसुपरमानन्द ॥ १ ॥ (गाहा) न्हवण (१) विलेवण (२) वत्थयुगं (३)। गंधारुहणंच (४) पुप्फरोहणयं (५)। माला रोहण (६) वन्नयं (७)। चुन्न (८) पडागाय (९) आभरणे (१०) ॥ २ ॥ मालकलासुयवंसुघरं (११)। पुप्फंपगरंच (१२) अट्ठमंगलयं (१३)। धूव उखेवो (१४) गीययं (१५)। नट्टं (१६) वज्जं (१७) तहाभणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध पूजा पवरं। ज्ञाता अंगमझार। द्रूपदसुता द्रोपदि परै। करिये विधि विस्तार ॥ ४ ॥ ✻ ॥ ॥✻॥ ॥✻॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा (राग देसाख) ॥

॥✻॥ पूर्वमुख सावनं करि दसन पावनं। अहत धोती

धरी उचितमानी । (अइयो०) ॥ विहत सुखकोसकी खीर गंधोदकै । सुभृत मणिकलस करि विवध वांनी ॥(अ०)१॥ नमवि जिनपुंगवं लोमहस्तेनवं । मार्जनं करिअ वावारि वारी ।(अ०)। भणिय कुशमंजली कलस विधि मनरली । नवति जिनइंद्र जिम तिम अगारी । (अ०) ॥ ॥ (दूहा) ॥॥ परमानंद पीयूषरस । न्हवण सुगति सोपान । धरम रूप तरु सींचवा । जलधर धारसमान ॥ १ ॥ पहली पूजा साचवै । श्रावकशुभ परिणाम । शुचि पखाल तनुजिन तणी । करइ सुकृत हित काम ॥ २ ॥ ॥ (राग सारंग) ॥ ॥ पूजा सतर प्रकारी । सुण जैनकी । (पू०) । परमानन्द तिण हल्योरी सुधारस । तपतबुझीय मेरे तनकी ॥ (पू०) ॥१॥ प्रभुकूं विलोकि नमि जतन प्रमारजित । करत पखाल सुचि धार विनकी । (पू०) न्हवणप्रथम निज हजन पुलावत । पंक कुंवरषजिम घन की । (पू०) ॥ २ ॥ तरणि तरणि भवसिंधू तिरणकी । मंजरी संपद फल वरधन की । शिवपुर पंथ दिखावण दीपो । धूमरी आपदवेल मरदन की (पू०) ॥३॥ सकल कुशल रंग मिल्योरी सुमति संग । जागोसुदिसा सुभ मेरे दिनकी । कहे साधु कीरति सारंग भरकरतां । आसफली मेरे मनकी (पू०) ४ ॥ ॥ इति प्रथम न्हवणपूजा ॥ १ ॥ एक ही पंचामृत सुं न्हवण कीजे (तथा) दावें पांवके अंगूठे जलधार दीजे ॥ ॥

॥॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥॥

॥ ॥ सुन्दर अङ्ग लूहणो करी । बिंब प्रमार्जी । की

सर चंदन म्हगमद अगरादिकसें । कचोली भरी। लेकर खड़ारहै । सुखे० ॥ ॥ (रागरामगिरी) ॥॥ गाव लूहै जिन मनरङ्गसु रे। (देवा) सखरसुधूपित वाससु ॥ वाससु (हांरे देवा) वा०। गंध कसायसु मेलिये ॥१॥ नन्दन चंदन चंदमेलियें । रे (देवा)॥नं०॥ मांहि म्हगमद कुंकुम भेलीयें ॥ कल्लीये (हांरे देवा) क० । रयण पिंगाणि कचोलीयें ॥२॥ पग जानु कर खंधे सिरैं। रे (देवा) भालकंठ उर उदर न्तरै। दुखहरै (हांरे देवा) सुखकरै । तिलक नवेअंग कीजी ये ॥३॥ दूजीपूजा अनुसरै ॥ श्रावक दू०॥ हरि विरचै जिम सुरगिरैं । तिमकरै (हांरे देवा) ति० । जिणपर जनमन रं जीये ॥ गा० ४ । विधि ॥॥ राग ललितमें । दुहा ॥॥

॥॥ करऊ विलेपन सुखसदन । श्रीजिनचन्द शरीर । तिलक नवे अङ्गपूजतां। लहै भवोदधि तीर ॥१॥ मिटै ताप तसु देहको । परम शसिरता संग । चित्तखेद सब उपसमें । सुखमें समरसोरंग ॥२॥॥ राग बेलाउल ॥॥

॥॥ विलेपन कीजै जिनवर अंगे। जिनवर अंग सुगंधे ॥ वि० ॥ कुंकुम चन्दन म्हगमद यक्षकर्द्दम। अगर मिश्रित मनरंगे ॥वि०॥ क्रम जानु कर खंधे शिर भाल कंठ। उर उदरन्तर संगें। त्रिलुंपति अघमेरो करत विलेपन। तपत बुझति जिम अंगे ॥ वि० २ ॥ नव अंग नव२ तिलक करतही। मिलत नवेनिध चंगइ। कहै साधु तन सुचि करसु ललित पूजा। जैसें गंगतरंगें ॥ वि० ३ ॥॥ इति द्वितीय विलेपन पूजा ॥ २ ॥॥ एकही विलेपन कीजै। नव अंग पूजीये ॥ ॥

॥※॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ अत्यन्त कोमल सुगंध अमोलक वस्त्रजुगल पर। केसरनो साथियो करी। प्रभूजी आगै खड़ा रहै। मुखें इम पढै ॥ ※ ॥ (दुहा) ॥※॥ वसनयुगल उज्वल विमल। आरोपै जिन अंग। लाभ ज्ञान दर्शन लहै। पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ ※ ॥ (रागगौड़ी) ॥※॥ कमल कोमल घन चन्दनचरचित। सुगंध गंधै अधिवासिया ए ॥ (हांरे) अद्भुयो० ॥ कनक मंडित हिय लालपल्लवशुचि। वसनजुग कंति अधिवासिया ए ॥ (हांरे) अ० ॥ जिनपउत्तम अंगै सुविधि शक्रो यथा। करिय पहिरावणी ढोइये ए ॥ (हांरे) अ० ॥ पापलूहण अंगलूहणो देवनें। वस्त्रयुग पुंज मल धोइये ए ॥ अ० २ इति ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ विधिः (राग वैराड़ी) ॥※॥

॥※॥ देव दुष्ययुग पूजा वन्योहै जगतगुरु। (है हांए) आठो वन्योहै जगतगुरु। देव दुष्यहर अब इतनो मांगुं। तुं होज सबहि हितु तुंहीहै सुगतदाता। तिण नमि२ प्रभुजीके चरणें लागुं ॥दे०१॥ कहै साधु तोजीपूजा केवल दंसण नाण। देवदुष्य मिसदेज्जं उत्तम वागूं। श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृतपीतां। सबराग दुख संसयभरम भागूं ॥दे० २॥ ※ ॥ इति तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥※॥ एकहो प्रभुजी आगल वस्त्र युगल चढावै ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्ण पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ अगर चन्दन कपूर कुंकुम कस्तूरीका चूर्ण

करो। कचोली भरी आगे ऊभा रहै। मुखें इम पढे ॥*॥ (गोडी रागमें। दूहो) ॥*॥ पूज चतुर्थी इण परे। सुमति वधारे वास। कुमति कुगति दूरे हरे। दहेमोहदल पास ॥ १ ॥*॥ राग सारंग ॥*॥ (हांहोरे देवा)। बावनचंदन घस कुमकुमा। चूरण विधि विरचे वासूए। (हांहो रे देवा) कुसुम चूरण चंदन मृगमदा। कंकोल तणो अधिवासूए ॥ (हां०) २ ॥ वास दसोदिस वासते। पूजे जिनअंग उवंगूए ॥ (हां०)॥ लाहि भवन अधिवासीयो। अनुगामिक सरस अभंगूए ॥ २ ॥*॥ इति ॥ * ॥

॥*॥ अथ विधि: (राग पूर्वी गौडी) ॥*॥

॥ * ॥ मेरे प्रभुजीकी पूजा आनन्द मेले ॥ पू० ॥ वासभवन मोह्यो सबलोए। संपदा भेले ॥ पू० १ ॥ सतर प्रकारी पूजा। विजयदेवा ततायेई ॥ वि०॥ अप्रमित्त गुण तोरा। चरण सेवै ॥ पू० २ ॥ कुंकुम चंदन वासे। पूजीये जिनराजतायेई। चतुर गति दुक्ख गोरी। चतुर्थी धनकि ॥ ३ पू० ॥ * ॥ इति चतुर्थी वासक्षेप पूजा ॥ ४ ॥ * ॥ मंदिर में एकहो वासचूर्ण प्रभुजीके बिंब उपर छांटे। चूर्ण उछाले ॥*॥ ॥*॥ ॥ * ॥

———o———

॥*॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥*॥

॥ * ॥ गुलाब केतकी पांचे तरे का फूलरकेबी में रक्खो मुखे इम पढे ॥ (दुहा) मनविकसे तिम विकसतां। पुहप अनेक प्रकार। प्रभु पूजा ए पंचमी। पंचमि गति दातार ॥१॥(राग कामोद) चंपक केतकी मालतीए। अ०

कुंदकिरण मचकुंद । सोवन जाई जूइका । वउलसिरी अरविंद ॥१॥ जिनवर चरण उवरि धरै ए ॥ उ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक । सिव रमणीसें वर वरै । विधजिन पूज विवेक । वि० । इति ॥ ॥ (राग कानड़ो) ॥ ॥

॥ ॥ सोहैरी माई वरणें । मनमोहैरी माइ वरणें । (अहोवरणें) । विविध कुशम जिन चरणें । (अ०) । विकसीहसीय जंपें साहिबकुं । राखं प्रभू हम सरणें ॥ सो० १ ॥ पांचमी पूजा कुशम सुकुलितकी (कु०) पंच विषै (हां० पं०) दुखहरणें ॥ सो० ॥ कहै साधु कीरति भगति भगवंतकी । भविकनरा । (हांरे भ०) । सुख करणें ॥ २ ॥ सो० ॥ ॥ इति पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ ॥ पांच जातना पुष्प चढावै ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ छठी पुष्प मालारोहण पूजा ॥ ॥

॥ ॥ (नाग पुन्नाग दमणो गुलाब पाडल मोगरा सेवती चंपेली मालती (इत्यादि प्रमुख) पंच वरण फूलांनी माला हाथे लेई खड़ा रहै । मुखे इम पढै) (दुहा) ॥ ॥

॥ ॥ छठी पूजा ए छती । महासुरभि पुष्फमाल । गुण गुंथी थापैगलै । जेमटलै दुखजाल ॥१॥ (राग रामगिरी गुजरी)

॥ ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका । मल्लिकासोगपारिध कलीए (भलां पा०) ॥२॥ मरुक दमणक वकुल तिलकवासंतिका । लाल गुलाल पाडल भिलीए । (भलां पा०) ॥ १॥ जासुमणि मोगरा वेउला मालती । पंचवरणै गुंथी मालतीए । (भलां गुं०) हेमाल जिनकंठ पीठे ठवी लह

लहै । आधि संताप सब पालतीए । भला० ॥※॥ इति ॥※॥

॥※॥ अथ विधि: । (राग आसावरी) ॥※॥

॥※॥ देखो दामा कंठ जिन अधिक एघतनंदै । चको रकुं देखि देखि जिम चंदै । (दे०) ॥ १ ॥ पंचविधि वरण रचो कुशमांको ॥ जैसी रयणाहे (जै०) बलिसुहमंदै (देखो०) ॥ २ ॥ छठीरे तोमर पूजा नवमार भूजे । सब अरियण (हारि स०) होइ तिम ठंदै । (दे०) ॥ ३ ॥ कहै साधु कीरत सकल आसा सुख । भविक भगत (हारि भ०) । जे जिन वंदै । (दे०) ॥ ४ ॥ इति छठी टोमर फूलमाला पूजा ॥※॥ ६ ॥※॥ एकशो प्रभुजीके कंठें फूलमाला च ढावे ॥※॥

॥※॥ अथ सप्तमी अंगीरचन पूजा ॥※॥

॥※॥ पंचवरणा फूल केसरसें अंगीरचै । सो हाथे लेई । मुखे इम पढे ॥ ※ ॥ (दुहा) ॥ ※ ॥ केतकी चंपक केवडा । सोभै तेम सुगात । चाढो जिम चढता रूवे । सातमी ये सुख सात ॥ १ ॥※॥ (राग केदारो गोडी) ॥※॥ ॥ ※ ॥ कुंकुम चरचित बिविध पंच वरणक कुशमसुंए । (हांरे अ०) कुंद गुलाबसुं चंपको दमणको जासुंए ॥ १ ॥ सातमी पुजामें अंगी अलंकीये । अंग आलंकमिसमानमी सुगति आलिंगियेए ॥ २ ॥ ※ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ पंचवरणी अंगी रचो कुशम जाती । (पं०) । कुंदमचकुंद गुलाब सिरोमणि । करकरणीसोवन जाती । (पं०) ॥ १ ॥ दमणक मरुक पाडल अरविंदो । चंद्र सूर

बेउलवातो । पारधि चरण कलार मंदारो । विण पट कूल बनी भातो । (प'०) ॥ २ ॥ सुर नर किन्नर रमणगातो । भैरवी कगति अतसिदातो । (प'०) ॥३॥ ॥ इति सातमो अंगीरचन पूजा ॥ ७ ॥ ॥ सुगंध पुष्पै करी अत्यन्त भक्तीसें भगवंतनें शरीरे अंगी रचै ॥ ॥

॥॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥॥

॥ ॥ घनसार अगर सेल्हारस प्रमुखसें सुगंध वट्टी करि । जिनेश्वरनें आगे ले खड़ा रहै ॥॥ (दूहा) ॥ ॥ अगर सेल्हारस सार । सुमती पूजा आठमी । गंधवटी घनसार । लावे जिनतनु भावसुं ॥२॥॥ राग सोरठ ॥॥

॥॥ कुंदकिरण शशि ऊजलो जी (देवा) । पावनवस घन सारो जी । सुरभि सिखर म्रगनाभिनो जी (देवा) । पुष्करोत्तण अधिकारो जी ॥१॥ वस्तु सुगंध जब मोरीयो जी (देवा) । अशुभ करम चूरो जै जी । अंगण सुरतरु मोरियो जी (देवा) । तब कुमती जन खीजै जी । (तब सुमती जनरीझै जी) ॥२॥ ॥॥ ॥॥

॥॥ अथ विधि (राग सामेरी) ॥॥

॥॥ पूजोरी माइ जिनवर अंगसुगंधे (जिन०पू०)। गंध वटी घनसार उदारे । गोल तीर्थंकर बांधे । (भलां०२)(पू०) ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेल्हारस । लावे जिन तनु रागै । घारकपूर भाव घन वर घत । सामेरी मति जागै ॥ (भलां२) (पू०) ॥२॥॥ इति आठमी वरासचूर्ण पूजा ॥ ८

॥ अथ नवमीध्वज पूजा ॥ (९)

॥ (दूहा) मोहनधूज घर मस्तकै। सूहव गीतस मूल। दीजै तीन प्रदच्छिणा। घर सिष नवमीपूज ॥ १ ॥ राग मेघगोडी ॥ (वस्तु) सहस जोयण २ हेममय दंड युतपताक पंचेवरण। घुमघुमंत घुग्घरीय वाजै। मदुसमीर लहि कै गयण (ल०)। जाण कुमतिदल सयल भाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजाए (हांएवि०) नवमीपूज सुरंग। (न०) तिणपर स्रावक धजब्रहन। (ति०) आपै दान अभंग। (आ०) १ ॥ (विधिः) ॥ राग नट्टनारायण ॥

॥ जिनराज को धूजमोहन॥ धूजमोहनारे ध्वजमोहना। (जि०)। मोहन सुगुरु अधिवासीयो। कर पंचसबद तिप्रदच्छिणा। (क०) सधव वधू सिर सोहना ॥ २ ॥ (जि०) भांतिवसन पंच वरणवन्योरी। विधकरि धूजको रोहण॥ साधु भणति नवमीपूजा नव। पापनीयांणाषोहणा। सिव मंदिरकु अधिरोहण। जनमोह्यो नट्टनारायण(जि०)॥२॥ ॥ इति नवमी पूजा० ॥ ॥ एकही ध्वजा चढाई जै ॥

---

(९) हिवै सधव स्त्री भेली होके उज्जल थाल में। कुंकुम नो साथियों करै। अच्छत थाल में धरै। श्रीफल रुपानांणो धरै। धजा थाल में धरि। सधव स्त्री माथै रक्खी गीतगान गावतां सब वाजित्र बाजतां। तीन प्रदच्छिणा देवै। पीछे ध्वजापरि गुरु पासे वासक्षेप करावे। प्रभु सन्मुख शुद्धी करै। ऊपरि अछतांसें साथीयो करै। सुपारी चढावै। मुखे ऐसा कहै। (दुहा)। मोहनारे ध्वजमोहना० ॥

॥❀॥ अथ दशमी आभरण पूजा ॥❀॥

॥❀॥ (पिरोजा नीलमलसणिया मोतीमाणकसे जड्या। आभरण लेई सुखे इम पढे) ॥ ❀ ॥ (राग केदारे मे) ॥❀॥ (दुहा) ॥❀॥ दशमी पूजा आभरण। रचना यथा अनेक। सुरपति जिम अंगें रचै। तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिरसो है जिनवर तणें। रयण मुगट झलकंति। तिलक भाल अंगदभुजा। श्रवणकुंडल अति भंति ॥२॥❀॥ (राग अधभास गुंडमल्हार। आसावरी) ॥ ❀ ॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया। मोती माणिक लाल रसणीया। (हीरा सोहेरे) चूनो चूनो पुलकर कीतना। जातिरूप सुभग अंक अंजना (मनमोहेरे) ॥१॥ मौलिमुगट रयणे जड्यो। काने कुंडल (हांरे)। अति जुगते जुड्यो। (उरहारूरे)। (मन वारूरे)। भालतिलक बांहे अंगदा। आभरण दशमी पूजा मुदा। (सुखकारूरे)। (दुखहारूरे) ॥ २ ॥

॥❀॥ (अथ विधिः) ॥❀॥ राग केदारो ॥❀॥

॥❀॥ प्रभु सिरसोहे। मुगटमणि रयण जड्यो। (रय०)। अंगद बाजू तिलक भालस्थल। यऊनीको कौन घड्यो ॥ (प्र०) १ ॥ श्रवण कुंडल शशि तरण मंडल जीपै। सुरतरु से अलंकर्यो। दुखवीदार चमर सिंहासन। छत्र सिरछत्र धर्यो। अलंकृत उचितवर्यो ॥२ (प्र०) ॥❀॥ इति दशमी आभरणपूजा ॥ १० ॥ एकवी आभरण (तथा) रोकनाणो डब्बल चढावें ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पुजा ॥

॥❀॥ सुगंध पुष्पकरी संयुक्त फुलघर हाथे लेई सुखेइम

पढै ॥ ॥ (दुहा) ॥ ॥ फूलगरो अतिसोभतो । फूंदे लहकै फूल । महकै परिमल फलमहा । इग्यारमो पूज अमूल ॥१
(राग रामगिरी) ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ कोज अंकोल रायवेलिनवमालिका । कुंद मच कुंद वरविचकलूए (अहैयो) तिलक दमणक दलं मोगरा प रमलं । कोमला पारिध पाडलूए ॥ (हां० अ०) प्रमुख कुशमें रचै त्रिभुवन कुं रुचैं । कुशमगेहें विचि तोरणूं ए ॥ (अ०) गुछ चंद्रोदयं ऊंवक उन्नयं । जालिका गोख चितचोरणू ए । (अ०) ॥ २ ॥ ॥
॥ ॥ (अथ विधि) ॥ (राग राम गिरी) ॥ ॥
॥ ॥ मेरो मन मोह्यो माईरी । फूलघर आनंद झीलै (फू०) असत उसत दाम वधरौ मनोहर । देखत तब ही सब दुरितखोलै (फू०) ॥ १ ॥ कुशम मंडप थंभ गुछ चंद्रोदय । कोरणी चारु विनाण सझै । इग्यारमी पूज वणीहै रामगिरी । विवुध विमान जैसें तिपुरिमके (फू०) ॥ २ मे० ॥ ॥ इति इग्यारमी फूलघरपूजा ॥ ११ ॥
एकही फूलघर चढाईजै ॥

॥ ॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ ॥
॥ ॥ पंचवर्णफूल गुलाबजललेई । मुखे इम पढै ॥ ॥ राग मल्हार ॥ ॥ (दुहा) वरषै बारमी पुजमें । कुशम वादलियां फूल । हरवा ताप दुख लोकको । आनुसमा बकुमूल ॥ १ ॥ ॥ राग भीमसल्हार कान्हणी जाति ॥ ॥
॥ ॥ मेघ वरसै भरी पुष्फवादल करी । जासुपर

माण कर कुशमपगरं। पंचवरणे वण्यो विकचि अनुक्रम चिण्यो। अघोट ते नही पीडपसरं॥ मे० १॥ वासमहके मिलै। भमर भमरीभिलै। सरस रसरंग तिण दुख निवारी। जिनप आगै करै सुरप जिम सुखवरै। बारमी पूज तिणपर अगारी॥ मे० २॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ विधिः (राग भीममल्लार) ॥※॥

॥※॥ पुष्प बादलीया बरसै। सुसमां (अहो०)। योजन अनुविहर वरस गंधोदक। मनुहर जानु समां (पु०) गमन आगमन की पीरनहो तसु। इह जिनको अतिसय गुणें। गुंजत२ मधुकर इम प्रभणे ॥गु०॥ मधुर वचन जिन गुण थुणइ ॥२॥ कुसुम सुपरि सेवा जो करै। तसुपीड़ नही सुमणें। (पु०)। समवसरण पंचवरण अघोट त। विवुध रचै सुमना सुसमा ॥पु० ३॥ बारमी पूज भविक तिम करै। कुसुम विकसहस उचरै। तसु भीमबंधन अथरा डवै। जेकर हिं जे जिन नमें॥ (पू०) ४॥ ※॥ इति बारमी पुष्पवृष्टि पूजा ॥※॥ एकही फूलउछालै॥ ※॥

॥※॥ अथ तेरमी पूजा ॥※॥

॥※॥ अष्टमंगलीक लेकर मुखे इम पढ़ै ॥※॥ राग वसंत ॥※॥ (दूहा) तेरमीपूजा अवसरै। मंगल अष्टविधान। दुगति रचै सुमते सही। परमानंद निधान ॥※॥ ॥१॥ राग वसंत ॥※॥ अतुल विमल मिल्या। अखंडगुणे भिलया। साल रजत तणा तंदुला ए। स्नपण समाजक विघ पंचवरणक। चंद्रकिरण जैसा उजलाए ॥१(अ०)॥ मे

ल मंगल लिखै सयल मंगल आखै । जिनप आगलि सुधा नक धरै ए । तेरमीपूजा विध तेरमी मन मेरै । अष्टमंगल अष्टसिध करैए ॥ (अ०) २ ॥※॥

॥※॥ अथ विधिः (राग कल्याण) ॥※॥

॥※॥ हांहो पुजावणी ते रसमें (हांहोरसमें ३) । तै० अष्टमंगल लिख कुशल निधान । तेज तरुणकी रसमें ॥पू०१॥ दृप्पण भद्रासन नंद्यावर्त्त पूर्णकुंभ । मत्स्ययुग श्रीवत्स तसु में । वर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी । आनंद कल्याण सुखरसमें ॥ २ (पू०) ॥ ※ ॥ इति तेरमीपूजा ॥१३॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ चौदमी धूपपूजा ॥ ※ ॥

॥※॥ धूप रकेबीमें धर मुखै इम पढै । (दूहा) गंधवटी मृगमद अगर । सेल्हारस घनसार । धरि प्रभु आगलि धूपणा चवदमी पूजाचार ॥ १ ॥ (राग वेलाउल) कृष्णागर कपूरचूर । सोगंध पंचे पूर । कुंदरुक्क सेल्हारस सार । गंधवटी घनसार ॥१॥※॥ गंधवटी घनसार चंदन मृगमदा रस भेलियै । श्रीवास धूप दशांग अंबर सुरभि बहुद्रव्य मेलियें । वेरुलिय दंड कनक मंडित धूप धाणो करधरै । भवहत्ति धूपकरंति भोगं रोग सोग अशुभ हरै ॥२॥

॥※॥ (अथ विधिः) ॥※॥ राग मालवी गोडी ॥※॥

॥※॥ सब अरति मथन मुदार धूपं । करति गंधरसाल लरे । (देवाक०) धाम धूमा वलिय धूसर । कलुष पातक गालरे (देवा) ॥१॥ उर्द्धगत सूचंति भविकुं । मधमधै करलालरे (देवा) चवदमी वामंगपूजा । दीयै दुरगत वियालरे ।

आरती मंगल मालरे । मालवी गौड़ी तालरे (देवा० स०) ॥ ❋ ॥ इति चवदमी धूप पूजा ॥ १४ ॥ ❋ ॥ एकहो धूप धरणो प्रभूके बायें अंग धरो खेईजे ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ १५ गीत गान पूजा ॥ ❋ ॥

॥❋॥ (प्रभुजीके मुख आगे मधुरस्वरे गुण ग्राम गावे)

॥❋॥(दूहा) कंठ भले आलाप कर । गावो जिनगुण गीत । भावो अधिकी भावना । पनरमी पूजा प्रीत ॥१॥ (श्रीरागे आर्या) यद्वदनंत केवलमनंत फलमस्ति जैनगुणगानं। गुण वर्णतान वाद्यै । भाव भाषा लयै युक्तं ॥१॥ सप्तस्वर संगोतैः । स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च । चंचुरचारी चारी । गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥ ॥❋॥ ॥ ❋ ॥

॥❋॥ (अथ विधिः) ॥ ❋ ॥ श्रीराग ॥❋॥

॥❋॥ जिनगुणगानं स्रुत अम्रतं । तारमंद्रादि अनाहत तानं । केवल जिम तिम फलअम्रतं (जि०) ॥१॥ विबुध कुमार कुमरी आलापे । सुरज उपंग नादजनितं (जि०) । पाठ प्रबंधघूयो प्रतिमानं। आयति छंद सुरति सुमतं (जि०) ॥२॥ सबद समान रच्यो त्रिभुवन कुं । सुरनर गावे जिन चरितं । सप्तस्वरमान शिव स्रोगीतं। पनरमी पूज हरै दुरितं रे । (जि०) ॥ ३ ॥ ❋ ॥ इति पनरमी गीत पूजा ॥१५॥

॥ ❋ ॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ❋ ॥

❋ समान अवस्थावाली सधव स्त्रीयां (वा) कुमर्यां भली होके प्रभूके सन्मुख संका कंखा रहत नाटक करै। स्त्रीयां का जोग नवणे (तो) समान अवस्थावाला पुरष नाटक करै (वा) कुमर

कुमऱ्यां मिलकै नाटक करै ॥ नाटक करणें सें केई जीव तीर्थंकर गोत्रबांधा । नाटक करतां सुखै इम पढै ॥

॥ ✱ ॥ (दूहा) ॥ ✱ ॥ कर जोडी नाटक करै । संझि सुंदर सिणगार । भव नाटक ते नविभमें । सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ (राग सुद्ध नट्ट) (काव्य) भावाद्दिम्मिसणासु चारु चरणा संपुन्न चंदानना । सपिम्मा समरूव वेसवयसो मत्तेभ कुंभत्थणा । लावण्णा सगुणापि कासरवई रागाइ आलावणा । कुमारी कुमरा विजैनपुरउ नच्चंति सिंगारणा ॥१॥ (गद्य) तएणंते अट्ठसयं कुमारि कुमरीउ । सूरिया भेणं देवेणं संदिट्ठा । रंगमंडवे पविट्ठा । जिणनमंता गायंता वायंता नच्चंतेंत्ति ॥ २ ॥ ✱ ॥ (राग नट्ट विगुण) ॥ ✱ ॥

॥ ✱ ॥ नाचंती कुमार कुमरी । द्रागडदि तत्ता थेई (अ०) ॥ द्रागडदि २ क थोंगि२ न । सुखै तत्तथेईय (अ० ना०) वेणु वीणा मुरजवाजै । सोलहो सिणगार साजै । तनननननेईय (अटूयो) ॥ अणण भण पण घुघरु घमकै । रणणणणणेईय । (अ० २ ना०) कसंती कंचुकि तरुणी । मंजरी झंकार करणी । सोमंती कुमरीय (अटूयो) हस्त कंहा वादि भावै । ददन्ती भमरीय (अ० ना०) ॥३॥ सोलमो नाटक तणो । सूरीयाभे रावन्न कीनो ॥ सुगंधतत्तत्तेईय (अ०) । जिमप भगतें भविकलीणा । आणंद तत्तत्थेईय (अ० ना०) ॥४॥ ✱ ॥ इति सोलमो नाटिक पूजा ॥१६॥ ✱ ॥

॥ ✱ ॥ अथ सतरमो वाजित पूजा ॥ ✱ ॥

॥ ✱ ॥ सतरमी पूजामें सबजातिना वाजित्र बजावै

सुखें इम पढै ॥卐॥ तत घन सुखिरै आनधै । वाजित चौविध वाय । मंगत भलो भगवंतनो । सतरमो ए सुखदाय ॥ १ ॥ ॥卐॥ (गाहा) सुरमद्दल कंसालो । मज्झयर मद्दल सुवज्जए पणवो । सुरनारि नंदितूरो । पभणइ तूं नंद जिणनाह ॥ १ ॥卐॥ (राग मधुमाधवी) ॥卐॥ तूं नन्दि आनन्दि बोलत नन्दों । चरण कमल जंतु जगतयवन्दो ॥ (तूं०) ॥ ज्ञाननिर्मल वावन सुखवेदो । तिवलवोलै रंग अतिहि आनन्दो । (तूं० १) भेरो गयणवाजंतो कुमति ताजंतो । सेवै जैन जे णावंतो । जैन शाशन जइवंत नंदंतो ॥ उदयसिंध परिपरि यवदंतो (तूं०२) सेवभविक मधुमाधन फेरो । भवनो फेरोनप्प भणंतो । कहै साधु सतरमो पूज वाजिवस्तव । मंगल मधुर धुनिकर कहंतो (तूं० ३) इति सतरमो पूजा ॥ १७ ॥

॥卐॥ अथ कलश पूजा (राग धन्यासरी) ॥卐॥

॥卐॥ भवितूं भण गुण जिनके सव दिन । तेजतरण सुखराजै । (ते०) । कवितशतक आठ थुणत सक्रस्तव । थुय रंगे हमठाजै । (भवि० १) अणहल पुर शांति सिव सुख दाई । नवनिधि सिध आवाजै । सतरसुपूज सुविध श्रावक की । भणोमें भगति हितकाजै (भ० २) श्रीजिनचंद्रसूरि खरतरपति । धरम वचन तसु राजै । संवत सोल अठार श्रावणधुरि । पंचमि दिवस समाजैं (भ० ३) दयाकलशगुरु अमरमाणिक्यवर । तासुपसायै सुविध इइ गाजै ॥ कहै साधु कीरत करत जिन संस्तव । सब लीला सुखसाजै (भवि० ४) इति सतरभेदीपूजा समाप्ता ॥卐॥

॥✻॥ अथ आरती करण विधि लि० ॥✻॥

॥✻॥ पूजाकियां पीछै। सब कपड़ा। पाघ प्रमुख पहरकै॥ उत्तरासण करै॥ पीछै प्रभू सन्मुख। अन्तर पट करी। आपके निलाड़ कुंकूंरो तिलक करै। पीछे पट दूरि करि। रकेबीमें साथियो करी। मांहि रूपानाणो। चावल सुपारी धरै। पीछे आरती दीपकसुं संजोयनें। प्रभूके सन्मुख दक्षण आवर्त्तसुं। वाजिंत्र सब वाजतां। आरती करै मुखे पढै॥✻॥

॥✻॥ अथ आरतीलि० ॥✻॥

॥✻॥ जैजै आरती शांति तुम्हारी। तोरा चरण कमलकी मैं जाऊं बलिहारी॥ (जैजै०) १॥ विश्वसेन अ चिराजीके नंदा। शांतिनाथ मुख पूनमचंदा॥(जैजै०, २॥ चालीस धनुष सोवनमें काया। म्रगलंछण प्रभुचरण सुहा या॥ (जै०) ३॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहै। सोलम जि नवर सुर नर मोहै॥(जै०) ४॥ मंगल आरती भोरहि की जै। जन्म जन्म को लाहो लीजैं॥ (जै०)॥ करजोड़ी सेवक गुण गावे। सो नर नारी अमरपद पावे॥ (जै०) ५॥✻॥ ॥✻॥

इति श्री आरती संपूर्णम्॥ ✻॥

✻ ✻ ✻ ✻ ✻

॥✻॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीकी बड़ी पूजा ॥✻॥

॥✻॥ नवपद जीकी महिमा संयुक्त पूजा लिखिये है॥

॥✻॥ (दूहा) ॥✻॥ परम मन्त्र प्रणमीकरी। तासधरी उर ध्यान। अरिहंतपद पूजा करो। निज२ सकति प्रमाण॥१॥

॥※॥ (काव्य) उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं। सप्पाडिहेरा सणसंठियाणं। सद्देसणा णंदिय सज्जणाणं। नमो नमो होउ सयाजिणाणं ॥१॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं। प्रधा नाय भव्यात्मने भास्वताय। थया जेहना ध्यानथी सौख्य भाजा। सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल राजा ॥२॥ कर्या कर्मदुर्म चकचूर जेणें। भलाभव्य नवपद ध्यानेन तेणें। करी पूजना भव्यभावें त्रिकालें। सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥३॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदयें करीनें। दिये देशना भव्यनें हितधरीनें। सदा आठ महा - पाडिहारे समेता। सुरेसे नरेसे स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कर्या घातिया कर्म च्यारे अलग्गा। भवोपग्रही च्यारछे जे विलग्गा। जगत्पंचकल्याण के सौख्य पामें। नमो तेह तीर्थंकरा मोक्ष गामें ॥५॥ ※॥ (ढाल०) ॥ ※ ॥ तीरथपति अरिहा नमुं। धरम धुरंधर धीरो जी। देशना अमृत वरसता। निज वीरज वडवीरो जी। (उल्लालो)। वर अखय निरमल ज्ञानभासन सर्वभाव प्रकासता। निजशुद्ध श्रद्धा आत्मभावें चरण थिरता वासता। जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज सोभता। जगजंतु करुणावंत भगवंत भविक जननें थोभता ॥ ६ ॥ (ढाल) ॥※॥ श्री सीमंधर साहिब आगे ए देशी ॥ ※ ॥ त्रीजे भव वर थानक तपकरि। जिनबांध्युं जिन नाम। चउसठ इंद्रे पूजित जेजिन। कीजे तास प्रणामरे। ॥※॥ (भविका) सिद्धचक्र पद वंदो। जिम चिरकाले नंदो रे (भ०) उपशम रसनो कंदो रे (भ०) रत्नत्रयीनो इंदो रे (भ०) सर्व सुर नर इंदो रे (भ० सिद्ध० ७) (आंकणी)

जे हनें होइ कल्याणक दिवसै। नरकै पिण अजुआलं। स
बाल अधिकगुण अतिशय धारी। तेजिन नमो अघ टालु रे।
(भ०) ८॥ जे तिहुं नाण सम्मग्ग उप्पन्ना। भोग करम
चीण जाणी। लेइ दिक्षा शिक्षा दिइ जगनें। ते नमोइं
जिननांणीरे (भ०सि०) ९॥ महागोप महामाहण कहीये।
निरजामक सत्थवाह। उपमा एहवी जेहनें छाजे। तेजिन
नमोइं उह्लाहरे (भ०सि०)१०॥ आठ प्रातीहारज जसु छाजे
पेंतीस गुणयत वाणी। जेप्रतिबोध करे जगजननें। तेजिन
नमिइं प्राणीरे (भ० सि०) ११॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥
अरिहंत पद ध्यातो थको। दव्वह गुण पर्याये रे। भेद
छेदकरि आतमा। अरिहंत रूपी थाये रे॥१२॥ वीर जिने
सर उपदिसै। सांभल ज्यो चितलाई रे। आतम ध्याने
आतमा। रिद्धि मिलै सबआई रे। (वी०)१३॥ ॥ ॐ ह्रीं
परमात्मने। अनंतानंत ज्ञानशक्तये। जन्मजरामृत्यु निवा
रणाय। श्रीमत्सिद्धचक्राय पंचामृतं १। चंदनं २।
पुष्पं ३। धूपं ४। दीपं ५। अक्षतं ६। नैवेद्यं ७। फलं
८। वस्त्रं। वासं। यथामहे स्वाहा। इति प्रथमपद श्रीअ
रिहंतस्य कलशपजा। १ ॥ ॥

॥ ॥ अथ २ श्रीसिद्धपदनी-पूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ (दूहा) (दूजी पूजा सिद्ध की। कीजे दिलखुसि
याल। असुभ करम दूरे टलै। फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥
(काव्य) सिद्धाण माणंद रमालयाणं। नमो नमो णंत चउ
क्कयाणं। समग्ग कम्मक्खय कार गाणं। जम्मं जरा दुक्ख

निवारणाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म क्षयें पार पाम्या। जरा जन्म मरणादि भय जे वाम्या। निरावरण जे आतम रूपे प्रसिद्धा। थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥१४॥ त्रिभा गोनदेहा वगाहात्मदेशा। रह्या ज्ञानमय जाति वर्णादि लेशा। सदानंद सौख्याश्रितं जोतिरूपा। अनाबाध अपु नर्भवादि स्वरूपा ॥१५॥ ॥ (चाल) ॥ ॥ सकल करम मलक्षय करी। पूरण शुद्ध स्वरूपो जो। अव्याबाध प्रभुता मयो। आतम संपति भूपो जो। (उल्लालो) जे भूप आतम सहज संपति शक्ति व्यक्तिपणें करी। स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावें गुण अनंता आदरी। स्वसभाव गुण पर्याय परणति सिद्धसाधन परभणी। मुनिराज मानसर हंस सम वड़। नमो सिद्ध महागुणी ॥१६॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ समय पएसंतर अणफरसी। चरम तिभाग विसेस। अवगाहन लहीजे सिव पुहता। सिद्ध नमो ते असेसरे ॥१७॥ (भ० सि०) पूरव प्र योगनें गतिपरिणामे। बंधन छेद असंग। समय एक ऊर्ध्व गति जेहनो। ते सिद्ध प्रणमें रंगरे ॥१८॥ (भ० सि०) निर मल सिद्धसिलानें ऊपरि। जोयण एकलोकंत। सादि अनंत तिहां थिति जेहनी। ते सिद्ध प्रणमो संतरे ॥१९॥ भ० सि०) जाणें पिण न सके कही पुरगुण। प्राकृत तिम गुणजास। उपमा विणनाणी भवमांहें। ते सिद्ध दीउ उल्लास रे ॥२०॥ (भ० सि०) ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम। विरमी सकल उपाधि। आतम राम रमापति समरो। ते सिद्ध सहज समाधिरे ॥२१॥ भ० सि० ॥ ॥ ढाल ॥ ॥ रूपातीत स्वभाव जे। केवल दंसणनाणीरे। तेध्याता निज आतमा।

होइ' सिद्ध गुणखाणीरे (वी०) ॥२२॥ ॥॥ इति द्वितीय श्री सिद्धपदस्य कलश पूजा ॥ ॐ ह्रीं० ।२। ॥॥ ॥॥

॥॥ अथ तृतीय आचारजपद पूजा लि० ॥॥

॥॥ (दूहा) छ्हिव आचारज पदतणी । पूजा करो विशेष । मोह तिमर दूरे हरै । सूझै भाव असेस ॥१॥॥ सूरीण दूरी कय कुग्गहाणं । नमो नमो सूरि समप्पहाणं । सद्देसणादाण समायराणं । अखंड छत्तीस गुणायराणं॥१॥ नमुं सूरिराजा सदा तत्वताजा । जिनेंद्रागमें प्रौढसाम्राज्य भाजा । षट्वर्गवर्गित गुणे शोभमाना । पंचाचारनें पाल वै सावधाना ॥२॥ भविप्राणिनें देशना देशकाले । सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले । जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा जगत्ते चिरंजीव ज्यो शुद्ध जल्पा ॥३॥॥ (ढाल) ॥॥ आचारज मुनिपति गणी । गुण छत्तीसे धामो जी । चिदानंद रस स्वादता । पर भावें निक्कामो जी । (उल्लालो) निक्काम निरमल शुद्ध चिद्घन साध्य निज निरधार थी । वरज्ञान दरसण चरण वीरज साधना व्यापार थी । भवि जीव बोधक तत्वसोधक सयल गुणसंपतिधरा । संवर समाधी गत उपाधी दुविध तप गुण आदरा ॥ २५॥॥ (ढाल) ॥॥ पांच आचार जे सूधा पाले । मारग भाषे साचो । ते आचारज नमिये तेहसुं । प्रेम करीनें जाचो रे ॥ (भ०सि० २६) वरछत्तीस गुणें करि सोभे । युगप्रधान जगबोहे । जगमोहे नरहे खिण कोहे । सूरि नमुं तेजो हैरे ॥ (भ०सि० २७) नित अप्रमत्त धरम उवएसे । नही

विकथा न कषाय । जे हने ते आचारज नमीइ । अकलुस अमल अमायरे ॥ (भ०सि० २८) जे दिइ सारण वारण चोयण । पडिचोयण वलि जनने । पटधारी गछथंभ आचारज । ते मान्या मुनि मनने रे ॥ (भ०सि०२९) अत्थमिइ जिन सूरज केवल । वंदीजे जगदीवो । भुवन पदारथ प्रगट नपटुते । आचारज चिरंजीवो रे (भ०सि०) ३०॥꙳॥(ढाल)॥꙳॥ ध्याता आचारज भला । महामंत्र सुभ ध्यानीरे । पंच प्रस्थानें आतमा । आचारजहोइ प्राणी रे (वी०)३१॥ ॐ ह्रीँ० ॥꙳॥ इति तृतीय श्रीआचार्यपद कलश पूजा ॥३॥

॥꙳॥ अथ चोथी पाठक पद पूजा लि० ॥꙳॥

॥꙳॥ (दूहा) गुण अनेक जगजेहना । सुंदर सोभित गात । उवझाया पद अरचियै । अनुभव रसनो पात ॥१ सुतत्थ वित्थारण तप्पराणं । नमो२ वायग कुंजराणं । गणस्स संधारण सायराणं । सव्वप्पणावज्जिय मत्सराणं ॥१॥ नहो सूरि पिण सूरिगुणनें सुहाया । नमुं वाचका त्यक्त मद मोह माया । वली द्वादशांगादि सूत्रार्थदानें । जिके सावधानें निरुद्धाभिधानें ॥२॥ धरें पंचनै वर्ग वर्गितगुणौघा प्रवादि द्विपोच्छेदने तुल्य सिंघा । गुणी गच्छसंधारणे स्थंभ भूता । उपाध्याय ते वंदिइ चित्प्रभूता ॥३॥꙳॥(ढाल)꙳॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ । अज्जव मद्दव जुत्ताजी । सच्चं सोय अकिंचणा । तव संयम गुणरत्ताजी । (उल्लालो) जेरम्या ब्रह्म सुगुप्त गुप्ता । सुमति सुमता शुभवरा । स्याद्वादवादइ तत्वसाधक आतमपर विभंजनकरा । भव भीरु साधन धीर

शासन बहन धोरी मुनिवरा । सिद्धांत वायन दानसमरथ नमो पाठक पदधरा ॥३३॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ द्वादश अंग सिज्झायकरै जे । पारग धारग तास । सूत्र अरथ विस्तार रसिकते । नमो उवज्झाय उल्लासरे ॥ (भ०सि०) ३४॥ अर्थ सूत्रनें दान विभागै । आचारज उवज्झाय । भवत्रिणहैं जेल है शिवसंपद । नमीये ते सुपसायरे (भ०)३५॥ मूरखशिष्य निपजाये जेप्रभु । पाहण पल्लव आणे । ते उवझाय सकल जन पूजित । सूत्र अरथं सविजाणें रे ॥ (भ० सि०) ३६ ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक । आचारज पदयोग । जे उवझाय सदा ते नमतां । नावै भवभय सोगरे ॥ (भ०सि०) ३७॥ बावना चंदन रस समवयणें । अहितताप सविटाले । ते उवझाय नमी जै जेवलि । जिनशासन अजवाले रे ॥ (भ०सि०) ३८॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ तपसिज्झायें रत सदा । द्वादश अंगनो ध्याता रे । उपाध्याय ते आतमा । जगबंधव जगभ्राता रे ॥ (वी०तु०)३९॥ ॐ ह्रीं० ॥ इति चोथे पदे श्री पाठकजीकी कलशपूजा सं० ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ पांचमी साधूपदपूजा लि० ॥

॥ ॥ (दुहा) मोक्षमारग साधन भणी । सावधान थया जेह । ते मुनिवर पद वंदतां । निरमल थायै देह ॥१ (काव्य) साहूण संसाहिय संयमाणं । नमोर सुद्ध दया दमाणं । तिगुत्त गुत्ताण समाहियाणं । मुणीण माणंद पय ट्ठियाणं ॥ करे सेवना सूरि वायग गणीनो । करूं वर्णना तेहनी सी गुणीनो । समेता सदा पंचसमते त्रिगुप्ता । त्रि

गुप्त नही कांमभोगेषु लिप्ता ॥४१॥ वली बाह्य अभ्यंतरे ग्रंथटाली। इद्द मुक्तिनें जोग चारित्र पाली। शुभष्टांग योगे रमे चित्तवाली। नमुं साधुनें तेह निजपाप टाली ॥ ४२ ॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ सकल विषय विष वारिनें। निकामी निस्संगो जो। भव दव ताप समावता। आतम साधन रंगो जो। (उल्लालो)। जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्म्मम निर्म्मदा। काउसग्ग मुद्राधार आसन ध्यान अभ्यासी सदा। तप तेज दीपे कर्म्म जीपे नैव छीपे पर भणी। मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन बंधु प्रणमो हित भणी ॥ ४३ ॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ जिम तरु फूले भमरो बैसे। पीड़ा तसुन उपाय। लेई रस आतम संतोषे तिम मुनि गोचरी जायरे ॥ (भ० सि०) ४४ ॥ पांच इंद्रीनें जे नित जीपे। षटकाया प्रतिपाल। संयम सतर प्रकार आराधै। वंदूं दीन दयालरे (भ०सि०) ४५॥ अढ़ार सहस सीलंगना धोरी। अचल आचार चरित्र। मुनिमहंत जयणायुत वंदी। कीजें जनम पवित्ररे (भ०सि०) ४६॥ नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाले। बारहविह तपसूरा। एहवा मुनि नमीये जो प्रगटे। पूरब पुन्य अंकूरारे (भ०सि०) ४७॥ सोनातणी परे परिक्षा दीसै। दिन२ चढते वांनें। संयम खपकरता मुनि नमिइं। देसकाल अनुमान रे ॥ (भ०सि०)४८॥ (ढाल) ॥ अप्रमत्त जे नित रहे। नवि हरषे नवि सोचैरे। साधु सुधाते आतमा। स्युं मूंडे स्युं लोचैरे ॥ (वी०) ४९ ॥ ॐ ह्रीं०। इति पांचमें पदे श्रीसाधुजीकी कलश पूजा ॥५॥

॥ ॥ अथ छठ्ठो दर्शनपदपूजा लि० ॥ ॥

॥॥ (दुहा) जिनवर भाषित सुद्धनय । तत्वतणी पर तीत । ते सम्यग् दरसन सदा । आदरिये सुभ रीत ॥१॥॥ (काव्य) जिणुत्त तत्ते रुइ लक्खणस्स । नमो२ निम्मल दंसणस्स मिच्छत्त नासाइ समुग्गमस्स । मूलस्स सद्धम्म महा दुमस्स ॥ विपर्यो सहो वासना रूप मिथ्या । टलै जे अनादी अछै जे कुपथ्या । जिनोक्तौ रुइ सहज थी शुद्धध्यानं । कहीइं दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ ५० ॥ विना जेहथी ज्ञान अज्ञान रूपं । चरित्रं विचित्रं भवारण्य कूपं । प्रकृति सातनें उप समइ क्षय तेह होवै । तिहां आप रूपें सदा आप जोवै ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ (ढाल) ॥ संम्यग् दरसन गुण नमो । तत्त्व प्रतीत सरूपो जी । जसु निरधार स्वभाव छै । चेतन गुण जे अरूपो जी (चालि) जे अनूप श्रद्धा धरम प्रगटै सयल पर ईहा टलै । निज शुद्धसत्ता भाव प्रगटै अनुभव करु णा उछलै । बहुमान परिणिति वस्तुतत्वें अहव सुरका रण पणें । निज साध्यदृष्टै सरव करणी तत्वता संपति गिणे ॥ ५२ ॥॥(ढाल॥॥ शुध देव गुरु धर्म परिक्षा । सद्दहणा परिणाम । जेह पामी जै तेह नमो जैं । सम्यग् दर्शन नामरे (भ०सि० ५३॥ मल उपशम क्षय उपसम जेह थो । जे होइं त्रिविध अभंग । सम्यग्दर्शन तेह नमीजें । जिन धरमें दृढ रंग रे ॥(भ०सि०) ५४॥ पांचवार उपशम लही जे । क्षयउपशमीय असंख । एकवार क्षायक ते सम्य क् । दर्शन नमोइं असंख रे (भ०सि०) ५५ ॥ जेविन नाण प्रमाण न होवै । चारित्रतरु नवि फलिउं । सुख निरवाण

न जे विण लहिइं । समकित दर्शन वलीउरे ॥(भ०सि०)५६॥ सद्गसठ्ठ वोले जे अलंकरिउं । ज्ञान चारित्रनुं मूल । समकित दर्शन ते नितप्रणमुं । सिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ (भ० सि०)५७ ॥✻॥ (ढाल) ॥✻॥ समसंवेगादिक गुणा । खय उपशम जे आवेरे । दर्शन तेहिज आतमा । स्युं होयनाम धरावे रे ॥ (वी०तुमे०)५८॥ (ॐ ह्रीँ०) ॥✻॥ इति छट्ठे दर्शन पद कलश पूजा ॥ ६ ॥✻॥ ॥✻॥

॥✻॥ अथ ७ में श्रीज्ञानपद पूजा ॥✻॥

॥✻॥ (दूहा) ॥✻॥ सप्तम पद श्रीज्ञाननो । सिद्धचक्र तप मांहि । आराधो जे सुभमनें । दिन२ अधिक उछाह ॥१॥ (काव्य) अन्नाण सम्मोह तमो हरस्स । नमो२ नाण दिवायरस्स । पंचप्पयारस्सु वगारगस्स । सत्ताण सव्वत्थ पयासगस्स ॥ होइं जेह थी ज्ञानशुद्ध प्रबोधे । यथा वर्ण नासे विचित्ता विबोधे । तिणें जाणीइं वस्तु षटद्रव्य भावा । न होवे विकल्था निजेच्छा स्वभावा ॥५९॥ होइं पंचमत्यादि सुग्यान भेदे । गुरूपास थी योग्यता तेह वेदइं । वली ज्ञेय हेया उपादेय रूपे । लहे चित्तमां जेमध्याने प्रदीपे ॥ ६० ॥✻॥ (ढाल) ॥ ✻ ॥ भव्य नमो गुणज्ञाननें । स्व पर प्रकाशक भावे जो । परयाय धरम अनंतता । भेदाभेद स्वभावे जो ॥ (चाल) ॥ जे मोख्य परणति सकल ज्ञायक बोध भाव विलासता । मति आदि पंचप्रकार निरमल सिद्ध साधन लंछना । स्याद्वाद भंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता । सविकलपनें अविकलप वस्तु सकल संसयछेदता ॥६१॥

॥※॥ (ढाल) ॥※॥ भक्ष अभक्षन जे विण लहीये। पेय अपेय विचार। कृत्य अकृत्य न जे विण लहीये। ज्ञान ते सकल आधाररे ॥(भं०)६२॥ प्रथम ज्ञानने पीछे अहिंसा। श्रीसिद्धांते भाख्यं। ज्ञानने वंदो ज्ञान मनिंदो। ज्ञानीयें शिवसुख चाख्युं रे ॥(भं०सि०)६३॥ सकल क्रियानुं मूलते श्रद्धा। तेहनुं मूल जे कहीइं। तेह ज्ञान नित नित वंदीजे। ते विण कहो किम रहीइं रे ॥ (भं०६४) ॥ पांच ज्ञान मांहें जेह सदागम। स्वपर प्रकाशक तेह। दीपकपरें त्रिभुवन उपगारी। वलिजिम रवि शशि मेहरे॥(भं०सि०)६५॥ लोक ऊरध अध तिर्यग ज्योतिष। वैमानिकने सिद्धि। लोक अलोक प्रगट सवि जेहथी। ते ज्ञाने मुझ शुद्धी रे ॥(भं० सि०)६६॥※॥(ढाल)॥※॥ ज्ञानावर्ण जे कर्महै। क्षयउपशम तसुथाये रे। तो होइ ए होज आतमा। ज्ञान अबोधता जाइ रे॥(वी०तु०)६७॥(ॐ ह्रीँ पर०)॥※॥ इति सातमो श्रीज्ञानपद कलशपूजा सं० ॥ ७ ॥※॥

॥※॥ अथ आठमें श्रीचारित्रपद पूजालि०॥※॥

॥※॥ (दूहा) अष्टमपद चारित्रनो। पूजो धरी उमेद। पूजत अनुभव रस मिले। पातिक होय उछेद ॥१॥※॥ आराहिया खंडिअ सक्कियस्स। नमो नमो संयम वीरयस्स। सज्झावणासंग विवड्डियस्स। निव्वाण दाणाइ सुज्जयस्स ॥ वली ज्ञानफल ते धरीये सुरंगे। निरासंसता द्वाररोध प्रसंगे। भवां बोध संतारणे यानतुल्यं। धरुं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥६८॥ होइ जास महिमा थकी रं

क राजा। वली द्वादशांगी भणी होइ ताजा। वली पाप रूपोपि निःपाप थाये। थई सिद्धते कर्मने पार जाये ॥६८॥ ॥※॥ (ढाल) ॥※॥ चारित्रगुण वलि वलि नमो। तत्व रमण जस मूलो जी। पर रमणीय पणो टले। सकल सिद्धि अनुकूलो जी। (चालि)। प्रतिकूल आश्रवत्याग संयम तत्वथिरता दममयो। सुचि परमखंती मुनि दसेपद पंच संवर उपचयो। सामायिकादिक भेद धरमें यथा ख्याते पूरणता। अकषाय अकुलस अमल उज्वल कामकस्मल चूरणता ॥७०॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ देसविरतनें सर्व्व विरतिजे। ग्रहीयतिनें अभिराम। ते चारित्र जगत जयवंतु। कीजैं तास प्रणाम रे (भ०सि०) ७१ ॥ तृणपरें जे षट्खंड सुखछंडी। चक्रवर्त्त पिण वरिउ। ते चारित्र अखय सुख कारण। ते में मन मांहि धरिउरे (भ०सि०)७२॥ हूआ रांक पणें जे आदरि। पूजित इंद नरिंद। असरण सरण चरण ते वंदु। वरिउ ज्ञान आनंदरे (भ०सि०)७३॥ बारमास परजाइं जेहनें। अनुत्तर सुख अतिक्रमिइं। शुक्ल सुकल अभिजात्यते ऊपरि। ते चारित्रनें नमीइं रे (भ०सि०) ७४॥ चयते आठ करमनो संचय। रिक्त करै जे तेह। चारित्र नाम निरुक्तै भाख्यु। ते वंदु गुण गेहरे (भ०सि०) ७५ ॥※॥ (ढाल) ॥※॥ जाणि चारित्र ते आतमा। निज स्वभाव मांहि रमतो रे। लेश्याशुद्ध अलंकर्यो। मोहवनें नवि भमतो रे। (वी० तुमे०)७६ ॥ ॐ ह्रीँ प० ॥ ※ ॥ इति आठमी श्रीचारित्रपद कलशपूजा ॥ ※ ॥

॥ ॥ त्रिवै ९मी तप पद पूजालि० ॥॥

॥॥ (दुहा) करमकाष्ट प्रतिजालवा। परतिख अगनि समान। ते तप पद पूजो सदा। निरमल धरियै ध्यान॥१॥ कम्मद्दुमोम्मूलन कुंजरस्स। नमो२ तिव्व तवोयरस्स। अणेग लद्धीण निबंधणस्स। दुस्सज्झ अत्थाणय साहणस्स ॥७७॥ इय नवपय सिद्धिं लद्धि विज्जासमिद्धं। पयडिय सरवग्गं ह्रींति रेहासमग्गं। दिसिवय सुरसारं खोणि पीढावयारं। तिजय विजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥७८॥ त्रिकालक पणें कर्म्मकषाय टाले। निकाचित पणें बांधिया तेहवाले। कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर दुभेदै। क्षमा युक्ति निहेंत दुर्ध्यान छेदै ॥७९॥ होइं जास महिमायकी लब्धसिद्धि। अवांछक पणें कर्म्म आवरण शुद्धिः। तपो तेह तपजे महानंद हेतें। होइं सिद्धि सीमंतनी जिन संकेतें ॥८०॥ इम नव पद ध्यावै। परम आनंद पावैं। नव भव सिव जावे। देव नर भवज पावै। ज्ञानविमल गुण गांवै सिद्धचक्रप्रभावै। सवदुरति समावे विश्व जयकार पावै ॥८१॥॥ (ढाल) ॥॥ इछारोधन तप नमो। बाह्य अभ्यंतर भेदै जो। आतम सत्ता एकता। पर परणित उच्छेदै जो ॥१॥ (उल्लालो) उच्छेद कर्म्म अनादि संतति जेह सिद्ध पणो वरइ। सुभयोग संग आहार टाली भाव अक्रियता करै। अंतर मुहूरत तत्व साधै सर्वसंवरता करो। निज आतमसत्ता प्रगट भावैं करो तप गुण आदरो ॥ ८२ ॥॥ ॥॥ (ढाल) इम नव पद गुणमंडलं। चउनिक्षेप प्रमाणे जो। सात नयें जे आदरै। सम्यग् ज्ञानें जाणे जो।

(चारित्रि) निरधार सेतो गुणें गुणठाणो कहई जे वद्धमान ए जसु करणईहा तत्व रमणें थायै निरमल ध्यान ए। इम शुद्ध सत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै। अक्षय अनंत महंत चिद्‌घन परम आनंदता वरै ॥८३॥ कलश ॥ इम सयल सुख कर गुणपुरंदर सिद्ध चक्रपदावली। सविल द्धि विज्जा सिद्धि मंदिर भविक पूजो मनरली। उवज्झा य वर श्रीराज सारह ज्ञान धर्म सुराजता। गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद्र सुशोभता ॥८४॥※॥ (ढाल) ॥※॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत। ते भव मुगति जिणंद। जेह आदरै करम खपेवा। ते तप सुरतरु कंदरे॥(भ०सि०)८५॥ करम निकाचित पणि क्षय जाई। क्षमा सहित जे करतां ते तप नमीइं तेह दीपावै। जिनशासन उजमंतांरे ॥ (भ० सि०) ८६ ॥ आमो सहो पमुहा बहुलद्धी। होवै जास प्र भावै। अष्ट महासिधि नव निधि प्रगटै। नमीये ते तपभा वेरे ॥(भ०सि०)८७॥ फलशिवसुख मोटुं सुर नरवर। संप ति जेहनुं फूल। ते तप सुरतरु सरिषो वंदुं। शममकरं द अमूलरे ॥(भ०सि०)८८॥ सव्वं मंगल मांहि पहिलो मंग ल वरणवियो जे ग्रंथे। ते तप पद त्रिकरण नित नमिइं। वरसहाय सिवपंथरे ॥(भ०सि०) ८९ ॥ इम नव पद थुणतो तिहां लीणो। हुओ तनमय श्री पाल। सुजसविलास है चोथे खंडे। एह इग्यारमी ढाल रे॥ (भ०सि०) ९० ॥※॥ (ढाल) ॥※॥ इच्छा रोधन संवरी। परणित समता योगे रे। तप ते एहिज आतमा। वरतै निजगुण भोगेरे ॥(वी०) ९१॥ आगमनो आगमतणो। भाव ते जांणो साचो रे।

आतम भावैं थिरकुंदो । परभावे मतराचोरे ॥(वी०) ९२॥ अष्ट सकल समृद्धिमें । घट मांहि ऋद्धि दाखोरे । तिम नव पद ऋद्धि जाणज्यो । आतमराम छै साखोरे ॥ (वी०) ९३ ॥ योग असंख्य छै जिन कह्या । नवपद मुख्यते जाणो रे एह तणों अविलंबनें । आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥(वी०)९४॥ ढाल बारमी एहवी॥ चोथै खंडे पूरीरे । वाणीवाचक जस तणी । कोईय नर होय अधूरो रे ॥ (वी०)९५ ॥✱॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने । अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये । जन्म जरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमत् सिद्धचक्राय । वासं । पंचामृतं । चंदनं । पुष्पं । धूपं । दीपं । अक्षतं । नैवेद्यं । फलं । वस्त्रं । यजामहे ॥ ✱ ॥ इति श्री सिद्धचक्र माहात्म्य श्री नवपदजीकी पूजा संपूर्णम् ॥ ✱ ॥ ॥ ✱ ॥

॥ ✱ ॥ अथ नवपद पूजादिक । सब पूजायोंमें । (जो) सामग्री अवश्य चहिये (सो) सबके याददास्तो खातर । केई चीजों के नाम लिखते है ॥ ✱ ॥ (पंचामृत) दूध । दही । घृत । मिश्री । शुद्धजल ॥ केसर । सुगंध चंदन । कपूर । कस्तूरी । अंबर । रोली । मोली । छूटा फूल । फूलोंकी माला । फूलोंका चंद्रवा । धूप चावल प्रमुख नव जातके धान । (नव) प्रकारके नैवेद्य । (नव) प्रकारके फल । (९) प्रकारके पक्वान्न । मिश्री । पतासा । डला । प्रमुख । अंग लूहणा खातर सपेद वस्त्र । पहरावणी खातर उत्तम रेसमी प्रमुख वस्त्र । वासक्षेप । गुलाबजल । अत्तर इत्यादिक और (नव) नालीके कलस (९) रकेबी । परात । तबला । थार

तो। मंगलदीप। भगवानके अंगी। समो सरण। इत्या दिक सब चीज पहली ठीक करके। रक्खे इसर्से पूजामे विघ्न न होय इहां संक्षेपविधि कही। विसेषविधि गुरुके मुखसें जाण लेणी।

॥ॐ॥ (अथ सबके जाणनें कों नवपदजीकी पूजा करणें कों कलस ढालणेंकी विधि कहते है) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ चैत सुदि १५ (तथा) आसोज सुदि १५ के दिन आलिया (९) कीजै। पंचाम्रत मोटै घडे प्रमुखमें करे। थापना में श्रीफल रोक नाणो धरैं। पीछे गुरुके पास मंलाय के केसरसें तिलक करै। कांकणडोरा हाथ में बांधै दहणें हाथमें साथियो करिके। विधिसंयुक्त सूत्र पढावे। पीछे श्री अरिहंत पदमें (चावल) (तथा) धूप। दीप। नैवेद्य (प्रमुख) अष्टद्रव्य वासक्षेप नागरवेल प्रमुख पांन रकेबीमें धरके। हाथमे रक्खे। नव कलशके मोली बांधे। कुंकुमरा साथिया करें। पंचाम्रतसें भरिके। कलश हाथमें लेके पूजा पढे। संपूर्ण होणें से कलश ढाले। बडी परातमें प्रतिमा जी पधरावै॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं। इस माफक कहतो थको। अरिहंत पदकी पूजा करे। अष्ट द्रव्य अनुक्रमें चढावै। इति प्रथम पूजाविधि ॥१॥ (दूसरै) सिद्धपद रक्तावर्ण। गहूं रकेबीमें धरै। श्रीफल (तथा) अ ष्टद्रव्य लेकर। (९ कलश) पंचाम्रतसें भरिके पूजा पढे। (पूर्ण होणेसें) ॐ ह्रीँ णमो सिद्धस्स कही। (कलश ढालै)। अष्ट द्रव्य चढावै ॥ॐ॥ इति द्वितीय पूजा विधि २ ॥ॐ॥

(तीसरे) श्रीआचार्यपद । पीतवर्ण । चिणोंकी दालि । अष्ट द्रव्य । श्रीफलप्रमुख लेके । कलश (६) पंचामृतसें भरिके पूजापढे । पूर्ण होणेसे । ॐ ह्रीँ णमो आयरियाणं (कही)। कलश ढाले । द्रव्य चढावे ॥ इति तृतीय पूजा ॥३॥

(चौथेपदे) श्रीउपाध्याय जी । नीले वर्ण । मूंगप्रमुख अष्ट द्रव्यलेके पूर्वोक्तविधिसें पूजा करै संपूर्ण होणेसें । णमो उपाध्यायेभ्य (कही) कलश ढाले । अष्टद्रव्य चढावे । इति चोथो पूजाविधि ॥४॥ (पांचमें) श्रीसाधुपद । श्यामवर्ण उड़द प्रमुख लेवै । और पूर्वोक्तविधिः । (पूर्ण होणेसें) णमो सव्वसाधुभ्यः । इति पंचमो पू ॥ ॥ (छठे) दर्शनपद खेत वर्ण । चावल प्रमुख पूर्वोक्तविधिसें । णमो दंसणस्स ॥ इति छठो पूजाविधि ॥६॥ ॥ (सातमे) श्रीज्ञान पद । खेत वर्ण चावल प्रमुख पूर्वो० । णमो नाणस्स ॥ ॥ इति सातमो ॥७॥ ॥ (आठमे) चारित्रपद । खेतवर्ण । चावलप्रमुख पूर्वोक्तविधिः । णमो चारित्तस्स ॥ इति आठमो पूजा विधि ॥८॥ ॥ (नवमें) तपपद । खेत वर्ण । चावलप्रमुख पूर्वोक्तविधसें । णमो तवस्स (कही) कलश ढाले । अष्टद्रव्य चढावे । पीछे अष्ट प्रकारी पूजा करे । आरती करे । ॥ ॥

इति नव पदजीकी पूजाविधि संपूर्णम् ॥

॥ ॥ अथ वासक्षेप पूजा लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ तीरथपति अरिहानमूं । धरमधुरंधर धीरोजी । देसना अमृत वरसता । निज वीरज वड़ वीरोजी ॥ १ ॥

(चालि) वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता। निज शुद्ध श्रद्धा आत्मभावे चरण थिरता वासता। जिन नाम कर्म प्रभाव अतिसय प्रातिहारज सोभता। जगजंतु ...वंत भगवंत भविक जननें थोभता ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ ...॥ वासं ययामहे स्वाहा ॥ ॥ इति अ० वासक्षेप ...॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ (ढाल) ॥ ॥ सकल कर्म मलक्षय करी। पूरण शुद्ध ...जी। अव्या बाध प्रभुतामई। आतम संपति भूपो जी। ...) जे भूप आतम सहज संपति शक्ति व्यक्तिपणें करी। ...य क्षेत्र स्वकाल भावें गुण अनंता आदरी। स्वस्व ...गुणपर्याय परणित सिद्ध साधन पर भणी। मुनिराज ...र हंस सम वद नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥ ॥ ...ह्रीँ प० ॥ ॥ इति सिद्धपद पूजा ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ आचारज मुनिपति गणी। गुण ...सि धामो जी। चिदानन्द रसस्वादता। परभावे निक्का... जी ॥ ३ ॥ निकाम निरमल शुद्ध चिद्घन साध्य निज ...नधारयौ। वरज्ञान दरसन चरणवीरज साधना व्यापार यौ। भविजीव बोधक तत्वसोधक सयल गुणसंपतिधरा। संवरसमाधी गत उपाधी दुविध तप गुण आगरा ॥ ३ ॥ ॥ ॥ इति आचार्य पूजा: ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ। अज्जव मद्दव जुत्ताजी। सच्चं सोय अकिंचणा। तव संयम गुणरत्ताजी ॥ १ ॥ (चालि) जे रम्या ब्रह्म सुगुप्ति गुप्ता सुमति समता स्रुतधरा। स्याद्वाद वादें तत्वसाधक आत्मपर विभजन

कारा। भव भीरु साधन धीरसासन वहन धोरी मुनिवरा। सिद्धान्त वायण दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥४॥*॥ ॥ ॐ० ॥*॥ इति उपाध्यायपूजा ॥*॥ ॥*॥

॥*॥ (ढाल) ॥*॥ सकल विषय विषवारिनें। निकामी निसंगी जी। भवदव ताप समावता। आतम साधन रंगी जी ॥१॥ (चालि)॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे देह निर्मम निर्मदा। काउसग्ग मुद्राधारि आसण ध्यान अभ्यासी सदा। तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै पर भणी। मुनि राज करुणा सिंधु त्रिभुवन बंधु प्रणमुं हितभणी ॥५॥*॥ ॥ ॐ० ॥*॥ इति साधुपद पूजाः ॥*॥ ॥*॥

॥*॥(ढाल)॥*॥ सम्यग् दर्शनगुण नमो। तत्व प्रतीत सरूपीजी। जसु निरधार सुभाव छै। चेतनगुण जे अरूपी जी ॥१॥ (चालि) जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयलपर ईहा टलै। निज शुद्धसत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा उछलै। वर्द्धमान परणित वस्तु तत्वें अहव तसु कारण पणें। निज साध्यदृष्टें सरव करणी तत्वता संपतिगिणें ॥ ६ ॥ *॥ ॥ ॐ० ॥*॥ इति ६ दर्शनपद पूजाः ॥*॥ ॥*॥

॥ * ॥ (ढाल) ॥*॥ भव्य नमो गुण ज्ञाननें। स्वपर प्रकासकभावें जी। पर्यायधर्म अनन्तता। भेदाभेद स्वभावें जी ॥१॥ (चालि) जे मोक्ष परणित सकल ग्यायक बोध भाव सलक्षणा। मति आदि पंचप्रकार निरमल सिद्धसा धन लंछना। स्याद्वादसंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता। सविकल्पनें अविकल्प वस्तु सकल संशय छेदता ॥ ७ ॥*॥ इति ज्ञान पूजाः ॥ * ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ चारित्र गुण वलि वलि नमो। तत्व रमण जसु मूलो जो। पर रमणीय पणो टले। सकल सिद्धि अनुकूलो जो ॥१॥ प्रतिकूल आश्रव त्यागसंवर तत्व थिरता दममई। सुचि परमखंती मुनि दसे पद पंच सं वर उपचई। सामायकादिक भेद धरमें यथाख्याति पूर्ण ता। अकसाय अकुलस अमल उज्वल कामकस्मल चूर्णि ता ॥ ॐ ह्रीं० ॥ ८ ॥ ❋ ॥ इति चारित्र पूजा: ॥❋॥

॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ इच्छारोधन तप नमुं। बाह्य अभ्यन्तर भेदें जो। आतमसत्ता एकता। पर परणित उच्छेदें जो ॥१॥ उच्छेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरे। सुभ जोगसंग आहार टालो भाव अक्रियता करे। अन्तर मुहूरत तत्व साधे सर्व्व संवरता करी। निज आत्म सत्ता प्रगट भावें करो तपगुण आदरी ॥ ९ ॥❋॥ (ढाल) ॥❋॥ इम नवपद गुणमंडलं। चौनिक्षेप प्रमाणें जो। सात नयें जे आदरे। सम्यग्ज्ञानें जाणो जो॥१॥ (चाल)निरधार सेती गुणें गुणनो करे जे बहुमान ए। जसु करण ईहा तत्व रमणें थाय निरमल ध्यान ए। इम सुद्धसत्ता भलो चे तन सकल सिद्धी अनुसरे। अक्षय अनन्त महन्त चिद् घन परम आनंदता वरे ॥ १० (कलश) ॥ इम सकल सुखक र गुण पुरंदर सिद्धचक्र पदावली। सविलद्धि विज्जा सि द्धि मंदिर भविक पूजो मनरली। उवझायवर श्रीराज सार ह ज्ञान धरम सुराजता। गुरु दीप चंद्र सु चरण से वक देवचंद्र सुसोभिता ॥११॥ ॐ ह्रीं०॥❋॥ इति श्रीनवपद वासक्षेप पूजा संपूर्णम् ॥ ❋ ॥

॥※॥ अथ ऋषिमंडल पूजा लिख्यते ॥※॥

॥※॥ (दोधक) ॥※॥ प्रणमी श्रीपारस विमल । चरण कमल सुखदाय । ऋषिमंडल पूजन रचुं । वर विधियत चितलाय ॥ १ ॥ नंदीश्वर मंदरगिरै । शाश्वतजिन महा राज । अरचै अष्टविध पूजसें । जैसें सक्र सुरराज ॥ २ ॥ तिम चित जिनपति गुणधरी । श्रावक समकित धार । विरचै जिन चौवीसको । अष्टविध पूजउदार ॥ ३ ॥ ※ ॥ (गाथा) ॥ ※ ॥ सलिल १ सुचंदन २ कुसुमभरं । दीवगकर गंध ४ धूवदागंध५ । वरअक्खत ६ नेविज्जयं ७ । सुभफल ८ । पूजाय अट्टविहा ॥१॥ ए अष्टविध पूजा करणं । सुणियें सूत्रमझार । जे भवि विरचै प्रभूतणी । ते पामें भवपार ॥२ ॥ ※ ॥ (दोधक) ॥ ※ ॥ प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम । जोगीश्वर नरराय । प्रथम भए युग आदिमें । सकल जीव सुखदाय ॥१॥ ※ ॥

॥※॥ (राग देशाख) ॥ ※॥ (पूर्वमुख सावनं कर दशन पावनं । इस चालसें) ॥ ※ ॥ विमलगिर उदयगिरिराज सिखरो परै । तरुणतर तेज दीपत दिणिंदा । युगल भ्रम वार करी धरम उद्योत किय । विमल इक्ष्वाकुकुल जलधि चन्दा ॥ (१) ॥ मात मरुदेवी वर उदरदरि हरिवरा । सकलनृप मुकुटमणि नाभिनन्दा । अखिल जगनायका सुगति सुखदायका । विमल वर नाण गुणमणि समन्दा ॥(२) वृषभ लांछनधरा सकलभवभय हरा । अमर वरगीतगुण कुसल कन्दा । गहिरसंसार सागर तरणिसम धरा । नमत

शिवचन्द प्रभुचरण वंदा ॥ ३ ॥ ॥※॥ (काव्यम्) ॥※॥ स लिल (१) चन्दन (२) पुष्प (३) फलव्रजैः (४)। सुविमलाक्षत (५) दीप (६) सुधूपकैः (७)। विविध नव्य मधु प्रवरान्नकै ८। र्जिन ममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपर मात्मने ऽनंतानंत ज्ञान शक्तये। जन्म जरा मृत्यु निवार णाय। श्रीमद् ऋषभ जिनेंद्राय। जलं। चन्दनं। पुष्पं। धूपं। दीपं। अक्षतं। नैवेद्यं। फलं। वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥※॥ इति श्रीप्रथम जिनेंद्रस्याष्टविध पूजा ॥१॥※॥

॥※॥ अथ (२) श्रीअजितजिन पूजा लि० ॥※॥

॥※॥ (दोधक) जय जिणंद दिणंद सम। लखि भविकज विक सात। परमानंद सुकंदजल। विजया मात सुजात ॥ १ ॥※॥ (राग) आयरहो दिलवागमें प्यारेजिन जी। (इस ख्यालकी चालमें) ॥※॥ एक अरज अवधारिये। (अजितजिन) एक अरज अवधारिये ॥ (आं०)॥ अजित जि नेसर जग अलवेसर। क्रूरम् निजर निहारिये। (अजित जिन एक०)। तारण तरण विरुद सुणितेरो। आयो सर ण तिहारिये। (अजितजिन एक०) १॥ चरमसिंधु भव भव जल निपतित। चरण पतित मोहितारिये। (अजित० एक०)। परमानन्द घन शिववनितानन। कज मधुपान सु कारियें। (अजित० एकं०)॥ २॥ चिरसंचित घन दुरित तिमिर हर। तुम जिनभये तिमिरारिये। (अजित०)। क हे शिवचंद्र अजित प्रभुमेरे। एह अरज न विसारियें। (अजित०) ३॥ (काव्य) सलिल चं० ॥※॥ ॐ ह्रीँ० श्री

मद्जित जिनेंद्राय । वसुद्रव्यं यजा० ॥※॥ इति श्रीअजित जिनेंद्रास्याष्टविध पूजा ॥ २ ॥※॥

॥※॥ अथ (३) श्रीसंभवजिन पूजालि० ॥※॥

॥※॥ (दोधक) ॥※॥ जय जितारि संभव सदा । श्रीसंभवजिनराज । सकल लोक जिण जीतलीय । जीतो मोह समाज ॥१॥※॥ (राग) । गंधवटी घनसार केसर म्रगमद्रा रस भेलीये (ए चाल) ॥※॥ अपरिमित वरशिखर सागर धार संभवकार ए । जिनराय संभव पाय वंदो लहो भव जल पार ए । वलि जलधिजात सुजात कुंजर कुंभ भंजन जानियें । तसु जनक नाम समान नामा भये जिनवर आनियें ॥ १ ॥ जसु चरणपंकज मधुर मधुरस पान लय लागो रह्या । मिलकरि सुरासुर खचर विंतर भमर नित चित जमह्या ॥ जसु चरणकमलैं प्लवगलांछन कनक सुबरण कायए । सद्भुवन नायक सुमति दायक जननि सेना जायए ॥ २ ॥ जसु मधुर वाणी जगवखाणी तीस सर ॥ (३५) गुणधारिणी ॥ संसार सागर भय भराकर पतित पार उतारिणी । स्याद्वाद पच्च कुठारधारा कुमति मद तरुदारिणी । प्रभुवाणि नित शिवचंद्र गणिकै हुवो मंगल कारिणी ॥३॥ (काव्यं) ॥※॥ सलिल चंदन० ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० श्रीमत्संभवजिनेंद्राय वसुद्रव्यंय० ॥※॥ इति तृतीय श्री संभव जिनेंद्रास्याष्टविध पूजा ॥ ३ ॥※॥

॥※॥ अथ (४) श्रीअभिनंदन पूजालि० ॥※॥

॥※॥ (दोधक) ॥※॥ श्रीचतुर्थ जिनवर सदा । ब०जो

भवि चितलाय। भगति युगति संकट हरण। करणतीन सुध थाय ॥ १ ॥ ✱ ॥ (राग सोरठो)। कुंद किरण शशि ऊजलो रे देवा०। (एचाल) ॥ ✱ ॥ संवरनंदन जिनवरू रे (वालहा) अभिनंदन हित कामीरे। जगदभिनंदन जय करू रे। (वा०)। दुरित निकंदन स्वामीरे ॥१॥ लोकालोक प्रकासता रे (वा०)। करता अविचल धामीरे। अव्याबाधअरूपिता रे। (वा०)। विमल चिदानंदरामीरे ॥ २ ॥ वांछित पूरण सुरमणी रे। (वा०)। ए प्रभु अंतरजामी रे। ऐसे जिन महाराजकुं रे। (वा०) चंद्र नमें सिरनामीरे ३। (काव्य) ४ ॥✱॥ सलिल चं० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीप० श्रीमदभिनंदनजिनें०। वमु० ॥ ✱ ॥ इति श्रीचतुर्थाभिनन्दन जिनेंद्र साष्टविधपूजा ॥४॥ ॥✱॥ ॥✱॥

॥✱॥ अथ (५) श्रीसुमति जिनपूजा लि० ॥✱॥

॥✱॥ (दोधक) ॥✱॥ पंचम जिननायक नमुं। पंचमि गतिदातार। पंचनाण वर विमल कज। वन विकसन दिनकार ॥ १ ॥ ✱ ॥ (राग केरवो) वंसी तेरी वैरिणि वाजे रे वैरिणिवाजे (एचाल) ॥✱॥ सुध भाव चित थिर धरिके रे। (चित०) पूजो सुमति जिणंद। (सुधभाव०) जिनभक्ति करन रसीला। लहो परम आनंद ॥ १ ॥ (सुधभाव०) जिनराज सुमति अमंद। वारै कुमति निकंद। (सुध०) प्रभुना चरण अरविंदा। वंदै असुर सुरिंद (सुध०) ॥२॥ कनकाभ तनु दुतिसोहै। प्रभु सुमंगला नंद (सुध)। करुणोपशम रस भरिया। वंदै नित शिवचंद। (सुध) ॥३॥ (काव्य) सलिल०।

॥ ॐ ह्रीं० श्रीमत्सुमतिजिनेंद्राय वसु द्रव्यं० ॥✱॥ इति श्री सुमतिजिन पूजा ॥५॥ ॥✱॥ ॥✱॥

॥✱॥ अथ (६) श्रीपद्मप्रभ पूजा ॥✱॥

॥✱॥ (दोधक) ॥✱॥ हिवे षष्टम जिनवर तणी । पूजनकरज्ञ उदार । भवि चित भक्ति धरी करी । सुख संपति करतार ॥ १ ॥ ✱ ॥ (राग सारंग) हांहो० बावन चंदन घसि कुमकुमा (एचाल) । (हां होरि वाला) पदमप्रभु मुख चंद्रमा । नित सकल लोक सुखदाय ए (हां०) हरिसुर असुर चकोरड़ा । नित निरष रह्या ललचाय रे ॥१॥ (हां०) जिन मुख वचन अमृत तणो । जे श्रवण करे भविप्रानए (हां०) । ते अजरामरता लहे । हरिगण करे वसु गुणगानए (हां) ॥ २ ॥ धर नृप कुल नभ दिनमणि । प्रभु मात सुसीमा नंद ए (हां०) । प्रभु दरसणते प्रतिदिने । ऊदू ज्यो शिवचंद आणंद ए ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ० । श्रीपद्मप्रभ जिने० वसु० ॥✱॥ इति श्री पद्मप्रभ जिनपूजा ॥ ६॥

॥✱॥ अथ (७) श्री सुपार्श्वजिन पूजा लि० ॥✱॥

॥✱॥ (दोधक) ॥✱॥ श्रीसुपार्श्व सुरतरु समो । कामित पूरण काज । भो भवियण पूजो सदा । वसु विध पूज समाज ॥१॥ (राग कल्याण) मेरा दिल लग्या श्रिणे सरसें (एचाल) ॥✱॥ मेरी लगी लगन जिन वरसें (मेरी०) । जैसे चंद चकोर भमरको । केतकि कमल मधुरसें (मेरी०) । एह सुपारस प्रभु भए पारस । गुण गण समरण फरसें

(मेरो०) चेतन लोहपणो परिहरकै। ऊयलये कांचन सरिसै ॥१॥ (मेरो०) ए प्रभु करुणाकरकुं धरि ल्यै। उरजिम कमल भमरसै (मेरो०)। जे भवि जिनपद लगन धरै तसु नही भय मरन असुरसै (मेरो०) ॥ २ ॥ मात पृथवि तनु जात तनु द्युति। सम शुभ कांचन सरसै (मेरो०)। कहै सिव चंद्र चित्त नित मेरो। रहो प्रभुपद लय भरसै ॥ ३ ॥ (मेरो०) (काव्यं) सलिल० ॐ ह्रीँ० श्रीमत्सुपार्श्वजिनेंद्राय ॥ वसुद्रव्यं० ॥ ※ ॥ इति श्रीसुपार्श्व जिनपूजा ॥७

॥※॥ अथ (८) श्रीचन्द्रप्रभपूजा लि० ॥※॥

॥※॥ (दोधक) ॥※॥ अष्टम जिनपद पूजियै। विविध कष्टहरतार। अष्टसिद्धि नवनिधि लहै। जिन पूजन करतार ॥ १ ॥※॥ (राग गुंड मिश्रित मल्हार)॥ मेघ वरसै भरी कुसुम वादल करी। (एचाल) ॥※॥ परमपद पूर्व गिरिराज परि उदयलहि। विजित परचंद्र दिनकर अनन्ता। चंद्रप्रभु चंद्रिका विमल केवल कला। कलित सोभित सदा जिन महन्ता ॥१॥ (परमपद०)। कुमतिमत तिमिर भर हरीय पुन भूरिभवि। कुमुद सुख करीय गुण रयण दरिया। गहिर भविसिंधु तारण तरणि गुण। धारि भव तारि जिनराज तरिया। (परमप०) ॥ २ ॥ राखियै आज मोहिलाज जिनराज प्रभु। करण सुख चरण जिन सरण परीया। परम शिवचंद्र पदपद्म मकरंद रस। पान नित करण ततपर भरीया ॥३॥ (पर०)। (काव्यं) सलि०। ॐ ह्रीँ० श्रीमच्चन्द्रप्रभ जिनें० वसु०॥※॥ इति श्रीचंद्रप्रभपूजा ॥८॥

॥※॥ अथ (९) श्रीसुविध जिनपूजा लि० ॥※॥

॥※॥ (दोधक) ॥※॥ सुविधि२ समरण थकी । कामित फल प्रकटाय । अतिह गहन संसार वनि । बहुल अटन मिट जाय ॥१॥※॥ (राग) । चंपक केतक मालती (एचाल) ॥※॥ सुविध चरणकज वंदीये ए । (अद्भुयोवं०) नंदीये अति चिरकाल । सिव तरवारि निकंदीये । विघन कंद ततकाल ॥ १ ॥ आज जनम सफलो भयो । (आंए सफ०) । दीठो प्रभुदीदार । तनु मन दृग विकसित भये । जिम कज लखि दिनकार ॥ २ ॥ अमृत जलधर वरसीयो । (आं० अद्रू०व०) भविउर खेतमझार । दर्शन सुरतरु उगीयो । शिवफलनो दातार ॥ ३ ॥ (काव्य) सलिल० । ॐ ह्रीं० । श्रीमत्सुविधि जिनें० वसु० ॥※॥ इति श्रीसुविध जिनपूजा ॥ ९ ॥※॥

॥※॥ अथ (१०) श्रीशीतल जिनपूजा लि० ॥※॥

॥※॥ (दोधक) मुझ तनु मन शीतल करो । श्रीशीतल जिनराय । तुम समरण जलधारसें । अंतर तपति बुझाय ॥१॥ (राग बाटो । दादा कुसल सुरिंद०. इस चालमें) ॥※॥ मेरे दीनदयाल तुम भये सकल लोकप्रतिपाल । (आं०) ॥※॥ मेरे दीनदयाल तुम भये सकल लोकप्रतिपाल । (आं०) ॥※॥ चरण शरण भयो प्रभु सुणि शीतल जिनवर महाराज । नमुं सज्ज सविकारी देव । करिसुं नो आज । (मेरे दी०) न नमुं सज्ज सविकारी देव । करिसुं चरणकमलनी सेव । (मेरे०) ॥ १ ॥ जैसें सुरमणि करतल पाय । कुणलये काच शकल उलसाय । (मेरे०) तुम सम सुरवर अवरन कोय । हेर२ जगनिरख्यो जोय (मेरे०) ॥२ प्रभु दरसण जलधर घनघोर । लखिय निरतकरे भविजन

मोर (मेरे०)। पद शिव चंद्र विमल भरतार। अरज एह उरधरियै सार (मेरे०) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल० ॐ ह्रीँ० श्रीमच्छीतल जिनेंद्राय वसु०। इति श्रीशीतलजिनेन्द्रपूजा।

॥※॥ अथ (११) श्रीश्रेयांस जिनपूजा लि० ॥※॥

॥※॥ (दोधक) ॥※॥ श्री श्रेयांस जिनेंद्र पद। नदद्युति सलिलाधार। जे नेवैं मज्जन करे। ते सुचिद्रूप विधुतार ॥१॥ (राग) सोहम सुरपति वृषभ रूप करि (इस चालमें) ॥※॥ श्रीश्रेयांस जिणेसर जगगुरु। इंद्रिय सदन समं दहे अस वसु विध पूजनसें अरचो। उरधरि परमानंदहे। एस मकित धर श्रावक करणी। हरिणो भव मनरंग हे। विजयदेव जिनप्रतिमा पूजो। जीवाभिगम उवंग हे ॥ (श्री०) ॥१॥ सरीयाभ प्रभुपूजन करियो। राय पसेणी उवंगहे। ग्याता अंगे द्रुपदि श्राविका। पूज्या जिन चितचंगहे। जे निह्नवकुमती जिन पूजन। उथपै तेह अनन्त हे। काल लगै भमसी भव वनमें। मन्दमती भयभ्रांत हे ॥ (श्री०) ॥२॥ विष्णुमात सुजात विष्णु नृप। विमल कुलांवर हंस हे। सकल पुरंदर अमर असुर गण। शिरवरि प्रभु अवतंस हे। इण सुरवरनी परि श्रावक जे। पूजे जिन उछरंग हे। ते शिव चंद्र परमपद लहिस्यै। निश्चय करो भवभंग हे (श्री) ॥ ३ ॥※॥ (काव्य०) सलिल० ॥१॥ ॐ ह्रीँ० श्री श्रेयांस जिनेंद्राय। इति श्रीश्रेयांस जिनपूजा ॥ ११ ॥

॥※॥ अथ (१२) वासुपूज्य जिनपूजा लि० ॥※॥

॥※॥ (दोधक) ॥※॥ हिव बारम जिनवर तणो। पूजन

करियै सार । भाव भक्तियुत भवि सदा । द्रव्यभक्तिचितधार ॥ १ ॥ (राग) सब अरति मथनमुदार धूप (एचाल) ॥❀॥ सकल जगजन करत वंदन । जया नंदन सामिरे । (देवा) दुरित ताप निकंद चंदन । परम शिव पद गामिरे (देवा) ॥ १ ॥ (सकल०) नृपतिवर वसु पूज्य नृपकुल । बिपिन नंदन जातरे । (देवा) सुहरि चन्दन नन्द नन्दन । नन्द भद्रकिय घातरे (देवा) ॥२॥ (स०) वासु पूज्य जिणेंद्र पूजो । सकल जन महाराज रे । (देवा) करत थुति शिव चंद्र प्रमुए । निखिलसुर सिरताज रे । देवा । (सक०) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं० श्रीमद्वासु पूज्यजिनेंद्राय वसु द्रव्यं ॥❀॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन पूजा ॥१२॥

॥❀॥ अथ (१३) विमल जिनेंद्र पूजा लि० ॥❀॥

॥❀॥ (दोधक) ॥❀॥ विमल२ जिन करसुऊ । मलिन करम करि दूर । तेरम प्रभु रमियै सदा । शुऊचरभक्ति गुणपूर ॥ १ ॥ ॥❀॥ (राग) सिद्धचक पद वंदोरे भविका । (एचाल) ॥❀॥ विमल चरणकज वंदोरे ● (सुरीजन विम०) वंदनसें आनन्दो रे । (सु० वि०) जसु गणधर मुनिवरगण मधुकर । सेवत पद अरविंदो । स्वामा उदर सुगिति सुग ता फल । कृत वरमा नृप वंदोरे (सूरी०) ॥१॥ सऊ जग मंडल विमल करणकूं । निज शासन नभचंदो । उदय भयो भविकुमुद विकसिवा । वर गुणरयण समंदो रे (सुरी०) ॥२॥ यदि भव बंदि हरण भवि चाहो । प्रभुवंदो चिरनंदो । विमल चिदानंद घनमयरूपो नित वंदत शिवचंदो रे

(सूरी०) ॥३॥ (काव्यं०) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ० । श्रीमत् विमलजिनें० ॥※॥ इति विमलजिनपूजा ॥१३॥ ॥※॥

॥※॥ अथ (१४) श्रीअनन्त जिनपूजा लि० ॥※॥

॥※॥ (दोधक)॥※॥ शिव चवदम जिनपूजतां । हरियें विष य विकार । भो भवियण सुणियें सदा । ए प्रभु सरणाधार ॥ १ ॥ पंचवरणी अंगीरची० (एचाल) ॥ ※ ॥ पूजकरणी प्रभुनी दुरित निवारी । (दुरि) । (आं०) अनन्त तरणी छिम किरण तरुणतर । किरण निकर जीताहे भारी । अनन्त नाणवर दंसण तेजै । प्रभुसु यशोदर अवतारी (पूज) ॥१॥ लोका लोक अनंत द्रव्यगुण । पर्याय प्रगट करण हारी । तातै अन्वययुत जिन धरियो । अनंत नाम अति मनुहारी (पूज) ॥ २ ॥ सिंहसेन नृप नन्दन वंदन । करत इन्द्र चंद्र सुखकारी । सादि अनंत भंग थिति धरियो । पद शिव चंद्र विजयधारी (पूज) ॥३॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ ह्रीँ० श्रीमच्चतुर्दश अनंत जिनें० वसु० ॥※॥ इति श्री अनंत जिनपूजा ॥१४॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ (१५) श्रीधर्मजिन पूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥※॥ भानु भूप कुलभानु कर । पंनर मजिन सुरसार । सोभित सज्जन विपिन जन । हरष फल दजलधार ॥१॥ (राग) धारसमीरे यमुना तीरे । वसती वने वनमाली (एचाल) ॥※॥ धर्मजिणेसर धरम धुरंधर । जग बंधव जगवाला । मैं वारी जाउं । जग० धरम०) । सुमता

नंदन पाप निकंदन। प्रभु भये दीन दयाला (मेंवा० धर्म०)॥१ प्रभु धीरज गुण निरखि अमर गिरि। तजि लीनो अचला धारा। (मेंवा०)। जिन गंभीरता वररत्नसिंधु लखि। कियलो ज्ञांत विहारा। (मे०। धर्म) ॥२॥ ए जिनचंद्र चरण अरचनतें लहि जिनपति अवतारा। (मेंवा०)। करमबैरि दलकारि भवि लहिस्यो। पद शिव चंद उदारा। (मेंवा० धर्म) ॥३॥ (काव्य) सलिल चं० ॥ ॐ ह्रीँ। श्रीप० श्रीमत् धर्मजिनें० वसुद्रव्यं० ॥ ॥ इति धर्मजिन पूजा ॥१५॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ (१६) शान्तिजिनपूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ (दोधक) अचिराउयरे अवतरी। शांति करी सुखकार। मारि विकार मिटाय करि। नाम धर्यो शांति सार॥ १ ॥ ॥ (राग विभास) भावधरि धन्य दिन आज सफलो गिणुं (ए चाल)॥ ॥ शांति जिनचंद्र निजचर णकज शरणगत। तरणि गुणधारि भववारि तारी। कुमत जन विपिन जनि कुमति वन हतनि तति। छितिनि शितधार तरवारि वारी॥ (शांति०)॥ एकभवि पद उभय चक्रधर तीर्थंकर। धारिया वारिया विघन सारा। सकल मदमा रिया विमल गुणधारिया। सारिया भक्तवांछित अपारा॥ (शां०) हरिण लांछनधरा करण सुवरण करा। सुरवरा हितधरा गतविकारा। मोहभट धरखिधर गणहरण य जुधर। कुमुद शिवचंद्र पद रजनिकारा॥ (शां०) ३॥ ॐ ह्रीँ श्रीप० श्रीमत् षोडश शांतिजिनें द्राय वसुद्रव्यं० ॥ ॥ इति शांतिजिन पूजा॥ १६ ॥ ॥ ॥ ॥

॥※॥ अथ (१७) श्रीकुंथुजिनपूजा लि० ॥※॥

॥※॥ (दोधक) सतरमजिनवर दीवसम। मझि भवसागर माण। भक्ति युक्ति नित पूजियें। लहीये अमल विनाण ॥१॥※॥ (राग) अरिहंतपद नित ध्याइयें (एचाल)॥※॥ कुंथुजिणंद गुणगाइये। (वारि) मनवंछित फल पाइये रे। प्रभु समरण लय लाइये। (वा०) भवि भवतजि शिवजाइये रे॥ (कुंथु) ॥१॥ भवजल मत निज आतमा। (वा०) करुणा उरधरिताइये रे। चरण करण उपयोगिता। (वा०) ग्रहण करणकूं धाइये रे। (वा० कुं०) ॥२॥ ए प्रभु दरसण जीवनें। (वारि) अनुभव रसनोदाइयें रे। वर शिवचन्द्र विमल वधे। दिन२ सोभ सवाइये रे। (कुं०) ॥३॥ (काव्यं) सलिलचं०। ॐ ह्रीँ श्रीप०। श्रीकुंथुजिने०। वसु०॥※॥ इति कुंथुजिन पूजा ॥ १४ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ (१८) श्रीअरनाथ पूजालि० ॥※॥

॥※॥ (दोधक)※॥ जिनअढारमोध्याइये। भवियण चित्तमझार। करण तीन इक करमुदा। प्रतिदिन जय जयकार। १ ॥※॥ (राग वसंत) संग लागोही आवै। कुणखेलै तोसुं होरी रे। संग० (ए चाल) ॥※॥ निज विमल भक्तिसें। अरजिनसें नितरमिये रे। (निजवि०)। जिनगुण निजगुण तुल्य करणकुं। चंचलचित हय दमिये रे। (नि०) १॥ सुमति युवति संगम उर धरिहैं। कुमति नारिसंग गमिये रे॥ (निज०)॥ अनुभव अमृतपान करण तैं। विषय विकृत विषदमिये रे। (निज० अर०) ॥ २ ॥ जिनवर

संग रमण द्वअनले। पंक सघन वनभमिये रे। कहै शि वचंद्र जिनेंद्र रमणसें। भवरनमें नही भमिये रे ॥३॥ (नि ज०) (काव्यं) सलिल चं० ॥॥ ॐ ह्रीं०। श्रीमदष्टादश अरजिनें०। वसु० ॥॥ इति अरजिनपूजा ॥ १८ ॥ ॥॥

॥॥ अथ (१९) श्रीमल्लिजिनपूजालि० ॥॥

॥॥ (दोधक)॥॥ उगुणीसम जिन चरणकज। भमर होय लयलाय। सेवै तसु भवि भमरता। अगणित दुरित विलाय ॥ १ ॥॥ (राग) मल्लिजिणंद उपगारी रे वाला। मल्लिजिणंद उपगारी (हरि होरे वाला)। वारी जाउं वारहनारी रे (वा०) मल्लिजि०। कुंभनरेसर गगनांगणमें। सहसकिरण अवतारीरे (वाला० म०) ॥१॥ पूरव भव षटमित्र नरिंद प्रति। बोधि सिंधु भवतारी। वेदलयो चिर हीतनु धार्यो। सकल संघ सुखकारी रे (वाला मल्लि०) ॥२॥ सकल कुशल हरिचंदन तरुवर। नंदनवन अनुकारी। संघ चतुरविध भूरिखचरगण। प्रणतचंद्र मनुहारीरे (वा० मल्लि०) ॥३॥ (काव्यं) सलिल०। ॐ ह्रीं०। श्रीमल्लिजिनें० जलं०॥॥ इति मल्लिजिनपूजा ॥१९॥

॥॥ अथ (२०) श्रीमुनिसुव्रतजिनपूजा लि० ॥॥

॥ ॥ (दोधक) पद्मोदर वर पद्मनद। गतपर पद्मप्रमान। विंशतितम प्रभु पूजिये। केवल लब्धिनिधान ॥१॥ ॥॥ (राग गरबो) सुणिचतुर सुजाण। परनारीसुं प्रीतडी कबहुं न कीजिये (एचाल)॥॥ सुणि सुव्रतजिनेंद मुनि

जरधरि मुझपर वर दरसण दीजिये। प्रभु दरस प्रीति निरुपाधिकता। करिये लहिये शिवसाधकता। तब तुरत मिटै सिव बाधकता॥ १॥ (सुणि०) अन्तमें साध्यपणो विलसैं। प्रभु दरसणि साधनता उलसै। तदमुझमें साध कता मिलसैं। (सुणि०)॥२॥ भिन्नादिकरणता यदि विघटै। एकाधिकरणता यदि सुघटै। तदमुझ शिव साधकता प्रग टै। (सुणि०)॥३॥ एकाधिकरणता मुझ करियै। भिन्ना धिकरणता परिहरियै। शिवचंद्र विमलपद तदवरियै। (सुणि०)॥४॥ (काव्यं) सलिल०। ॐ ह्रीँ०। विंशतितम श्रीमत् मुनिसुव्रतजिने०। इति मुनिसुव्रत जिनपूजा॥२०॥

॥ॐ॥ अथ (२१) श्रीनमि जिनपूजा ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ (दोधक) अंतरवैरि नमाविया। तब लहियो नमिनाम। भवियण ए प्रभु पूजसें। सरीयै बंछितकाम॥१ (राग) हमआएहै सरण तिहारे। तुम प्रभु सरणागत तारे वारी० (एचाल) ॥ॐ॥ श्रीनमि जिनवर चरण कमलमें। नय नभमर युगधरियैरे। तिण किय गुणमकरंद पानसै। चेत न मद मत करियैरे। (वारी) चेतन मद मत करियैरे (श्री नमि०)॥१॥ एह चरण कज अह निश विकसै। पर कज निसि कुमलावें रे (वारी पर)। एन बलै बलि तुहिन अनल सें। अपर कमल बल जावै रे (वारी० अप०)॥२॥ ए पद कज गुन मधुरस पीवत। जीव अमरता पावे रे (वारी०)। अवर कमल रस लोभी मधु कर। कजगत गज गिल जावै रे (वारी०)॥ ३॥ परकज निजगुण लछिपावहै। पद

कज सुंदर देवै रे । तातै यदु शिवचंद्र जिणिंदकी । अर्चित सुर नर सेवै रे (वा०) । श्री०॥२१॥ (काव्य) सलिल० ॐ श्रीनमिजिने० । इति श्रीनमिजिनपूजा ॥२१॥

॥ अथ (२२) श्रीनेमि जिन पूजा लि० ॥

॥ (दोहा) बावीसम जिन जगगुरु । ब्रह्मचारी विख्यात । इस चंदन चंदन रचै । भाव ताप मिट जात ॥ १ ॥ (राग रामगिरी) गावत्रहै जिनमन रंगसु रे । देवा (एचा ल) । नेमि जिणंद उरधारीवै रे (वाला) विरुद कहावनिवारीवे (वाला) । (वारीवै हारे वाला वारीवै) । एकिन नैंन निहारीवै रे ॥ १ ॥ जलधर जिन प्रभु गरजता रे (वाला) देशना अमृत बरसता रे (वाला) (दे०) । बरसता हां रे वाला बरसता । भविक मोर सुखि उलसिता रे ॥२॥ कनक कलस गिरि भरि रह्या रे (वाला) । भावतुल वधता वह्या रे (वाला) । वधता वह्या । (हां रे) । वधता वह्या । सुर नर चातक उमह्या ॥३॥ वोध बीज उनवावीयो रे (वाला) भवि उर खेत वधावीयो रे (वाला भवि०) । वधावीयो हांरे (वाला वा०) । भविक सुगति फल पावीयो रे ॥ ४ ॥ (काव्य) सलिल० । ॐ ह्रीं० श्रीमन्नेमि जिने० । इति नेमि जिन पूजा (२२)

॥ अथ (२३) श्रीपार्श्वजिनपूजा लि० ॥

॥ (दोहा) ॥ अश्वसेन नंदन वदा । वामोदर वनि हीर । लोक शिखरि सोभै प्रभु । निमित करम गंभीर

वीर ॥ १ ॥ वाजे तेरा विछुआ (हुण कैंरवाकी चालमें) । पासजिणंदा प्रभु मेरै मन वसीया । पास जिणंदा प्रभु मेरै मन वसीया रे । मेरै दिल वसीया (पास जि०) । शिव कमलानन कमल विमल कल । तरमकरंद पान अतिरसीया (पासजि०) ॥१॥ वामा नंदन मोहनि मूरत । सकललोक जनमन कियवसीया (पासजि०) । परमज्योति मुख चंद्रविलोकित । सुर नर निकर चकोर हरसीया (चकोरह०) (पासजि०) ॥२॥ अंजन गिरि तनु दुति जिन जलधर । देसन अमृत धार वरसीया (धारवर०) (पास जि०)। पोथ करि भवि चिरकाल तिरसीया । सुगति युवति तनु तुरत फरसीया (पास जि०) । कुमुद सुमद शिवचंद्र जिणंदनी । वारीजाउं मन मेरो अतिह उलसीया (पासजि०) ॥ ४ ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ ह्रीं० । वयोविंशत्तम श्रीमत्पार्श्वजिनें० इति श्री पार्श्वजिन पूजा ॥२३॥

॥卐॥ अथ (२४) श्रीमहावीरजिन पूजा लि० ॥卐॥

॥卐॥ (दोधक) ॥卐॥ वर इक्खाकुकुल केतु सम । त्रिसलोदर अवतार । ए प्रभुनी नितकीजीये । विविध भक्ति सुखकार ॥१॥ (राग तेजतरणि मुखराजै । (म्हांरे मुखराजे) प्रभु कीनो ते०) (एचाल) ॥ 卐 ॥ चरम वीर जिन राया (म्हांरे) जिनराया । मेरे प्रभु चरम वीर जिनराया (आं०) । सिद्धारथकुल मंदिर मजसम । त्रिशला जननी जाया । निरुपम सुंदर प्रभु दरसण तें । सकल लोक सुखपाया । (म्हांरे सुखपाया) (मेरे प्रभुच०)॥१॥ वामचरण अंगुष्ट फर

सतै । सुरगिरिवर कंपाया । इंद्रभूति गणधर मुख मुनिजन सुरपति वंदित पाया । (हांरे) (मेरे प्र०) ॥ २ ॥ वरतमान सासन सुखदाया । चिदानंद घनकाया । चंद्रकिरणगुण विमल रुचिरधर । शिवचंद्र गणि गुण गाया । (हांरे० मेरेप्र०) ॥३॥ वरस नंद मुनि नाग धरणि मित । द्वितीया श्विन मनभाया । धवलपच्छ पंचमि तिथि शनियुत । पुरजय नगरसुहाया (मेरे०) ॥४॥ श्रीजिन हरष सूरीसर साहिब वर खरतर गछराया । च्छेमकीर्त्तिशाखा भूषणमणि । रूपचन्द्र उवझाया (मेरे०) ॥ ५ ॥ महापूर्व वसु भूरि नरेश्वर । वंदे पद उलसाया । तासु सीसवाचक पुण्यशील गणि । तसु शिष नाम धराया (हांरे० मेरे प्र०) ॥६॥ सम यसुंदर अनुग्रहि ऋषिमंडल । जिनकी सोभ सवाया । पूज रची पाठक शिवचंदे । आनंद संघवधाया (हांरे० मेरे०) ॥ ७॥ (काव्यं) ॥॥ सलिल चंदन० ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० चतुर्विंशतितम श्रीमहीरजिनेंद्राय वसुद्रव्यं य० ॥॥ इति श्रीमहावीरजिन पूजाविधिः ॥ २४ ॥॥

॥॥ स्रग्धरावृत्तद्वयं ॥॥ दुर्व्वार स्फार विस्फोत्कट करटि घटोत्पाटनस्पष्ट जाग्रद् । वीर्यप्राग्भारोत्पाट चंचत् कुशल हरिद्रौ जित्वरी दुर्मतानां । संसारापार सिंधूत्तरण तरतरी भक्तिभाजामजस्रं । भव्यानां भद्रपद्म प्रवणमधुकरी संकरी शंकरी सा ॥१॥ लोकालोक प्रलोका स्खलित विमल सद्दर्शन ज्ञान भानुः । श्रीमज्जैनेश्वरीयं त्रिभुवनविभुतास्निग्धचतुर्विंशतिश्च । श्रीसिद्धानंत नाथालयविशदलसत्

सर्वलोकाग्रभाग। प्रासादाग्र प्रदेशे जगति विजयते वैज यंती जयंती ॥२॥ इति ऋषभमंडलस्तुतिः ॥*॥

॥*॥ अथ नवपद आरती लि० ॥*॥

॥ ॐ ॥ जय जय जगजन वंछित पूरण। सुरतरु अभि रामी। आतमरूप विमल करतारक। अनुभव परिणामी। (जय२ जगसारा२। आरती पार उतारा। सिद्धचक्र सुख कारा) ॥१॥ जगनायक जगगुरु जिनचंदा। भज श्रीभग वंता। आतमराम रमा सुखभोगी। सिद्धा जयवंता। (ज य०२)पंचाचारदीपै आचारिज। जुगवर गुणधारी। धारक वाचक सुव अर्थना। पाठक भवतारी (जय०)॥३॥ सम दम रूप सकलगुण ज्ञायक। मोटा मुनिराया। दंशण नाण सदा जय कारक। संजम तपभाया (जय०)॥४॥ नव पदसार परम गुरु भावे। सिद्धचक्र सुखकारी। ए भव परभव रिद्ध सिद्ध दायक। भव सायरवारी (जय०)॥५॥ करजोड़ी सेवक गुण गावे। मनवंछित पावे। श्रीजिनचंद अखयपद पूजत। सिव कमला पावे (जय०) ॥६॥ इति श्रीनवपद आरती।

॥*॥ अथ रिषमंडल आरती लि० ॥*॥

॥ ॐ ॥ जय जय जिन राजा। (वारी ज०) आरति करुं सिवकाजा। भव भय दुख भाजा। (जय०) ॥ १ ॥ ऋ षभ अजित संभव जिन राया। अभिनंदन सुमति। पद्म सुपारस चंदाप्रभु ते। दूर हुवै कुमति। (जय२) सुविध सीतल श्रेयांस सवाई। करि वारम जिनकी। विमल अनं

त धर्म्म प्रभु शांति। हर आरति तनकी। (जय०) ॥ ३ ॥ कुंथुनाथ अर मल्लि मुनिसुव्रत। नमि नेमि औकारा। पार्श्वजिनेश्वर वीर जिनंदा। आतमहित कारा। (जय०) ॥ ४ ॥ इण विधि आरति जे भवि करसी। भवसायर तर सी। श्रीजिन चंद अखयपद फरसी। सिव कमला वर सी। (जय०) ॥ ५ ॥ इति श्रीऋषमंडल आरती ॥※॥

॥※॥ अथ ऋषिमंडल सुणनेंको (वा) पूजनेंको विधि ॥※॥

॥※॥ (प्रथम) ॥※॥ आद्यन्ताक्षरसंलक्ष्य० । यह । ऋष मंडलस्तोत्र। धूप दीपादिविधि संयुक्त आठ महिने तक प्रभात समय सुणें। ऋषमंडलमें (जो) मूलमंत्र है (सो) शुभदिन शुभघड़ी। हाथमें फल फूल भेट सक्ति माफक लेई। गुरूके पास जावे। भेट धरके विनयसंयुक्त मूलमंत्र ग्रहण करै। उसका ८००० जाप आठ महिनामे करै आंबिल करणेंको शक्ति होय (तो) सदा करै। नहिं तो। आठम। चवदस। दो आंबिल जरूर करै। आठ महि नां हुया बाद उजमणो करे। उजमणेंके दिन १०८ वेर सुणे। पीछै शक्ति होय (तो) विधिसंयुक्त। ऋषमंडल स्थापन करायकै पूजा करै। विशेष शक्ति होय तो (२४) प्रकारी पूजा करावे। पूजामें सामग्री ज्यो पहली नव पदजीकी विधकै ठिकाणे लिखीहै (सो) सब सामग्री इहां (२४) चोईस लेणी। एक एक माहाराजकी पूजा चढाव कै। प्रथम जल। पीछै चंदन। ऐसें अष्टद्रव्य अनुक्रमसें चढावे। पीछै संपूर्ण पूजा हुया बाद। गुरुभक्ति करै।

साहमी वछल करै। इहां विशेषविधि गुरुके मुखसें समझके करणी ॥ ए ऋषमंडल सुणनें वाले पूजणेंवाले भव्य जीवोंके घरमें कभी उपद्रव न होगा। सदा आनंद उछाह रहेगा। इत्यलंविस्तरेण। इति ऋषमंडल सुणनें (वा) पूजन करनेंकी विधि ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ भगवंत के (६) अंग पूजन दूहा ॥ १ ॥ ※ ॥

॥※॥ जलभरी संपुटपत्रनां। युगल किनरपूजंत। रिषभचरण अंगूठडे। दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानुं बलें काउसग रह्या। विचर्या देशविदेश। खड़ा (२) केवल लह्या। पूजो जानुनरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी। वरस्या वरसी दान। करकांडे प्रभु पूजनां। पूजो भविबहुमांन ॥ ३ ॥ मानगयुं दो अंशथी। देखो वीर्य अनन्त। भुजाबलें भवजलतर्या। पूजो खंध महन्त ॥ ४ ॥ रत्नत्रय गुण उजली। सकल सुगुण विसराम। नाभि कमलनी पूजना। करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय कमल उपसम बलें। बाल्यीं रागनें द्वेष। हेम दहे वन खंडनें। हृदय तिलकसंतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देई देशना। कंठ विवर वरतूल। मधुर धुनि सुर नर सुणें। तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थंकार पदपुन्य थी। त्रिभुवन जिन सेवंत। त्रिभुवन तिलक समा प्रभु। भाल तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्धसिला गुण उजली। लोकांतिक भगवंत। वसिया तिण कारण वही। शिर संख्या पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्वना। तिम नव अंग जिणंद। पूजो बहुविध भाव थी। कहे सहु वीर

सुणिंद ॥ १० ॥ ॥ इति श्रीजिनवर नवअंग पूजन दूहा समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ शिक्षाकारक दूहा ॥ ॥

॥ ॥ जीवड़ा जिनवर पूजिइं । पूजाना फल जोय । राजा नमें परजा नमे । आंण न लोपे कोय ॥१॥ कुंभे बांध्यो जल रहे । जल विना कुंभ न होय । ज्ञानें बांध्यो मन रहे । गुरु विना ज्ञान न होय ॥१॥ गुरु दीपक गुरु देवता । गुरु विन घोर अंधार । जे गुरु वाणी वेगला । रड़वड़ि या संसार ॥१॥ भावे जिनवर पूजिये । भावे दीजै दान । भावे भावना भाविये । भावे केवल न्यान ॥१॥ प्रभू नाम की उषधी । सुद्ध चित्त से खाय । रोग पीड़ा व्यापे नही । महा दोष मिट जाय ॥ १ ॥ पांच कोड़ीनें फूलड़े । पाम्या देश अढार । कुमार पाल राजा थयो । वरत्यो जै जैकार ॥ १ ॥ मनमोहन पारस मिल्यो । मोहन गुण सुखकंद । मोहनी मूरत देखके । मोहण चित आनन्द ॥ १ ॥ पारस प्रभुके नामसें । सङ्क संकट मिटजाय । ईत उपद्रव भय टलै । मोहण गुण प्रगटाय ॥ १ ॥ इति दूहा ॥

॥ ॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य (श्रो०) देववंदन भाष्यसें मंदर जाणेंकी पूजन करणेंकी विधि लि० ॥ ॥

सू० ॥ ॥ वंदित्ताथुइथुत्तेहिं । गिहिंमिंवाणिसावउ ॥ पच्च क्खाणंतउगिण्हे । अप्पणोदेवसक्खियं ॥ १ ॥ तउहयगया

भा०॥ ॥ अब श्रावक घर देहरासर संबंधी जिन बिंबों कों स्तुति स्तोत्रोंसे वांदके (पीछे) पच्चक्खाण ग्रहणकरै । आत्म

इहिं। जाणेहिंअ रहेहिय॥ बंधुमित्तपरिक्खित्तो। वित्तं पूयंसुउत्तमं॥ २॥ अन्नेसिंभव्वसत्ताणं। दायंतोमग्गमुत्तमं॥ वच्चएजिणगेहम्मि। पभाविंतोयसासणं॥ ३॥ अहो धन्नोक्कएसोउ। अहोएअस्सजीवियं॥ अहोमाणुस्सिअंजम्मं। एयस्सय सुलद्धयं॥ ४॥ अहोभत्तीअहोराउ। अहोएयस्स आयरो॥ तिलोयनाहपूयाए। पुन्नवंतस्सपच्चहं॥ ५॥ धन्ना एअस्सरिद्धीउ। धन्नवायंपरिस्समो॥ धन्नोअपरियणोसय

साखसैं देवसाखसे॥१॥ (अब श्रावक जिनालय वांदणेकों किसीतरे जावे सो कहेहै)॥ ※॥ घोड़े हाथी रथ पालकी आदि शब्दसैं सिपाही नोकर चाकर भाई बंधु मित्र (इत्यादिक परिवार सहित) पूजाके लायक फूलफल प्रमुख उत्तम द्रव्यलेके॥२॥ (उरभी) भव्य जीवोकों उत्तम मोक्षमार्ग दिखाता हुआ। जिनशासन की प्रभावना करता हुआ। जिनमंदिर जावे॥३॥ (अब वह प्रभावनाही ढगाथासे कहै है)॥※॥ (अहो धन्य) अहो यह पुरष धन्यहै। अहो इसका जीवित सफल है। अहो इसका मनुष्यजन्म पाना भी सफल है॥ ४॥ (अहोभत्ती०) अहो इसकी कैसी भक्ति है। (अहो राउ कहिये)। अहो इसकुं बड़ा रागहै। अन्तरंगप्रीति है। क्या रोमरोम खुसी है। अहो तीनलोकके नाथकी पूजामें दिनदिन अधिक निर्मल बुद्धीहैं॥५॥ (धन्यए०) धन्य इसकी रिद्धी ज्यो दानभोग उपयोगमें आवे है। धन्यहै यह परिश्रम जो प्रत्यक्ष देखते हैं। धन्य हैं परिवार इसका (जो) इसकी पीठे रहता हैं॥६॥

लो। जिएयमणवत्तई॥ ६॥ अहोएयस्सइत्थेव। जम्मे चेव पसंसओ॥ भयवं अरिहंतत्ति। सव्वसुक्खाणदायओ॥ ७॥ अन्नहाएरिसोइड्ढी। कहमेयस्सउत्तमा॥ रयणायरसेवाए। होंति रयणवंतहा॥ ८॥ एएणपुन्नवंतेण। अन्नं जम्मंमि वाविओ॥ पुन्नरुक्खोमहाकाओ। सोइणिहंफलिओइमे॥ ९॥ (काव्वं)॥ एवंपसंसंपकुणंतयाणं। अणेगसत्ताणदुहाहयाणं॥ सम्मत्तरुक्खस्स महाफलस्स। तेसंतुसोचेवयकारणंतु॥ १०॥ ॥ (भणियंच)॥ जत्तियगुणपडिवत्ति। सव्वन्नुमयम्मिअविच लाहोई। सच्चियबीअंजायइ। बोहीएतेणनाएणं॥ ११॥

(अहो ए अ०) अहो इसके इसी जन्म में सर्व सुखदाता अरिहंत भगवंत प्रसन्न हुये हैं॥ ७॥ (अन्नहा०) बिना भगवानकी प्रसन्नताके ऐसी रिद्धी कहांसे आई (मुख्य अर्थ अन्वय करके समर्थन करे है) रत्नाकर समुद्रकी सेवासें रत्नवंत ही होय॥ ८॥ इस पुन्यवंतनें पूर्वभवके विषै महाकाय पुन्यरूपी वृक्ष बोयाहै। सो अबार इस भवके विषै फलाहै। प्रत्यक्ष पहिचाना जाताहै। सुख संपत्तिके पानेसें॥ ९॥ (अब प्रभावनाका फल बतलाते हैं) ॥ ॥ इस प्रकारसें प्रशंसा करते हुवे दुखदुर्गति सें तपे ऐसे जीवोंके। बडा है फल जिसके। ऐसा सम्यक्तवृक्षका लाभमें। प्रशंसा कारक मनुष्योंके। वह प्रभावक आप कही कारण है॥ १०॥ जितनी क्षमादिक गुणकी प्रतिपत्ति अनुमोदना प्रमुखसें भगवान का मतमें अविचल होय सोही जिन धर्म प्राप्तिका बीज कारण होय। धर्मपाल बहु

॥(काव्यं)॥ अलद्धपुव्वम्मिभवोअहम्मि। लहंतितित्थस्सपभावणा
ए॥ तित्थेसरत्तंअमरिंदपुज्जं। दसारसिंहोइवसेणिउव्व॥
१२॥ एवंविहाहिंवग्गूहिं। थुवंतोअ पईदिणं॥ वच्चएजिण
गेहम्मि॥ जावयजिणवलाणयं॥ १३॥ ❋॥

प्राणके दृष्टान्तसे ॥ ११॥ (अब दृष्टांत करके प्रभावनाका
सर्वोत्तमफल कहेहै) पूर्वे नहीं पाया चौसठ इंद्रो करके
पूजित। ऐसा तीर्थंकरपणा। तीर्थकी प्रभावनासे पावे। भव
समुद्रमें। (किसकी तरै) कृष्णकी तरै। अथवा। श्रेणिककी
तरै (जैसे) कृष्ण थावच्चापुत्रादिकोंकी दीक्षाका महोत्सव
कीया। श्रेणिकनें वीरप्रभुकी भक्तिकरी। जिनधर्मकी उन्न
ति करते तीर्थंकरपद उपार्जनकीया॥ १२॥ अहोधन्नो
इत्यादिक महलेकहीवाणीसें स्तुतिकरतोथको। निरंतर
आवे। भगवानका मंदिरके दरवज्जेतक॥ १३॥❋॥

॥❋॥ अब देववंदन भाष्यसें प्रवेशविधि कहेहै॥ ❋ ॥

॥❋॥ इसमें पहिला द्वार दसत्रिकका कहा। अब
दसत्रिक मध्ये (पहलात्रिक) ३। निस्सही कहणेंका॥❋॥
(१ निस्सही) जिन मंदरमें पैसतां कहनी। (कहे पीछै)
घरका काम विचारणा न करे ॥१॥ (दूसरी निस्सही)
प्रदक्षणा तीन दिये पीछै कहनी॥ जिनमन्दिरमें फूटा
टूटा ठीक कराणेंकी सार संभाल रक्खी थी (सोभी छोडे)
इहां द्रव्यपूजा करणी रही॥ २॥ अब (तीसरी निस्सही)
कहे पीछें। निकेवल भावपूजा करे (पिण) द्रव्यपूजा न
करे॥❋॥ ए पहला निस्सही त्रिक कहा॥❋॥ (अब दूस

॥ॐ॥ मणगुत्तोवयगुत्तो। कायगुत्तो जिइंदिउ॥ इ
रियाएउवउत्तो। विकवेवाणंविवज्जए॥ १॥ (काव्यं) सुत्त,
णजंकिंचिविदेवकज्जं। नोअन्नकज्जंतु विचिंतइज्जा॥ इत्थी
कहं भत्तकहंविवज्जे। देसस्सरन्नोनकहं कहिज्जा॥ २॥
(भणियंच)॥ मम्माणुवेहं न वइज्जवक्कं। नजम्मकम्माणुग
यंविरुद्धं॥ नालीयपेसुन्नसुकक्कसंवा। थोवंहियंधम्मपरंल

त्रालिक) ॥ॐ॥ ज्ञानत्रिककी आराधना करणेकुं तीन प्रद
क्षिणा देवै ॥ॐ॥ (तीसरात्रिक) ॥ मूलनायकजीके बिंबकुं
पंचांग मिलायकर तीन प्रणाम करना ॥ॐ॥ (अबचौथा
त्रिक) ॥ॐ॥ अंग ॥१॥ अग्र ॥२॥ भाव ॥३॥ त्रिविध प्रकार
पूजा करै ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अब पूजाका अधिकार मूलगाथा संयुक्त लि
खिते हैं। ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ (अब प्रदक्षिणा अर निसही में कृत्याऽकृत्य
कहै है) ॥ मनोगुप्ती वचनगुप्ती कायगुप्ती करके युक्त
रहै। पांचों इंद्रियोंकों वशराखै। गमनागमनमें उपयोगी
रहै। गीतादिक में व्याकुलता न राखै॥ १ ॥ ज्यो कुछभी
देवकार्य कों छोडके अर कार्य न विचारै। स्त्रीकथा
भोजनकथा (फेर) देशकथा राजकथा न कहै ॥२॥ मर्मकुं
भेदन करनेवाला ऐसा वक्रवचन नही बोलै। जन्म अर
कर्मके अनुगत वचन न बोलै। किसीकुं (अर्थात्) किसी
के मा बाप का किया ज्यो खोटाकाम उसकों प्रगट नही
करना (अर) कर्मानुगत वचन नोकरकुं नोकर। गोलेकुं

विज्जा ॥ ३ ॥ जोहोइ निसिद्धप्पा। निसीहिया तस्स भावओ, होई ॥ अनिसिद्धस्स निसीहिया। केवलमित्तं हवइ सद्दो ॥४॥ सिहो कहाउसव्वाउ। जोवज्जेइ जिणालए॥ तस्स निसीहिया होई। इइ केवलिभासियं ॥ ५ ॥ पुणो निसीहियंकाउं। पविसेइ जिनालए॥ पुव्वुत्तेण विहाणेणं। कुणइ पूयंतउवि उ ॥ ६ ॥ काय कंडूयणं वज्जे। तहा खेलाविगिंचणं ॥ थुइ थुत्त भणेअव्वं ॥ पूयंतो जगबंधुणो ॥ ७ ॥ घुसिण कप्पूर मी

गोला (इत्यादि न बोलैं) अलीक झूठावचन न बोलै। चुगली न करै। अत्यन्त कठोर वचन न बोलैं। (तो कैसे बोलै) प्रमाणोपेत। आत्माकुं हितकारी। धर्म संयुक्त ऐसा वचन बोलै ॥३॥ (ज्यो निषिद्धात्मा)। मन वचन कायाके। खोटेव्यापारों का निषेध। अपणी आत्मासे जिसनें किया है। उसके भावसें निस्सही होय। (जिसनें) निषेध नही किया (उसके) निस्सही केवल शब्दोच्चारण मात्रही है ॥४॥ (ज्यो) जिनमन्दिर में। आपस में सब कथा न करै। उसके निस्सही होय। (यह केवलियुंका कहा है) ॥५॥ (फेर) आठ तह करके। उज्वल वस्त्रसें। मुखकोस बांधे। (पीछे) धूपादिकसें अंग शुद्धकर। निस्सही कहके। मूल गुंभारे में प्रवेश करै। (पीछे) पंडितपुरुष जयणा संयुक्त पूजा करै ॥ ६ ॥ पूजा करते हुये शरीर में खाज न खिणै। तैसेही खेल खंखार न करै। जगबांधव भगवान की पूजा करते हुये। स्तुति स्तोत्र पढै ॥ ७ ॥ (अब पखाल करानें की विधि कहे है) ॥ चंदन कपूर से मिला हुवा। अष्टांग

संतु । काउ गंधोदगं वरं ॥ तर्ज भुवणनाहेउं । रहवेदूभत्ति संजुउं ॥८॥ (अन्यवाप्यु,तं) गंधोदएणन्हवणं । विलेवणं प वर पुप्फमाईहिं॥ कुज्जापूयं फलेहिंच। वत्थेहिंआभरण माईहिं ॥९॥ ॥ सुकुमालेण वत्थेणं । सुगंधेणं तहेवय ॥ गाया इ विगयमोहाणं। जिणाण मणुलूहए ॥ १० ॥ कप्पूर मीसियं काउं । कुंकुमं चंदणं तहा ॥ तउय जिणबिंबाणि। भावेण मणुलिंपए ॥११॥ वण्ण गंधोवमेहिंच । पुप्फेहिं पवरेहिय ॥ नाणापयार वंधेहिं । कुज्जापूयं वियक्खणो ॥ १२ ॥ वत्थ गंधेहि पवरेहिं । हियय णंद दायए ॥ जिणे भुवण म

घजल करके । (पीछे) भुवननाथ कु भक्तियुक्त होके । स्नान करावे ॥८॥ ॥ (मूलकार इसही वातकुं । दूसरे ग्रंथके वचनसें पुष्ट करता है)॥ ॥सुगंधयुक्त पाणीसें स्नान करावे चंदनादिकसें विलेपन करै। प्रधान फूल(आदि शब्दसें) फल वस्त्र आभरण चंद्रवा प्रमुखसें पूजा करै ॥ ९ ॥ (इसही अर्थकुं विस्तारके नव गाथासें कहै है ॥ ॥(सुकुमालेण०) सुकुमार अर्था कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसें। गया है मोह जिनका (अर्थात् जीताहै मोह जिनोंने) असे तीर्थंकरोंका शरीरकुं लूहै ॥ १० ॥ (पीछे शुद्धभावसें) कपूर मिश्रित केसर चंदनकों करके जिनबिंबोंकै विलेपन करै ॥ ११ ॥ वर्ण गंध करके है उपमा जिनकों (असे) मनोहर वर्ण। मनोहर गंधसंयुक्त अनेक प्रकार के चित्रित । जीवादि रहत । निर्दोस पुष्पों से उत्तम श्रावक पूजा करै ॥ १२॥ प्रधान वस्त्र गंध संयुक्त । असा चीनांशुक । (तिनसें) हृदय

हिएउं। पूयए भत्तिसंजुउं॥ १३ ॥ संखकुंदो वमेहिंच। अखंड फुडिएहिय॥ अक्खएहिं विसिट्ठेहिं। लिहई अट्ठ मं गले॥१४॥ दप्पण (१) भद्दासण (२) वद्धमाण (३)। सिरिवत्थ (४) मच्छ (५) वरकलसो (६)॥ सत्थिअ (७) नंदावत्तो (८) लिहई अट्ठ मंगलया॥१५॥ कुसुमेहिं पंचवरणेहिं। पूयए अट्ठ मंगले॥ चंदणेणं विसिट्ठेणं। दले पंचंगुलीतलं॥१६॥ अगर कप्पूर मीसं तु। दहेधूवं विअक्खणो॥ आरत्ति आई पज्जंतं। करेकिच्चं तउपुणो॥१७॥ देविंद दाणविंदेहिं। नार एणं जहा कयं॥ पभावईए देवीए। तहा नट्टं करेविउ॥१८॥

कों आनंद के देने वाले। त्रिभुवन के पूजनीक। ऐसे भगवानकों। भक्तिसंयुक्त हुआ थका पूजे॥१३॥ संख जैसा उज्वल। कुंदके फूल सरीखा निर्मल। अखंड फूटे टूटे नही (ऐसे) चावलों करके अष्टमंगलीक लिखे रचना करै॥१४॥ दर्पण १। भद्रासण २। वर्द्धमान सरावसंपुट (अथवा) पुरुषारूढ पुरुष ३। श्रीवत्स ४। मत्स्य ५। कलश ६। स्वस्तिक ७। नंद्यावर्त ८। येआठ आठ मंगलीक लिखे॥१५॥ पांचवर्णके फूलों करके अष्ट मंगलीक पूजे। सुंदर कुंकुम मिश्रित चंदन सें हत्थो देवै॥ १६॥ अगर कपूर मिश्रित विचक्षण पुरुष धूप खेवे (पूजा की विधि आरती पर्यन्त) रायपसेणी। जीवाभिगम। ग्याता धर्मकथा (इत्यादि शास्त्रों में) प्रगट देखणा। पीछे भक्ती सें नाटक करै॥१७॥ (जैसे) देवेन्द्र। दानवेंद्र। नारद। इनों नें (और) प्रभावती। उदायी नामा राजा की राणी नें।

नाटक किया (ओर) रावण प्रमुख केई जीवोंनें नाटक करके । तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया (तेसें) संका रहत होके। उत्तम पुरस नाटक करै ॥ १८ ॥ ॥

॥॥ (अब) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा करै। सो अंगपूजा ॥१॥ प्रभूके संन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावे (सो) अग्र पूजा ॥ २ ॥ प्रभूके सन्मुख सक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करै (सो) भावपूजा ॥३॥ (यह द्रव्य पूजाका विचार गर्भित चोथा त्रिक कहा)॥॥ (अब पांचमा त्रिक)॥॥ तीन अवस्था विचारणी ॥ पिंडस्थ (१) पदस्थ (२) रूपातीत ॥३॥ इसमें पिंडस्थ अवस्थाके तीन भेद॥ जन्मावस्था ॥१। राज्यावस्था ॥२॥ श्रमणावस्था ॥३॥(ओर) केवल अवस्थाको विचार करणा (सो) पदस्थ अवस्था॥ निरंजनाकार (सो) सिद्धावस्था। तिसकुं रूपातीत अवस्था कहते है ॥॥ ॥॥ (अब छठात्रिक) ॥॥ तीन दिसा छोडके प्रभूके सामनें निजर रखै। उर्द्ध १॥ अध २॥ तिरछो ३॥ दहणी। वांइ पिछाडी। निजर नही करै॥ ॥ (अब सात मा त्रिक)। तीन वेर धरती प्रमार्जकें। उस ठिकाणें चैत्यवंदन करै ॥ (अब आठमात्रिक) ॥॥ वर्णादिक तीन संपदाका ॥ हरफ सुद्ध उच्चारण करै (सो) वर्ण सुद्धि ॥१॥ हरफोंके अर्थ पर आलंबन रखै (सो) अर्थसुद्धि ॥२॥ आलंबन एक जिन प्रतिमाका रखै (सो) मन सुद्धि ॥३॥॥ (अब नवमात्रिक ॥॥ तीन मुद्रा करनी ॥ जोग मुद्रा १॥ जिनमुद्रा २॥ मुक्ता सुक्ति मुद्रा३॥ (इसमें) जोग मुद्रा किसकुं कहते है ॥ पद्मकोसाकारे। दोनुं हाथ परस्पर अंगुली मिलानी। एजोग

मुद्रायें संक्रस्तव कहिये १॥ काउसग्ग मुद्रा (सो) जिन मुद्रा २॥ (अर) दीसोपका जोड़ा तिस आकार हाथ रख ना। उसकु मुक्ता शुक्तिमुद्रा ३॥ इस मुद्रासें प्रणिधान (जय वीयराय) इत्यादिक करे॥※॥ (अब दस मालिक)॥※ प्रणिधान तीन॥ जिन वंदन प्रणिधान १॥ मुनिवंदन प्रणि धान २॥ प्रार्थना प्रणिधान ३॥ इसमे (जो) जावंति चेइ याइं (इत्यादि) इहसंतो तत्थ संताइं (इहां तक) जिनवंद नप्रणिधान १॥ जावंति केवि साहु (इत्यादि) तिविहेण तिदंड विरियाणं। (इहां तक) मुनि वंदन प्रणिधान २॥ जय वीयरायसें (लेकें) आभवम खंडा तक। प्रार्थना रूप प्रणिधान ३॥ ॥※॥ (ऐसें दसलिक का पहला द्वार कहा)॥ ॥※॥ [अब पांच अभिगमन साचवणे का दूसरा द्वार कह तेहें] ॥※॥ सचित्त द्रव्य कुसमादिक अपनें पास होय उसकु अलग रख देना १॥ (और) राज चिह्न मुगट छत्र खड्ग चामर पादुका अचित वस्तु छोड़ना। आभूषण प्रमु खपहरया रखना २॥ मन एकाग्र करना ३॥ एक पट्ट उत्त रासंग करना ४॥ जिन बिंब देखतेही (नमो भुवणबंधुणो) ऐसें नमस्कार करना ५॥※॥ ए दूसरा द्वार कहा॥※॥ [अब तीसरा द्वार दो दिशोका] ॥※॥ पुरष दहणी दिसा वैठा। भगवंत को वांदे॥ स्त्री वांइ दिस बैठके भगवंतकु वांदे॥※॥ (अब चोथा द्वार तीन अभिग्रह)॥※॥ अभि ग्रह देव वांदणा में कहा॥ (जघन्य) नव हाथ दूर वैठके देव वांदे १॥ (मध्यम) नव हाथ सें उपरांत वैठके देव वांदे २॥ (उत्कृष्ट) ६० हाथ दूर वैठके देव वांदे ३॥※॥

(अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका) ॥※॥ (सो) जघन्य १॥ मध्यम २॥ उत्कृष्ट ३॥ तीन भेद है॥ तिहां। णमो अरिहं ताणं (इत्यादिक कहके) वा। एक दोय गाथाका नमस्कार कहके। सक्रस्तव कहना (ए जघन्य चैत्यवंदन १) जिस देव वंदनमें स्थापनार्हत स्तवदंडक। नमोत्थुणंसें (लेके) अरिहंत चेइयाणं (इत्यादिक संपूर्ण कहो) एक स्तुति कहै (सो)॥ मध्यम चैत्यवंदन (तथा) कोई आचार्य कहै॥ पांच दंडक सहित। थूई गाथा (४) नी कहनो (सो) मध्यम चैत्य वंदन कहिये॥ (तथा) विधिपुर्वक सक्रस्तवादि पांच दंडक। जय वीय राय पर्यंत। आठे थुई ए देव वांदणा। (सो) उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहिये॥※॥ (अब छट्ठा द्वार) पंचांग प्रणिपात करै। दो जानु। दो हाथ (और) मस्तक (ए) पांच अंग मि लायके जमीन में लगावै॥※॥ (अब सातमा द्वार)॥※॥ जघन्यें एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एक सो आठ श्लोक (तथा) काव्यसें प्रभूनी स्तवना करै॥※॥ (अब स्तवना कर नेंके प्रसंगसें प्रथम नव पदके (९) चैत्यवंदन (९) स्तवन(९) थुई लिखते हैं॥※॥ ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन लि० ॥※॥

॥※॥ श्रीइष्टदेवाय नमः॥※॥ जय२ श्रीअरिहंत भानु भवि कमल विकासी। लोकालोक अरूपि रूपि समवस्तु प्रकासी॥१॥ समुद्घात सुभ केवले। चय कृत मल रासी। शुक्ल चरम शुचि पादसें। भयो वर अविन्यांसी॥२॥ अंतर रिपु गण हणीए। हुय अप्पा अरिहंत। तसु पद पंक

र्मे रहित। और धरम नित रंत ॥३॥ इति अरिहंत पद चैत्यवंदनं ॥ जिंकिं चि० । नमोर्हत्० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ प्रथम पद स्तवन लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ (पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सुरिंद पू० एदेसी) ॥ श्री तेरमगुण वसिके कंत। कर्मकुं भंजे श्री अरिहंत। (मन मानले)। अष्टसमय में समय तीन। सर्व आहार थी होवें हीन ॥ (म०) बादर काये मन वच योग। तनु२ सें फुन हटतनु योग ॥ (म०) सुषम कायते मन वच रोक। निज वीर्यें ताकुं कर फोक (म०)॥२॥ संज्ञी मालके मन व्यापार। बेइंद्रीनें वाक्य प्रचार (म०)। आदि समय रह्यो पणक सुजीव। सुषम लह्यो तिण योग अतीव (म०) (एवां योग थी समयें एक। हीना संष गुणो कर ठेक (मनमा०)। समया संखें योग निरोध। छत्वा जो लह्यो ोध (मन०)। बेद समें ना हारता माय। कुशल जिनराय। (म०) तेरमे गुणमें गुण समें देव। ं नितमेव (म०) ॥५॥ इति अरिहंतपद स्तव

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ (अथ थूई) ॥ ॥ सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी। केवल ग्यान की ज्योति प्रकासक अनंतगुणें करि पूरो जी। तीजे भव थानक आराधी गोत तीर्थंकर नूरो जी। बारे गुणांकरी एहवा अरिहंत आराधो गुण भूरो जी ॥ इति अरिहंत पदस्तुतिः ॥१॥

॥ॐ॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥२॥ॐ॥

॥ॐ॥ श्री शैलेसी पूर्व प्रांत। तनु हिंनत भागी। पुब्व पर्ज्जयपसंगसें। जरधगत जागी ॥१॥ समय एकमें लोकप्रांत। गयो निगुण निरागी। चेतन भूपें आत्मरूप। सुदि सालही सागी ॥२॥ केवल दंसण नाण थीए। रूपातीत स्वभाव। सिद्ध भये तसु हीर धर्म। वंदे धरि सुभ भाव ॥३॥ इति सिद्धपदचैत्यवंदन ॥२॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ सिद्धपद स्तवन लि०२ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ थांरे महिलां ऊपर मेह झरोखे बीजली (एदेसी) ॥ ॐ ॥ अष्ट बरस नग मास हीना कोडी पूर्व में (म्हारा लाल हो०)। उतकृष्टो करै बास सयोगी धाममें (म्हा० स०) ॥ अजोगी के अंत तजे भव भव्यता (म्हारा०त०)। शैलेसीलहै कर्मदलै गुणश्रेणिता (म्हा०द०) ॥१॥ लखाक्ष र पंच काल रहै ते योगमें। (म्हा०र०) तेरस प्रकृतिनो अन्त करीनें अन्तमें (म्हा०क०) गमन करै नगरज्जसें। अक्रिय होयनें (सें०) पुव्व पयोग असंग स्वभाव अबं धनें (ख०) दूषु२गुण नवपरमाण जोजन लचें कही। जो०। वर्तुल बिसदा भास निरालंबन सही (म्हा०नि०) मध्य जोजन अष्ट घनाकृति अन्तमें (ध०) मची पच्छयो, हीन भणो सिद्धांत में (भ०) ॥२॥ तनुपब्भारा नाम सिलासें जो यनें (सि०) जुग लोचन में भाग। अलोककुं स्पर्श नें (अ०) लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहणा (प्र०) छवि धनु शतपंच गुणासें हीनता (म्हा०) मिलिया एकमें नंत अबाधानालही [म्हा० अ०] अष्ट प्राणधरि रम्य

सिरीही जो स्हो (सि०) बीजोपद श्रीसिद्ध धरो मन गेहमें (म्हां०धरो०) कुसलभये जगजीव मिलोगा तेहमें [म्हारा०मि०] ॥५॥ इति सिद्धपद स्तवनम् ॥※॥ २ ॥

॥※॥ (अथ थुई) ॥※॥ अष्ट करमकुं धमन करीनें गमन कियो सिववासी जी। अव्या बाध सादि अनादि चिदानंद चिद रासी जी। परमातम पद पूरण विलासी अघ घन दाघ विनासी जी। अनंत चतुष्टमय शिवपद ध्यावो केवल ग्यानी भासी जी। इति सिद्धपद स्तुतिः ॥२॥

॥ ※ ॥ अथ तृतीय पद नमस्कारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिन पदकुल सुखरस अनिल। मितरस गुण धारी। प्रवल सवल घन मोहको। जिणते चसुहारी ॥१॥ कत्थवादिक जिनराज गीत। नयतन विस्तारी। भव कूपे पापें पड़त। जगजन निस्तारी ॥२॥ पंचाचारी जीवकि। आचारिज पदसार। तिनकुं वंदे हीर धर्म। अष्टोत्तर सो वार ॥३॥ इति आचार्यपद नमस्कारः ॥ ३ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ आचार्यपद स्तवनलि० ॥※॥

॥※॥ (नणदल बींदली लैएचाल) ॥※॥ खंती खड्गगयी जे णें। हणयो क्रोध सुभट समदेणेंहो। (गणपति गुणपेखो)। मान माहा गिरि वयें रे। अति सोभन मद्दव वयरें (होग०)। दंभरूप विस वेलो। वर अज्जव कीलै ठेलीहो (ग०)। मुर्छा वेलघो भरियो। लोह सागर सुत्तें तरियो हो (ग०) ॥२॥ मदन नाग मद हीनो। जिण दम सम जंते कीनो हो (ग०)। मोह महामल्ल ताड्यो। पुण वैराग

सुगरं पाड्यो हो (ग०)॥३॥ दोस गयंद वस कीनो। धरि उपसम अंकुस लीनो हो (ग०)। अंतरंग रिपु भेद्या। सुर वर पिण जिण खिपेद्याहो (ग०)। रस छत्रि गुण थी लीणो। सुत्र अरथै आगम पीनोहो (ग०)। आचारिज पद थइवो। धरी जीव कुसलता सेवोहो (ग०)॥५॥ इति आचार्यपद स्तवनम् ॥३॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (अथ थुई) ॥※॥ पंचाचारकुं पाले उजवाले दोष रहित गुणधारी जी। गुण छत्तीसे आगमधारी द्वादश अंग विचारी जी। प्रबल सबल घनमोह हरणकुं अनिल समो गुणवाणी जी। क्षमा सहित जे संयम पाले आचारज गुणध्यानीजी। इति आचार्यपदस्तुति ॥३॥※॥

॥※॥ अथ चतुर्थपद नमस्कारः ॥※॥

॥※॥ घन घन श्री उवझाय राय। सठता घन भंजन। जिन वर दिसत दुवाल संग। कर छत जन रंजन॥१॥ गुणनण भंजण मण गयंद। सुय झरणि कियगंजण। कुणालंघ लोय लोयणं। जत्थय सुय मंजण२। मस्हा आगमें जिन लह्योए। आगमसें पद तुर्य। तिनपें अहि निस हीर धर्म। वंदे पाठक वर्य ॥२॥※॥ इति उपाध्यायपद चैत्य० ॥४॥

॥※॥ अथ उपाध्यायपदस्तवन लि० ॥※॥

॥※॥ सांवलिया अलगा रहोनें। (एदेशी)॥ ऊयनें२ दूरी ऊयनें। चैतन भाषै सठनें (दूरीहोयनें) तुं मुझ पास क्युं आवै (दू०)। तुझनें कुण वतलावे। (दू० आंकणी) जो संगै निज पंचेंद्रीनो। रचना चरस भुलाणो। नाव्यवर

णो खय उप समसें। भावेंद्रो मंद्राणो (टू०) ॥१॥ द्रव्यै ते परवाम्र कीना। जाति नाम व्यप्रदेस। एवंतो गो तुरग गजादिक। किण कर्मे उपदेस (टू०) ॥ २॥ इत्यादिक बडु मुझकुं संका। तेरे संगे लागो। नीलवर्ण की समता सेती में भयो तोसुं रागो (टू०) ॥३॥ उप कहीयें हणीयो भवि वानो। अधियां लाभत आय। आखीनां मन पीड़ानामें। मायो येन विलाय (टू०) ॥४॥ अधिकुं स्मरीये वर आगम। सूलसें ते उवज्झाय। ततसेवाते हणि सठतांकुं। चेतन कुशलता पाय (टू०)॥५॥ इति चतुर्थ पद स्तवनम् ॥※॥

॥※॥ (अथ थुई) ॥※॥ अंग इग्यारे चउदे पूरव गुण पचवीसना धारी जी। सूत्र अरथधर पाठक कहिये जोग समाधि विचारी जी। तपगुण सूरा आगमपूरा नय निक्षेपतारी जी। मुनि गुणधारी बुध विस्तारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥※॥ इति उपाध्यायपदस्तुति ॥ ४ ॥

॥※॥ अथ पंचमपद नमस्कारः ॥※॥

॥※॥ दंसण नाण चरित्त करी। वर सिवपद गामी। धर्म शुक्ल सुचि चक्रसें। आदिम खय कामी॥१॥ गुण पमत्त अपमत्ततें। भये अंतर जामी। मानस इंद्रिय दमनभूत सम दम अभिरामी ॥२॥ चारित्त घन गुण गण भर्यो ए। पंचम पद मुनिराज। मतपद पङ्कज नमतहै। हीर धर्म के काज ॥३॥ ※ ॥ इति साधुपद चैत्यवंदनं ॥ ※ ॥ ५ ॥

॥※॥ अथ साधुपदस्तवनलि० ॥※॥

॥※॥ मालन मालन मति कहो (एदेशी) ॥※॥ निरुपा

चाहत अवकास ।३। इति ज्ञानपद चैत्यवंदनं ॥ ॥*॥

॥*॥ अथ ग्यानपद स्तवन लि० ७ ॥*॥

॥*॥ म्हांरे अति उछरंगे (एदेसी) जिनवर भाषित आगम भणिया । तत्व यथास्थिति गमिया जो (म्हा० रे । जगजनतारू) ते उत्तम वर नाण कहाये । भवि जन अह निस चाहे जो (म्हा०) ॥ १ ॥ भख्या भख्य कुपंथ सुपंथा । पेयापेय अग्रंथाजो (म्हा०) देव कुदेव अहित हितधारी ॥ जाणें जेण बोचारी जो (म्हा०) । २ । स्रुति मति दोयठै इंद्री सारू । तेण परोक्ष विचारू जो । (म्हा०) उही मण केवल हेवारू । जीव प्रतक्ष सुधारू जो (म्हा०) ॥३॥ अयवि जस बलें जगजाणें । लोकादिक अनुमानें जो । (म्हा०) त्रिभुवन पूजै जास पसायें । धारी सुभ अध्यवसा यें जो (म्हा०) ४ ॥ नाणा वरणी उपसम खयथी । चेतन नाणकुं विलसै जो (म्हा०) । सप्तम पदमें भविजन हरषै । निसदिन कुशलता निरखै जो (म्हा०) । इति सप्तम नाणपद स्तवनं ॥७॥ ॥*॥ ॥*॥ ॥*॥

॥*॥ (अथ थुई) ॥*॥ मतिस्रुत इंद्री जनित कहि ये लहिये गुण गंभीरो जी । आतमधारी गणधर विचारो द्वादस अंग विस्तारो जी । अवधि मनपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी । ए पांच ग्यानकुं वंदो पूजो भवि जननें सुखकारो जी ॥*॥ इति ज्ञानपदस्तुति ॥ ७ ॥*॥

॥*॥ अथ अष्टमपद नमस्कार लि० ॥*॥

॥*॥ जस पसायें साहु पाय । जुग२ समितेंद । नमन

करै सुभ भावलाय। फुण नरपति इन्द॥ १॥ जंपे धरि अरिहंतराय। करि कर्म निकंद। सुमति पंच तीनगुप्ति युत। दैसुक्ख अमंद॥ २॥ इषु क्रति मान कसाय चौए। रहित लेस सुचिवंत। जीव चरत्तकुं हौरधर्म। नमन करत नितसंत॥३॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं॥ ८॥

॥✱॥ अथ चारित्रपद स्तवन लि० ॥✱॥

॥✱॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी। चिदा भास निस्संग। (सुग्यानी सांभलो)। मूर्त्तिहीन चेतन करै। रूपी पुद्गल रंग॥ (सुग्यानी सां०) ॥१॥ स्वद्वंक कारण वर्गणा॥ कार्य कारण भाव (सु०) हत्वा जोग सुधामता। लभ्या संख स्वभाव (सु०)॥ २॥ पर्याप्ता लघु जोगमें। इद्धि लहै जगमान (सु०) मध्ये बसु समयें लहै। अंतें द्वौ तेनाण (सु०॥३॥ सह कारी मानस सुखा। कारण रम्य क्लेश (सु०) प्राप्तावस्त प्रकारता। सप्त षष्टतका तेन (सु०) ॥४॥ तद्बोधन रूपी भलो। चेतन संयमधाम (सु०) कर धन मिल पद धर्ममें। कुसल भवतु अभिराम (सु०) ॥५॥ इति चारित्रपद०॥ ✱॥

॥✱॥ (अथ थुई) ॥✱॥ करम अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावैं जी। बारै भावना सूधी भावै सागरपार उतारै जी। षटखंड राजकुं दूर तजीनें चक्री संजम धारै जी। एहवो चारित्रपद नित वंदो आतम गुण हितकारै जी॥✱॥ इति चारित्रपद स्तुतिः॥ ८॥✱॥

॥✱॥ अथ तपपद नमस्कार लि० ॥✱॥

॥✱॥ श्रीऋषभादिक तीर्थनाथ। तद्भव सिव जाण। वि

हिअ तै रपि बाह्य । मध्य द्वादस परिमाण ॥१॥ वसु कार मित आमोसही । आदिक लब्धि निदान । भेदै समतायुत खिणें । हरवन कर्मविमान ॥२॥ नवमो श्रीतपपद भलोए । इछा रोध सरूप । वंदनसें नित हीरधर्म । दूरभवतु भवकूप ॥३॥ इति तपपद चैत्यवंदनं ॥९॥ ॥※॥

॥※॥ अथ तपपद स्तवन लि० ॥※॥

॥*॥ वारस भेद भण्या जिनराजै । बाह्य मध्यतणा जगकाजैरे । (शिवपद श्रेणि) । तिण भव सिद्धितणा वर ग्याता । जिनवर पिण तपना कर्तारे ॥१॥ (शि०) । समता सहितें जिनते भाखै । भलो कर्म वसु पिणछारी रे (शि०) जीव कनकसें कर्मकचोरा । दहै तप पावकका जोरारे(शि०) ॥ २ ॥ तप तरु वरना कुसमहै ऋद्धि । देव नर नौ फलते सिद्धो रे (शि०) पाप सकलहै तमनी रासो । तपभानुसें जाये नासोरे (शि०) ३॥ जस्य पसायें लहियै वारू । लब्धां सगलो जगहित कारूरे (शि०) अति दुक्कर फुण साध्यता हीना । काम तातें वारूकीनारे । (शि०) ४ ॥ इछा रो धन रूपो कहियै । तपपदही चेतन वहियै रे (शि०) पाठ कश्रो हीरधर्म क्रुपासें । नवपद कुसलाकु भासैरे ॥ (शि०) ५ ॥ इति श्रीतपपद स्तवनम् ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ (अथ थुई) ॥※॥ इछारोधन तपते भाख्यो आगम तेहनो साखो जो । द्रव्य भावसें द्वादश दाखो जोगसमाधि राखो जो । चेतन निजगुण परणित पेखो तेहीज तप गुण दाखो जो । लवधि सकलनो कारण देखो ईश्वरसें मुख भाखो जो ॥※॥ इति तपपद स्तुतिः ॥ ९ ॥※॥

॥ ※ ॥ श्रीमदृषभ सर्व्वज्ञ । वृषभांक सुवर्णरुक् । जय देवाधिदेवार्हं । नाभि राजेन्द्रनन्दन ॥ १ ॥ युगस्यादौ त्वया येन । ज्ञानत्रय युतेन यत् । जनन्या मरुदेवायाः । पावनं जठरं कृतं २ ॥※॥ इति ऋषभ स्तुतिः ॥ १ ॥

॥※॥ अर्हताजितनाथेन गजलांछन शालिना । जित सत्रु महीपाल । पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजया कुक्षिर त्नेन । भगवंस्त्वयका जिन । जिता रागादयो येन । वंदेत्वां सर्व्वदा मुदा ॥ ४ ॥※॥ इत्यजितस्तुतिः ॥ २ ॥

॥※॥ जितारि नृपतेर्वंश्यात् । संभवः संभवाभिधः । सेनायानंदनो हेम । वर्णो गंधर्व्व लांछनः ॥ ५ ॥ सर्व्व सौख्य प्रदो मुख्य । ज्ञान दर्शन संयुतः । मुनीनां पुङ्गवो देवो । नित्यं दिशतुमांजिनः ॥ ६ ॥※॥ इति संभव स्तुतिः ॥ ३ ॥

॥※॥ सिद्धार्थानंदनं सार्व्वं । वीतरागं जगत्पतिं । श्रीसंवर समुत्पन्नं । प्लवगांकं हिरण्मयं ॥७॥ अभिनन्दननामानं । विशुद्ध हृदयः सदा । यस्तौति परयाभक्त्या । सनालोकेभिनंद्यते ॥ ८ ॥※॥ इत्यभिनंदन स्तुतिः ॥४॥ ※ ॥

॥※॥ मेघाभिध धरित्रीश । तनयो मङ्गलप्रदः । क्रौंच लक्षण स्वर्हेम । मरीचिर्मङ्गलांगजः ॥९॥ सत्वं सुमतिनाथेश । सुमतिं तनुसत्तमां । भविनां पुण्यकर्तॄणां । स्वर्गसौख्यावलिप्रदं ॥ १० ॥※॥ इति सुमति स्तुतिः ॥५॥ ※ ॥

॥※॥ सुसीमा पुत्रसत्लोक । नदद्यति धराधर । धराभिधनृपोद्भूत । पद्मलक्षणधारक ॥११॥ भवाब्धौ अवसंकीर्णे । दुस्तरे पततां नृणां । त्राणाय सततं देव । पद्मप्रभ जिनेश्वर ॥१२॥※॥ इति पद्मप्रभ स्तुतिः ॥ ६ ॥※॥

॥※॥ श्रीसुपार्श्वाभिधो देवः । पृथ्वीजः स्वस्तिकांकभृत् । प्रतिष्ट नृपसंजात । श्चामीकर करोजिनः ॥१३॥ समुद्र इव गंभीरः कर्मणां छेदनेपरः । यः सार्वः परमब्रह्मा । रतंनौमि सदा विभूं ॥ १४ ॥※॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥७॥

॥※॥ चंद्रप्रभ प्रभोकांत। चंद्रलक्षण संयुत ।,तमापति छविज्ञान । तमोव्यूह विनासन ॥ १५ ॥ संसारजलधेर्नाथ महसेन नपोद्भव । लक्ष्मणा पुत्रमांस्वामि । न्नव कीवल बोध भृत् ॥ १६ ॥※॥ इति चंद्रप्रभ स्तुतिः ॥ ८ ॥ ※ ॥

॥※॥ (अवाद्यक्षलबंधः श्लोकः) ※॥ संस्तुतो वोदद्त्वास्त्र । सुरासुर नरेश्वरैः । सुविधिर्वो ठित धर्मां । सुग्रीव नृपनंदनः ॥१७॥ यस्यासौञ्जननी रामा । मानजीया दिवौकसां । मानमुक्तोवदातोयो । मायौ मकरलांछिनः ॥ १८ ॥ ※ ॥इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ ८ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (चामर बंधाविमौ) ॥※॥ श्रीमच्छीतलनाथेश । नन्दाढढरथात्मजा । भास्वत्सुवर्णवद्देह । श्रीवत्सांह्वांक धारक ॥१९॥ त्वदीय चरणांभोज । सेवकानां वपुर्भृतां । प्राक्कृतंदजनव्यूहं । दुदंशं भोद्यद्दे विभो ॥ १० ॥※॥ इति शीतलनाथ स्तुतिः ॥ १० ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ विष्णार्वंशार्कवद्देवो । विष्णु पुत्रो हिरण्यभः । श्रेयोदद्दि करोजस्रं । खड्गलांछिन भृज्जिनः ॥२१ ॥ जित्वा कर्म रिपून्सार्वं । श्रेयांस श्रेयसैः सह । परज्ञान मयेनत्वं महानन्दपदं परं ॥ इति श्रेयांसस्तुतिः ॥ ११ ॥ ※ ॥

॥※॥ वरीवर्त्तितरामोहा । भवतां भवतां यदि । उद्वितिस्ठेदितु चित्ते । भोभव्याः प्राप्त मक्षरं ॥२३॥ तदाधनघ

सेनंहि । वासुपूज्यं जयासुतं । वसुपूज्य कुलोत्तंसं । महिषां कंचरक्ताभं ॥ २४ ॥※॥ इति वासुपूज्य स्तुतिः ॥ १२ ॥

॥※॥ श्रीमद्विमलनाथेंद्र । कृतवर्म समुद्भव । शूकरांक वरश्यामा । पुत्रकल्याण दीपिते ॥२५॥ चंद्रवद्विमल ज्ञान त्वदीय स्मरणं विना । कुर्व्वन्नप्येतिनो ब्रह्म । सत्क्रियां नाति विस्तरां ॥ २६ ॥※॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥

॥※॥ हेमवर्णस्य पुत्रस्य । सुयशः सिंह सेनयोः । देवस्य श्येनचिह्नस्य । वर्ण्यानन्त गुणोद्भवेः ॥२७॥ इंद्रादयोपि यस्यां तं । गुणानां लेभिरे नहि । अनन्तस्य गुणान्तस्य । क्षमोवक्तुं नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनन्तस्तुतिः ॥ १४ ॥※॥

॥※॥ सुव्रतापुत्र वज्रांक । भानुवंशार्कसन्निभ । कनकप्रभ सर्वज्ञ । धर्म्मनाथाभिधेश्वर ॥२९॥ तवागोपि पुरस्सारी । भूतले यात्यशोकतां । अनुत्तरफलाः संति । सतां संगतयोपि हि ॥ ३० ॥※॥ इति धर्म्मनाथ स्तुतिः ॥ १५ ॥※॥

॥※॥ विश्वसेन धराधीशं । नन्दनं मृगलक्षणं । आचिरेयं सुवर्णांगं । कलायामि जिनेश्वरं ॥३१॥ तं श्रीमच्छांति नामानं । यस्याग्रे कुर्व्वते मुदा । प्राज्यां सुमनसां वृष्टिं । विबुधा विबुधप्रियां ॥३२॥※॥इति शान्तिनाथ स्तुतिः॥१६॥

॥※॥ श्रीयुताया: श्रियपुत्र । श्रेयस्कर हिरण्यभ । सूरिभूपति संजात । छागलक्षणधारक ॥ ३३ ॥ कुंथुनाथजिनेशस्य । तीर्थंकर जगत्पते । मदीयं पापसंदोहं । भवांतर कृतं घनं ॥३४॥ इति कुंथुनाथ स्तुतिः ॥१७॥※॥

॥※॥ सुदर्शन नृपोद्भूतं । नन्द्यावर्त्तांकसंयुतं । अंभोजवन्निरालेपं । देवीपुत्रं सुवर्णाभं ॥३५॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्व्वे

धुर्य्यं प्रभुतया जिनं । चरीकर्म्मि नमस्तस्मा । अरायपर मात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथ स्तुतिः ॥ १८ ॥ ॥

॥ ॥ कुंभ प्रभावतो पुत्रौ । नीलवर्णो घटांकभृत् । जगन्मित्र इव ध्वान्त । नाशनादिदितः सदा ॥ ३७ ॥ ठब लययुतोभाति । देवयो विष्टपत्रये । तस्य श्रीमल्लिनाथस्य स्मरणेन सुदा सखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिनाथ स्तुतिः ॥१९॥

॥ ॥ सुमित्र नृपतेः सूनो । पद्माकुक्षि पवित्रकृत् । कुर्म्म लक्षण भृद्धर्म्म । दायक श्यःमलत्त्वे ॥२९॥ मुनिसुव्रत देवेन । क्षीणकर्म्मारि मंडल । देहि त्वं मेव्ययीभावं । पदं तत्पुरुषोत्तमः ॥४०॥ इति मुनिसुव्रत स्तुतिः ॥२०॥ ॥

॥ ॥ श्रीमद्विजय भूपाल । कुलोत्तंस हिरण्यरुक् । व प्रासुत नमिनाथ । नीलोत्पल सदंकभृत् ॥४१॥ यस्त पंच जनोदेव । निन्दाच कुरुतेश्वयं । सएति परमस्थानं । कोपि नह्यत्र संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥२१॥ ॥

॥ ॥ शिवायास्तनयेवर्य्ये । समुद्रविजयोद्भवे । हरिवंस हरौ शंखौ । शंखांकि कमल प्रभे ॥४३॥ त्यक्त राजीमती स्नेहे । नेमनाथे जितस्मरे । सिद्धिप्रमदयामाला । प्रत्यक्षेपि जिनेश्वरे ॥४४॥ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः ॥ २२ ॥ ॥

॥ ॥ अश्वसेनाख्य भूपाल । सुतेन परमेष्ठिना । वामेयेन दितावेन । कमठ स्वाभिमानता ॥४५॥ तस्मै श्रीपार्श्वनाथाय । नमोस्तु मामकं सदा । पवनासन विन्हाय । नीलवर्णाय संभवे ॥ ४६ ॥ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥ २३ ॥

॥ ॥ श्रीमत्सिद्धार्थवंशार्क । त्रिशलेय जगन्मणे । महानाद छलांछित । कल्याणं कर सर्व्वदा ॥४७॥ चरमस्तीर्थ

छद्वीर । मोहेभहनने स्फगात् । त्वद्भक्तिदत्तचित्ताय । कमलां देहिमे जिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभु स्तुतिः ॥ २४ ॥ ॥

॥॥ इति श्रीक्षमा कल्याणजी कृत २४ जिनेश्वर स्तवना संपूर्णम् ॥॥ ॥॥ ॥॥

॥॥ अथ (१) गाथाके । केई (२) गाथाके छुट्कर नमस्कार लि० ॥॥

॥॥ यत्र श्रीभरतेश्वरः शुचिमनाः पूर्वादि दिक्षुक्रमात् । तीर्थेशः किलयुग्मवर्णवसुदिक् संख्यान संख्यश्रियः । साधु स्थापयतिस्म विस्मित हृदा दृश्यं नगाधीश्वरं । तं चाष्टापद तीर्थराजमनिशं द्रष्टुं समीहे स्वयं ॥१॥ ॥॥ इत्यष्टापदस्तुतिः ॥ ॥ ॥॥

॥ ॥ लसद्विपंचाशदधीश्वरालये । विराजिते श्रीमति शाश्वताश्रये । नन्दीश्वरे द्वीपवरे जिनेश्वरान् । वंदेप्रमोदाद्भवभीति शांतये १ ॥ इति नन्दीश्वरस्तवः ॥ ॥

॥ ॥ सकल कुशलवल्ली पुष्करावर्त्तमेघो । दुरिततिमिर भानुः कल्पवृक्षोपमानः । भवजलनिधिपोतः सर्व संपत्ति हेतुः । स भवतु सततं वः श्रेयसे पार्श्वदेव १ ॥ इति श्री पार्श्वजिनस्तुतिः ॥॥ ॥॥ ॥॥

॥॥ दर्शनाद्दुरितध्वंसी । वंदनाद्वांछितप्रदः । पूजनात्पूरकः श्रीणां । जिनसाक्षात्सुरद्रुमः ॥ १ ॥ इति जिन स्तुतिः ॥ ॥ ॥॥ ॥॥

॥॥ सुवर्ण वर्णं गजराजगामिनं । प्रलंब बाहुं सुविशाल लोचनं । नरामरेंद्रैस्तुतपादपंकजं । नमामि भक्त्या

ऋषभं जिनोत्तमं ॥ १ ॥ इति आदिजिन स्तुतिः ॥*॥

॥*॥ नमस्कार समोमंत्रः । सत्रुंजय समो गिरिः । वीत राग समो देवो । न भूतो न भविष्यति ॥*॥ १ ॥*॥ दिठ्ठे तुह मुहकमले । तिन्निविणठ्ठाइ निरवसेसाइं । दारिद्दं दो हग्गं । जम्मंतर संचियं पावं ॥*॥ १ ॥*॥ पाताले यानि बिंबानि । यानि बिंबानि भूतले । स्वर्गेपि यानि बिंबानि । तानि वंदे निरन्तरं ॥*॥ १ ॥*॥ प्रसमरसनिमग्नं दृष्टि युग्मं प्रसन्नं । वदनकमलमंकः कामिनीसंगशून्यः । कर युगमपि यत्ते शस्त्रसंबंध वंध्यं । तदसि जगति देवो वीत राग स्त्वमेव ॥*॥ १ ॥*॥ ॥*॥

॥*॥ धन्या जेह सुलक्खणा । जे जिनवर पुजन्त । एकण घर्म्मे बाहिरा । परघर कम्मकरंत ॥ १ ॥*॥ भव बीजांकुर जनना । रागाद्याः क्षयमुपागता यस्य । ब्रह्मा वा विष्णुर्वा हरो जिनो वा नमस्तस्मै ॥१॥*॥ इति शुद्ध देवनमस्कारः ॥*॥ ॥*॥

॥*॥ अथ सदाके देववंदनमें (तथा) दशमें दिन । ओली पारणकी विधिमें कहणेका (चै०) (स्त०) थुई लि० ।

जो धुरि सिरि अरिहंत मूलदढ पीढिपइठ्ठिउ । सिद्धि सूरि उवझाय साहु चिहुंसा हगरिठ्ठिउ । दंसण नाण चरित्त तवहिं पडसाहें सुन्दरू । तत्तक्खरसरवग्गि लद्धि गुरुपयदल डुंबरू । दिसिवाल जक्खजक्खिणीपमुह सुरकु सुमेहि अलंकियउ । सो सिद्धचक्क गुरुकप्पतरु अम्ह मन वंछियदियउ ॥ १ ॥ ॥*॥ ॥*॥

॥卐॥ अथ पुनः नवपद चैत्यवंदनलि० ॥卐॥

॥卐॥ श्रीअरिहंत उदार कांति । अति सुन्दर रूप । सेवो सिद्ध अनन्तरंत । आतम गुण भूप ॥ १ ॥ आचारज उवझाय साधु । समता रसधाम । जिनभाषित सिद्धांतशुद्ध अनुभव अभिराम ॥२॥ बोधबीज गुणसंपदाए । नाण चरण तव सुद्ध । ध्यावो परमानन्दपद । ए नवपद अविरुद्ध ॥३॥ इह परभव आनन्द कंद । जगमांहि प्रसिद्धौ । चिंतामणि सम आस लोग । बहु पुण्ये लद्धौ ॥४॥ तिहुअणसार अपार एह । महिमा मनधारो । परिहर परजंजालजाल । नित एह संभारो ॥५॥ सिद्धचक्र पदसेवतां । सहजानन्द स्वरूप । अमृतमय कल्याण निधि । प्रगटै चेतन भूप ॥ ६ ॥ 卐 ॥ इति श्रीसिद्धचक्र नमस्कार संपूर्णम् ॥ 卐 ॥

॥卐॥ अथ नवपदस्तुद्ध स्तवनलि० ॥卐॥

॥卐॥ सुरमणी समसड मंत्रमां । नवपद अभिरामीरे लोय । (अहो नव०) करुणा सागर गुणनिधी । जग अंतरजामीरे लो० । (अहो जग०) ॥१॥ त्रिभुवन जनपूजित सदा । लोकालोकप्रकासी रे । लो० (अहोलोका०) । एहवा श्रीअरिहंत जी । नमुं चित्त उल्लासी रे लो० । (अ०न०) २ । अष्ट करम दलक्षय करी । थया सिद्ध सरूपीरे लो० । (अ०थ०) सिद्ध नमो भवि भावथी । जे अगम अरूपीरे लो० (अ०जे०) ३॥ गुण छत्तीसे सोभता । सुंदर सुखकारीरे लो० । (अ०सु०) आचारज तीजै पदे । वंदुं अविकारी रे लो० । (अहोवं०) ४॥ आगमधारी उपशमी । तप दुविध आराधीरे लो० । (अ०त०)

चोथै पद पाठक नमो । संवेग समाधीरे लो० । (अ०सं०)५॥ पंचाचार पालणपरा । पंचाश्रव त्यागीरे लो० । (अहोपं०) गुण रागो मुनि पांचमै । प्रणमुं वडभागो रे लो० । (अ० अ०)६ । निज परगुणनें ओलखै । श्रुत श्रद्धा आवै रे लो० । (अ०श्रु०) छट्ठे गुण दरसण नमो । आतम शुभ भावै रे । (लो० अ० आ०) ७ ॥ ग्यान नमो गुण सातमें । जे पंच प्र कारै रे लो० (अ०जे०) । स्वपर प्रकासक दिनमणी । अज्ञा न निवारै रे (लो०अ०आ०) ८ ॥ आठमै चारित्रपद नमो परभाव निवारी रे । (लो०अ०प०) । खंत्यादिक दस धर्म नो । जेह छै अधिकारी रे लो० । (अ० जे०) ९ ॥ नवमें वलि तपपद नमो । बाह्याभ्यन्तर भेदैरे लो० । (अ०बा०) बांध्या काल अनंतना । ते कर्म उछेदै रे लो० । (अ०जे०) १० ॥ ए नवपद बहुमानथी । ध्यावै शुभ भावै रे लो० । (अ०ध्या०) । नृप श्रीपालतणी परै । मन वंछित पावै रे लो० । (अ०म०) ११ ॥ आसू चैत्रकमासमां । नव आंबिल करियै रे लो० । (अ०न०) । नवओली विधियत करी । शिव कमला वरियै रे लो० । (अ०शि०) १२ ॥ सिद्धचक्रनो बहुपरै । बर महिमा कीजै रे लो० । (अ०व०) श्रीजिनलाभ कहै सदा । अनुपम जस लीजै रे लो० । (अ०अ०) १३ ॥*॥ इति नवपद स्तवनं ।

॥*॥ अथ पुनर्नवपद स्तवन लि० ॥*॥

॥*॥ (राग मारू) ॥*॥ तोरथनायक जिनवरू जी । अतिसय जास अनूप । सिद्ध अनन्त महागुणी जी । पर मानंद सरूप । (भविक मनधारज्योरे) ॥१॥ धारज्यो नव

पदध्यान (भ०) श्रीआचारज गणधरु रे। गुण छत्तीस नि. वास। पाठक पदधर मुनिवरू जी। श्रुतदायक सुविलास (भ०) २॥ सुमति गुपतिधर सोभता जी। साधू समता वंत। सम्यग् दर्शन सुंदरू जी। ज्ञान प्रकाश अनन्त। (भ०) ३॥ संवर साधना चरण छै रे। तप उत्तम विधि होय। ए नवपदना ध्यानथी रे। निरुपाधिक सुख होय। (भ०) ४॥ अमृतसम जिनधर्मनो रे। मूलए नवपद जाण। अविचल अनुभव कारणें जी। नित प्रति नमत कल्याण (भ०) ५॥ ॥ इति नवपद स्तवनम् ॥॥

॥॥ (राग प्रभाती) ॥॥ नवपद ध्यान धरो रे (भविका न०)। मन वच काया कर एकंते। विकथा दूर हरो रे (न०) ॥१॥ संलजमो अरुतंव वगेरा। इन सबकुं विसरो रे। अरिहंतादिक नवपद जपनें। पुण्य भंडार भरो रे ॥२॥ (न०) अडसिध नव निध मंगल माला। संपति सहज वरो रे। लालचंदयाको बलिहारी। शिवतरु बीज खरो रे ॥३॥ (नव०) ॥॥ इति श्रीसिद्धचक्र स्तवनं ॥

॥॥ अथ नवपद थुईलि० ॥॥

॥॥ नित प्रति ऊं प्रणमुं सिद्धचक्र सुभ भाव। हिव कारज सिद्धिनो लाधो एह उपाय। तुझ नाम पसावें आरति व्याधि पुलाय। इग तुझ अनुग्रहथी सुख संपति मुझ थाय॥१॥ श्री अरिहंत नमियै सिद्ध सूरी उव झाय। मुनिवर तिक करनें दंसण नाण सुहाय। दुगविधि चारित्तें बुधविध तप मन भाय। ये नवपद ध्यावतां नित

पंम शिव सुख थाय ॥२॥ विद्या परवादें जानो ए अधिकार श्रीगुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार। प्रवचन अनुसारें भाख्यो एह विचार। भविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणभंडार ॥३॥ जिनधरम अनुरागी चक्केसरि सुखकार। सेवकने आपे सुख संपति परिवार। ह्विव निद्धि उदयकरि चारित्र नंदी मन भाय। जिनचंद सूरी सर खरतर पति सुपसाय ॥ इति नवपदस्तुतिः ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ चैतीसंयुक्त नवपदऊली करण विधिलि० ॥※॥

॥※॥ (प्रथम) आसोज शुदि ७ (अथवा) चैत्रसुदि ७ से ऊली सरू करैं। (कदास) । तिथि घटी हुवे तो (६)। से वढी होय तो आठिम से सरू करै। (पिण) आंबिल (९) पूनिमताई करै। (तिहां) प्रथम भूमि शुद्ध करके। मांड यादिक सें चित्रित करै। पीछे बाजोट ऊपरि सिद्ध चक्र थापे त्रिकाल पूजा करें। (सोलिखते हैं) प्रभात समय राई पडिकमणो करिके। पीछें वस्त्र पडिले हैं। (जहां) सिद्ध चक्र स्थापना है (तहां) आयके पांच शक्रस्तवे देव वांदै। पीछे नव चैत्ये। (अथवा) नव प्रतिमा आगे। नव चैत्यवंदण करै। वास चेप पूजा करै। पीछे केसर चंदणसें पूजा करै। पीछे मध्याह्न समय पांच शक्र स्तवे देव वांदै। पीछे गुरु पासे आयके। राई आलोवे। अब्भुट्ठि ऊमि खमायके आंबिलनो पच्चक्खाण करै। प्रथम अरिहंत पदके वरण सपेद है। (दूसरें) आंबिल में चावल (अने) गरम पाणी यह दोइ द्रव्य लेसुं। असो आंबिल

पच्चखके। पीछे अरिहंत पदके बारे गुण है सो चिंतवि के बारे नमस्कार करै। सो लिखते हैं (प्रथम सब ठिकाणें) इच्छामिखमासमणो। वं० इत्यादि कहि के नमस्कार करै॥

१ ॥ अशोकवृक्ष प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः।
२ ॥ पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
३ ॥ दिव्यधुनि प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
४ ॥ चामरयुग प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
५ ॥ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
६ ॥ भामंडल प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
७ ॥ दुंदुभिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
८ ॥ छत्त्रत्रय प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
९ ॥ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअरि०।
१० ॥ पूजातिशयसंयुताय श्रीअरि०।
११ ॥ वचनातिशय संयुताय श्रीअरि०।
१२ ॥ अपायापगमातिशयसंयुताय श्रीअरि०।

॥※॥ इति द्वादश अरिहंतगुणाः ॥※॥

॥ ※ ॥ इत्यादि नमस्कार करिके। अन्नत्थ ऊससियेणं। (कहिके) (१२) बारे लोगस्सनो काउसग्ग करै। एकलो गस्स प्रगट कहै। पीछे खस्थानक जाके। चैत्यवंदन करै। पच्चक्खाण पारिके। आंबिल करै। पहले जल पीवे (जब) चैत्यवंदन करिके पीवै। पीछै फेर चैत्यवंदन करिके तिविहार पच्चक्खाण करै। गुणणो (२०००) ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं। इस पदको करै। श्रीपालजीके चरित्र नवपद महिमा सुणें। पुण पहिर दिन रहणेसें (तीसरीवेर)

पांच शक्रस्तवे देव वांदै। सामायिक लेके दिन छते पडिक मणो करै। आरतीके समय दीप धूप कुसम पूजा करै। (अथवा) पहिले आरती प्रमुख करिके। पीछै पडिक्क मणो करै। (सोणेके समय) इरिया वही पडिक्कमके चैत्यवंदन करिके। राई संथारा गाथागुणके सोवै। निद्रा न आवे जहांतक नवपदका गुण स्मरण करै ॥ ※ ॥ इति प्रथम दिवसविधिः ॥१॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ द्वितीय दिवस विधिलि० ॥※॥

॥※॥ अत्र इसीतरे दूसरे दिन प्रभाति करणी सब क रिके सिवपदरो लालवर्ण है। (इसीसे) गऊंके रोटोको आंविल करै। ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं (इसपदको) गुणणो दो हजार करैं। सिद्धपदके आठगुण है। सो (८) गुणां को गुरु नमस्कार करावे (सो लिखते हैं)।

१ ॥ अनन्तज्ञानसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः।
२ ॥ अनन्तदर्शनसंयुताय श्रीसि०।
३ ॥ अव्याबाध गुणसंयुताय श्रीसि०।
४ ॥ अनन्तसम्यक्तचारित्रगुण संयुताय श्रीसि०।
५ ॥ अक्षयस्थितिगुण संयुताय श्रीसि०।
६ ॥ अरूपी निरंजनगुण संयुताय श्रीसि०।
७ ॥ अगुरुलघु गुणसंयुताय श्रीसि०।
८ ॥ अनन्तवीर्यगुण संयुताय श्रीसि०।

॥※॥ इतिसिद्धा अष्टौ गुणाः ॥※॥

॥※॥ यह आठे नमस्कार करिके। अन्नत्थूससि०।

आठलोगस्सनो काउसग्ग करै। एकलोगस्स कहिके पारै पीछे पूर्वोक्त करणी। अनुक्रमसें करै ॥ॐ॥ इति द्वितीय दिवसविधिः ॥२॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ तृतीय दिवसविधि लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पूर्वोक्त विधिसें प्रभातकर्त्तव्य करै आचार्यपद पीले वर्ण है (इसीसें) चिणाकी दालका आंबिल करै। (ॐ ह्रीँ णमो आयरियाणं) इस पदको गुणणो दोहज्जार करै। आचार्य पदके (३६) गुण याद करके छत्तीस नमस्कार करै (सो लिखते है)।

॥ॐ॥ अथ आचार्य पदके (३६) गुण लि० ॥ॐ॥

१ ॥ प्रतिरूप गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः।
२ ॥ सूर्यवत्तेजस्वी गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः।
३ ॥ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआचार्याय नमः।
४ ॥ मधुरवाक्य गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः।
५ ॥ गांभीर्य गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः।
६ ॥ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ०।
७ ॥ उपदेश गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः।
८ ॥ अपरिश्रावी गुणसंयुताय श्रीआचा०।
९ ॥ सौम्यप्रकृति गुणसंयुताय श्रीआ०।
१० ॥ शीलगुणसंयुताय श्री०।
११ ॥ अविग्रह गुणसंयुताय श्री०।
१२ ॥ अविकथकगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः।

१३ ॥ अचपल गुणसंयुताय श्रीआ० ।
१४ ॥ प्रसंत वदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१५ ॥ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ॥
१६ ॥ ऋजुगुण संयुताय श्रीआ० ।
१७ ॥ मृदुगुण संयुताय श्रीआ० ।
१८ ॥ सर्व संगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ।
१९ ॥ द्वादश विधितपगुण संयुताय श्रीआ० ।
२० ॥ सप्तदशविध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२१ ॥ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ।
२२ ॥ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ।
२३ ॥ अकिंचन गुण संयुताय श्रीआ० ।
२४ ॥ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ।
२५ ॥ अनित्य भावना भावकाय श्रीआ० ।
२६ ॥ असरण भावना भावकाय श्रीआ० ।
२७ ॥ संसार स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ।
२८ ॥ एकत्व स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ।
२९ ॥ अन्यत्व भावना भावकाय श्रीआ० ।
३० । असुचि भावना भावकाय श्रीआ० ।
३१ ॥ आस्रव भावना भावकाय श्रीआ० ।
३२ ॥ संवर भावना भावकाय श्रीआ० ।
३३ ॥ निर्जरा भावना भावकाय श्रीआ० ।
३४ ॥ लोकस्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ।
३५ ॥ बोधदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ।
३६ ॥ धर्म दुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ।

॥ ※ ॥ इति षड्विंशदाचार्य गुणाः ॥ ※ ॥ यह छत्तीस नमस्कार करिके। अन्नत्थू ससि एणं इत्यादि कहि के छत्तीस (३६) लोगस्सनो काउसग्ग करै। एक लोगस्स ऊंचे स्वरसें कहि के पारै। यथोक्त करणी। अनुक्रमसें करै। इति तृतीय दिवस विधि ॥ ३ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लि० ॥※॥

॥※॥ (ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं) इस पदको (२) हजार गुणणो करै। हरया मूंगके दाल प्रमुखनो आंबिल करैं। उपाध्याय पदके (२५) गुण यादकरि के। नमस्कार करै ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ उपाध्याय पदके २५ गुणलि० ॥※॥

१ ॥ आचारांगसुत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः।
२ ॥ सुयगडांगसुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः।
३ ॥ श्रीठाणांगसुत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०।
४ ॥ श्रीसमवायांगसुत्र पठनगुण युक्ताय० ।
५ ॥ श्रीभगवतीसुत्र पठनगण युक्ताय०।
६ ॥ श्रीज्ञातासुत्रपठनगुणयुक्ताय०।
७ ॥ श्रीउपासकदशासुत्र पठनगुण युक्ताय०।
८ ॥ श्रीअन्तगडदशासुत्र पठनगुण युक्ताय०।
९ ॥ श्रीअणुत्तरोववाईसुत्र पठनगुण युक्ताय०।
१० ॥ श्रीप्रश्नव्याकरणसुत्र पठनगुण यु०।
११ ॥ श्रीविपाकसुत्र पठनगुण यु०।
१२ ॥ उत्पादपूर्व पठनगुण यु०।

१३ ॥ आग्रायणी पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१४ ॥ वीर्यप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१५ ॥ अस्तिप्रवाद पूर्व पठनगणयुक्ताय० ।
१६ ॥ ज्ञानप्रवाद पूर्व पठनगणयुक्ता० ।
१७ ॥ सत्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
१८ ॥ आत्मप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१९ ॥ कर्म्म प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
२० ॥ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठनगण युक्ताय० ।
२१ ॥ विद्याप्रवाद पूर्व पठनगण युक्ताय० ।
२२ ॥ अविंध्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
२३ ॥ प्राणायामप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
२४ ॥ क्रियाविसाल पूर्व पठनगुण यु० ।
२५ ॥ लोकबिंदुसार पूर्व पठनगुण यु० ।

॥※॥ इति पंचविंशति उपाध्याय गुणाः ॥※॥

इस रीतसें पचवीस नमस्कार करै (खमाहोके) अन्नत्थूस० (इत्यादि कहिके) पचवीस लोगस्सके काउस्सग्ग करै। एक लोगस्स कहके पारे। (पीछे) पूर्वोक्त करणी करै ॥※॥ इति चतुर्थ दिवस विधिः ॥※॥

॥※॥ अथ पंचम दिवस विधिलि० ॥※॥

॥※॥ (ॐ ह्रीं णमोलो ए सव्वसाहूणं) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। साधुपद कालै वर्ण इससें उड़दका आंबिल करै। सर्व्व साधुपदके सत्ताईस गुण चिंतवके नमस्कार करै ॥※॥ ॥※॥

॥ॐ॥ अथ साधुपदके (२७) गुणलि० ॥ॐ॥

१ ॥ प्राणातिपात विरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ।
२ ॥ मृषावाद विरमणव्रत यु० श्रीसा०
३ ॥ अदत्तादान विरमणव्रत यु० श्रीसा० ।
४ ॥ मैथुन विरमणव्रत यु० श्रीसा० ।
५ ॥ परिग्रह विरमणव्रत यु० श्रीसा० ।
६ ॥ रात्रिभोजन विरमणव्रत यु० श्रीसा० ।
७ ॥ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
८ ॥ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
९ ॥ तेउकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
१० ॥ वाउकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
११ ॥ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
१२ ॥ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
१३ ॥ एकेंद्री जीवरक्षकाय श्रीसा० ।
१४ ॥ बेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
१५ ॥ तेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
१६ ॥ चौरिंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
१७ ॥ पंचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
१८ ॥ लोभनिग्रहकाय श्रीसा०
१९ ॥ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ।
२० ॥ शुभभावना भावकाय श्रीसा० ।
२१ ॥ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा०
२२ ॥ संयम योगयुक्ताय श्रीसा० ।
२३ ॥ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ।

२४ ॥ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ।
२५ ॥ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ।
२६ ॥ सीतादि द्वाविंशति परीसहसहण तत्पराय० ।
२७ ॥ मरणांत उपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ।

॥※॥ इति सप्तविंशति साधुभ्यो गुणाः ॥※॥५॥

॥※॥ इस रीतसें सातवीस नमस्कार करै । (खड़ा होके) अन्नत्थू स० (इत्यादि कहिके) सातवीस लोगस्सकेकाउस्सग्ग करै । एक लोगस्स कहके पारे । (पीछे) पूर्वोक्त करणी करै । (यह पंच परमेष्टि पदके सब गुण मिलाणें से (१०८) होय (इसीसें) मालाके दाणे (१०८) होते है ।

॥※॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥※॥

॥※॥ अथ षष्ठ दिवस विधिलि० ॥※॥

॥※॥ (ॐ ह्रीँ णमो दंसणस्स) इस पदको (२) हज्जार गुणनो करै । दर्शनपद सपेदवर्ण (इससें) तंदुलका आंबिल करै । सम्यक्तके सतसट्ठिगुण चिंतवके नमस्कार करै ॥

॥※॥ अथ सम्यक्तके सतसट्ठि भेदलि० ॥※॥

१ ॥ परमार्थ संस्तवरूप श्री सद्दर्शनाय नमः ।
२ ॥ परमार्थ ज्ञातसेवनरूप सद्दर्शनाय नमः ।
३ ॥ व्यापन्नदर्शन वर्जनरूप सद्दर्शनाय नमः ।
४ ॥ कुदर्शन वर्जनरूप सद्दर्शनाय नमः ।
५ ॥ शुश्रूषारूप सद्दर्शनाय नमः ।
६ ॥ धर्मरागरूप सद्दर्शनाय नमः ।
७ ॥ वैयावृत्तरूप सद्दर्शनाय नमः ।

८ ॥ अर्हद्विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
९ ॥ सिद्धविनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१० ॥ चैत्यविनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
११ ॥ श्रुतविनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१२ ॥ धर्मविनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१३ ॥ साधुवर्ग विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१४ ॥ आचार्य विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१५ ॥ उपाध्याय विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१६ ॥ प्रवचन विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१७ ॥ दर्शन विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१८ ॥ संसारे जिनसार मिति चिंतनरूप सद्द० ।
१९ ॥ संसारे जिनमतिसार मिति चिंतन० ।
२० ॥ संसारे जिनमतिस्थित साध्वादिसार मिति० ।
२१ ॥ संका दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः ।
२२ ॥ कांक्षा दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः ।
२३ ॥ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय० ।
२४ ॥ कुदृष्टि प्रसंसा दूषणरहिताय० ।
२५ ॥ तत्परिचय दूषण रहिताय० ।
२६ ॥ प्रवचन प्रभावकरूप स० ।
२७ ॥ धर्मकथा प्रभावकरूप स० ।
२८ ॥ वादी प्रभावक० स० ।
२९ ॥ नैमित्तक प्रभावक० स० ।
३० ॥ तपस्वी प्रभावक० सद्द० ।
३१ ॥ मन्त्रप्रयोगादि विद्या भृत्प्रभावक० स० ।

३२ ॥ चूर्णांजनादि सिद्धप्रभावक० स० ।
३३ ॥ कविप्रभावकरूप सद्दर्शनाय नमः ।
३४ ॥ जिनसासने कौसलता भूषन० स० ।
३५ ॥ प्रभावना भूषणरूप स० ।
३६ ॥ तीर्थसेवा भूषण० स० ।
३७ ॥ स्थैर्यता भूषणरूप सद्दर्शनाय नमः ।
३८ ॥ जिनसासने भक्ति भूषण० ।
३९ ॥ उपशम गुणरूप सद्दर्शनाय नमः ।
४० ॥ संवेग गुणरूप श्रीस०
४१ ॥ निर्वेद गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४२ ॥ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ।
४३ ॥ आस्तिका गुणरूप श्रीस० ।
४४ ॥ परतीर्थकादि वंदन वर्जन रूप श्रीस० ।
४५ ॥ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जन० श्रीस०
४६ ॥ परतीर्थकादि आलाप वर्जन० श्रीस० ।
४७ ॥ परतीर्थकादि संलाप वर्जन० ।
४८ ॥ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन० श्रीस० ।
४९ ॥ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषण वर्जन० श्रीस० ।
५० ॥ राजाभियोगाकार युक्त श्रीस० ।
५१ ॥ गणाभियोगाकार युक्त श्रीस० ।
५२ ॥ बलाभियोगाकार युक्त श्रीस० ।
५३ ॥ सुराभियोगाकार युक्त श्रीस० ।
५४ ॥ कांतारवृत्याकार युक्त श्रीस० ।
५५ ॥ गुरु निग्रहाकार युक्त श्रीस० ।

५६ ॥ सम्यक्त चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतन० औ० ।
५७ ॥ चारित्र धर्मपुरस्य द्वारमिति चिंतन० औस० ।
५८ ॥ चारित्र धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन० औस० ।
५९ ॥ चारित्रधर्मस्याधारमिति चिंतन० औस० ।
६० ॥ चारित्र धर्मस्य भाजनमिति चिंतन० औस० ।
६१ ॥ चारित्र धर्मस्य निधिसन्निभमिति चिं० औस०
६२ ॥ अस्ति जीवेति श्रद्धानस्थान यु० औस० ।
६३ ॥ सचजीव नित्येति श्रद्धान स्थान यु० औस० ।
६४ ॥ सचजीव कर्म्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान यु०औ० ।
६५ ॥ सचजीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धान स्थानयु० ।
६६ ॥ जीवस्यास्ति निर्व्वाणमिति श्रद्धान स्थान यु० ।
६७ ॥ अस्ति पुनर्मोक्षो पायेति श्रद्धानस्थान यु० औस० ।

॥ॐ॥ इति सप्तषष्टि दर्शनस्य गुणाः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ इस रीतसें सतसट्ठि नमस्कार करै। (खड़ा होके) अन्नत्थू ससि एणं० (इत्यादि कहिके) (६७) लोगस्स (अथवा) ७ लोगस्स नो काउस्सग्ग करै। एक लोगस्स कहके पारै। (पीछे) पूर्वोक्त करणी करै ॥ॐ॥ इति षष्ट दिवस विधिः ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ सप्तम दिवस विधि लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (ॐ ह्रीँ नमो नाणस्स) इस पदको (२) हज्जार गुणनो करै। ज्ञानपद उज्वल वर्ण। तंदुलका आंबिल करै। इक्कावन भेद ज्ञानपदके चिंतवके नमस्कार करै ॥

॥ॐ॥ अथ ज्ञानपदके (५१) भेदलि० ॥ॐ॥

१ ॥ स्पर्शनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।

२ ॥ रसनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
३ ॥ घ्राणेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
४ ॥ श्रोत्रेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
५ ॥ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
६ ॥ रसनेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
७ ॥ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
८ ॥ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
९ ॥ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
१० ॥ मनऽर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
११ ॥ स्पर्शनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१२ ॥ रसनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१३ ॥ घ्राणेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१४ ॥ चक्षुरिंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१५ ॥ श्रोत्रेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१६ ॥ मनेंकरी ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१७ ॥ स्पर्शनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
१८ ॥ रसनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
१९ ॥ घ्राणेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२० ॥ चक्षुरिंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२१ ॥ श्रोत्रेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२२ ॥ मनकरी अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२३ ॥ स्पर्शनेंद्री धारणा मतिज्ञानाय नमः ।
२४ ॥ रसनेंद्री धारणा मतिज्ञानाय नमः ।
२५ ॥ घ्राणेंद्री धारणा मतिज्ञानाय नमः ।

२६ ॥ चक्षुरिंद्रीधारणा मति० ।
२७ ॥ श्रोत्रेंद्रीधारणा मति० ।
२८ ॥ मनो धारणामतिज्ञानाय नमः ।
२९ ॥ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
३० ॥ अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
३१ ॥ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
३२ ॥ असंज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
३३ ॥ सम्यक् श्रुतग्यानाय नमः ।
३४ ॥ मिथ्या श्रुतग्यानाय नमः ।
३५ ॥ सादि श्रुतग्यानाय नमः ।
३६ ॥ अनादि श्रुतग्यानाय नमः ।
३७ ॥ सपर्यवसित श्रुतग्यानाय नमः ।
३८ ॥ अपर्यवसित श्रुतग्यानाय नमः ॥
३९ ॥ गमिक श्रुतग्यानाय नमः ।
४० ॥ अगमिक श्रुतग्यानाय नमः ।
४१ ॥ अंगप्रविष्ट श्रुत० ।
४२ ॥ अनंग प्रविष्ट श्रुत० ।
४३ ॥ अणुगामि अवधिग्यानाय नमः ।
४४ ॥ अणूणगामि अवधिग्यानाय नमः ।
४५ ॥ वड्ढमान अवधि० ।
४६ ॥ हीयमान अवधि० ।
४७ ॥ प्रतिपाती अवधि० ।
४८ ॥ अप्रतिपाती अवधि० ।
४९ ॥ ऋजुमति मनः पर्यवग्यानाय नमः ।

५० ॥ विपुलमति मनः पर्य्यवग्यानाय नमः ।

५१ ॥ लोकालोक प्रकाशक श्री केवलग्यानाय नमः ।

॥※॥ इति एकपंचासत् ज्ञानभेदाः ॥※॥

॥※॥ इस रीतसे (५१) नमस्कार करै । (खमा होके) अन्नत्थ् ससिएणं० (इत्यादि कहै) (५१) लोगस्सके काउसग्ग करिके । प्रगट लोगस्स कहै । पीछे सब पूर्वोक्त करणी करै । इति सप्तम दिवस विधिः ॥७॥

॥※॥ अथ अष्टम दिवस विधि लि० ॥※॥

॥※॥ (ॐ ह्रीँ णमो चारित्तस्स) इस पदको (२)हज्जार गुणनो करै । चारित्रपदके उज्वल वर्ण । (इसीसे) तंदुल का आंबिल करै । सित्तर भेद चारित्रपदके । चिंतवके नमस्कार करै ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ चारित्रपदके (७०) भेदलि० ॥※॥

१ ॥ प्राणातिपात विरमणरूप चारित्राय नमः ।

२ ॥ मृषावाद विरमणरूप चारित्राय नमः ।

३ ॥ अदत्तादान विरमण रूप चारित्राय नमः ।

४ ॥ मैथुनविरमण रूप चारित्राय० ।

५ ॥ परिग्रह विरमणरूप चारित्रा० ।

६ ॥ क्षमा धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।

७ ॥ आर्य्जव धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।

८ ॥ मृदुता धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।

९ ॥ मुक्तधर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।

१० ॥ तपो धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।

११ ॥ संयमधर्म्मरूप चारित्रेभ्यो नमः ।

१२ ॥ सत्यधर्म्मरूप चारि० ।

१३ ॥ सौच धर्म्मरूप चारि० ।

१४ ॥ अकिंचनधर्म्मरूप चारि० ।

१५ ॥ बंभधर्म्मरूप चारि० ।

१६ ॥ प्रथवी रक्षासंयम चारित्रेभ्यो नमः ।

१७ ॥ उदग रक्षा संयम चारि० ।

१८ ॥ तेऊ रक्षा संयम चारि० ।

१९ ॥ वाऊ रक्षासंयम चारि० ।

२० ॥ वनस्पति रक्षासंयम चारि० ।

२१ ॥ बेइंद्री रक्षासंयम चारि० ।

२२ ॥ तेइंद्री रक्षा संयम चारि० ।

२३ ॥ चौरिंद्रीरक्षा संयम चारि० ।

२४ ॥ पंचेन्द्री रक्षासंयम चारि० ।

२५ ॥ अजीव रक्षासंयम चारि० ।

२६ ॥ प्रेक्षासंयम चारि० ।

२७ ॥ उपेक्षासंयम चारि० ।

२८ ॥ अतिरक्तवस्त्रभक्तादिपरठण त्यागरूपसंयम चारि० ।

२९ ॥ प्रमार्जन रूप संजम चारि० ।

३० ॥ मनसंयम चारि० ।

३१ ॥ वाक्‌संयम चारि० ।

३२ ॥ कायासंयम चारि० ।

३३ ॥ आचार्य वैयावृत्यरूप संयम चारि० ।

३४ ॥ उपाध्याय वैयावृत्यरूप संयम चारि० ।

३५ ॥ तपस्वी वैयावृत्य रूप चारि० ।
३६ ॥ लघुशिष्यादि वैयावृत्य रूपचारि० ।
३७ ॥ गिलाणसाधु वैयावृत्यरूप चा० ।
३८ ॥ साधु वैयावृत्यरूप चारि० ।
३९ ॥ श्रमणोपासक वैयावृत्यरूप चा० ।
४० ॥ संघ वैयावृत्यरूप चारि० ।
४१ ॥ कुल वैयावृत्यरूप चारित्र० ।
४२ ॥ गण वैयावृत्य रूप चारि० ।
४३ ॥ पशुपंडगादि रहित वशति वसण ब्रह्मगुप्तचारि० ।
४४ ॥ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
४५ ॥ स्त्रीआसन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
४६ ॥ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षणवर्जन ब्रह्म० ।
४७ ॥ कुड्यंतर सहित स्त्रीहाव भावसुणन वर्जन ब्रह्म० ।
४८ ॥ पूर्व स्त्रीसंभोग चिंतनवर्जन ब्रह्म० ।
४९ ॥ अति सरसआहार वर्जन ब्रह्म० ।
५० ॥ अति आहार करण वर्जन ब्रह्म० ।
५१ ॥ अंग विभूषावर्जन ब्रह्म० ।
५२ ॥ अणसण तपोरूप चा० ।
५३ ॥ ऊणोदरी तपो रूप चा० ।
५४ ॥ वित्तसंखेव तपोरूप चा० ।
५५ ॥ रसत्याग तपो रूप चा० ।
५६ ॥ कायकिलेस तपोरूपचा० ।
५७ ॥ संलेखणा तपोरूप चा० ।
५८ ॥ प्रायश्चित्ततपो रूपचा० ।

५९ ॥ विनय तपोरूप चा० ।
६० ॥ वेयावच्चतपो रूप चा० ।
६१ ॥ सिज्झायतपो रूप चा० ।
६२ ॥ ध्यानतपो रूप चा० ।
६३ ॥ उपसर्ग तपो रूप चा० ।
६४ ॥ अनंत ग्यान संयुक्त चा० ।
६५ ॥ अनंत दर्शन संयुक्त चा० ।
६६ ॥ अनंत चारित्र संयुक्त चा० ।
६७ ॥ क्रोधनिग्रह करण चा० ।
६८ ॥ माननिग्रह करण चा० ।
६९ ॥ मायानिग्रह करण चा० ।
७० ॥ लोभनिग्रह करण चारित्रेभ्यो नमः ।

॥※॥ इति सित्तर चारित्र भेदाः ॥※॥

॥※॥ इस रीतसें (७०) नमस्कार करै। (खड़ा होके) अन्नत्थू ससि एणं० (इत्यादि कहै) (७०) लोगस्सके काउसग्ग करिके। एक लोगस्स कहै। (पीछे) पूर्वोक्त करणी सब करै। इति अष्टम दिवस विधिः ॥※॥

॥※॥ अथ नवम दिवस विधिलि० ॥※॥

॥※॥ (ॐ ह्रीं णमो तवस्स) इस पदको (२) हज्जार गुणनो करै। तपपदके उज्वल वर्ण (इसीसें) तंदुलका आंबिल करै। पचास भेद तपपदके चिंतवके नमस्कार करै ॥※॥

॥※॥ अथ तपपदके (५०) भेदलि० ॥※॥

१ ॥ जावत कथक तपसे नमः ।

२ ॥ इत्वर तपभेद तपसे नमः।
३ ॥ वाह्यऊणोदरी तपभेद तपसे नमः।
४ ॥ अभ्यंतर ऊणोदरी तपभेद तपसे नमः।
५ ॥ द्रव्यतप वित्तीसंखेप तपभेद तपसे नमः।
६ ॥ च्चेत्रतप वित्तीसंखेप तपभेद तपसे नमः।
७ ॥ कालतप वित्तीसंखेप तपभेद तपसे नमः।
८ ॥ भावतप वित्तीसंखेप तपभेद तपसे नमः।
९ ॥ कायकिलेस तपभेद तपसे नमः।
१० ॥ रसत्याग तपभेद तपसे नमः।
११ ॥ इंद्री कषाय जोग विषयक संलीणता तपसे नमः।
१२ ॥ स्त्रीपशुपंडकादि वर्जितस्थान अवस्थित संलीण ता०।
१३ ॥ आलोयण प्रायछित्त तपसे नमः।
१४ ॥ पडिक्कमण प्रायछित्त तपसे नमः।
१५ ॥ मिश्र प्रायछित्त तपसे नमः।
१६ ॥ विवेक प्रायछित्त तपसे नमः।
१७ ॥ उपसर्ग प्रायछित्त तपसे नमः।
१८ ॥ तप प्रायछित्त तपसे नमः।
१९ ॥ भेद प्रायछित्त तपसे नमः।
२० ॥ मूल प्रायछित्त तपसे नमः।
२१ ॥ अणवस्थित प्रायछित्त तपसे नमः।
२२ ॥ पारंचिय प्रायछित्त तपसे नमः।
२३ ॥ ग्यान विनयरूप तपसे नमः।
२४ ॥ दर्शन विनयरूप तपसे नमः।
२५ ॥ चारित्र विनयरूप तपसे नमः।

२६ ॥ गुर्वादिक मनविनयरूप तपसे नमः ।

२७ ॥ वचनविनयरूप तपसे नमः ।

२८ ॥ काय विनयरूप तपसे नमः ।

२९ ॥ उपचारक विनयरूप तपसे नमः ।

३० ॥ आचार्यवेयावच्च तपसे नमः ।

३१ ॥ उपाध्याय वेयावच्च तपसे नमः ।

३२ ॥ साधु वेयावच्च तपसे नमः ।

३३ ॥ तपस्वी वेयावच्च तपसे नमः ।

३४ ॥ लघुसिख्यादि वेयावच्च तपसे नमः ।

३५ ॥ गिलाण साधु वेयावच्च तपसे नमः ।

३६ ॥ श्रमणोपासक वेयावच्च तपसे नमः ।

३७ ॥ संघ वेयावच्च तपसे नमः ।

३८ ॥ कुल वेयावच्च तपसे नमः ।

३९ ॥ गण वेयावच्च तपसे नमः ।

४० ॥ वायणा तपसे नमः ।

४१ ॥ प्रछना तपसे नमः ।

४२ ॥ परावर्त्तना तपसे नमः ।

४३ ॥ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ।

४४ ॥ धर्म्म कथा तपसे नमः ।

४५ ॥ आर्त्तध्यान निवृत्त तपसे नमः ।

४६ ॥ रौद्रध्यान निवृत्त तपसेनमः ।

४७ ॥ धर्म्म ध्यान चिंतन तपसे नमः ।

४८ ॥ शुक्लध्यान चिंतन तपसे नमः ।

४९ ॥ वाह्य उपसर्ग तपसे नमः ।

५० ॥ अभ्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ।

॥※॥ इति पंचासत् तपभेदाः ॥※॥

॥※॥ इस रीतसें (५०) नमस्कार करैं । (खड़ा होके) अन्नत्थू ससि एणं० (इत्यादि कहै) (५०) लोगस्सके काउसग्ग करिके । एक लोगस्स कहै । (पीछे) पूर्वोक्त करणी करै । इति नवम दिवस विधिः ॥※॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणें कों गुरुके पास जाणेंकी विधि लि० ॥

॥※॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घड़ी देखके । अच्छा वस्त्र आभूषण पहरैं । लिलाड़के तिलक करै । दोव । सरसुं । मस्तकमें धारण करै । हाथके मोली बांधके । अक्षत । सुपारी । श्रीफल । नैवेद्य । यथाशक्ति रोकनाणी लेके । नवकार गुणतो थको । गुरुके पास आवै । द्वादशावर्त्त वांदणा करके । ग्यान पूजा करै । पीछे बहुत प्रमोदवंत होके । गुरुके सुखसें भलो तप ग्रहण करै (सो) तपस्या ग्रहण करणेंकी विधि आगे लिखो है ॥※॥ इति तपस्याग्रहण करणेकों। पोसाल जाणेको विधि ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ संक्षेप ऊजमणाविधि लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ पंच वर्णके धान्यसें सिद्धचक्रकों मंड़न करै । सिद्धचक्रजो के चौ तरफ तीन गढ चूड़ीके आकार वनावै पहिले गढमांहे । अष्टदल कमलके आकार नव पद स्थापन करै । पद (२) के वर्ण गुण प्रमाणे । रत्नादिक चढावे ।

(और) पंचवर्णके फूल । पंचवर्णके धान्य । नवनालेर प्रमुख के गोटा रंगके। जिसपदके जैसे वर्ण होइ (तैसे ही) रंग का गोला चढावे। पंच वर्णों (९) धजा चढावे। दूसरै वलयमें। सोले श्रीफल (अथवा) पूंगी फल चढावे। तीसरै वलयमें (४८) छुहारा चढावै। नव निधानके ठिकाणें (९) नव बदा फल चढावै दश दिग्पाल। नवग्रह कों। पक्वान्न प्रमुख चढावै। इत्यादिक विधिसंयुक्त। सिद्ध चक्र स्थापना। घर देहरासर आगे करै। और जिनमंदिर मांहि। बाह्य मंडपै ५॥।७ हाथ प्रमाणें मंडल रचना करै। विस्तारसें सब विधि गुरूके वचनसें करके। नव पदजी की पूजा पढ़ायके कलस ढाले। धवल मंगल गीतगान गावै। वाजित्र बजावैं। (इसी तरे) महामहोत्सव। उदारचित्तसें करै। मंगल दीप आरती प्रमुख करै। दूसरै दिन विसर्जन करै। इति संखेप सिद्धचक्र मंडल विधिः।

॥※॥ अब (१०) में दिन गुरूके पास आके ओली तप कों पारै। तप पारण की विधि आगे लिखी है। तथा उद्यापनमें ग्यान भक्तिके कारण। ९ पूठा। ९ वीटांगणा। ९ पुस्तक। ९ लेखण। ९ ठवणी। नव झिल मिल। ९ रुमाल। ९ डोरा। ९ मिजासणा। ९ थापना। ९ चंद्रुआ। ९ पूंठिआ। ९ आरती। ९ कलश। ९ जापमाला। ९ मंदर। ९ प्रतिमा। ९ तिलक। ९ मुगट। (इत्यादिक) अनेक नव नव चीज बणावै। शक्ति न होय तो यथाशक्ति रोकनाणो चढावै। देव पदको देवपदमें देवे। गुरु पदको गुरु पदमे देवे। ग्यानपद को ग्यानखाते लगावे। इत्यादिक

यथाजोग्य शुभ क्षेत्रे खरच करें। इति सिद्धचक्र संक्षेप उद्यापनविधिः ॥卐॥ ॥卐॥ ॥卐॥ ॥卐॥

॥卐॥ अथ प्रथम चैत्र मासमें पर्व्वाराधन स्वरूप लिखते है ॥卐॥ चैत्रमास में । चैत्र सुद ७ (सें लेके) चैत्र सुद १५ पर्यन्त ९ दिन अति उत्तम है। (सो) अति उत्तमता का कारण कहते है। बारे मासमें तीन अट्ठाही महोत्सव आते हे। (जिसमें)। चैत्र आसोज के (२) अट्ठाइ महोत्सव सास्वते है। चैत्र सुद ८ (सें) चैत्र सुद (१५) आसोज सुद ८ (से) आसोज सुद १५ (यह) दोनुं मास के (८) दिनों में। निश्चै सेती। च्यारु निकाय के देवता इंद्र सब भेला होके। आठमा नंदीसर द्वीप जावे (पुन्याहं२) कहते थके। अष्ट द्रव्यसें पूजन करें। गीत गान नाटकादिकसें अनेकतरे की भक्ति करै। पीछे नवमें दिन। अपणें२ जन्मकुं सफल मानते हुए। अपणें२। देवलोक जावे। (इसी माफक) तीसरी अट्ठाई आसाढ़ चौमासे की (१४) पीछे। (४२) दिन जाणेंसें संवछरी पर्व साचवणें को (८) दिन अट्ठाइ महोत्सव करै। पिण सास्वती नही। कोइ काल में च्यारु निकायके देवता एकठे नहिं बी जाय सके। पहली पीछे कर लेवे। (इससें) सास्वती नही कही ॥卐॥ अब यह (९) दिनोंमें। (४) पर्व सेवन करणे जोग्य है॥卐॥ प्रथम नव पद जीकी ओली। इसी नव दिनुमें विधिसंयुक्त करै। (सो) विधि पूर्वे लिखी है। इससें इहां न लिखी। यह सिद्ध चक्रमंडल

(ओ) नव पदजीको ओलीके अधिकार (दसमा विद्या प्रवाद पुर्व्वसें) उद्धरण करके। भव्य जीवोंके अनन्त सुखप्राप्तिके कारण। चवदे पूर्वधारक श्री भद्रबाहु स्वामी जीनें प्रसिद्ध किया। (इसी सें) सब भव्य जीवोंके यह तप प्रमाण है। यह तपकों अपणी कुयुक्ति लगायके। जो पुरस खंडन करते हैं। उसका अनंत संसार। भगवानका वचनसें मालुम होता है (शास्त्रोंमे लिखा है) हे गोतम। अपणी कुटलताई सें (जो) सुत्रको एक हरफ उत्थापण करेंगे (सो अनंत संसार वढावेंगे। (सुत्र किसकुं कहते है) सुत्तंगण हर रइयं। तहेव पत्तेय बुद्धि रइयंच। सुय केवलिणा रइ यं। अभिन्न दस पुव्विणा रइयं ॥१॥ (अर्थ) गणधरोंका रचा हुवा (तेसेंही) प्रत्तेकबुद्धिका रचा हुआ। श्रुतकेवली चवदे पुर्वधारी का रचा हुआ। संपूर्ण दश पूर्वधारी का रचा हुआ कों। भगवाननें सुत्रकी संज्ञा कही है। इसीसें प्रमाण है ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ अष्टापदओली करण विधि ॥※॥

॥※॥ इसी चैत्रमासमें सुद (८) सें लेके। पूर्णमासी तक। (कोइ भव्य जीव) अष्टापदजीकी ओली करते है (जिसमें) पडिकमणा। देववंदन। देवपूजा। इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी ओली तुल्य करै (इतना विशेष है) श्रीअष्टापद तीर्थाय नम:। (इसी पदकी) २००० गुणनो (वा) वीस जाप करै। अरिहंत पद को १२ गुण कों नमस्कार करै। १२ लोगस्सको काउस्सग्ग करै। आं बिल (वा) एकासणेको पच्चक्खाण करै। पीछे पूर्णमासी को

दिन। अष्टापदजी पर्वतकी स्थापना करके। विधिसंयुक्त (२४) भगवंत की पूजा करै (एसें) चैत्र। आसोज। (२) ओली कर णों सें। (४) वरसमें। एक ओली करणोंसें (८) वरसमें संपूर्ण होय। पीछे भक्तिसंयुक्त उजमणो करै गुरु भक्ति करै (साहमी वछल करै (इत्यादि) विशेष विधि गुरु के मुख सें जाण के करै) ॥*॥ इति द्वितीय अष्टापद ओली पर्व्वाधिकार: कथित: ॥*॥ ॥*॥

॥*॥ (अब तीसरो पर्व)। चैत्र सुद १३ के दिन। श्रीमहावीरस्वामी को जन्म कल्याण भयो है (इसीसें) सब ठिकाणें। धर्मरागी पुरस। गुरूके मुखसें समझके जल जात्रादिक संपूर्ण। जन्मकल्याणकको महोछव करै। (एसेंही) ऋद्धीवंत श्रावकको धर्मका उद्योत के खातर सब भगवंतके कल्याणक के दिन (जो) कल्याणक होय। उसीका महोछव करणा चहिये। असी शक्ति नहोय(तो) सासनके अधिपति। देवाधिदेव (श्रीमहावीर स्वामी के) च्यवन कल्याणकसें लेके। निर्वाण कल्याणक पर्यन्त। (जिस दिन) जो कल्याणक होय। उसीका महोछव पूजन करणा चहिये (इसी सें) धर्मका उद्योत होय। श्रीसंघमें पर म आणंद होय ॥*॥ इति शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्व्वाधिकार: कथित: ॥*॥ ॥*॥

॥*॥ अब चैत्री पूनम पर्व के अधिकार (सामाचारी सतकानुसारे) लिखते है ॥*॥ प्रथम चावलके पुंजसें सेत्रुंजय पर्वतकों स्थापन करै (तिसपर) पट्टा रखके। श्री पुंडरीक गणधर (वा) श्रीऋषभ देव स्वामीके बिंबस्थापन

करै। अक्षत मोत्यां करके पर्वतकों वधावैं। केसर चंदन सें पर्वतकों पूजे। सब श्रीसंघ इकट्ठे होके। पर्वतके। चौफेर तीन प्रदक्षणा देवै। पीछे पूजन सरू करै (यथा) ॥※॥ दश वीस (२०) तीस (३०) चत्ता (४०)। पन्ना (५०) पुप्फदामेण लहई। चउत्थ छट्ठ अट्ठम। दसम दुवालसम फलाइं च ॥ १ ॥ अव प्रथम (१०) प्रकार सें पूजनके अधिकार लिखते है ॥ ※ ॥ एकाग्रचित्तसें। अष्टमंगलीक आगे रखके शुद्धोदक सें मूलप्रतिमा कों न्हवण करावैं। पीछे श्रीसंघ खड़ो होके। (१०) नमस्कार उच्चार पूर्वक। १० फूल (तथा) १० फूलमाला चढाके। प्रतिमाके १० तिलक करै। (यथा शक्ति) सुपारी। नालेर (इत्यादि सब चीज उत्कृष्टसें दश २॥ जघन्यें नालेर १ सुपारी १० और फल फूल यथासंभव चढावै। धूप खेवै। कपूरकी आरती करै। पीछे सिद्धगिरी गुणगर्भित चैत्यवंदन करके। पांचशक्र स्तवे देव वांदे। १० खमा समण देकें (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंडरीक गणधराय नमः) इस पदकों १० वेर नमस्कार करै। पीछे (श्रीसेत्तुंजय पुंडरीक आराधनार्थं करेमि काउसग्गं)। अन्नत्थु ससि० कहके। १० लोगस्सके काउसग्ग करै।(इहां कोई आचार्य कहै) वहुत उच्छव होय। वेला कम रहै। (तव) एक लोगस्सनो काउसग्ग करै। १० जै तीके ठिकाणें १० गाथाको स्तवन कहै। पीछे अनेक प्रकारका वाजित्र वजावैं ॥※॥ इति प्रथम पूजाविधिः ॥※॥

॥※॥ (अब इसी तरै) वीस। तीस। चालीस। पचास यह च्यारोंपूजाके भेद जाण लेणा। (इतनाही विसेष है)

दूसरी पूजामें १० के ठिकाणें। २० की विधि करै। तीसरी पूजामें १० के ठिकाणें। ३० की विधि करै। चोथी पूजा में १० ठिकाणें सब विधि ४० की करै। पांचमी पूजामें सब विधि ५० की करै (तथा) सिद्ध क्षेत्र श्रीपुंडरीकाय नमः। इस पदको २००० गुणनो करै। उत्कृष्टसें पांचू पूजा में। जूदी २ धजा चढावै। जघन्यसें पांच पूजा किये पीछे १ धजा चढावै। यह तप। गुरूके मुखसें लेके। जघन्य १ बरस। (वैसी हो सकै तो) ७ बरस। उत्कृष्टसें १२ बरस। विधिसंयुक्त तपस्या करै। गुरूके मुखसें उपदेस सुणें। संपूर्ण तप हुयांपीछे। सिद्धगिरीको जात्राकरै। ध्यान पूजा करै। गुरुभक्ति करै। साहमी वछ्ल करै। (यह) चैत्रीपूनमके दिन। श्रीऋषभदेव स्वामीके। प्रथम गणधर श्री पुंडरीक जी। पांचकोडि साधूसाथ अक्षयसुखको प्राप्त भये। (इसीसें) प्रथम श्रीभरथ चक्रवर्त्ति। चैत्री पूनमको आराधन करके। श्रीपुंडरीक गणधर की प्रतमा स्थापन करके। (यह) चैत्री पूनम पर्व्व प्रसिद्ध किया॥ यह चैत्री पूनम आराधन करणेसें। इस भवमें अनेक सुखसंपदा प्राप्त होय। स्त्रियोंके पुत्र पुत्रयादिक की बांछा पूरण होय। (और) आधि व्याधि सोग संताप सब दूर होय। परभवमें देवादिक ऋद्धिप्राप्त होय। क्षीणकर्मी होणेसें अक्षय सुखको प्राप्त होय॥ ॥ इति चैत्रमास पर्व्वाधिकारः॥ ॥

॥ ॥ अथ चैत्री पूनम स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल) पयप्रणमोरे जिनवरना सुपसाउलै।

पुंडरगिररे गाइसकुं सुभभावलै। मतिसुरगिररे सहस जीभ जो सुख हुवै। किम ते नररे विमलाचलना गुण तवै। (उल्लालो) किम तवै गुणगण एहगिरिना जिहां मुनि सीधा बहु। गिररायना गुण छे अनंता कहे जिणवर सुख सहु। नियजनम सफलो करण कारण केतला गुण भाषियै। तिर यंच नारक तणो गतिना दुख दूरै राखियै ॥१॥ (चाल) जिन राजा रे पहिलो आदि जिनेसरू। तसु नंदनरे चक्रवर्त्ति भरतेसरू। तसु अंगजरे पुंडरीक गुणगण निलो। समदम रसरे विनय विवेक गुणे भलो (उल्लालो) गुणभलो अनुक्रम आदि जिणवर पास संजम सिवपुरी। पुंडरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुपते संचरी। पण कोडि साथे विमलगिरवर सुगति पदवी पावए। सुदि चैत पूनिम तेण ए गिरि पुंडरीक कहावए ॥२॥ (चाल) हिव चैती रे पूनिम पर्व सुहामणो। सेत्रुंजेरे आराध्यां फल हुवै घणो। मनसुद्ध रे आपणपै थानक रहो। आराध्यां रे याव पुन्य पामें सही (उल्लालो) ते पुन्यपामें दान तप जप धर्म्म ध्यान मने धरै। बहु भाव भत्तैं विविध पूजा आदि जिनवरनो करै। भावना भावै तेण दिवसै पंच कोडि गुणो फलै। अनुक्रमें ते नर सुगति पामी सिद्ध सुंदर नें मिलै ॥३॥ (चाल) दसवीसारे तीस चालीस पूजा कही। पन्नासारे श्रावक निरतो सरदही। चउथ छट्ठे रे अट्ठम दसम दुवालसै। पूजा फलरे अनुक्रम ए सुझ मनवसैं। (उल्लालो) मनवसै पूज कपूर धूवे मासखमण फले वलो। सामन्न धूवै पक्खनो फल जे करैं मननोरलो। हिव

पूजनो विधि जेम गुरु मुख सुणी अछै परंपरा । तेमोह माया कपट छंडी सुणो भवीयण सादरा ॥ ४ ॥(ढाल) तंदुल रासि विमलगिर थापो । तसुऊपरि पट्टादिक आपो प्रतिमा आदिजिणेसरकेरी । पुंडरीकनी थापीनिवेरी ॥५ सेत्रुंज गिरिने मनचिंती जे । करमतणामल दूर करीजै मोती तंदुल करीय वधावो । तीन प्रदक्षिण पूजरचावो ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ । करमबंध दूरै करि आठ । प्रतिमामूल सनात्र करेवा । जिनवरना गुणहीयडै धरेवा ॥ ७ ॥ ऊभाथई नवकार गुणंता । दस दस जैती तिलक करंता । मालापुष्फ पुंगीफल ढोवो । मेरु भरण वर धूपउखेवो ॥ ८ ॥ (ढाल) शक्र स्तव पांचे देववांदै । जघन्यना वंदण पाप छेदै । दस नमस्कार करंत जैती राखो करो दृष्टि जिनेंद्र सेती ॥ ९ ॥ आराधिवा काजै काउसग्ग । जिणे कीयै भाजै कर्म्मवग्ग । लोगस्स उज्जोय दसेवखाणुं । वेला प्रमाणे अछि एगआणुं ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धुर पूज एह । इसी परै बीजी च्यार तेह । दसां तणी इद्धि तिहां गिणीजै । एक चित्त सूधे सुभ पुन्य कीजै ॥ ११ ॥ धजा तणो रोप तिहां करीजै । एकेक पूठे अथवा गिणीजै । मऊत्तरै आरति मंगलेवो । पछै प्रभुआ गलि तेकरेवो ॥१२॥ (कलश) इम करिय पूजा यथाजोगै संघपूजा आदरो । साहमी वत्सल करो भविका भव समुद्र लीलावरो । संपदा सोहग तेह मानव ऋद्धि इद्धि वधुलहै । श्री अमरमाणिक सीस सुपरै साधु कीरति इम कहै ॥ १३

इति श्रीचैती पूनिमस्तवनम् ॥

॥ अथ नंदीसर द्वीप स्तवनलि० ॥

॥ ॥ नंदीसर वावन्न जिणालै। शाश्वता चौमुख सोहै रे। ऋषभानन चंद्रानन वारषेण। वरधमान मन मोहै रे (नं०) ॥१॥ आठमो द्वीप नंदीसर अद्भुत। वलयाकार विराजैरे। तेहनें मध्य चिऊं दिश शोभत। अंजन गिरवरठाजै रे ॥२॥ (नं०) जोयण सहस चउरासो ऊंचा ऊंचपणें अभिरामारे। मूलै पृथुल सहसदस जोयण। उवरि सहस इक श्यामारे॥ ३ ॥ (नं०) ते ऊपर प्रासाद प्रभुना। अति उत्तंग उदारा रे। साधूजंघा विद्याचारण वांदै विविध प्रकारा रे॥ ४ ॥ (नं०) चैत्यै चैत्यै इकसो चोवीस। बिंब संख्या सविदाखीरे। ध्यावो सेवो भविजन भक्तें। सुध आगम करि साखीरे॥ ५ ॥ (नं०) ऊंच पणें सऊ जोयण बऊत्तर। सो जोयण आयामारे। पिऊल पणें पंचास जोयणना। प्रभु प्रासाद सुठामारे ॥६॥ (नं०) धनुष पांचसैं आयत प्रभुनो। बिविध रतनमय कायारे। जिन कल्याणक उछव करवा। सुरपति भगतें आयारे ॥७ (नं०) अंजन अंजन चिऊं गिर उवरे। चौमुख वावि बिशालारे। वावि वावि विच इक इक पर्वत। राजतरंग रसालारे॥ ८ ॥ (नं०) चौसट्टि सहस जोयण उत्तंगे। दस सहस सम पिऊलारे। चिऊं दिसि सोल सोहै दधिमुख गिर। तिहां प्रासाद सुविमलारे॥९॥ (नं०) वाविवाविनै अंतर विदिसैं। रतिकर पर्वत रूडारे। दोय दोय संख्या ए अगदोमे। कह्या नही ए कूडारे ॥१०॥ (नं०) जोयणसहस मान दस ऊंचा। दश दशसहस विस्तारारे। ऊप्र

रिसम संठाण जगत गुरु। निश्चय ए निरधारा रे ॥११॥ (नं०) ते ऊपर प्रासाद रुतोरण। अंजनगिरि परि माणेरे जिन प्रतिमानी संख्या तेहिज। श्रीजिनराज वखाणें रे॥ १२॥ (नं०) इम प्रासाद प्रभूना बावन। नंदीसर वरद्वीपे रे। द्रव्य भाव विध पूज करंता। मोह महाभड़ जीपे रे ॥१३॥ (नं०) प्रवचन सार उद्धार प्रकरणें। जीवाभिगमें जाणोरे। इम अधिकार छै ग्रंथ अनेकैं। इहां संका मत आणोरे ॥१४॥ (नं०) जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा। ते अनुभव इहां ल्यावो रे। ध्यावो जिम पावो परमातम। जैन चंद्र गुणगावो रे॥ १५ ॥ (नं०) इति नंदीसर द्वीप स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ नंदीसर तपस्याकरण विधिलि० ॥ ॥

॥ ॥ अथ शुभ दिन शुभ घड़ी गुरुके पास नंदीसर तप ग्रहण करै। नंदीसर द्वीपके च्यारुं दिश तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षायें। अमावसकी अमावस (५२) उपवास करै। जिस दिन ज्यो माहाराजके नाम का उपवास होय। उसी नामको २००० गुणनो करै (सो लिखते हैं)।

१ ॥ ऋषभाननजी सर्वज्ञाय नमः।

२ ॥ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः।

३ ॥ श्रीवारषेणजी सर्व०।

४ ॥ श्रीवर्द्धमानजी सर्व०।

(यह) च्यार नामकों (४) वेर सुलटा (४) वेर उलटा गिणें। अनुक्रमें (१३) उपवास करणेंसें एक ढली होय। (४) ढली करणेंसें यह तप संपूर्ण होय। पीछे शक्ति

माफक उजमणो करै। नंदीसर द्वीप को मंडल बणावै। पूजा करावै। (इत्यादि महामहोत्सव करके)। ग्यान पूजा करै। गुरुभक्ति करै। साहमी वच्छल करै। मंडल पूजा की विसेष विधि गुरुके वचनसें जाणके करै। इति नंदीसर तपस्याधिकारः ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ वैशाख मासमध्ये पर्व्वाधिकार लि० ॥※॥

॥※॥ वैशाख के महिनेमें (मिती) वैशाख सुद ३ है (सो) अक्षय तृतीया नामसें पर्व्व प्रसिद्ध है (इस दिन) श्री ऋषभ देव स्वामीके। चारित्र ग्रहण कियां पीछे। बारैमासीका पारणा। सोमयश राजाके पुत्र। श्रीश्रेयांस कुमरजी के हाथसें। इक्षुरस सेती हुवा (उसी समय) उत्तमदान के प्रभावसें। सब देवगण प्रमोदवंत होके। सुगंध जलकी वर्षा ॥१॥ सुगंध पुष्पोंकी वर्षा ॥२॥ (१२॥) कोड़ सोनइयों की वर्षा ॥३॥ आकास में अहोदानं२ ऐसें उद्घोषणा ॥४॥ देव दुंदुभि बाजिंत्र ॥५॥ ऐसे पांच द्रव्यप्रगट किये। श्रेयांस कुमरको जस तीन भुवनमें विस्तरण हुआ। (उसदिनसें) आहार देणेकी विधि सबको मालुम हुई। इस दान की प्रभावसें श्रेयांस कुमर अक्षय सुख कौं प्राप्त हुवा। (इसी सें) अक्षय तृतीया पर्व्व श्रीसंघमें परममंगलकारी है। इस पर्व्व कै आणेसें। अच्छे वस्त्र आभूषण पहरके। भगवंत के मंदर आवै। अष्ट द्रव्यसें पूजन करै। स्नात्र। अष्टप्रकारी। सतरभेदी। इत्यादिक पूजा करावे। पीछे गुरुके मुखसें एकासणादिकके पच्चखाण करके। पर्व्वकी महमा

सुणें। अपनें घरमें मंगलीक भोजन त्यार होवेवें। गुरु कों वहरायके। सब कुटंब इकट्ठे होके जीमें। और (जो) मंगल कार्य्य करणा होय (सो) इसी दिन करे। (इस माफक) इस पर्व्व कों जो भव्यजीव सेवन करेंगे। उसीके तप तेज सदा वढते रहेंगे। अलं विस्तरेण। इति अक्षय तीज पर्व्वाधिकार: ॥२॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ तृतीय ज्येष्टमासाभ्यंतर पर्व्वाधिकार: ॥※॥

॥※॥ ज्येष्ट कृष्णात्रयोदशी (१३) के दिन। (सोलमा) श्रीशांतिनाथ स्वामीके निर्व्वाण कल्याणक है। (इसीसें) यह दिन वडा उत्तम है। सब ठिकाणें श्रीसंघ इकट्ठे होके। विधि संयुक्त शांति पूजाका महोत्सव करावै। शांति जल लेजाके। अपनें२ घरमें छीटै। इस शांति पूजाके करा णेसें। मारी। हैजा। (इत्यादि समुदाइक रोग) कभी श्री संघमें व्याप्त न होय (अथवा) कोई श्रावक के घरमें रोग चालो रहतो होय (वा) बहुत चिंता रहती होय (तो) इसी दिन शांति पूजा का उत्सव कराणा चहिये। (इसीसें) आधि व्याधि ग्रहादिक की पीडा सब दूर होय। अनेक मंगल श्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ ※ ॥ इति ज्येष्टवद (१३) पर्व्वाधिकार: । ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्व्वाधिकार लि० ॥※॥

॥※॥ आषाढ सुद १४के दिन। चौमासी १४ इस नाम सें पर्व्व प्रसिद्ध है (सो लिखते हैं) ॥ (यथा) आगमानुसार

स्वकपोषधानि॥देवार्चन स्नात्रविलेपनानि। ब्रह्मक्रिया दान तपोमुखानि। भव्या चतुर्मासक मंडनानि॥१॥ (अर्थ) भो भव्या एतानि सामायकादि धर्म कृत्यानि। चतुर्मासकस्य मंडनानि अलंकारभूतानि विद्यंते॥ अहो भव्यप्राणीजीवो (यह) सामायक कों आदलेके (जो) धर्मकृत्यहै (सो) चोमासे के मंडन है। अलंकार समान है। (यथाशक्ति) यह चौमासे पर्व्व में। कोइ जीव। सामायक। पडिकमणा। पोसा। करै। कोइ भगवान के मंदरमें। नानाप्रकारकी पूजा करै। कोइ सीलव्रत पालै। कोइ सुपात्र दान देवै। कोइ नाना प्रकारकी तपस्या करै। जैसो धर्मकाम अपणी शक्तिसें बण आवै (सो करै) इसमें विरोध नहीं। (पर) कोई प्रकारसें धर्मका उद्योत करणा चहिये। जिससें सब श्रीसंघमें कल्याणमाला प्रगट होय। और चौमासी (१४) के दिन। सब मंदर दरशन करने कों जावै। पांच शक्र स्तवे देव वांदै। पीछे गुरुके पास जाके। चौमासे पर्वका व्याख्यान सुणें। सवचीजका प्रमाण करके। उपरांत सोगन लेवै। सांझ कों चौमासी पडिक्कमणो करै। (इसी माफक) कातो चौमासे। फागुण चौमासेको पिण सेवन करै॥ इति चतुर्मास पर्व्वाधिकारः कथितः॥✻॥

॥✻॥ अथ श्रावण मास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते॥✻॥

॥✻॥ श्रावण मासमें कोइ भव्य जीव। मुम्बाई आदिक खेत्रों में। नाना प्रकारकी पूजा करायके चौमासे पर्व्वका उद्योत करते हें। (इसी माफक) सब

ठिकाणें नाना प्रकारकी पूजा कराणी चहिये। और बहुत ठिकाणें की श्रावकण्यां। इस महिनें मे। केई तरैकी तपस्या करै है। (जिसमें) उत्तम फलको देणें वाली केइ तपस्या (विधिप्रपाक ग्रंथसें) उद्धरण करके। संखेपविधि सें इहां लिखते हें ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ छुटकर तपस्याविधि लि० ॥※॥

॥※॥ पुरिमड्ढ १। एकासण १। नीवी १। आंबिल १। उपवास १। (यह १ ओली) इसी तरै पांच ओली करै। तपोदिन २५। ऊजमणें (२५)। लाडू चढावें ॥※॥ इति इंद्रिजय तप ॥१॥※॥ एकासण १। नीवी १। आंबिल १। उपवास १। (इसी तरै) ओली च्यार करै। तपोदिन १६। ऊजमणें १६ लाडू चढावे ॥※॥ इति कषाय जयतपः ॥ २ ॥ ॥※॥ नीवी १। आंबिल १। उपवास १। (इसी तरै) ओली ३। करै। तपोदिन ६। ऊजमणें (६)। लाडू चढावे ॥※॥ इति योगशुद्धि तप ॥३॥※॥ इकसार उपवास ३। (अथवा) एकांतर उपवास ३। ऊजमणें ज्ञान पूजा करै ॥※॥ इति ज्ञानतप ॥४॥※॥ इकसार उपवास ३। (अथवा) एकांतर उपवास ३। ऊजमणें स्नात्रपूजा करावे ॥※॥ इति दर्शनतप ॥५॥※॥ इकसार उपवास ३ (अथवा) एकांतर उपवास (३) ऊजमणाइ। गोतम स्वामीकी पूजा करै। इति चारित्रतप। ॥६॥※॥ अट्ठम १। छट्ठ १। उपवास १। एकासण १। एकलठाणो १। दत्ति १। नीवी १। आंबिल १। (यह एक ओली) इसी तरै ओली आठ करै। तपोदिन (८८)। ऊजमणें

रूपानो वृक्ष। सोनानो कुहाड़ो करायके । ग्यान खाते देवै ॥ इति आठ कर्मसूदण तप ॥७॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ भाद्रवा वदि चउथ सें लेके । पनरै दिन पर्यंत (इकसार) एकासणा (अथवा) बिआसणा करै । घर देहरा सर आगे (अथवा) अच्छे ठिकाणें कलश स्थापन करै । एक मुट्ठी चावल सदा कलसमें भरै। संवछरीके दिन कलश ऊपरि नालेर रखके । महोत्सव पूर्व्वक मंदर लाके देव आगे रक्खे। स्नात्र पूजा करै । ज्ञान पूजा करै ॥ ॥ इति अक्षयनिधि तपः ॥८॥ ॥ श्रीवासु पूज्य पूजा पूर्व्वक । रोहणी नक्षत्र दिने। उपवास। नीवी आंबिल। सात वरस सात मास करै ॥ (श्रीवासु पुज्य स्वामी सर्वज्ञाय नमः) ॥ इस पदको २००० गुणनो करै । गुरुके पास तवन सुणें (सो) तवन आगै लिख्यो है ॥ जजमणें ज्ञानको उपगरणसें । ज्ञानभक्ति । गुरुभक्ति करै ॥ ॥ इति रोहिणी तपः ॥ ॥ सुदपक्षके पांचमके दिन । श्रीनेमि । अंबिका । पूजा पूर्व्वक । पांच एकासणादिक तप करै । अंबिका देवी कों वेस चढावे ॥ ॥ इति अंबिका तपः ॥ ॥ सुद पक्षके इग्यारसके दिन । सिद्धांत पूजापूर्व्वक । मोन संयुक्त उपवास करै ॥ ॥ इति श्रुतदेवता तपः ॥ ॥ सुद पक्षमें एकांतरे । उपवास ८। पारणें आंबिल ८। एवं दिन (१६) उजमणें ग्यानपूजा करै ॥ ॥ इति सर्वांग सुन्दरतपः ॥ १२ ॥ ॥ चैत्रमासि एकांतर उपवास १५॥ एवंदिन (३०) उजमणें सोनेको (अथवा) रूपेको वृक्ष । अनेक फल सहित चढावे ॥ इति सौभाग्य कल्पवृक्ष

तपः ॥ १३ ॥※॥ पडिवा । बीज । तीज अनुक्रमसें पूनिम पर्यंत १५ उपवास करै । जो तिथि भूलै सो तिथि और करै । उजमणे एकसो वीस [१२०] लाडू मंदर चढावे । न्हाल करावे ॥ इति सर्व सुखसंपत्ति तपः ॥१४॥ ※ ॥ वरसातना च्यार मास (और) पोस । चैत । यह षट्मास टालके । छोटी पांचम तप सरू करै । अंधारी अजुआली पांचम । मास ५ लग । एकासणादिक तप करै । उजमणे ज्ञान पूजा करै । इति छोटी पांचम तपः ॥१५॥※॥ सुदपांचमकों पांच वरस पांचमास उपवास करै । उपवासके दिन देववांदनादिकक्रिया करै । उजमणे पुस्तकादिक ज्ञानोपगरण । पकवान फल कलसादिक पांच२ चढावे ॥ सतर भेदी पूजा करावे । साहमी वछल करै । इति ज्ञानपंचमी तपः ॥१६॥ ॥ आस सुदि । पडिवा । बीज । तीज । चोथ । पांचमें । एकासणादिक तप करै । असोगरुच पूजापूर्वक देवआगे नेवेद्य चढावे । इसीतरे वरस ५ । तपकरै । उजमणे चावलसें । असोगरुच लिखके पूजाकरै ॥ इति असोगरुच तपः ॥१७ ॥ ※ ॥ आसाढ वदि (७) श्रीविमलनाथ पूजा पूर्वक उपवास ॥ श्रावण वदि (७) श्रीअनन्तनाथ पूजा पूर्वक उपवास ॥ काती वदि (७) श्रीआदिनाथ पूजा पूर्वक उपवास ॥ मिगसर वदि (७) श्रीमहावीर पूजा पूर्वक उपवास ॥ पोसवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजा पूर्वक उपवास करै । न्हाल करै । उजमणे । चावलसें लोकनाल बणाके साते राज सात पावडी करिके । तिस ऊपरि सिद्धिसेल (तिसकों) सोनें रत्नोंको मुकट चढावे ॥ इति मुकटसप्तमी

तपः ॥१८॥※॥ आसोज सुदि ८सें लेके। दिन ८ तांइं एका सणादि तप करै। आठ प्रकारकी पूजा करै। नैवेद्य चढावै। पहिले वरस अष्टापदनी एक पावडी। इसी तरै आठेवरसे आठ पावडी। अष्ट प्रकारी पूजा पूर्वक आराधिये। उजमणें अष्टापद पूजा करावै। पकवान फल सब चउवीस चढावै॥ इति अष्टापद पावडी तपः ॥१९॥

॥※॥ सुदपक्षकी ८ आठमके दिन। उपवास (अथवा) आंबिल (८) करै। उजमणें दूधका कटोरा भरके। आठ लाडू देव आगलि चढावै॥ इति अक्षत आठमि तपः ॥२०॥※॥

॥※॥ बदपक्ष (अथवा) सुद पक्षके दशमके दिन। दश उपवास। [अथवा] बीस एकासणा करै। उजमणें अखंडित घी धार पूर्वक तीन प्रदक्षिणा देवै॥ इति अखंड दशमी तपः॥ २१॥ ※॥　　　॥※॥　　॥※॥

॥ ※॥ बदपक्ष अथवा) सुद पक्षके ११ इग्यारसके दिन। सिद्धांत पूजा पूर्वक। एकासण। नीवी। आंबिल। (वा) उपवास ११ करै। उजमणें ११ अंगकी पूजा करै॥ इति श्री इग्यारअंग तपः॥ २२॥ ※॥　　॥※॥

॥※॥ सुद पक्षके १४ चउदस के दिन। एकासणादि (१४) तप करै। उजमणें ग्यानपूजा करै। चवदप्रकारके पकवान प्रमुख चढावै॥ इति १४ पूर्वतप: ॥२३॥ ※॥

॥※॥ पांच अक्षत तेला। मास ६ में करै। (प्रथम तेले) मिश्रण पारणो। (दूसरै तेलै) खीरको पारणो। (तीसरै तेलै) लापसीको पारणो। (चोथे तेलै) लाडूको पारणो। (पांचमें तेलै) खीरको पारणो। सबं पारणें प्रथम साधूनें

विहराके पारणो करै ॥॥ इति पंचामृत तेला तपः ॥ २४॥॥ अट्ठम १ । एकासणो १ ॥ अट्ठम १ । एकासणो १ ॥ अट्ठम १ । एकासणो १ ॥ ए मोटो रत्नोत्तर तपः ॥२५॥॥ आंबिल २४ करके उजमणे रूपानो चक्र मंदर चढावै (तो) सदा जय होय। विणज वोपारमें लाभ होय। झगडे जीत होय। इति धर्म चक्र तपः ॥२६॥॥ उपवास ५ व्यासणा ५ । एकांतरै करै। इति पांच महाव्रत तपः ॥२७॥॥ उपवास १ । एकासण १ । नीवी १ । आंबिल १ । व्यासणो १ ॥ उपवास १ । एकासणो १ । नीवी १। आंबिल १। व्यासणो १। एवं दिन १०। पूनम सें सरू करै। पारणै साधू पडिलाभै ग्यान पूजा करै ॥॥ इति दालिद्र हरण तपः ॥२८॥॥ एकेंद्रीयें उपवास १। बेंद्रीयें छट्ठ १। तेंद्रीयें अट्ठम १। चौरिंद्रीयें दशम १ । पंचेंद्रीयें द्वादशम १ । छकायें चतुर्दशम १ । तप करै। उजमणे सुखडीसें ल्वो ६ वोसावे ॥ इति छकाय आलोयण तपः ॥२९॥ ॥ नीवी (आठ) निरंतर करै। इति सासूसुखतपः ॥३०॥॥ आंबिल (आठ) निरंतर करै ॥ इति सुसरसुख तपः ॥ ३१ ॥ ॥ छट्ठ (पांच) करै ॥ इति पुत्री सुख तपः ॥ ३२ ॥॥ अट्ठम (पांच) करै ॥ इति बेटा सुख तपः ॥ ३३ ॥॥ उपवास (आठ) एकांतर करै ॥ इति भर्त्तार सुख तपः ॥३४॥ ॥ निवी (पांच) निरंतर करै। इति जेठ सुख तपः ॥ ३५ ॥ ॥ एकासणा (पांच) निरंतर करै। इति देवर सुखतपः ॥३६॥॥ छट्ठ ५ । एकासणा पांच । एकांतर करै ॥ इति पिता माता सुख तपः ॥ ३७ ॥ ॥ ॥॥ ॥॥

॥ ※ ॥ इत्यादिक कोई तरैको तपस्या बहुत ठिकाणे को श्राविका करै है। (इसी से) सब श्राविकाके उपगारार्थ शास्त्रोंसें। उद्धरण करके। संखेप विधिसें इहां लिखी है। वैसी सक्ति होय (तो) पूजा। साहमी वत्सल। तीर्थ जात्रा। (इत्यादिक) सात शुभखेत्रोंमें। अपणाधन खरच करै। धर्मका उद्योत करै। इस तपस्या के प्रभाव से। (इस भवमें) संसार संबंधी दुखदालिद्र दूर होके। सब कुटंबमें सुख संपदा होय। (परभवमें) देवादिक ऋद्धि प्राप्त होय। (किं बहुना) इति छुट कर तपस्या विधिः ॥※॥

॥※॥ अथ भाद्रवमाससमर्थ्य पर्व्वाधिकारलि० ॥※॥

॥※॥ भाद्रवमहिनेमें। मिती भाद्रवसुद ४ (तथा) कोइ मतके अपेक्षायें ५ तिथको। संवत्सरी नामसें पर्व्वप्रसिद्ध है। (प्रथम इस संवत्सरी पर्व्वकी महमा कहते हैं) (जैसें) जगतमें अनेक मंत्रहै। पर नवकार मंत्र समान कोइ मंत्र नही (१)। तीर्थोंमें सेत्रुंजय समान कोइ तीर्थ नहीं (२)। पांच दानमें। अभयदान। सुपात्रदान। समान कोइ दान नही (३)। गुणमांहें विनयगुण (४)। व्रतमांहें ब्रह्मव्रत(५)। नियम मांहें संतोष नियम(६)। तपमांहें उपशम तप (७)। दर्शनमांहें जैनदर्शन (८)। जलमांहें गंगाजल (९)। अलंकार मांहें चूडामणि (१०)। ज्योतषी मांहें चंद्रमा (११)। तेजवंत मांहें सूर्य (१२)। तुरंग मांहें पंचवल्लभ किसोर (१३)। नृत्यकलावंत मांहें मोर (१४)। गज मांहें ऐरावण (१५)। दैत्यमांहें रावण (१६)। वनमांहें

नन्दनवन (१७)। काष्टमांहिं चंदन (१८)। साहसीक मांहें विक्रमादित्य (१९)। न्यायवंत मांहिं श्रीराम (२०)। रूप वंत मांहिं काम (२१)। सती मांहिं सीता (२२)। सुगंध मांहिं कस्तूरी (२३)। वस्तु मांहिं तेजनतूरी (२४)। वा जित्रमांहिं भंभा (२५)। स्त्रीमांहिं रंभा (२६)। धातुमांहें स्वर्ण (२७)। दातारमांहें कर्ण (२८)। गौ मांहें कामधेनु (२९)। वृक्ष मांहें कल्पवृक्ष (३०)। जलमांहें अमृत (३१)। स्नेहमांहें घृत (३२)। (इत्यादिक) सब वस्तु में एक एक चीज उत्तम होती है। (इसी माफक) सब पर्वों में उत्कृष्ट रा जाधिराज श्रीसंवत्सरी पर्व (दूसरो नाम) श्रीपर्युषणा पर्व कों। भगवंत श्रीमहावीर स्वामीजीनें उत्तम वर्णन कियो ॥※॥ (अब श्रीपर्युषणा पर्व आनेसें) (प्रथम) श्रीसाधुके क रवा योग्य धर्मकृत्य कहते है ॥※॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण करै ॥१॥ लोचकरावै २। तेलैका तप करै ३। सब मंदरोमें भगवंतको भाव स्तवना करै ४। सब श्रीसंघसें खमावे ५। यह पंचकारणके वास्ते श्रीतीर्थंकर गणधरोंनें श्री पर्युषणा पर्व प्रवर्त्तन किया ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अब श्रुद्धश्रावक संवत्सरी पर्व आराधन करणेको आठदिन अट्ठाही महोत्सव करै (सो) कल्पलता शास्त्रसें लि खतेहें ॥※॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी भक्ति करै। कल्पसुत्र जी कों विधि संयुक्त अपनें घर लेजावै। रात्रौ जागरण करा वै। (प्रभात समय) नगरके सब श्रीसंघकों निमंत्रण करै। यथायोग्य सत्कार सन्मान करै। पीछे पुस्तक ग्राहक पुरुष सबसें उत्तम वस्त्र आभूषण पहरके। मुगट छत्र चामर

(इत्यादिक सहित) साख्यात इंद्र माहाराजको रूप बणाके हाथी ऊपर (अथवा) पालखी ऊपर बेठैं। अष्टमंगलीक रचित थालमें पुस्तक धरके। अपने दोनुं हाथमें थाल रखै। दोनुं तरफ पुरुष अछा वस्त्र आभूषण पहरके। चम रढाले। अनेक प्रकारके वाजिंत्र वाजते हुये। दान देते हुये। नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन करते हुये नगरमें प्रदक्षिणा तुल्य फिरके। गुरूके पास आवै। गुरू पिण खड़ा होके। विनय संयुक्त पुस्तककों नमस्कार करके आगे रखै। सो संघके आज्ञासें वाचना पूर्वक वाचै ॥१॥ नगरमें सब ठिकाणें अमारि पड़हो फेरावे। दूसरो अपनें वचनसें (तथा) द्रव्यसें। कसाई। धोबी। भड़भुंजा (इत्या दिक) सबके आरंभ छोड़ावै ॥२॥ सुपात्र दान देवै ॥३॥ बि दाम सुपारी नालेरादिककी परभावना करै ॥४॥ श्रीवीत राग देवकी उदार भक्तिसें पूजा करै। चौदसके दिन। संव छरीके दिन। चतुर्विध श्रीसंघ इकट्ठे होके। सब मंदर दरसण करणें को जावै ॥५॥ सचित्तका परिहार करै ॥६॥ ब्रह्मचर्य पालै ॥७॥ चउत्थ। छट्ठ। अट्ठमादिक। तप करै ॥८॥ अपनें २ वित्तके अनुसारै जन्म कल्याणक को महोछव करै ॥ ९ ॥ अठ पहरी चौ पहरी पोसो करै ॥ १० ॥ संवछरी प्रतिक्रमण करै ॥ ११ ॥ निशल्य होके सब श्रीसं घसें खमावै ॥ १२ ॥ पारणेंके दिन पोसह पड़िकमणें वाले साधर्मी भाइयोंकी भक्ति करै ॥ १३ ॥ गुरुभक्ति करै ॥१४॥ संवछरी दान देवै। साहमी वछल करै ॥ १५ ॥ इस विधि संयुक्त (यह) कल्पसूत्र एकचित्त सुणनेंसें आराधन करनेसें

आठ भवमें सिद्धि स्थानकको प्राप्त होय।(और) केइ उत्तम जीव। अत्यन्त शुभ भाव रखके। अट्ठमादिक तप करिके युक्त कल्पसुत्रजीको बाचते है। और सुणने वाले प्रमाद निद्रा विकथा छोड़के। अट्ठमादिक तप करके युक्त। इकचित्तसें शुद्ध भाव रखके। इकवीस वेर सुणते है (सो) पुरुष देवगतिको प्राप्त होके। तीसरे भव सिद्धि स्थानको प्राप्त होते है॥❁॥ इस पर्युषणा पर्वके महोत्सव (जो) भव्यजीव करते है।(सो) धन्य है। धर्मके प्रभावीक है। अपणे लक्ष्मी सें धर्मका उद्योत करे है। उसी पुरुषो कों नमस्कार है॥❁॥ (अब कल्पसुत्र जीके महात्म कहते है)। यह कल्पसुत्र नवमा पुर्वसें उद्धरण किया हुवा। दशाश्रुतस्कंधका आठमा अध्ययन है। सब श्रीसंघके संगलके कारण। श्रुतकेवली। श्रीभद्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया। यह कल्पसुत्रके अनंते विषय है। (जेसें) सव नदीके बालूके जितने कण होय (तिससें पिण) एक सुत्रके अनंते विषय है। इस कल्पसुत्रके महात्म (जो) देवाचार्य। हजार जीभ करके कहे (तो पिण) महात्मके एक अंस कह सकते नहीं। ऐसा इस पर्वका महात्म जाणके (जो) भव्यजीव शुद्धभावसें सेवन करेंगे (सो) अनेक तरे सें ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्य कों प्राप्त होंगे। परभवसें देवादिक ऋद्धिपायके मुक्तिसुख कों प्राप्त होंगे॥❁॥

॥❁॥

इति पर्युषण पर्व्वाधिकारः॥❁॥६॥

॥❁॥ अथ आश्विनमास मध्ये पर्व्वाधिकारलि० ॥❁॥

प्रातसमें देवतावोंके आते जाते बचन सुणके । श्री गौतम स्वामीकों केवलज्ञान उत्पन्नहुवो। (दूजके दिन) सुदर्शना बेन। अपणे भाई नंदवर्द्धन राजाकों घरमें बुलायके जिमाया शोक दूर करायो । जिससें भाईबीज प्रवर्त्तन हुई । इसीसें यह दीवाली पर्व बड़ा उत्तम है। इस दीवालीके रात (जो) गुणनो करै (सो लिखते हैं) ॥✻॥ ॥✻॥ ॥✻॥

१ ॥ श्री महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नमः ।

२ ॥ श्री महावीर स्वामी पारंगताय नमः ।

३ ॥ श्री गौतम स्वामी सर्वज्ञाय नमः ।

॥ इस एक२ पदको २००० गुणनो करै। उपवास करै । रात्री जागरण करै । निर्वाणके समय अष्ट द्रव्यसें थाल भरके मंदर जावै । रोसनी करै । निर्वाण कल्याणक की आरती करै । स्तवन बोलै । निर्वाण कल्याणक अधिकार सुणे । गौतम रास सुणे। (इत्यादिक) उदार चित्तसें सब ठिकाणे दीवाली पर्वका उत्सव करना चाहिये ॥✻॥

॥✻॥ अथ निर्वाण आरती लि० ॥✻॥

॥✻॥ जय जगदीसर अति अलवेसर । वीर प्रभुराया । पतित उधारण भव भयभंजण । बोधबीज दाया । (जय२ जिनराया । आरतिकरुं मनभाया । कोय कंचनकाया) ॥१ (ज०) ॥ खत्रीकुंड नगर अति सुंदर । सिद्धारथ राया । सुदि आसाढ़ छठ्के दिवसै । त्रिसला कुखआया (ज०) ॥१॥ चवदे सुपन देखी अति उत्तम । निज प्रीतम भाषै । अरथ भेद सह निश्चै करनें । जिन गुणरस चाखे (ज०) ॥२॥ चैत

सुदी तेरस दिन उत्तम। सङ्ग ग्रह उच्चपावै। जन्म लेइ दिस कुमरी सङ्गना। आसन कंपावै ॥३॥ (ज०) उत्छव कर जावै निज थानक। इंद्र सङ्ग आवै। मेरु सिखरपर आन महोछव। करि आनंद पावै (ज०) ॥४॥ वसुधारा दृष्टोकर सङ्ग सुर। निज थानक जावै। सिद्धारथ करै जन्म महोछव अचरज सङ्ग पावै (ज०) ॥५॥ कंचन वरण तेज अति दीपत। हरिलंछन छाजै। कुल इख्वागु अंग सङ्ग लच्छण। ससि ज्युं मुख राजै (ज०) ॥ ६ ॥ दान संवछर दे प्रभु लेवै। चारित्र सुख दाई। मागसीर्ष दसमी बद पच्चै। उत्तम तप पाई (ज०) ॥७॥ बार बरस छद्मस्थ पणासे। दुक्कर तप पाले। माधव सुद दसमी के दिनकुं। दोख सङ्ग टाले (ज०) ॥८॥ केवल पाय सबौसुर संगै। पावा पुर आवै। गुणगण लंछत देसना देकै। संघ सङ्ग पावै ॥८॥ भूमंडल विच बङ्ग तजीवकुं। अविचल सुख देवै। नर सुर इंद्र सबौमिल पूजै जगमें जस लेवै (ज०) ॥६॥ चरम चौमासि पावापुरि कर कै। अंत समय जाणौ। हस्ति पालकी शुल्क सालमें। सोलै पहरबाणौ (ज०) ॥११॥ पर्यंकासन छट्ठ तपस्या। इक चित गुणधामौ। कार्त्तिक कृष्ण अमावसकै दिन। सिवकमला पामौ (ज०) ॥१२॥ इंद्रादिक निर्वाण महोछव। करि प्रभु गुण गावै। देवसुखे गणधर गुरु गोतम। सुणनें पछतावै (ज०)॥१३॥ वीतराग गुण मनमें धारौ। अनित्यभाव भावै। केवल ग्यान प्रगट ङ्गय ततखिण। सुर नर गुणगावै (ज०) ॥१४॥ पंच कल्याणक सासन पतिकौ। आरति ज्यो गावै। सिवसुख लक्ष्मी प्रधान मिलै जब। मोहन गुण पावै (ज०)

॥१५॥ इति पंच कल्याणक आरती संपूर्णम् शुभंभवतु ॥

॥※॥ अथ निर्वाण कल्याणक स्तवन लि० ॥※॥

॥※॥ मारग देसक मोक्ष नोरे। केवल ग्यान निधान भावदया सागर प्रभूरे। पर उपगारी प्रधानोरे ॥१॥ (वीर प्रभु सिद्ध थया) । संघ सकल आधारो रे। हिव इण भरत मां। कुण करस्ये उपगारो रे ॥२॥ (वीर प्रभु सिद्ध थया)। नाथ विहूणो सैन्य जूरे। वीर विहुणो रे संघ। साधे कुण आधार थोरे। परमानंद अभंगोरे ॥ ३ ॥ (वीर०) ॥ मात विहूणा बालज्यु रे। अरहो परो अथड़ाय। वीर विहूणा जीवड़ारे। आकुल व्याकुल थायेरे ॥४॥(वी०)॥ संसय छेदक वीरनोरे। विरह ते केमखमाय। जे दीठे सुख ऊपजै रे। ते विण किम रहिवायो रे ॥५॥(वी०)॥ निर्यामक भव समुद्रनो रे। भव अटवी सत्थवाह। ते परमेसर विण मिल्यारे किम वाधे उछाहोरे ॥६॥ (वी०)॥ वीर थकां पिण श्रुततणो रे। ऊंतो परम आधार। हिवणा श्रुत आधारछे रे। एह जिन आगम सारोरे ॥७॥(वी०)॥ इण कालैं सव जीवनें रे। आगमथी आनंद। ध्यावो सेवो भविजना रे। जिन पड़िमा सुख कंदो रे ॥८॥(वी०)॥ गणधर आचारज मुनीरे। सऊ नें इणपरि सिद्ध। भवभव आगम संगथी। देवचंद्र पद लीधो रे ॥ ९ ॥ (वी०) ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवनं ॥

॥※॥ इति दीपमालिका पर्व्वाधिकार ॥※॥

॥※॥ अब दूसरो कात्तिक महिनेमें काती सुद पंचमी। (सो) ग्यानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है। (इस दिन) सब

भव्य जीवोंको ज्ञानको विशेष आराधन करणो चहिये। ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कोईबी नही। सब तत्वमें ज्ञान समान कोई तत्व नही। मोक्ष मार्ग साधन कों ज्ञान समान कोई उपाय नही। इस ज्ञान पंचमीकों आराधनसें अनेक दुष्ट कर्म विछेद होय। गुंगापणो मुर्खपणो वक्रपणो (और) कोढादिकके रोग सबदूर होय। (अनुक्रमें) ज्ञानावरणी कर्मके क्षय होणेसें पांचों ज्ञान प्रगट होय। जैसें वरदत्त गुणमंजरीके। रोगादिकके सब उपद्रव दूर होके। मनोरथ पूर्णभए। उसी माफक (जो) ज्ञान पंचमीके आराधन करेंगे। उसीके मनोरथ पूर्ण होंगे॥ ॥卐॥ अब गुरुके पास जाके ज्ञानपंचमी कों देव वंदन विधि करै (सो लिखते हैं) ॥卐॥　　॥卐॥

॥卐॥ प्रथम पवित्र स्थानकें। चौकी पट्टे ऊपर ग्यान कों स्थापन करै। तिस आगे पांच साथिया करै। फल फूल प्रमुख चढावें। पांच वत्तीको दीपक चढावे। अगर कपूरनो धूप खेवै। पूजा पढके। वास क्षेप कपूरसें ग्यान पूजा करै। यथा शक्ती। रोकनाणो चढावे। (तथा) पूठा विटांगणादि चढावे। (अब ज्ञानपूजा लिखते हैं) ॥卐॥ नमंति सामंत महीवनाहं। देवाय पूयं सुविहेय पुव्विं। भत्तीय चित्तं मणिदामएहिं। मंदार पुप्फं पसवेहि नाणं ॥१॥ तहेव सड्ढा मणि मुत्तिएहिं। सुगंधपुप्फेहि वरंसिएहिं। पूयंति वंदंति नमंति नाणं। नाणस्सलाभाय भवक्खयाय ॥२॥ यह पूजा पढके ज्ञान पूजा करै। इसी तरै द्रव्य पूजा करके पीछै भावपूजा करै (सो लिखतेहैं)। १ खमासमण

देके । इरिया वही पडिक्कमें । लोगस्स कहै । (वैसके) मुह पत्ती पडिलेहै । अणुजाणह । मेमि उग्गहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवै । पीछे पांच खमा समण देके । ज्ञानको नम स्कार कहै ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ ज्ञानको नमस्कार लिख्यते ॥※॥

॥※॥ सकल वस्तु प्रतिभास भानु निरमलसुख कारण । सम्यगदर्शन पुष्टहेतु भव जलनिधि तारण । संयम तप आनंद कंद अन्नाण निवारण । मार विकार प्रचार ताप तापित जिन ठारण ॥१॥ स्याद्वाद परिणाम धर्मपरणति पडिबोहण । साऊ साऊणी संघ सर्व आराधन सोहण । मोह तिमर विध्वंस सूर मिथ्यात्व पणासण । आतमशक्ति अनंत सुद्ध प्रभुता परगासण ॥२॥ मति स्रुति अवधि विसुद्ध नाण मणपज्जव केवल । भेद पचास क्षायोपशमिक एक क्षायिक निरमल । दोय परोक्ष प्रथम तिहां दुगपरतक्षदोस तः । सकल प्रतक्ष प्रकास भास धुव केवल अपरमित ॥३॥ धर्म सकलनो मूल सुद्ध त्रिपदी जिन भासे । बाहिर अंग प्रधान खंध गणधर सुप्रकासै । शाखा श्रीनिर्युक्ति भाष्य पडिशाखा दीपै । चूरण टीका पत्रपुष्प संशय सब जीपै ॥४ पंचांगीसार बोध कह्यो जिन पंचम अंगे । नंदी अनुयोग द्वार शाख मानो मन रंगे । वीरपरंपर जीत अनुभव उप गारी । अभ्यासो आगम अगम निरुपम सुख कारी ॥५॥ मोह पंकहर नीरसम सिद्धांत अबाधे । देव चंद्र आणा सहित नय भंग अगाधे । ए स्रुतज्ञान सोहामणो सकल

मोक्ष सुखकंद। भगते सेवो भविकजन पामो परमानंद ॥६
॥卐॥ इति ज्ञानस्तुति॰ ॥卐॥ (इत्यादि) नमस्कार कहिके
णमोत्थुणं॰ जावंति चेइयाइं॰। जावंति केवि साहू॰।
नमोर्हत्सि॰ (कहके) प्रणमुं श्रीगुरु पाय॰। (इत्यादि) ज्ञान
का स्तवन बोले। जय वीयराय॰ कहै। वंदण॰ अनत्थू॰
कहके। एक नवकारनो काउसग्ग करै। थुई कहै ॥卐॥

॥卐॥ अथ थुई लि॰ ॥卐॥

॥卐॥ देविंद वंदिय पणहि पहुवियाणि। नाणाणि केवल मणोहि मईसुयाणि। पंचावि पंचम गई सिय पंच मोए। एयो तवो गुणरयाण जियाणदिंतु ॥ १ ॥ 卐 ॥ यह स्तुति कहके। (ज्ञान आराधना निमित्तं करेमि काउसग्गं) तस्सुत्तरी। अन्नत्थू॰ कहके। १ लोगस्सनो काउसग्ग करै (पारके) बोधा गाथं॰ (इत्यादि गाथा पढ़के)। पीछै आभिणिबोहियनाणं। सुयनाणं चेव ओहिनाणंच। तह मणपज्जवनाणं। केवलनाणं च पंचमयं ॥ १ ॥ यह गाथा कहके। इच्छामि खमा॰। श्रीमतिज्ञानाय नमः ॥१॥ श्री श्रुतिज्ञानाय नमः ॥२। श्रीअवधिज्ञानाय नमः ॥३॥ श्री मणपर्यवज्ञानाय नमः ॥४॥ समस्त लोकालोक भास्कर श्री केवलज्ञानाय नमः ॥५॥ (इसी तरै) पांच नमस्कार करै। थिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणांको नमस्कार करै (सो) पूर्वे नवपदजी कै गुणनेमें लिख्या है। उसी माफक करै। पीछे (ॐ ह्रीँ णमो नाणस्स) इस पदको २००० गुणनो करै। कम थिरता होय तो (५) जाप करै। ज्ञान पंचमीका व्याख्यान सुणें। थिरता होय (तो) इग्यारै

अंगकी सिज्झायों पढे (वा) सुणें (सो) इग्यारे अंगकी सिज्झायों लिखते हें ॥✻॥ ॥✻॥ ॥✻॥

॥✻॥ अथ प्रथम आचारांग सिज्झाय लि० ॥✻॥

॥✻॥ (ढाल हठीलानी) पहिलो अंग सुहामणो रे। अनुपम आचारांगरे। (सुगुण नर) वीर जिनंदे भाषियोरे लाल। उववाई जास उवंगरे(सु०)॥१॥ वलिहारीए अंगनोरे लाल। हुं जाउं वारंवाररे (सु०) विनये गोचरी आदरे रे लाल। जिहां साधुतणो आचाररे (सु०वलि०) ॥२॥ सुयखंध दोय छे जेहनारे। प्रवर अध्ययन पचवीसरे (सु०) उद्देसा दिक जाणिये रे लाल। पिच्यासी सुजगीसरे (सु०व०) ॥३॥ हेतु जुगतिकर सोभतारे। पद अढार हजाररे (सु०)। अक्षरपदनें छेहडे रे लाल। संख्याता ओंकार रे (सु०ब०) ॥४ गमा अनंता जेहमांरे। वलि अनन्त पर्यायरे (सु०)। बस परित्ततो छे इहांरे लाल। थावर अनन्त कहाय रे (सु० ब०) ॥५॥ निबद्ध निकाचित सासतारे। जिनप्रणीत ए भाव रे (सु०) सुणतां आतम ऊलसेरे लाल। प्रगटै सहिज सभावरे (सु०ब०) ॥६॥ सुगुण श्रावक वालू श्राविका रे। अंगे धरीय उल्लास रे (सु०)। विधिपूर्वक तुमे सांभलो रे लाल। गीतारथ गुरु पासरे (सु०ब०) ॥७॥ ए सिद्धांत महिमानिलोरे। ऊतारें भव पाररे(सु०)। विनयचंद्र कहे माहरे रे लाल। ए हिज अंग आधार रे (सु०वलि०) ॥८॥ इति आचारांग सिज्झाय ॥१॥ ॥✻॥ ॥✻॥

॥ॐ॥ अथ सुयगडांग सूत्र सिज्झाय लि० ॥卐॥

॥ॐ॥ (ढाल रसीयानी) । बीजो रे अंग तुमे सांभलो । मनोहर श्रीसुगडांग (मोरा साजन)॥ लिखसै तेसठ पाखंडी तणो। मतखंडो धर रंग (मो०) ॥१॥ मीठीरे लागै वाणी जिन तणी) जागै जेह थीरे ग्यांन (मोरा सा०)। ए वाणी मन भाणी माहरै। मानुं सुधारे समान (मोरा०) (मीठी०) ॥२॥ रायपसेणी उवांग छै जेहनो। एतो सूत्र गंभीर मो०। बहुश्रुत अरथ जाणें सहु। खोर नीर मधुर तोर (मो०मी०) ॥ ३ ॥ एहनारे सुयखंध दोय छै। वलि अध्ययन तेवीस (मो०)॥ उद्देसा समुद्देसा जिहां भला। संख्याये रे तेतीस (मो०मीठी०) ॥४॥ नय निक्षेप प्रमाण भख्या। पद छत्तीस हजार (मो०)। संख्याता अक्षर पद मांहे। कुण लहे तेहनो रे पार (मो० मीठी०) ॥ ५ ॥ गमा अनंता पर्याय वली। भेद अनन्त जिणमांहि (मो०)। गुण अनन्त त्रस परित्त कह्या। थावर अनन्ता जेमांहि (मो०मी०) ॥६॥ निबद्ध निकाचित जेसा सयकडा। जिणपन्नत्तारे भाव (मो०)। भाषीरे सुंदर एह प्ररूपणा। चरण करण नीरे जाव (मो०मीठी०) ॥७॥ करीये भगत जुगत ए सूत्रनी। निहचै लहीये रे मुक्ति (मो०)। विनयचंद्र कहे प्रगटे एह थी। आतम गुणनीरे शक्ति (मो०मीठी०)॥८॥ इति श्रीसुयगडांगसिज्झाय: ॥२॥

॥卐॥ अथ(३) ठाणांग सूत्र सिज्झाय लि० ॥卐॥

॥ॐ॥ (ढाल, आठ टके कंकणो लीयोरी (एहनी) ॥卐

॥ तीजोअंग भलो कह्योरे । (जिनजी) नामें चोठाणांग । (मोरो मन मगन थयो)। हांरे देखो२ भाव। हांरे जीवा जीव स्वभाव (मो) ॥१॥ सकल जगत करी ठाजतो रे। जि०। जीवाभिगम उपांग (मो०)। एह अंग सुझ मन वस्यो रे। जि०॥ जिम कोकिल दल अंब (मो०)॥२॥ गुहिर भाव कर जागतोरे॥ जि०॥ आजतो एह आलंब. (मो०)। कूट सेल सिखरी सिलारे॥ जि०॥ काननमें वलि कुंड (मो०) ॥३॥ गह्वर आगर द्रह नदी रे॥ जि०॥ जेह में अठै रे उदंड (मो०)। दशठाणा अतिदीपतारे॥ जि० गुणपर्याय प्रयोग (मोरो०) ॥४॥ परित्त जेहनी वाचनारे। जि०॥ संख्याता अनुयोग (मो०)। वेष्टशिलोक निजुत्त सुं रे॥ जि०॥ संगहणी पडिचित्त (मो०)॥ ५॥ ए सहु सं ख्याता जिहांरे॥ जि०॥ सुणतां उलसै चित्त (मो०)। सुयखंध इक राजतो रे (जि०)। दश अध्ययन उदार (मो०) ॥६॥ उद्देसादिक वीस ठैरे। (जि०) पद बहुत्तर हजार (मो०)। रागी जिन शासन तणो रे॥ जि०॥ सुणों सिद्धांतवषांण (मो०)। विनय चंद्र कहै तेह वैरे। जि० परमारथराजाण (मो०) ॥ ७॥ इति चोठाणांग सुत्र सि ज्झाय: ॥३॥ ॥*॥ ॥*॥

॥*॥ अथ (४) समवायांग सुत्र सिज्झाय लि० ॥*॥

॥*॥ (ढाल) थांरा महिलां ऊपरमेह झरोखे कोयली (एहनी) ॥*॥ चौथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी हो लाल। सुणो०। पन्नवणा उपांग करी सोभावणी हो लाल

करी सो०। अरध मागधी भाषा साखा सुरतणी हो लाल। साखासु०। समकित भाव कुसुम परमल व्यापी घणी हो लाल। पर० ॥१॥ जीव अजीवने जीवाजीव समास थी हो लाल॥ जीवा०॥ लहीये एहथी भाव विरोध कांइ नथी हो लाल। वि०। भांगा तीन खसमयादिकना जाणीये हो लाल। यादि०। लोक अलोकने लोकालोक वखाणीये हो०। लो० एक थकी छै सत समवाय प्ररूपणा हो लाल। रूम०। कोड़ा कोड़ प्रमाणक जीव निरूपणा हो०। जी०। बारसविह गणि पिटक तणी संख्या कही हो०त०। सासता अरथ अनंतकि छै एहना सही होलाल। छै०॥३॥ सुय खंध अध्ययन उद्देशादिक भला होलाल॥ उ०। संख्यायें एक एक प्रत्यकै गुणनिला हो०। प्रत्य०। पद एक लाख चोमाल सहसते उत्तरा हो०। स०। पदनें अग्र उदग्र संखाता अक्षरा हो०। सं० ॥४॥ भाष्य चूर्णि निर्युक्ति करी सोहैं सदा हो०करी०। सुणतां भेद गंभीर विपत न होय कदा हो०। विप०। जेहनमावे अंगकि अन्तरगतिहसी हो०। अन्त०। जलवरसंते जोर कुणन उवै खसी हो० कुण० ॥५॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं माहरो हो०। जिणं०। तजिया शास्त्र मिथ्यात सूत्र आखो खरो हो०। सु०। जिम मालती लही भृंग करीनें नविरहै हो०। करी०। ईश्वर शिरसुरगंग तजी परि नवि वहै हो०। तजी० ॥६॥ एप्रवचन निर्ग्रंथ तणो जुगतै वड़ो हो०। तणो०। साकर सेलड़ी द्राष थकी पिण मीठड़ो हो०। थकी०। स्युं कहीयै बहुवात विनयचंद्र इम कहै

होे० । वि० । एहना सुणनें भाव श्रोता अति गहगहे हो० श्रोता० ॥७॥ इति श्रीसमवायांग सुतसिज्झाय संपूर्णं ॥४

॥※॥ अथ (५) भगवती सुतसिज्झाय लि० ॥※॥

॥※॥ (ढाल पंथीडानी) । पंचम अंग भगवती जाणीये रे। जिहां जिनवरना वचन अथाह रे। हिमवंत परबत सेती नीकल्यारे । मानुं परतिख गंगप्रवाह रे (पं०) ॥१॥ सूरपन्नत्ती नामें परगडो रे। जेहनो छै उद्दाम उपांगरे। सुत तणी रचना दरीयाजिसी रे। मांहिला अरथ ते जल तरंग रे (पं०) ॥२॥ इहां तो सुयखंध एक अति भलो रे। एक सो एक अध्ययन उदार रे। दश हज्जार उद्देशा जेहना रे। जिहां किण प्रश्न छत्तीस हजार रे (पं०) ॥३॥ पद तो दोयलाख अरथे भण्या रे। ऊपरि सहस अठासी साण रे। लोकालोक स्वरूपनी वर्णना रे। विवाह पन्नत्ती अधिक प्रमाण रे (पं०) ॥४॥ करिये पूजा अने परभावना रे। धरिये सद्गुरु ऊपरराग रे। सुणिये सुत भगवती रागसुं रे। तो होय भव सागरनो त्याग रे (पं०) गोतम नामें द्रव्य चढाइये रे। सम्यक् ज्ञान उदय होय जेमरे कीजे साधु तथा साहमी तणी रे। भगति युगति मन आणी प्रेम रे (पं०) ॥६॥ इण विधिसुं एह सुत आराधतां रे इण भव सीझे वंछित काज रे। पर भव विनय चंद्र कहे तेलहे रे। मोहन मुगति पुरीनो राज रे (पंच०) ॥७॥ इति श्रीभगवती सुत सिज्झाय सं० ॥५॥ ॥※॥

॥ॐ॥ अथ (६) ज्ञातासूत्र सिज्झाय लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (ढाल) कितलखलागा राजा जीरैं मालिये। (ए देशी)। छट्ठो अंग ते ज्ञाता सूत्र वखाणिये जी। जेहना छै अरथ अधिक उद्दंड हो। म्हांरा सुणज्यो धरिनेह सिद्धांत नी वातड़ीजो। श्रवणे सुणतां गाढो रस ऊपजै जी। मधुर तातजित जिम मधु खंड हो (म्हां०) ॥१॥ जंबूद्दीव प्रन्नत्ती उपांगछै जेहनो जी। इण मांहे जिनपूजानी विधि जोरहो म्हां०। अर्थिक सुणि परम शांतिरस अनुभवे जी। चर्चिक सुणि करै सम सोरहो (म्हा०) ॥२॥ नगर उद्यान चैत्य वनखंड सोहामणो जी। समवसरण राजाना मातनै तात हो (म्हां०)। धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी। इहलोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहात हो (म्हां०) ॥३॥ भोग परित्याग प्रव्रज्या पर्यवाजी। सूत्र परिग्रह वाह्य तप उपधान हो (म्हां०)। संलेहणा पच्चखाण पादपोपगमन ताजी। स्वर्गगमन शुभकुल उतपत्ति हो (म्हां०) ॥४॥ बोधिलाभ वलितंतते अंतक्रिया कहीजी। धर्मकथाना दोयछै खंध हो (म्हां०)। पहिलाना उगणीस अध्ययन ते आज छै जो। बीजाना दशवर्ग महा अनुबंध हो (म्हां०) ॥५॥ साढा कोड़ि तिहां सबल कथानक भाखिया जी। भाख्या वलि उगणीस उद्देश हो (म्हां०)। संख्याता हजार भला पद एहना जी। एह थकी जाये कुमति कलेश हो (म्हां) ॥६॥ विनय करै जे गुरुनो बहु परै जी। तेहनें सूतसुणतां बहु फल होय हो (म्हां०)। ते रसिया मन वसिया विनय चंद्रनें जी। सो मांहें मिलै जोयां एक बे दोय हो।

(म्हां०) ॥७॥ इति श्री ज्ञाताधर्म कथाङ्ग सिज्झायः ॥६॥

॥✽॥ अथ (७) उपासकदशा सूत्रसिज्झाय लि० ॥✽॥

॥✽॥ (ढाल बिंदियानी) । हिवे सातमो अंग ते सांभलो । उपासग दशानांमें चंगरे । श्रमणोपासकनो वर्णना जसु चंदपन्नत्ती उपांगरे ॥१॥ मन लागो मोरो सूत्रथी । एतो भव वैरागतरंगरे । रंगराता ज्ञाता गुण लहै । परमारथ सुविहित संगरे (म०) ॥२॥ इण अंगे सुयखंध एक छै । अध्ययन उद्देश विचार रे । दश दश संख्यायें दाखव्या पद पिण संख्यात हजार रे (म०) ॥३॥ आणंदादिक श्रावक तणो । सुणतां अधिकार रसाल रे । रस लागे जागे मोहनो । श्रोता जननें ततकाल रे (म०) ॥४॥ श्रोता आगलतो वाचतां । गीतारथ मांमें रीझ रे । जे अर्ह दग्ध समझै नहो । तेहसुं तो करवोधीज रे (म०) ॥ ५ ॥ दश श्रावकतो इहां भाषिया । पिण सुत्र भण्यो नहीं कोय रे । ते माटै शुद्ध श्रावक भणी । एक अरथनी धारणा होय रे (म०) ॥ ६ ॥ साची होय ते प्ररूपीये । निसंक पणों सुजगीसरे । कविविनय चंद्र कहै सुं पवो । जो कुमतो करस्यै रीसरे (म०) ॥ ७ ॥ इति श्रीउपासक दशाङ्ग सिज्झायः ॥ ७ ॥ ॥✽॥ ॥✽॥

॥✽॥ (८) अंतगडदशांग सिज्झायलि० ॥✽॥

॥✽॥(ढाल) वीर वखाणी राणी चेलणाजी । इण चाल में ॥ ✽ ॥ आठमो अंग अंतगड दशांगो । सुणो करो

कान पवित्र। अंतगड केवली जे थया जो। तेहनारे इहां चरित्र (आठ०) ॥१॥ कर्म कठिन दल चूरता जी। पूरता जगतनी आस। जिनवर देव इहां भासताजी। सास ता अर्थ सुविलास (आ०)॥२॥ सकल निक्षेप नय भंग थीजी अंगना भाव अभंग। सहिज सुखरंगनी तरिपकाजी। कलिपका जासु उवंग (आ०) ॥३॥ एक सुय खंध इण अंग नो जी। वर्ग छे आठ अभिराम। आठ उद्देशा छे वली जी। संख्याता सहस पद ठाम। (आ०)॥४॥ आठमा अंग ना पाठमें जी। एहवो अछे रे मीठास। सरस अनुभव रस ऊपजे जी। संपदे पुण्यनीरास (आ०) ॥५॥ विषय लंपट नर जे हुवे जी। निरविषयी सुण्या थाय। जिम महाविष विषधर तणो जी। नागमंत्रें सुण्यां जाय (आ०) ॥६॥ अद्भुत वचन सुखरसती जी। सरस्वती करीरे प्रसाव। जिन विनय चंद्र इण सुतना जी। सुरततहै अभिप्राय (आ०) ॥७॥ इति श्रीअंतगड दशांग सिज्झाय: ॥ ८ ॥ ॥

॥॥ अथ (९) अणुत्तरोवाई अंग सिज्झायलि० ॥॥

॥॥ (ढाल नणदल बिंदलीले एहनी) ॥॥ नवमो अंग अणुत्तरो वाई। एहनीरुच सुझनें आईहो। आवक सुत सुणो। सूत्र सुणो हित आणो। एतो वीतरागनी वाणी हो (आव०) ॥ १ ॥ जसु कल्पावतंसिकानामें। सोहै उवांग मझामें हो (आ०) एतो आगमनें अनुकूला। मानुं मेरु शिखरनो चूला हो। (आ०) ॥२॥ एतो सुत्रनो नाम सुणीजै। तिम तिम अंतर गतिभीजै हो (आ०)। प्रगटै

नवलसनेहा। एह थी भलासे मोटो देहा हो (आ०) ॥३॥ अणुत्तर सुरपद पाया। तेहना गुण इणमें गाया हो (आ०)। नगरादिक भाव वखाण्या। तेतो छठे अंगे आख्या हो (आ०) ॥४॥ इहां एक सुयखंध वारू। तिणव गंवली मनोहारू हो (आ०)। उद्देशा तिणसनूरा। संख्या त सहस पद पूरा हो (आ०) ॥५॥ सुत सुणावुं अमे तेहनें। साचो श्रद्धा ऊय जेहनें हो (आ०) श्रोताथी प्रीत लगावुं। निंदकनें मुंह न लगावुं हो (आ०) ॥६॥ जे सुणतां करै वकोर। तेतो मांणस नहीं पिणढोर हो (आ०)। कवि विनयचंद्र कहै साचो। श्रुत रंगै सहुको राचो हो (आ०) ॥७॥ इति श्रीअणुत्तरो वाई सिज्झायः ॥६॥❀॥

॥❀॥ अथ (१०) प्रश्णव्याकरणांग सिज्झायलि० ॥❀॥

॥❀॥ (ढाल) आघा आम पधारो पूज (एहनी) ॥❀॥

दशमो अंग सुरंग सुहावें। प्रश्नव्याकरण नामें। सुत कल्पतरु सेवै ते तो। चिदानंद फल पामें। (आवो२ गुणांना जाण तुमनें सुत सुणावुं)। (टेक) ॥ १ ॥ पुष्फकली ज्युं परिमल महकै। गुरु परागनें रागै। तिम उपांग पुप्फिका एहनो। जोर जुगति करि जागै। (आवो०) ॥२॥ अंगुष्ठादिक जिहां प्रकास्या। प्रश्नादिक अतिरूडा। तेहै अठोत्तर सत रतो। सुतमध्य मणि चूडा (आ०) ॥३॥ आस्रव द्वार पांच इहां आख्यां। पांचे संवर द्वारा। महा संलाणी मांलहोये। जवधि भेद सुखकारा। (आ०) ॥४॥ सुय खंध एकठै दशमें अंगे। पणयालीस अज्झयणा।

पणयालीस उद्देशवलीपद। सहस संख्यात नीरयणा (आ०) ॥५॥ जेनर सुत्तसुणें नही कानें। केवल पोषै काया। माया मांहि रहै लपटाणा। ते नर इम हीज आया। (आ०) ॥६॥ सुत मांहि तो मारग दोय छै। निश्चय नय व्यवहारा। विनय चंद्र कहै ते आदरियें। तजिमन मदन विकारा (आ०) ॥७॥ इति श्री प्रश्नव्याकरण सुत्तसिज्झायः ॥१०॥

॥ अथ (११) विपाकसुत्त सिज्झायलि० ॥

॥ ढाल कडखानी ॥ सुणोरे विपाक स्रुत अंग इग्यारमो। तजो विकथा इणा जे अनेरी। ललित उवांग जसु प्रवर पुष्फ चूलिका। मूलिका पाप आतंक केरी (सु०) ॥१॥ असुभ किंपाक सम दुक्रतफल भोगवी। नरकसागर कथया जेह प्राणी। सुक्रतफल भोगवी स्वर्गमां जे गया। तास वक्तव्यता इहां आणी (सु०) ॥२॥ दोय स्रुत खंधनें वीश अध्ययन वलि। वीश उद्देश इहां जिन प्रयुंजे। सहस संख्यात पद कुंदमचकुंद जिम। बकुल परिमल भमर चित्त गुंजे (सु०) ॥३॥ सरसचंपकलता सुरभि संकुनें रचे। अन्य उपगारनी बुद्धि माटे। सुत उपगार तेह थी सबल जाणिये जेहथी पुरुष सुख अचल खाटे (सु०) ॥४॥ बंधनें मोक्षना बेउं कारण अछै। दुक्रतनें सुक्रत जोवो विचारी। दुक्रतनें पर हरो सुक्रतनें आदरो। जिन वचन धारिये गुणसंभारो (सु०) ॥५॥ मकररे मकर निंदा निगुण पारकी। नारकी तणी गति कांइ बांधे। नारकी प्रक्रत तजि सहज संतोष भज। जाग स्रुत सांभलो धरम धंधे (सु०) ॥६॥

सुक्खनें दुक्ख विपाक फल दाखव्या । अंग इग्यारमें वीत रागै । चिरजयो वीरशासन जिहां सुख थो । कवि विनय चंद्रगुण ज्योति जागे (सु०) ॥ ७ ॥ इति श्रीविपाकसुत्र सिज्झायः ॥११॥ ॥✽॥ ॥✽॥

॥✽॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णनालि० ॥✽॥

॥✽॥ (ढाल वधावानो) । अंग इग्यारहमेंसुण्या । (सहेलीए) आज थया रंगरोलकि (स०) । नन्दीसुत मांहि एहनो (स०) । भाख्यो सर्वनिचोल कि ॥१॥ (सहेलीए आज वधामणा) पसरौ अंगइग्यारनौ (स०) । सुझ मन मंडप वेलकि । सौंचूं तेहरखे करी (स०) अनुभव रसनौ रेलकि ॥२॥ हेज धरी जे सांभलै (स०) । कुंण वूढा कुण बालकि । तो ते फल लहै फूटरा (स०) स्वादें अतिहि रसाल कि ॥३॥ हरख अपार धरी होये (स०) । अहमदावाद मझारकि । भासकरी ए अंगनौ (स०) वरत्या जयरकार कि ॥ ४ ॥ संवत सतर पचावनें (स०) । वरषा ऋतु नभ मासकि । दशमी दिन शुदि पखमां (स०) पूरण थई मन आसकि ॥ ५ ॥ श्रीजिन धर्मसूरि पाटवी (स०) । श्रीजिनचंद्र सूरीसकि । खरतर गछना राजीया (स०) तसु राजे सुजगीसकि ॥६॥ पाठक हरख निधान जी । (सहे०) । ज्ञान तिलक सुपसायकि । विनय चंद्र कहै में करी स० । अंग इग्यार सिज्झायकि (सहे०) ॥ ७ ॥ इति श्रीइग्यारै अंग सिज्झायः ॥

॥✽॥ पुनः ज्ञानको स्तवनलि० ॥✽॥

॥ ✽ ॥ रागठुमरो ॥ मेरे रे मनमांने ज्ञानरो । (मे०) परउपगारी सुगुरुवताई । पांचु भेदेकरो । मति

श्रुति अवधि अवरमनपर्यव । केवलबोधवरी । (मे०) १ ॥ तपकर अग्नि मूं सदंशनको । करमें धनलकरी । सक्रियसं यम करता सुमिल । सिद्धरसानधरी । (मे०) २ । पूरण पुन्य मिली मोय सजनी । सकलानन्दहरी । बालकहै अब विसरतनांहीं । पलछिन एकघरी । (मो०) ३ ॥ इति पदम् ॥

॥✱॥ पुनः आगम स्तवन लि० ॥✱॥

॥✱॥ श्रुत अतिहभलो । संघसकल आधारनसु लिभु वनतिलो । (आंकणी) अरथे श्रीवीरजिणंद आख्यो । सुत्रैं श्रीगणधर गुरु भाष्यो । तदुभय थी जे मुनिवर राख्यो । १॥ (श्रु०) । जेह थी जगभाव सकल जाणों । नय एकंत सुनिजन नवितांणों । निश्चइ व्यवहार ते मन आणों ।२॥(श्र०) जिहां अङ्ग उपाङ्गछै अतिरूड़ा । छेद पइन्नानहिं कूड़ा । मूलसुत्र नन्दी अनुयोगचूड़ा ॥३॥ (श्रु०) । जिहां निरयुगती सुत्रै सङ्गी । वलि भाष्य चूरणि टीका चङ्गी । पंचम अंगे कही पंचाङ्गी ॥४॥(श्रु०)। जिहां साधु स्रावक मारग लहियै । संवेग पखी वलि सरदहियै । ए तिण विन भवमारग कहियैं ॥५॥(श्रु०)। जेहनी अनुपेक्षा नित करियै । उपचारैं दूषण परिहरियैं । आराध्यां निज अनुभव वरियै ॥ ६ ॥ (श्रु०) । जिन आगमना जे गुणगावै । शुद्धाशय जे मनमें ध्यावै । ते खमा कल्याण सदा पावै ॥७॥(श्रु०) ॥ इति आगमस्त०

॥✱॥ इति ज्ञानपञ्चमी पर्व्वाधिकार: ॥✱॥

॥✱॥ अथ कार्त्तिक चौमासाधिकार लि० ॥✱॥

॥✱॥ कार्त्तिक महिने में मिती कार्त्तिक सुद १४ के

दिन । सब मन्दर दर्शन करनेंकों जाना । व्याख्यान सुणना । सामायकादिक धर्मकृत्य करना (इत्यादिक) सब अधिकार पूर्व आसाढ चौमासे मुख्य जानके कार्त्तिक चौमासेका सेवन करैं ॥ इति कार्त्तिकचौमासा सेवनविधि: ॥❋॥

॥❋॥ अथ कात्तिक पूर्णमासीके अधिकार लि० ॥❋॥

॥❋॥ प्रथम कार्त्तिक वद १ से सेत्रुंजरास सुणें । निवी (वा) एकासणा व्यासणादिक तप करै । दोनुं टंक पडिक्कमणो करै । देव वंदणादिक करै । (ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचेल अनन्तसिद्धाय नम:) इसी को एक जाप सदा करै । शक्ति होय (तो) सिद्ध गिरी जात्रा करनें को जावै । काती पूनमके दिन विस्तार संयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै । अट्ठाही महोछव करै । विस्तारसें देववंदनादिक विधि करै (२१) वेर सेत्रुंजरास सुणें । ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचेल अनन्त सिद्धाय नम: । इसी पदसे (२१) जैतो देवै । (कदास) सिद्ध गिरी जाणें की सक्तिन होय (तो) जहां सिद्धगिरी का पटफंडा होय । उहां महोछव संयुक्त दर्शन करनें को जावै । पूजादिक सब विधि करै । छट्ठ भक्त करके (वा) चतुर्थ भक्त करके इस पर्वको) आराधन करै । गुरुभक्ति करैं । साहमी वछल करै । (इत्यादिक) विधिसंयुक्त सिद्ध गिरीको सेवन करनें से । सब असुभ कर्म विध्वंस होके मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥❋॥ (इस दिन) श्रीद्राविड़ वारिखिल्ल प्रमुख दशकोड़ि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त भए । जिससें इस दिन (जो) धर्मकृत्य किया हुवा निस्संदेह

दशकोड़ि गुणा फलै। इस भरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान कोई उत्तम तीर्थ नहिं। सन् उगणीसै तीससें। चैत्रीपुन मकों जात्रा करते हुए। सब भगवंतके बिंबोंके दरसण किये (जिसमें) बारे हज्जार। तीनसै। अट्ठावन (१२३५८) बिंब हुए। और बहुत ठिकाणों चरणोंकी स्थापना है। अनन्ता साधु अणसण लेके परमपदकों प्राप्त भए हैं। इसी सें (जो) आसन भव्यी जीव होंगे (सो) शुद्धभावसें इस तीर्थको सेवन करेंगे। और (जो) सेवन करते हैं। उसी पुरुषोंकों नमस्कार है। उसी पुरुषोंके जीवतव्य धन्य है॥

॥॥ अथ सिद्धगिरीकी स्तवन लिख्यते ॥॥

॥॥ (देशी गरवानी। ते दिन क्या रे आवसी हे। (जोरे वहिनी)। जासुं सिद्धाचलनी जात (मोरी सहीयां) हे। पाजे चढतां प्रेम सुं हे। (जोरे वहिनी)। गाइये गुण अखियात। (मोरी सहीयांहे। तेदि०)॥१॥ अद्भुत ऊंचो देहरो हे। (जोरे वहिनी) मूल नायक आदिनाथ। (मोरी सहीयां हे)। भोली भगत भली परैं हे। (जोरे०) निरख्यां होय सनाथ। (मोरी० ते०) ॥२॥ नाही निरमल नीरसुं हे। (जोरे०) पहिर खीरोदक चीर। (मोरी०) केसर भरीय कचोलनी हे। (जोरे०) पूजसुं सुगुण सुवीर। (मोरी०ते०) ॥३॥ रूडो रायण रूंखडो हे। (जोरे०) आदि जिणंद उदार। (मोरी०) तिहां जगनाथ समो सर्या हे। (जोरे०) पूरव निनांणुं वार। (मोरी० ते०) ॥४॥ इण गिर वरियै अपरा हे। (जोरे०)। सीधा साधु अनंत। (मोरी०)

चौमासे रह्या दोय जिनवरा हे। (जोरे०) अजित जिणेसर शांति। (मोरी० ते०) ॥५॥ चेलणा तलाई सिद्ध सिला हे (जोरे०) अद्भुत उलका झोल। (मोरी०) सिद्धवड सेत्रुंजे नदी वहै। (जोरे०) करियै नित रंग रोल। (मोरी० ते०) ॥६॥ इण डूंगर दीठां थकां हे। (जोरे०) ऊपजे परमानंद। (मोरी०) गहिरो गिरवर छांडसी हे। (जोरे०) चाहै नित जिणचंद। (मोरी० तेहि०) ॥७॥ ✽॥ इति सिद्धाचल जी स्तवनम् ॥१॥ ॥✽॥ ॥✽॥

॥✽॥ पुनः ॥✽॥

॥ ✽ ॥ आज आपे चालो सहीयो सिद्धाचल गिर जइयै ॥ सुणि वहनी ए गिरनी महिमा। आदिजिनंद इम भाषी। भरथादिक नरपतिनें आगल। इंद्रादिक सहु साखीरे (आज०) ॥ १ ॥ इण गिरवरियै काल अनंते। साधु अनन्ता सीधा। जनम मरणनां दुख छोडीनें। अमल अखयगुण लीधारे (आ०) ॥२॥ इण गिर सनमुख पगला भरतां आतम सुद्ध सुभावै। कोड भवांरां पातिक कीधा। एकपल कमें जावै रे (आ०) ॥३॥ सासतो तीरथ ए सेत्रुंजो। जो तांलागे मीठो। तीन भुवनसें इण गिर तोलै। बीजो कोई न दीठो रे (आ०) ॥ ४ ॥ नीरंजनसुं नेह धरीनें। आगे ऊलग करस्यां। अद्भुत आदि जिनेसर निरखी। प्रेम सुधारस पीस्यां रे (आ०) ॥५॥ पुहपसुगंधा लेइ पचरंगा। हार सुगंधा गूंथी। पहिरावी प्रभु कंठे लहिस्यां। सिव मारगनी सूधीरे (आ०) ॥६॥ गहिर स्वरे जिनवर गुण गातां। जाल निनाणूं करियै। मन गमतो भमतो विचभ

मतां। भव सायर निसतरिये रे (आ०) ॥७॥ पूरवनिनाणूं वार प्रथम जिन। रायणरूंखे आया। ते तीरथ सुभ भावे फरसो। करिये निरमल काया रे (आज०) ॥८॥ लाभउदै ए गिरवर लहिये। कहै इम केवलनाणी। श्रीजिनचंद सदा हित वछल। प्रेम धरो चित आणीरे (आ०) ॥९॥ इति सिद्धाचल जी स्तवनम् ॥२॥

॥ (श्रीचंद्रा प्रभू प्राहुणोरे ए देशी) ॥ नमोरे नमो सेतुंज गिरी रे। तिकरण शुद्ध तिकालरे। पाप पड़ल दूरे टलेरे। तूटे करम जंजाल रे। (नमो०) ॥१॥ पूरवनिनाणूं समोसस्या रे। प्रथम जिनंद जगदीसरे। बावीसम जिनवर विनारे। समो सस्या तेवीसरे। (नमो०) ॥२॥ साधु अनन्त अणसण ग्रहीरे। सीधा एहिज ठोड़रे। काल आगामी वलि सीऊस्यै रे। साधु अनन्ती कोड़िरे (नमो०) ॥३॥ अनंत कल्याणक भूमि कारे। महिमावंत महन्त रे। सास्वतो तीरथ ए सहीरे। अतिसय जास अनन्त रे (न०) ॥४॥ कोडि भवंतर जेकिया रे। पातिक विविध उपाय रे सेतुंजे सनमुख चालतां रे। पगपगते सहु जायरे। (नमो) ॥ ५ ॥ धनदिन तेहिज जाणसुंरे। वहिसुं सेतुंज केरीवाटरे। ठहरी यथाविध पालसूंरे। संघ सहित गहिगाटरे (नमो०) ॥६॥ पगपग उछ्व अतिघणारे। पग पग जाचक दानरे। प्रेम भगति साहमी तणीरे। जीर्णोद्धार प्रधान रे (नमो०) ॥७॥ धन ते गिर राय निरखसुंरे। वटती मंगल मालरे। मणि मोतीयड़े वधावसुं रे। रजत सोवन भर थाल रे (नमो०) ॥ ८ ॥ धन दिन ते गिर फरस सुं रे।

करसुं पावन मोरी कायरे। भगति जुगति जुहारसुं रे। नाभि नन्दन जिन रायरे (नमो०) ॥ ९ ॥ द्रव्य भाव करसुं सुहारे। पूजाविविध प्रकार रे। भावै भावना भावसुं रे। करसुं सफल अवतार रे (नमो०)॥ १० ॥ रतनत्रयी भमती भली रे। देसुं ते घर बुद्धि रे। भव भव भ्रमण निवारसुं रे। लहसुं आतम सुद्धिरे। (नमो०) ॥ ११ ॥ विध फरसण मनमाहरो रे। मोहि रह्यो दिन रातरे। पुन्य प्रबल थी पामियो रे। उज्जलगिरि केरो जातरे (नमो०) ॥१२॥ नाथ धूलेवासुपसाय थीरे। कारज सगला सिद्धरे। कहै जिन हरष सूरी सदारे। होय ज्यो मंगल वृद्धरे (नमो०) ॥१३॥ इति सिद्धाचल जी स्तवनम् ॥३॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥॥ (देशी पंथीडानी) ॥॥ अंग उमावो मोनें अति घणो। भेटवा विमल गिरन्दरे। (पंथीडा)। नाभिरायाकुल चंदलो। जिहां वसे मरुदेवी नन्द रे। (पंथीडा) वहिलुं बोलेरे पंथी म्हांरा वहिलुं बोलेरे ॥१॥ सेत्रुंजो छै कित नीक दूररे (पंथीडा वहि०)। पालीताणो नगर सुहामणो रूडो ललिता सरनी पालरे (पंथीडा)। जिहां अंबलारे वडला घणा। झुक रह्यो चंपलारि डालरे (पंथीडा वहि०) ॥ २ ॥ धन ते पंखी पारेवडा। सेत्रुंज वसिया छै सो ररे (पंथीडा)। ऊमाहो करीनें जे घररहै। मांगस नहीं ते ढोर रे। (पंथीडा वहिलुं०) ॥३॥ सेत्रुंज वाटैंजो चालतां। ऊणो ऊणो ऊडै खेहरे। (पंथीडा)। मैला थाये संघना कापडा। निरमल थाये देहरे। (पंथीडा वहिलुं०)

॥४॥ ऊंचो देहरो आदि नाथ रो । आगल चौक बिसाल रे (पंथीड़ा) । जिहां मिलमिल घणा मानवी । गावै प्रभुगुण मालरे। (पंथीडा वहिलु०) ॥५॥ घस केसर भरवाटका । पूजै जिनवर अंगरे । (पंथीड़ा) । फूलाहं दोसोहै प्रभुसिर सेहरो । दिवलानो जोति अभंग रे । (पंथीड़ा व०) ॥६॥ ए गिरवर दीठां माहरै । ऊपजै परम आनन्द रे । (पंथीड़ा) मोनें भेटणरीजो कोड़छै । प्रेम घणें जिनचंद रे । (पंथीड़ा व०) ॥७॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनम् ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जालानिनाणूं करियै विमल गिर (जाला०) । पूरबनिनाणूं वार सेत्रुंज गिर । ऋषभजिनंद समोसरियैं (विम०जा०) । कोड़ि सहस भव पातिक तूटै । सेत्रुंज सामें ड़ग भरियै । (विमल० जा०) ॥ १ ॥ चौथ छट्ठ दोय अट्टम तपस्या । करि चढियै गिरवरियैं । (वि०जा०) पुंडरीक पद जपियै हरखें । अध्यवसाय सुभ घरियै (वि०जा०) ॥ २ ॥ पापी अभव्वी निजरन देखै । हिंसक पिण ऊधरियै (वि० जा०) । भूमि संथारोनें नारितणो संग । दूर थकी पर हरियै (वि०जा०) ॥ ३ ॥ अकल आहारोनें सचित्त परिहारी । गुरु साथे पद चरियै (वि०जा०) पड़िकमणा दोय विध सुं कीजै । पाप पड़ल विषहरियै (वि०जा०) ॥४॥ कलि काले ए तीरथमोटो । प्रवहण सम भवदरियै (वि०जा०) । उत्तम ए गिरवर सेवंता । पद्म कहै भवतरियै । (विम० जाला०) ॥५॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनम् ॥५॥ इति कार्त्तिकमास पर्व्वाधिकारः ॥ ८ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ अथ मार्गशीर्ष मास मध्ये पर्व्वाधिकार लि० ॥

॥卐॥ मिगसर महिनेमें मिती मिगसर सुद ११ (सो) मोन इग्यारस नामसें पर्व प्रसिद्ध है। इस दिन देढ़ सैं कल्याणक हुये (सो लिखते हें) जन्म। दिक्षा। केवलज्ञान यह तीन कल्याणक। श्रीमल्लिनाथ स्वामीके हुये। श्री अरनाथ स्वामीनें दिक्षा अंगीकार करी। श्रीनमिनाथ स्वामीनें केवल ग्यान उत्पन्न भयो। (एसें) इस भरतक्षेत्र में वर्त्तमान चौबीसीके पांच कल्याण हुए (इसी माफक) पांच भरत। पांच ऐरवतमें चौवीसी के पांच२ कल्याण कमिलानेंसें। पचास कल्याक हुये। अतीत। अनागत। वर्त्तमान कालके अपेक्षायें। देढसैं कल्याणक हुए। इसी सें यह दिन बड़ा उत्तम है (इस दिन) मोन संयुक्त उपवास करै। अठ पहरो पोसो करके मोन इग्यारसको गुणनो करै। पोसहकी शक्ति न होय (तो) देसावगासी लेके गुण नोकरै। (एसें) इग्यारै बरसमें इग्यारे उपवास करै। और (जो) इग्यारस करनेंकी इच्छा होय (तो) मासमें बद। सुदकी। दोनु एकादसी। इग्यारै बरस इग्यारै महिनां करै। यह तपस्या करतां इग्यारै अंग सुद्धभावसें सुणें। इग्यारै अंग लिखायके देवै। पढनेंवालूंकी सहाज्य करै तपस्याग्रहण करनेंको। पारनें को (गुरूके मुखसें) विधि करै। (समवसरण बैठा भगवंत०) इत्यादि इग्यारसको स्तवन पूर्वं लिख्यो है। सो पढै (वा) सुणें। पीछै उद्यापन में पेंतालीस आगमकी पूजा करै। यथासक्ति साहमी वछल करै ॥卐॥ इति विधि।

॥※॥ अथ मौन एकादशीको गुणनो लि० ॥※॥

॥※॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत २४ पञ्च कल्याणक नामः ॥※॥१॥

। प्रथम ।

४ । श्रीमहायश सर्वज्ञाय नमः ।
६ । श्रीसर्वानुभूति अर्हते नमः ।
६ । श्रीसर्वानुभूतिनाथाय नमः ।
६ । श्रीसर्वानुभूतिसर्वज्ञाय नमः ।
७ । श्री श्रीधरनाथाय नमः ।

॥※॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥२॥

२१ । श्रीनमि सर्वज्ञाय नमः ।
१६ । श्रीमल्लि अर्हते नमः ।
१६ । श्रीमल्लिनाथाय नमः ।
१६ । श्रीमल्लि सर्वज्ञाय नमः ।
१८ । श्रीअरिनाथाय नमः ।

॥※॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥३॥

४ । श्रीस्वयंप्रभु सर्वज्ञाय नमः ।
६ । श्रीदेवश्रुत अर्हते नमः ।
६ । श्रीदेवश्रुत नाथाय नमः ।
६ । श्रीदेवश्रुत सर्वज्ञाय नमः ।
७ । श्रीउदय नाथाय नमः ।

॥※॥ धातकीखंडे पूर्वभरते अतीत २४ जिन पंचकल्याणक नामः ॥※॥४॥

। द्वितीय ।

४ । श्रीअकलङ्क सर्वज्ञाय नमः ।
६ । श्रीसुभंकर अर्हते नमः ।
६ । श्रीसुभंकरनाथाय नमः ।
६ । श्रीसुभंकर सर्वज्ञाय नमः ।
७ । श्रीसप्तनाथाय नमः ।

॥※॥ धातकीखंडे पूर्वभरते वर्त्तमान २४ पंच कल्याणक नामः ॥※॥५॥

२१ । श्रीब्रह्मेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ।
१६ । श्रीगुणनाथ अर्हते नमः ।
१६ । श्रीगुणनाथ नाथाय नमः ।
१६ । श्रीगुणनाथ सर्वज्ञाय नमः ।
१८ । श्रीगांगिलनाथाय नमः ।

॥※॥ धातकी खंडे पूर्वभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥※॥६॥

४ । श्रीसांमति सर्वज्ञाय नमः ।
६ । श्रीमुनिनाथ अर्हते नमः ।
६ । श्रीमुनिनाथ नाथाय नमः ।
६ । श्रीमुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ।
७ । श्रीविशिष्ट नाथाय नमः ।

॥※॥ पुष्कराईपूर्वभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥७॥

। प्रथम ।

४ । श्रीवृहद्दु सर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीव्यक्त अर्हते नमः ।

६ । श्रीव्यक्त नाथाय नमः ।

६ । श्रीव्यक्त सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीकलाशत नाथाय नमः ।

॥※॥ पुष्कराई पूर्वभरते वर्त्तमान २४ जिनपंच कल्याणक० ॥※॥८॥

२१ । श्रीअरण्यवास सर्वज्ञायनमः ।

१८ । श्रीयोगनाथ अर्हते नमः ।

१८ । श्रीयोगनाथ नाथाय नमः ।

१८ । श्रीयोगनाथ सर्वज्ञाय नमः ।

१८ । श्रीअयोग नाथाय नमः ।

॥※॥ पुष्कराई पूर्वभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥※॥९॥

४ । श्रीपरमसर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीशुद्धार्त्ति अर्हते नमः ।

६ । श्रीशुद्धार्त्ति नाथाय नमः ।

६ । श्रीशुद्धार्त्ति सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीनिष्केश नाथाय नमः ।

॥※॥ धातकीखंडे पश्चिमभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥※॥१०॥

। द्वितीय ।

४ । श्रीसर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीहरिभद्र अर्हते नमः ।

६ । श्रीहरिभद्र नाथाय नमः ।

६ । श्रीहरिभद्र सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीमगधाधि नाथाय नमः ।

॥※॥ धातकीखंडे पश्चिमभरते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥११॥

२१ । श्रीप्रयच्छ सर्वज्ञाय नमः ।

१८ । श्रीअक्षोभ अर्हते नमः ।

१८ । श्रीअक्षोभ नाथाय नमः ।

१८ । श्रीअक्षोभ सर्वज्ञाय नमः ।

१८ । श्रीमलिसिंह नाथाय नमः ।

॥※॥ धातकीखंडे पश्चिमभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥१२॥

४ । श्रीआदिकरसर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीधनद अर्हते नमः ।

६ । श्रीधनद नाथाय नमः ।

६ । श्रीधनद सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीपौषनाथाय नमः ।

॥※॥ पुष्कराई पश्चिमभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥१३॥

। प्रथम ।

४ । श्रीप्रलंबसर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीचारित्रनिधि अर्हते नमः ।

६ । श्रीचारित्रनिधि नाथाय नमः ।

६ । श्रीचारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीप्रशमजित नाथाय नमः ।

॥※॥ पुष्कराई पश्चिमभरते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥१४॥

२१ । श्रीस्वामि सर्वज्ञाय नमः ।

१९ । श्रीविपरीत अर्हते नमः ।

१९ । श्रीविपरीत नाथाय नमः ।

१९ । श्रीविपरीत सर्वज्ञाय नमः ।

१८ । श्रीप्रसाद नाथाय नमः ।

॥※॥ पुष्कराई पश्चिमभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥१५॥

४ । श्रीअघटित सर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीभ्रमणेन्द्र अर्हते नमः ।

६ । श्रीभ्रमणेन्द्र नाथाय नमः ।

६ । श्रीभ्रमणेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीऋषभचन्द्र नाथाय नमः ।

॥※॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥ १६ ॥

। द्वितीय ।

४ । श्रीदयांतसर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीअभिनंदन अर्हते नमः ।

६ । श्रीअभिनन्दननाथाय नमः

६ । श्रीअभिनन्दनसर्वज्ञाय नमः

७ । श्रीरत्नेश नाथाय नमः ।

॥※॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ पंच कल्याणक नामः ॥※॥१७॥

२१ । श्रीश्यामकाष्ट सर्वज्ञाय नमः ।

१९ । श्रीमरुदेव अर्हते नमः ।

१९ । श्रीमरुदेवनाथाय नमः ।

१९ । श्रीमरुदेव सर्वज्ञाय नमः ।

१८ । श्रीअतिपार्श्व नाथाय नमः ।

॥※॥ जंबूद्वीपे ऐरवत क्षेत्रे अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥※॥१८॥

४ श्रीनन्दषेणसर्वज्ञाय नमः

६ । श्रीव्रतधर अर्हते नमः ।

६ । श्रीव्रतधरनाथाय नमः ।

६ । श्रीव्रतधरसर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीनिर्वाणनाथाय नमः

॥※॥ घातकीखंडे पूर्वएरवते अतीत २४ पञ्च कल्याणक नाम: ॥※॥१९॥

। प्रथम ।

४ । श्रीशोद्य सर्वज्ञाय नम: ।
६ । श्रीत्रिविक्रम अर्हते नम: ।
६ । श्रीत्रिविक्रम नाथाय नम: ।
६ । श्रीत्रिविक्रम सर्वज्ञाय नम: ।
७ । श्रीनारसिंह नाथाय नम: ।

॥※॥ पुष्कराद्धं पूर्वएरवते अतीत २४ जिन पंचकल्याणक नाम: ॥※॥२२॥

। द्वितीय ।

४ । श्रीअष्टाह्निक सर्वज्ञाय नम: ।
६ । श्रीवणिक् अर्हते नम: ।
६ । श्रीवणिक् नाथाय नम: ।
६ । श्रीवणिक् सर्वज्ञाय नम: ।
७ । श्रीउदयज्ञान नाथाय नम: ।

॥※॥ घातकीखंडे पूर्वएरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नाम: ॥※॥२०॥

२१ । श्रीखेमन्त सर्वज्ञाय नम: ।
१९ । श्रीसन्तोषित अर्हते नम: ।
१९ । श्रीसन्तोषित नाथाय नम: ।
१९ । श्रीसन्तोषित सर्वज्ञाय नम: ।
१८ । श्रीकाम नाथाय नम: ।

॥※॥ पुष्कराद्धं पूर्वएरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥२३॥

२१ । श्रीतमोकन्दन सर्वज्ञाय नम:
१९ । श्रीसायकाक्ष अर्हते नम: ।
१९ । श्रीसायकाक्ष नाथाय नम: ।
१९ । श्रीसायकाक्ष सर्वज्ञाय नम: ।
१८ । श्रीखेमन्त नाथाय नम: ।

॥※॥ घातकीखंडे पूर्वएरवते अनागत २४ जिनपंच कल्याणक० ॥※॥२१॥

४ । श्रीमुनिनाथ सर्वज्ञाय नम: ।
६ । श्रीचन्द्रदाह अर्हते नम: ।
६ । श्रीचन्द्रदाह नाथाय नम: ।
६ । श्रीचन्द्रदाह सर्वज्ञाय नम: ।
७ । श्रीदिलादित्य नाथाय नम: ।

॥※॥ पुष्कराद्धं पूर्वएरवते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नाम: ॥२४॥

४ । श्रीनिर्वाण सर्वज्ञाय नम: ।
६ । श्रीरविराज अर्हते नम: ।
६ । श्रीरविराज नाथाय नम: ।
६ । श्रीरविराज सर्वज्ञाय नम: ।
७ । श्रीप्रथमनाथ नाथाय नम: ।

॥※॥ धातकीखंडे पश्चिमएरवते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥२५॥

। प्रथम ।

४ । श्रीपुरूरव सर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीअवबोध अर्हते नमः ।

६ । श्रीअवबोध नाथाय नमः ।

६ । श्रीअवबोध सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीविक्रमेन्द्र नाथाय नमः ।

॥※॥ पुष्कराई पश्चिमएरवते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥※॥२८॥

। द्वितीय ।

४ । श्रीअखइन्द सर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीकुटिल अर्हते नमः ।

६ । श्रीकुटिल नाथाय नमः ।

६ । श्रीकुटिल सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीवर्द्धमान नाथाय नमः ।

॥※॥ धातकीखंडे पश्चिम एरवते वर्त्तमान २१ जिन पंच कल्याणक नामः ॥※॥२६॥

२१ । श्रीसुशान्त सर्वज्ञाय नमः ।

१९ । श्रीहर अर्हते नमः ।

१९ । श्रीहरनाथाय नमः ।

१९ । श्रीहर सर्वज्ञाय नमः ।

१८ । श्रीनन्दकेश नाथाय नमः ।

॥※॥ पुष्कराई पश्चिमएरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥२९॥

२१ । श्रीनन्दिक् वर्द्धमानाय नमः ।

१९ । श्रीधर्मचन्द्र अर्हते नमः ।

१९ । श्रीधर्मचन्द्र नाथाय नमः ।

१९ । श्रीधर्मचन्द्र सर्वज्ञाय नमः ।

१८ । श्रीविवेक नाथाय नमः ।

॥※॥ धातकीखंडे पश्चिम एरवते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥२७॥

४ । श्रीमहामृगेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीअसौचित अर्हते नमः ।

६ । श्रीअसौचित नाथाय नमः ।

६ । श्रीअसौचित सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीधर्मेन्द्र नाथाय नमः ।

॥※॥ पुष्कराई पश्चिम एरवते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥३०॥

४ । श्रीकलाप सर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीविसोम अर्हते नमः ।

६ । श्रीविसोम नाथाय नमः ।

६ । श्रीविसोम सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीआरण नाथाय नमः ।

इति श्रीमौनि एकादशी गुणनो संपूर्णम ।

॥※॥ अथ विधि ॥※॥ एकेक कल्याणक की एकेक माला गुणनें से देढसें माला होय (जो) भव्यजीव शुद्ध चित्तसें गुणेंगे (सो) अल्प भवमें अनन्त सुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशीर्ष मास पर्व्वाधिकारः ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ पोष मास मध्ये पर्व्वाधिकार लि० ॥※॥

॥※॥ पोष महिनेंमें मिती पोषवद १० (सो) पोष दसमी नामसें पर्व्व प्रसिद्ध है। इस दिन श्री पार्श्व नाथ स्वामीको जन्म कल्याणक है। इसीसें यह दिन श्री संघमें परम आनंदकारी है। इस दिन श्रीपार्श्व नाथ स्वामीका अधिकार सुणें। एकासणादिककी पच्च क्खाण करै। जहां श्रीपार्श्वनाथ स्वामीके नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय। उहां यात्रा करणें कों जावैं। कदास जात्रा करनें कों न जाय सकै (तो) जहां श्रीपार्श्वनाथ स्वामीको स्थापना होय। उहां महोत्सव संयुक्त दर्शण करनें कों जावै। जलजात्रादिक महोत्सव करके अष्टोत्तरी स्नात्र करावै (अथवा) पंचकल्याणक जी की (वा) सतर भेदी पूजा करावै। रात्री जागरण करावै। तोरण बांधै। गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरै कै उत्सव करै। और जन्म कल्याणकादिक ॥ पास जिनेसर जगति लोए० ॥ वाणी ब्रह्मा वादनी० ॥ इत्यादिक पार्श्वनाथ स्वामीके गुण गर्भित स्तवन पढै। (वा) सुणें। इसी तरै इस पर्व्वको सेवन करनेंसें। आधिव्याधि सोग संताप सब दूर होंगे। अनेक तरैसें ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे।

॥ॐ॥ अथ जन्म कल्याणकको स्तवन लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ श्रीचंद्रा प्रभु जिनवर साहबसुणियो० (इस चालमें)। पोस दसम दिन पारस प्रभुको। जन्म भयो सुखदाई। (मेंवारी जावुं०)। कासी देस बणारसी नगरी। अस्वसेन कुल आई। (में०) वांमाउर अवतार लियो है॥ सङ जीवन गुण दाई॥(में १)॥ एक सहस अट्ठोत्तर लच्छण। अनुपम रूप सुहाई। (में०) नील वरण छवि तीन ग्यान युत। पार्श्व प्रभू वरदाई।(मेंवा० ।२। पो०)। नरक जीव पिण च्छिण सुख पावत। दिस कुमरी मिलआई। (में०) सूतिका कर्म करी निजथांनक। गई सङ हरष भराई (मेंवा०।३।पो०) आसन कंपित सङ सुरवरना। देख ग्यांन भेद पाई। कोड़ा कोड़ देव देवांगना। मिल सङ आगल धाई। (मेंवा० पोस० ४॥ सुरपति सक्र पंच्च रूपे कर। मेरु सिखर ले जाई। (में०)। स्नानमहोच्छव अधिक आनंद सें। वसुविध पूजर चाई। (मेंवा० ।५। पो०)। बत्तीसबङ्ग नाटक प्रभु आगल त त्ताथेई तान सुणाई। (में०) सात तीन इकवीस भेद कर। मिष्ट बचन गुण गाई। (मेंवा० ।६। पो०)। इम उच्छवकर प्रभुकों लेई। मातापास बैठाई। (में०)। रत्नकुच्छि धार काहूं जगमें। तूंसङ सुर नर माई। (मेंवा० पोस०) ।७। ह रखधरी धनधान्य बहुविध। राजरिद्ध फैलाई। (में०) नंदी सर अट्ठाई महोच्छव। करि सङ थानक जाई। (मेंवा० ।८। पोस०)। अस्वसेन कुलक्रम आचारे। जन्मउच्छव अ धिकाई। ध्वजतोरण बाजिंत्र बहुविध। मंगलध्वनि वरताई। (मेंवा० पोस०)। ६। इम प्रभु जन्म कल्याणक दिवसें।

सङ्घसंघ हरख वधाई । (मे०) लच्छी प्रधान मोहन प्रभुसेवै अहिनिस ध्यान लगाई । (मे॰वा० पो०) । १० । इति श्री पोसदसमीको जन्म कल्याणक स्तवन संपूर्णम् ॥※॥

॥※॥ अथ श्रीगौड़ीपार्श्वजिन वृद्धस्तवनलि० ॥※॥

॥※॥ (दूहा) वाणी ब्रह्मावादनी । जागे जगविख्यात पासतणा गुणगावतां । मुझ मुख वस ज्यो मातं ॥१॥ नारं गैअणहलपुरै । अहमदा वादे पास । गौड़ीनो धणी जागतो । सङ्घनी पूरे आस ॥ २ ॥ सुभ वेला सुभदिन घड़ी मङ्गरत एकमंड़ाण । प्रतिमा ते इह पासनी । थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥※॥ (ढाल) ॥※॥ गुणहि विसाला मंगलीक माला । वामानो सुत साचोजी । धण कणकंचण मणि माणकदे । गौड़ीनो धणी जाचोजी ॥४॥ (गु०) अणहलपुर पाटण मांहे प्रतिमा । तुरक तणें घर ऊंतीजी । अशुचनी भूमि अशुचनी पौढ़ा । अशुचनी वालि विगूती जी ॥५॥ (गु०) जागं तो जच्च जेहनें कहियै । सुहणो तुरकनै आपैजी । पासजिने सर केरी प्रतिमा । सेवक तुझ संतापै जी ॥६॥ (गु०) मह जठीनें परगट कर जे । मेघा गोठीनें देजे जी । अधिको म लेजे ओछो मलेजे । टका पांचसै लेजेजी ॥७॥ (गु०) नहिं आपिस तो मारोस मुरड़ीस । मोर बंध बंधास्येजी । पुत कलत्र धन हय हाथी तुझ । लाठ घणी घर जास्यै जी ॥८॥ (गु०) मारग पहिलो तुझनें मिलस्यै । साहथवाह जेगोठीजी । निलवट टीलो चोखा चेका । वस्तु वहै त सुपोठी जी । ॥९॥ (गु०) ॥※॥ (दूहा) ॥※॥ मनसु मोहनो

तुरकडो। मांनें वचन प्रमाण। बीबीनेंसुहणा तणो। संभला वैसहिनाण॥१०॥ बीबी बोलै तुरकनें। बड़ा देव है कोइ अनसताव परगटकरो। नही तरमारै सोय ॥११॥ पाठ वीरात परोडोयै। पहलो बंधै पाज। सुहणा माहेंसेठनें संभलावै जच्च राज॥१२॥✲॥ (ढाल)॥✲॥ एम कहो यच्च आयो राते। सारथ वाहनें सुहणें जी। पासतणी प्रतिमा तुं लेजे। लेतो सिरमत धुणे जी ॥१३॥ (एम०) पांचसैटका तेहनें आपे। अधिको मा आपिस वाहजी॥ जतन करी पुह चाड्डे थानकि। प्रतिमा गुण संभारै जी ॥१४॥ (एम०) तुझ नें होसी वड्ड फलदायक। भाइ गोठीनें सुणजे जी। पुजीस प्रणमीस तेहनापाया। प्रहउठीनें थुणजे जी ॥१५॥ ।(ए०)। सुहणो देईनें सुरचाल्यो। अपनें थानक पहुतो जी। पाटण मांहिं सारथवाह। छोडै तुरकनें जोतोजी ॥ १६ ॥ (ए०)॥ तुरके जातां दीठो गोठी। चोखा तिलक खिलाडे जी। संकेत पहुतो साचोजाणी। बोलावै वड्डलाडे जी ॥१७॥ (ए०) मुझ घरि प्रतिमा तुझनें आपुं। पास जिणेसर केरीजी। पांचसै टका जो मुझ आपै। मोलन मागुं फेरीजी ॥१८॥ (ए०) नाणो देई प्रतिमालेई। थानक पहुतो रंगेजी। केसरचंदन म्रगमद घोली। विधसुं पूजा रंगे जी ॥१९॥ (ए०) गादी रूड़ी रूनी कीधी। ते मांहि प्रतिमा राखे जी। अनुक्रम आव्यापरिकरमांहें। श्रीसंघनें सुरसाखे जी ॥२०॥ (ए०) उछव दिन२ अधिकाथाये। सत्तर भेद सनातो जी। ठाम२ ना दरसण करवा। आवै लोक प्रभाती जी ॥२१॥ (ए०)॥✲॥ (दुहा)॥ इकदिन देखै अवध

सु। परिकर पुरनो भंग। जतनकरुं प्रतिमा तणो। तीरथ अछे अभंग ॥२२॥ सुहणो आपै सेठने। थल अटवी उज्जाड। महिमा थास्ये अति घणी। प्रतिमा तिहां पुहचाड ॥२३॥ कुसल खेम तिहां अछे। तुझनें सुझनें जाणि। संका छोडी काम करि। करतो मकरि संकाणि ॥ २४ ॥॥ (ढाल) ॥॥ पास मनोरथ पूराकरै। वाहण एक इषभ जो तरै। परिकरथी परियाणो करै। इक थलचढ बीजो ऊतरै ॥२५॥ बारे कोस आव्या जेतलै। प्रतिमा नविचालै ते तलै। गोठी मनह विमासण थई। पास भुवन मंडावूं सही ॥२६॥ आ अटवी किमकरुं प्रयाण। कुटको कोइनदीसै पाहाण। देवल पास जिनेसर तणो। मंडावुं किम गरथै विणो ॥ २७ ॥ जलविन ओसंघरहस्यै किहां। सिलावटो किम आवै इहां। चिंतातुर थयो निद्रालहै। यक्षराज आवीनें कहै॥२८॥ गुंहली ऊपर नांणो जिहां। गरथघणो जाणो जे तिहां। स्वस्तिक सोपारीनें ठाणि। पाहण तणी उल्लटस्यै खाणि ॥२९॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ। अमृत जलनोसरसो कूओ। खाराकूआ तणो इह सैनांण भूम पड्यो छै नीलो छाण ॥३०॥ सिलावटो सीरोही वसै। कोढपराभवियो किसमिसै। तिहां थकी तूं इहां आण जे। सत्यवचन माहरो मान जे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मनथिर थापियो। सिलावटनें सुहणो दियो। रोगगमीनें पूरुं आस। पास तणो मंडै आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहे मान्यो तेवैण। हेम वरण देखाडो नैण। गोठी मनह मनोरथ हुवा। सिलावटैने गया तेडवा ॥३३॥ सिला वटो आवै

सरसो। जीमें खीरखांड घृत चूरमो। धर्मै घाट करै को रणो। लगन भले पाया रोपणो ॥३४॥ थंभ२ कीधी पूतली। नाटक कौतिक करती रली। रंग मंडप रलियामणो रसै। जोतां मानवनो मन वसै ॥३५॥ नीपायो पूरो प्रासाद। स्वर्गसमो मंडे आवास। दिवस विचारी ईं डोघड्यो। तत खिण देवल ऊपर चड्यो ॥३६॥ शुभ लगन शुभ वेलावास पद्मासण बैठा श्रीपास। महिमा मोटौ मेरुसमान। एकल मिलवगढ रहै वान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभली। तवन मांहि सूधी सांकली। गोठी तणा गोतरीया अछै याद करीनें घरनें पछै ॥३८॥ (दूहा) ॥ विघन विडारण यत्त जगि। तेहनो अकल सरूप। प्रीत करै श्रीसंघनें। देखाडै निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरुओ गौडी पासजिन। आपै अरथभंडार। सानिध करै श्रीसंघनें। आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणै नीलहय। नीलो थइ असवार। मारग चूकामानवी। वाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥(ढाल) ॥ वरण अढार तणो लहै भोग। विघन निवारै टालै रोग। पवित्र थई समरै जे जाप। टालै सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधननइ घरि धन नो सूत। आपै अपुत्रीयानें पुत्र। कायरनें सूरापण धरै। पार उतारै लक्ष्मी वरै ॥ ४३ ॥ दोभागीनें दे सोभाग। पग विहूणानें आपै पग ठामनहीं तेहनें द्यै ठाम। मन वंछित पूरै अभिराम। ॥ ४४ ॥ निरधाय्या नें द्यै आधार। भवसायर उतारै पार। आरतीयानी आरत भंग। धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥४५॥ समर्थ्यां साद दीयै यत्त राज। तेहना मोटा

अठै दिवान । बुद्धि हीणानें बुद्धि प्रकास । गूंगानें द्यै वचन विलास॥४६॥ दुखियांने सुखनो दातार। भय भंजण रंजण अवतार। बंधन तूटै बेडी तणा। श्रीपार्श्वनाम अक्षर समरणा ॥४७॥ (दूहा) श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपैं । विश्वानर विकराल। हस्त यूथ दूरेटलै। दुद्धरसींह सियाल ॥४८॥ चोर तणा भयचकवै । विष अमृत उडकार। विषधरनो विष ऊतरै। संग्रामें जयजयकार ॥४९॥ रोग सोग दालिद्र दुख। दोहग दूर पुलाय। परमेसर श्री पासनो। महिमा मन्त्र जपाय॥५०॥ ॥※॥ (कडखानीचाल) २ ॥※॥ उं जितु उं जितु उं ज उपसम धरी। ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीपार्श्वअक्षर जपंते ॥ भतनें प्रेत झोटिंग व्यंतरसुरा उपसमै। वार इकवीस गुणंते ॥५१॥ (उं०) दुद्धरा रोग सोगा जरा जंतनें। ताव एकांतरा दुत्तप तें। गर्भबंधन बणं सर्पविछू विषं। चालिका बालसेवा ऊखंते ॥५२॥ (उं०) साइणी डाइणी रोहणी रंकणी। फोटका मोटका दोष ऊंतें। दाढ उंदरतणी कोल नोला तणी। स्वान सीयाल विकरालदंतें ॥५३॥ (उं०) धरणेंद्र पद्मावती समरसोभावती। वाट आघाट अटवी अटंते। लखमी लीडु मिलै सुजस वेलावलै। सयल आसा फलै मन हसंतें ॥५४॥ (उं०) अष्टमहाभय हरै कान पीडा टलै। ऊतरै सूल सीसगभणंतै। वदत वरप्रीतसुं प्रीति विमला प्रभू। श्रीपास जिण नाम अभिराम मंते ॥ ५५ ॥ उं जितु) ॥ ※ ॥ इति श्रीगोडी पार्श्वनाथ जी वृद्ध स्तवन समाप्तम् ॥※॥ इति पोषमास पर्वाधिकारः ॥※॥

॥ अथ माघ मास मध्ये पर्व्वाधिकार लि० ॥

॥ माघ महिनेंमें मिती माघ वदि १३ (सो) मेरु तेरस नाम सें पर्व्व प्रसिद्ध है। (इस दिन) श्रीऋषभदेव स्वामीको निर्व्वाण कल्याणक है। (इसीसें) भगवंत माहाराज इसदिन कों उत्तम कहा। (इस दिन) चौविहार उपवास करै। रत्नामई पांच मेरु भगवानके आगे चढावै। बीचमें १ बड़ो मेरु। च्यारुं दिस छोटामेरु। एसें पांचमेरु चढावै। ऐसी सक्ति नहोय (तो) सोनेंके। चांदीके (वा) घृतके। मेरु करके चढावै। आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंद्यावर्त्त करै। अष्टप्रकारी। सतर भेदी। पूजा पढायकै। अष्ट द्रव्यसें पूजाकरै ॥ पीछे। १। श्रीऋषभदेवस्वामी पारंगताय नमः) ॥ इसी पदको दो हज्जार गुणनो करै। और जो कोई तेरसके दिन पोसह करै (तो) पूजादिक सब बिधि पारणेंके दिन करै। अतिथि संविभाग करके पारणो करै। इसी विध संयुक्त १३ तेरै बरस (अथवा) १३ तेरै मास तपस्या करै। पीछे शक्ति माफक बहुत उच्छव सें उद्यापन करै। तीर्थां की जात्रा करै। साहमी वच्छल करै ॥ इहां दृष्टांत कहतेहैं ॥ (जैसें) अयोध्या नगरीमें। अनन्तवीर्य राजा के पुत्र। पिंगल राय कुमर। गांगिल सुनीके पास। इस पर्व्वका अधिकार सुणके। तपस्या करी। तपस्याके करनेंसें। सब रोग दूर हुये। तपस्या पूर्ण होनेंसें। तेरै १३ मंदर बनवाया १३। रत्न मई। सुवर्ण मई। रूपेमई। प्रतिमा स्थापन करी॥ १३ वेर संघ सहत तीर्थां की जात्रा करी। तेरै वेर साहमी वच्छल

किया। बज़ुत प्रकारसें ज्ञान भक्ति करी। अंतमें महसेन कुमरकों राज्य देके। श्रीसुव्रताचार्य समीपे दिक्षाग्रहण करी। अनुक्रमें चवदे पूर्वकों पढके। सब कर्मकों क्षय करके। अनन्त सुखकों प्राप्त ज़ुवा। इसी का विस्तार संबन्ध। मेरु तेरसका बखाण सुणनें सें मालुम होगा। जो भव्य जीव इस पर्व्व कों बिधि संयुक्त सेवन करेंगे। (सो) इस भवमें परभवमें अनेक सुखकों प्राप्त होंगे ॥※॥ इति माघ मास पर्व्वाधिकारः ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ फाल्गुन मास मध्ये पर्व्वाधिकार लि० ॥※॥

॥※॥ फाल्गुन महिनेंमें मिती फाल्गुन सुद १४ (सो) तीसरे चौमासे की चौदस नामसें पर्व्व प्रसिद्ध है। इस दिन को सब कर्त्तव्य) आसाढ चौमासे तुल्य करे। सो पूर्वे लिख्यो है ॥ ※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ इहां बिशेषहोली को अधिकार लिखतेहैं ॥※॥ श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी बारे मासमें ६ ठ मोट का पर्व्व कहा। ३ तीन चौमासा। २ दो ठली। १ पर्युषणा एवं ६। (जिसमें) २ ठली। १ पर्युषणा। यह ३ पर्व्व के अट्ठाई महोछवतो सब ठिकाणें भव्य जीव करतेहैं। अर कार्त्तिक चौमासेके उछव प्रायें बज़ुत ठिकाणें होता है। पर कलकत्ते जैसा महोछव कोई ठिकाणें देखा नहीं। और फाल्गुन चौमासेके उछव मुर्शिदाबादमें अछा होता है। पर कोई महोछव में आज्ञाविरुद्ध जो काम होय (सो) अशंसनीक नहीं। एकतो भगवंतके समोसरणके साथ।

आज कालके। केई अमीर लोक। धूपके म्हरसें। खेहके म्हरसें। आपतो जाते नहीं (निकेवल) दो च्यार असमझ पुरुषोनें भेज देतेहें। पीछे वेपुरुष मदोन्मत्त हुए थके। कूदतां नाचतां भागतां। समवसरणकों उछाला देते ले जाते हें। उसमें जितनी आसातना होतीहै। जितनी कर्मबंधता हे। उसका भागी हम नहीं॥ भगवंत को धर्म विनय मूल १। दया मूल २। चारित्र मूल ३ है। (इस सें) धन्य है। जिसके माता पिता (सो) विनय विवेकसंयुक्त शुद्ध भावसें। सब धर्मकार्य करके धर्मको उद्योत करै है। उसी पुरुषोकों नमस्कार है। उसी महोत्सवकी प्रशंसना है। (इसीसें) आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष है (सोतो) शेषका चौमासा पर्व जानके। सब ठिकाणें। भगवंतके धर्मको उद्योत करते थके। शुभ ध्यानरूप अग्नीसें(अष्टकर्म रूपी काष्ट कों जलाके होली करते हें। पीछे सुवोध जलसें स्नान करके अत्यन्त सुन्दरता कों प्राप्त होते हें॥ अब द्रव्यै भावे दो प्रकारसें होलीके अधिकार कहणें के इछाये (प्रथम) द्रव्य होलीके अधिकार लिखते हें॥ ※॥

॥※॥ इस फालगुण मासमें चौदस पूर्णमासी के दिन जो अज्ञानी जीव विवेकसें विकल हुए थके। नींच जातके परंपराकों प्राप्त हुए थके। श्री जिनधर्मसें विकल हुए थके। लकड़ छाणादिक जलायके अग्निमई द्रव्य होलिका करै है। महा उत्तम चौमासै पर्व्वका विराधन करै है। (दूसरै दिन) मलमुत्रादिकसें क्रीड़ा करै है। खोटा वचन बोलै है। रासभ माथे चढै है। अनेक जीवांकों दुख

उत्पादन करै है। ऐसे जीव शुद्ध वीतराग देवकी आग्या छोड़के। भांड़ भरड़ा के कुल परंपरा कों प्राप्त होते है मिष्टान्न भोजनका खाणा छोड़के। विष्टाको भोजन करते हें। दूध का पीणा छोड़के। जानते थके पिसाब पीते हें। (ऐसे पुरुष) निकेवल कर्म्मोंके बंध सघन करके। नीच गतिकों उपार्जन करते हें। अनर्थदंड़सें अनन्त भव संसारको स्थिति बांधते हें। (इस वास्ते) आत्मार्थी भव्यजीवां कों। इस माफक। द्रव्य होली करनी उचित नहिं। (निकेवल) भाव होली करनी उचित है॥ वसंतके स्तवन बोलै। रात्री जागर्ण करावै। भगवान के मंदरमें पूजा करावै। महोत्सव निकालै। नाना प्रकारके नाटक करै। साहमी वत्सल करै। साधर्मी भाई आपसमें नाना प्रकारकी क्रीड़ा करै। (आगै) राजा लोकवी वसंत ऋतु आनें सें सज्जन संबंधी साथ। नाना प्रकारके। जल। चंदन। केसर। अबीर। गुलाल। इत्यादिकसें क्रीड़ाकरी (सोतो) फेरवी शास्त्रोंमें देखते हें। पर यह मलमुत्रादिकसें खेलना। होली जलानी। पादत्राण खाणा। भंड़ चेष्टा करनी। अपनें धर्मकी मर्यादा। अपनें कुलकी मर्यादा। सब छोड़के। भांड़ भरड़ाके गोदी बैठना। भांड़ भरड़ाके कुलकी मर्यादा करनी। ऐसी क्रीड़ा उत्तम पुरुषोंके (अर) जिनधर्म वाले भव्य जीवों के। कोई ठिकाणें करनी कही नहीं। यह क्रीड़ा निकेवल महामिथ्यात्वी नीच पुरषोंने चलाई हो। उसी पुरुषोंके देखादेख प्राये अज्ञानी जीव सबकोई करनेंकों लग गए। (देखो बड़ा आश्चर्य है)। अब मंदरजीमें

पूजादिक महोत्सवका काम होता है। उस बखत बहुतकों फुरसत न होती है। (और जो कोइ आते है)। उणोंकों स्यालिया होनेंमें। अगाडी नाटक करनें में। बडी लज्जा मालुम होती है। (अर होलीके दिन) माता पिता भाइ बेन सबकी लज्जा छोडके। बहुत दिल में खुसी होके पागलके माफक। उपानत खाते फिरते है। मन आवे ज्युं बोलतेहें। कोइ बेश्यादिक का नाटक करायकें हज्जारु बगसीस कर देते हें। मनमें जानें हमनें बडा नांव किया पर अहो भाइयो। इसमें तुमारा कुछ नाम नहीं है। निकेवल महा असुभ कर्म पैदा होते है। तुमारा कल्याण नहि होगा। ऐंसी उमंगसें सब की लज्जा छोड के। भगवान का उछव करो। रात्री जागर्ण करो। नाटक करो। धर्मका उद्योत करो। (इसी तरे) होली खेलो (सो) तुमारा इह भवबी सुधरेंगे। परभवबी सुधरेंगे। यह द्रव्यै भावै दोनुं होलीका यथावस्थित स्वरूप लिखा है। इसमें आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरष तो देख करकै प्रसन्न होंगे। यह खोटे मारग कों बंध करनें की प्ररूपणा रखेंगे। (अर जो) महामूर्ख अज्ञानी जीव होंगे (सो) अपनें खेलनेंके वास्ते। सची बातकोंबी कुयुक्ति लगायके झूठ ठहरावेंगे। महारोस धारण करेंगे। (जैसें) कोइके पिताकों गाली देनेंसें रोस उत्पन्न होय (इसी तरै) यह भंड चेष्टा की निंदना देखकै महारोस धारण करेंगे। (अर जो) मध्यस्थ जीव होंगे (सो) ऐसा बोलेंगे। यह बात सच है। किसका पर्व है। किसका खेलना है। निकेवल

इसमें अनर्थ दंड लगता है। पर हम इकेला क्या करें। सब भाइ बंध कों खेलते देखके। हमसें रहा जाता नही। इससें खेलते हैं। (पर) यह प्रथा बंध होयतो अच्छी है। (इसो सें, अहो देवानुप्रियो। सब ठिकाणें यह नीच खेल कों छोडके। उत्तम खेल खेलनेंकी प्रवर्त्तना करो। जिस सें तुमारा तप तेज सदा बढता रहै। सदा आनन्द रहै। यह बारे मास के सब कर्त्तव्य। हमनें हमारी बुद्धिसें न लिखा है। 'किंतु' प्राचीन आचार्योंके व्याख्यान की पद्धति देखके। सब बालजन के उपगारकों शुद्ध भाषामें प्रगट किये हैं (इसमें) आगम विरुद्ध जो अर्थ को कहनेंमें आयो होय (तो) त्रिकरण सुद्धै मिछामि दुक्कड देते हैं। और नीच कर्मके बंध छोडानेंकों। कठोर वचनवी बोला है (सो) वाचके। गुणकों ग्रहण करना। पर रोस धारण न करना। हमारै तो शुद्ध नवकार मन्त्र गुणनें वाले है (सो सब) परम मित्र है। सबके तप तेज बढते देखके हमारा चित्तमें परम आनंद होता है। और सब जीवा जोनिसें बेर बेर खमाते हैं ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ खमिय खमाविय में खमिय। सव्वह जीव निका य। सिद्धह साख आलोयण। मज्झह बैर नभाय। सव्वे जी वा कम्मवस्स। चवदह राज भमंत। तेमें सव्व खमाविआ। मज्झवितेह खमंतु ॥※॥ इति फाल्गुनमास पर्व्वाधिकारः ॥

॥※॥ अथ होली खेलनके विचार स्तवन लि० ॥※॥

॥※॥ (रागधमाल) ॥※॥ होरी खेलिये नरबकुरन

ए सोदाव। (हो०) दयामिठाई अति भलीरे। तपमेवा पर धांन। सील अथाणो अति भलो (वारि)। संयम नागर पांन। (हो०) ॥१॥ लेस्या मादल भाव डफरे। क्रोध मान दोय ताल। पांच सुमतको अरगजो (वारी)। नवतत्व लेऊ गुलाल। (हो०) ॥ २ ॥ सुमता केसर घोलीयेरे। दलवाको छिरकाव। ध्यांन पिचरको पकरकै (वारी)। सुगत वधू चिंत लाय। (हो०) ॥३॥ ऐसा साज वनायकेरे। ऋषभदेव गुण गाय। श्रीजिनचंद इम खेलतां। (वारी)। भवभव पातिक जाय। (हो०) ॥४॥ इति पदम् ॥※॥१॥ ॥※॥

॥※॥ (राग वसंत होरी तालयत्) ॥※॥

॥※॥ जय बोलोरे पासजिनेसरकी। (ज०)। मस्तक मुगटसोहे मनमोहन। अंगीयां सोहै केसरकी। (जै०) ॥ १ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखंडित तनकी। स्याम घटा जैसी जलधरकी। (जै०) ॥ २ ॥ वालपणेमें अद्भुत ख्यालसुं। करुणा कीधी विषधरकी। (जै०) ॥ ३ ॥ कमठ उड़ाय वायज्युं वादल। जीतकरी अपनें घरकी। (जै०) ॥४॥ मात वामा उयरे जिनजायो। राणी अश्वसेन नरेसरकी (जै०) ॥५॥ आठ करम दल सवल खपाए। श्रेणि चढ़ग जे शिवपुरको। (जै०) ॥६॥ कहै जिनचंद मेरे प्रभु पारस। जैसी छाया सुर तरुकी (जै०) ॥७॥ इति पदं ॥※॥२॥

॥※॥ (पुनः वसन्त। होरी) ॥※॥

॥※॥ मधुवनमें जाय मची होरी। (म०)। ध्यान गुलाल अबीर उड़ावो। सुमता केसर रंगघोली। (म०) ॥ १ ॥ अक्षत रूप धरम जिनवरको। सुद्धक्षमा कहे वार

जोग्री । (म०) ॥ २ ॥ इति पदं ॥३॥ ॥❋॥ ॥❋॥

॥❋॥ (पुनः वसन्त होरी) ॥❋॥

॥❋॥ यादव मनमेरो हरलीयो रे । (या०) । संजम दूती कान लगी जब । सिवनारी पर चितदीयो रे । (या०) ॥ १ ॥ तोरणथी रथ फेर चलेहो । नवभव नेह अलग कीयो रे (या०) ॥२॥ मोह छोड़ गिरनार सिधाए । नेमि जिणंदनें कहा कीयोरे । (या०) ॥ ३ ॥ तुमहो तीन भुवनके साहिब । सुरनर कहै तुमे चिरंजीयोरे । (या०) ॥४॥ वार वार मेरी वंदना कुयज्यो । चंद कहै मनहरखीयो रे। (या०) ॥५॥ इति पदं ॥❋॥४॥ ॥❋॥ ॥❋॥

॥❋॥ (पुनः वसन्त होरी) ॥❋॥

॥❋॥ इक सुणले नाथ अरज मेरी (इ०) ॥ १ ॥ इह संसार गहरतर सिंधु । भमर पड़त जिहां भवफेरी (इ०) ॥ २ ॥ क्रोधादिक बड़ मगर मछ है । ग्रहतु जंत नकारत देरी । (इ०) ॥ ३ ॥ ऐसे जलधर पारकरो तो । तारण तरण विरुदतेरी । (इ०)॥४॥ परम जिनेसर जगपरमेसर । दूरकरौ दुखकी बेरी । (इ०) ॥५॥ परम क्षमागुण दायक लायक । अनुपम कीरति जगतेरी । (इ०) ॥६॥ इति पदं ॥

॥❋॥ (पुनः होरी) ॥❋॥

॥❋॥ सांवरो सुखदाई जाकी छवि वरणि न जाई । (आंकणी) । श्रीअश्वसेन वामानन्दन की । कीरति त्रिभुवन छाई । समेत सिखर गिर मण्डन प्रभु को । देख दरस हरखाई । हृदय मेरो अति हुलसाई (सांव०) ॥१॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो । आज आनन्द वधाई । तीन भुवन को

नायक निरख्यो। प्रगटी पूर्व पुण्याई। सफल मेरो जनम कहाई (सांव०) ॥२॥ प्रभुके सरस दरस विन पाये। भव भव भटक्योमें माई। अब तेरो चरण शरण चित चाहत। वाल कहै गुण गाई। प्रभुजी से लगन लगाई (सां०) ॥३॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (पुनः रागिणी वसन्त) ॥ ॥

॥ ॥ नेंना हरखाइ। आज तेरी मूरत निरखी (ने०) सब भव सञ्चित पाप करम सब। देखत दूर पुलाई। सुमति वधारण कुमति विडारण। ज्ञान विमल उलसाइ (आज०) ॥ १ ॥ वामानन्दन अतिछवि सुन्दर। महिमा वरणी नजाई। दीन दयाल दया कर दीजै। आनन्दहरख सवाइ (आ०) ॥२॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (पुनः होरी) ॥ ॥

॥ ॥ मनमोहन गजगतकी गामनी। आज चली गिरनार कामिनी ॥ (म०) (आंकणी) ॥ सुन्दर रूप वनाय सखी सब। सिखरसेल जैसें चमके दामनी (म०) ॥१॥ नेम प्रभुको व्याह मनायो। मोसें प्रीत लगाइ भामनी ॥ (म०) तोरण आय चले मोह छोडी। कौन चक मोपे काढी भामनी ॥ (म०) ॥२॥ मैंन तजूंगी नव भव केरी। प्रीत बनी जैसी इंदु दामनी (म०) ॥३॥ राजुल पहली प्रीतम सेती। वाल कहै भइ सुगत सामनी (मन०) ॥४॥ इति पदम् ॥ ॥

॥ ॥ (पुनः होरी) ॥ ॥

॥ ॥ रङ्ग लग्यो गुरु ज्ञान। होरी चेतन खेलै। शील सुरङ्गी चीर रङ्गायें। पहिरै आप सुजान (हो०) ॥

पर मन्दिर तज अविचल लीजै। धर्म दया धर ध्यान॥ (हो०)॥ हिल मिल आप परमरस चाखे। सुमत सखी पहिचान (हो०) ज्ञान गुलाल लाल रङ्ग लागे। सोभै अद्भुत वान (हो०) कुमत अबीर उड़ाय जगतसें। बैठे शिव पुर थान (हो०) अनुभव राग मगन गुण गावै। तप जप सुन्दर तान (हो०) ऐसा खेल भविक जन धारै। वंछित पावै दान (हो०) इति पदम्॥॥ ॥॥

॥॥ (पुनः होरी ताल यत्)॥॥

॥॥ चिदानन्द खेलै फाग। हो हो होरी आई। जल मृदङ्ग बजे तन मांहि। गावत आगम राग (हो०)॥ ज्ञान गुलाल सदा रङ्ग लागे। खेलत सुमत सुहाग (हो०) समकित केसर नीर रङ्गाउं। पहिरो मन वेराग (हो०)॥ लख चौरासी रासत छांडो। च्यारूं गत सें भाग (हो०)॥ अविचल सुख पञ्चम गत पावै। योग यतन कर जाग॥ (हो०) ऐसा खेल भविक जन धारै। पावै भव दधि पार (हो०)। चेतनता सुध होय जगत में। समकित के रङ्ग लाग (हो०)॥॥ इति पदम्॥॥ ॥॥

॥॥ (पुनः होरी)॥॥

॥॥ होरी आई मेरो मन भयो प्रसन प्रसन भयो प्रसन न न न हे (हो०; ब्रज वनिता मिल नेम कुमर सङ्ग। फाग रमत हिये हसन हसन हसनन ननहे (हो०)॥ १॥ बाजे तेताल मृदङ्ग झांझ डफ। वीणा की धुनि जिम मेघ गरजन गरजन गरजन न ननहे (हो०)॥२॥ उड़त गुलाल लाल भए बादल। हरि हलधर हीयैं हरखन हरखन हर

खन न नन्हे (हो०) ॥ ३ ॥ सबल आधार चरण जिनजीको सेवक कों नित दीजीये दरशन दरशन दरशन न न नन्हे (हो०) ॥४॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (पुनः होरी) ॥※॥

॥ ※ ॥ होरी खेलो नेमसिं धाय धाय । दुरजन को लाज मेरो करे रे बलाय (हो०) ॥ ज्ञान गुलाल अबीर उड़ावो । क्षमा करो रङ्ग लाय लाय (दु०हो०) ॥१॥ शील संजम व्रत पान मिठाई । ध्यान धरुङ्गी में गाय गाय (दु०हो०) ॥ २ ॥ अष्ट कर्म की खेह उड़ावो । ज्ञान हियेमें लाय लाय (दु०हो०) ॥३॥ जगत चन्द की अरज बीनती । शरण गहीमें तेरी भाय२ (दु०हो०) ॥४॥ इति पदम् ॥※॥

॥※॥ (पुनः होरी) ॥※॥

॥※॥ मेरे घटको गगरिया रङ्गसें भरी । सिव पुरकी वात पूछुं कबकी खरी । (मे०) परम जोत प्रभु सिद्धसिला पर । परमातम निज ध्यान धरी । (सि०) ॥१॥ मोहन रङ्ग भरो रङ्ग सिवपुर अजर अमर पद सुक्खकरी (सि०) ॥२॥ ॥※॥ इति पदम् । ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (पुनः होरी) ॥※॥

॥※॥ मेंनें देखी अनोखी होरी रे (में०) सहसा वनकी कुंजगलिनमें । अनुपम सोर मच्यो री (अ०) ॥१॥ यादवपति श्रीनेमकुमरजी । सुमतासखी मिल गोरी (अ०) ॥२॥ सुमता केसर भर पिचकारी । डारत है बर जोरी ॥ (अ०) ॥३॥ ज्ञानगुलाल उड़े अतिभारी । अबीर उड़े भर झोरी (अ०) ॥४॥ कपूर कहै प्रभु मोकुं खेलावो । अरज

सुणो इक मोरी (अ०) ॥५॥ इति पदम् ।

॥※॥ मङ्गल ॥※॥

॥※॥मङ्गल राजै गिरनार । नेम पद मङ्गल है (देवा०) मङ्गल राजिमती पद पङ्कल । मङ्गल रह नेमि राय (ने०) मङ्गल गणपति मङ्गल पाठक । सब तपसी विचसार (ने०) मङ्गल धन धन्ना मुनि नायक । मङ्गल सब अन गार (ने०) जय जय खेम कुशल गुरु जंपै । आनन्द घन अवतार (ने०) । इति पदम् ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ मंगल कलश ॥※॥

॥※॥ इम मास द्वादश मध्य जे सङ्घ पर्व्व सेवन कार नें । सङ्घ बालजन उपगार कारन शुद्ध भाषा सारनें ॥ संवत् रसानलनंदवसुधा भाद्र शित एकादशी । गुरु गच्छ खरतर किलकिला पुर मोहन भाषा उपदिशी ॥ १ ॥ ※ ॥ इति द्वादशमास पर्व्वाधिकारः ॥※॥ १२ ॥ सं १९३६ ।

॥※॥ अथ द्वादश मास मध्ये प्रसिद्ध पर्व्वाधिकार कथनानंतरं । सांप्रति मखिलजिन पंचकल्याणक स्वरूप मुच्यते ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ जिस मासमें जितने दिन भगवंतके कल्याणक केहै । सो सब भव्यजीवों के सेवन करनें योग्य है । पर कौण तिथकों क्या कल्याण कहै । सो जाण्या विना से वन कर सकते नहीं । (और विशेष में) पंच कल्याणक तपस्या करनें वाले भव्यजीवोंके अवश्य पंच कल्याणक टीप गुणनें विना काम चलता नहीं । इसीसें गुणनो करनें

माफक विधि प्रमाणसें पंच कल्याणक टौप लिखते हैं ॥

॥ अथ पंच कल्याणक टौपलि० ॥

(कार्त्तिक कृष्णपक्षे) ॥५॥

५ । श्रीसंभवनाथजी सर्वज्ञाय नमः ।
१२ । श्रीपद्मप्रभजी अर्हते नमः ।
१२ । श्रीनेमिनाथजी परमेष्टि० ।
१३ । श्रीपद्मप्रभजी नाथाय० ।
३० । श्रीवर्द्धमानजी पारंगताय० ।

(मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे) ॥४॥

५ । श्रीसुविधिनाथजी अर्हते० ।
६ । श्रीसुविधिनाथजी नाथाय० ।
१० । श्रीवर्द्धमानजी नाथाय नमः ।
११ । श्रीपद्मप्रभजी पारंगताय० ।

(पोष कृष्णपक्षे) ॥५॥

१० । श्रीपार्श्वनाथजी अर्हते० ।
११ । श्रीपार्श्वनाथजी नाथाय० ।
१२ । श्रीचंद्रप्रभजी अर्हते नमः ।
१३ । श्रीचन्द्रप्रभजी नाथाय० ।
१४ । श्रीशीतलनाथजी सर्वज्ञा० ।

(माघ कृष्णपक्षे) ॥५॥

६ । श्रीपद्मप्रभूजी परमेष्टिने० ।
१२ । श्रीशीतलनाथजी अर्हं० ।
१२ । श्रीशीतलनाथजी नाथाय० ।
१३ । श्रीऋषभदेवजी पारंगता० ।
३० । श्रीश्रेयांसजी सर्वज्ञाय नमः ।

(कार्त्तिक शुक्लपक्षे) ॥२॥

३ । श्रीसुविधिनाथजी सर्वज्ञाय० ।
१२ । श्रीअरनाथजी सर्वज्ञाय० ।

(मार्गशीर्ष कृष्णपक्षे) ॥६॥

१० । श्रीअरनाथजी अर्हते नमः ।
१० । श्रीअरनाथजीपारंगताय० ।
११ । श्रीअरनाथजी नाथाय० ।
११ । श्रीमल्लिनाथजी अर्हते० ।
११ । श्रीमल्लिनाथजी नाथाय० ।
११ । श्रीमल्लिनाथजी सर्वज्ञा० ।
११ । श्रीनमिनाथजी सर्वज्ञाय० ।
१४ । श्रीसंभवनाथजी अर्हते० ।
१५ । श्रीसंभवनाथजी नाथाय० ।

(पोष शुक्लपक्षे) ॥५॥

६ । श्रीविमलनाथजी सर्व० ।
९ । श्रीशान्तिनाथजी सर्व० ।
११ । श्रीअजितनाथजी सर्वज्ञा० ।
१४ । श्रीअभिनंदनजी सर्वज्ञा० ।
१५ । श्रीधर्मनाथजी सर्वज्ञा० ।

(माघ शुक्लपक्षे) ॥६॥

२ । श्रीअभिनन्दनजी अर्हते० ।
२ । श्रीवासुपुज्यजी सर्वज्ञाय० ।
३ । श्रीविमलनाथजी अर्हते० ।

(फाल्गुन कृष्णपक्षे) ॥१०॥

६ । श्रीसुपार्श्वनाथजी सर्वज्ञाय० ।

७ । श्रीसुपार्श्वनाथजी पारं० ।

७ । श्रीचन्द्रप्रभजी सर्वज्ञाय० ।

६ । श्रीसुविधिनाथजी परमेष्टि० ।

११ । श्रीऋषभदेवजी सर्वज्ञाय० ।

१२ । श्रीश्रेयांसजी अर्हते नमः ।

१२ । श्रीमुनिसुव्रतजी सर्वज्ञा० ।

१३ । श्रीश्रेयांसजी नाथाय० ।

१४ । श्रीवासुपूज्यजी अर्हते नमः ।

३० । श्रीवासुपूज्यजी नाथाय० ।

(चैत्र कृष्णपक्षे) ॥५॥

४ । श्रीसुपार्श्वनाथजी परमेष्टि० ।

४ । श्रीपार्श्वनाथजी सर्वज्ञाय० ।

५ । श्रीचन्द्रप्रभजी परमेष्टिने० ।

८ । श्रीआदिनाथजी अर्हते० ।

८ । श्रीआदिनाथजी नाथा० ।

(वैशाख कृष्णपक्षे) ॥८॥

१ । कुंथनाथजी पारंगताय० ।

२ । श्रीशीतलनाथजी पारंग० ।

५ । श्रीकुंथनाथजी नाथाय० ।

६ । श्रीशीतलनाथजी परमेष्टिने० ।

१० । श्रीनमिनाथजी पारंग० ।

१३ । श्रीअनन्तनाथजी अर्हते० ।

१४ । श्रीअनन्तनाथजी नाथा० ।

१४ । श्रीअनन्तनाथजी सर्व० ।

३ । श्रीधर्मनाथजी अर्हते० ।

४ । श्रीविमलनाथजी नाथाय० ।

८ । श्रीअजितनाथजी अर्हतेनमः ।

६ । श्रीअजितनाथजी नाथाय० ।

१२ । श्रीअभिनन्दनजी नाथाय० ।

१३ । श्रीधर्मनाथजी नाथाय० ।

(फाल्गुन शुक्लपक्षे) ॥५॥

२ । श्रीअरनाथजी परमेष्टिने० ।

४ । श्रीमल्लिनाथजी परमेष्टि० ।

८ । श्रीसंभवनाथजी परमेष्टि० ।

१२ । श्रीमल्लिनाथजी पारंगता० ।

१२ । श्रीमुनिसुव्रतजी नाथाय० ।

(चैत्र शुक्लपक्षे) ॥८॥

३ । श्रीकुंथनाथजी सर्वज्ञाय० ।

५ । श्रीअजितनाथजी पारंग० ।

५ । श्रीसंभवनाथजी पारंग० ।

५ । श्रीअनंतनाथजी पारंग० ।

६ । श्रीसुमतिनाथजी पारंग० ।

११ । श्रीसुमतिनाथजी सर्वज्ञा० ।

१३ । श्रीवर्द्धमानजी अर्हते० ।

१५ । श्रीपद्मप्रभजी सर्वज्ञाय० ।

(वैशाखशुक्लपक्षे) ॥८॥

४ । श्रीअभिनन्दनजी परमे० ।

७ । श्रीधर्मनाथजी परमेष्टि० ।

८ । श्रीअभिनन्दनजी पारंग० ।

८ । श्रीसुमतिनाथजी अर्हते० ।

१४ । श्रीकुंथनाथजी अर्हते० ।

(ज्येष्ठ कृष्णपक्षे) ॥६॥

६ । श्रीश्रेयांसजी परमेष्टि० ।

८ । श्रीमुनिसुव्रतजी अर्हते० ।

९ । श्रीमुनिसुव्रतजी पारं० ।

१३ । श्रीशान्तिनाथजी अर्हते० ।

१३ । श्रीशान्तिनाथजी पारंग० ।

१४ । श्रीशान्तिनाथजी नाथाय० ।

(आषाढ कृष्णपक्षे) ॥३॥

४ । श्रीआदिनाथजी परमेष्टि० ।

७ । श्रीविमलनाथजी पारंग० ।

९ । श्रीनमिनाथजी नाथाय० ।

(श्रावण कृष्णपक्षे) ॥४॥

३ । श्रीश्रेयांसजी पारंगताय० ।

७ । श्रीअनन्तनाथजी परमेष्टि० ।

८ । श्रीनमिनाथजी अर्हते नमः ।

९ । कुंथुनाथजी परमेष्टिने नमः ।

(भाद्रवा कृष्णपक्षे) ॥३॥

७ । श्रीचन्द्रप्रभजी पारंगता० ।

७ । श्रीशान्तिनाथजी परमे० ।

८ । श्रीसुपार्श्वनाथजी परमे० ।

(आश्विन कृष्णपक्षे) ॥२॥

१३ । श्रीमहावीरजी गर्भाप० ।

३० । श्रीनेमिनाथजी सर्वज्ञाय नमः ।

१० । श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय० ।

१२ । श्रीविमलनाथजी पर० ।

१३ । श्रीअजितनाथजी पर० ।

(ज्येष्ठ शुक्लपक्षे) ॥७॥

५ । श्रीधर्मनाथजी पारंग० ।

६ । श्रीवासुपूज्यजी परमेष्टिने० ।

१२ । श्रीसुपार्श्वनाथजी अर्हते० ।

१३ । श्रीसुपार्श्वनाथजी नाथाय० ।

(आषाढ शुक्लपक्षे) ॥३॥

६ । श्रीवर्द्धमानजी परमेष्टि० ।

८ । श्रीनेमनाथजी पारंग० ।

१४ । श्रीवासुपूज्यजी पारंग० ।

(श्रावण शुक्लपक्षे) ॥५॥

२ । श्रीसुमतिनाथजी परमेष्टि० ।

५ । श्रीनेमिनाथजी अर्हते नमः ।

६ । श्रीनेमिनाथजी नाथाय० ।

८ । श्रीपार्श्वनाथजी पारंग० ।

१५ । श्रीमुनिसुव्रतजी परमे० ।

(भाद्रवा शुक्लपक्षे) ॥१॥

९ । श्रीसुविधिनाथजी पारंग० ।

(आश्विन शुक्लपक्षे) ॥१॥

१५ । श्रीनेमिनाथजी परमेष्टि० ॥

॥ ॥ इति पञ्चकल्याणक संपूर्णम्

॥ ॥ गर्भापहार षष्टमप्यस्ति: ॥

॥ ॥ इति पंचकल्याणक संपूर्णम् ॥ ॥

॥※॥ अथ पंचकल्याणक विधिः ॥※॥

॥※॥ प्रथम शुभ दिन शुभ वार्यों गुरूके पास। पंचक ल्याणक तप ग्रहण करै। उपवास (वा) आंबिल (वा) एका सणा दिवको पञ्चक्खाण करै। तीन टंक देव वंदन करै। पडिक्कमणो करै। (जिस दिन) जो माहाराजको कल्याणक होय। उसीको २००० गुणनो करै। और (पास जिनेसर जगति लोए० इत्यादि पंच कल्याणक भावगर्भित स्तवन पढ (वा) सुणें। जहां भगवंत की कल्याणक भूमि होय। (उहां) बड़ा महोत्सवसें संघ सहत जात्रा करनें कों जावै। विधिसंयुक्त यात्रा करै। और सब भगवंतोंके पंच कल्या णकको उत्सव करै। (जो) शक्ति न हो (तो) शाशन के अधिपति श्रीमहावीर स्वामी के षट् कल्याणकका उत्सव जरूर करै ॥※॥ सब २३ भगवंत की अपेच्यायें पांच श्रीवीर प्रभुकी अपेक्षायें षट् कल्याणक संक्षेप उत्सव विधि लि० ॥※॥१॥ चवन कल्याणक कों (परमेष्टिने नमः) कहिये (इस दिन) चवदै स्वप्नादिक की पूजा करा यके। चवन कल्याणक को उत्सव करै। हीरा चढावैं ॥१॥ ॥※॥२॥ जन्म कल्याणक कों (अर्हते नमः) कहीये (इस दिन) जलयात्रादिक महोत्सव करकै। अष्टोत्तरी स्नात्रादिक करावै। वस्त्र चढावै॥ २॥※॥ ३॥ दिक्षाकल्याणक को (नाथाय नमः) कहीये (इस दिन) समोसरण निकाल। अ शोक वृक्षादिकके नीचे स्थापन करकै। दिक्षाको उत्सव करै। घृत गुड़ वस्त्रादिक चढ़ावे। शक्तिमाफक दान देवै॥ ३॥ ※॥ ४॥ केवल ग्यान कल्याणककों (सर्वज्ञाय

नमः) कहीये । (इस दिन) समोसरणमें भगवंतकों स्थापन करकें । आठ प्रातिहार्य प्रगट करें । नाना प्रकारके उच्छव करै । वस्त्र आभूषण चढावै । सपेदगोला चढावैं ॥ ४ ॥࿊॥ ॥ ५ ॥ निर्वाण कल्याणककों (पारंगताय नमः) कहीये । (इस दिन) निर्वाण कल्याणक के भावगर्भित उच्छव करै लाडूचढावे ॥५॥࿊॥ (और) छट्ठा गर्भापहार कल्याणकका उच्छव करणा होय (तो) चवण कल्याणकके उच्छव समान करैं ॥६॥ (इसी तरै) सब कल्याणकके उच्छव करै । तपस्या पूर्ण होणें सें । पंचकल्याणक जीकी पूजा करावे । गुरु भक्ति करैं । साहमी वच्छल करै । (इत्यादिक) विधि संयुक्त यह तपस्या (जो) भव्य जीव करेंगे (सो) अनन्त सुख कों प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकल्याणक तपस्याधिकारः ॥

॥࿊॥ अथ पख वासैको स्तवन लिख्यते ॥࿊॥

॥࿊॥ सीमंधर करज्यो मया (एदेशी) ॥࿊॥ जंबूद्वीप सोहामणो। दक्षिण भरत उदार। राजग्रही नगरी भली। अलिका पुर अवतार ॥ १ ॥ (श्री मुनिसुव्रत स्वामी जी। समरंता सुख थाय। मनवंछित फल पामीये। दोहग दूर पुलाय ॥२॥ (श्री०) राज करै तिहां राजियो। सुमित्र नरे सर नांम। पटराणी पद्मावती। सीलगुणै अभिराम ॥३॥ (श्री०) श्रावण ऊजल पूनमें। श्रीजिनवर हरिवंस। माता कुक्षि सरोवरे। अवतरीयो रायहंस। (श्री०) ॥४॥ जेठ पढम पक्ष अष्टमी। जायो श्री जिनराय॥ जनम महोछव सुर करै। त्रिभुवन हरख नमाय (श्री०) ॥५॥ सामल वरण सोहा

सणो । निरुपम रूपनिधान । जिनवर लंछन काछवो । वीस धनुष तनुमान (श्री०) ॥६॥ परणी नारप्रभावती । भोगपुरं दर साम । राजलीला सुखभोगवे । पूरै वंछित काम (श्री०) ॥७॥ तव लोगांतिक देवता । आवि जंपै जयकार । प्रभु फा गुणवदि बारसै । लीधो संजम भार (श्री०) ॥८॥ शुभ फा गुणवदि बारसै । मनधर निरमल ध्यान । च्यार करम प्रभु चूरिया । पाम्यो केवलग्यान (श्री०) ॥६॥ (ढाल२) ॥ ॥ सुखकारण भवियण (एहनी) ॥ ॥ ततखिण तिहां मि लिया चलिया सुरनर कोड़ि । प्रभुना पदपंकज प्रणवे वे करजोड़ि । वेकरजोड़ी मछर छोड़ि समवसरण विरतंत । माणक हेम रूपमय त्रिगड़ो छत्र त्रय झलकंत । सिंहासन वैठा तिहां स्वामी चौविह धर्मप्रकासै । बार परखदा वैठी आगलि सुणै मन उलहासै ॥१०॥ तपनें अधिकारै पखवासो तपसार । पड़िवा थी कीजै पनरह तिथ उदार । पनरह तिथि कीजै गुरु सुख लीजै जिस दिन हुवे उप वास । श्रीमुनिसुव्रत नाम जपीजै वांदी देव उलास । तप ऊजमणें रजत पालणो सोवन पूतलीचंग । मोदक थाल देहरै मूंकी जिनवर न्हाल सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियें निर त्तर अहरव दर्शनो जेम । मनवंछित केरा सुखपामी जै तेम । पुत्र मित्र परिवार परं अति वल्लभ भरतार । जस कीरत सोभाग वधाई महियल महिमा जांण । परभव सुगति फल लहीयै एतपनें प्रमांण ॥१२॥ थिर थापी चतु विध संघ तणो अधिकार । अहवत्र प्रमुख नगरादि करि या विहार । विहार करी प्रतिबोधे खंदक पंचसयां परि

वार। कार्त्तिकसेठ जितसत्रु तुरंगम सुब्रतनाम कुमार। तोस सहस वरस आऊखो पाले जग दया सार। श्रीस म्मेत सिखर परमेसर पुहता सुगति मझार॥१३॥ इम पंच कल्याणक थुणिया त्रिभुवन ताय। सुनिसुब्रत स्वामी वीसमो जिनवरराय। वीसमो जिनवरराय जगत गुरु भय भंजण भगवंत। निराकार निरंजन निरुपम अजरामर अरिहंत। श्रीजिनचंद्र विनय शिरोमणि सकल चंद गणि सीस। वाचक समय सुन्दर इम पभणे पूरो मनह जगीस॥१४॥ इति पखवासो स्तवन संपूर्णम्॥५०॥ ॥※॥

॥※॥ अथ पखवासा तप विधि लि० ॥※॥

॥※॥ प्रथम शुभ दिन गुरुके पास तप ग्रहण करके सुद (१) पड़िवासें। पूर्णमासी तक। इकसार पनरै उपवास करै। जो शक्ति न हो (तो) प्रथम सुद पक्षकी पड़वा १ द्वितीय सुद पक्षकी दूज २ (ऐसें) अनुक्रमसें पनरै सुद पक्षमें तपस्या पूर्ण करै। श्री सुनिसुब्रत स्वामीके पंच कल्याणक भावगर्भित तवन पढै। गुरुको संयोग होय (तो) गुरुके पास सुणें।

१॥ श्रीसुनिसुब्रतस्वामी सर्वज्ञाय नमः।

॥※॥ इसीको (२०००) दो हजार गुणनो करै। और तपस्या ग्रहण करनेंको (तथा) देववंदनादिककी विधि। पूर्वें खुलासा लिख दीनो है। उसी मुजब विवेकी जीव सब तपस्या की विधि करै। विधि संयुक्त करनें सें उत्तम फल मिलता है॥※॥ इति पखवासा तप विधिः॥※॥

॥※॥ अथ दस पच्चक्खाण स्तवन लिख्यते ॥※॥

॥※॥ (दूहा:) सिद्धारथ नन्दन नमूं। महावीर भगवंत। विगडै बैठा जिनवरू। परषद बारमिलंत ॥१॥ गणधर गौतम तिण समें। पूछे श्रीजिनराय। दस पचखाणकिसा कह्या। कीयां कवण फल थाय ॥२॥ ढाल ॥१॥※॥ सीमंधर करज्योमया (एदेशी) ॥※॥ श्रीजिनवर इम उपदिसे। सांभल गोयम स्वाम। दस पचखाण कियांथकां। लहीयै अविचल ठाम ॥ (श्री० ३) ॥ नवकारसी १। बीजी पोरसी ॥२॥ साढ पोरसी ३। पुरमड्ढ ॥४॥ एकासण ५। नीवी ६। कही। एकलठाण ७। देवड्डि ॥ (श्री०४) ॥ दात ८। आंबिल ९। उपवास १०। हो ॥ एहीज दस पच्चक्खाण। एहना फल सुण गोयमा। जूजूवा करू' वखाण ॥ (श्री० ५) ॥ रतनप्रभा १। शर्कर प्रभा ॥२॥ वालुक ३। तीजी जांण। पंकप्रभा ४। तिम धूम प्रभा ॥५॥ तम प्रभा ६। तम तम ७। ठाम। (श्री० ६) ॥ नरक सात कही एसही। करम कठिन करजोर। जीव करम वस ते सही। उपजै तिणहीज ठोर (श्री०७॥ छेदन भेदन ताडना। भूख त्रिषा वलिवास। रोम रोम पीड़ा करै। परमाहम्मी तास (श्री०८) ॥ रात दिवस खेलवेदना। तिलभर नहीं जिहां सुक्ख। कीया करम जे भोगवै। पामें जीव बहुदुक्ख (श्री०९)॥ इकदिनरी नवकारसी। जे करै भावविशुद्ध। सो वरस नरकनो आउखो। दूर करै ज्ञानवुद्धि (श्री०१०)॥ नित्य करै नवकारसी। ते नर नरक न जाय। नरहै पाप वलि पाछला। निरमल होवैजी काय (श्री०)॥११॥※॥ ढाल २॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो(एदे.]

नी चाल)॥※॥ सुण गोतम पोरसी कियां। महामोटो फल होय। भावसुं जे पोरसी करै। दुरगति छेदै सोय (सु०१२)॥ नरक मांहें जे नारकी। वरसें एक हजार। करम खपावै नरकमें। करता बहुत पुकार (सु०१३)॥ एक दिवसनी पोरसी। जीव करै इकतार। करमहणें सहस एकना। निहचैसुं गणधार (सु०) १४॥ दुरगति मांहें नारकी। दसहजार प्रमाण। नरक आय खिण एकमें। साढपोरसी करै हांण (सु०) १५॥ पुरमढ करै नितजीवजे। नरके ते नविजाय। लाख वरस करमनें दहै। पुरमढ करम खपाय (सु०) १६॥ लाख वरस दस नारकी। पामें दुःख अनन्त। इतरा करम एकासण। दूर करै मनखन्त (सु०) १७॥ एककोड़ि वरसां लगे। करम खपावै जीव। नीवीय करतां भावसुं। दुरगति हणै सदीव सु० १८ दसकोड़ि जीव नरकमें। जितरो करै कर्म दूर। तितरो एकलठांणाही। करैसही चकचूर (सु०) ९१॥ दात करंतो प्राणीयो। सो कोड़ी परमांण। इतरा वरस दुरगति तणा। छेदै चतुर सुजांण (सु०)२०॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो। कोड़ी एक हजार। करम खपावै इणपरै भाव आंबिल अधिकार (सु०) २१॥ कोड़ि सहस दसवरसही। सहे दुख नरक मझार। उपवास करै इक भावसुं। तो पामें सुगति मझार (सु०) २२॥ ढाल३॥※॥ कैकेइ वरलाभो (एदेशी)॥※॥ लाख कोड़ी वरसां लगे। नरके करतां रीवरे। (गोतम गणधारो)। छट्ठम तप करतां थकां। सही नरक निवारै जीवरे (गो०२३)॥ नरकेवरस कोड़ लाखही। जीव लहै तिहां दुःखरे। ते दुख अट्ठमतप हुंतो। दूरकरीपामें

सुक्खरे (गो०) २४॥ छेदन भेदन नारकी। कोड़ाकोड़ि वर सोइरे। कुगति कुमतिनें परहरो। इसमें एतो फल होइरे (गो० २५) नितफासू जल पीवतां। कोड़ा कोड़ी वरसनो पापरे। दूरकरै खिण एकसें। निश्चै होय निःपापरे (गो०२६)। वलिय विसेषे फल कह्यो। पांचम करै उपवासरे। पासें ग्यांन पांचेभला। करता त्रिभुवन परकासरे (सु०) २७॥ चवदस तपविधसुं करै। चवदह पूरव होय धाररे। इम अनेक फल तपतणा। कहितां वलि नावैपाररे (सु०२८)॥ मन वचने काया करी। तप करै जे नर नाररे॥ इग्यारै वरस एकादशी। करतां लहै भवपाररे (सु०२९)॥ आठम तप आराधतां। जीव न फिरै संसाररे। अनन्त भवांना पाप थी। छूटै जीव निरधाररे (सु० ३०)॥ तप छंती पापी तर्या निसतरीयो अरजुन मालरे (सु० ३१)॥ तपनाफल सुले कया। पच्चक्खाण तणा दश भेदरे। अवर भद पिणछै घणा। करतां छेदै वय वेदरे (सु०३२)॥※॥ कलशः॥※॥ पच्चक्खाण दसविध फल प्ररूप्या महावीर जिण देवए। जे करै भवियण तप अखंडित तासु सुरपय सेवए। संवत्त विधिगुण अश्व शशि वलि पोससुद दशमी दिनें। पदम रंग वाचक सीसगणिवर रामचंद्र तपविधि भणें (सु०३३) ॥ इति दस पच्चक्खाण छंद स्तवनं॥※॥ ॥※॥ ॥※

॥※॥ अथ १० पच्चक्खाण तपविधिः॥※॥

॥※॥ यह दस १० पच्चक्खाणके स्तवनमें। खुलासा दस पच्चक्खाणके भिद (और) वला। तेला। पांचम। आठ

म। चौदश। (इत्यादिक) तपस्या करनेंके फल। भगवंत श्री महावीर स्वामीके। वचन माफक। उत्तम पुरुषोनें रचना करी है। (इसीसें) धर्मरागी पुरुष। इसी तवनकों पढके। तपस्या करनेंमें आदरवंत होता है। और कोईकै दश पच्चक्खाण तप करनेंकी इच्छा हो (तो) पहलै दिन। नव कारसी दूसरै दिन पोरसी (इसी तरै) तवन मुजब १० पच्चक्खाण तप। दस दिनमें सेवन करैं। सदा तवन सुणें। गुरूको संयोग न हो (तो) आप पढै। अंतमें पूजाकरावै शक्ति माफक उद्यापन करै (इसी तपस्याके प्रसाद) खोटी गतिकों दूर करकै। अछी गतिके बंध बांधै। महा ऐश्वर्यवंत होय। भाग्यवंत होय ॥※॥ इति दश पच्चक्खाण तप विधि: ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ वीस थांनक तवन लिख्यते ॥ ※ ॥

॥※॥ श्रीसिद्धाचल भेटियै (एदेशी) ॥※॥ वीस थांनक तपसेवीयै। धर करि सुभ परिणांम लाल रे। तीजे भव सेव्योथको। बांधै तीर्थंकर नाम लालरे (वी०)॥१॥ तप रच ना अधकी कही। ग्याता अंग मझार लालरे। सुण ज्यो भवि तुमे भावसुं। किंचित कहियै उचार लालरे (वी०) ॥२॥ सुविहत गुरु पासै ग्रहै। वीस थांनक तप एह लाल रे। निरदूषण सुभमझरते। उचरीजै स सनेह लालरे(वी०) ॥३॥ अरिहंत १। सिद्ध २। प्रवचननमुं ३। सूरि४। थिवर५। उवझाय ६। लालरे ॥ साधु ७। नाण ८। दंसण ९। अरु ॥ विनय १०। नमुं उलसाय लालरे (वी०)॥४॥ चारित्र ११।

बंभ १२। क्रियापदे १३॥ तप१४।गोयम१५। जिण१६। ईस लालरे ॥ चारित्र१७। ग्याननें१८। श्रुत१९। भणी॥ नमुं तीर्थ२०। पदवीस लालरे (बी०)॥५॥ बीस दिवसमें एकहो। पद गुणनो करभेव लालरे। अथवा दिन बीसांलगे। बीसे पद गुणमेव लालरे (बी०)॥६॥ एक ओली षट्मासमें। पूरीजो नविहोय लाल रे। फेरनवी करणी पडै। पिछली निष्फल जोय लाल रे (बी०) ॥७॥ छट्ठ अट्ठम उपवाससुं। (अथवा देखी सक्ति लालरे। पोसहकर आराधिये। देववांदे निज भक्तिलाल रे (बी०) ॥८॥ संपूरण पद सेवतां। पोसहरो नहीं जोग लालरे। तोहो सात पदे सही। पोसह करिये संजोग लालरे (बी०) ॥९॥ सूरि थिवर पाठक पदै। साधु चारित्र सुजांण लालरे। गौतम तीर्थपदे सही। सात थांन क मनमान लालरे (बी०) ॥१०॥ पद पद दीठ करैं सदा दोय दोय जाप हजार लालरे। पडिकमणो दोय टंकहो। करिये पूजा सार लालरे (बी०) ॥११॥ सक्ति मुजब तप कीजीये। एक ओली करो बीस लालरे। बीसां बीसो च्यारसै तपसंख्या कही एम लाल रे (बी०) ॥१२॥ जिसदिन जो पद तप करै। तिसके गुण चित धार लालरे। काउसग्ग पर दक्षणा। मुख भणिये नव कार लालरे (बी०)॥१३॥ जिस पद कीस्तवना सुणें। कीजे जिन पद भक्ति लालरे (बी०) ॥१४॥ सूतक जनम रितु कालमें। कबिधाख्यो उपवास लालरे। सोलेखै नहिं लेखवो। निकेवल तपजास लालरे। (बी०)॥१५ सावज त्याग घणो करै। सोकन धारै चित्त लालरे। सील आभूषण आदरै। मुखसुं बोलै सत्य लालरे (बी०) ॥१६॥

जेठ आसाढ वैसाखमें। मिगसर फागुण मांह लालरे। एषट् मासे मांहिने। व्रत ग्रहीये बड़ भाग लाल रे (वी०) ॥१७॥ तप पूरण हुवां थकां। ऊजमणो निरधार लालरे। कीजे सक्ति विचारनें। उछव विवध प्रकार लालरे (वी०) ॥१८॥ वीस वीस गिणती तणा। पुस्तक पूठा आदि लालरे। ग्यान तणी पूजा करै। सुं कीजे हठ वाद लाल रे (वी०) ॥१९॥ फलवधी नगरनो श्राविका। कीवी विध चितलाय लालरे। जनम सफल करवा भणी। ओछिज मोक्ष उपाय लालरे। (वी०)॥२०॥ (कलस)॥※॥ इम वीर जिन वर तणी आग्या धार चित्त मझारए। सहुदेख आगम तणी रचना रची तप विधसारए॥ वसुनंद सिद्धि चंद्र वरसे चैत मास सुहंकरू। मुनि केसरी शशि गच्छ खरतर भणी स्तवना मन हरू॥ २१ ॥ इति वीस स्थानक तप स्तवनं संपूर्णम्॥ ※ ॥

॥※॥ अथ वीस स्थानक तपकरण विधि लि०॥※॥

॥※॥ तिहां प्रथम सुभ महुर्त्तके दिन। नंदी स्थापना पूर्वक। सुविहित गुरुके समीप। वीश स्थानक तप। विधि पूर्वक उच्चरै। एक ओली दो माससें लेके (यावत्) छमासें पूरी करै। (कदाचित्) छमास मध्ये पूरी न कर सके (तो) वा ओली गिणती मे नहीं। और नवी करणी पड़े। एक ओलीके वीस पद है (तिहां) कोइ वीस दिनमें। वीसों पद जूदा २ गिणे। कोई वीसों दिन में एकज पद गिणे। दूसरै वीसों दिनमें दूसरो पद। (एसें) वीसों पदकी वीस ओली करै। तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत। अट्ठम तप

करिकै आराधै । वीस अट्ठमें एकउली होय । (ऐसें, वीसउली (४००) अट्ठमें आराधै । और तिससें हीनशक्ति छठ्ठ तप क रकै आराधै । तिससें हीनशक्ति चौविहार उपवास करकै आराधै । तिससें हीन शक्ति तिविहार उपवास करकै आ राधै । तिससें हीन शक्ति आंबिल (तथा) तिविहार एका सणा करकै आराधै । तिहां शक्तिवान प्राणी । सव तपस्याकै दिन अठ पहरी पोसह करै । (हीन शक्ति) दिन पोसह करै । वीसों पद पोसह सेती आराधै (जो) पोसह शक्ति सर्व पद में न हो (तो) आचार्य पदै १ उपाध्याय पदै २ थिवर पदै ३ साधू पदै४ चारित्र पदै५ गौतम पदै ६ तीर्थ पदै७ यह सात थानकै तो पोसहज करकै आराधै । तथा पि शक्ति न हो (तो) तिस दिन देसावगासिक करै । सावद्य व्यापार त्यजे । सो पिण न होइ (तो) यथाशक्ति तप करी आराधै । अपणी हीनताभावै (तथा) मृतक जातक का सूतकमें उपवासादि तप न गिणै न जावै । स्त्रीयां पिण ऋतु समय का तप न गिणें (तथा) तपकै दिन पोसह सहित करै (तो) वहोत श्रेयकारी है । सो न होसकै (तो) तपकै दिन उभय टंक पडिक्कमण करै । तीन टंक देव वंदन करै । दो सहस्र (२०००) एक पदका जप करै । ब्रह्मचर्य पालै । भूमि शयन करै । तपकै दिन अतिसावद्य आरंभ व्यापार न करै । असत्य न बोलै । सव दिन तप पदकै गुण कीर्त्तनमें रहै । (तथा) तपकै दिन पोसह करै । (तो) पारणें कै दिन जिन भक्ति करकै पारणो करै । (जो) तपकै दिन पोसह नहो (तो) उसी दिन श्रीजिन भक्ति करै । करावै ।

भावना भावे। (तथा) तपके दिन पदके गुण भेद प्रमाण संख्याइं काउसग्ग करै। (तावन्मात्र) तद्गुण स्मरण पूर्वक खमासमण देई वंदना करै। उस पदका महिमा गुण याद करके उदात्त स्वरै स्तवना करै। हर्षित रहै।

॥※॥ अब वीस स्थानक गुणनो और काउसग्गके प्रमाण लिखते हैं ॥※॥

॥※॥ (णमो अरिहंताणं) (२०००) गुणनो। लोगस्स १२ काउसग्ग॥※॥१॥※॥ (णमो सिद्धाणं) (२०००) गुणनो। लोगस्स १५ काउसग्ग ॥※॥२॥※॥ णमो पवयणस्स) (२०००) दो हज्जार गुणनो। लोगस्स ७ काउसग्ग ॥ ※ ॥ ३ ॥※॥ (णमो आयरियाणं) (२०००) दो हज्जार गुणनो। लोगस्स ३६ काउसग्ग ॥※॥ ४ ॥※॥ (णमो थेराणं) (२०००) दो हज्जार गुणनो। लोगस्स १५ काउसग्ग ॥※॥ ५ ॥※॥ (णमो उवज्झायाणं) दो हज्जार गुणनो। लोगस्स २५ काउसग्ग ॥※॥ ६ ॥※॥ (णमो लोए सव्वसाहूणं) २००० गुणनो। लोगस्स २७ काउसग्ग ॥※॥७॥※॥ (णमो नाणस्स) २००० गुणनो। लोगस्स ५ काउसग्ग ॥※॥ ८ ॥※॥ (णमो दंसणस्स) (२०००) गुणनो। लोगस्स १७ काउसग्ग ॥※॥९॥※॥ (णमो विनयसंपन्नाणं) २००० गुणनो। लोगस्स १० काउसग्ग ॥※॥१०॥※॥ णमो चारित्तस्स) २००० गुणनो। लोगस्स ९ काउसग्ग ॥※॥ ११ ॥※॥ (णमो बंभव्वयधारीणं) २००० गुणनो। लोगस्स ९ काउसग्ग ॥ ※ ॥ १२ ॥ ※ ॥ (णमो किरिआणं) २००० गुणनो। लोगस्स २५ काउसग्ग

॥❋॥ १३ ॥❋॥ (णमो तवस्सोणं) २००० गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग॥ ❋ ॥ १४ ॥ ❋ ॥ (णमो गोयमस्स) २००० गुणनो । लोगस्स १७ काउसग्ग ॥❋॥।१५॥❋॥ (णमो जिणाणं) २००० गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग ॥❋॥१६॥❋ ॥ (णमो चरणस्स) दो हज्जार गुणनो। लोगस्स१२ काउसग्ग ॥❋॥ १७ ॥❋॥ (णमो नाणस्स) २००० गणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥❋॥१८॥❋॥ (णमो सुअनाणस्स) २००० गुणनो लोगस्स १० काउसग्ग ॥❋॥१९॥❋॥ (णमो तित्थस्स) २००० गणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग करै ॥❋॥ २० ॥❋॥ इति वीस स्थानिक गुणनो संपूर्णम् ॥❋॥ ॥❋॥ ॥❋०

इत्यादि विधिसंयुक्त बीसों ओलीमें सब पदकी उछव महोछव प्रभावना जजमणा पूर्वक करै । जिन शाशन की उन्नति के कारण करै । इतनी शक्ति न हो (तो) एक ओली (तो) विशेष उछवादि सहित करणी चाहिये ॥ इहां विधि प्रपाक ग्रंथसें बीस स्थानक सेवनविधि संक्षेप माल लिखीहै (जो) गुरुको संयोग हुय । तबतो बिस्तारसें बीसों पदको जूदी जूदी बिधि। गुरुके मुखसें समझके करै जो गुरुका जोग न हो (तो) बिबेक संयुक्त इस बिधिकों देखके बीस स्थानक तप सेवन करै । बीस स्थानक तवन पढै (वा) सुणै। बीस स्थानकजी की पूजा करावै । अपनी शक्ति माफक बीस बीस ग्यानोपगरण करावै। देव पदको देव खाते लगावै। ग्यान पदको ग्यान खाते लगावै। गुरु पदको गुरु खाते लगावै। सब तीर्थां की जात्रा करै । साहमी बछल करै (इत्यादिक) द्रव्य भावे बिधिसंयुक्त शुद्ध

भावसें (जो) भव्य जीव यह वीस स्थानक तपकों सेवन करेंगे (सो) जिन नाम कर्मकों उपार्जन करके। तीसरे भव अनंत सुखकों प्राप्त होंगे इत्यलंविस्तरेण ॥५॥ इति वीसस्थानक तपकी विधि संपूर्णम् ॥※॥　　॥※॥

॥※॥ अथ रोहणी तप स्तवन लिख्यते ॥※॥

॥※॥ सासणदेवत सांमणीए। मुझ सानिध कीजे ॥ भूलो अक्खर भगति भणी। समझाई दीजे ॥ मोटो तप रोहण तणोए। जिणरा गुण गावुं ॥ जिम सुख सोहग संपदाए। वंछित फल पावुं ॥१॥ दक्षिण भरते अङ्गदेस है चंपानयरी मघवा राजाराज करै तिण जीता वैरी। पाटतणी राणी रूपनीए लखमी इण नामें। आठ पुत्र जाया जिणें ए मनमें सुख पांमें ॥२॥ रोहणि नांमें पुत्रकाए सबकुं सुखकारी। आठां पुत्रां ऊपराए तिणलागै प्यारी। वाधै चंद्र तणी कलाए जिम पख उजवाले। तिम ते कुमरीधाय माय पांचे प्रतिपाले ॥३॥ कुमरीरूपे रूपनीए घर अङ्गण बैठी। दीठी राजा खेलतोए तिण चिंता पैठी। तीन भुवन विच एहवी ए नहीं दूजी नारी। रंभा पउमा गवर गंग इण आगल हारी ॥४॥ पुरष न दीसै कोइ इसो जिणनें परणावुं। आ स्यां आगल साल वधै तिण चयन न पावुं। देस२ना राजवीए ततखिण तेडाया। सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥५॥ वीत सोक राजा तणोए है कुमर सोभागो। कन्या के रीआंखनीए तिण सेती लागो। ऊभा देखें सकल लोक चढीया कोइ पाला। चित्रसेन रै कंठ ठवी

कुमरी वरमाला ॥६॥ देव अनें देवंगनाए जयैजयर कार। रलियायत थयो देखनें ए सारो संसार। करजोडी कहै लोक वखत कन्यारो जाडो। वीत सोकनो कुमर थयो सिर ऊपर लाडो ॥७॥ इम वीवाह थयो भलो ए दीया दांम अपार। घरि आया परणी करीए हरख्यो परिवार। वीतसोक निज पुत्रभणी अपणो पाट दीधो। आपण संयम आदरी ए जगमें जस लीधो ॥८॥※॥ ढाल ॥※॥ प्रभु प्रणमुं रे पासजिनेसर थंभणो (एदेशी) ॥※॥ तिण नयरीरे चित्रसेन राजा थयो। सुख मांहि रे केतलो काल वही गयो। इण अवसररे आठ पुत्र हुवा भला। चढतें पखरे चंद जिसी चढती कला (उल्लालो) चढती कलाहिव राय बेठो पास बैठी रोहणी। सातमी भूमें कंत सेती करै क्रीडा अति घणी। आठमो बालक गोद ऊपर रंगसुं राणी लीयो पुत्रनें प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥६॥ (चाल) इक कांमणरे गोख चढी दृष्टे पडी। सिर पीटैरे दीनस्वरे रोवैखडी। बूढा पणरे मनगमतो बालक मुंओ। हुं एकजरे तिण अधिकेरो दुखहुवो। (उ०) दुख हुवो देखी रोहणी हिव कहै इम प्रीतम भणी। एनार नाचै अनें कूदै कहो किम मोटा घणी। एहवो नाटक आजतांइ में कदे देख्यो नही। मुझनें तमासो अनें हासो देखतां आवै सही ॥१०॥ (चाल) इण वचनेंरे रोसांणो राजा कहै। तूं पापणिरे परतणी पीडा नवि लहै। ए दुखणीरे पुत्र मुंए तड फड करै। जब वीतैरे वेदना जाणी नैं तरै। (उ०) जाणें तरैं तुं वात दुखनी गरब गहली कामनी। इम कही

राजा हाथ झाल्यो तेहना बालक भणी। सातमी भुंय थी तले नाख्यो तिसे हाहारवथयो। रोहणी हसतो कहे प्रीतम पुत्र नीचें किम गयो ॥११॥ (चाल) हिव राजारे पुत्र तणें सोके करो। थयो मुरछितरे रोवे अति आंख्यां भरी। पडतो सुतरे सासणदेवत जांणियो। कञ्चन मदूरे सिंहा सण वैसांणियो। (उल्लालो) वैसांणियो करजोड आगे करें नाटक देवता। गोदीखिलावे के हसावे प्राय पंकज सेवता। जपनो भूपतिनें अचंभो देखी ए कारण किसो। जो कोइ ग्यानी गुरुपधारे पूछिये सांसो इसो ॥ १२ ॥ (चाल) चिंतवतांरे चारितिया आया तिसे। राजा पिणरे पुहतो वांदणनें तिसे। सुण देसनारे पूछे प्रसन सुहामणो। कहो स्वामीरे पूरव भव बालक तणो॥ (उल्लालो) बालक तणो भवभूप पूछे कहे इण पर केवली। रोहणी राणीरो भवांतर अनें राजानो वली। श्रीगुरु पासे पाछले भव रोहणीतप आदर्यो। तप तणें सगते साधु भगते तुम्ह भवसायर तर्यो ॥१३॥ (चाल) कहे राजा रे किम रोहणितप कीजीये। विधि भाषोरे जिम तुम पासे लीजीये। तब मुनिवररे विध रोहणरा तप तणी। इम जंपेरे चित्रसेन राजा भणी॥ (चाल) राजा भणी विध एह जंपे चंद्र रोहण तप आवियै। उपवास कीजे लाभ लीजै भली भावना भावियै। बारमा जिनवर तणी प्रतिमा पूजियै मनरङ्गसुं। इम सात वरसां लगे कीजै तजो आ लस अङ्गसुं ॥१४॥ (ढाल)३ ॥ वीरसुणो मोरी वीन ती (एचाल) ॥ तप करियै रोहणि तणो। वली करियै

हो ऊजमणो एम । तप करतां पातिक टले । तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥१५ (त०) ॥ देव जुहारो देहरे । तिण आगे हो कीजे छत्त्र अशोक । गुणनो बारम जिन तणो । भलाने वन हो भरीये सङ्ग थोक ॥१६ त० ॥ केसर चन्दन चरचीये कीजै आगै हो आठे मङ्गलीक । विधसुं पुस्तक पूजीये । ते पांमें हो शिवपुर तहतीक ॥१७ (त०)॥ सेवा कीजे साधुनो वलि दीजे हो सुंह मांग्यादान । संतोषी जे साहमी । मनरङ्ग हो कर२ पकवान ॥१८ (त०)॥ पाटो पोथो पुंठणा । मिस लेखण हो झिल मिल सुलगोस । नवकरवाली वींटणा । गुरु आगै हो धरो सत्तावोस ॥ १९ (त०) ॥ चोथो व्रत पिण तिणदीने । इम पाले हो मन आण विवेक । इण विध रोहणि आदरे । तेपांमें हो आनन्द अनेक ॥२०॥※॥ (ढाल ४ धरम करो जिणवर तणो) ॥※॥ इम महिमा रोहण तणी । भाख्यांनी गुरु परकासेरे । चित्रसेननें रोहणी वासपूज्य तिर्थंकर पासे रे ॥ २१ (इ०) ॥ इणपरि रोहणि आदरी । ऊपर उजमणो कीधो रे । चित्रसेननें रोहणी मनसूधे संजम लीधोरे ॥ २२ (इ०) ॥ आठे पुत्रे आदरी दिख्या बारम जिन आगे रे । वलि नानाविध तप तपे धरम तणी मत जागेरे ॥२३ (इ०)॥ करि अणसण आराधना । लहि केवल सिवपद पायारे । जिनवाणी आणी हीये । प्रभु चरणां चितलाया रे ॥ २४ (इ०) ॥ मनमोहन महिमानिलो । मेंतवियो सिवपुर गामीरे । मनमान्या साहिब तणी । हिव पुन्यें सेवा पामी रे ॥ २५ (इ०) ॥※॥ कलश ॥ ※ ॥ इम गगन दुग मुनि चंद्र वरसे (१७२०)

चोथ श्रावण सुद भली। मैं कही रोहण तणी महिमा सुगुरु मुख जिम सांभली। वास पूज्य श्रमनें थया सुप्रसन चित्तनी चिंता टली। श्रीसारजिन गुण गावतां। हिव सकल मन आस्या फली ॥ २८ ॥ इति रोहणी तप स्तवन संपूर्णम् ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ अथ रोहणी तपविधिः ॥❀॥

॥❀॥ शुभ दिन गुरुके पास रोहणी तप ग्रहण करै। रोहणी नक्षत्रके दिन उपवास करैं। बारमा श्री वासु पूज्य स्वामी का पूजन करै। आगै अष्ट मंगलीक रचना करैं। अष्ट द्रव्य चढावे। देव वंदनादिक करके धर्मोपदेश सुणें ॥❀॥

१ ॥ श्रीवासु पुज्य स्वामी सर्वज्ञाय नमः।

इसी को (२०००) गुणनो करै। ऐसें सात बरस (यह) तप करनेंसें। सुख सौभाग्य बढेगा। विसेष अधिकार। यह रोहणी तपका स्तवन सुणनेंसें मालुम होगा (अलं विस्तरेण ॥❀॥ इति रोहणी तप विधिः ॥❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ अथ छम्मासी तप स्तवन लिख्यते ॥❀॥

॥❀॥ गोतम स्वामीरे बुध दो निरमली। आपो करिय पसाय। महावीर स्वामी जे जे तप कीया। तेहनो कहिसुं विचार (वलि २ वांदुं वीरजो सुहामणा) ॥ १ ॥ भावठ भंजण सेव्यां सुख करै। गातां नवनिधि थाय। बारै बरसां वीरजी तप कीयो। अनुवर तेरै बो पाप (व०) ॥ २ ॥ बे करजोडी एहुं वीनवुं। श्रीजिन सासन राय। नाम

लियांथी नव निध संपजै । दरसण दुरित पुलाय (व०)॥३॥ नव चौमासा जिनजीरा जांणियै। एक कियो छम्मास। पांचे ऊणा छ वलि जाणीयै। बारै कि को जी मास (व०) ॥ ४ ॥ बहुत्तर मास खमण जग जीपता । छ दोमासी रे जाण । तीन अढाई दो दो दो कीया । दो दोढमासी वखा ण (व०) ॥५॥ भद्र महाभद्र सिवगति जाणीयै। उत्तम ए हना प्रकार। विचमें पारणो स्वामी नवि कीयो। नवि कीयो चौथो आहार ॥४॥ (व०) तिहुं उपवासे प्रतिमा बारमी। कीधा बारै जी मास। दोयसै बेला जिन जी रा जाणीयै। इम गुणतीस विलास (व०) ॥ ५ ॥ तीनसै पारणा जिनजीरा जांणीयैं। तीन गुणतीस पचास। एह में स्वामी केवल पामिया। पांम्या सुगति आवास (व०) ॥६॥ (कलश:) इम वीर जिनवर सयल सुखकर अतही दुक्कर तप करी। संयम सुपाली कर्म टाली स्वामी सिव रमणी वरी। सेवकप्रभणे वीर जिन वर चरण वंदित तुम तणा। संसार कूप पडंत राखो आपो स्वामी सुखघणा ॥७॥ इति छम्मासी तप स्तवनं॥

॥ऀ॥ अथ छम्मासी तप विधि: ॥ऀ॥

॥ऀ॥ शासनके अधिपति श्री महावीर स्वामी। सबसें उत्कृष्ट छम्मासी तप किया। (इसीसें, इस कालमें संघयण बल पराक्रम कै हीनपणासें इकसार छम्मासी तप न कर सके (तो पिण) छम्मासीके (१८०) उपवास करनेंसें। जघन्य छम्मासी तपकै फलकों प्राप्त होय। और देव वंदनादि

सब क्रिया करै ।छमासी तपका स्तवन सुणें। इस छमासी तपके स्तवनमें । सब तपस्या की संख्या कही है।

१ ॥ श्रो महावीर स्वामी नाथाय नमः ।

इसो को (२०००) गुणनो करै। भगवंत श्रीमहावीर स्वामीके नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय। उहां जात्रा करनेंकों जावैं। अनेकतरेसें शुद्धभावना भावै। शक्ति माफक उद्यापन करै। इस तपस्याके प्रसाद लघुकर्मी होके अनन्त सुखकों प्राप्त होय॥ इति छमासी तपविधिः ॥

॥ अथ बारै मासी तप स्तवन लि० ॥

॥ दांन उलट धरी दीजीये। (एदेशी)॥ त्रिभुवन नायक तुं धणो। आदि जिणेसर देवरे। चौसठ इंद्र करै सदा। तुझपद पंकज सेवरे (त्रि०)॥१॥ प्रथम भूपाल प्रभु तुं थयो। इण अवसरपणी कालरे। तुझ सम अवर न को प्रभु। तुं प्रभु दीन दयालरे (त्रि०) ॥२॥ प्रथम तीर्थंकर तुं सही केवल ग्यान दिनंदरे। धर्म प्रग्यापक प्रथम तुं। तुं ही है प्रथम जिनंदरे (त्रि०)॥३॥ अंतर अरिजे आतमतणा। काल अनादि थिति जेहरे। ते तप शक्ति तैं हणवा। आत्म वीरज गुण गेहरे (त्रि०) ॥४॥ ताहरी शक्ती कुण कह सकै। जे हनो अंत न पाररे। द्वादश मासनो तप कर्यो। तेह अपा नक साररे (त्रि०) ॥ ५॥ ए उत्कृष्ट तप वरणव्या। आगममें जिन राजरे। ते करवुं अति आकरुं। तप विना किम सरै काजरे (त्रि०) ॥६॥ तीनसै साठ उपवास ते। जे इण पंचम कालरे। अवसर आदरै क्रम विना। ते पिण

भवि सुविसालरे (लि०) ॥७॥ ए तप गुरुमुख आदरै। सास्त्र तणै अनुसाररे। पडिकमणादिक भावथी। सुद्ध क्रिया मन धाररे (लि०) ॥८॥ चित्तसमाधि सुभ भावथी। जे धरै ताहरो ध्यानरे। ते नर उत्तम फल लहै। वलिलहै उत्तमग्यानरे (लि०) ॥ ९ ॥ काल अनादि संसार में। जन्म मरण तणा दुक्खरे ते लह्या धर्म पायां विनां। तप विनां किम हुवै सुक्खरे (लि०) ॥१०॥ हिव लह्यो नर भव पुन्य थी। वलिलह्यो श्रीजिनधर्मरे। तत्वनी रुचिथई मुझ। हिव मिट्यो मन तणो भर्मरे (लि०) ॥११॥ भव२ एक जिनराजनो सरण हो ज्यो सुख काररे। कुगुरु कुदेव कुधर्मनो। मैं कीयो हिवै परिहाररे (लि०) ॥१२॥ दर्शन ग्यान चारित्र ए। मोक्षमारग सुविसाल रे। भव२ जे मुझ संपजै। तो फलै मंगल मालरे (लि०) ॥१३॥ श्रीजिनसासन तप कह्यो। ते तप सुरतरु कंदरे। धन२ जेनर आदरै। काटै ते कर मनो फंदरे (लि०) ॥१४॥ (कलशः) इम नाभिनन्दन जगत वंदन सकल जन आनंदनो। मैंथुण्यो धन दिन आजनो मुझ मात मरु देवी नन्दनो। संवत सुनेत्रा कास निधि शशि नयर श्रीबालूचरै। श्रीजिन सौभाग्य सुरिंदके सुपसाय विजयविमल वरै॥ १५ ॥ इति श्री बारैमासी तप स्तवन संपूर्णः ॥॥ ॥॥ ॥॥

॥॥ अथ बारैमासी तपविधिः ॥॥

॥॥ प्रथमतिर्थंकर श्री ऋषभदेव स्वामी उत्कृष्ट बारैमासी तपस्या करी (इसीसें) भव्य जीव बारै मासी

तपस्याका भाव लायके (३६०) तीन सै साठ उपवास करै जिस दिन व्रत होय। उस दिन देववंदनादि क्रिया करै। बारै मासी तपका तवन सुणें॥

१॥ श्री ऋषभदेव स्वामी नाथाय नमः।

इसीको (२०००) गुणनो करै। तपस्या पूर्ण होनेंसें सिद्ध गिरी जात्रा करनेंकों जावै। शक्तिमाफक उद्यापन उच्छव करैं। यह तपस्याके प्रसाद भव्य जीवोंके कभी दुख दो भाग्य प्राप्ती न हो। सदा तप तेज बढता रहै। इति बारै मासी तपस्याविधिः ॥卐॥ ॥卐॥ ॥卐॥

॥卐॥ अथ अट्ठाईस लबधी तप स्तवन लि० ॥卐॥

॥卐॥ (दूहा) प्रणमुं प्रथम जिनेसरु। सुद्रुमनें सुखकार लबधि अठावीस जिन कही। आगमनें अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्न व्याकरणें प्रगट। भगवती सूत्रमझार। पन्नवणा आवस्यके। वारू लबधि विचार ॥२॥ आंबिल तप कर ऊपजें। लबधां अट्ठावीस। एहिव परगट अरथसुं। सांभलज्यो सुजगीस ॥३॥ (ढाल) ॥卐॥ सफल संसारनी ॥卐॥ अनुक्रमें हेव अधिकार गाथा तणें। लबधिना नांम परिणांम सरिषा भणें। रोग सहु जाइ जसु अंग फरस्यां सही। प्रथम ते लबधि छै नाम आमो सही ॥४॥ जासु मल मुत्र उंषध समा जाणीये। बीय विप्पोसही लबधि वखाणीये। स्लेषमा उंषध सारिखो जेहनो। तीजी खेलो सही नांम छै तेहनो ॥५॥ देहना मैलथी कोढ दूरै हुवै। चोथी जल्लोसही नाम तेहनो ठवै। केस नख रोम सहु अंग फरसै सही। रहै

नहीं रोग सव्वोसहो ते कही ॥६॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रिय तणा। भेद जाणें तिका नाम संभिन्नणा। वस्तु रूपी सह्ल जांणिये जिण करी। सातमी लवध ते अवधि ग्यांनें करी॥ ७॥ (ढाल) आव्यो तिहां नरइर (एदेसी) ॥ ॥ हिव आंगुल अढीयै ऊणो मांनुष क्षेत्र। संज्ञा पंचेंद्री तिहां जेवसय विचित्र। तसु मनलो चिंतत जांणें थल प्रकार। ते ऋजुमति नामें अष्टम लवधि विचार॥८ संपूरण मानुष क्षेत्रे संज्ञावंत। पंचेंद्रिय जे है तसु मन वातांतंत। सूखम परजायें जाणें सहु परिणाम। ए नव मी कहीयैं विपुलमती सुभ नाम॥९॥ जिण लवधि प्रभावे उड्डीजाय आकास। ते जंघा विज्जाचारण लवधि प्रकास। जसु वचन सरापै खिणमें खेरू थाय। ए लवध इग्यारमी आसी विस कहवाय॥१०॥ सहु सूखम बादर देखै लोका लोक। ते केवल लवधि बारमीये सहु थोक। गणधर पद लहीये तेरम लवधि प्रमाण। चवदम लवधे करी चवदै पूरब जाण॥११॥ तीर्थंकर पदवी पांमें पनरमी लवधि। सोलम सुखदाई चक्रवर्त्ति पदरिद्धि। बलदेव तणो पद लहिये सतरमि सार। अठ्ठारम आखा वासुदेव विस्तार॥ १२॥ मिसरी घृत खीरै मेल्या जेह सवाद। एहवी लहै वाणी उगणी सम परसाद। भणीयो नवि भूलै सूत्र अरथ सुविचार। ते कुष्टिक वुद्धो वीसम लवधिविचार॥ १३॥ एकै पद भणीये आवै पद लख कोड़। इक वीसमी लवधी पायाणुसारणी जोड़। एकै अरथै करी उपजै अरथ अनेक। बावीसम कहीयैं बीज वुद्धि सुविवेक॥ १४॥ ॥ (ढाल ३)॥

॥❋॥ कपूर हुवे अति ऊजलोरे (एदेशी) ॥❋॥ सोलह देस तणो सहीरे। दाहक सगत वखाण। तेह लबधि तेवीसमीरे तेजोलेस्या जाण ॥१५॥ (चतुरनर सुण ज्यो ए सुविचार)। आगमने अधिकार। वारू लबधि विचार (च०) ॥ चवदह पूरव धर मुनिवरूरे। उपजन्ता संदेह। रूप नवोरचि मोकले रे। लबधि आहारक एह (च०) ॥१६॥ तेजो लेस्या अगननें रे। उपसम वा जलधार। मोटो लबध पचवीस मोरे। सीतो लेस्या जांण (च०) ॥१७॥ जेण सगति सुं विकुरवैरे। विविध प्रकारे रूप। सद्‌गुरु कहै छावीसमी रे। वेक्रिय लबध अनूप (च०) ॥१८॥ एकणपात्रे आदमीरे जीमावे केइ लाख। तेह अखोण महाणसी रे। सत्तावीस मी साख (च०) ॥१९॥ चूरैसेन चक्रोसनो रे। संघादिकनें काम। तेह पुलाक लबधि कहीरे। अट्ठावीसमी नाम (च०) ॥२०॥ तेज सीत लेस्या बिहु रे। तेम पुलाक विचार। भगवती सूत्रमें भाषियो रे। ए बिहुंनो अधिकार (च०) ॥ २१॥ चक्रवर्त्त बलदेवनी रे। वासुदेवलिण एह। आवस्यक सूत्रे अछेरे। नहीं इहां संदेह (च०) ॥ २२ ॥ पन्नवणा आहारनीं रे। कलपसूत्र गणधार। तीन तीन इक२ मिली रे वारू आठ विचार (च०) ॥२३॥ प्रश्न व्याकरणें कही रे। बाकी लबधां वीस। सांभलतां सुख ऊपजे रे। दोलत हुवै निस दीस (च०) ॥२४॥❋॥ (कलशः) ॥❋॥ संवत सतरै से छवीसै मेरु तेरस दिन भलै। श्रीनगर सुख कार लूण करण सर आदि जिन सुपसावलै। वाचना चारज सुगुरु सांनिध विजय हरष विलासए। श्रीधर्म वर्द्धन तवन भणतां प्रगट

ग्यान प्रकास ए ॥ २५ ॥ इति (२८) लवधि स्तवनं ॥

॥※॥ अथ अठ्ठाईस लब्धि तप विधिः ॥※॥

॥※॥ (शुभदिन) गुरुकी पास।२८ लब्धि तप ग्रहण करै। अनुक्रमसें २८ उपवास करै। स्तवन सुणें। (जिस दिन) जो लब्धी को उपवास होय। उसी लब्धी कै नामको गुणनो करै। तप पूर्ण होनेंसें। शक्ति माफक उद्यापन करै। यह तपस्या करनेंसें निर्मल बुद्धि उत्पन्न हो। सदा आनंद रहै इति २८लब्धि तपविधिः ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥ ※ ॥

॥※॥ (ढाल) ॥※॥ वेकर जोड़ी तांम (एदेशी)। जिनवर श्री व्रधमान। चरम तिर्थंकर। प्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए ॥ स्रुतधर स्रीगणधार। सूरिशिरोमणी। नमतां नव निधि संपदाए ॥१॥ चवदे पुरव नाम। सूले जूजूवा। वीर जिणंदे भाणीयाए॥ तेहिव सुगुरु पसाय। वरणवसुं इहां। आगमसें जिम उपदिस्याए ॥२॥ पहिला पूर्व उत्पाद १। दूजो अग्रायणी२। वीर्यवाद ३ तीजो नमुंए॥ अस्ति नास्ति प्रवाद ४। सत्ता जाणीयें। नाणगरयण ५ पंचम गिणुंए ॥३॥ छठ्ठो सत्यप्रवाद ६। सत्तम आतम ७। कर्म प्रवाद अठ्ठम गिणोए ८॥ प्रत्याख्यान प्रवाद ९। नामें नवम। विद्या प्रवाद दसमो कह्योए १०॥ ४॥ इग्यारम नाम कल्याण ११। प्राणायु बारमो १२। क्रिया विलास तेरम भणोए १३॥ विंदुसार इण नाम १४। चवदे एकह्या। साख थकी में संग्रह्याए॥ ५ ॥ (ढाल२) श्री विमलाचल सिरति

लो (एदेशी) ॥ उत्पादपूर्व सोहामणो। कोटी पद परिमांण। षटभाव प्रगटछै ते जिहां। तिपदी भाव विनांण॥१ सर्वद्रव्य पर्यय तणो। जीव विशेष प्रमाण। दूजो पूर्व अग्रायणी। छिन्नूं लख पद जांण॥२॥ पदलख सत्तर जेहनी। संख्या परगट एह। वीर्य प्रबलता जीवनी। भाषी तीजै तेह॥ ३॥ चौथे पूर्व जे कयो। अस्ति नास्ति प्रवाद। पद संख्या साठ लाखनी। सत भंगी स्याद्वाद॥४॥ ग्यानप्रवाद पद पंचमो॥ सुत्रे आख्यो जोय। सत्यादिक पण भेदसुं। पद संख्या इक कोड़ि॥ ५ ॥ सत्यप्रवाद छट्ठोकह्यं। भाखुं सत्यस्वरूप। संख्यापद दुग कोड़नी। भाषी अगम अनूप ॥६॥ नित्यानित्य पणो इहां। आतमद्रव्य सुभाव। छवीस पद कोड़ जेहना। सुत्रे आख्यां भाव॥ ७॥ कर्मप्रवाद तणो हिवै। प्रगट पणें अधिकार। लाख असी पद जेहना। कोड़ी इग निरधार॥ ८॥ नवमो पूर्व कह्यं हिवै। नामें प्रत्याख्यान। लाख चौरासी जेहवा। पद संख्या चित आन॥९॥ अतिसय गुणसंयुत भणो। साधन साध्य निदांन। विद्या अनुपम सातसै। कोड़ी दस लख जांन॥१० कल्याण नाम इग्यारमो। छव्वीस कोड़ प्रमांण। ज्योतिष शास्त्र विचारणा। चौवीह देवकल्यांण॥ ११॥ प्राणायुपद बारमो। छप्पन्न लख इग कोड़। प्राण निरोधन जे क्रिया सास्त्रै आख्यो जोड़॥१२॥ क्षायिक्यादिक जे क्रीया। छंद क्रिया सुविसाल। पद संख्या नव कोड़नी। तेरमो किरिया विसाल॥ १३॥ लोकसार बिंदु चवदमो। नामें अरथ निहाल। पद संख्या इग कोड़नी। लाख पच्चीस संभाल॥

लोक प्रत्यय देखण भणी। संख्या गज परिमाण। सोलसहस अरु तीनसै। उरतयांसी जांण॥१५॥ पूरव संख्या एकही। गुणमालाथी देख। आगे बुध जन सोधज्यो। बाकी देसविसेस ॥卐॥ (ढाल३) वीर जिणेसर उपदिसै (एचाल) ॥卐॥ सुत्ते गुंथै गणधरा। अरथे अरिहंत भाषैरे। ते श्रुत ग्यान नमुं सदा। पाप तिमर जिमनासैरे॥१॥ (वाणीरे जिनंदनी) सुणज्यो चितल्हित आणीरे। तत्व रमणता अनुसरै। संपूरण गुण खाणीरे (वा०) ॥ २ ॥ विषयकषाय तजी करी। ग्यान भगत उरधारीरे। विधि संयुत जिन मंदिरै। प्रभुमुखपास जुहारीरे (वा०) ॥ ३ ॥ तप जप संयम आदरी। श्रीस्रुत ग्यान निधानो रे। सद्गुरु चरण नमी करी। संवर जोग प्रधानोरे (वा०) ॥४॥ अच्छत लेई ऊजला। गुंहली सुंदर कीजे रे। नांण दंसण चारित्रनी। ढिगली तीन धरीजे रे (वा०) ॥५॥ चवद पूर्व व्रत इणपरै। सुगुरु संजोगे लेईरे। विधिसुं पुस्तक पूजीयै। चित अति आदर देईरे॥६॥(वां० इम तप संपूरण थयां। ऊजमणो ल्हिव कीजे रे। घरसारु धनखरचनें। नर भवलाहो लीजैरे (वा०) ॥७॥ पूठा परत विटं।गणा। पूरव नाम प्रमाणो रे। नवकरवाली कोथली लेखण ठवणी जाणोरे॥८॥ देहरै देवजुहारनें। आरती मंगल कीजें रे। सनाल पूजा वलि साचवो। तत्वसुधारस पीजैरे॥९॥(वा०) इण पर तप आराधतां। दुरगति कारण छेदैरे। चवदह रज्जु सिरोमणि। जीव अक्षय गति वेदैरे॥१०॥ (वा०) तप आराधन विधभणी। आगम वचने जो ईरे। भवियण पिणतुमे आदरो। ज्युं भव भ्रमण न होई

र ॥११॥ (वा०) (कलशः) इमसयल सुख कर गछ खरतर तपै रविजिम क्रांतए। सौभाग्य सूरि सुखिंद इण पर कह्यो पूर्वट्टत्तंतए। संवत अठारै वरस छिन्नू नयर श्री बालूचरै। ए तवन भणतां श्रवण सुणतां सयलमन वंछित फलै ॥१२॥ इति चवदै पूर्व स्तवनं संपूर्णम्। ॥*॥

॥*॥ अथ (१४) पूरव तपविधिः ॥*॥

॥*॥ चवदै पूर्वकी तपस्याके (१४) उपवास करै। (जिस दिन) जो पूर्वका उपवास हो। उसी पूर्वके नामसें (२०००) गुणनो करै। स्तवन सुणें। इस तवनमें १४ पूर्वकी नाम। और विधि सब लिखी है। उसी मुजब विवेकी जीव गुरुसें समझके करै। यह तपस्याके करनेसें ज्ञाना वरणादि कर्मका क्षयोपशम होय। शुभ ज्ञानका उदय होय। इति १४ पूर्व तपविधिः॥

॥*॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥*॥

॥*॥ (दूहा) ॥*॥ सासण देवी सारदा। वांणी सुधारस वेल। बालक हितभणी वगसिये। सुबुधि सुरंगीरेल ॥१॥ नवम अंग जिनपूजतां। मनलहि सुभपरिणाम। तप तिलकि फल पामियें। दवदंती गुणधाम ॥२॥*॥ (ढाल ॥*॥ वीर जिणेसर उपदिसै (एदेशी)।*। कमला जिम कुंडणपुरै। भुज बल नरपति भीमोरे। पदमनी पदम सुवासना। श्वेतगज स्व प्नें नीमोरे (पदम०) ॥१॥ परतख्य फल ए पुन्यना। प्रसवीसु ता पूरै मासैरे। दववंती नाम दीपतो। गुणमणि बुद्धि प्र कासैरे (प०) ॥ २ ॥ चोसठ कला विचक्षणा। रूप गुणें क

री रंभारे। देव गुरु धर्म दीपावती। व्रतधारी दृढ वंभारे (प०) ॥३॥ प्रतिमा पूजें श्रीसांतिनी। देवे दीधी विकालो रे। मात पिता प्रमोदसुं। स्वयंवर वरमालोरे। (पद्मनी०) ॥ ४ ॥ उवझाया थिपश्री निषद्नो। नल लिखीयो निलाडै रे। आनन्दसुं पंथ आवतां। पूरव पुन्य उवाडै रे (प०) ॥ ५ ॥ मझमरयणी तमभरी। मधु रव कुंत इहां वनमें रे। मणि भाले तेज दिनमणि। जाग्रत देखी अहो मनमें रे (प०) ॥६॥ ग्यांनधारी गुरु कोइ मिले। पूछीये एह प्रसन्नो रे। कर्मवलें मुनि आवीया। परिसह जीत मदन्नोरे (प०) ॥७॥ पंच जीत पंचपालता। टालता दुसह सवलारे। संजम सुध संभालता। उद्यम सिव सुख कमलारे (प०) ॥८॥※॥ (दूहा) ॥※॥ मणि तेजें मुनि तरुठये। रथ थकी स्त्रीभरतार। देवे तीन प्रदक्षिणा। विधसुं चरण जुहार ॥ ६ ॥ देसन सुण पावन थया। ग्यान सुधारस पाय। को तप परभव तिल कहै। कहियै श्रीमुनिराय ॥१०॥※॥ (ढाल भरथनृप भावसुं ए (एदेशी ॥※॥ मधुरस्वरै मुनिवर कहैए। नाणी गुरु सुपसाय। दीपक सज्ज लोकनाए ॥ कर्म सुभासुभ परभवे ए। इह भव फल निपजाय। करम गति वांकडीए ॥११॥ ईहि नांण भव आगनोए। नृप सुणें निरमल भाव। समकित साहीयो ए॥ धर्मवतीको नृपवधु ए। जांण्योहे तत्व प्रस्ताव। साची जिन वाचनाए॥ १२ ॥ चोथ प्रमुख तप चूंपसूं ए। किरिया सुद्ध करी एह। भले चित्त भावसुं ए ॥ नवांग पूजे तिलकसुं ए। चाढे जिन चोवीस। रयण कंचण जडाए ॥१३॥ तिलक २ सें पांमियो ए। सम

किस एह सतीस । जनम सफलो गिणेए॥ भगवन तपविधि भाषीयै ए । नल कहै बोध वरीस । पीहर षटकायनाए ॥ १४॥ आदिनाथ अरिहंतनाए । षठ उपवास कहीस । विचौ बीहारसुं ए ॥ चोथ दोय जिन वीरनाए। अजितादिक बा वीस । आणा गुरुसिर वहीए ॥ १५ ॥ पोषध तीस त्योंनै थयाए। पूजन तिलक चढाय। तारक जगदीसनें ए । उद्यापन संघ भक्तिसुं ए ।/ जन्म सफल नल राय। सूधैमन साधीयै ए ॥१६॥ सुण वांणी समकित ग्रहैए। पयप्रणमो गुरु वीर। चित्त उमाहीयो ए ॥ इण पर जे भवि आदरै ए। थायै चरम सरीर। मूल सुख सासतो ए ॥ १७॥※॥ कलशः ॥※॥ श्रीसांतिदाता त्रिजगत्राता भविक ध्याता सुखकरा । इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वांध्यो शिव वरां। आगमे आखै सूरीय साखै सुगुरु भाषै सुण यथा । सुद्ध ध्यावै भविक भावै विजय विमल जिनवर कथा ॥१८॥ इति तिलक तपस्या स्तवन संपूर्णम् ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ तिलक तपस्याविधिः ॥※॥

॥※॥ शुभ दिन गुरुके पास । तिलक तपस्या ग्रहण करके । तीस (३०) उपवास करै। (प्रथम) श्रीऋषभ देव स्वामीके (६) छ उपवास करै (जव)

१ ॥ श्रीऋषभ देव स्वामी सर्वज्ञाय नमः ।

इस पदको (२०००) गुणनो करै । फेर श्रीमहावीरस्वामी के (२) दो उपवास करै । (जव)

१ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञाय नमः ।

इस पदको (२०००) गुणनो करै । और श्रीअजितनाथ

स्वामीकों आदलेके (२२) बाईस भगवंतके (२२) उपवास करै

१ ॥ ओंअजितनाथस्वामी सर्वज्ञाय नमः।

इसी अनुक्रमसें बाईस भगवंतको गुणनो करै। (जिस दिन) जो माहाराजकै नाम को उपवास होय। उसी नाम को (२०००) गुणनो करै। और सब बिधि तवनमें लिखी है। उसी मुजब करै। इति तिलक तपस्याविधिः।

॥ ॥ अथ सोलीयेको स्तवन लिख्यते ॥ ॥

॥॥ वीर जिनेसर भाषीयोरे लाल। सहु व्रतमें सिर ताज (भवि प्राणीरे)। कषाय गंजन तप आदरो रे लाल। इणथी पातिक जाय (भ०) कोड़ वरस तप आदरै रे लाल क्रोध गमावै फलतास (भ०)। मांन करै ज प्राणियारे लाल। ते जगमें न सुहाय (भ०) ॥२॥ व्रतमें माया आदरीरे लाल। स्त्री पणोपायो मल्लिनाथ (भ०) रूप पराव्रत कीया घणारे लाल। आषाढभूति गणिका साथ(भ०३वी०) च्यार कषाय है मूलगारे लाल। उत्तम सोलै भेद (भ०) इम भ=२ भमतो थकोरे लाल। जीव पामै वहु खेद (भ० ४ वी०, एकासण व्रत ज करै रे लाल। लाख वरस दुख हां णरे (भ०) नीवी व्रत दूजो कह्या रे लाल। एधारो जिन वर वांण(भ०५)आंबिलनो फल बहु कह्योरे लाल। उपजै लबधि अपार (भ०) उपवास करतां भावसुं रे लाल। पा में भवनो पाररे (भ०) इम दिन सोलै तप करै रे लाल। पू रण एव्रत थाय (भ०) देव गुरु पूजा करैरे लाल। तिणथी पातिक जाय (भ० ७) ए तप आदरथी करै रे लाल। मन

वंछित फल थाय (अ०) नर सुर रिद्धि पिण भोगवैरे लाल निश्चै सुगति जाय (अ०८वी०)। इति कषाय गंजन सोलो ये को स्तवन संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ सोलिये तपका विधि लि० ॥ ॥

॥ ॥ क्रोध १। मान २। माया ३। लोभ ४। (यह ४ कषाय में)। अनंतान बंधियो १। अप्रत्याख्यानियो २। प्रत्याख्यानियो ३। संजलणो ४। (इस माफक) एकैक कषायके च्यार च्यार भेद करनेंसें १६ भेद हुय (यह)। १६ भेद कषायके दूर करनें कों। प्रथम एकासणो १। निवी २। आंबिल ३। उपवास ४। इसी अनुक्रमसें १६ दिन तप करै स्तवन सुणें। तप पूर्ण होनेंसें। यथाशक्ति उद्यापन करै। इति सोलिया तपविधि: ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ (४५) पेंतालीस आगम तप विधि: ॥ ॥

॥ ॥ शुभ दिन गुरुके पास पेंतालीस आगम तप ग्रहण करै। २ दूज। ५ पांचम। ११ इग्यारस। (इत्यादि) ग्यान तिथिके दिन। अनुक्रम से उपवास (वा) एकासणा करै। जिस दिन जो आगम को तप होय। उसी आगम को गुणनो करै। सिद्धांत लिखावै। सिद्धांत सुणें। पढनें वालुं कों सहाज्य करैं। अपनें शक्तिमाफक। सब ठिकाणें ज्ञानकी वृद्धि करै। (प्रणमुं श्रीगुरुपाय०) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणें। ऐसें (४५) दिन तपस्या पूर्ण होनें सें। पेंतालीस (४५) आगम की पूजा करावै। सुंदर पोसालमें ग्यानका उपगरण चढावै। (इत्यादि) अत्यन्त खुसी

होके (४५) आगमका आराधन करै। यह तपस्या के करनेसें। मूरखपणा दूर होके। शुद्ध आत्म ज्ञानकी प्राप्ति हो ॥※॥ (अब (४५) आगमके नाम लिखते हैं) ॥※॥

॥※॥ प्रथम इग्यारै अङ्गको गुणनो ॥※॥

१ ॥ श्रीआचाराङ्ग जी सुत्ताय नमः । १ ।
२ ॥ श्रीसुयगडांग जी सुत्ताय नमः । २ ।
३ ॥ श्रीठाणांग जी सुत्ताय नमः । ३ ।
४ ॥ श्रीसमवायांगजी सुत्ताय नमः । ४ ।
५ ॥ श्रीभगवती जी सुत्ताय नमः । ५ ।
६ ॥ श्रीज्ञाताधर्मजी सुत्ताय नमः । ६ ।
७ ॥ श्रीउपासग दसाजी सुत्ताय नमः । ७ ।
८ ॥ श्रीअन्तगड दसाजी सुत्ताय नमः । ८ ।
९ ॥ श्रीअनुत्तरोववाईजी सुत्ताय नमः । ९ ।
१० ॥ श्रीप्रश्नव्याकरण जी सुत्ताय नमः । १० ।
११ ॥ श्रीविपाकजी सुत्ताय नमः । ११ ।

॥※॥ अथ बारै उपाङ्ग नामः ॥※॥

१ ॥ श्रीउववाइजी सुत्ताय नमः । १२ ।
२ ॥ श्रीरायपसेणीजी सुत्ताय नमः । १३ ।
३ ॥ श्रीजीवाभिगमजी सुत्ताय नमः । १४ ।
४ ॥ श्रीपन्नवणाजी सुत्ताय नमः । १५ ।
५ ॥ श्रीजंबुद्वीप पन्नत्तीजी सुत्ताय नमः । १६ ।
६ ॥ श्रीचंदपन्नत्तीजी सुत्ताय नमः । १७ ।
७ ॥ श्रीसूरपन्नत्तीजी सुत्ताय नमः । १८ ।

८ ॥ श्रीकप्पियाजी सूत्राय नमः । १९ ।
९ ॥ श्रीकप्पवडंसियाजी सूत्राय नमः । २० ।
१० ॥ श्रीपुप्फियाजी सूत्राय नमः । २१ ।
११ ॥ श्रीपुप्फचूलियाजी सूत्राय नमः । २२ ।
१२ ॥ श्रीवह्णीदसाजी सूत्राय नमः । २३ ।

॥ अथ ६ छेदको गुणनो ॥

१ ॥ श्रीव्यवहारछेद सूत्राय नमः । २४ ।
२ ॥ श्रीबृहत्कल्पजी सूत्राय नमः । २५ ।
३ ॥ श्रीदसाश्रुतस्कंधजी सूत्राय नमः । २६ ।
४ ॥ श्रीनिशीथजी सूत्राय नमः । २७ ।
५ ॥ श्रीमहानिशीथजी सूत्राय नमः । २८ ।
६ ॥ श्रीजीतकल्पजी सूत्राय नमः । २९ ।

॥ अथ दस पयन्ना नामः ॥

१ ॥ श्रीचौसरणपयन्नाजी सूत्राय नमः । ३० ।
२ ॥ श्रीसंथारपयन्नाजी सूत्राय नमः । ३१ ।
३ ॥ श्रीतंदुलपयन्नाजी सूत्राय नमः । ३२ ।
४ ॥ श्रीचंदाविज्झिया सूत्राय नमः । ३३ ।
५ ॥ श्रीगणिविज्झिया सूत्राय नमः । ३४ ।
६ ॥ श्रीदेवविज्झिया सूत्राय नमः । ३५ ।
७ ॥ श्रीवीरथुवोजी सूत्राय नमः । ३६ ।
८ ॥ श्रीगछाचारजी सूत्राय नमः । ३७ ।
९ ॥ श्रीजोतिष्करंडजी सूत्राय नमः । ३८ ।
१० ॥ श्रीमहापच्चक्खाणजी सूत्राय नमः । ३९ ।

॥॥ मूलसुत्रजी का नामको गुणनो ॥॥

१ ॥ श्रीआवश्यकजी सुत्राय नम । ४० ।

२ ॥ श्रीउत्तराध्ययन जी सुत्राय नमः । ४१ ।

३ ॥ श्रीउंघनिर्युक्तिजी सुत्राय नमः । ४२ ।

४ ॥ श्रीदसवीकालकजी सुत्राय नमः । ४३ ।

१ ॥ श्रीअनुयोगद्वारजी सुत्राय नमः । ४४ ।

२ ॥ श्रीनंदीसुत्रजी सुत्राय नमः । ४५ ।

॥ इति ४५ सुत्रांका नाम (तथा) गुणनो संपूर्णम् ॥॥

॥॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधि लि० ॥॥

॥॥ शुभ दिन गुरुके पास (११) गणधर तप ग्रहण करै । (११) दिन उपवास (वा) एकासणा करै । (जिस दिन) जो गणधर माहाराजको तप होय । उसी नामको (२०००) गुणनो करै ॥॥ अब (११ गणधरों का नाम लिखते हैं ॥

१ ॥ श्रीइन्द्रभूति गणधराय नमः ।

२ ॥ श्रीअग्निभूति गणधराय नमः ।

३ ॥ श्रीवायुभूति गणधराय नमः ।

४ ॥ श्रीव्यक्तभूति गणधराय नमः ।

५ ॥ श्रीसुधर्मास्वामी गणधराय नमः ।

६ ॥ श्रीमंडित स्वामी गणधराय नमः ।

७ ॥ श्रीमौर्यपुत्रजी गणधराय नमः ।

८ ॥ श्रीअकंपितजी गणधराय नमः ।

९ ॥ श्रीअचलजी गणधराय नमः ।

१० ॥ श्रीमेतार्यजी गणधराय नमः ।

११ ॥ श्रीप्रभवजी गणधराय नमः ।

।। यह (११) गणधर । भगवंत श्रीमहावीर स्वामी के पास अर्थ सुणके । सब सुतको रचना करनेवाले भए। (इसी सें, सब भव्यजीव । परम मङ्गल जानके । यह तपस्या करे । शुद्ध भावसे गणधरपद आराधन करै । गोतमरास सुणें। पूर्ण होने सें । गणधर माहाराजको पूजा करे । आचार्यादिककी भक्ति करे । (यथाशक्ति) परमान्न भोजनसें साहमी वच्छल करै ॥ ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ नवकार तपविधि लि० ॥ ॥

॥ ॥ शुभदिन गुरुके पास नवकार तप ग्रहण करै । जिस पदका जितना हरफ होय । इतनाइ उपवास करै उसी पदको (२०००) गुणनो करे । (सो लिखते हैं) ॥

१ ॥ णमो अरिहंताणं । उपवास । ७ ।

२ ॥ णमो सिद्धाणं । उपवास । ५ ।

३ ॥ णमो आयरियाणं । उपवास । ७ ।

४ ॥ णमो उवज्झायाणं । उपवास । ७ ।

५ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं । उपवास । ६ ।

६ ॥ एसो पंच णमुक्कारो । उपवास । ८ ।

७ ॥ सव्वपावप्पणासणो । उपवास । ८ ।

८ ॥ मङ्गलाणंच सव्वेसिं । उपवास । ८ ।

९ ॥ पढमं हवइ मङ्गलं । उपवास । ९ ।

॥ ॥ ऐसें नवकार मंत्रका । ६८ उपवास करै । (किं

कप्पतरु रे अयाण०) इत्यादि नवकार मंत्रका फलगर्भित स्तवन सुणे (सो) पूर्वे लिख्यो है। तप पूर्ण होने से। यथाशक्ति नवपदको उछव करै। (यह) नवकार मंत्र १४ पूर्वको सार भूत है। जो भव्यजीव शुद्धभावसे सेवन करेंगे (सो) अनेक सुखकों प्राप्त होंगे। इति नवकार तपविधि संपूर्ण ॥

॥❁॥ अथ सब तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै (सो) विधि लिख्यते ॥❁॥

॥❁॥ (प्रथम) ५ साथिया करैं। (नमंत सामंत०) यह गाथा पढके। शक्ति माफक ग्यान पूजा करे। इरियावही पडिक्कमें। एकलोगस्सको काउसग्ग करै। (पारकै) प्रगट लोगस्स कहै। नीचा बैसकै। मुहपत्ती पडिलेहै। दो वांदणा देवै। स्थापनाजीकों खमासमण देई (भगवन्) अमुक तप गहणत्थं चेइयं वंदावेह। (इसो कहकै) चैत्य वंदन करै। णमोत्थुणं (इत्यादि)। अरिहंत चेइयाणं० (अन्नत्थ०) कहकै (४) थुइ कहै। चोथी गाथा कहकै। नीचा बैसै। णमोत्थुणं कहै। (ऊभा होकै) (श्रीशांतिनाथ स्वामी आराधनार्थं करेमि काउसग्गं)। अनत्थु कहकै १ लोगस्सको काउसग्ग करै (पारकै) नमोऽर्हत् सिद्धा। कहकै ॥❁॥ श्रीमते शांतिनाथाय। नमः शांतिविधायिने। त्रैलोक्यस्यामराधीस। मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये॥ १॥❁॥ यह थुइ कहै (शांतिदेवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं) अनत्थु० कहै १ नवकारनो काउसग्ग करै। नमोऽर्हत् सिद्धा कहकै ॥❁॥ शांतिः शांतिकरः श्रीमान्। शांतिं दिशतु मे गुरुः।

शांतिरेव सदा तेषां । येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ १ ॥ यह थुई कहै । पीछे श्रुतदेवता । क्षेत्र देवता । भुवन देवताको काउसग्ग अनुक्रम सें करै । एक एक नवकारनो काउ सग्ग करकै । अपणीर थुई कहै । पीछे (शासन देवताको काउसग्ग १ नवकारको करै ॥※॥ या पाति शासनं जैनं । सद्य प्रत्यूह नाशनी । साभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं । भूयाच्छासनदेव ता ॥ १ ॥ यह थुइ कहकै (समस्त वेयावृत्तिकर आराध नार्थं करेमि काउसग्गं) अनत्थू० एक नवकारनो काउसग्ग करै । (पारकै) श्रीशक्र प्रमुखा यक्षाः । जिनशासन संस्थि ताः । देवान् देव्यस्तदन्येपि । संघरक्षंत्वपायतः ॥ १ ॥ ※ ॥ यह थुई कहकै । नीचा वैसै । णमोत्थुणं कहकै । जयवीय राय तांइ चैत्यवंदन करै । खमासमण देकै । भगवन् (अ मुक तप गहणत्थं करेमि काउसग्गं) एक लोगस्सको काउ सग्ग करै (पारकै) लोगस्स कहै । खमासमण देकै । ३ नव कार गुणें । फेर खमासमण देकै (इच्छकार भगवन् (असुक तप गहण दंडक उचरावो जी) (गुरु कहै उचरावेमो) । ऐसा कहै ॥※॥ अहण्णं भंते । तुम्हाणं समीवे । असुकतवं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि । (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ । दव्वउणं असुकतवं । खित्तउणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालउणं जावपरिमाणं । भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि । छलेणं न छलिज्जामि । जाव सन्निवाएणं न भविज्जामि । जाव असेणावा । केणइ रोगायंकादि परि णामवसेण । एसो मे परिणामो न परिवज्जइ । तावमे एस तवो । (अन्नत्थ) रायाभियोगेणं । बलाभियोगेणं । गणाभि

योगेणं। देवाभियोगेणं। गुरुनिग्गहेणं। वित्तीकंतारेणं। अन्नत्थणा भोगेणं। सहस्सागारेणं। महत्तरागारेणं। सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ॥॥ जो तप ग्रहण करै उसी तपका नाम लेके। गुरुकी पास ३ वेर यह पाठ सुणें गुरु न हो (तो) थापनाचार्यजी समच्चे। तीन वेर यह पाठ पढ़े ॥ (पीछै गुरु कहैं) हत्थेणं। सुत्तेणं। अत्थेणं। तदुभएणं सम्मं धारिणीयं। चिरं पालणीयं। गुरुगुणेहिं वुड्ढाहि नित्थारगपारगाहोहि। (ऐसा गुरु कहै) पीछे खमासमण देके (गुरु मुखे) पच्चक्खाण करै। (अथवा) गुरु न हो (तो) आपमुखे करै। इति सब तपस्या ग्रहणविधिः संपूर्णम् ॥

॥※॥ अथ सब तप पारण विधि लि० ॥※॥

॥※॥ प्रथम ग्यान पूजा करके। इरियावही पडिक्कमें। (अमुक तप पारिवा० मुहपत्ती पडिलेहैं।) २ वांदणा देवै। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् तुम्हे अम्हं अमुक तप पारा वेह (गुरु कहै पारावेमो) इच्छामि खमासमणो०। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। अमुक तप निक्खवणत्थं काउसग्गं करावेह। (गुरु कहै करावेमो) अमुक तप पारणार्थं करेमि काउसग्गं। अन्नत्थ कहके। १ नवकारनो काउसग्ग करै स्तुति गाथा कहै। पीछे णमोत्थुणं कहैं। (वैसके) भगवन् अमुक तप करतां। अविधि आसातनायें करी। जो दूषण लागो होय। सो मन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं। और ग्यानं भक्ति द्रव्यसें भावसें किया (सो) प्रमाण फलदाय कहो ज्यो। (गुरु कहै नित्थारगपारगाहोह)। पीछे पच्च

क्षमा करै (अमुक तप आलोयण निमित्तं करेमि काउ सग्गं) अन्नत्थु कहै। ४ लोगस्सको काउसग्ग करै। प्रगट लोगस्स कहै। पीछे उपगरण पात्र अन्नपानादिक से साधु भक्ति करै। अपने शक्ति माफक। जैन विद्याभ्यास करावों वाले। विद्यागुरुकी भक्ति करै। साहमी वच्छल करै। पहरा वणी करै। पीछे जाचकोंकों दान सन्मान करै। इति सब तपस्या पारणेंका विधी संपूरणम्॥ ※॥ ॥ ※॥

॥※॥ अथ सूतक विचार लि० ॥※॥

॥※॥ पुत्र जन्म होणेंसें १० दिन सूतक। पुत्री जन्म्यां दिन १२ सूतक। (और) जो स्त्रीकै पुत्र होय। उस स्त्रीकै एक मास को सूतक। पुत्र होते मरण पामें (तो) दिन १ सूतक। परदेसे मृत्यु होइ (तो) दिन १ सूतक। गाय। भैंस। घोडी। सांढ। घर मांहे व्यावै (तो) दिन १ सूतक। मरण हुवां कलेवर घर बाहर लेजाय। जहां तक सूतक। दास दासी अपनी नेश्रायें रहते। पुत्र पुत्र्यादिकका जन्म मरण हो (तो) दिन ३ सूतक। (और) जितना महिनाको गर्भ गिरै। तितना दिन सूतक। (अब) कोईकै जन्म मरणका सूतक होणेंसें १२ दिन देवपूजा न करै। (जिसके) मृतक के सूतकमें। घरका मूलकांधिया १२ दिन देवपूजा न करै। और घरका तीन दिन देव पूजा न करै। (और) मृतक नें छूवा हो (तो) २४ पहर पड़िक्कमण न करैं। (जो) सदाका अखंड नियम हो। (तो) समता भाव रखके संवर पणामें रहै। पर मुखसें नवकार मन्त्रकावी उच्चारण करै नहीं।

स्थापना जी के हाथ लगावै नहीं। और जो सूतक को छूवा न हो (तो आठ पहर पडिक्कमणा न करै। भैंसके जब बच्चा होय। तब १५ दिन पीछै दूध पीणो कल्पै। गायकै बच्चो होय (तो) १७ दिन पीछै दूध पीणो कल्पै। बकरीको दूध दिन ८ पीछै पीणो कल्प। (इत्यादि) संक्षेप सूतकका विचार इहां लिखा है। विशेष विचार शास्त्रांतरसें जाणना ॥※॥ इति सूतक विचार संपूर्णम् ॥※॥

॥※॥ अथ दिनप्रति श्रावक चवदे नियमका प्रमाण करै (सो) विचार लि० ॥※॥

॥※॥ सच्चित्त १। दव्व २। विगई ३॥ पाणहि ४। तंबोल ५। वत्थ ६। कुसुमेसु ७॥ वाहण ८। सयण ९। विलेवण १०॥ बंभ ११। दिशि १२। न्हाण १३। भत्तेसु १४। (अर्थः) ॥※॥ श्रावक नितप्रति नियम संभालै। दिनमें जो वस्तु अपनें अंग खाते लगै। उसीका प्रमाण रक्खै। उपरांत त्याग करै। तहां प्रथम (सचित्त वस्तुको परिमाण करै) ॥※॥ मट्टी सर्व जाति। पाणी सर्व जाति। जल अग्नि वायु। वनस्पतीका छेदन भेदन। तरकारी सर्वजाति। फल सर्वजाति। परवल। तोरी। केला। खरबूजा। नींबू। आंब। नारंगी। जामूण। कमल गट्टेका छत्ता (इत्यादि) धारणा प्रमाणे सचित्त परिमाण करै॥ १॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (दूसरा द्रव्य परिमाण) ॥※॥ तहां धातु वस्तुको छोडी। (तथा) अपणी आंगुली विनां। जो वस्तु मुखमें दीजै। सो सब द्रव्यकी गिणती में आवै। नामांतर। स्वा

दांतर। स्वरूपांतर। परिणामांतर। द्रव्यांतर होणेसें द्रव्यां तर होइ। (यथा) गऊं एक द्रव्य। तिसकी पतली रोटी। फोगा रोटी। वेढवा रोटी। बाटी। यह सब जूदा द्रव्य कहिये। (इस प्रकारै) सब द्रव्य खांणेमें आवे। भात दालि। रोटी। मांढियो। पलेव। तरकारी सब जाति। पापड़। खीचीया। लड्डू सब जाति। फोगो। घेवर। हेस मी। खाजा। (इत्यादि समस्त द्रव्य परिमाण करै)। इहां उत्कृष्ट द्रव्यको नाम ले रक्खै (तो) एकही द्रव्य कहीये। (जैसें) सेवैकी खीचड़ीका नाम लेके रक्खै (तो)। अनेक द्रव्य निःप्पन्न है (तोभी) एक द्रव्य कहीयें ॥ ※ ॥ इति द्रव्य प्रमाण दुसरा नियमः ॥※॥२॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (तीसरा विगय परिमाण नियमः) ॥※॥ (तहां) दश विगयमें च्यार महाविगयका तो त्याग होता है। (और ६ विगय) घृत १। तेल २। मीठा ३। दूध ४। दही ५। कड़ाह विगय ६। यह छ विगय धारणा प्रमाण रखैं। इति विगय नियमः ३ ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (अथ चौथा पांदत्राणनियमः)॥※॥ तहां। जूती। खड़ाऊ। मोजा। अपणा। इतना विराणा। ऐसें दिन प्रतें धारणाप्रमाण मोकलारक्खै ॥※॥ इति पाणहि नियमः।

॥※॥ (पांचमा तंबोल नियम मध्ये) ॥※॥ पांन (तथा) बीड़ा। सुपारी। लवंग। इलायची। छोटी बड़ी। जायफल। जावंत्री प्रमुख सब स्वादिम वस्तु। किरियाणा प्रमुख सब जात धारणा प्रमाण रक्खैं ॥ इति तंबोल नियमः ५॥※॥

॥※॥ (छट्ठा वस्त्र नियम मध्ये)॥※॥ पोसाख२। तथा ४।

टूटा वस्त्र ५ । तथा ७ । मोकला रक्खै । पोसाख १ मध्ये पगड़ी १ । जामो १ । कमरबंधो १ । धोती १ । दुकपट्टो उत्तरासण १ । यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख कहीये । ऐसे नही कर सकै (तो) ४० तथा ५० कपड़ा दिन मध्ये मोकला । पराया वस्त्र भूल चूकमें आवै (तो) जयणा ॥ ॥ इति वस्त्र नियमः ६ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ सातमा फूल नियमः) ॥ ॥ तिहां गुलाब । चंपेली । वेला । केवड़ा । केतकी । कुंद । मचकुंद । सेवती । हजारा । कमल (इत्यादि) सब फूलका धारणा प्रमाणे परिमाण करै ॥ ॥ इति फूल नियमः ७ । ॥ ॥

॥ ॥ (आठमा वाहन नियमः) ॥ ॥ तिहां रथ । गाड़ी । घुड़वहिल । खड़खड़ । कोच । पालकी । घोड़ा । हाथी । चोपाला । म्याना (इत्यादिक) सब थल वाहन जाति ॥ मोरपंखी । बतक । घुड़दोड़ । लचकार । मगर । पनसोई । पलवार । बजरा । (इत्यादि) सब नावजाति । सर्व तरता । फिरता । चरता । यह तीन प्रकारके वाहन धारणा प्रमाणे राखै ॥ ॥ इति वाहन नियम ८ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ शय्या नियमः) ॥ ॥ तिहां पिलंग । खाट । तखत । चौकी । पट्टा गद्दी । कुरसी । वनात । पट्टसुजनी । सेलुंजी । दुलीचा । चांदणी । सीतल पट्टी । सफ । चटाइ सबजाति । दरखतकी छालका चमड़ेका कांबला । मुखमल । कारचोबी (इत्यादि) धारणां प्रमाणें शय्या प्रमाण करै । ॥ ॥ इति शय्यानियमः ९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ दशमा विलेपननियमः) ॥ ॥ तिहां । सरसों

का । राईका । आटैका । तेल । फुलेल । सब जातिका । केसर । चंदन । कपूर । कस्तूरी । रोली (इत्यादि) सरीर सुख वास्तै । (तथा) रोगादिकारणें औषधादिकका विलेपन फोड़ां ऊपरि मलम प्रमुख । आंखिमें अंजन (इत्यादि) अंगोपांगमें लगाणा (सो) विलेपन धारणा प्रमाणें परिमाण करै ॥※॥ इति विलेपन नियमः १० ॥※॥

॥※॥ (अथ ब्रह्मचर्य नियमः) ॥※॥ तिहां रात्रिकों (तथा) दिनकों सुईडोरेके दृष्टांत भोगादिक का प्रमाण करै । स्वप्नको मन वचनकी जयणा ॥※॥ इति ब्रह्मचर्यनियमः ॥११

॥※॥ (अथ दिशि नियमः) ॥※॥ तिहां । पूरब १ । पश्चिम २ । उत्तर ३ । दक्षिण ४ । अग्निकूण ५ । नैऋतकूण ६ । वायव्यकूण ७ । ईशानकूण ८ । अधोदिशि ९ । ऊर्द्धदिशि १० । यह दश दिशिकों अपनें जाणैका प्रमाण करै । चिट्ठी लिखणी । आदमी भेजणा । देशांतरकी चीठी वाचणी । तिसकी जयणा ॥※॥ इति दिशि नियमः १२ ॥※॥

॥※॥ (अथ तेरमा स्नान नियमः) ॥※॥ तिहां । आज दिन मध्ये स्नान २ । तथा ४ । वेर मोकला । परंतु पाणी का तोल रखै (तथा) घड़ा प्रमुखका प्रमाण रखै । स्नान एक मध्ये इतनो पाणी खरच करुं । अधिक नहीं ढोलुं । ॥※॥ इति स्नाननियमः १३ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ (अथ चौदमा भात नियम) ॥※॥ दिनमध्ये भात सेर२ तथा ४ । दो वेर (तथा) च्यारवेर खाऊं । उपरांत दुविहार । (तथा) चौविहार धारणा प्रमाणे रखै (तथा) दिनमध्ये जल पीणे में आवै । तिसका प्रमाण रखै ।

तोलसें तथा मापसें ॥※॥ इति चौदह नियम भाषा ॥१४॥ समाप्तम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ द्वादश व्रतग्रहण करण विधि लि० ॥※॥

॥※॥ प्रथम जिनभवन (अथवा) जिण प्रतिमा आगै। शुद्ध सपेद वस्त्र पहिरके। चंदन केसरको तिलक करै। चावल चाढै। पीछै। अखंड तंदुल मुष्टि ३ थाल मध्ये रखैं तिन ऊपर नालेर रोकनाणो धरै। तीन प्रदक्षिणा देकै। इरियावही पडिक्कमै। (इच्छकार०) सम्यक्त सामाई आरोहणार्थं चेइयाइं वंदावेह (गुरु कहै वंदावेमो) चैत्यवंदन करै। बाम पासै चावलांको साथीयो करै। श्रीफल धरै। पीछै गुरु वर्द्धमान विद्या अभिमंत्रत श्रावक मस्तकें वास क्षेप करै। वर्द्धमान स्तुतीसें देववंदन करावै। पीछै सतरै थूइमें नवकार १ एकको काउसग्ग करैं। पीछै शासन देवी निमत्तें लोगस्स ४ काउसग्ग करै। (पारकै) प्रगट लोगस्स कहै। पीछै नमस्कार ३ गुणकै। सक्रस्तव कहै। नमोर्हत् सिद्धा० कहकैं। बड़ो स्तवन कहै। पीछै जयवीयराय कहै ॥※॥ इति नंदी विधिः ॥※॥ पीछै खमासमण देई। श्रुतसामायक। सम्यक्त सामायक। आरोहणार्थं काउसग्गं करावेह (गुरु कहै करावेमो) पीछै सम्यक्त सामाइ आरोपणार्थं करेमि काउसग्गं। च्यार ४ लोगस्सको काउसग्ग करै (पारकै) प्रगट लोगस्स कहै। पीछै ३ वेर नवकार गुणकै गुरुकै पास ३ वेर सम्यक्त दंडक उच्चरै। गुरु पाठ बोलै उसी को मनमें धारणा रखै (सो) लिखते हैं ॥※॥

॥卐॥ (सुत्तं) (अहन्नं भंते) तुम्हाणं समीवे मिछत्ताउ पडि क्कमामि। सम्मत्तं उवसंपज्जामि। नोमेकप्पइ। अज्जप्पभिइ अन्नतीत्थिएवा। अन्नतीत्थिदेवयाणिवा। अन्नतीत्थि परिग्गहिय अरिहंतचेइयाणिवा। वंदित्तएवा। नमंसित्तएवा। पुव्विं अणालित्तएणं आलवित्तएवा (तेसिं) असणंवा। पाणंवा। खाइमंवा। साइमंवा। दाउंवा। अणुप्पाउंवा। तेसिंगंधमल्लाइं पेसिउंवा। (नन्नत्थ) रायाभियोगेणं। गणाभियोगेणं। बलाभियोगेणं। देवाभियोगेणं। गुरुनिग्गहेणं। वित्ती कंतारेणं। तंचउव्विहं (तंजहा) दव्वउ। खित्तउ। कालउ। भावउ। तत्थ (दव्वउ) दंसणदव्वाइं अहिगिच्च। (खित्तउ) जाव भरह मज्झिमखंडे (कालउ) जावज्जीवाए। (भावउ) जाव छलेणं न छलिज्जामि। जाव सन्निवाएणं नभविज्जामि। जाव केणइउम्माइ वसेणं। एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवडइ। तावमे एसो दंसणाभिग्गहो। अन्नत्थणा भोगेणं। सहस्सागारेणं। महत्तरागारेणं। सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं। वोसिरइ ॥卐॥ पीछे ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः ॥卐॥ ऐसे अक्षर श्रीगुरुके पास हाथमें लिखाके। जिनप्रतिमा कों वासक्षेप चढावे। नवकार पढतो थको ३ प्रदक्षिणा देकै (देव गुरु प्रते वांदै) पीछे स्तुत सामायिक थिरो करणार्थं। सत्तावीस उत्सासप्रमाणें। एक लोगस्सको काउसग्ग करै। एक लोगस्स कहकै पारै। पीछे सम्यक्तरूपी कल्पवृक्ष पायकै। अति आनन्द सें ऐसा अभिग्रह वचन बोलै ॥卐॥ अरिहंतो महदेवो। जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो। जिन पन्नत्तं तत्तं। इय सम्मत्तं मए ग

हियं ॥ १ ॥ पीछे गुरु धर्म्मदेशना देवै। मिथ्यात्व वरजे। नित्य चैत्यवंदन इतनी वेर करूंगा। इतना नवकार नित्य गुणुंगा। फल केसरादि वर्षप्रतें इतना चढावुंगा। ग्यान दर्शन चारित्रके भक्ति अर्थै इतनो द्रव्य खरचूंगा। सील व्रत इतनो पर्व तिथि पालुंगा। नित्य पच्चक्खांण इस माफक करूंगा। दिनकों नवकारस्यादि व्रत (तथा) रात्रीकों चउ विहार। तिविहार। दुविहार। प्रमुख। और। बावीस अभक्ष। बत्तीस अनंतकाय। विदल प्रमुख सब छोडुंगा। (इत्यादि) अपनी धारणा माफक सबवस्तुका प्रमाण। गुरु के सन्मुख करै। बारै व्रतका टीप सुणें। जिसमें लिया हुवा व्रतकों अतीचार न लगै ऐसा उपियोग सदा रखै॥॥ इति सम्यक्तारोपण विधि: ॥॥ ॥॥

॥॥ अथ प्राणातिपातव्रत दंडक लि० (१) ॥॥

॥॥ (अहन्नं भंते। तुम्हाणं समीवे। थूलग पाणाइ वायं संकप्पिउ निरवराहं पच्चक्खामि। जावज्जीवाए। एग विहं। एगविहेणं (अथवा) दुविहं। तिविहेणं। मणेणं। वायाए। काएणं न करेमि। न कारवेमि। तस्स भंते। पडि क्कमामि। निंदामि। गरिहामि। अप्पाणं वोसरामि ॥॥ यह पहला व्रतका दंडक वार ३ उच्चरावै ॥ १ ॥

॥॥ (अहन्नं भंते। तुम्हाणं समीवे। थूलगं मुसाइ वायं। जीहाछेयाइहेउअं। कन्नालीयं। गोवालीयं। भूमा लीयं। थापणमोसा। कूटसाखीयं। पंचविहं पच्चक्खामि। दक्खिन्नाइ अविसए। दव्वउ। खित्तउ। कालउ। भावउ।

दव्वओणं मुसावायं। खित्तओणं इत्थवा अणत्थवा। कालओणं जावज्जीवाए। भावओणं जावगहेणं न गहिज्जामि। जाव छलेणं न छलिज्जामि। अन्नेण केणवि रोगाइयं। एसो परिणामो न परिवडइ। ताव अभिग्गह। दुविहं। तिविहेणं। अन्नत्थणा भोगेणं। सहस्सागारेणं। महत्तरागारेणं। सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ)॥ २ ॥*॥ ॥*॥

॥*॥ (अहन्नं भंते तुम्हाणं समीवे। अदिन्नादाणं। खत्तखणणाइयं। चोरंकारकरं। रायनिग्गहकारयं। सचित्ताचित्तवत्थुविसयं पच्चक्खामि। दव्वओ। खित्तओ। कालओ। भावओ॥ दव्वओणं अदिन्नादाणं। खित्तओणं इत्थवा अणत्थवा। कालओणं जावज्जीवं। भावओणं जावगहेणं न गहिज्जामि। जावछलेणं नछलिज्जामि। अन्नेण केणवि रोगाईयं। एसो परिणामो न परिवडई। ताव अभिग्गह। दुविहं। तिविहेणं। अन्नत्थ० सहस्सा० महत्त० सव्व० वोसिरइ ॥३॥

॥*॥ (अहन्नं भंते तुम्हाणं समीवे। उदारिय वैक्रियभेयं। थूलमेऊणं पच्चक्खामि। अहागहियभंगएणं। दिव्वंतिरित्थं। माणसियं। एगविहं। एगविहेणं। पच्चक्खामि। दव्वओ। खित्तओ। कालओ। भावओ॥ दव्वओणं मेऊणं। खित्तओणं इत्थवा अणत्थवा। कालओणं जावज्जीवाए। भावओणं। जावगहेणं न गहिज्जामि०। अन्न०। सह०। मह०। सव्व०। वोसिरइ ॥४॥ * ॥ ॥*॥ ॥*॥

॥ * ॥ (अहन्नं भंते तुम्हाणं समीवे परिग्गहंपडुच्च। अपरिमियपरिग्गहं पच्चक्खामि। धणधन्नाइ नवविहवत्थुविसयं। इच्छापरिमाणं उवसंपज्जामि। अहागहियभंगए

णं। (तंजहा) दव्वउ। खित्तउ। कालउ। भावउ। दव्वउणं। नवविहपरिग्गहं। खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा। कालउणं जावज्जीवं। भावउणं जावगहेणं। नगहिज्जामि०। अन्न०। सह०। मह०। सव्व०। वोसिरइ ॥५॥ ॥※॥

॥※॥ (अहन्नं भंते तुम्हाणं समीवे। दिशिपरिमाणं पच्चक्खामि। (तंजहा) दव्वउ। खित्तउ। कालउ। भावउ। दव्वउणं। दिशिपरिमाणं। खित्तउणं धारणा पमाणं। कालउणं जावज्जीवाए। भावउणं। जावगहेणं न गहिज्जामि जाव छले० तावअभिग्गह। अन्न०। सह०। मह०। सव्व०। वोसिरइ ॥ ६ ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (अहस्सं भंते तुम्हाणं समीवे। भोगोवभोगवये (भोयणउ) अनंतकाय बहुबीया राइभोयणाइं परिहरामि। (कम्मओणं) पन्नरसकम्मादाणाइं। इंगालकम्मादियाइं। बहुसावज्जाइं खरकम्माइयं। रायाभियोगंच परिहरामि। (तंजहा) दव्वउ। खित्तउ। कालउ। भावउ॥ दव्वउणं भोगोवभोगवयं। खित्तउणं इत्थवा अन्नत्थवा। कालउणं जावज्जीवाए। भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि०। अन्न०। सह०। सव्व०। मह०। वोसिरइ ॥७॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (अहन्नं भंते तुम्हाणं समीवे। अनत्थदंडं पच्चक्खामि। अवज्झाण। पापोपदेश। हिंसोपकरणदाण प्रमादचरितं। चउव्विहं अनत्थदंडं। जहा सत्तीए परिहरामि (तंजहा) दव्वउ। खित्तउ। कालउ। भावउ॥ दव्वउणं अनत्थदंडं। खित्तउणं इत्थवा अन्नत्थवा। कालउणं जावज्जीवाए। भावउणं जावगहेणं नगहि०। अन्न०। सह०। मह०।

सव्व० । वोसिरइ ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ (अहन्न भंते) तुम्हाणं समीवे । सामाइयं । पोसहोववासं । देसावगासियं । अतिथिसंविभागवयं । जहा सत्तीए पडिवज्जामि । इच्चेयं सम्मत्तमूलं । पंचाणुव्वयं । सत्तसिक्खावयं । दुवालसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि । अन्नत्थणाभोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरा गारेणं । सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । वोसिरइ । ॥※॥ षट् साख । ठ ठ न्ही । च्यार आगार सहित पालु । ९ । १० । ११ । १२ ॥※॥ इति श्रावककों संक्षेप बारैव्रत उचरावणविधिः ।

॥※॥ अथ मुनिमालका लिख्यते ॥※॥

॥※॥ ऋषभ प्रमुख जिणपाय युग प्रणमु । सिवसुख दायक मन उल्लास । पुंडरीक श्री गोतम आदिक । गण धरगुरु मन कमल विकास ॥१॥ (प्रहसम सूधासाधु नमु नित । भावै श्रमण सुगुरु भगवंत । नाम ग्रहण कर पाप पखालु । परमानंद सुमति विकसंत ॥२॥(प्र०) भरथ महा मुनि प्रथम चक्रीसर । बाहुबल उपसम भंडार । सूरयसा दिक आठमुनीसर । पाम्यो विमलाचल भव पार ॥ ३ ॥ (प्र०) रिषभ वंस जे अनुक्रम हुवा । मुनिवर कोडी लाख असंख । श्रीसेतुंजे सिवपुर सीधा । काल मल कालक सु की कंख ॥ ४ ॥ (प्र०) सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्त्ति साधु महाबल संयम सीह । अचलादिक बलदेव अष्टमुनि राम रिषी सर नवम अबीह ॥५॥ (प्र०) श्रीप्रतिवुद्धि प्रमुह छह सुंदर । श्रीमल्लिनाथ पूरबभव मित । पहुता परम

रतीसर सिवपुर । पाली श्रीजिन आण पवित ॥६॥ (प्र०) वंदु विष्णु कुमार लवधि निधि । खंदग सूरनासीस से पंच । कार्त्तिक सेठ सुसाधु कीर्त्ति धर । श्रमण सुकोसल व्रतनिर वंच ॥७॥ (प्र०) श्रीयदुवंस अक्षोभ सुसागर । प्रमुख आठ अणगार प्रधान । श्रीरहनेमि नेमि जिन बंधव । निरमल गुण गण रयण निधांन ॥८॥ (प्र०) जाली मयालीने उव यालो । पुरस सेण वारसेण प्रद्युन्न । संब अने अनिरुद्ध रिषी सर । सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्न ॥९॥ (प्र०) कुमर अनीकज सादिक षट्मुनि । गुणगिरुवो श्री गजसुकमाल । ढंढण रिष श्री थावचा सुत । सहस साधु संजम सुछपाल ॥१०॥ (प्र०) (राग धन्याश्री)॥ सहस श्रमणासुं सुक संयम धरो । पंचसयांसुं सेलग मुनिवरो । सिद्ध थयाश्री पुंडर गिरवरो । करुणाकर प्रणमुं संपद करो । (उल्ला०) संपद करो सम दम रिषीसर साधु सारण सोहए । अंतर प्रकासै तिमर नासै भविकजन मन मोहए । प्रतयेक बुद्धि प्रबुद्ध नारद मुनि प्रमु ख पैंतालए । दमदंत महारिष कुंजवारै साधु नमुं त्रिकुं कालए ॥११॥ (चाल) रंग रिषभदत्त रतन त्रय गुणी । समरुं देवानंदा साहुणी । पांचे पांडव प्रणमुं मुनिपती । केस पएसी बोधक जिनमती । (उल्लालो) जिनमती कालक पुत मेहल थिवर आणंद रक्खिओ । अणगारका सब धर्म भा ख्यो सोधि सिवपुर सक्खिओ । कालासवेसी पुत आतम अ रथ साधकं उपसमइ । श्रीपुंडरीक महामुनीसर प्रणमीयै सुभ संयमी ॥१२॥ (चाल) वंदुं वलकल चीरी केवली । श्री अइमत्तो मुनिवर मनरली । श्रीकर कंडू दुमह नमि निग्ग

या। निज२ देसी नरवर श्रीजुवा। (उल्लालो) श्रीजुवा ए रिषभादि देखो यथा वद्द वद्दरागोया। संजम सिरी भजि मोह निद्रा तजीय जोगे जागीया। प्रत्येक बुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया एकण समें। सुप्रसन्न चंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रहसमें ॥१३॥ (चाल) खंते खुल्ल कुमार सुध्या दूंये। लोहथ्यामुनि चरणे लयलाईये। कालउदाई प्रमुख महामुणी। संजम सुद्ध जयंती साहुणी (उल्लालो) साहुणी जाणी जग वखाणी परम पद सुख पामीया। श्री श्रमण भद्र सुभद्र सुंदर अचल आतम रामीया। श्रीसुप्रतिष्ट यतीस सुव्रत साधुसुव्रत सेहरो। चारित्र रिष गुणवंत गोभद्र गरुश्रा गरिमा सागरो॥ १४ ॥ (चाल) सिरी सिव राय रिषीसर वंदीये। दसारण भद्र नमुं दुख ढंदीये। अर्जुन मालो सुख संजम धरो। सुदृढ प्रहारी सिवरमणी वरो। (उ०) सिवरमणी वरो श्रीकुरगडू क्षमा वंत प्रसिद्धउ। वलि च्यार उग्रविहार तपसी सहत सुविह तसिद्धउ। कोडिन्न दिन्न अने सेवाली पनर सतक तिह्नो त्तरा। गोतम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणा धरा ॥१५॥ (चाल) गरुश्रा श्रीगुणसागर गाईये। प्रथवी चंद्र प्रणम्यां सुख पाईये। खंद कुमार सदा अभिनंदीये। नमिह अरहमित्त मन आणंदीये। (उ०) आणंदीये मेतार्य मुनिवर भगतिसुं समरी करी। रूष दूलापुत्र चिलापुत्र रूगापुत्र हीये धरी। श्रीदद्रनाम निग्रंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मागि री। तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोधित सु जितसत्रु मुनीसरो ॥१६॥ (चाल) उदय२ कर जगि२ जस तणो। श्रमणसुदंसणसील

सुहावणो । श्रीअन्नयसुत आर्द्र कुमारए । चित्त चतुरनर चित चमकारए । (त्रु०) चमकार सार सुजात रिषवरदेव सांनिध जस धणी । गंगेय गिरुवो गुणेगाजे सु जिनपालत हित धणो । श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि साधु श्रीजिनदेव ए । श्रीकपिलरिष हरिकेस वलिमुनि नित नसु निरलेव ए॥१७॥ (चाल) जति जयघोष विजयघोषै जुई । सेवुं श्रुत धर श्रीदेवलसुई । श्रीइखुकार नृपति कमलावती । राणी भृगु सु प्रोहित सुभमती । (त्रु०) सुभमती जेहनी जसा भार्या पुत्र दोय वखाणीयै । ए छउं लेई चारि चारित्र सु गति पुहता जाणीयैं । चलिय मुनीसर साधु संजम धर्मरुचि महामती । निग्रंथनाथ अनाथ वंदु समुद्रपालसु संयती ॥ १८ ॥ (चाल) कुम्मापुत्र नसु केवल कल्यौ । विधसुं सीतल सिवकमला मिल्यौ । धनर धन्नो सुरगिर धीरए । वीर प्रसं स्यौ तपगुण वीरए । (त्रु०) श्रीवीर दिक्खित श्रीसुबाहु भद्र नंदकुमारए । आदिक दसेरिष चरिय जेहना सुख विपाक उदारए । श्रीचंद्ररुद्र सुसीस खंदग खिमानिधि कहीयैइण कलै । कुरुदत्तसुत तीसग सरोरुह रिष नम्यां आसाफलै १९॥(चा०) अंगप्रमुख रिष च्यारे आदरौ । विधिसुं संजम सिद्धि वधू वरी । अभै कुमार मुनि अभय करो । हल्लविहल्ल सु आतम हितकरो । (त्रु०) हितकरो दयाधर मेघमुनिवर नंदषेण आराधीयैं । मुनिखलनै सर्वानुभूति समर सिवसुख साधीयै । श्रीसींहसाधु अनें उदायन चरम राज रिषीस रो । श्रीसालभद्र सुधन्न मुनिवर समरतां मङ्गल करो ॥ २० ॥※॥ (राग धन्यासरी) ॥※॥ बन्द वैरागी वरनमु ।

जुगवर जंबूसामि । प्रभव सिष्य भव परगड़ौ । सुजस जसो
भद्र स्वाम ॥ २१ ॥ (महामुनीसर नित नमुं जी । नामें घर
नवनिद्ध । वाधै रिद्ध समृद्ध) ॥ २२ (म०) ॥ जग संभूति वि
जै जयो । भद्रवाहु इतभद्र । जग जोगीसर जागतो । मुनि
वर श्रीथूलभद्र ॥ २३ (म०) ॥ भद्रवाहु स्वामी तणा । च्यारि
सिष्य मुनिराय । सीत परीसह जिण सह्या । साध्या २ आ
तम काज ॥ २४ (म०) ॥ अज्ज महागिर जांणी ये । अज्ज
सुहत्थि विसाल । संप्रति नृप प्रति बोहीयो । श्रीअ
वंती सुकमाल ॥ २५ (म०) ॥ आरिजसांमि प्रसंसीयो । अ
ज्जसुभद्रमुनीस । अज्जमंगु महिमानिलो । सीहगिरीस मु
णीस ॥ २६ (म०) ॥ धन गिरि थिवर महामुनी । श्रीवय
र स्वामि मुनिराय । अरहदिन्न मुनि अपहर्यो । भद्रगुप्त ।
निरमाय ॥ २७ (म०) ॥ वयरसेन विद्यावहू । श्रीरत्नन गुरु
दत्त । पूसमित्र गुण गह गहै । प्रभु दुरवलका पत्त ॥ २८
(म०) ॥ विंझसाधु सुविधइ भण्यो । श्री ठंडिल सुमहिट्ट ।
सुल अरथ रतनें भर्यो । खमासमण देवड्ढ ॥ २९ (म०) ॥
पंचमकाल महामुनी । श्रीदुपसै सूर दयाल । सुद्धक्रिया
खरतर सही । जिन आग्या प्रतिपाल ॥ ३० (म०) ॥ इम पन
र कर्मभूमी जिके । हुआ हुस्यै अनंत । वर्त्तमान श्रीसाधु
जी । रतनमई गुणवंत ॥ ३१ (म०) ॥ ब्राह्मी सुंदरीराय मै ।
साहुणी चंदन बाल । आदिक सीलवती सती । त्रिकरण
सुद्ध त्रिकाल ॥ ३२ (म०) ॥ संवत सोल छत्तीसए । श्रीविम
लनाथ सुरसाल । दिख्या कल्याणक दिनें । गुंथी श्रीमुनि
माल ॥ ३३ (म०) ॥ रिणीपुरे रलीया मणो । श्रीसीतल

जिण चंद। सूरविजे राजे सदा। संघ अधिक आणंद ॥ ३४ (म०)॥ श्रीमति भद्र सुगुरु तणें। सुपसायें सुखकार। चारित संघ वखाणीये। सदा २ जयकार ॥ ३५ (म०)॥ मनहर श्रीमुनिमालका। गुणगण परमलपूर। कंठवहृ उत्तम जिके। पामें सुखभरपूर ॥ ३६ (क०)॥ महामुनीसर गावतां। सुरतरु सफल समान। अष्ट महा सिध घरफले। सदा २ कल्याण ॥ ३८ (म०)॥ इति मुनिमालका संपूर्ण ॥

॥※॥ छिन्नूं जिन स्तवनलि० ॥※॥

॥ ※ ॥ वरतमान चोवीसीवंदुं। मन सूधे नितमेवरी माई। ऋषभ अजित संभव अभिनंदन। सुमति पदम प्रभु सेवरीमाई ॥१॥ (वर०) श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभु प्रणमुं। सुविध सीतल श्रेयांसरी माई। वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन। सांति कुंथु परसंसरी माई ॥२॥ (व०) अरजिन मल्लि अनें मुनि सुव्रत। नमि नेमि पास जिणंदरी माई। चोवीसमा श्रीवीर जिणेसर। प्रणमुं परमाणंदरी माई ॥३॥ (व०)॥ ढाल२ ॥ प्रहसम सुधा साधु नमुं नित (एहनी)। नित नित अतीत चोवीसी नमीये। जेहना नाम प्रगट ए जाण। केवलन्यानीनें निरवाणी। सागर महाजस विमल वषाण ॥४॥ (नि०) सर्व्वानुभूति श्रीधर दत्त जिनवर। दामोदर सुतजा श्रीसांमि। मुनिसुव्रत सुमति सिवगति जिन। श्रीअस्ताग नेमीसर नांम ॥५॥ (नि०) अनल जसोधर तेम कृतारथ। श्रीजिनेसर सुधमति सुजगीस। सिवकरस्यंदन संप्रतिनामें। वंदीजे जिनवर चोवीस ॥६॥ (नि०) (ढाल ३)

सफल संसारनो ॥ ॥ जे भविस्संति अनागए कालए। तेह चोवीस प्रणमीस लिङ्ग कालए। प्रथम महाराज श्रेणक तणो जीवए। श्रीपदमनाभ प्रणमीस सदीवए ॥१॥ वीरनोपि तरीयो नाम सुपासए। ऊसी जिन बीय सुरदेव सुप्रकासए कोणिक सुत उदाई नरिंदए। तीसरो तेह सुप्रास जिणंदए ॥२॥ सिष्य श्रीवीरनो पोट्टलो साधए। चोथो स्वयंप्रभु नां मआराधए। इढायुष जीव सिद्धांतमें जाणीये। पंचम सर्वा नुभूति प्रमाणीये ॥३॥ कीर्त्त इण नाम इक जीव कहीजीये देवस्तुत तेछठो स्वामिस लहीजीयें। संघ श्रावक ऊसै उद यजिण सातमो। आणंदनो जीव पेढाल जिण आठमो ॥४॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोट्टल जिणं। सतक श्रावक शतकीर्त्त दसमो भणुं। देवकी जीव मुनिसुव्रत इग्यारमो। सत्यकी जीव ते अमम जिण बारमो ॥५॥ वासुदेव जीव नि कषाय जिन तेरमो। बलदेव जीव निपुलाक चवदम नमो। पनरमो निरमम देव सुलसाकही। रोहणी जीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥६॥ समाध जिन सतरमो श्रावका रेवती। अठारमो शदाल जीव संवर जिनपती। दीपायन जीव यशो धर उगणीसमो। क्रष्ण कोइ जीव ते विजय जिनवीसमो ॥७॥ मल्लि इकवीसमो जीवनारद तणो। देव षावीसमो अं बड श्रावक भणुं। तेवीसमो अजर जीव अनंत वीरजनमो। स्वात बुध जीवते भद्र चोवीसमो ॥८॥ एह आगाम चो वीस जिण जांणीया। प्रवचन सार उद्धारथी आणीया। कोई परसिद्धनें कोई अप्रसिद्ध कह्या। सास्त्र अनुसार थी साच कर सर दह्या ॥९॥ ॥ (ढाल३) ॥ ॥ आज नहेजोरे

दीसै नाहलो० ॥❋॥ विहर मान जिण वीसे वंदीये। महा विदेह विख्यात। सीमंधर युगमंधर बाहुजी। श्रीसुबाहु सुजात ॥६॥(वि०) स्वयं प्रभु रिषभानन अनंत वीरजी। सूर प्रभु तेमविसाल। वज्रधर चंद्रानन चंद्रबाहुजी। भुजंग ईश्वर नेम भाल ॥७॥ (वि०) वीरसेन महाभद्र नमुं वली। देवयसा यसो रिद्ध। अढी दीपमें विचरै आजए। नाम ली ये नव निद्ध ॥८॥ (वि० ढाल४) ॥❋॥ रे जीव जिन धम की जीये० ॥❋॥ च्यार तीर्थंकर सासता। दूयाहीज अभिधान। ऋषभानन चंद्रानन। वारिषेण वर्द्धमान ॥९॥ (च्या०) अठ कोडि छप्पन लाखसुं। सत्ताणुं हजार। चउसैछयासी देहरा। तिहुं लोक मझार ॥२०॥(च्या०) नवसै पणवीस कोडीया। बिंब तैपण लाख। सहस अठावीस च्यारसै। अठासी भाख ॥२१॥ (च्या०) छिन्नूं जिणवर नामए। समर्यां सुखदाय। प्रणम्यां पाप मिटै परा। समकित सुध थाय ॥ २२॥ (च्या०)॥❋॥ कलसः ॥❋॥ इम तिण चौवीसी वीस विहरमांन चौजिण सासता। संथुण्यां सतरैसै बयाले अधिक आंणी आसता। जिन रतन चिंतामणि तणी परि प्रबल वंछित पूरए। अहसमै बिकरण सुद्ध प्रणमें सदा जिन चंद सूरए ॥२३॥ ❋ ॥ इति श्रीतिण चौवीसी बीस विहरमान चौजिण सासता एवं छिन्नूं भगवंत नाम स्तवनं ॥

॥❋॥ अथ उपधानतपवर्णन स्तवनलि० ॥❋॥

॥ ❋ ॥ श्रीमहावीर धरम परगासै। बैठी परषद बारजी॥ अमृत वचन सुणी अति मीठा। पामें हरष

अपारजी ॥ १ ॥ सुणो २ रे श्रावक उपधान वह्यां विन। किम सूझै नवकारजी। उत्तराध्ययन बहुस्रुत अध्ययनें एह भण्यो अधिकार जी ॥२(सुणो०)॥ महा निसीथ सिद्धांत मांहि पिण। उपधांन तप विस्तार जी। अनुक्रम सुद्धपरंपर दीसइ। सुविहित गछ आचार जी ॥३(सु०)॥ तप उपधान वह्यां विन किरिया। तुछ अलप फल जाण जी। जे उपधान वह्या नरनारी। तेहनो जनम प्रमाणजी ॥ ४ (सु०) ॥ तप उपधान कह्यो सिद्धांते। जो नवि माने जेह जी। अरिहंत देवनी आण विराधे। भमस्यै भव २ तेह जी ॥ ५ (सु०) ॥ अणवह्या घाटसमां नर नारी। विण उपधाने होय जी। किरिया करतां आदेस निरदेस। काम सरै नही कोइ जी ॥ ६ (सु०) ॥ इक घेवरनें खांड भरीयो। अति घणो मीठो थाय जी। एक श्रावक उपधान वहै तो। धन २ ते कहवाय जी ॥ ७ (सु०) ॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ नवकार तणो तप पहिलो वीसदृ जाण। इरियावहीनो तप बीजो वीसदृ आण। इण बिहुं उपधाने निसइ नांण मंडाण। बारै उपवासे गुरु मुख बेउ वांणि ॥८॥ पैंतीसदृ तीजो सामो त्थुणं उपधांन। विण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान। अरिहंत चेई तप चोथोचोकदृ एह। उपवास अढाइ वाण एक गुण गेह ॥९॥ पांचमो लोगस्स तप अट्ठावीसदृ नाम। साढापनरह उपवास वायण तिणठाम। पुक्खरवरदी तप छठो छक्कदृ सार। साढातण उपवास वांण एक सुविचार ॥१०॥ सिद्धाणं बुद्धाणं सातमो उपधान माल। उपवास बारै इक चौविहार ततकाल। एक वाणिकरै वलि गुरुमुख

सरस रसाल। गछनायक पासै पहरै माल विसाल ॥११॥ माल पहरण अवसर आणी मन उछरंग। घर साहू वाहू खरचै धन बहु भंग। अति उछव कीजै राती जोगो दिल खोल। गीतगान गवावे पावै अति रंग रोल ॥ १२ ॥※॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ ए साते उपधान। विधसों जे वहै। ते सूधी किरिया करै ए। खिण नकरै परमाद। जीव जतन करइ। पुंजि २ पगला भरै ए ॥१३॥ न करै क्रोध कषाय। हस २ हसे नही। मरम कीहनो नवि कहै ए। नाणै घरनोमोह। उत्कृष्टी करै। साधु तणी रहणी रहै ए ॥१४॥ पडुरसी म सिज्झाय। करपोरसि भणी। ऊंचै खर बोलै नहीं ए। मनमांहि भावे एम। धन २ ए दिन। नरभव मांहि सफल सही ए ॥१५॥ जेसा ते उपधान। विधसेती वहै। पहिरै माल सोहावणीए। तेहनी किरिया सुद्ध। बहु फलदायक। करम निर्जरा अति घणी ए ॥१६॥ परभव पामै रिद्ध। देव तणा सुख। बत्तीसबद्ध नाटक पडै ए। लाभै लील विलास अनुक्रम सिव सुख। चढतो पदवी जे चढै ए ॥ १७ ॥※॥ (कलशः) ॥※॥ इम वीरजिणवर भुवण दिणयर मात त्रिस ला नंदणो। उपधानना फल कहै उत्तम भवियजण आणं दणो। जिणचंद जुग परधान सद्गुरु सकलचंद मुनीसरो। तससीस वाचक समय सुन्दर भणै वंछित सुख करो ॥१८॥ इति सात उपधान गर्भित श्रीमहावीर स्वामी वृद्ध स्तवन संपूर्णं ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (यह) स्तवनमें उपधान तप करनेकी सब विधि है। इसी मुजब विवेकी जीव करै। और उपधान तप ग्रहण

(तथा) माला पहरण विधि इहां न लिखो है (सो) गुरु गमके पास। विधि प्रपाक ग्रंथसें जाणके करै इति तत्वं ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ राग रागिणी स्तवन लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (राग कल्याण) ॥ ※ ॥ (६)

॥※॥ टुक निजर महरदी करणा हो ॥टु०॥ मेंडूं अधम पापकी मूरत। मेरा दोस न धरणा हो ॥(टु०)१॥ अष्ट भवनकी प्रीत हमारी। नवमें भव निरवाहना हो ॥ (टु०)२॥ रूपचंद भगतनकी वीनती। आवागमण निवारणा हो ॥ (टु०) ३ इति पदम्॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ लोक चवदके पार किनारे। पूरण ब्रह्मका वासा है। (लो०) पेंतालीस लाख जोजनकी सिल्ला। फिटक रतन उजासा है। निरमल जोत विराजै साहिब। ग्यान ध्यान परकासा है ॥(लो०) १॥ पंच वरण की धजा फरकै। क्या कहूं अजब तमासा है। नाथ निरंजन नाम तुमारो। उरनको क्या आसा है ॥(लो०)२॥ चोसठ इन्द्र खडे वाकेदारे। खिजमत बंदा खासा है। रूपचंद कहै नाथ निरंजन। चरण कमलका दासा है॥ (लो०) ३ ॥ इति पदम्॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ सखी सखि वन ठन (सखी०) ठाढे नाभ नृपत जुके द्वारे आगे। (स०) रिषभ कुमरको जनम भयो है। मङ्गल मुख्य उचारैरी ॥ (स०) १॥ ताल मृदङ्ग रवाव मधुरी धुनि

वीणा बाजै सुरतारे। नाचत हावभाव करी राजत। ता नलेत सुरतारेरी ॥ (स०) २॥ सुरवनिता मिल गाइ वधाइ मोतीयन चोक सवारे। जगबंधव जगपतिकुं निरखत। आनंद हर्ष अपारेरी ॥ (स०) ३ ॥ इति पदम् ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ हो जिनतेंद्र दरस परवारीयां (हो०)॥ तुम विन भव२ में भटकंदा। अब मेंड्रो ओर निहारीयां ॥ (हो०) १॥ अष्ट करम मेंड्रे लार लगे है। उनकुं वेग विमारीयां। चरण सरणागहे आंण तु साहैं। रुपचंद गुणगारीयां॥(हो०) २ ॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ हांरे म्हांरा रिषभा जिणंदने गजरो चढांउं रे (म्हां०) चंवेली चंपा गुलाव ल्याउं रे। जाईजुई मोगरो मालती। विधगुंथावुं रे ॥ (म्हां०) १ ॥ अगर चंदन अच्छत नैवेद्य लाउं रे। धूप दीप फलसुगंध पुष्प पावुं रे॥(म्हां०) २ ॥ इष्ट धरम आदिनाथ भाव भावुं रे। रिषभ दास पूरो आस गुण गावुं रे ॥ (म्हां०) ३ ॥ इति पदम् ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ मन लीनो हमारो जिन चरणा रे। पोत जल धि भव तरणारे ॥ (म० टेर) ॥ आदि पुरस जगतारणनि सुणयो। कर्म विकट घन हरनारे ॥ (म०) १ ॥ नाभि तात मरु देवी माता ॥ नंद ऋषभ सुष करनारे ॥ (म०) २ ॥ सत्यादिक प्रगट न जग तत्पर। कुमतांगन दलटरनारे ॥ (म०) ३ ॥ सारंग दृग शशिवदन मनोहर। अंग कनक सम

बरनारे ॥ (म०) ४ ॥ श्रीजिन हंस सुरीसर जंपै । जिन समरण दिल भरनारे ॥ (म०) ५ ॥ इति श्री ऋषभदेव स्तवनम् ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (राग झिंझोटी) ॥ ※ ॥ (२)

॥※॥ अजित अजित जिन ध्यान । (म्हारै मनरे) (अ०) (टेर:)। जितसत्रु विजयाको नंदनरे । वंदन लय युतग्यान । (म्हा०) १ ॥ त्रिजग जग तारन टारन अघ कोरे । वारुं तन धन ज्यांन ॥ (म्हा० अ०) २ ॥ जिन वचनामृत पान करो जे रे । केवल निरमल ग्यान ॥ (म्हा० अ०) ३ ॥ श्रीजिन हंस सूरि प्रभु पाए रे । निवृत पुरिं दरम्यान ॥ (म्हा० अ०) ४ ॥ इति श्रीअजितनाथ स्तवनम् ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ यह अरजी मोरी सहियां । मोहितारलोगन्ह बहियां । (य०) मैं नांहि जानुं सहियां (य०) । मैं तारण तरण सुण्यो है । मैं यातें सरणो गहीयां । इन तैं उवा रलहियां ॥ (मो० य०) २ ॥ इन करमनके वस होयके । मैं भट क्यो त्रिजगत महियां । मैं नांहि जानुं सहियां ॥ (य०) २ ॥ हित करकै दास निहो रै । कर जोडि पडि कुं पइयां । सिव देति क्युं न सहियां । (मो० य०) ३ इति ॥

॥※॥ (राग काफी) ॥※॥ (५)

॥※॥ मुजरो मानो लोजे हो गोडीराय अरज सुणो नें म्हारो ॥ (मु०) १ ॥ किरपा काज करो सेवगनें । दिलभर

दरसण दीजै हो ॥ (गो०) २ ॥ तुं अविनाशी अंतरवसीयो दूजो दिल न पतीजै हो ॥ (गो०) ३ ॥ गुणनिध गवड़ी दरसण दीजै । सकल करम दलछीजै हो ॥ (गो०) ४ ॥ रूप विविध कहै मो मनपभणें । प्रह उठी प्रणमीजै हो ॥ (गो०) ५ ॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ तुमेंडा प्रभु दूण दिल वसणावे । तेंडा तो गुण सुर गावंदाहो ॥ (प्र०) १ ॥ संतके सागर गुणके आगर । जोही ध्यावै सो पावंदाहो ॥ (प्र०) २ ॥ तुमहो तत्वज्ञान के दाता । भविजन ताप मिटाव दाहो ॥ (प्र०) ॥ कहैं जिनचंद ऐसे प्रभुमेरे । चरणकमल चित लावंदाहो ॥ (प्र०) ३ ॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ हम जानतहैं तुम तारोगे । (हम०) नाभिराय मरुदेवी को नंदन । मेरी ओर निहारोगे ॥ (हम०) १ ॥ आदि जिनेसर अन्तरजामी । खामी कहुन विचारोगे ॥ (ह०) २ ॥ जगजीवन जगतारक तुमहो । एही विरुद संभारोगे ॥ (ह०) ३ ॥ श्रीजिन सौभाग्य सुरिंदकुं साहिब । भवजलपार उतारोगे ॥ (ह०) ४ ॥ इति पदम् ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ पंथीड़ा पंथ चलैगो । प्रभु भजले दिन च्यार । (पं०) झूठीकाया झूठीमाया । झूठो सब परवार ॥ (पं०) १ ॥ बालपणेमें खेल गमायो । जोवन मायाजाल ॥ (पं०) २ ॥ बूढापण आयो मरम न पायो । पीछे करत पुकार ॥

(पं०) ३ ॥ क्या ले आयो क्या ले जासी । पापपुण्य दोय लार ॥ (पं०) ४ ॥ दया मया कर पास ए वंतो । अब तेरो ही आधार ॥ (पं०) ५ ॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ तेवीसमा जिनराज । जोइ थांहरैं कौन जुड़ै गो (ते०) अस्वसेन तात वामादेवी माता । तूं तारण संसार ॥ (जो०) १ ॥ कमठ विद्दारण नागकुं तारण । संभलाव्यो नवकार ॥ (जो०) २ ॥ विविध कुसल कर जोड़ीनें वीनवै । भव २ देज्यो दीदार ॥ (जो०) ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥※॥

॥※॥ (राग खंभायची) ॥※॥ (२)

॥※॥ कैसें काज सरै महाराजा विन (कैसें०) भ्रमत २ लख चौरासीमें । सुख दुखसें जीया रुलत फिरै (म०कै०) । ए रिपु कर्मवैरी भटकावै । जाहीसें मेरो प्राण डरै ॥ (म० कै०) २ ॥ जो जीव सुखकी वंछा चाहै । प्रभु सेव्यां सें सब काज सरै ॥ (म०कै०) ३ ॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ राजरी वधाई वाजै छै (महा०) । सरणाई सिरै नोबत बाजै । घनज्युं गाजैछै ॥ (महा०) २ ॥ इंद्राणी मिल मङ्गल गावै । मोतीयन चोक पुरावै छै ॥ (महा०) २ ॥ सेवग प्रभु जीसें अरज करै छै । चरणारी सेवा प्यारी लागै छै ॥ (महा०) ३ ॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (राग अड़ाणो) ॥※॥ (१)

॥※॥ मोतियनकी माला जिनराज सोहै । (मोति०)

मस्तक मुगट सोहै मनमोहन। कुंडल खागत वाला॥ (जि०१)॥ भजोरी भजो तुम लोक सहिरके। नहीय भजै सो काला। माणकपर प्रभु महिर करो तो। अपणा विरुद संभाला॥(जि०)२॥ इति पदम्॥✿॥ ॥✿॥

॥✿॥ (राग सोरठ) ॥✿॥ (४)

॥✿॥ रहे तुम आज क्यु जीवन दुराय॥ (रहे०)॥ जीय जीवन सखीयनमें प्यारी। हारी हाहा खाय॥(र०) १॥ अविरत घुंघट पट उघारी। अनुभव सुख निरखाय। एते परभी मान न मेले। मूले व्याज वंढाय॥(रहे०)२॥ भव परणित परिपाक इते पर। आई धाई माय। अति आग्रह सब ग्यान सारकुं। लीने कंठ लगाय॥ (रहे०)३। इति पदम्

॥ ✿ ॥ पुनः ॥ ✿ ॥

॥✿॥ हेमाय वांकाणी करमगति जायनां कही। चिंतत अर वनत कछु औरे। होनहार सो होय रही॥ (हेमाय वां०) १॥ सकल साज सझीयो व्याहनकुं। राजुलकों तब चाह भई। सुनी नेम गिरनार सिधाए। वदन विलप मुरझाय रही॥(हेमाय वां०) २॥ सीता सतीयोंही पति भगता। जांनत सकल मही। झूठो दोसदियो जब रुष पति। पावक कुंडमें धीज दही॥ (हे०वां०) ३॥ चायक सहदो श्रेणक राजा। निज सुत कोणक बंधई। सुध बुध विसरगई नरपतकी। आपणको अपघात लही॥ (हे०वां० ४॥ छिनमें रंक छिनकमें राजा। अकल कथा किम जाण कही। उलट पलट बाजी नटसीको। नवल सरवसें व्यापर

हो ॥ (हिमाय वां०) ५ ॥ इति पदम् ॥※॥   ॥※॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥ ※ ॥ म्हांनुं प्यारो लागै है जो। थांरो उपदेस। (म्हां०) ॥ ग्यांन जगावण औगुण मेटण। संसय रहै न लेस ॥ (म्हां०) १ ॥ मोहतिमिर दुख दूर करनकुं। भगत वढावत हेत। चंद फते नित एही चाहै। समकित सुखको खेत ॥ (म्हां०) २ ॥ इति पदम् ॥※॥   ॥※॥   ॥※॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ मेरो पीया पर संगरमत है। मैं कैसे मनावूं री (मे०)। सोतन संग रैन दिन रमतां। मांहि न बुलावे री (मे०) ॥ १ ॥ हाहा करत सखी पईयां परतऊं। कोई पीया मिलावे री। विरहानल अति दुसह पीया विन। कोन बुझावे री (मे०) ॥२॥ सुमता संग ले अनुभव आयो। सब परठसु नावे री। ग्यान सार प्यारो दोउ हिलमिल। सोरठ गावे री (मे०) ॥३॥ इति पदम् ॥※॥   ॥※॥   ॥※॥

॥※॥ (राग सोरठ मलार) ॥※॥ (२)

॥※॥ वरषित वचन झरी हो (सुगुरु मेरे) (व०) श्री श्रुत ग्यांन गगन तैं उमटी। ग्यांनघटा गहरी हो (सुगुरु मेरे व०)॥ स्याद वाद नय विजुरी चमकित। देखत कुमति डरी। अरथ विचार गुहर धुनि गरजित। रहत न एक घरी हो ॥ (सुगुरु मे०) २॥ अज्ञानदी चढी अति जोरै सुद्ध सुभावधरी। सुभर भयो सुमता रससागर। समकित भूमि हरी हो ॥ (सुगुरु मेरे) ३॥ प्रगटे पुन्य अंकूरे चिऊ

दिस। पाप जवास जरी। चातक मोर पपइया भविजन। बोलत भक्तिभरी हो ॥(सुगुरु मेरे व०) ४॥ दया दान ब्रत संयम खेतो। भविक कसांन करी। हरष चंद सुर नरसिव सुखकी। सहज सुभाव फली हो ॥(सु०व०)५॥ इति पदम् ॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ या घरी में रंग वन्यो है म्हारै। (या०) तत्वा रथकी चरचा पाई। साधरमीको संग (वं०या० ॥१॥ श्री जिनराज दयानिधि भेटे। हरष भयो अंग अंग। अैसी विध भव२ मांहे मिलीयो। धर्मप्रसाद अभंग (व०या०) २॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (राग मलार) ॥※॥ (२)

॥※॥ चिहुं उरवदरिया वरसै (आलीरी)। अव घरर घरर घन गरजे ॥ (चि०)॥ नेम प्रभु गिरनार सिधाए। दे खणकुं जीयातरसै ॥ (चि०)१॥ दादुर मोर सोर सुन अव गों। नयनभए घन जरसै ॥(चि०)२॥ ढुंढत ढुंढ सकल वन वनमें। कवऊ पीयानां दरसै ॥ (चि०) ३ ॥ सोइ सफल जा गेंगे सजनी। दिवरुधरी जिन फरसे ॥ (चि०)४ ॥ इति।

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ मोरवा पपइया वोले पीउ२ वनमें। नेम पीया रहे सहसावनमें ॥ (मो०) ॥ निस अंधीयारी कारी वीजुरी डरावै। दूजो विरह आकुल भई तनमें ॥ (मो०) १॥ फिर मिर वरषत गरजत दादुर ॥ सोरकरत रहे नदीयां रनमें। (मो०) २ ॥ आणंद ए सम देखण चाहे। राजुल भई है

वैरागग छिनमें ॥ (मो०) ३ ॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (राग विहाग) ॥※॥(२)

॥ ※ ॥ समज नर जीवन थोरो । थोरो थोरो थोरो । (स०) ॥ पल२ आयु घटत छिन छिन हो । गलत जात जै से ओरो ॥ (स०) १ ॥ या तनको तोहो न भरोसो । छिन मासो छिन तोरो । जो कछ करै सो अवहो करलै । पुन परहो जिम मोरो ॥ (स०) २॥ तन धन आदि सकल सामग्री । गरज २ घनघोरो । रूपचंद विसनाको बांध्यो । जान बूझ भयो भोरो ॥ (स०) ३ ॥ इति पदम् ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ मत कर मान गुमान । योवन धन ठगहै । (म०) वेलूकीभींत उसको मोती । कोई घड़ी कोई पलहै ॥ (यो० म०) १ ॥ नदियां गहिरी नाव पुराणी । तारण हारा जिन है । रूपचंद कहै नाथ निरंजन । आखर जंगल घर है ॥ (यो०म०) २ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ (राग मारू) ॥※॥ (१)

॥※॥ निसदिनजोउं थांरी वाटड़ी घर आवोनी ढोला । (नि०) मुझ सरिखा तुझ लाख है । मेरै तूंही अमोला । (नि०)१॥ जोंहरी मोल करै लालन का । मेरा लाल अमोला जिसके पटंतर को नहीं । उसका क्या मोला ॥(नि०) २॥ कोन सुनें किसपें कहुं । किस मांगु खोला । तेरे सुखदोठे टलै । मेरै मनका झोला ॥ (नि०) ३ ॥ मोंत विवेक कहै

हि तुं । सुमता सुन बोला । आणंदघन प्रभु आवसी । से झो रंगरोला ॥ (नि०) ४ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥※॥ (राग जैजंती) ॥※॥ (१)

॥※॥ आज तो हमारे भाग वीर प्रभु आए है (आ)० चंदनां खड़ो दुवार चित्तसें करें विचार। देखत दीदार होये हरष भराये है ॥ (आ०) १॥ आज मेरी आश फली। अली मेरे रंगरली। विकसी आतमकली। प्रभुपाल पाए है ॥ (आ०) २ ॥ धनदिन आजमेरो गयो सब कर्मझेरो। सुकृत बड़ तेरो भगवान दिल भाए है ॥ (आ०) ३॥ सिद्धा रथ राय नंद सोहत सरद चंद। कहै जिनचंद चित आ नंद वधा ए है ॥ (आ०) ४ ॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥

॥ ※॥ (राग परज) ॥※॥ (१)

॥※॥ वावरो रे आज मनवो मारो ॥ (वा०)॥ आप रं गीला वाको सेज रंगीली। और रंगीलो वाको सांवरो रे ॥ (आ०) १ ॥ आपन आवें वारो न लिख भेजै। प्रीतकर न कुं उ तावरो रे ॥ (आ०) २ ॥ आनंद घन पीया निजघरं आवें। मिटगयो मोह संतावरो रे ॥ (आ०) ३ ॥ इतिपदम्

॥ ※ ॥ (राग जंगलो) ॥ ※ ॥

॥※॥ ऋषभविहारी थांरी तो छवि न्यारी ॥ (रि०) ॥ प्रथम तीर्थंकर प्रथम जिनेसर। प्रथम यतीव्रत धारी हो ॥ (रि०) १ ॥ धनुष पांचसै मान मनोहर। काया कंचन वानी हो ॥ (रि०) २ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन। वाप

रजोया कुरवानी हो ॥ (रि०) ३ ॥ युगला धरम निवारण स्वामी । प्रभुहो पर उपगारी हो ॥ (रि०) ४ ॥ केवल पाय प्रभु मुक्ति सिधाए । आवागमन निवारी हो ॥ (रि०) ५ ॥ आनंद घन प्रभु एती वीनती । तुम पर जाउं बलिहारी हो ॥ (रि०) ६ ॥ इति पदम् ॥✽॥ ॥✽॥

॥ ✽ ॥ पुनः ॥ ✽ ॥

॥✽॥ सुण मन हो न हार नटरै रे ॥ (सु०) ॥ चित कहु डर विचारत है नर । डरही डरवनैं रे ॥ (सु०) १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचै । चिड़ियां कैसें बचै रे ॥ (सु०) २ ॥ होनहार वस डस्यो है पारधी । सर सींचाण मरै रे ॥ (सु० ३ ॥ होत पदारथ भावी भइया । क्युं जगचाह धरै रे ॥ (सु०) ४ ॥ उदय करमगत देख जगत को । जिनवर क्युं न भजै रे ॥ (सु०) ५ ॥ इति पदम् ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ पुनः ॥ ✽ ॥

॥✽॥ सखियोरी मिलचालो प्रभु पूजन काज ॥ (स०) समवसरन विच आप विराजै । वीरनाथ माहाराज ॥ (स०) १ ॥ श्रेणक भूप चेलणा राणी । भक्ति करत हैं आज ॥ (स०) २ ॥ निज निज द्रव्य लीयै पुरको जन । उमंग उमंग सुभ साज ॥ (स०) ३ ॥ वे प्रभु दीनदयाल जगतके । हितकर धर्म जिहाज ॥ (स०) ॥ इति पदम् ॥✽॥

॥✽॥ (राग केहरवो) ॥✽॥(२)

॥✽॥ मनवा जिणंद गुण गायरे ॥ (म०) ॥ याजिनजी को दरस सरस तें । दुखदोहग मिट जायरे ॥ (म०) १ ॥

सुगुरु वचन परतीत मांनले। आतमसुं लय लायरे॥ (म०) २॥ भव२ में तो कुं सुखदाई। आनन्द बंछित पाय रे॥ (म०) ३॥ इति पदम्॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ चालो देखोरी मधुवन को राव (चा०) वामानंदन पासजिनेसर। सिरपररे वाके चवर ढोलाय॥ (चा०) १॥ तारण तरण जिनेसर लखके। मेटै सऊ भवि चित सुख पाय॥ (चा०) २॥ गङ्गा दरस उमाहोलागो। कवकरसुं वाके मन वचकाय॥ (चा०) ३॥ इति पदम्॥ ॥

॥ ॥ (राग घाटो) ॥ ॥ (२)

॥ ॥ मेरो मन वसकर लीनो। जिनवर प्रभुपास। (मे०) १॥ अखीयां कमल पांखड़ीयां। मुख सुन्दर जास। (मे०) १॥ काने कुंडल दोय झलकै। ससि सूरज सम भास (मे०) २॥ नीलवरण तनु सोहै। त्रिभुवन परकास॥ (मे०) ३॥ प्रभु तुम सरण रहीनें। समरं सासोसास॥ (मे०) ४॥ लालचंद अरज सुणीनें। पूरो बंछित आस॥ (मे०) ५॥ इति पदम्॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ राखुं रे हमारा घटमें। जिनराज नाम तेरा॥ (रा०)॥ जागै प्रभाव मेरा। अग्यानका अंधेरा। भागा भया उजेरा॥ (रा०) १॥ सूरति तेरी रागै। देख्यां विभाव त्यागै। अध्यात्म रूप जागै॥ (रा०)२॥ मुद्रा प्रमोदकारी। ऋषभेस जु तिहारी। लागत मोहि प्यारी॥ (रा०) ३॥

त्रैलोक्यनाथ तुम हो । हम हैं अनाथ गुन हो । करियेस नाथ हम हो ॥ (रा०) ४ ॥ प्रभुजी तिहारो साखे । जिन हर्ष सूरि आखे । दिलमां क्रया हो राखे ॥ (रा०)५ ॥※॥ इति पदम् ॥※॥　　॥※॥　　॥※॥

॥※॥ (राग ठुमरी जंगलो) ॥※॥ (३)

॥※॥ सुणो सुजांण नेमजी । हांरे मैं खड़ो पुकारुं नेम तूं हो तूं हो तूं हो । (सु०) । अरज करत हुं मैं पड़यां परतक्ष । इतनी अरज मेरी मांनो सुजांण (नेमजी, हां० मैं खड़ो०) ॥ १ ॥ बिन अवगुण क्युं तजो मेरे साहिब । महिर निजर मोपें आणो सुजाण (नेमजी०) ॥ २ ॥ हरष चंद नेमो रावेसर । हुं भव२ को चेरो सुजांण (नेमजी०) ॥३॥ इति पदम ॥　　॥※॥　　॥※॥　　॥※॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ तेरे दरस को चाह लग्यो । सखीयांन बरण वत लाजा रे (ते०) । बनमैं जाय प्रभु दिक्षा लीनी । हमकूं लार लगा जारे (ते०) ॥१॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर अब कैसें विसराजा रे (ते०)॥२॥ चैन विजे वाहे धन२ राजुल । प्रभु चरणां चित लावजारे (ते०) ॥३॥ इति पदम् ॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ थांरे मुखड़ारीहो वारी राज । प्यारीछबि वरणी न जाय (थां०) सीस मुगट सोहे सिरटीको । कांने थांरे कुंडल सोभाय (थां०) ॥१॥ मोहन गारी सूरत थारी । देख्यां म्हांरो मनड़ो लोभाय (थां०) उपरांठ्त नेम भए निरखत

णी । थांसु प्रभु प्रीतरूली लगाय (थां०) ॥२॥ भव२ पास जिणंदजी की सेवा । ऐसो म्हारे दिलडेमे चाव (थां०)। बालक है तुमही प्रभु मेरे । म्हांरे प्रभु तुमही सहाय। (थां०) ॥३॥ इति पदम् ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (राग काफी कानडो) ॥※॥

॥※॥ ऐसो विधतेनैं पाईरे । कछु करणी करजा (ऐ०) उत्तम नर भव जैन धरम रुचि । सुगुरु सेवा सुख दाईरे। जसु पातक झरजा (ऐ०) ॥१॥ हिंसा जूआ झूठ परत्रिया परिग्रह मद फल चोरीरे । घट जायगा दरजा (ऐ०)॥२॥ तप जप संयम सीलदान कर । आनंद सुमति सुहाई रे। भव जलनिधि तर जा (ऐ०) ३॥ इति पदम् ॥ ॥※॥

॥※॥ (राग कालंगडो) ॥※॥

॥※॥ मोहि अपनो कर जांणो प्रभुजी ॥ (मो०) ॥ मे मतिहीण महा हठवादी । सो तुमतैं नहीं छानो । राग द्वेष अरु मोह महामद । वाधो खोट खजानो ॥(प्र०मो०)१॥ ए रिपु कर्म पड्यो मुझ केडै । किसविध छूटै पानो। कुमति कदा ग्रह मांहि जलूझो । ज्युं मदपान वयानो ॥ (प्र०) २ ॥ हुं भववासी तूं सिववासी । जाने सकल जिहांनो विरुद लाखीणो सांम संभारो । तो हिव किम चित तां णो ॥ (प्र०) ३ ॥ भक्ति सदाई सिवसुख दाता । संभवनाथ कहानो । श्रीजिन सौभाग्य सूरिने जिनवर । दीजे सुख प्रधानो ॥ (प्र०) ४ ॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (राग भैरवी) ॥※॥ (४)

॥※॥ नेम जिणंद जी सैं आखमली । मोरी रैन दिवस नित लगरहीरे ॥ (मो० ने०)॥ पहली आय उन दोस्ती कीनी । ले पीछे छिटकाय दई रे ॥ (ने०) १ ॥ पसुवन पर प्रभु दया करीने । सिवरमणीने वर लेई रे ॥ (ने०) २ ॥ कोइ भविक रसना कर दोस्ती । रत्न विमल पद पाय लई रे ॥ (ने०) ३ ॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ आज प्रभु तेरे चरण लाग । मिथ्यातनींद से खोई रे ॥ आ०) ॥ दरसण कर परसण भयोमेरे । आनंद चित अब पोई रे ॥ (आ०)१ ॥ तुम विन ओर न कोइ मेरे देख्यो त्रिभुवन जोई रे ॥ आ०) २ ॥ दास तुमारो करत वीनती । तुम प्रभु भव भव होईरे ॥ (आ०) ३ ॥※॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ रात गई अब प्रात होन भयो । क्या सोवे जिया जागरे (रा०) दोय घड़ी तड़को अब रहीयो । उठ धरम में लागरे ॥ (रा०) १ ॥ जिनवाणी उर वीच धारले । उर भरम सब त्यागरे ॥ (रा०) २ ॥ आणंद सुगुरु वचन हित मानो । ए सूधो सिव मागरे ॥ (रा०) ३ ॥ इति पदम् ॥※॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ तुम विन दीनानाथ दयानिध कोन खबरले मेरी । (तु०) भ्रमति फिर्यो संसार जगतमें । मेटो भवनी फेरी । (तु०) १ ॥ भव२ के प्रभु तुम जगनायक । राखो सरणें ते

री। उदय आसरो पकड्यो तेरो। सरन ग्रह्योमें तेरो॥ (तु०) ३॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (राग विभास) ।※॥

॥※॥ भोरभयो अब जाग बावरे॥ (भो०) कोन पुन्य तें नर भव पायो। क्युं सूतो अब पाय दावरे॥ (भो० १॥ धन वनिता सुत तात भ्रातकों। मोहमगन एह विकल भा वरे। को इन तेरो तूं नहीं का को। इह संजोग अनादसु भाव रे॥ (भो०) २॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत। पाई तें पुन्य प्रभाव रे। ग्यांनसार जिनमारग लाधो। क्युं डूबै अब पाय नावरे॥ (भो०) ३॥ इति पदम् ॥※॥

॥※॥ (राग पट) ॥※॥

॥※॥ जागरे सब रैन विहानी (जा०) उदयो उदयाचल रवि मंडल। पुन्यकाल क्युं सोवै प्रानी॥ (जा०) १॥ कमल खंड वन वन विकसानी। अजुवन तेरी द्रग उघरानी। चेतन धर्म अनादि तुमारो। जड संगतसें सुध विसरानी। (जा०) २॥ तुम कुल होय अवस्था पइये। नींद सुपन ए जड नीसानी। आतम रूप संभार आपणो। कब तुमारे घर कुमती बरानी॥ (जा०) ३॥ सुध बुध भूली निरुपम रूपकी। ताते घट वध होत कहांनी। निर्मै ग्यान स्वरूप तुमारो। ग्यांनसार पद निज रज धांनी॥ (जा०) ४॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥❀॥ (राग वेलाउल) ॥❀॥

॥❀॥ सांवरो सलूणो सखी मेरे मन भावनो। रूप दे खाय मेरो मन ललचावनो ॥(सां०) १॥ तोरणसुं रथ फेर चले प्रीया। ना जानुं ए काहिको रुसावनो ॥ (सां० २॥ नव भव नेह निवाहो नेम तुम। याहीतें कहा वदन दुरावणो। आनंद राजल याकी प्रीत कपटकी। भयो प्रीया मुगत सखीको पांवनो ॥ (सां०) ॥ इति पदम् ॥❀॥

॥❀॥ (राग ललित) ॥❀॥

॥❀॥ आज ऋषभ घर आवे (देखो माई आ०)। रूप मनोहर जगदानंदन। सबहीके मन भावे (दे०) ॥१॥ कोई मुगता फल थाल विशाला। कोई मणि माणक ल्यावें। हय गय रथ पायक कोईकन्या। लेप्रभु वेग वधावे (दे०) ॥ २ ॥ श्रीश्रेयांस कुमर दानेसर। इक्षुरस दान वहिरावे। उत्तम दांन अधिक अक्षत फल। साधुकीरत गुण गावे। (दे०) ॥३ इति पदम् ॥ ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ (राग रामकली) ॥❀॥

॥❀॥ आंगण कलप फल्योरी। हमारै माई (आं०)। ऋद्धि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक। श्रीशांतिनाथ मिल्योरी (ह०) ॥ १ ॥ केसर चंदन मृग मद घोली। मांहि वरास मिल्यो री। पूजित श्री शांतिनाथजी की प्रतिमा। अलग उदेग टल्योरी (ह० आं०) ॥२॥ सरणें राख कृपाकर साहिव ज्यूं पारेवो पलयोरी। समय सुंदर कहे तुम्हारो कृपा

सें। ऊंरहिसुं सोहिलो री (ह० अं०) ॥३॥ इति पदम् ॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ ऊठोनैं मोरा आतमराम। जिन मुख जोवा ल इये रे ॥ जिनजीनो दरसण छै अति दोहिलो। ते किम सोहिलो जाणो रे। वार २ मानव भव एहवो। लुहवो मुसकल टाणो रे ॥ (ऊ०) १ ॥ च्यार दिवसनो चटको मट को। देखोनैं मतराचो रे। विनसी जातां वार न लागे। काया घट छै काचो रे ॥ (ऊ०) २ ॥ अनन्तगुणे भरियो है जिनवर। पूरब पुण्यैं पायो रे। एहनें देखी दिलमें आ नन्द। करतूं सदा सवायो रे ॥ (ऊ०) ३॥ हीरो हाथ अमो लक आयो। मूढ़ हिवै मति गमजो रे। सहिज सलूणा पास जिणंद जीसुं। राजी ऊय चित रमज्यो रे ॥(ऊ०)४॥ मन मांनीता माहरा आतम। करजे सुकृत कमाई रे। लाभ उदय जिनचंद्र लहीनें। वरतूं सिद्ध वधाई रे। (ऊ०)५॥ इति

॥※॥ (राग केदारो) ॥※॥

॥※॥ भज मन नाभि नन्दन देव (भ०) ध्यांन मुनीजन अहिंग धारे। सुर नर करत है सेव ॥ (भ०) १॥ चक्री भूप ति वक्रे सुरपति। वासुदेव बलदेव। नमत ब्रह्मा रुद्र नारद। सेस मणिधर सेव ॥(भ०)२॥ असरन सरनहै विरद जाको। भक्तिवछल भेव। राजसिंह प्रभु ऋषभ सिरपर। नाथ है नित मेव ॥ (भ०) ३ ॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (ताल ठुमरी) ॥※॥

॥ ※ ॥ आवोनेम रह जावो सदन। हम कोंन संतावो

रे (आ०) व्याहन आए सझके सजन। पसुवन को सुन। देख रुदन। गिरनारि चले निज छांडि वतन। तक सीर वतावोरे ॥ (आ०) १ ॥ पूनम जैसे चंद्रवदन। मनमोहन मूरत स्याम वरन। मेरे नौकी लगी नव भवकी लगन। मतो छेह दिषावो रे (आ०) ॥२॥ संयम दूती लागी श्रवण प्रभुकुं सिखाये नौके भमन। सब झूठे पड़ेंगे कोल वचन रथ फेरि न जावोरे (आ०)॥३॥ कपूर कहै प्रभुजीके चरण राजुल मन वैराग धरन। लेऊं दोड़ नेम जिनजीके सरण सिरपुर तो वतावोरे (आ०) ॥४॥ इति श्रीनेमिनाथस्तवन संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (खेमटा ताल दादरा) ॥ ॥

॥ ॥ अधम जगकाम भये आगीवान। है ना निकला सुखसें कभी भगवान॥ यार नहीं देखा समो सरणा। किया भवदधिमें उदर भरणा। दोड़जो लेते प्रभुसरणा। दूर दुख होते जनम मरणा। वैठ भव वरमें लगाया नहीं ध्यान। राज सिवपुरमें हुवा अपमान। डरो अब देखके काल खग वान।है०॥१॥ नाम जो जिनके दान देते। तो आठुं मद तुम से दूर रहते। यारजो जिनके चरण सेते। तो सभी सुमता कों तुमें देते। रहे तप जपमें सदा जोसूर। वरैवो भव भव अगम सुख भूर। कहै कपूर करम चकचूर। देखा जिन नूर हुवे दुख दूर। करो भव पार सुनो महरवान। नाजि०॥२॥ इति जिनपद स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥※॥ (राग पीलु) ॥※॥

॥※॥ आयो सही अब जाउं कहां सरणागत कों सरणागत तेरी। (आ०) तोह्र समान मिल्यो नहीं कोई। ढूंढ फिर्यो धरती सब हेरी॥ (आ०) होय दयाल महा प्रभुजी अब। आन भई तुम से भट भेरी॥ (आ०) १॥ दास कल्याण करैं वीनती सुन। पारसनाथ सुपारस मेरी॥ (आ०) २॥ इति पदम्॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (राग खाम्बाज) ॥※॥

॥※॥ घड़ी२ पल२ छिन२ निस दिन। प्रभुको समरण करलैरे। (घ०) प्रभु समरण सब पाप कटतहैं। अशुभ करम सब हरलैरे॥ (घ०) १॥ मन वच काय लगी चरणन नित ज्ञान हियेमें धरलैरे॥ (घ०) २॥ दोलत राम प्रभु गुण गावे। मनबंछित फल वरलैरे॥ इति पदम्॥※॥

॥※॥ अथ शिखरगिरी स्तवन॥※॥

॥※॥ तुमतो भले विराजो जी। सांवलिया महाराज सिखरपर भले विराजो जी। तेरे घाटे चौकी लागे। श्रावक जाण न पावे। हुकम कियो श्रीपासजिनेसर। बांह पकड़ लेजावें॥ (तु०) १॥ ऊंचा नींचा परवत सोहै। तले भिलन का वासा। पैंड़ पैंड़ पर सिंह भहूके। जिहां लिया तुम्ह वासा॥ (तु०) २॥ टूंक टूंकपर धजा विराजै। झालरकै झणकारै। झालरकैझणकार सेती। वाजे अविचल वाजा॥ (तु०) ३॥ दूर देशथी यात्री आवै। पूजा आण रचावै। अष्टद्रव्य पूजासें लावै। मनवंछित फलपा

वे ॥ (तु०) ४ ॥ सुर नर मुनिवर वंदन आवै। सहा परम सुख पावै। चंदखुस्याल चरणको सेवक। हरष हरष गुण गावे ॥ (तु०) ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ सिखर गिरेंद्र जुहारो। निज पातिक दूर निवारो रे ॥ (भवियां सि०) ॥ इण सम तीर्थ न कोई। में देखा सकु जग जोई रे ॥ (भ० सि०) १ ॥ वीस जिनेसर आया। इहां मुक्ति पुरी सुख पाया रे ॥ (भ०) ॥ कोड़ा कोड़ी मुनि सीधा। जिहां अजर अमर पद लीधा रे। (भ०) वीस चरण जिन सोहै। भविजन चातक मनमोहै रे ॥ (भ०) २ ॥ भुव मठ मंदिर छाजै। जिहां पास प्रभु महाराज रे ॥ (भ०) ३ ॥ पावन तीरथ एहवो। इहां संसय धरवो न केहो रे (भ०)॥ तीर्थ आसात न टालो। भविजन छहरीव्रत पालो रे ॥(भ०)४॥ नर भव लाहो लीजै। इण तीरथ महिमा कीजे रे (भ०)। सय उगणीस ते तीसै। अगहन सुदि पंचमी दीसै रे ॥ (भ०) ५ ॥ इगमग गोल सुहावे। भवि चंद गोविंद गुण गावे रे (भ०)। जात्रा करो मनरंगे। चंद सिखर भणें अति चंगे रे ॥ (भ०) ६ ॥ इति शिखरगिरि स्त०॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ सांवरिया जैसें बणें तैसें तारो० ॥ ॥ (इस चालमें) ॥ ॥ सांवरियामें दीठो दरस तिहारो। मेरो भव भय बाधा टारो (सां०) अश्वसेन नंदन जगवंदन। जगवंभव जगप्यारो। नीलवरण द्युति श्रीजिनवरकी। वामा उदर अवतारो ॥ (सां०) १ ॥ कमठ विदारण सिव सुख दा

रण। तारण तरण निहारो। अलख अगोचर अगम अरूपी। नियोसक्त सत्यवारो॥ (सां०) २॥ सिखर गिरी मंडन जिनवरजी। अद्भुत महिमा वारो। करजोडी दोउं वीनती करत है। वुधसिंह अरजी धारो॥ (सां०) ३॥ इति पदम्॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ पावापुरी स्तवन लि०॥※॥

॥※॥ चरम प्रभु अरज हमारी धारो। मेरी आवागमन निवारो (च०) (आंकडी)॥ सिद्धारथ कुल जनम लियो है। त्रिसला उदर अवतारो। सुरगण कोड मिली सुरगिर पर। स्नात्र महोत्सव सारो॥ (च०) १॥ वसुविध पूजा रचत जिनवर की। सफल करत अवतारो। जय २ शब्द करत सुर नरवर। जय २ जगदाधारो॥ (च०) २॥ बाल अवस्था अतुल वली प्रभु। सहजा अतिसय वारो। दिक्षा ले प्रभु कैवलपायो। श्रीसंघ आनंदकारो॥ (च०) ३॥ सुंदर सूरत मोहनी मूरत। नाथ निरंजन प्यारो। सीस मुगट सोहै अति सुंदर। गल मोतियन को हारो॥ (च०) ४॥ समवसरण की अद्भुत महिमा। देखत नयनन ठारो। भविजन चातक अति हरषावे। स्वामी नाथ निहारो॥ (च०) ५॥ चरम चोमासी पावा पुरि में। कीधो जग हितकारो। सोलै पहर लग अखण्ड देसना। पदनिरवाण पधारो॥ (च०) ६॥ काल अनन्त भम्यो भव वनमें। कहत न आवे पारो। अब तो प्रभु को सरण ग्रह्यो में। कबहु न छोडुं लारो॥ (च०) ७॥ दूगड गोत्र इन्द्र चन्द्र

सुत। चंद्र गोविंद भ्रमकारो।। जाना करो प्रभुकी उठ रंगे। जनम सतारथ सारो ।(च०,८॥ सय उगणी ते तीस मनोहर। अगहन दसमी उजारो। शिषरचंद प्रभु सिव सुख दायक। पूरव पुन्य तुह्मारो ॥(च०) ९॥ इति पदम्॥

॥ऊँ॥ वैराग्य लावणी लिख्यते ॥ऊँ॥

॥ऊँ॥ जब तन दोस्ती है इह मस्ती। काया संगलकी। आउ घटै दिलकी ॥ १ ॥ सासो स्वास समर ले साहिब। (खबर नहीं है जुगसे पलकी। सुकृत करणा हो सो कर ले। कुण जाणै कलकी) (ख०) तारामंडल रवि चंद्रमा। सवही चलाचल की। दिवस च्यारका चमत्कार है। वीज लिदां भलकी ॥ (ख०) २ ॥ यो जुग है सुपनै की माया। जस बूंद जलकी। विनस जावतां वेरन लागै। दुनियां जाय खलकी ॥(ख०) ३॥ हंसाया देहो में जब लग। खुसी है मङ्गल की। हंसा छांड चल्या जब देहो। जिटिया जङ्गल की॥ (ख०) ४ ॥ मनमावत तन चंचल हुस्ती। मस्ती है वलकी। सदगुरु अंकुस दीया आनके झीलां भई सलकी॥ (ख०) ५ ॥ मात पिता सुत बंधव भाई। सब जन सुतलव की। काया माया सब कारमी। ए तेरै कब की॥ (ख०) ६ ॥ झूठ कपट कर माया जोडी। कर वातां छलकी। बोझकी गांठ बंधी सिर तेरै। कैसें होय हलकी ॥ (ख०) ७॥ देवधरम साहिब को समरण। ए वातां घलकी। राग द्वेष उपजे नही जिनकुं। वीनती अखेमलकी ॥ (ख०) ॥ऊँ॥

॥ इति लावणी संपूर्णम् ॥ऊँ॥

॥卐॥ पुनः ॥卐॥

॥卐॥ अरज हमारी सुणो दीनपति । कौन भांति तिर णां । हम दुखी फिरत संसार चतुरगति । सो तुमसैं निर ना ॥ (अ०)१ ॥ घोराघोर नरक के भीतर । नाना दुख भर ना । मारन ताडन छेदन भेदन । अर देह धरनां ॥ (अ०) २ ॥ कबहु तिरयंच योनि पायकें । गलैं पांस परनां । छुधा तृषा अरु सीत उष्णता । मार मार करनां ॥ (अ०) ३ ॥ देव रिधुन पायके सुंदर । देख देख झुरनां । अब माला मुर झावण लागी । सोच किये मरनां ॥ (अ०) ४ ॥ मनुषा जनम पायके भटक्यो । कहुं नांही थिरनां । सा हिब तुम सरणागत राखो । जनम मरण हरनां ॥ (अ०)॥ ५ ॥ इति लावणी सं० ॥卐॥ ॥卐॥ ॥卐॥

॥卐॥ मुक्ति जावोंकी डिगरी ॥卐॥

॥卐॥ (दुहा) तिर्थङ्कर महावीरनें । कौसल गणधर साज । कानून प्रकष्या है दया । सब जीवन हित काज ॥१॥ दान सील तप भावना । असल खुलासा सार । जिणपुरसां धा रण किया । मोहचा सुगति मझार ॥२॥ चवदै सहस साधु हुवा । आर्या छत्तीस हजार । लाखां श्रावक श्राविका । पाया भव जल पार ॥३॥ (चाल चीर रंझा का ख्यालकी) । ॥卐॥ मेरो अदालत प्रभुजी कीजियें । जिन सासननायक मुग ती जावों की डिगरी दीजिये (जि० टेर) खुद चेतन मुद्दई बना है । आठुं करम मुदाला । दावा रस्ता सुगति मारग का । धोखा देजाय टालालो (जि०) ॥१॥ तप कागद दृष्टांम

लिया। तलवांणां षिमा बिचारी। सिज्झायें ध्यानं मज सुं न वनाकर। अरजी आन गुजारी जी (जि०) ॥३॥ में जाता था सुगति मारगमें। करमुनें आघेरा। धोखा दे कर राह भुलाया। लुंट लिया सब डेराजी (जि०) ॥३॥ वो हत खराव किया करमुनें। चौरासीके मांहो। दुक्ख अनंता पाया मेंनें। अंत पार कछु नांहो जी (जि०) ॥ ४ ॥ सच्चे मिलें वकीलकानूनी। पंच महाव्रत धारी। सुल देख मसोदा कीना। तवमें अरजी डारी जी (जि०) ॥५॥ पांचे सुमती तीन गुप्तीए। आठुं गवा वुलावो। सील असेसर बंडा चोधरी। उसकुं पूछ मंगावो (जि०) ॥६॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी। हुवा सफीना जारी। हाजर आवो जुवाब लिखावो। लावोसावूती सारोजी (जि०) ॥७॥ आठ मुदाले हाजर आए। मोह मुग त्यार बुलाये। च्यारकषायरु आठे मदकुं। साथ गवाई में लाए जी (जि०) ॥८॥ (टेर) ॥ ॥ (मुदालेको) ॥ ॥ जिंनसासन नायक। झूठा दावा है चेतनजीव का। (जि०) हमनें नहीं सताया इसकुं। ए हमरै घर आया। करजा लेकर हमसें खाया। ऐसा फरेव मचाया (जि०) ॥ ९ ॥ विषयभोग में रमियो चेतन। घाटा नफा न जानां। करजदार जव लारै लागा। तव लागा पिस्तोना जी (जि० झू०) ॥१०॥ हाजर खडे गवाह हमारे। पूछिये हालजु सारा। बिनां लिवां करजा चेतनसें। कैसें करें किनाराजी (जि०झू०) ॥११॥ (टेर) ॥ ॥ चेतन कहै सतावो मांहीं। सुन सासन सिरदारे। इमानदार है गवा हमारै। जांणें सब संसार जी। (जि०मे०) ॥ १२ ॥ में चेतन अनाथ

प्रभूजी । करम फरेबोभारी । जीव अनंते राह चलतकुं । लूंट चौरासीमें डारी जो (जि०) ॥ १३ ॥ बदिर पंडत हूण लुंटे । ऐसा दम बतलाया । धरम कहा डर पाप कराया ऐसा करज चढायाजो (जि०मे०) हिंसा मांहीं धरम बताया । तपस्या सेती डिगाया । इंद्रिय सुखमें मगन करीनें । झूठा जाल फैलाया जो (जि०मे०) ॥१५॥ ऐसा करो इनसाफ प्रभूजी । अपील होन नपावे । हक्करसी चेतनकी होवे । जनम मरण मिट जावेजो (जि०) । ग्यांन दरसन करी सुनसफी । दोनुंकुं समझाया । चेतनको डिगरी करदीनी । करमुंका करज बताया जो (जि०)॥२७॥ असल करज जो था कर्मोंका । चेतनसेती दिलाया । सुध संजम जद करी जमानत । आगेका सुध मिटाया जो (जि०)॥१८॥ आस्रव छोड संवरकों धारो । तपस्यासें चितलावो । जलदी करज अदा कर चेतन । सीधा मुगतिकों जावो जी (जि० मे०) ॥१९॥ सुध संजम जदकरी जमानत । चेतन डिगरी पाई । फागुणसुद दसमी दिन मंगल । सन् उगणीसै अठाई जो (जि० मे०) ॥२०॥ इति श्रीवीरप्रभु बीनती संपूर्णम् ॥※॥

॥※॥ अथ अनुभव पद डिगरी लि० ॥※॥

॥※॥ साहब अदालतपर बैठ। श्रीपारस मजीस्ट्रेन उत्तम कहाए है । सील है सिरदार और दान है दरोगा जाके दयारूपि वारण्ट सत्तआवरण पर आए है । ग्यान है चपरासी ताको लग्योहै मोहोसल ताकी मानजामनीमें श्रीजिनवरजी लिखाये है । रोसकी रसुम और कमीसन

लगे कर्मनकुं मोहकुं ग्याद इस तार लटकाए है ॥१॥ बैठकैं लिखैगा जब जीवकी जुबानवंदी तबके कुछ ख्याल जबाब सत्तगुरनें बताए है। छोग्म कारसाजी पायो पकड्यो अरिहंत जीको अनुभवपद पायवेकी डिगरी कराय लाए है। अब तो दरकास मैनें करी है तुमारैं पास साहब जिनराज अरज मेरी सुणलीजीयैं॥ अष्टकर्म आठुं जाम करत है कारसाजी साहब बुलाय इनकुं पिसे मान कीजीयैं॥ २॥ में तो हुं गरीब मेरी करैगा वकीली कोन पारस प्रवीण मेरी मिसल आज कीजीये। हारुं तो हाजर हजूरहीमें रह्यों करुं जीतूं तो लगाय जुगल चरननमें लीजीयैं। अब तो फरीयाद नाथ करी है तुमारैपास मेरी दाद दीजीये तो रावरी बडाइ है। मुनसबकी बात ओर सामलत अदालतकी अबतोमें अखिलमांन अरजी लगाई है। झूठ मूठ कारसाजी करत है पांच तीन साचो मत जैन जाकी अैन अधिकाइ है। मेरे हो पांच लोक मोहीकों झुठावत है जातैमें ग्वाहो श्रीजिनराजकी लिखाइ है। छोग्म कारसाजी पायो पकड्यो अरिहंत जीको अनुभव पद पायवेकी डिगरी कराय लाए है ॥※॥ इति अनुभवपद पाणें की डिगरी संपूर्णम् ॥※॥　　॥※॥　　॥※॥

॥※॥ श्रीकुंथु जिनालय प्रतिष्ठा स्तवन ॥※॥

॥※॥ दादा चिरंजीवो० (इस चालमें)। आज हर्षभयो त्रिभुवन नायक कुंथु जिनेसर भेटिया ॥(आ०) प्रभु मस्तक मुगट विराजैछै। रवि जिम कुंडल युगछाजैछै। गुणसगला

अंग समाजैछै (आ०) ॥१॥ प्रभु चौतीस अतिसय धारक छै। बांणीना गुण विस्तारक छै। सहु देवेंद्र जिणना पाय कछै (आ०) ।२। प्रभु सिंहासण पर सोहै छै। जसु छत्र चामर सिर होवै छै। भवियणना मनकुं मोहै छै (आ०) ॥३॥ प्रभु ध्यांनें जे होय रंग राता। ते पांमें नवनिधि सुख साता। अवसानें मुक्तिपुरी पाता (आ०) ॥४॥ प्रभु कुगुरु कुदेवकुं में ध्यायो। जब काल अनादी दुखपायो। अबतो तुम सरणें हुं आयो (आ०) ॥५॥ प्रभु बिरुध तुम्हारा चित धरनें। भव भय टालो सुनिजर करनें। जिम जगमें सहु जस तुम वरनें (आ०) ॥६॥ संवत् उगणीसे इकतीसे। जेठ उज्वल दसमी मन हींसे। करी चैत्य प्रतिष्टा सुभ दीसे। (आ०) ॥७॥ प्रभु आज सफल भयो दिन मेरो। रवि जिम प्रगट्या बीकानेरो। सहु आनंदकारक संघ तेरो (आ०) ॥८॥ जिन हंस सूरीश्वर माहाराजा। थाप्या अति सय धर जिनराजा। गुरु लक्ष्मीप्रधांन सेवणकाजा (आ०) ॥९॥ इति विक्रमपुर मध्ये श्रीकुंथुनाथ जी चैत्यप्रतिष्टा स्तवनम् ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ श्रीशीतल जिन स्तवन ॥❀॥

॥ ❀ ॥ (श्रीसंखेसर पासजिनेसर (इस चालमें) ॥❀॥

श्रीशीतल जिणचंद अनंत गुणाकरू। महा गोप महामा हण जगपति सुख करू। जगगुरु जगदाधार सरण तोरै सदा। रहतां स्वपनमें दुक्ख पांमुं नहीं हुं कदा ॥१॥ तूंही चिदानंद देव तूंही सुऋगुरु अछै। तूंही तात तूंही मात

तूंही बंधवजठे। कांम धेनुं चिंतामणि सुरतरु तुं सही अक्षय सुख दातार तुंही पायो सही ॥ २ ॥ तुम नांसें अष्टसिद्ध नवेनिध पाइयें। दिन २ बढतो तेज कीरति जग भाइये। इंद नरिंद सहु वश होय तुम सेवतां। उछव आनंद होय सहुगुण केवतां ॥ ३ ॥ तप जप संजम भार कहू नहीं वणसके। बहुल कर्मके जोर चित्त नहिं रहसके जो आतम गुण ग्यांन प्रगट होय माहरो। तो पांमुं सहु भेद छिनकमें ताहरो। ब्रह्मा विष्णु महेश जाणुं सुझसा रखा। बीतरागतुं देव करीमें पारखा। दीनदयाल दया निधि सिवसुख दीजियें। मोहन निजगुण पाय एही जस लीजिये ॥ इति जगन्मंडण श्रीशीतलजिन स्तवनं ॥❀॥

॥❀॥ पुनः ॥❀॥

॥❀॥ (श्रीसंखेसर पास०) (श्रौर) नदी जमुनाके तीर उडै दोय पंखिया। (म्हांरा लाल उ०) इस चालमें ॥ ॥ ❀ ॥ दढरथ नंदानंद पूरण अतिसय धरू। वदन कमलको तेज देखी छिपै दिन करू । अंग उपांग लक्षण दीसै सहु दीपता। रूपैं सुर नर इंद सहुकुं जीपता ॥ १ ॥ मुगट कुंडल गलहार बाजू बंध सोहता। घनस्थल श्रीवछ तिलक मनमोहता। छत्र चामर भामंडल गुण सहु फरसता। अणियाला दोय नेत्र अमीरस वरसता ॥ २ ॥ देव भुवन जिम चैत्यवण्यो बहु भाव सें। देखी मफुल्लित होय रुहु गुण दावसें। अनुपम महमा देखि चित्त अति मोहियो। आनंद अधिक अपार हियामें सोहियो ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव्यो बहुकालमें। मोह

मिथ्यातकैं जोर पड्यो भ्रमजालमें। पूरण पुन्य हिव जोग प्रभु दरसण मिल्यो। भवभय संकट दुक्ख सहु निश्चै टल्यो ॥ ४ ॥ तारण भवजल मांहि शीतल प्रभु जाणियो। तुम गुण अपरंपार हिया में पिछांणियो। सिवसुख लच्छी प्रधान सेवक बद्री भणी। मोहन प्रभु सुख कंद मिले शीतल धणी॥५॥ इति किलकिलामंडण श्रीशीतलनाथजी स्तवनम्॥

॥※॥ ताल ठुमरी ॥※॥

॥※॥ वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें। मेरी सुमता सखी मेहरवान भई रे (वी०) आप नहीं आवै बोधा पठावै। तेरी सुरत कुरवांन भई रे॥ (वी०) १ ॥ शासन नायक एही अरज है। दीजै दरस बंधो वेर भई रे (वी०) आस दासकी पूरन कीजे। चरण शरण लपटाइ रहीरे (वी०) ३ ॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ जिन जीसें मोरी० (इस चालमें) ॥ ※ ॥ सदा सहाई शांति जिनेसर भवदुख दूर गमाय (भलांजी भला भव०)। विश्वशेनके कुलमें सुरतरु। अचिराके नंद कहाय (भ०)। जनम भूमि हथणा पुर जाकै। म्रग लंछन सुख दाय (भ० ॥ १ ॥ स०)॥ तीस अधिक दस धनुष प्रमाणें। काया कंचन सोभाय (भ०) कुरुवंस कुल लाख बरस स्थित। केवल ग्यांन वरदाय (भ० ॥ २ ॥ स०) गर्भ थकां प्रभु शांति करी जव। शांतिनाथ पद पाय (भ०) भव भव भमतां शरणें आयो। अवतो करियै सहाय (भ० ॥३॥ स०)

ज्युं पारेवा ऊपर तुमने। करुणा अधिक कराय (भ०) पर तिख प्रभुपुर किल किलासे। सह जन वांछित दाय (भ० ॥४॥ स०) सुक्तिकमल कहै शिवसुख दायक। संकट दूर पुलाय (भ०॥ ५ ॥ स०) इति किलकिला मंडन श्रीशांति नाथजी स्तवनम् ॥❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ पुनः ॥❀॥

॥❀॥ प्रभुजीको महमा अजब बनीजी म्हारो मनडो लियो रे लोभाय। (भलां जी भला मन डोलियो रे लो भाय जी)। विश्वसेन अचराजीके नंदा। शांतिनाथ मन भाय (भ०प्र०) मस्तक मुगट काने युग कुंडल। उर अंगियां रही छाय (भलां० प्र०) १ ॥ मोहनी सूरत सोहनी सूरत। सह जनकुं सुखदाय (भलां० प्र०) नाम ग्रहण करतां जिनजी को। सुरगण पडै सहु पाय (भलां० प्र०) २ ॥ दूत उपद्रव दुख सहु टालै। नितप्रति मंगल थाय (भ०) सुक्तिकमल कहै सुरतरु सरिखा। मनबंछित फल दाय (भलां० प्र०) ३ ॥ इति द्वितीय शांतिनाथजी स्तवनम् ॥❀॥

॥❀॥ अथ काती महोत्सव बधाई लि० ॥❀॥

॥❀॥ रथ चढ जादु नंदन आवत है। (इस चालसे) ॥❀॥ आज नगरमें हरख बधाई। समवसरण प्रभु आवतहै। (आ०) धरम जिनेसर जग परमेसर॥ शांति सूरत मनभावतहै (आ०) ॥१॥ अनुपम रयण जडी उर अंगियां। मुगट कुंडल मन भावत है (आ०)॥ २ ॥ छत्र चामर भामंडल दीपत। नवसर हार सुहावत है (आ०) ॥ ३ ॥ सरदशशि

मुख कमल विराजत। रविजिम तेज फैलावत है (आ०) ॥४॥ नर नारी बहु अंग आभूषण। लुल लुल सीस नमावत हैं (आ०)॥५॥ मणि मुगता फल अच्चत श्रीफल ॥ भर भर थाल बधावत हैं (आ०) ॥६॥ वीणा म्हदंग ताल कंसाला। मधुर ध्वनी गुण गावत हैं (आ०)॥७॥ बहुपुर इंद्र धजा अति दीपत। विविध वाजिंत्र सुहावत है ॥८॥(आ०) इत्यादिक आडंबर बहुविध। कहतां पार न आवत है॥९॥ (आ०) कात्तिक सुद पूनम दिन उछव। देख सहु सुख पावत है (आ०)॥१०॥ धन्यभाग कलिकत्ता पुरमें। मोहन प्रभु गुण गावत है। (आ०) ॥ ११ ॥ इति कलकत्ता पुरमें कार्त्तिक महोछव गुण वर्णन श्रीधरमनाथ स्वामी बधाई संपूर्णम् ॥ ---॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ शासन नायक बधाई ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (केसरियानें म्हाजको लोक० इस चालमें ॥ॐ॥

हमारे आज आनंद बधाई। प्रभु वीरचरण सुखदाई। (हमारे आज आनंद बधाई)॥ सिद्धारथ नंदन जगवंदन। तिसला मात कहाई। चवी कुंडमें जन्म लियो है। सुर नर आवे धाई (ह०आ०) ॥ १ ॥ कंचन वरण अधिक तन सोभत। लंछन व्याघ्र सुहाई। तीन ग्यान संयुत प्रभु कहिये। भवियणकुं सुखदाई (ह०आ०) ॥२॥ केवल पाय सवी सुरसंगे। पावा पुरसें आई। समवसरण विच देसनादेतां परखदा बार बनाई (ह० आ०) ॥३॥ भूमंडल विच बहुत जीवकुं। भवजल पार लंघाई। चरम चौमासि पावा पुरि

करकै । सिवपुर पंथ सिधाई (ह० आ० ॥४॥ चौरासी लख जोनीमें फिरतां । काल अनादि गमाई । पुन्य संयोगे प्रभु तुम भेट्या । पातिक दूर पुलाई (ह० आ०) ॥ ५ ॥ तारण तरण भगतिजन वछ्छल । सिवरमणी वरदाई । लच्छी प्रधान सेवै कर जोडी । मोहन कहै सुखपाई (ह०) ॥ॐ॥ इति शासननायक बधाई संपूर्णम् ॥ॐ॥　　॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ श्रावककी करणी लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ श्रावक तूं ऊठे परभात । च्यारघडी ले पिछली रात । मनमें समरे श्रीनवकार । जिम लाभै भवसायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरुधर्म । कवण हमारै है कुलकर्म । कवण हमारै है व्यवसाय । एहवो चिंतवजे मन मांह ॥ २ ॥ सामाइक लेजे मनशुद्धि । धरम तणी धरी हियडै बुद्धि । पडिकमणो कर रयणी तणो । पातक आलोए आपणो ॥ ३ ॥ काया सगति करे पच्चखाण । सूधी पाले जिनवर आंण । भणजे गुणजे तवन सिझाय । जिण हुंतो निसतारो थाइ ॥ ४ ॥ चीतारे नित चउदै नेम । पाले दया जीवै तां सीम । देहरै जाय जुहारे देव । द्रव्यत भावित करजे सेव ॥ ५ ॥ पोसाले गुरु वंदन जाय । सुणे वखाण सदा चितलाय । निरदूषन सूझती आहार । साधानें दीजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहमी वछ्छल करिजे घणा । सगपण मोटा साहमी तणा । दुखीया हीणा दीना देष । करिजे तास दया सु विसेष ॥७॥ घर अनुसारै दीजे दान । मोटांसूं मकरे अभिमान । गु

रुनैं सुख लेजे आखडी। धरम न मेल्हे एका घडी ॥ ८ ॥ वाहसुद्ध करे व्यापार। ठंठा अधिकानों परिहार। मभरे कोहनी कूडी साष। कूडासोंस कथन मत भाष॥ ९ ॥ अनंतकाय कहिये बत्तीस। अभक्ष बावीसे विसवा वीस। ते भक्षण न करी जे किमैं। काचा कवलाफल मत जिमैं ॥१०॥ रात्रीभोजनना बहु दोष। जाणीनैं करिजे संतोष। साजी साबू लोहनैं गुली। मधु धाहडी मवेचे वली ॥ ११ ॥ वलि मकरावे रंगण पास। दोषण घणा कह्या छै तास। पाणी गल जे बे बे वार। अणगल पीधां दोष अपार॥ ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करे जतन्न। पातक छोडी करिजे पुन्न। छाणां इंधण चूल्हे जोय। वावर जे जिम पाप न होइ ॥१३॥ घृतनीपर वावर जे नीर। अणगल नीर मधो ए चीर। वारै व्रत सूधा पाल जे। अतीचार सगला टाल जे॥ १४ ॥ कहिया पनरै करमा दान। पाप तणी प्रर ह रि जे खान। सीस म लेजे अनरथ दंड। मिथ्या मैल मभ रिजे पिंड॥ १५ ॥ समकित सुद्ध हीयडै राख जे। बोल विचारीनें भाष जे। उत्तम ठासें खरचे वित्त। परउप गार करे शुभचित्त॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूधनैं दही। उघाडा मतमेले सही। पांचे तिथ मकरे आरंभ। पाले सील तजे मनदंभ ॥१७॥ दिवस चरम कीजे चउविहार। च्यारे आहार तणौ परिहार। दिवस तणा आलोए पाप। जिम भाजे सगला संताप॥ १८ ॥ संध्या आवस्यक साचवे। जिनवर चरण सरण भव भवे। च्यारे सरणां दृढ करि रए। सागारी अणसण ले सुए ॥१९॥ करे मनोरथ

मन एहवा। जाऊं तीर्थ सेत्रुंजे जेहवा। समेत सिखर आबू गिरनार। भेटीस कवऊं धन अवतार ॥२०॥ श्रावक कौ करनो छै एह। एहथी थायै भवनो छेह। आठे करम पडै पातला। पापतणा छूटै आमला ॥२१॥ वाछै लहीयै अमर विमान। अनुक्रम पावै सिवपुर थान। कहै जिन हर्ष घणें ससनेह। करणी दुखहरणी छै एह ॥ २२ ॥ इति श्रावककै अहनिशि कर्त्तव्य संपूर्णम् ॥❁॥　　॥❁॥

॥❁॥ श्रीपार्श्व जिन स्तवन लि० ॥❁॥

॥❁॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा। अमचीपूरो प्रभु आसाराज (सु०) देख उदासा अपणा दासा। दीजै कछुक दिलासाराज ॥ १ (सु०) ॥ चाफी चटको भव मांहे भटको। नाच्यौ सें विध नटको राज (सु०) छिव जन हटको। आपसुं अटको। लागुं प्रभुपाय लटको राज ॥ २ (सु०) ॥ ते हम टाली सुगत संभाली प्रीत असे होज पाली राज (सु०, एक हथाली वाजै ताली। वात अचंभा वाली राज ॥ ३ (सु०) ॥ ते उपगारी पास तुम्हारी। सेवामें विध सारी राज (सु०) तत्व विचारी मन सुध धारी श्रीप्रभसी सुख कारी राज ॥ ४ (सु०) ॥ इति श्रीपार्श्व जिन स्तवनम् ॥❁॥

॥❁॥ अथ चौपड खेलन विचार स्तवन लि० ॥❁॥

॥ ❁ ॥ (राग सोरठी) ॥ ❁ ॥ अरे माहरा प्राणीया (चतुर नर) चौपड इणविध खेलरे। असुभ करम मलफारकै (च०)। जाजम कर वैराग रे। वछीय बिछायत वैस

जो (च०)। जहां नहीं कुमतिको लाग रे (अरे०) ॥ १ ॥ दानसील तप भावना (च०) ॥ चौपड़ एह पसाररे। आठ दाव एक बोल में (च०) ॥ आठुं ई करम निवार रे ॥ २ ॥ (अरे०) देव गुरु धर्म तीनुं भला (च०)। पासा एही जाण रे। अवसर कर हाथे लीया (च०)॥ उज्जल लेस्या आंण रे ॥३॥ दरसण ग्यांन चारित्र भला (च०) तीनुं ई गुपती विचार रे। नव तत्व सात हिरदे धरो (च०)। एसब सोला साररे ॥४॥ (अ०) पद्मा अठारै रहणदे (च०) पोवारा व्रत धाररे। दस लच्छिण दस धरमहै (च०)। हितकर हीयै विचाररे ॥ ५ ॥ (अ०) षट्‌काया छकापंचा (च०) हिरदै दया विचार रे। पुन्य उदै पंजापंचा (च०) पंच महाव्रत धाररे ॥६॥ (अ०) च्यार तीन काणा पद्मा (च०)। सातुं ई विसन निवार रे। जे दुरगति दायक सही (च०)। वाधै अनंत संसाररे ॥७॥ (अ०) चिहुंगति वाजी लग रही (च०) दुक्ख सह्या भरपूररे। करमकटै सुख ऊपजे (च०) रतनसागर कहै सूररे ॥ ८ ॥ (अ०) इति श्रीचौपड खेलन हित उपदेस सिज्झाय संपूर्णम् ॥*॥ ॥*॥

॥*॥ सेत्रुंज खेलन विचार स्तवन लि० ॥*॥

॥*॥ सेत्रुंज खेल खिलारी। सब समझ देख सेत्रुंज की घात। लख दोउं दल अपनें पराये की जात। काउ विध कर मोह बादस्याहकों मात। जब जाणुं तोय चतुर खेलन खिलार (हे से०) ॥१॥ आठुं कर्म पियादे आगे झुक तेही आवे। काम क्रोध गज चलत थंभत नहिं थंभे। लोभ

जंठ च्यार खूंटकी मरोड चल ध्यावै। मान मायाके तुरंग चाल चपल दिखावै। मिथ्या मत सो वजीर वीर वाके ढंग ठाडो। वाकै मारवैकों दल अपनो संभार (हे से०) ॥ २ ॥ तेरो ध्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग ठाडो। आठों अंग समकितके पियादे हलकारो। त्याग सांढिया सवार पर सांढियां को डारो। सत्य वचन तुरंग सुं तुरंग निवारो। क्षमासील दोय फील राखो दलके अगाडी। परदल कर डारो छिन में संहार (हे से०)। जप तप सत व्रत याके घेरे चिऊं ओर। जब वाके चलणें को काहू रहे नहूं ठोर। जब तेरी होगी जीत दूजो हारैगो खेलारो। जब सुजस को तेरैसिर बंधैगो मोड। ठाडे इंद्र धरणिंद्र तोरै ढोलैंगे चवर। तेरो भजन भजैगो गुण अगाह (हे से०) ॥३॥ ॥ इति सज्जनपुरणोंके सेतुंज खेलन विचार संपूर्णम् ॥

॥ ॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीको पारणो लि० ॥ ॥

॥ ॥ (दुहा) ॥ ॥ श्रीअरिहंत अनन्त गुण। अतिसय पूरणगात्र। मुनि जे ज्ञानी संयमी। ते कहीये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्र तणो अनुमोदना। करतो जीरणसेठ। श्रावक अच्युयगति लहै। नव ग्रैवेकां हेठ ॥२। दस चउमासा वीर जी। विचरत संयम वास। वेसालापुर आवीया। इग्यारमो चौमास ॥३ ॥ ॥ ढाल एकवर बोडा हायीया जी (एहनी) ॥ ॥ चौमासी एह इग्यारमो जी। विचरत साहस धीर। वेसालापुर बाहिरै जी। आव्या श्रीमहावीर ॥ १ ॥ (जगत्

गुरु त्रिसला नन्दन जी । भलैसें भेट्या श्रीजिनराय । रुडी री चौक पुरावो आय । मेरै भाग अनोपम थाय ॥ ज०२॥ बलदेवनो छै देहरो जी । तिहां प्रभु काउसग्ग कीध । पञ्चक्खाण चउमासनो जी । स्वामी ए तप कीध (जग०) ॥ ३ ॥ जीरणसेठ तिहां रहै जी । पालै श्रावक धर्म । आकारे तिण ओलख्या जी । जांणे श्रीजिन मर्म ॥(ज० ४॥ आज अछै उपवासीया जी । स्वामी श्रीवर्द्धमान । कालिह सही प्रभु भीम स्यै जी । मैं हथ देस्युं दान ॥ (ज० ५॥ सदा सेठ इम चिंतवै जी । होसी सफल मुझ आस । पञ्च मास गिणतां थकां जी । पूरीथई चउमास ॥ (ज०६॥ सामग्री आहारनी जी । जीरण कीध तयार । प्रभुनो मारग देखतो जी । बैठो घरनैं बार ॥(ज०७॥ घरि आवै छै प्राहुणा जी । निहुत्या एकणवार । प्रभुजी कान पधारसी जी । मैं निहुत्या वारंवार ॥(ज०८॥ पीछै करिस्युं पारणो जी । हुं प्रभुनैं प्रतिलाभ । होय मनोरथ एहवो जी । तोय विनवस्यै आभ ॥ ज० ९॥ अवसर उठ्या गोचरी जी । श्रीसिद्धारथ पूत । वैसाला पुर आवतां जी । पूरण घरेय पहुत्त ॥ ज०१०। मिथ्याती जांणै नहीं जी । जंगम तीरथ एह । चेटीनें कहै एहनो जी । कांइक भिक्षा देह ॥(ज० ११॥ बाकुलरनै बाकुला जी । प्रभुनें आणी दीध । बीराणी तेही लीधा जी । तिहां प्रभु पारणो कीध ॥ (ज०)१२॥ देव बजावै दुंदुभी जी । जय बोलै करजोड़ि । हेम वृष्टि हुई तिहां जी । साढीबारह कोडि ॥ (ज०)१३॥ कहो सेठ तुम्हें स्युं दीयो जी । कीधो पारणो वीर । लोकां प्रतें इम कहै जी । मैं वैराई खीर ॥ (ज०)१४॥

राजादिक सहु एकठे जी । धन धन पूरण सेठ । ऊंचे क
रणी तें करी जी । अवर सहु तुछ हेठ ॥(ज०) १५॥ जीर
ण सेठ सुणे तदा जी । वाजित दुंदुभी नाद । अनन्त कीयो
किणां पारणो जी । मनमें थयो विषवाद ॥(ज०) १६॥ हुं
जगमें अभागीयो जी । मेरे नाया सांम । कल्पवृक्ष किम
पामीये जी । मारु मंदल ठाम ॥(ज० १७॥ जेता मनोरथ
में कीया जी । तेता रह्या मनमांहि । निरधन जिम जिम
चिंतवे जी । तिम तिम निरफल थाहि ॥ ज० १८॥ स्वामी
तिहां कीयो पारणो जी । कीयो अनेथ विहार । आया पा
स संतानीया जी । तिहां मुनि केवल धार ॥(ज०) १९॥ वे
सालापुर राजीया जी । लोकासुं आणंद । राय प्रश्न पूछे
तिहां जी । सुगुरु चरण अरविंद ॥ ज० २०॥ मेरे नगरमें
को अछे जी । जीवपुन्य जसवंत । कहे केवली आनतो जी
जीरण सेठ महंत ॥(ज० २१॥ राय कहे किण कारणें
जी । जीरण सेठ महंत । दान दीयो जिनवीरनें जी । पूरण
ते असवंत ॥(ज० २२॥ राय प्रतें कहे केवली जी । पूरण
दीनो दांन । हेमदृष्टि फल तेहनें जी । अवरन कोई प्रमा
ण ॥(ज० २३॥ देवलोक तिण बारमें जी । जीरण बान्धो
बंध । विना दान दीना लह्यो जी । उत्तम फल संबंध ॥ ज०)
२४॥ जो एक सुर दुंदुभी जी । जो न सुणे तो कान । ल
हि तो जीरण तो सही जी । केवल अविचल ठाण ॥(ज०)
२५॥ राजा जीरणनें दीयो जी । अधिक मान सन्मान । पु
न्य नगरमें घोषीयो जी । जीयो पुन्य प्रमाण ॥(ज० २६॥
दान दीयो सुपात्रनें जी । ते निष्फल नहि थाय । पात्रदान

अनुमोदतां जी। जीरण जिम फल थाय ॥(ज०) २७॥ इम जाणी अनुमोदनाजी। दान सुपात्र रसाल। दान देवै सुपात्रनें जी। तेहनें नमें मुनिमाल॥ ज०।२८॥ इति श्रीमहावीरस्वामीको पारणो संपूर्णम् ॥॥ ॥॥

॥॥ अथ सब पापादिक आलोयण स्तवन लि० ॥॥

॥॥ बेकरजोडी वीनवूं जी। सुणि स्वामी सुविदीत। कूड कपट मूंकी करीजी। वात कहुं आपवीत ॥१॥ (कृपानाथ मुझ वीनती अवधार) तुं समरथ त्रिभुवन धणी जी। मुझनें दुत्तर तार ॥(कृ०)२॥ भवसायर भमतां थकां जी। दीठा दुःख अनन्त। भाग संयोगें भेटीयो जी। भय भंजण भगवंत ॥ (कृ०)३ ॥ जे दुख भांजे आपणो जी। तेहनें कहीये दुःख। परदुख भंजण तूं सुण्यो जी। सेवकनें द्यो सुक्ख ॥ (कृ०)४॥ आलोयण लीधां पखै जी। जीव रुलै संसार। रूपी लक्ष्मणा महासती जी। एह सुणो अधिकार॥ (कृ०)५॥ दूसम कालें दोहिलोजी। सूधो गुरु संयोग। परमारथ पीछे नहीं जी। गडर प्रवाही लोग ॥(कृ०)६॥ तिण तुझ आगलि आपणा जी। पाप आलोउं आज। माय बाप आगलि बोलतां जी। बालक कीही लाज ॥ (कृ०)७ ॥ जिन धमरसहू कहै जी। थापै अपणी वात। सामाचारी जूजूई जी संसय पडे मिथ्यात॥ (कृ०) ८ ॥ जाण अजाण पणें करी जी। बोल्या उतसूत्र बोल। रतने काग उडावतां जी। हारयो जनम निटोल ॥(कृ०)९॥ भगवंत भाख्यो ते किहां ओ किहां मुझ करणी एह। गजपाखर खर किम सहै जी। स

मल विमासण तेह ॥ (क्र०) १० ॥ आप परूपुं आकरो जी जांणें लोक महंत । पिण न करुं परमादीयो जी । मासाह स दृष्टांत ॥ (क्र०) ११ ॥ काल अनंतै मैं लह्या जी । तीन र तन श्रीकार । पिण परमादै पाड़िया जी । किहां जई करुं पुकार ॥ (क्र०)१२॥ जाणुं उत्क्रष्टी करुं जी । उद्यत करुं श्र विहार । धीरज जीव धरै नहीं जी । पोतै बहु संसार ॥ (क्र०) १३ ॥ सहज पड्यो मुझ आकरो जी । नगमें रूड़ीवा त । परनंद्या करतां थकां जी । जाये दिननें रात ॥ (क्र०) १४ ॥ किरिया करतां दोहिलो जी । आलस आणें जीव । धरम पखै धंधे पड्यो जी । नरगैं करस्यै रीव ॥ (क्र०)१५॥ अणहुंता गुण को कहै जी । तो हरखुं निस दीस । को हितसीख भली कहै जी । तो मन आणुं रीस ॥(क्र०)१६॥ वाद भणी विद्या भणी जी।पर रंजण उपदेस । मन संवेग धर्यो नहीं जी । किम संसार तरेस ॥ (क्र०)१७॥ सूत्र सिद्धांत वखांणतां जी । सुणतां करम विपाक । खिण एक मनमांहि ऊपजे जी । मुझ मरकट वैराग ॥ (क्र०) १८ ॥ त्रिविध२ क रि ऊचरुं जी । भगवन्त तुम्ह हजूर । वारवार भांजुं वली जी । छूटकवारो दूर ॥ (क्र०) १९ ॥ आपकाजि सुख राचि तां जी । कीधा आरंभ कोड़ । जयणा न करी जीवनी जी देव दयापर छोड़ ॥ (क्र०) २० ॥ वचन दोष व्यापक कह्या जी । दाख्या अनरथ दंड । कूड़ कपट बहु केलवी जी । व्रत कीधा शतखंड ॥ (क्र०) २१ ॥ अण दीधो लीजें तिणो जी । तीहो अदत्तादान । ते दूषण लागा घणाजी । गिणतां नावे ग्यान ॥२२॥ (क्र०) चंचल जीव रहै नहीं जी । राचै रम

णो रूप। काम विटंवणा सो कडुं जी। ते तूं जाणै सरूप॥ २३॥ (कृ०) माया ममता मैं पड्यो जी। कीधो अधिको लोभ परग्रह मेल्यो कारमो जी। न चढी संयम सोभ ॥ २४॥ (कृ०) लागा मुझनें लालचे जी। रात्री भोजन दोष। मै मनमूं क्यो माहरो जी। न धस्यो धरम संतोष ॥ २५॥ (कृ०) इण भव पर भव दूह व्या जी। जीव चौरासी लाष। ते मुझ मिछामि दुक्कडं जी। भगवंत तोरी साष।२६॥ (कृ०) करमा दांन पनरै कह्या जी। प्रगट अढारै पाप। जेमैं की धा ते सहु जी। वगस२ माइ वाप ॥२७॥ (कृ०) मुझ आ धारहै एतलो जी। सरदहिणा छै सुद्ध। जिन धम मीठो जग तमें जी। जिम साकरनैं दूध ॥२८॥ (कृ०) रिषभदेव तुं राजीयो जी। सेतुंजगिरि सिणगार। पाप आलोया आप णा जी। करप्रभु मोरी सार॥२९॥ (कृ०) मर्म एह जिन धर्मनो जी। पाप आलोयां जाय। मनसुं मिछामि दुक्कडं जी। देतां दूर पुलाय ॥३०॥ (कृ०) तुं गति तुं मति तुं धणी जी। तुं साहिब तुं देव। आणधरं सिरताहरी जी। भव२ ताहरी सेव ॥३१॥ (कलशः) ॥ इम चढीय सेतुंज चरण भेट्या नाभि नन्दन जिनतणा। करजोडि आदि जिणंद आगै पाप आलोया आपणा। श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणै। गणि सकल चंद सुसीस वाचक समयसुंदर गणि भणै ॥३२॥ इति आलो यणागर्भित श्रीऋषभदेवस्वामी स्तवनं ॥

॥ॐ॥ अथ भव२ के पापकर्म दुर करणेंकों पद्मावती की सिज्झाय लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ हिवे राणी पदमावती। जीवरासिखमावै। जाण पणुं जगदोहिलो। इणवेला आवै ॥१॥ (ते सुझ मिछामि दुक्कडं)। अरिहंतनी साप। जेमें जीवविराधिया। चउरासी लाष ॥२॥ (ते०) सात लाप प्रथवीतणा। साते अप्पकाय। सातलाप तेऊकायना। सातेवली वाय ॥३॥ (ते०) दस प्रत्येकवनस्पति। चउदह साधारण। बिति चउरिंद्री जीवना बेबेलाप विचार ॥४॥ (ते०) देवता तिरयंच नारकी। च्यार२ प्रकासी। चउदह लाप मनुष्यना। एलापचउरासी ॥५॥ (ते०)॥ इण भव परभव सेविया। जे पाप अढार। त्रिविध२ करिपरिहरूं। दुरगति दातार ॥६॥ ते०) हिंसा कीधी जीवनी। बोल्या मिरषावाद। दोष अदत्तादानना। मैथुन उनमाद ॥७॥ (ते०) परिग्रह मेल्यो कारिमो। कीधो क्रोध विसेप। मांन माया लोभमें कीया। वलि रागनें द्वेष ॥ ८॥ (ते०) कलहकरी जीव दूहव्या। दीधा कूडा कलङ्क। निन्दा कीधी पारकी। रति अरति निस्संक ॥९॥ ते०) चाडी खाधी चौतरै। कीधो थांपण मोसो। कुगुरु कुदेव कुधर्मनो। भलो आण्यो भरोसो ॥१०॥ (ते०) पाटकीनें भव में किया। जीवना वधघात। चिडीमार भव चिडकला माख्या दिनराति ॥११॥ (ते०) माछीगरभव माछला। झाल्या जलवास। धीवर भील कोलीभवे। म्रग माख्या पास ॥१२॥ (ते०) काजी मुल्लानें भवें। पढी मंत्र कठोर। जीव अनेक जबै किया। कीधा पाप अघोर ॥१३॥ (ते०) कोटवा

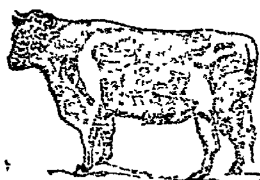
लनें भवमें किया। अकराकार दंड। बंदिवांन मराविया। कोरडाछडी दंड ॥ १४ ॥ (ते०) परमाधरमीनई भवे। दीधा नारकी दुक्ख। छेदन भेदन वेदना।ताडणा अति तिक्ख ॥१५॥ (ते०) कुंभारनें भवमें कीया। निम्बाह पचा व्या। तेली भव तिल पीलीया। पापी पेट भराय ॥१६॥ (ते०) हालीनें भव हल खड्या। फाड्या पृथवी पेट। सूड निदान घणा किया। दीधा बलधचपेट ॥१७॥ (ते०) मालीनें भव रोपिया। नानाविध वृक्ष। मूल पत्र फल फूलना। लागा पापना लक्ष ॥ (ते०) १८ ॥ अधोवाइ आंगमी। भख्या अधिकाभार। पोठी ऊंठ कीडा पड्या। दया नावीलिगार ॥ (ते०) १९ ॥ छींपानें भव छेतर्यो। कीधा रांगणि पास। अगनि आरंभ कीया घणा। धातुरवाद अभ्यास ॥ (ते०) २० ॥ सूरपणें रण झूझतां। मार्या मांणसवृन्द। मदिरा मांस मक्षा घणा। खाधा मूलनें कन्द ॥ (ते०)२१ ॥ खाण खणावीधातुनी। पाणी ऊलंच्या। आरंभ कीधा अति घणा। पोते पापज संच्या ॥ (ते०) २२ ॥ अंगार कर्म किया वली। धरमें दव दीधा। सुंसलेई वीतरागना। कूडाकोसज पीधा ॥ (ते०) २३ ॥ बिल्ली भव उंदर लिया। गीलोई हत्यारी। मूढ गमार तणें भवे। में जूं लीख मारी ॥ (ते०)२४ ॥ भाड भूंजातणें भवे। एकेन्द्री जीव। ज्वारि चिणा गहूंसेकिया। पाडंता रीव ॥ (ते०, २५ ॥ खांडण पीसण गारना। आरंभ अनेक। रांधण इंधण आगिना। कीया पाप उदेग ॥ (ते०) २६ ॥ विकथा च्यार कीधी वली। सेव्या पंच प्रमाद। इष्ट वियोग पड्यां किया। रोदन

विषवाद ॥ (ते०) २७ ॥ साधु अनें श्रावक तणा । व्रत लेई भागा । मूल अनें उत्तर तणा । दूषण मुझ लागा ॥ (ते०) ॥ २८ ॥ साप विछू सिंह चीतरा । शिकरानें समली । हिंसक जीव तणें भवे । हिंसा किधी सवली ॥ (ते०, २९ ॥ सूआवडी दूषण घणा । वलि गरभ गलाव्या । जीवाणी ढोल्या घणा । सीलव्रत भंजाव्या ॥ (ते०) ३० ॥ भव अनंत भमतां थकां । कीधा कुटंब संबंध । त्रिविध२ करि वोसरूं । तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते०) ३१ ॥ इण भव परभव इण परै । कीधा पाप अखत्र । त्रिविध२ करि वोसरूं । करूं जनम पवित्र ॥ (ते०) ३२ ॥ राग वैराड़ी जे सुणें । एत्रीजी ढाल । समय सुन्दर कहे पापथी । छूटै ततकाल ॥ (ते०) ३३ ॥ इति श्रीआलोयण सिज्झाय संपूर्णम् ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ पापकृत्यकी आलोयण श्रीसंघकों सदा करणी चहिये ॥※॥

॥※॥ आलोयण करते ऐसे तिर्यंच पिण देवलोक कों प्राप्त होते है ॥※॥







॥ ✽ ॥ सकल गुणगरिष्टान् सत्तपोभि र्वरिष्टान्। शम दमथ मनुष्टांश्चारुचारित्र निष्टान्। निखिल जगति पीठे दर्शितात्म प्रभावान्। मुनिप कुशलसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥१॥✽॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिन कुशलसूरिगुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरि अत्र तिष्ठ ठः ठः स्वाहा ॥✽॥ इति प्रतिष्ठापनं ॥✽॥२॥ ॥✽॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशल सूरिगुरो अत्र मम सन्निहितो भव वषट् ॥✽॥ इति सन्निधी करणं ॥✽॥ ३ ॥

॥✽॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥✽॥

॥ ✽ ॥ (दूहा) गंगाजल तिम नृवलवलि। तीर्थोदक भरपूर। कलशभरी गुरु चरणपर। ढालै तस दुखदूर ॥१ ॥✽॥ (ढाल) देशीसूरती महीनांनो ॥✽॥ गंगाजल अति निरमल अमल सुकमलैं पूर। खीरोदधि वरदधि ज्यौं उज्जल जलभरपूर। तेह उदकवलि तीर्थ नीर भरि कलश सनूर। गुरुचरणे जे ढालै टालै दुष्कृतदूर ॥१॥✽॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिमकुशलसूरिगुरु चरणकमलेभ्यः जलं निर्वपामि ते स्वाहा ॥✽॥ इति जलपूजा ॥✽॥ ॥✽॥

॥ॐ॥ चंदन पूजा ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ बावन्ना चंदन अगर। घस केसर घन सार। चरचै जे गुरु चरणनैं। पांमें ते जैकार ॥१॥ (ढाल) ॥ॐ॥ मलयागर तिम अगर चंदन बलिकेसर सार। कस्तूरी अतिगंधै पूरी घस घनसार। कुसल सूरि गुरुचरणे चरचै चढते भाव। सकल रोग तन सोग हरै वलि जड़ता भाव ॥ २ ॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुसलसूरिगुरुः चरण कम लेभ्यः चंदनं निर्वपामि ते स्वाहा ॥२॥ इति चंदन पूजा ॥

॥ॐ॥ पुष्पं ॥ॐ॥

॥ॐ॥ केतकि चंपक फूल थी। पूजै जे गुरुपाय। तसु जस सूर उदै हुवै। अपजस तिमिर नसाय ॥१॥ॐ॥(ढाल)॥ॐ॥ चंपक केतक मरुवो दमन सेवंती फुल। जाई जुई मोगरो मालती तेम वमूल। कमल गुलाब चंबेली वेली परमल पूर। गुरुचरणे जे ढोवै होवै जस ज्युं सूर ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः पुष्पं निर्वपा मिते स्वाहा ॥ॐ॥ इति पुष्पपूजा ॥३॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अक्षतं ॥ॐ॥

॥ॐ॥ उज्वल ज्यों शशि अंकविण। खंडित नहीं वि शाल। अक्षत गुरुचरणे ठवै। तसु घर मंगल माल ॥१॥ ॥ॐ॥ (ढाल) ॥ॐ॥ सरल सुगंधित तंदुल उज्वल जल उत्पन्न। ज्युं वर मोती आभा इंतो उज्वलवन्न। शालकोई समभोई सोई अक्षत भव्य। स्वस्तिक कुशल वधावै पावै मंगल भव्य ॥ ३ ॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशलसूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः। अक्षतं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ॐ॥ इति

॥※॥ दीपं ॥※॥

॥※॥ कंचन मणिमय रत्ननौ। दीवो कर हतपूर। वाती मोली सूत घर। करौ प्रदीप सुनूर ॥ १ ॥※॥ (ढाल) ॥※॥ कंचन घटित जटित गति नानाविध नवरत्न। दीवो अतिकारीगर कीवो अधिके यत्न। घृतपूरी ससनूरी मोली वाती जोय। दीप करे गुरु आगें ज्योत उद्योती होय ॥ २ ॥※॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः दीपं निर्वपामि ते स्वाहा ॥※॥ इति दीपपूजा ॥५॥

॥※॥ धूपं ॥※॥

॥※॥ बावन्ना चंदन अगर। सेल्लारस घनसार। धूपै जे गुरु धूपथी। तस घर रिधविसतार ॥१॥※॥ ढाल)॥※॥ अगर चंदन सेल्लारस ठाम ठमीलो मेल। कपूर काचरी वलि घनसारे म्रगमद भेल। धूप अडंग करी गुरु धूपै चढते चित्त। ते नरवित्त सुमारग पांमें नव नव नित्त ॥२॥ ॥※॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः धूपं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥※॥ इति धूप पूजा ॥ ६ ॥※॥

॥※॥ नैवेद्यं ॥※॥

॥※॥ साल दाल पक्कवान घन। व्यंजन नव नव भांत। नेवज गुरु आगल ठवे। क्षुधा दोष उपसांत ॥ १ ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥※॥ पेंडा मगद सेवइया लाडू मोतीचूर। खाजा ताजा लापसी दोठानें घृतपूर। पिस्ता दाष विदाम छुहारा पिंडखजूर। गुरुचरणे जे ढोवै भोग लहै भरपूर ॥२॥ ॥※॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुसलसूरि गुरुः चरण कमलेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामि ते स्वाहा ॥※॥ इति नैवेद्य पूजा ॥७॥

॥※॥ फलं ॥※॥

॥※॥ श्रीफल शीताफल सदा। फल पूंगीफल लेय।
ढोवैं जे गुरुचरणपर। तसु उत्तम फल देय ॥ १ ॥※॥ (ढाल) ॥※॥ श्रीफल शीताफल नारंगी दाड़म दाष। खरबूजा तरबूज जंभेरी पाकी साख। करणा कवला केला नींबू फनस सफार। गुरु चरणे फल ढोई फल पामें श्रीकार ॥ २॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरणकमलेभ्यः। फलं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥※॥इति फलपूजा ॥८॥

॥※॥ अर्घं ॥※॥

॥※॥(अथ कलश) दूहा॥※॥ इम जिनकुसल सुरिंदनै। पूजै अष्ट प्रकार। तसु घर नवनिधि संपजै। पुत्रादिक परिवार ॥ १ ॥ भट्टारक खर तर गछै। श्रीजिन लाभसुरिंद रत्नराजमुनि भमरपर। सेवै पद अरविंद ॥२॥ तासुचरण रजकणसमो। ग्यांन सार बुद्धिमंद। श्रीसद्गुरु पूजा रची सोधोकविजन इंद ॥ ३ ॥※॥ इति श्रीजिनकुशल सुगुरूणां अष्ट प्रकारी पूजा ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ लघु अष्टप्रकारी पूजा लि० ॥※॥

॥※॥ सुरनदी जल निर्मल धारया। प्रबल दुष्कृत दाघ निवारया। सकल मङ्गल वंछित दायकं। कुशल सूरिगुरोश्चरणांयजे ॥१ ॥※॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरिः। चरण कमलेभ्यो जलं० ॥※॥ अथ चंदन पूजा ॥※॥

॥※॥ मलय चंदन केसर वारिणा। निखल जाड्यरुजा तप हारिणा। सकल० ॥ १ ॥※॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कु

शल सूरि गुरुः चरण कमलेभ्यो चंदनं० ॥❀॥ १ ॥❀॥

॥❀॥ अथ पुष्प पूजा ॥❀॥

॥❀॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः । परिमला हृत षट् पद दृंदकै ॥ सकल० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः० ॥❀॥ पुष्पं यया०॥ ३ ॥ ❀ ॥अथ अक्षत पूजा ॥

॥❀॥ सरल तंदुल कैरित निर्म्मलै । प्रवर मोक्तिक पुंजवदुज्वलैः । सकल मङ्गल० ॥❀॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ० । अक्षतं यया महेस्वाहाः ॥❀॥ ॥❀॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥❀॥

॥❀॥ बहु विधैस्सरभिर्वटकैय कैः । प्रवर मोदक पुंजसुखर्जकैः । सकल मङ्गल० ॥❀॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ० । नैवेद्यं यया महेस्वाहाः ॥❀॥ ॥❀॥ अथ दीप पूजा ॥❀॥

॥❀॥ अति सुदीप्तमये खलु दीपकैं। विमल कंचन भाजन संस्थिते । सकल मङ्गल० ॥❀॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ० । दीपं यया महेस्वाहाः ॥❀॥ ॥❀॥ अथ धूपपूजा ॥❀॥

॥❀॥ अगर चंदन धूप दशांगजे । प्रसरिता खिल दिग्सुधुम्मकैः । सकल मङ्गल० ॥❀॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ० । धूपं यया महेस्वाहाः ॥❀॥ ॥❀॥ अथ फल पूजा ॥❀॥

॥❀॥ पनशमोचसदा फलकर्कटै । सुरुखदैः किल श्रीफल चिर्भटै । सकल मङ्गल० ॥❀॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ० । फलं यया महेस्वाहाः ॥❀॥ ॥❀॥ अथ अर्घ पूजा ॥❀॥

॥❀॥ जल सुगंध प्रसून सुतंदुलै । चरु प्रदीपक धूप फलादिभिः। सकल० ॥❀॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिन कुशल सूरि०। अर्घं० स्वाहा ॥❀॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्णम् ॥❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ अथ सद्गुरूणां आरती लि० ॥❀॥

॥❀॥ पहली आरती दादाजीको कीजे। दुखदोहग सब दूर हरीजे। (जैजै सद्गुरु आरती कीजे। श्रीजिन कुसल सूरि समरीजै। (जै जै०) ॥ १ ॥ बीजी बीज पम्रती धारा। भयवारण तूंही सुखकारा (जै०) ॥२॥ तीजी परचा पूरकतेरी। दूर हरौ सब दुर्मति मेरी ॥ (जै०) ३ ॥ चौथी सुगलपूत लिय दायक। सुरवर ऊकम धरै ज्युं पायक ॥ (जै०) ४ ॥ पांचमी पांच नदी जिण तारी। संघ सकलनी संकट वारी ॥ (जै०) ५ ॥ छट्ठी थांभौ वज्र विदारी। विद्या पोथी परगट कारी ॥ (जै०) ६ ॥ सातमी चौसठ जोगण साधी। सूरमंत्र सुरनैं आराधी ॥ (जै०) ७ ॥ इण विध सात आरती कीजे। मनवंछित संपति फल लीजे ॥ (जै०) ८ ॥ जैन लाभ खरतर गणधारी। सद्गुरु चरण कमल बलिहारी ॥ (जै० ९ ॥ इति श्रीदादेजीकी आरती संपूर्णम् ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ श्रीदादाजीको स्तवन लि० ॥❀॥

॥❀॥ विलसै ऋद्धि समृद्धि मिली। सुभयोगै पुण्यदशा सफली। जिन कुशलसूरि गुरु अतुल बली। मनवंछित आपै दादो रङ्गरली ॥१॥ मङ्गल लील समें विपुला। नव नवय महोछव राजयला। सुपसायै गुरु चढतीकला। सुकलीणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सवही दिन थाये सबला। सदवास कपूर तणाकुरला। हय गय रथ पायक बहुला। कल्लोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वींझै चमर निसाण घुरै।

नरवै दरवार खड़ा पुहरै। जय जय करजोड़ी उच्चरै। सांनिद्ध गुरू सब काज सरै॥ ४॥ सरसा भोजन पांन सदा। दुखरोग दुकाल न होय कदा। अविचल ऊलट अंग मुदा। गुरु कूरम दृष्टि प्रसन्न सदा॥ ५॥ धम धम माद्दल नाद घुमें। बत्तीसे नाटक रङ्ग रमै। प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमैं। सबला अरियण ते आय नमैं॥ ६॥ तन सुख मन सुख चीर तनै। पहिरै वेलाउल होय रनै। ध्यावो कुसल गुरु एक मनैं। जृंभक सुरमंदिर भरै धनै॥ ७॥ ततखिण घण खंच्यौ आवै। करि स्यामघटा मेह वरसावै। तिसीयां तोय तुरत पावै। जलदाता त्रिजग सुजस गावै॥ ८॥ लहिरयां जल कल्लोल करै। प्रवहण भवसायर मझि डरै। बूडंता वाहण जे समरै। ते आपद निस्चै सुं उवरै॥ ६॥ खड़ खड़ खड़ग प्रहार वहै। सोदामनि जिम सम सेल सहै। कुसल २ गुरुनाम कहै। ते खेम कुसल रिणमझ लहै॥ १०॥ थुंभ सकल परचापूरै। श्रीनागपुरै संकट चूरै। मंगलोर अधिकै नूरै। देरावर भय टालै दूरै॥ ११॥ वीरमपुर वाने सुधरै। खंभाइतपुर वीक्रम नयरै। जिणचंद सूरि पाटै पवरै। जसु कीरति महिमंडल पसरै॥ १२॥ पूरब पस्चिम दक्षिण आगै। उत्तर गुरु दीपैसौभागै। दह दिशि जन सेवा मांगै। श्रीखरतर गछनो महिमा जागै॥ १३॥ पुर पट्टण जनपद ठामै। गाईजे कुसल नयर गामै। पूजे जे नर हितकामैं। ते चक्रवर्त्ति पदवी पांमै॥ १४॥ श्रीजिनकुसलसूरि साखै। सेवकजननैं सुखियाराखै। समरयां गुरुदरसण दाखै। श्रीसाधु कीरति पा

ठक भाषै ॥ १५ ॥ ※ ॥ इति श्रीदादाजी स्तवनं ॥ ※ ॥

॥※॥ श्रीजिन दत्तसूरजी उत्पत्ति स्तोवलि० ॥※॥

॥ ※ ॥ सिरि सुयदेव पसाय करि । गुरु श्रीजिनदत्त सूरि । वंदिसु खरतर गछरयण । सूरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥ संवत् इग्यारै वरसै । बत्तीसै जसु जम्म । वाछिग मंति पिता जणणो । वाहड्डि देव सुरम्म ॥ २ ॥ इकतालै जिण वइ गहिय । गुणहत्तरै जसु पाट । वइसाखां वदि छट्ठि दिन । पहू प्रणमै सुरथाट ॥ ३ ॥ अंबड्डि सावइ कर लिहिय । सोवन अक्खर अंब । जुगप्रधान जगपयड्डियोए । सिरि सोहै पड्डि बिंब ॥४॥ जिण चउसट्ठि जोगिणि जणिय । खित्तपाल बावन्न । साइक्ख डाइक्ख विज्जुलिय । पुहविहि नामनयन्न ॥ ५ ॥ सूरिमंत बलकर सहिय । सारिय जिम धरणिंद । सावइ साविय लक्ख इग । पड्डि बोहिय जिण विंब ॥ ६ ॥ अरि करि केसरि दुद्दल । चउविह देव निकाय । आंण नलोपै कोई जुगे । जसु प्रणमै नरराय ॥ ७ ॥ संवत बार इग्यारसमें । अजयमेर पुर ठाण । इग्यारसि आसाढ सुदि । सग्गिपत्तन सुह झांण ॥ ८ ॥ श्रीजिनवल्लह सूरि पए । श्रीजिनदत्त मुणिंद । विघ्नहरण मङ्गल करण । करो पुण्य आणंद ॥ ९ ॥ इति श्रीजिनदत्तसूरिजीअष्टकं ॥

॥※॥ श्रीजिन कुशल सूरजी उत्पत्ति स्तोवलि० ॥※॥

॥※॥ रिसह जिणेसर सो जयो । मंगलकेलि निवास । वासव वंदिय पयकमल । जगसज्ज पूरै आस ॥ १ ॥

॥꙰॥ (चौपई) ॥꙰॥ चंदकुलंबर पूनिम चंद। वंदो श्रीजिन कुसल मुणिंद। नाम मंत्र जसु महिम निवास। जोसमरै तसुपूरै आस॥ २॥ मरुमंडल समियांणो गांम। धण कण कंचण अति अभिराम। जिहां वसै जीलहागर दंत। जैत सिरी तसुघरणी कंत॥ ३॥ जसु तेरै से तीसैं जम्म। दें साले सिर संयम रम्म। पाटण सतहत्तरै जसु पाट। नि ध्यासियै तसु सुरगैवाट॥ ४॥ भूमंडल सरगे पायाल। अविराविरज ुग हूण कलिकाल। प्रभु प्रताप नविमांने सोय। लै नविनयणे दीठो जोय॥ ५॥ निरधन लहै धन धन्न सुवन्न। पुन्नहीण पांमैं बहु पुन्न। असुखी पांमैं सु षसंतान। एकमना करतां गुरु ध्यांन॥ ६॥ प्रभु समरण आपद सहु टलै। सयल सांति सुखसंपति मिलै। आधि व्याधि चिंतासंताप। ते ढंढो नवि मंडै व्याप॥ ७॥ पाप दोष नवि लागै तिहां। प्रभु दरसण उत्कण्ठा जिहां। सेवंतां सुरतरुनी छांहि। निश्चे दालिद्र मेटै बांहि॥ ८॥ विस हर विस नर विस नरनाह। भूत प्रेत ग्रहव्यंतर राह। प्रभु नांमैं जे न करै पीड़। भाजे भावठ भव भय भीड़॥९॥ रोग सोग सवि नासै दूर। अंधकार जिम ऊगै सूर। मूरख फीटी पंडित थाय। प्रभुपसाय दुख दुरिय पुलाय॥१०॥ दिन दिन जिन सासन उद्योत। तिहां अछै भव सायर पोत। सो सदगुरुमैं भेट्यौ आज। रतीय रंग सीधा सवि काज॥११॥꙰॥ (ढाल) ॥꙰॥ आज घर अंगण सुरतरु फलियौ। चिंतामणि कर कमलै मिलियौ। उदयो परमाणंद घरे॥१२॥ आज दोहग्गैं धन्नै गिणियौ। जुगपव

रागेस जोसें थुणियौ। चंद्रगच्छ महिमा निलोए ॥ १३ ॥ कांई करो पृथिवीपतिसेवा। कांई मनावो देवी देवा। चिंता आंणो कांई मने ॥१४॥ वार वार ए कवत भणीजे। श्रीजिन कुसलसूरि समरीजे। सरै काज आयास विणे ॥१५॥ संवत चवद इक्यासी वरसे। सुलक्ष वाहणपुर में मन हरसे। अजिय जिणेसर वरभवणें ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए मंगल कारण। विघन हरण सहु पाप निवारण। कोई मत संसो भरो मने ॥१७॥ जिनई सेवै सुर नरराया। श्रीजिन कुसल मुनीसर पाया। जयसागर उवझाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सद्गुरु गुण अभिनंदै। ऋद्धि समृद्धि सो चिरनंदै। मन वंछित फलसुफ हुवे ए ॥१९॥ॐ॥ इति दादाजी श्रीजिन कुशल सूरजी उत्पत्ति विचारगर्भित परम मङ्गलीक स्तोत्र संपूर्णम् ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ श्रीजिन कुसल सूरिजीको छंद लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ समरु माता सरसती। कुमारी करजोड़। कवि माता कवियण तणा। पूरे वंछित कोड़ ॥ १ ॥ कुसल करण जग कुसल गुरु। दायक वंछित देव। अहनिसि तो डलग करें। सुर नर सारे सेव ॥२॥ पुर पहण गामे प्रगट। जग दगले जस वास। पुरावदी तो पालिये। वसे सु दादो वास ॥ ३ ॥ (छंदमोती दाम) ॥ॐ॥ दादो वासदिये दौलत्त। वसै छल छाया सेवक वित्त। वधारै मांम दिसो दिसवान। धरे इक चित्त जिको गुरुध्यान ॥ ४ ॥ पूनिम पूनिम पूजे पाय। नवा नवा नेवज वार निपाय। चंपावलि कीनकि

फूल चरच्च । अनोपम श्रीफल लेई अरच्च ॥ ५ ॥ लहै घरि सुंदर लच्छि अछेह । सझंती सोल वधंती नेह । लहैं घर नारी लोयण वांण । लहै घरपूत सपूत सुजांण ॥ ६ ॥ लहैं भलगांम सुठांम भूवाल । लहै ढिगमोंत भलंढींचाल । लहै घर मंदिर घोडाजोडि । लहै भटसेव करै करजोडि ॥ ७ ॥ लहैं घरमंगल मद्द मसत्त । लहै घरचीर अनोपम सत्त । लहै घर सांजण हल्ल किलोल । लहैं नितलीलां ढाका ढोल ॥ ८ ॥ लहैं घरकुरलां कूर कपूर । लहै घरजीमण मोतीचूर । लहैं मनवंछित भोग विशाल । लहै घरसाल कचोलां थाल ॥ ९ ॥ घुरै नित गीत तणा गहगट्ट । भणै नित जय२ चारण भट्ट । फलै पूत सपूतां वांझि फलंति । विछोह्या वाल्हा वेग मिलंति ॥ १० ॥ अनेकानेक विरद्द अपार । दीठो इक वाल्हां तूं दातार । जीहां सहस्स हुवै जो मुक्ख । कहुं इक जीहां कोई सक्ख ॥ ११ ॥ वडा विरद तांहरा विख्यात । नर नारी सहु आवै जात । गुणकारं गिरुवो सगुह सरीर । कह्यो मे कोई नकरज्यौ रीस ॥ १२ ॥※॥ (दूहा)॥※॥ रीस न करज्यो कवियणां । मैं मांहरी मतिसार । कहीयौ जगमें कुसल गुरु । खरतर गछसिणगार ॥१३॥※॥ (छंद नाराच) ॥※॥ सिंगार हार सोहए । सु कांमधेनु दोहए । धरंत ध्यांन जो सदा । टलंत दूर आपदा ॥ १४ ॥ प्रथम्म तो देराउरै । सुथान सिंधुधोवरै । जे सांण थुंभ जागती । सुदिट्ठ संघ सावती ॥ १५ ॥ सुलतांन मीर सेवतां । अनेक पीर देवता । किरो हरै फतैपुरै । गुरु सदा उदो करै ॥ १६ ॥ मरोट थांन मूलगो । एकांत चि

रू डलगो। बीकांणवांन वाघतो। सुथांन थांनसावतो॥ १७॥ प्रभावना रिणीपुरै। नौसांण वाजतां घुरै। नागोर नांम दीपतो। दाखव देवजीपतो॥ १८॥ तोरण तेम सोह ए। जगत्त मन्नमोहए। सरूप मेन्हते सही। अपार लाहि जां लही॥ १९॥ महिम्म मालपूरतो। लाहोर दुक्ख चूरतो। कला अनेक आगरै। छत्तीस पौनझूलरै॥ २०॥ दा द्रौरी करंत सेव। हिंदुआं तुरकां देव। सदा शुद्ध सांगा नेर। जालमी करंत जेर॥ २१॥ अमरसरै अनेक। राखं तौ जु ठोन्है टेक। मालपुरै मज्झिमान। खान खान सेवै थांन॥ २२॥ महाणपुरै राजरोल। जे तारणे जगलजोल। सोझित सुख सद्दयं। बेनातटे विसद्दयं॥ २३॥ खेजन्हले खरो सदा। वाहन्न मेस संपदा। जोधाण जुगत्रातरा। भुझंति देस देसरा॥ २४॥ बीरम्मपुर तिम्मगे। करंत नृत्य अम्मरी। जालोर जैत सिंधरी। खंभायते खराखरी॥२५॥ प्रगट्ट आप पाटणे। सूरत सुक्ख सांचणे। अनन्त तेज अ च्छमदा। रूमऋलोर सर्वदा॥ २६॥ साचोर मुज्ज सासतो तुरत्त शत्रु त्रासतो। उदैपुरै जु ईन्हरै। मेवावे कोटल गुरै॥ २७॥ गुरु सदा उदो करै। एकांते ध्यान जो धरै। भमंत भोग जे तली। कौरस्स कोन्ह ते तली॥२८॥ (दूहा) ॥१॥कला अनेकां कुसलगुरु। समरयां होय हजूर। अलगी टाले आपदा। जिम अंधारे सूर॥ २९॥ (कलस) सूर तेज जिम नूर। दूर आपद भय टाले। सावोतां ज्यु संयाकरो सेवक नित प्रतिपाले। मनवंछित मा बाप। कुसल गुरु का नित दाता। पूनिम पूजै पाय। रहै ले ध्याने राता। सुम

साद सोम सुंदर सुगुरु । अभय सोम उलग करी । प्रगटि यो थंभ पाली पुरे । विजे सिंघ लीलावरी ॥ ३० ॥ॐ॥ इति श्रीजिन कुसलसुरिजी कों सर्व स्थानक नमस्कार छंद संपूर्णम् ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (राग जैतसरी) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ सहाई मेरैं श्रीजिन कुशल गुरू ॥ कुशल करण कलि मांहे प्रगट्यो । खरतर गछ्रत्र रु (स०) बावनो चंदन म्रगमद भेली । पूजो प्रेमभरू ॥ (स०) १ ॥ चिंता चूरण विघ्न विद्रारण । दालिद्र दूर हरू ॥ (स०) २ ॥ दिन दिन साहिब चढतैं वानें । ध्यावो ध्यान धरू (स०) वाजै जेहना जसना वाजा । ठावो ठांमे जरू ॥ (स०)३॥ संवत् अढार स में अठसट्ठे । म्रिगसर मास थिरू (स०) संघ सहित श्री सदगुरु भेटै । श्रीजिन हर्ष सरू ॥ (स०) ४ ॥ गांव गढाले चरण नमंता । तूठो कल्पतरू (स०) पाठक श्रीविद्याहेमग णीनें । उदय रतन करू ॥ स० ५॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥

॥ॐ॥ देशीकी चालमें ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ (दादा चिरंजीवो सेवक जन सुखदाई दरसण सदा देवो । दादौ दीनदयाल सदा दाता । दादौ समरयां आपे सुषसाता । दादौ जगनायक जगगुरु भ्राता (दा०)॥ १ ॥ दादौ परचा जगसगलै पूरै । दादौ सेवकना संकट चूरै दादौ दुरित हरै सङ्कनी दूरै (दा०) ॥२॥ दादा अलगांथी जाली आवै । दादौ देषीनें ते सुख पावै। म्हांरा दादाजीनी जोडै कोई नावै (दा०) ॥३॥ दादौ राज नगर मांहि राजै ।

जिहां सुजस नगारा नितगाजै। दादौ ढोगालां सेहर छाजे ॥ ४ ॥ (दा०) दादा घस केसर मृकमद घोलो। हाथे लेई सोवन कचोलो। पूजो दादाजीनैं मिल२ टोलो (दा० ॥५॥ दादौ आरतियां आरति टालै। दादौ सेवगजननैं प्रतिपालै। दादौ जिनशासन नित उजवालै ॥ ६ ॥ (दा०) दादौ महिमावंत महाराजा। दादौ राजै खरतर गच्छराजा। दादौ समर्यां सफल करै काजा (दा०) ॥ ७ ॥ दादौ कुसल सुरिंद बहुगुण धारी। दादौ परतिख सुर तरु अवतारी। जाऊं दादाजीनी हुं बलिहारी ॥ ८ ॥ (दा०) दादौ श्रीजिन चंद सुरिंद पाटैं। दादौ गाजै गुणि अण गहगाटै। जसु थान सोहै जगथिर थाटै (दा०) ॥९॥ दादा महिर निजर मुझ परिकरियै। दादा आरतिपीडा दुख हरियै। दादा जिम जग जय कमलावरियै (दा० ॥१० दादा सेवगनैं सांनिध करज्यो। दादा दुसमणनैं दूरै हरज्यो। जिणचंदना मन वंछित फलज्यो (दा०) ॥११॥ इति दादाजी स्तवनं ॥*॥ ॥*॥

॥*॥ पुनः ॥*॥

॥*॥ (आषाढै भेरू आवे इस चालमे)॥ गाजै जिनकुशलगच्छालै। सेवकनां संकट टालै हो गा०)॥१॥ परतिखगुरु परचा पूरै। सेवकनी चिंता चूरै हो (गा०) ॥२॥ छतरी नितरी छबिछाजै। विचमें थिर थुंभ विराजै हो (गा०) ॥३॥ झुलरे यात्री मिल आवै। दादौ जी दीठां सुखपावै हो (गा०) ॥४॥ केसर घस भरिय कचोलो। मांहे वलि मृगमद घोलो हो (गा०) ॥५॥ पूजो पग नीर पखालो। गावो

गुण गीत रसाला हो (गा०) ॥ ६ ॥ दादौजी दुखियां सुख देवै । निरधनियां निजधन देवै हो (गा०) ॥७॥ हय हाथी रथपति बहुला । गुरु नांमें पामें कमला हो (गा०) ॥८॥ स कजासुत सुंदर नारी । पांमें परिकर सुखकारी हो (गा०) ॥९॥ अलगांथो रोग गमावै । गुरु पूज्यां बंछित पावै हो (गा०) ॥१०॥ पावै गुरु तिसियां पाणी । तिणवेला जलधर आणी हो (गा०) ॥११॥ ग्रहगोचर जैर जंजाले । पीड़ा कुवे आलै मालै हो (गा०) ॥ १२ ॥ वाजै जगजसना वाजा राजै खरतरगच्छ राजा हो (गा०) ॥ १३ ॥ जसु जैन सिरो वरमाला। जीवहागरमंति विख्याता हो (गा०)॥२४॥ संवत सतरै सै इक्यासी । कातौ पूनिम परकासी हो (गा०) ॥१५ सहु संघ सहित सुविलासै । अधिके हर हेत उलहासे हो (गा०) ॥१६॥ इम याव करी आणंदे । जिन भक्ति जती सर वंदे हो (गा०) ॥१७॥ इति पदम् ॥॥

॥॥ (राग धन्यासरी) ॥॥

॥॥ आयो आयो जी समरंता दादो जी आया । संकट देख सेवक कुं सदगुरु । देरावरतें ध्यायो जी समरंतां (दा०) दादा वरसै मेहनैं रात अंधेरी । वायपिण सबलो वायो । पंच नदी हम वैठे वेडी । दरीयै हो दादा दरीयै चित्त डरायो जी ॥ (स० दा०) २ ॥ दादा ऊच भणी पो हचावण आयो । खरतर संघ सवायो । समय सुंदर कहै कुशल२ गुरु । परमानन्द सुख पायो जी । समरंता० ॥३॥ ॥॥ इति पदम् ॥॥ ॥॥ ॥॥

॥ॐ॥ (राग लङ्करी) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ भाया भक्तिसुं पूर रहो रे। दुरजन सब दूरह रो रे (भा०) मेरे मनमें भक्ति वैरागी। चित्त परणित लगनसुं लागी। मोरी भाग्यदसा अब जागी ॥ (जीया हो)॥ (भा०) १ ॥ सब सज्जन मिलकर आवो। गुरुचरणे चोक पूरावो। वलि अक्षत धवल वधावो (जीया हो) ॥(भा०)२॥ गुरु महिमावंत सवाई। गुरुनाम सदा सुखदाई। गुरु सेव्यां पाप पुलाई (जीया हो) ॥ (भा०)३ ॥ घस केसर भर कै कचोली। मांहे मृगमद कुंकुम घोली। गुरु पूज रचो भरझोली (जीया हो) ॥ (भा० ४॥ श्रीजिनहर्षसूरी सर राजा। वाजै जग जसना वाजा। सत्य रत्न करै सुभ काजा (जीया हो) ॥ (भा०) ५ ॥ इति स्तवनम् ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (राग कैरवो) ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ कुशल सुरिंद गुरु पूजो भवि हितसुं (कुश०) केशर चंदन कपूर अरगजा। भाव धरी करो पूजा चितसुं ॥(कु०)१॥ मोगरा लालगुलाब मालती। मनसुध माल करै भवि रुचिसुं ॥ (कु०) २ ॥ असरण सरण परमगुरु सेवो। धरम ध्यांन धरो आतम रुचिसुं ॥ (कु०) ३ ॥ सेवगजन प्रतिपाल जगतगुरु। आसा पूरै गुरु मणु दत्तसुं ॥ (कु०) ४ ॥ ध्यान सुधारै ग्यानवधारै। रूप रंग देवै हित हित मतसुं ॥ (कु० ५ ॥ कुशल सुरिंद गुरु सानिध कारी। परतिख परचा पूरै सतसुं ॥ (कु०) ६ ॥ श्रीजिनहर्ष सदा सुविलासी। सत्यरतन सुख रही हतसुं ॥ (कु० ७ ॥ इति

॥ॐ॥ (राग देवश्री चलत) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ आज करोरे उछाह । श्रीजिनकुशल सूरिंद आगे। (आ०) आआठी वेलानैं ए आछो दाव । इण आछी वेला क्यूं करो लाज ॥ (आ०) १ ॥ विविध प्रकार पूजो मनरंग । हिल मिल गावो साजन संग (आ०) धूप दीप करो नैवेद्य सार । फुल वारीनो नहीं जिहां पार ॥ (आ०) २ ॥ अच्छत श्रीफल ढोवै जेह । पुत कलत्र पामैं संपदा तेह ॥ (आ०) ३ ॥ सुर नर नारी ऊभा करै जोड़ । कोण करै म्हांरा दादा जीनीहोड़ ॥ (आ०) ४ ॥ श्रीखरतर गछपति सिरदार । रा जा राणा सेवै दरबार ॥ (आ०) ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज । कुशल सुरिंदगुरु गरीब निवाज ॥ (आ०) ६ ॥ श्रीजिनहर्ष करै उछरंग । सत्यरत्न मन ध्यान उमंग ॥ (आ०) ७ ॥ इति स्तवनम् ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (राग बंगालो घाटो) ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ मे' निरख्या गुरु महाराज । ठतीयां हर्षभरी (मे'०) अमल अनन्तगुण आगरूरे । समता रसनो धाम । परम परम परमातमा रे । वंछितदायक स्वांम ॥ (ठ०मे'०) १ ॥ करुणानिध गुरु दोलती रे । सेवक जन प्रतिपाल । भविजन भक्ति भावसुं रे । ल्यावै भर भर थाल ॥ (ठ०मे'०) २ ॥ केसर चंदन कुंकुमा रे । भरीय कचोली हाथ । पदम णा आवै मलपती रे । पूजै सहीयर साथ ॥ (ठ०मे'०) ३ ॥ कुशल सूरीसर साहिबा रे । श्रीजिनचंदसूरि पाट । बलि हारी जिन कुशलनी रे । गाजै घणुं गहि गाट ॥ (ठ०मे'०)

४ ॥ अष्टसिद्धि सानिध करै रे । सुखसंपूरण सार । श्रीजि न हर्ष सूरी सहरे । सत्यदूलन सुखकार ॥ (ठ० मे०) ५ ॥ इति स्तवनम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (राग प्रभाती) ॥※॥

॥※॥ चरणकी चरणकी चरणकी । वारी जाउं गुरु राय चरणकी (वा०) श्रीजिनदत्त सूरीसर सद्गुरु । सफल घणी सेवा चरणकी ॥ (वा०) १ ॥ प्रथम मङ्गल गुरुरायकी सेवा । असुभ करम सब हरणकी ॥ (वा०) २ ॥ दालिद्रभंजण अरि सब गंजण । पग पग सानिध करणकी ॥ (वा०) ३ ॥ मोह नहीं परवाह अनेरी । सरनग्रही इन चरणकी ॥ (वा०) ४ ॥ श्रीजिनहर्ष तुम चरणां को दासा । आसापूरो सुख करणकी ॥ (वा०) ५ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ कुशलगुरु अब मोहि दरसण दीजै । (अ०) ऐसो भांति करो मेरे सद्गुरु । ज्युं मन मूढपती जै (कु०) ॥१॥ जलदातार विरुद अक्लरस । श्रवण अंजलि भर पीजै । सुरतरु सम दरसण विनदेख्यां । कहो नयण किमरीझै (कु०) ॥२॥ परम दयाल कृपाल कृपानिधि । इतनी अरज सुणीजै । परम भगत जिनराज तुमारो । अपनो करजाणी जै (कु०) ॥३॥ इति स्तवनम् ।

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ कुशल गुरु कुशल करो भरपूर । सेवक जन मन वंछित पूरण । समरयां होय हजुर (कु०) ॥ १ ॥ पर

मदयाल पेम रस पूरण। अशुभ हरण भये दूर। संघ उद्दो कार सद्गुरु मेरा। वीनवै श्रीजिन-चंद्सूर (कु०)॥२॥ इति॥

॥※॥ (देशीकी चालमें) ॥※॥

॥ ※ ॥ सद्गुरु पूजण जावस्यां। म्हेतो कुशल सूरिंद गुण गास्यां हे माय (स०)। श्रीफल भेट चढ़ावस्यां। म्हेतो चरणांरी पूज रचास्यां हेमाय (स०) ॥१॥ मारूदेस में सोभता। नगर वीकांणै राजै हेमाय। गांम गढ़ालै दीपता। ज्यांरी महीयल महिमा छाजै हे माय (स०) ॥२ समर्यां संकट चूरता। कुसल करण अवतारी हे माय। सुखदायक श्रीसंघनै। घरतर गछ अधिकारी हे माय (स० ॥३॥ दूर देसांतर थी घणा। हिल मिल यात्री आवै हे माय। लुल२ सीस नमावता। संत सुजस मिलगावैहे माय (स०) ॥४॥ सज सिणगार मनोहरू। ठम२ पाय ठमका वै हे माय (स०)। तनमन प्रांण लोभावती। गोरी मंगल गावै हे माय (स०) ॥५॥ विछुड्यां साजन मेलवै। अनमीपा य नमावै हे माय। मनरा मनोरथ पूरवै। पर बल लख मी ल्यावैं हे माय (स०)॥६॥ विषमी वेलावाटमें। समर्यां सांनिध आवै हे माय। भूषां भोजन मेलवै। तिसियां नीर मिलावै हे माय (स०) ॥७॥ यात्री आवे नितनवा। थांन आगल थिर थाट हे माय। सीरणीयां नित सांमठी। गावै गुण गहगाट हे माय (स०) ॥ ८ ॥ कुसल सूरिंद गुरु आ गले। भविमिल भावना भावै हे माय। चंद्फते मुनि नित नमें। परमानंद सुख पावै हे माय (स०) ॥९॥ इति ॥※॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ आयो सङ्घ श्रीसंघ आसधरे। गुरु मौन गह्यां क हो केम सरे। दरसण वहिलो सदगुरु दाखो। निज सेव क ज्ञांण महिर राखो ॥ १ ॥ इह विषमो वेला आयवणी। कहवी करीयै तुझ अरज घणी। अलगाठो तो वेगाआवो हिव ढील घड़ी भर न करावो ॥ २ ॥ तूं सदगुरु खरतर ग ठ साचो। कोई न जांणे तुमनें काचो। इण संकटमें आल स न करो। दादा दुसमणनें दूर हरो ॥ ३ ॥ काई चूक पड़ी सदगुरु हमसुं। तो जिम कहिस्यो तिणपरि खमसुं। पिण हिवणां हठ थे मति तांणो। निच्चै पोतानो कर जां णो ॥ ४॥ आया सङ्घ मिलकर अठां लगे। पाछा किम जा वां दूणें पगे। इणपरि गुरु सुणीयै अरज इसी। हिव सब कों मेलो करीय खुसी ॥ ५ ॥ जिन कुशल सूरीसर जगचा वो। अपणायतकर वेगा आवो। अगला विरुद ते अजुवालो परघल निज ठोरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुणगाम गह्याले ए गायो। सुणतां सदगुरु वेगो आयो। राजी हुय सगला रं गरलो। जिनचंद्रनी आसा सफल फली ॥७॥ इति पदं ॥

॥※॥ (ताल ठमरी) ॥※॥

॥ ※ ॥ सदा सहाई कुसलसुरिंद गुरु द्यो दोलत गुरु रायजी (सदा०)। खाई न खूटै खरची न तूटै। दिन२ वधै सवाय जी (स०) ॥१॥ सकजा सुत अर सुन्दर नारी। सुभ परिकर सुख दायजी (स०)। मिल समागम सुजसवधारण नित प्रति हरष उछाहजी (स०) ॥ २ ॥ राजा परजा पाय

नमें रूड़ । गुरु समरण सुपसाय जो (स०) दोषी दुसमण नृपभय पड़ियां । सद्गुरु करय सहाय जो (स०) ॥३॥ विषमी विरियां संकट पड़ियां । समर्‍यां आवे धाय जो (स०) भूखां भोजन तिसियां पांणी । निरधनियां धनदाय जो (स०) ॥४॥ संघ सकलनें द्यो सुख साता । जिम कीरत जग थाय जो (स०) । थांनक थिरता घर धन भोजन । पग पग कुसल सहाय जो (स०) ॥५॥ अभय महा सुखदाई सद गुरु । नवनिधि वंछित थाय जो (स०) । सुमति सवाई नित घर संपद । दान विसाल लहाय जो (स०) ॥६॥※॥ इति०

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ जिन कुसल सुरिंद गुरु सदा नमो (जि०)॥ सुख संपति रिद्धि सिद्धि सब हाजर । देस देसांतर कांई भमो (जि०) ॥१॥ वाट घाट अरु विषमी विरियां । विघन बुराई दूर गमो (जि०) ॥ २ ॥ अह निसि नांम मंत्र उरधारो । सु गुरुचरण चितरमो रमो (जि०) ॥ ३ ॥ इक मन ध्यावो वंछित पावो । विपत व्यथा सब दमो दमो (जि०) ॥४॥ अभय महासुख संपति पावो । सुथिर थांनक थिति जमो जमो । (जि०) ॥५॥ इति दादाजी पद ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ छलपतो थांरै पायनमें जो । सुरनर सारे सेव । ज्योति थांरी जग जागती जो । दुनियामें परतिख देव ॥१ ऊं तो मोहि रह्यो जो म्हांरा राज । दादेरे दरबार (ऊं०) केशर अंबर केवड़ो जो । कस्तूरी करपूर । चांपो चंदन राय चंबेली । भक्ति करूं भरपूर (ऊं०) ॥ २ ॥ पांगुलियांनें

पाव समापे। आंधलीयानें आंख। रूपहीणानें रूप देवे गदो। पंख हीणानें पांख (ऊं०) ॥३॥ चंदपाटो भर साहिबो जी। श्रीजिनकुशल सुरिंद। आठ पोहर थानें ध्यावे लगे जी। रंग घणो राजिंद (ऊं०) ॥४॥ इति पदम्।

॥ ॐ ॥ सद्गुरु जी सुणो मोरी अरजी (स०) पहिलो काम कीये बहु तेरे। अपणा विरुद विचारी। पल पल चूक परी सद्गुरु जी। मैं मुतलबका गरजी ॥ (स०) १ ॥ ध्यांन हुमारो कबहु न ध्यायो। पूजा करी नहो तेरी। तोई सेवक वंछित पूरया। आही थांरी मर जी ॥ (स०) २ ॥ निश्चै सेती तुम गुण गावे। तुरत कटत दुख वेरी। भक्त उधार कहावत जगमें। ताहै करत हुं अरजी (स०) ३ ॥ और देव कुं में नहीं ध्याउं। सरणग्रही में तेरी। दूर थकी में भेटण आयो। विपत दिसा सब तरजी ॥ (स०) ४ ॥ कुशल गुरुका में हूं सेवक। लोक जांणे सब कोई। चमा रतनकी वीनती सुण कै। दरसण दीयो सद गुरु जी ॥ (स०) ५ ॥ इति स्तवनम् ॥ॐ॥

॥ॐ॥ होरीको चालमें ॥ॐ॥

॥ॐ॥ होरी खेलो नेम सें भार२ (इस चालमें) ॥ॐ॥ सद्गुरुके चरण चित लाय लाय। जिनदत्त सूरिंद गुरु करो रे सहाय। (सद०) बावन वीर अनें वलि चौसठ। जो गणि वसकीनो रूपें लाय। विद्या पुस्तक सोवन अक्षर। थांभो वज्र विहार पाय (सद०) ॥१॥ मुलतांनमें पंच पीर

महाबल। पंच नदी साधी चित्तलाय। इत्यादिक बहु पर चा पूरक। गुरु समखां सब दुक्ख जाय (सद०) ॥२॥ गुरुके नामसें अष्टसिद्धि नव निधि। गुरु गुण गावो सबही भाय श्रीजिन सौभाग्य सूरि सुगुरु पर। महिर करो गुरु सुख दाय (सद०) ॥३॥ इति श्रीजिनदत्त सूरिजी पदं ॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ नेम स्यामसें कहियो मोरी (इस चा०) गुरुपूज रचो रे सुग्यानी। भली होये भक्ति भरानी (गुरु०)। श्री जिन कुसलसूरी सर साहिब। खर तर गच्छ राजानी। देस देस में थानक गुरुका। सोभा जगपहिचानी। सदा रवि तेज समांनी (गु०) ॥१॥ केसर चंदन म्रगमद भेली। चरणां री पूजरचांनी। धूप दीप वलि आगे ढोवो। बहुविध पुष्प चढानी। भला फल भेट धरांनी। (गुरु०) ॥२॥ वाट घाटमें परचा पूरक। हाजर होत सहानी। श्रीजिन सौभाग्य सूरि के साहिब। वंछित काज करानी। सदा गुरु महिर ल खानी (गुरु०) ॥३॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ कैसे कैसे अवसरमें गुरु राखी लाज हमारी। (कैसे०) मोकुं सबल भरोसा तेरा। चंदसूरि पटधारी। (कै०) ॥१॥ तुम विन और न कोई मेरे। या जगसें हित कारी। मेरा जीवन हाथ तुमारे। देखो आप विचारी। (कै०) ॥२॥ आगे तो कोई वेर हमारी। चिंता दूर निवा री। अब की विरियां भूल मती जावो। सदगुरु परउप गारी (कै०) ॥३॥ अबकै आप लाज गूजरकी। रखीये गुरु

जसधारी । मेरे कुशल सूरिंद गुरु तेरा । वडा भरोसा भारी (के०) ॥४॥ इति पदम् ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (राग प्रभाती) ॥※॥

॥ ※ ॥ श्रीजिन कुशल सूरीसर साहिव । तुमहो पर-उपगारी (श्रीजि०) । खरतर गछ नायक गुणलायक । जिनचंदसूरि पटधारी (श्री०) ॥१॥ संत उधारण सुजस वधारण । भीड़ भंजन अति भारी । नाम तुमारो कुशल करण जग वारी जाउं वार हजारी (श्री०) ॥२॥ जगवल्लभ तुम हो हो जगतगुरु । करुणानिधि करतारी । कहै जिनचंद मेरे हो सदगुरु । हमहै सरण तुमारी (श्री०) ॥३॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ श्रीगणधर गुरु कुसलसूरिंद के । चरण कमल परिवारी । (श्री०) केसर चंदन अच्छत कुंकुम । जलभर कंचन झारी । देवक आगे मंगल दीपक । फूल धरुं फूल वारी । (श्री०) ॥१॥ एसी भांति करुं विध पूजा । आनके चित्त इकतारी । राज कहत मेरे परम गुरु की । वेर वेर वलिहारी (श्री०) ॥२॥ इति पदम् ॥※॥

॥※॥ (रेखता) ॥※॥

॥※॥ कुशल गुरु देखके दरसन । मेरा दिल होत है परसन । जगतमें या समो कोई । न देखा नयन भर जोई ॥१॥ विरुद भूमंडलै छाजै । फरसतां पाप सब भाजै । पूजतां संपदा पावै । अचिंती लछि घरआवै ॥२॥ इके सुख गुण कहुं केता । मुझे विज्ञान नहीं एता । लालचंदकी अरज

सुन लीजै। चरण की सरण मोहि दीजै ॥३॥ इति पदम् ॥

॥ॐ॥ (राग कहरवो) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ कुशल गुरु दरशण दीजै हो (कु०) खरतर गछ पति कुशल सुरिंद गुरु। मुझपर महिर करीजै हो (कु०) ॥१॥ पतित उधारण विरुद तुम्हारो। इतिनो अरज सुणी जैहो (कु०) ॥२॥ आधि व्याधि अरु दोषी दुसमण। ए सब दूर हरी जै हो (कुं०) ॥३॥ खेम रतन सेवक कुं निस दिन सद्गुरु सानिध कीजे हो (कु०) ॥४॥ इति पदम् ॥ॐ॥

॥ॐ॥ वंसी हमारी दीजै (इस चालमें, पूजो भजो रे भाई। गुरु महिमा योत सवाई (पू०)। म्रग मद केसर चंदन अरचो। सुंदर पुष्प चढाइ (पू०) ॥१॥ तन मन वस कर ध्यान हीयै धर। जिन दत्त जपो वरदाई (पू०) ॥२॥ भविक जीव मिल गुरु गुण गावो। वाके सदगुरु होत स हाइ। (पू०) ॥४॥ श्रीजिन सौभाग्य सूरि सुगुरु मेरे। निस दिन हर्ष वधाई (पू०) ॥५॥ इति पदम् ॥

॥ॐ॥ (ढाल) ॥ॐ॥ मालण ल्यावे फूलड़ा (एदेशी) ॥

॥ॐ॥ ऊंतो अरज करुं करजोड़नैं जी। म्हांरी अरज सुणो महाराज। (सद्गुरु विरुद घणा छै राज राजी। सूरि सकल सिरताज (स०) सुनिजर जोय जो साहिबा। थांरे राव ल राणा राजवीजी। थांरा पूनिम पूजै पाय (सं०) ॥ १ ॥ केसर अगरज कुंकुमां जी। कांई म्रगमद रही महिकाय

(स०) (सुनिजंर जोव जो साहिबा) ॥ २ ॥ थांरै घुमतांरै आगल घूघराजी ।. ढुलत चमर गजढाल (स०) कारण सेवै कामनो जी । कांई निरख करै जो निहाल (स०) (सुनि जरु०) ॥ ३ ॥ थांरी ठावी ठोमै थापना जी । कांई उद यापुर आंबेर (स०) महिमा भलो गुरु मेमतै जी कांई सालूमै व्राली सांगानेर ॥ (सद्गु०सु०) ॥४॥ थांरी ज्योति घणी गुरु झिगमिगै जी । कांई वधती गढ वीकाण (स०) आसा पूरण आवज्यो । येतो देरावररा दीवांण । (स०सु०) ॥ ५ ॥ म्हांरी वीनतमी भलै मानिज्योजी । कांई दादाजी दीन दयाल (स०) कुसल सदा कविराजरै । कांई पाटोधर प्रतिपाल ॥ (स०सु०) ६ ॥ इति पदम् ॥※॥

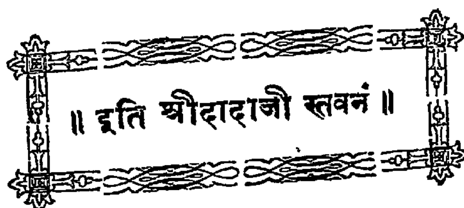
॥※॥ (लावणीकी चालसे) ॥※॥

॥※॥ सद्गुरुजी म्हांरा सरणें आयां की लज्या राख ज्यो (स०) पतित उधारण विरुद सुणीनें । आयो तुमरै पास । अब मनवंछित पूरो माहरा । ए हीज दिलको आस जी ॥ (स०) १ ॥ काम क्रोध मद लोभ तजीनें । तज दियो सब संसार । नवपदनो इक ध्यान धरीनें । पाया स कु गुणपार जी ॥ (स०) २ ॥ देश देशमें थुंभ विराजै । पर चा जग विख्यात । इण कलु मांहि सुरतरु सरिखा । प्रगट रह्या साख्यात जी ॥ (स०) ३ ॥ चिंतामणि और कामधेनु सम । माहरै तुं हीज देव । आण धरू सिरता हरी (सिरे) करूं तुमारी सेव जी ॥ (स०) ४ ॥ मात पिता बंधव तुं ज गमें । हितकारी गुरुराय । राजा राणा सहु जग मांहि ।

सेवै तुमरा पाय जी ॥ (स०) ५ ॥ आज प्रभु तुम चरण प सायें। सीधा वंछित काज। लच्छी प्रधान तुमारा दरसण। मोहन गुणका राजजी ॥ (स०) ६ ॥ इति लावणी संपूर्णम् ॥

॥❁॥ (राग कहरवो) ॥❁॥

॥❁॥ आजको घन्नो म्हारै हरष बधाई। गुरु दरसण पायो सुखदाई ॥ (आ०) १ ॥ गुरु जग नायक वंछित दायक। गुण गण लंछत सङ्घ मन भाई ॥ (आ०) २ ॥ उत्तम धर्म प्रभाव करीनें। जैनो कुलको रीत देखाई ॥ (आ०) ३ ॥ गुरु परतच्छ सङ्घ संघ सुखदायक। देश देशमें प्रगट रहाई ॥ (आ०) ४ ॥ धन दिन आज सफल थयो माहरै। सुर तरु सम मिलियो फलदाई ॥ (आ०) ५ ॥ वंछित पूरण संकट चूरण। सङ्घ भवि मात पिता बरदाई ॥ (आ०) ६ ॥ कलिकत्तापुर मंडन साहिब। कुशल करो मोहन गुणदाई ॥ (आ०) ७ ॥ इति पदम् ॥❁॥ ॥❁॥


॥ इति श्रीदादाजी स्तवनं ॥



॥ अथ खरतर गच्छ समाचारी ॥

॥ ※ ॥ जो प्रतिपदा १ तिथी कम हो (तो) प्रतिपदा १। का पच्चक्खाण व्रत। पिछली अमावश्या (३०) तिथकों क रै। ८ अष्टमी कम हो (तो) अष्टमीका व्रत सप्तमी ७कों करै। और (जो) १४ चौदस कम हो (तो) १४ का उपवा स। अमावस (वा) पूनिम कों करै (इसका कारण) यह दो नुं तिथी समान है। (जैसें) चौदस बड़ी तिथ है। (तैसें) अमावस पूनमवी चिरंतन पक्षीका दिन है। इसी सें यह दो दिन बड़े है। यह दो दिन में उत्तम भव्यजीव यथा शक्ति पोसह पड़िक्कमणादि धर्मकृत्य करै। पारणें उतर पारणें धर्मका उद्योत करै। (इहां विशेष कहते है)। इस समय में जैनी पत्रा प्रसिद्ध नहीं। मिथ्यात्वी के पत्रो सें देखके सब तिथी गिणनेमें आती है। और इस पत्रेका कुछ प्रमाण नही। हर कोई तिथ कम हो जाती है। इसी सें (जो) चौदश कम हो (तो) उपवास (ओ) पक्खी पड़िक्क मण (निस्संदेह) पूनम १५ (तथा) अमावसके दिन करै। पर तेरस चौदस के वितत्थेकों न करै। और जो बेला करै तथा हरी छोड़े (तो) यह दोनुं दिनमानें ॥※॥ अब कोई

बेर संवच्छरी की चोथ कम हो (तो) पंचमीं ५ के दिन संवच्छरी पड़िक्कमण करै। परतीज ३ के दिन कदापि काले न करैं। और जो चौथ ४ दो होय (तो) पहली चौथ संवच्छरी करै। और बी कोई तिथ दो हो (तो) पहली तिथ मान्यनी कहे। दूसरी खंड तिथी रही। (दूसरी यह प्रमाण है) साठ ६० घड़ी की अखंड तिथी छोड़के! घड़ी अध घड़ी को (दूसरी) तिथी कोण मानें। (इहां कोई कहे) अपणें उदय तिथी मानें है। सूर्य ऊगें इहां तक कोई तिथी हो (तोवी) उस दिन उसी तिथ कों मानें हे (इसी सें) जो दूसरी तिथ अध घड़ीमी हो (तो) मानणें में क्या दोष है। (इसका उत्तर) जो पहले दिन तीज मानी है (और) तीज ३ के दिन चौथ बहुत घड़ी भुगतेगा। तो पिण उस दिन तीज मानी जै गा। (इसीतरै) चौथ के दिन सूर्य ऊगे (इहां तक) घड़ी अध घड़ी बी चौथ हो (तो) चौथ ४ मानी जैं गा। (पर) जो तिथी दो होय। उस में तो पहली तिथ सूर्य उदय अस्त दोनुं में रहीय। इसी सें पहली तिथ छोड़कें दूसरी तिथ करणायुक्त नहीं। (और) कार्त्तिक मास बढै (तो) पहले कार्त्तिक चौमासो करै। फालगुण बढै (तो) दूसरे फालगुण चौमासो करै। आसाढ बढै (तो) दूसरे आसाढ चौमासो करै॥ आसाढ चौमासै को १४ चौदस सें। पचासे दिने चौथकों संवच्छरी पर्व्व करै। चौथ कम हो (तो) ५ पांचमके दिन संवच्छरी करै। श्रावण। भाद्रवो। आसोज। बढै (तो) पंचमासी करै। जो श्रावण मास बढैं (तो) दूसरे श्रावण चौमासो करै।

सुद ४कों संवत्सरी करै। पर चौमासे की चौदशसें पचास दिन उल्लंघके संवत्सरी पर्व कदापि कालैं न हो। यह कलपसुत्र जी के पहली समाचारी में प्रसिद्ध पाठ है। और चौमासे में श्रावण। भाद्रवो। आसोज। यह तीन मास बढै तो पंचमासो चौमासो करै। (और) मास दो हो (उस में) पहला मासका कृष्णपक्ष। (दूसरै मासका) शुक्लपक्ष। (ऐसें) एक मास में जो कल्याणक तिथी हो। उसीका व्रत पच्चक्खाण करै। बीचका ३० दिन लुंप्त जाणना। यह तीस दिन में कल्याणकादिक के व्रत पच्चक्खाण न हो सकै। इसी सें विवेकी जीव सब तिथीका विचार समझके व्रत पच्चक्खाण करै तो व्रतभंग कभी नहो। यह तिथोंका परमाण श्रीहरिभद्र सूरजी माहाराजके किया हुवा। तत्वतरंगणी ग्रंथमें प्रसिद्धहै (सो) इहां किञ्चित् लिखते हैं ॥※॥　　　　॥※॥

॥※॥ तिहि पडणे पुव्व तिही। कायव्वाजुत्त धम्मकज्जेय। चाउद्दसी विलोवे। पुन्नमिय पक्खि पडिक्कमणं॥ १॥ तत्थेव पोसह विही। कायव्वा सव्वगेहि सुह हेऊ। नहु तेरसीइ कीरइ। जह्मा नाणाइणो दोसा॥ २॥ सूरोदय पडियावि। तेरसी हुंति न पक्खियं कुज्जा। चाउम्मासिय करणे। एसविही देसिउ समणा॥ ३॥ तिहि वुड्ढीए पुव्वा। गहिया पडि पुन्न भोग संजुत्ता। इयरावि माणणिज्जा। परंथोवत्ति तत्तुल्ला॥ ४॥ ※॥

॥※॥ (तथा) ज्योतिषकरंड पाइन्नके इदं कथितमस्ती ॥※॥ ढड्ढि सहिया न अट्ठमि। तेरसि सहिया न पक्खिया

होई । पक्खिवे सहिया न कयावि । इइ भणियं वीयरागे ण ॥ १ ॥ अट्ठमि दिनंमि पायं । कायव्वा अट्ठमीय पा एण कइयावि सत्तमंमि । नवमी छट्ठो न कायव्वा ॥ २ ॥ पनरस म्मिय दिवसे । कायव्वं पक्खियं तु पाएण । चाउद्दसेवि क इया । नहु तेरसि सोलसमे कहवि ॥ ३ ॥ ॥※॥ इति श्रीखरतरगच्छ शुद्ध सामाचारी संपूर्णम् ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ स्वकुल प्रकाशणम् ॥※॥

॥※॥ हिव कहो माहरो कुल प्रकासुं अहो भवियण तुम सुणो । कोरंटगच्छे चंद्रकुल अरु वयरि शाखा चित भणो । गुण गण जिनेसर सूरि गुज्जर विरुद पायो गुण करी । सोजयउ खरतर गच्छ मोहण प्रगट सहु भवि हित धरो ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ गुरु गच्छ खरतर तेज दीपै विक्रमपुर सो है सही । जिनहंस सूरीसर तणें पद चंदसूरी जिन मही । गणधार लक्ष्मीप्रधान पाठक नमुं मन उल्लास ए । वहु रत्नसंग्रह किलकिलापुर किया मोहन भासए ॥ २ ॥ ※ ॥

समाप्तोऽयं रत्नसागरः प्रथमभागः